

माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालायाः सप्तत्रिंशत्तमो ग्रन्थः

महाकविपुष्पदन्तविरचित
त्रिपष्टिमहापुरुषगुणालंकारं नाम
अपभ्रंशभाषानिबद्धं

महापुराणम्

तस्यायं

आदिपुराणं

नाम

प्रथमः खण्डः

पुण्यपत्तनस्थवाहियाकैलेजाख्यविद्यामन्दिरनियुक्तेन

मस्कृतप्राकृतादिभाषाध्यापकेन

वैद्योपाह्वपरशुरामशर्मणा

संपादितः

प्रकाशिका

माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रमाब्दा १९९३]

[ख्रिस्ताब्दा १९३७

मूल्यं दश रूपिकाः

Text (pages 1-202) Printed by Ganesh Kesh with Gokhale, Secretary Shree Ganesh
Printing Works, 594-57 Sharda Path, Poona 8 and the rest by Anant Vissayak
Patwardhan, R. A., at the Joy Bhawan Press Poona, Path Shambarda, House
No. 91A/1 and published by Pandit Nankarwar Prasad, Secretary Manikchand
Digambar Jain Granthamandir, Hiraabag, Gurgaon, Bombay 4

TABLE OF CONTENTS

प्रकाशना निवेदन	.	vii
INTRODUCTION		ix-xxxi
Introductory	.	ix
The Critical Apparatus	.	x
The Prasasti Stanzas of the Mahāpurāṇa		xxi
Bharata, the patron of Puspadanta		xxviii
What is a Mahāpurāṇa ?		xxxi
Works on Sixty-three Great Men	..	xxxiv
Acknowledgment of obligations	.	xxxvi
प्रत्यक्षिपय		xxxvii-xlii
TEXT WITH CRITICAL APPARATUS AND FOOT-NOTES	.	1-490
NOTES	.	593-662
Glossary of Important Prakrit Words	..	663
Addenda et Corrigenda	.	671

प्रकाशकका निवेदन

अपभ्रंश भाषाके सर्वश्रेष्ठ महाकवि पुष्पदन्तकी रचनाओंका परिचय संभवतः सबसे पहिले, मैंने अपने एक विस्तृत लेखमें दिया था जो 'जैन-साहित्य-संशोधक' के जुलाई सन १९२३ के अंक में 'महाकवि पुष्पदन्त और उनका महापुराण' शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। उसके बाद अनेक विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और अपभ्रंशके साहित्यके विषयमें लोगोंकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। किंग एडवर्ड कालेजके प्रोफेसर सुहृद्वर प० हीरालाल जैन एम० ए०, एलएल० बी० तो अपभ्रंश-साहित्यपर मुरब्ध ही हो गये और उन्होंने अपने अध्ययनका मुख्य विषय ही इसे बना लिया। अपभ्रंशके साहित्यके लिये उन्होंने जयपुरकी यात्रा की और वहाँके पुस्तक-भंडारोंका महीनो तक अन्वेषण किया। कारजाके भंडार भी उन्होंने समय समयपर देखे। इसके फलस्वरूप उनके पास अपभ्रंश साहित्यका और उसकी साधन-सामग्रीका इतना अच्छा संग्रह हो गया है कि अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। उनकी जिद्दापर तो इस साहित्यकी सुलालित चक्तियाँ निरन्तर ही चृत्य करती रहती हैं। इस विषयपर वे अँगरेजी और हिन्दी पत्रोंमें कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं।

सन १९३१ में उनके उद्योगमें कारजा-सीरीजका प्रारम्भ हुआ और उसमें महाकवि पुष्पदन्तके यशोधरचरित और नागकुमारचरित तथा अन्य कवियोंके पाहुड दोहा, सावयधम्म दोहा और करकडुचरित ये पांच ग्रंथ उन्हींके संपादकत्वमें प्रकाशित हुए।

यह महापुराण भी उक्त सीरीजमें ही प्रकाशित होता, परन्तु कुछ आकस्मिक कारणोंसे उसके फण्डमें कमी आ गई और अर्थाभावेक कारण वह संभव न हो सका। तब इसे माणिकचन्द्र-ग्रन्थमालामें प्रकाशित करनेका निश्चय किया गया।

परन्तु यह ग्रन्थमाला भी तो धनसम्पन्न नहीं है, समाजसे जो दस पन्द्रह हजार रुपये इसे मिला है उससे ही यह अब तक चल रही है और किसी तरह अत्यन्त मितव्ययसे ३५-३६ ग्रन्थ प्रकाशित करनेमें समर्थ हुई है। बड़ी कठिनाईसे महापुराणका यह प्रथम भाग प्रकाशित किया जा रहा है और उत्तरभागके लिये चिन्ता है कि क्या किया जाय। पूर्वप्रकाशित ग्रंथोंकी विक्री इतनी कम है कि उसके भरोसे इस महान् ग्रन्थके प्रकाश करनेका साह्य नहीं किया जा सकता। यह तो तभी संभव हो सकता है जब जैनसमाज अपने अमूल्य साहित्यके प्रति अपने कर्तव्यको कुछ समझे और ग्रन्थमालाकी इतना दरिद्र न रहने दे।

INTRODUCTION

THE Mahāpurāṇa or Tisatthimahāpurisagunālamkāra is the earliest and the largest of the three known works of Puspadanta in Apabhramśa. Of the two smaller works, the Jasaharacarīu was edited by me and published in the Kāraṇjā Jaina Series, Vol I, 1931. The Nāyakumāracarīu was edited by Professor Hiralal Jain and published in the Devendrakīrti Jaina Series, Vol I, Kāraṇjā, 1933. I am now presenting to the reader the first volume of Puspadanta's Mahāpurāṇa comprising the Adipurāṇa, and hope to complete the work in two more volumes. When I announced in my introduction to Jasaharacarīu that I had undertaken the edition of the Mahāpurāṇa I did not realise how enormous the task before me was, and what financial and other difficulties the editor and the publishers might be involved into, but I am glad, after six long years of waiting, to offer to the linguists and the students of the Jain culture the first volume of this great work, and now I can assure the reader that if no further difficulties arise, I would offer the rest of the work within the next two or three years' time, so that all the three extant Apabhramśa works of Puspadanta will have been brought to light.

This Volume contains the first thirty-seven Samdhis out of the total of one hundred and two of the entire work. This portion is popularly known as the Ādiparva or Ādipurāṇa, and describes the lives of Risaḥa or Rsabha, the first Tirthamkara, and of Bharata, the first Cakravartin. The second volume will begin with the thirty-eighth samdhi and end with the eightieth, and the third volume will cover all the remaining samdhis. Dr Ludwig Alsdorf of Hamburg, Germany, has just published in Roman characters a portion of the Mahāpurāṇa under the title "Harivamsapurāṇa, Ein Abschnitt aus der Apabhramśa Welthistorie, Mahāpurāṇa Tisatthimahāpurisagunā-

अधिमानीय पुष्पवृत्तके मध्य मीनसाहित्यकी अधूरीय मिथि हैं और ऐसी मिथि हैं जिनका बहु गर्व कर सकता है। परन्तु दुर्भाग्यकी बात है कि हमारा समाज उस भाषाको एक तरहसे बिलगुल ही भूल गया है जिसमें इस महान् कविने और इसके पूर्व-उत्तरवर्ती सैकड़ों कवियों ने अपनी सरस सारसकार, सुपुष्पास रचनाओंसे सरस्वती माताका अपूर्व स्तुति किया था। एक समय था जब वे रचनाएँ बर बर पढ़ी और पाई जाती थीं और इनका संस्कृत काव्योंसे भी अधिक जादू था। सर्वभाषारत्न जनता शायद इसी भाषाको समझती थी और अपने कलामेमकी परितुष्ट करती थी। परन्तु आज यह वृत्ता है कि यहाँ हमारे समाजमें संस्कृतके जाननेवाले सैकड़ों विद्वान् हैं वहाँ इस भाषाके जानकार वन पौंच भी कठिनाईसे मिलेंगे। हमारे मंत्रालयोंमें जब भी अपभ्रंश-साहित्यके सैकड़ा ग्रन्थ भेज दिये हैं परन्तु पठित कहलानेवाले भी उन्हें कोई महत्त्वकी चीज नहीं समझत। यह भी नहीं जानते कि आखिर ये किस भाषामें हैं। उन्हें पता नहीं कि वर्तमान प्राप्तिगत भाषाएँ इसी भाषाकी बेटियाँ हैं इसलिये आज भाषा-शास्त्रियोंके लिये इसका साहित्य बहू ही महत्त्वका साहित्य बन गया है। बाल्दे, अजाहाबाद बहारस और भाजपुर सूनीबलिहियों ने अभी अभी इस साहित्यके एक दो ग्रन्थोंकी अपने पाठ्यक्रममें स्थान दिया है और आशा है कि शीघ्र ही अन्य सूनीबलिहियों भी इस ओर ध्यान देनी। मेरा तो विश्वास है कि किसी भी प्रांतीय भाषाका हाथ तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक वह अपभ्रंश-साहित्यको खोजा बहुत न जान लें। हम इतिसे जो दिद्यार्थी हिन्दी, मराठी मुजराती, बंगाली आदि प्रांतीय भाषाओंको लेकर प्रमत्त पण होते हैं, उनके लिये अपभ्रंश-साहित्यके ग्रन्थ अनिवार्य रूपसे पढ़ने होंगे।

इस ग्रन्थका सम्पादन संशोधन संस्कृत, पाळी प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओंके प्रकाण्ड विद्वान्, बाकिबा कोंसेबके प्रोफेसर डॉ. परमुराम कश्मन वैद्य पद्म. प. जी. लिख. द्वारा हुआ है। आपने अपनी स्वाभाविक उदारता और अपभ्रंश-साहित्यके प्रेमका ही इस कार्यकी किया है, अन्वया इस इति ग्रन्थमाहाका की उन जैसे हुरकर विद्वानोंसे कार्य कराने जैसी शक्ति नहीं है। इसके लिये ग्रन्थमाहाके संचालक डॉक्टर साहिबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकटित करते हैं, साथ ही भी हीराकाकलीकी भी ग्रन्थमाहा कभी है जिसके सहयोग और उद्योगसे यह ग्रन्थ प्रकाशित हो पाया है और जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थकी अंग्रेजी प्रमुक्तिका हिन्दी सारण भी लिख दिया है। यह जाना करेजा सीरीजके अधिकारीवर्यकी भी कृतज्ञ है जिन्होंने बहु व्ययसे तैयार की गई इसकी प्रथम प्रेस-कापी इस माहाको प्रदान कर दी।

This is one of the best and the most authentic of the Mss of the work that I possess. My text therefore is based mainly on this Ms. There have been a few—indeed very few—occasions when I had to adopt a reading other than the one given in it, but I feel confident that there were sufficient reasons for doing so on every such occasion.

2 K This is a paper Ms containing 732 pages measuring 16" × 4". Of these 732 pages, 288 are covered by the Ādipurāṇa or Ādiparva as it is called there. Each page contains 8 lines with about 50 letters to a line. The Ms. is carefully written and has copious marginal gloss. The words of the text are separated by a vertical stroke between words to be separated. Occasional use of prsthamaṭrās is noticed. The Ms. is decorated with thick red lines indicating the margin and there are three dots in red ink of the size of a four-anna silver coin, two in margins and one in the centre of the page where a square blank space is left. It seems that these dots represent the holes of a palm leaf Ms from which this Ms may have been copied. I secured this Ms through my friend and pupil, Professor A. N. Upadhye of the Rajaram College, Kolhapur, who obtained it from his friend Mr. Tatyasaheb Patil of Nandni, near Kolhapur. It begins—॥ ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवद्मणरज्जु etc., and the Ādipurāṇa portion ends—इय महापुराणे तिसृष्टिमहापुरिसिगुणालंकारे महाकव्यपुष्पयतविरहए महाभव्यमरहाणुमणिए महाकव्ये सगणहरिसहनाहमरहणिव्याणगमण नाम सत्तत्तीममो परिच्छेउ समत्तो ॥ आइपव्व समत्त ॥ It adds in a different hand म० श्रीवीरचद्रास्तत्पट्टे म० लक्ष्मीचद्रास्तत्पट्टे म० ज्ञानभूषणास्तत्पट्टे म० श्रीप्रभाचद्राणां पुस्तक ॥ The Uttarapurāṇa portion ends—इय महापुराणे तिसृष्टिमहापुरिसिगुणालंकारे महाभव्यमरहाणुमणिए महाकव्ये वीरजिणिण्णिदणिव्याणगमण नाम दुत्तरसयपरिच्छेयान महापुराण समत्त ॥ छ ॥ यथाय ॥ श्लोकसंख्या २०००० (?) ॥ शुभ भवतु ॥ We find on the final blank leaf—म० लक्ष्मीचद्रास्तत्पट्टे म० श्रीवीरचद्रास्तत्पट्टे म० श्रीज्ञानभूषणास्तत्पट्टे म० श्रीप्रभाचद्राणां पुस्तक ॥ It adds further in a different hand म० श्रीवादिचद्रास्तत्पट्टे म० श्रीमहीचद्रास्तत्पट्टे म० श्रीमेल्वचद्राणां पुस्तक ॥

The entire work seems to be written in one hand, in fact this is the only Ms of the whole of the Mahāpurāṇa, i. e., Ādipurāṇa and Uttarapurāṇa, written in one hand, that I have so far discovered. This Ms seems to preserve the text as in G described above, but seems to be corrected to the version represented by the M B P group of Mss, in a different hand. This Ms thus represents a mixed text. It is however easy to decipher what the original reading might have been. The gloss in the margin is more copious than in the Tippāna.

land Mrs von Puzosdants, Hamburg 1986 which contains suppld
81-92 of the work. This portion will be re-edited in Devanaga
characters and incorporated in the third volume so that the entire
work will now be made available to the public in a uniform edition.
Besides as we now possess more Man. than Dr Alsdorf was then able to
get, improvement on his work may be possible.

9000

It is

veniently issued in one volume. I therefore propose to include in each volume an Introduction, dealing chiefly with the problems which concern the text of that volume only reserving larger questions arising out of entire text for the Introduction to the third and the last volume. Moreover Introductions to *Jambhacariya* and *Nāyakaṃṭha* already contain some information about the author the language of his works, metres etc., which the reader is presumed to possess.

THE CRITICAL APPARATUS

The text of the *Adipurāṇa*, or of the present volume of the *Mahāpurāṇa*, is based upon the following five *Mss.* fully collated.

1 G This Ms. consists of 503 leaves measuring 11 x 5 I has 8 lines to a page and about 29 letters to a line. It was written in the 15th century, or 1441 of the prehemistis and he Ms. belongs to the

[illegible]

This is one of the best and the most authentic of the Mss of the work that I possess. My text therefore is based mainly on this Ms. There have been a few—indeed very few—occasions when I had to adopt a reading other than the one given in it, but I feel confident that there were sufficient reasons for doing so on every such occasion.

2 K This is a paper Ms containing 732 pages measuring 16" × 4". Of these 732 pages, 288 are covered by the *Ādipurāna* or *Ādiparva* as it is called there. Each page contains 8 lines with about 50 letters to a line. The Ms. is carefully written and has copious marginal gloss. The words of the text are separated by a vertical stroke between words to be separated. Occasional use of *prsthāmātrās* is noticed. The Ms is decorated with thick red lines indicating the margin and there are three dots in red ink of the size of a four-anna silver coin, two in margins and one in the centre of the page where a square blank space is left. It seems that these dots represent the holes of a palm leaf Ms from which this Ms may have been copied. I secured this Ms through my friend and pupil, Professor A. N. Upadhye of the Rajaram College, Kolhapur, who obtained it from his friend Mr. Tatyasaheb Patil of Nandni, near Kolhapur. It begins —
॥ ओं नमो धृतराज्य ॥ सिद्धिबहूमणिरजु etc., and the *Ādipurāna* portion ends —
इय महापुराणे तिसिद्धिमहापुरिसिगुणालंकारे महाकहपुण्ययतिरहं महाभवभरहाणुमणिए महाकवे सगण-
हरिसिद्धनाहभरहणिव्याणगमण नाम सत्ततीसमो परिच्छेद समप्तो ॥ आइपत्र समप्त ॥ It adds in a different hand म० श्रीवीरचद्रास्तत्पट्टे भ० लक्ष्मीचद्रास्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषणास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचद्राणां पुस्तक ॥ The *Uttarapurāna* portion ends —इय महापुराणे तिसिद्धि-
महापुरिसिगुणालंकारे महाभवभरहाणुमणिए महाकवे वीरजिणिद्विगुणगमण नाम दुत्तरसयपरिच्छेयाण
महापुराण समप्त ॥ छ ॥ यथाप्र ॥ श्लोकसख्या २०००० (?) ॥ शुभ भवतु ॥ We find on the final blank leaf —म० लक्ष्मीचद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीवीरचद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचद्राणां पुस्तक ॥ It adds further in a different hand म० श्रीवादि-
चद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीमहीचद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचद्राणां पुस्तक ॥

The entire work seems to be written in one hand, in fact this is the only Ms of the whole of the *Mahāpurāna*, i. e., *Ādipurāna* and *Uttarapurāna*, written in one hand, that I have so far discovered. This Ms seems to preserve the text as in G described above, but seems to be corrected to the version represented by the M B P group of Mss, in a different hand. This Ms thus represents a mixed text. It is however easy to decipher what the original reading might have been. The gloss in the margin is more copious than in the *Tippana*.

राज्ये अथ सवत्सरेस्मिन् श्रीविष्णुमादित्यराज्ये सवत् १६५९ पोषसुदि ५ शुधवासरे श्रीमूलसधे
बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुटाचार्यान्वये भट्टारकश्रीसिधकीर्तिदेवा

5 P This Ms is incomplete and has lost a portion at the end. The available portion of it consists of 305 leaves measuring $11\frac{1}{2}'' \times 5''$. It has 9 lines to a page and about 30 letters to a line. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No 370 of 1879-80. It seems to be a very old Ms, edges of leaves being worn out. There is a profuse marginal gloss. The prsthāmātrās are used. The available portion ends with a part of the third kadavaka of the 28th samdhi (see foot-note 8 on this kadavaka on page 433 of our edition). This Ms preserves a recension which is metrically correct, i.e., it uses इ, ए, उ and ओ as they are required for their correct metrical value almost uniformly. I found it therefore very convenient to follow it for this purpose, and hence have not recorded variants like पणविधि and पेणवेधि where पणविधि represents the metrically correct form. It begins — स्वस्ति ॥ ओं नम ॥ सिद्धेस्य ॥ सिद्धिवहूणरजगु etc., and ends with चामर° in XXVIII 3 11.

In addition to these five Mss fully collated, I came across three more Mss of the Ādipurāṇa. Of these one is deposited in the Sena Gana Mandir at Kāranjā, (No 7754 of Rai Bahadur Hiralal's Catalogue of Mss in C P & Berar). I examined it on the spot during my visit to that place in 1927. This Ms was got copied at her own cost by a lady ancestor of the famous Chavare family of Kāranjā and presented by her to the Bhattāraka of the temple. It is dated Wednesday the 8th of the dark half of Kārtika of 1591 of the Samvatera, i.e., 1534 A.D. As I could not secure it for full collation, I prepared some trial collations from it, but as they did not reveal any difference in the variants other than those found in M B P, I dropped the idea of incorporating them in my apparatus. The two other Mss belong to the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. One of them bears No 1140 of 1891-96. It is incomplete and carelessly written. It contains the first 19 samdhis only, and is dated the 5th day of the bright half of Jyestha of 1848 of the Samvat era, i.e., 1791 A.D. I made some trial collations from this Ms. but found the variants agreeing with those of M B P and hence did not collate it further. The other Ms from the Bhandarkar

of Prabhācandra, (for which see below). There is no indication of the age of the Ms. although its original probably a palm-leaf Ms. represents the older of the two recensions of our text. The corrections made therein to make it agree with a later recension of our text represented by the M B P group are made in a different hand, perhaps after about three generations of monks who owned it.

3 M This Ms. consists of 470 leaves measuring 11" x 4½". It has 8 lines to a page and about 38 letters to a line. It is written in Mathurā, modern Muttra, in 1888 of the Samvat era i.e. in 1836 A.D. It is written in good modern hand and has some gloss in the margin, but not so copious as in K or in the Tippanis of Prabhākandras. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No 1030 of 1887-91. It begins—**ओं नमो श्रीगणेशाय । शिवशिवस्तुतयः** etc., and ends—**इव महापुराणे निरदिष्टमप्युक्तिमुपाक्रमते महाकल्पवृक्षविहारं तद्व्याख्यासमाप्त्युपनिषत् समाप्तये स्वस्ति ॥**

4. B. This Ms. consists of 306 leaves measuring 11 x 5". It has 11 lines to a page and about 83 letters to a line. It belongs to the Balakrishna Gana Mandir at Kharanj, Berar and bears No. 535 of their list (No. 7753 of the Catalogue). It was secured for my use by Prof. Hiralal Jain of Amraoti. It was written at Yogimpura, " Dehli, in 1659 of the Samvat era, i. e. 1602 A. D. The Ms. is worn out, and its margins are decayed. It is an indifferently written Ms., omits portions mechanically while copying from its original, and has no gloss at all. I was at one time inclined to stop collating it, but did not do so for the simple reason that I thought I might find in this version not influenced by the marginal gloss. I was however disappointed to see that the Ms. was very indifferently prepared. It begins—*ओं नमो श्रीगणेशाय ॥ सिद्धिस्तुतयाम्* etc., and ends—*इति महाभारतस्य अष्टादशस्कन्धस्य अष्टमोऽध्यायस्य अष्टमोऽंशः समाप्तः ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥*

राज्ये अथ सवत्तरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये सवत् १६५१ पौषशुद्धि २ शुक्लपक्षे श्रीमन्मन्त्रे चलात्कारणे सरस्वतीगच्छे कुङ्कुमाचार्यान्वये मङ्गाग्रश्रीतिथिकीर्तिदेवा

5 P This Ms is incomplete and has lost a portion at the end. The available portion of it consists of 305 leaves measuring $11\frac{1}{2}'' \times 5''$. It has 9 lines to a page and about 30 letters to a line. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No 370 of 1879-80. It seems to be a very old Ms, edges of leaves being worn out. There is a profuse marginal gloss. The prathamātrās are used. The available portion ends with a part of the third kadavaka of the 28th samdhā (see foot-note 8 on this kadavaka on page 433 of our edition). This Ms preserves a recension which is metrically correct, i.e., it uses इ, ए, उ and ओ as they are required for their correct metrical value almost uniformly. I found it therefore very convenient to follow it for this purpose, and hence have not recorded variants like पणविवि and पणवेवि where पणविवि represents the metrically correct form. It begins — स्वस्ति ॥ ओं नम ॥ सिद्धेभ्यः ॥ सिद्धिवद्भूमणरज्जु etc., and ends with चामरं in XXVIII 3 11.

In addition to these five Mss fully collated, I came across three more Mss of the Ādipurāṇa. Of these one is deposited in the Sena Gana Mandir at Kāranjā, (No 7754 of Rai Bahadur Hiralal's Catalogue of Mss in C P & Berar). I examined it on the spot during my visit to that place in 1927. This Ms was got copied at her own cost by a lady ancestor of the famous Chaware family of Kāranjā and presented by her to the Bhattāraka of the temple. It is dated Wednesday the 8th of the dark half of Kārtika of 1591 of the Samvatera, i.e., 1534 A.D. As I could not secure it for full collation, I prepared some trial collations from it, but as they did not reveal any difference in the variants other than those found in M B P, I dropped the idea of incorporating them in my apparatus. The two other Mss belong to the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. One of them bears No 1140 of 1891-96. It is incomplete and carelessly written. It contains the first 19 samdhis only, and is dated the 5th day of the bright half of Jyestha of 1848 of the Samvat era, i.e., 1791 A.D. I made some trial collations from this Ms but found the variants agreeing with those of M B P and hence did not collate it further. The other Ms from the Bhandarkar

Oriental Research Institute bears No. 1139 of 1891-95. It is dated Wednesday the 10th of the bright half of Phālguna of 1935 of the Samvat era = 1858 A. D. This Ms. consists of three parts written in three different hands and on two different kinds of paper. The first part consists of 142 leaves and contains the text of the first sixteen samskṛas. The second part contains 17 leaves which are numbered from 1 to 17 and not from 143. The third part contains the remaining 83 pages, numbered from 18, but written by a different person. I made some trial collations from this Ms. also, but did not find variants different from those found in M B P and hence did not collate it further. This Ms. puts dots at places where the writer was unable to decipher his original either because it was illegible or damaged. Besides, these last-named Mss. are considerably modern and could, on that account too, be ignored.

By far the most important aid for fixing the text and preparing the critical apparatus was obtained from the Tīppana of Prabhācandra (T in the Critical Apparatus). I secured a Ms. of this Tīppana on the Adipurāṇa portion from the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, which bears No. 568 of 186- . This Ms. measures $13\frac{1}{2}'' \times 8\frac{1}{2}''$ has 51 leaves, with 13 lines to a page and 45 letters to a line. The script used is

— 1 to belong to the 16th

६६ विनयेन्द्रास्तु निरालये

देवद ॥ १ ॥ विष्णु-पद्वि

विष्णुपद्विपुत्रव्याधिः लेख इत्यादिना कदाचित्कालेनानुसृतम् । It ends — इति उत्तरविष्णुपद्वि
नानुसृतः ॥ उत्तरविष्णुपद्वि कदाचित् कदाचित् कदाचित् कदाचित् । तत्तुल्यं यत्ने विष्णुपद्वि
विष्णुपद्विपुत्रव्याधिः ॥ इति उत्तरविष्णुपद्विपुत्रव्याधिः कदाचित् कदाचित् कदाचित् कदाचित्
कदाचित् ॥ शुभं कदाचित् ॥

I also examined a Ms. of Prabhācandra's Tīppana on the Uttara
purāṇa which I obtained, through the kindness of Professor Hiralal Jain,
from Master Motilal Sangha of Jaipur. This Ms. measures $15'' \times 8\frac{1}{2}''$

— 1 to belong to the 16th

६६ विनयेन्द्रास्तु निरालये

देवद ॥ १ ॥ विष्णु-पद्वि

विष्णुपद्विपुत्रव्याधिः लेख इत्यादिना कदाचित्कालेनानुसृतम् । It ends — इति उत्तरविष्णुपद्वि
नानुसृतः ॥ उत्तरविष्णुपद्वि कदाचित् कदाचित् कदाचित् कदाचित् । तत्तुल्यं यत्ने विष्णुपद्वि
विष्णुपद्विपुत्रव्याधिः ॥ इति उत्तरविष्णुपद्विपुत्रव्याधिः कदाचित् कदाचित् कदाचित् कदाचित्
कदाचित् ॥ शुभं कदाचित् ॥

ममाप्तम् ॥ अथ सवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्द सवत् १५७५ वर्षे भाद्रवासुदि । शुद्धदिने ।
 कुरुजांगलदेने । सुलितानसिकदरपुत्रु सुलितानबाहिमु राज्यप्रवतमाने श्रीकाष्ठासधे मधुरान्तये पुष्करगणे ।
 मटारकश्रीगुणमद्रसुरिदेना । तदान्नाये जैसवाहु चो दोडरमहु । इद उत्तरपुराणटीका लिखापित ॥ सुभ
 मवतु ॥ मांगल्य ददाति लेखकपाठकयो ॥ This Ms is dated Samvat 1575, i e
 1578 A. D

= 1518

On examining the colophon of the author of the Tippana we learn some very important and interesting particulars about the manner of its composition. We learn that the Tippana was composed in the year 1080 of the Vikrama era, i e, 1023 A D, i e, within sixty years of the completion of the Mahāpurāṇa by Puspadanta, we also learn that king Bhoja of Dhārā was then ruling in Malva, that Prabhācandra consulted the works of Sāgarasena for his Tippana, that he also consulted the original Tippana, probably of Puspadanta himself (मूलविवरणं चालोक्य), and prepared a collected Tippana (समुच्चयविवरण) on the Mahāpurāṇa, embodying the original Tippana. An author's writing a Tippana on his own work may appear somewhat strange, but it is not altogether impossible, for I had an occasion to examine Mss written by the authors of the 18th century in their own hand bearing also a gloss in their own hand, and I feel certain that these authors must have borrowed the mentality of writing a gloss on their own works from their forefathers. I therefore think that Puspadanta must have written a short gloss on the difficult words of his work, this gloss must have been amplified by Prabhācandra, and that the process of amplification must have continued still further down. The gloss found in Mss of our text is not identical with the Tippana of Prabhācandra, but is one which is either abridged or amplified.

Professor Hiralal Jain, in his Introduction (LXIII—LXIV) to the Nāyakumāracarit refers to the colophon of a Ms of the Tippana of Prabhācandra which he came across, and says that Prabhācandra lived in the reign of Jayasimhadeva of Dhārā (*circa* 1055 A D). But in view of the express mention of the date, 1080 of the Vikrama era, i e, 1023 A D and of the reign of King Bhoja in our Ms., we must regard that reference to a subsequent copy of the work, perhaps by Prabhācandra himself. Our Ms of the Tippana again does not contain the stanza तत्त्वाचारमहापुराण etc. Prabhācandra might have added this stanza in a subsequent copy of his work at a later date, which assumption may also explain the reference to king Jayasimhadeva.

The critical apparatus described above divides the *Mss.* into two groups, one comprising G and K, and the other M, N and P not only because of the general agreement of the variants noted, nor on account of additions or omissions to the original text in a particular group (see page 514), but also on the strength of the agreement of the *Prasasti* stanzas found at the beginning of several *samdhis*. I have already alluded to this topic in my Introduction to *Jambharacarita* (page *1), but I think it is necessary to discuss it in detail as it throws considerable light on the *Mss.* tradition of the works of Puṣpadanta and also the principle on which I have grouped the *Mss.* and valued them.

THE PRASASTI STANZAS OF THE MAHĀPURĀNA

When I had an occasion to study the manuscript material for my edition of *Jambharacarita*, I discovered that certain *Mss.* contained, at the commencement of a *samdhi*, stanzas in praise of the poet's patron, *Naana* while others did not record them. In the course of the collation of *Mss.* I also discovered the fact that those *Mss.* which contained these *prasasti* stanzas agreed very closely in one set of variants, while those *Mss.* which did not contain these stanzas agreed very closely in equally another set of variants. On further examination I found that those *Mss.* which did not give the *prasasti* stanzas presented an older recension of the text, while those that contained these stanzas presented a later and amplified recension. In the case of the *Jambharacarita* the amplified passages were located and their author and his date found out. As that interpolator who lived four centuries after the poet, had nothing to do with the poet's patron, I was convinced that the poet himself must have composed these *prasasti* stanzas, and was forced to advance hypothesis that the poet himself with the help he obtained from his patron must have got made two or three sets of copies of his work, in one of which he wrote at leisure, at first in the margin perhaps some stray stanzas glorifying his patron, while other set or sets had already gone out of his hand without the addition of these stanzas. This hypothesis, briefly enunciated on

page 21 of the Introduction to Jasaharacarīu, enabled me then to fix up that Mss S and T of the work presented an older version. I had there an occasion to test the correctness of the hypothesis by referring to one of the Praśasti stanzas of the Mahāpurāṇa, viz ,

दीनानाथधन सदाचहुजन प्रोक्तुल्लवल्लीवनं

मान्यासेटपुर पुरदरपुरीलीलाहर सुन्दरम् ।

धारानाथनरेन्द्रकोपशिसिना दग्ध विदग्धमिय

केदानीं यस्मिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्त कवि ॥

which puzzled the historian in respect of the fixing of the date of the composition of the Mahāpurāṇa, in as much as the plunder of Mānyakheta, a well-ascertained historical event of 972 A. D., was referred to by the poet in the middle of the work in the above-mentioned stanza found in the Kāranjā Ms. at the beginning of the 50th samdhī, while the completion of the Mahāpurāṇa in the Krodhana year, i. e., in 965 A. D., was an equally certain event. I found that the stanza did not occur in my Ms K. This fact coupled with the absence of praśasti stanzas in my best Mss of the Jasaharacarīu enabled me to advance the hypothesis set out above, which further examination of a large number of Mahāpurāṇa Mss fully corroborates. The Nāyakumāracarīu of Puspadanta, which was then being prepared for the Press by my friend Professor Hiralal Jain, did not contain any praśasti stanzas in any of his Mss, and hence I could not test the accuracy of my hypothesis there. I therefore proceeded to collate the praśasti stanzas occurring at the beginning of the samdhīs of the Mahāpurāṇa. I have not so far discovered a Ms of the Mahāpurāṇa which has no praśasti stanzas at the same time I have found that Mss do not agree in giving them all. I have however found that groups of Mss agree amazingly in giving a stanza at a particular place or omitting it altogether. A smaller number of stanzas was found in my Mss G and K of the Ādipurāṇa, while the remaining Mss gave a much larger number of them. I therefore regard that G and K preserve an older, if not the oldest, recension of the text of the Ādipurāṇa. I think that these stanzas do not form an integral part of the text and hence they are relegated to notes in the Critical Apparatus. I however believe that they were composed by the poet himself as nobody could be interested in glorifying Bharata to such extent. I also believe that the poet composed these stanzas

long after he had completed the composition of the Mahāpurāna. At any rate the stanza *वैष्णवावर्णे* etc. he could not have written before 972 A. D., i. e. seven years after the completion of the Mahāpurāna. As the question of these stanzas is important for the manuscript tradition and as they throw considerable light on the relation of the poet with his patron Bharata and allied topics, I give them all arranged in groups, i. e. (a) those found in G and K (b) those found in other Mss of the Ādipurāna (c) those found in Poona, Kāraṇḍī and K of the Uttarapurāna portion; and (d) those found exclusively in the Jaipore Ms. I have also numbered them consecutively for easy reference in the next section

- (a) 1. (i) अग्निदेवकर्णमुकुतामङ्गारकपूजाम्ने-
 त इन्द्रकान्तमुनेरभिरुचिमाता तैमुक-मातु इवम् ।
 अथ वारुणमङ्गारमङ्गलमपामातु सर्वकर्णं वता
 श्रीर्लोकेश न वेदि नमः परमप्राणानि कण्ठस्थ न ॥

This stanza states that the fame of Bharata, the patron and friend of Khanda, i. e. the poet himself, has pervaded the entire universe. The stanza is found at the commencement of the 3rd samdhi in G and K but at the beginning of the 2nd samdhi in the remaining Mss. (See foot-note on page 18 and also note the variants).

2. (ii) कामधर्मं हृदिना क्षम्य मुनयसं श्रेष्ठं वदुः सुखम्
 सत्यं सर्वत्रोपकारकमेव वृत्तं सर्वं क्षमयाम् ।
 इ विदुः नामस्य मुनिमन्त्रं विचार्यमाणस्तु न
 सर्वैकेन मुकम्बुमूर्तिनिधेयं पुनाम्यभिरुचं मुनि ॥

This stanza mentions some of the qualities which Bharata, the poet patron, possessed. This stanza is found exclusively in G and K at the beginning of the fourth samdhi

3. (iii) वृद्धीक्षं त्वम मुञ्च त्वमनुच्युताधिकं वरादा
 ना न वर्यं अस्मन्मन्त्रिणां त्वयाहिं वाम्बाहवा ।
 मुने श्रीमद्भिरामकण्ठकण्ठवेर्मुनेरुचिमाता
 सर्वेभ्यश्च वाम्बाहवा न वता श्रीमद्भिरामिनि ॥

This stanza states that Bharata, the poet friend and patron, is so virtuous that he would never think of the wife of another person. The stanza is found at the beginning of the 5th samdhi in G and K,

and in other Mss also at the same place (See footnote on page 72 and also note the variants)

- ४ (१४) एको दिव्यकथाविचारचतुर श्रोता बुधोऽन्य प्रिय
एकं काव्यपदार्थसंगतमतिश्रान्य परार्थेयत ।
एकं मत्तविग्न्य एष महतामाधारभूतो विदां
द्वावेतौ सति पुण्डन्तमरनो भट्टे भुवो भूषणम् ॥

This stanza brings out the characteristics of the poet and his patron, both of them adorning the earth. The stanza is found in G and K at the beginning of the eighth samdhi, but in all others at the beginning of the 9th samdhi.

- ५ (१५) जग रम्म हम्म दीवओ चन्दविम्ब
धरिती पल्लको दो वि हत्था सुवत्थ ।
पिया णिद्धा णिच्च कच्चकीला विणोओ
अदीणत्त चित्त ईसरो पुण्डन्तो ॥

This stanza states that the poet Puspadanta is a king in as much as he has the nobility of mind, the whole world is his fine mansion-house, the moon the lamp, the ground his bed-stead, his arms his clothing, sleep his beloved and poetry his pastime. The stanza is found in G and K, and in all other Mss at the beginning of the tenth samdhi, and also at the beginning of the fiftieth samdhi of the Uttarapurāṇa in Poona, Jaipore and Kāranjī Mss.

- ६ (१६) णाहन्तसुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
तिरिक्खुमदसणकइमुहणिसिणी जयह् वाईसी ॥

- ७ (१७) तन्त्रीपाथेरानिन्दोर्वकविरचितेगयपथेरनेके
कान्त कुन्दावदात् दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरोचे ।
फाले वृष्णाकराले कलमलमलितेऽप्यय वियाप्रियो गां
सोऽय ससारसार प्रियमस्ति भग्नो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥

Of these the first stanza glorifies the poetic genius of Paspadanta and the second glorifies Bharata, the poet's patron, for his appreciation of learning in the Kali age. These stanzas are found in G and K at the beginning of 30th samdhi and in MBP and others of this group at the beginning of 29th samdhi.

६. (viii) वनिगुह्यदति पयोर्दं वदिगुह्ये लोहगुह्यदति ।

भारतम् वदनात्तो कीर्तिराष्ट्रीः निगदम् ॥

The stanza notes that it was strange on the part of Bharata still to cherish love for fame, conceived as his wife, when she wanders wantonly in every house and freely dallies with bards. This stanza is found in G and all Mss. of the other group, but is missing in K. The want of agreement in G and K in this respect, however strengthens my hypothesis that these stanzas do not form an integral part of the text, but were composed by the poet at a later stage and added in the margin of some of the copies of his work that he still had with him.

The agreement existing between G and K regarding the location of the above-mentioned *prastāvi* stanzas led me to believe that they formed a group by themselves. This belief of mine was confirmed by general agreement of the variants and also by non-inclusion of a long passage, found in Mss. of the other group and noted by me in the Critical Apparatus on page 514 of the printed text. Further the fact that the number of *prastāvi* stanzas in the other group is much larger than in this group indicates that this group of Mss. represents an older recension than the other one. Occasional disagreement between G and K is due to the fact that K represents a mixed version, the text in it being corrected on the model of the text in the MBP group at numerous places. I have noted all such places in the Critical Apparatus where I was able to read the original and the corrected variants, but at places the pigment or the ink was applied rather thick which made it difficult for me to decipher the Mss. correctly.

The second group of Mss. in my Critical Apparatus is represented by M, N and P. Besides these, I had an occasion to consult three more Mss. on from the Seta Gana Bhāṇḍāra at Kāraṇḍī and two from the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. All the Mss. of this group contain the *Prastāvi* stanzas, (i) and (iii-viii) given above. Over and above this, they also contain the following :—

(b) ७ (1) वनिगुह्यदति पयोर्दं वदिगुह्ये लोहगुह्यदति ।

उक्तवदम् वदिगुह्यदति पयोर्दं वदिगुह्ये लोहगुह्यदति ॥

(Found at the beginning of the third *sandhi*).

- 10 (ii) आश्रयवशेन भवति प्राय नयन्य वस्तुनोऽतिशय ।
भरताश्रयेण समति पश्य गुणा मुन्यतां प्राप्ता ॥

(Found at the beginning of the fourth samdhā)

- 11 (iii) श्रीवाग्देव्ये कुप्यति वाग्देवी द्वेष्टि सतत लक्ष्ये ।
भरतमनुगम्य नाप्रतमनयोगत्यन्तिकं प्रेम ॥

(Found at the beginning of the sixth samdhā)

- 12 (iv) इहो मद्र प्रचण्डावनिपतिमवने त्यागनन्द्यानकता
कोऽय ग्याम. प्रवान् मरकरिकरकारवाहु प्रसन्न ।
धन्य प्रालेयपिण्डोपमधवन्दयशोयौतवाञ्छितलान्त
ख्यातो बन्धु कवीनां भरत इति कथ पान्य जानासि नो त्वम् ॥

(Found at the beginning of the seventh samdhā)

- 13 (v) मातर्वत्सुषरि कुतूहलिनो ममेत-
दापृच्छन् कथय सत्यमपात्य शाठ्यम् ।
त्यागी गुणी प्रियतम तुभगोऽप्रतिमानी
किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतायनुल्य ॥

(Found at the beginning of the eighth samdhā)

- 14 (vi) स्यात्तेज (!) गर्भाग्निना जलनिधेः स्येय तुराद्रेर्वैद्यो
सौम्यत्व कुम्भमायुषात्सुमगतां त्याग बले नम्रमान् ।
एकीरुत्व विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा तस्ये चाप्रत
भरतार्यो गुणवान् मुन्यध्ययशत नष्ट (!) कवेवल्लभ ॥

(Found at the beginning of the eleventh samdhā)

- 15 (vii) तीव्रापद्विवत्सेषु बन्धुगहितेनेकेन तेजस्विना
सतानक्रमतो गतापि हि रना रुष्ट प्रभो नेत्रपा ।
बन्ध्याचारपद वदन्ति कथय तोजन्यमत्यात्यद
सोऽय श्रीभरतो जयत्यनुसमं कान्ते कलौ नाप्रतम् ॥

(Found at the beginning of the thirteenth samdhā and also
at the beginning of the thirty-fourth samdhā)

- 16 (viii) केलानुत्मानिकन्दा धवलदिग्मिगडगिण्णदन्तद्वुरोहा
सेताहीयद्मूला जलदिगन्तमुत्सूयापिण्डागवना ।

काम्यो निवर्तनी तत्रासक्तं कथंविधं कथयती
कुतश्चैव तत्रोद्भवः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः ॥

(Found at the beginning of the fourteenth saṃdhi).

- 17 (ix) त्वान्ते वरं करोमि वरवदन्तानुष्ठापयितुं
कथंविधं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं
लोभं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं
वदन्तानुष्ठापयितुं वरं वरं वरं वरं ॥

“

t is also
in K

- 18 (x) कथंविधं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं
वदन्तानुष्ठापयितुं वरं वरं वरं वरं ॥

(Found at the beginning of the seventeenth saṃdhi. It is also found at the beginning of the 102nd saṃdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss.)

- 19 (xi) वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं
वदन्तानुष्ठापयितुं वरं वरं वरं वरं ॥

(Found at the beginning of the eighteenth saṃdhi. It is also found at the beginning of the thirty ninth saṃdhi of the Uttarapurāṇa in h, and in Poona and Jaipore Mss.)

- 20 (xii) वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं
वदन्तानुष्ठापयितुं वरं वरं वरं वरं ॥

(Found at the beginning of the nineteenth saṃdhi).

- 21 (xiii) कथंविधं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं
वदन्तानुष्ठापयितुं वरं वरं वरं वरं ॥
वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं वरं
वदन्तानुष्ठापयितुं वरं वरं वरं वरं ॥

(Found at the beginning of the twentieth saṃdhi).

- 22 (xiv) व व व व व व व व व व व व व व
वदन्तानुष्ठापयितुं वरं वरं वरं वरं ॥

वसति सरस्यती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे
स जयति जयतु जगति भरतेश्वर सुसमयममलमङ्गल ॥

(Found at the beginning of the twenty-first samdhi)

- 23 (xv) मदकारिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना
मृगपतिनादरेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम् ।
निमलतरुपवित्रमूषणगणमूपितवपुरदारुणा
भारतमल्ल सास्तु देवी तव बहुविधमन्त्रिका मुदे ॥

(Found at the beginning of the twenty second samdhi)

- 24 (xvi) अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नखनिकुरम्भकर्णिक
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुमनचक्रचुम्बितम् ।
विलसदनुमतापनिर्मलजलजन्मधिलासि कोमल
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

(Found at the beginning of the twenty-third samdhi)

25. (xvii) हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुगन्धवलितगगनमण्डल
पुलकमिवातनोति केतकतस्वरतरुकुसुमसकरे ।
विकसितकणिकणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमघ क्षिते-
रिदमलिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावक यश ॥

(Found at the beginning of the twenty-fourth samdhi)

- 26 (xviii) चञ्चतातिमनुमात्रपात्रता (!) भाति मद्र भरतस्य भूतले ।
काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

(Found at the beginning of the twenty-fifth samdhi)

- 27 (xix) घनधवलताश्रयाणामचलस्थितिकारिणा मुहुषमन्ताम् ।
गणनैव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणां च ॥

(Found at the beginning of the twenty-sixth samdhi)

- 28 (xx) गुरुधर्मोद्भवपायनमभिनन्दितरुण्णाजुनगुणोपेतम् ।
मीमपराक्रमत्तार भारतमिव भरत तव चरितम् ॥

(Found at the beginning of the twenty-seventh and thirty-
seventh samdhis)

- 29 (xxd) सुमन्निगोदरुत्तपनि गुणभूषद्वया लक्षे बहुतनि ।
वाञ्छमिद्वयम जने सुहृदि तत्त्वमी एका ॥

(Found at the beginning of the twenty-eighth *sandhi*).

30. (xxii) धम्मपड्डाद्वयमभिनन्दुत्तमिवाऽपितत्तम ।
लक्षेण त्वं धर्माभिवाद् बहुवो न लक्ष्मि ॥

(Found at the beginning of the thirty-second *sandhi*)

- 31 (xxiii) विषयादुत्तमाद्वयो गुणके विषयीयुषि लक्षे ।
मात तव वीर्यमज्जमाद्वयवारी नानि लक्ष एव ॥

(Found at the beginning of the thirty-third *sandhi*. It is also
Uttarapurāṇa in

—

32. (xxiv) इति ज्ञानं विषयानमवर्द्धिगोलेऽपिद्वयम् ।
मातुं च धर्मिणं पुत्रुर्ध्वः कल्पसि लक्ष्म्यम् ॥

(Found at the beginning of the thirty-fifth *sandhi*)

It will thus be seen that the MHP group of *Mss.* which I fully collated for my work and at least three more *Mss.* one from Sarni Gapa District at Kāranjī and two from Poona, contain as many as twenty four more stanzas at exactly the same point in the *Adipurāṇa* portion. Some of these are repeated in some *Mss.* of the *Uttarapurāṇa*, no doubt, still the evidence strongly supports me to group them together. The variants in the text that they give justify the above view.

The above conclusion led me to see if similar groups of *Mss.* existed for the *Uttarapurāṇa* also. Unfortunately the number of the available *Mss.* of the *Uttarapurāṇa* is very small, viz., four. Of these one is my K, the second comes from the Bhandarkar Institute, Poona, the third from Jaipur and the fourth from the Dattakara Gapa District at Kāranjī. On examination I found that Poona and Kāranjī *Mss.* agree in putting certain stanzas at a place particularly those four that are given at the beginning of the 50th *sandhi*, while K omits these very stanzas there and the Jaipur *Ms.* distributes them over four different *sandhis* from 50th onwards. I give below these stanzas with their location in the four *Mss.* mentioned above.

- (c) 33 (1) वरमकरोदपारतगविवरमहिकिण्णन्दुमण्डल
यदपि च जलधिवलयमधिलघ्य निधेस्तदन्तर दिश. ।
विगलितजलपयोदपत्त्युति कयमिदमन्यथा यश
प्रसरदमादमल्लकदनाभारत भुवि भरत साप्रतम् ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss at the beginning of the 41st and the 47th samdhis The Jaipore Ms has it only at the 41st K does not give it anywhere)

34. (11) भास्वानेककलावतोऽस्य च भवेयनाम तन्मङ्गल
सवस्यापि गुरुबुधः क्विग्य चक्रे अय च (1) ऋम ।
राहु. केतुरय द्विषामिति दधत्तास्य ग्रहाणां प्रभु
सप्रत्योदय (1) माननोति भरत सर्वस्य तेजोधिकः ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss at the beginning of the 50th along with two following and जग रम्म हम्म etc. (see stanza 5 above) The Jaipore Ms gives this stanza alone at the 50th, and K does not give it anywhere)

- 35 (111) सया सन्तो वेतो भूसण सुद्धसील
सुसुतुह चित्त सव्वजीवेसु मेत्ती ।
मुहे दिव्वा वाणी चारुचारित्तभारो
अहो सण्डस्सेतो केण पुण्णेण जाओ ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss at the 50th, the Jaipore Ms gives it at 49th, and K does not give it anywhere)

- 36 (1V) दीनानाथधन सदायहुजन प्रोक्तुलवल्लीवन
मान्याक्षेत्पुर पुरंदरपुरीलीलाहर सुन्दरम् ।
धारामाधनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
केदानीं वसतिं करिष्यति पुन श्रीपुष्पदन्तः कवि ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss at the 50th, in the Jaipore Ms. at 52nd, and K does not give it anywhere)

- 37 (v) अत्र प्राक्तलक्षणाणि सकला नीतिः स्थितिश्चन्द्रसा-
मर्थाल्लुतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः ।
किं चान्यथादिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते
हावेतो मरुतेशुष्पदशानौ सिद्ध ययोरीदृशम् ॥

(Found in all the four Mss at the beginning of the 59th samdhi)

- 29 (Dn) महामहिमोदरस्यपि गुणकृद्भूता लोके प्रकृति ।
 चोच्चनियमक नते स्मृतिं सरस्वती रसा ॥

(Found at the beginning of the twenty-eighth maddi).

- ४० (xxxi) सम्मन्वयानुसारं भविष्यत्काले विविध विचारः ।
 अन्ते च तदा सम्मन्वितानां दृष्टानां न उद्भवति ॥

(Found at the beginning of the thirty-second samadhi)

- 81 (xxv) निम्नाहृतशालाहारी मूलकके विषयीं पुनि उक्तेन ।
 मत्तं तत्र शैल्यन्तःशालाहारी मत्तं प्रकृतं २५ ॥

(Found at the beginning of the thirty-third samdhi. It is also found at the beginning of the fortieth samdhi of the Uttarapurāṇa in Poona and Jaipur Mss., but is missing in K.)

३३. (xxiv) इति पञ्चमस्य विभक्त्याऽप्यनेन प्रिठेनैर्गुणान्नयम् ।
यन्म न वार्षितोषं यद्वाकोः कल्पयति समर्थम् ॥

(Found at the beginning of the thirty-fifth ~~smadhn~~)

It will thus be seen that the MBP group of Mss. which I fully collated for my work and at least three more Mss. — one from Sena Gana Bhāṣṇīn at Kīraṅgī and two from Poona, contain as many as twenty-four more stanzas at exactly the same point in the Adipurāṇa portion. Some of these are repeated in some Mss. of the Uttarapurāṇa, no doubt, still the evidence strongly supports me to group them together. The variants in the text that they give justify the above view.

The above conclusion led me to see if similar groups of *Mss.* existed for the Uttarapurāṇa also. Unfortunately the number of the available *Mss.* of the Uttarapurāṇa is very small, viz., four. Of these one is my K, the second comes from the Bhandarkar Institute Poona, the third from Jaipore and the fourth from the Balakrishna Ganga Bhāṇḍārā at Kāranjī. On examination I found that Poona and Kāranjī *Mss.* agree in putting certain stanzas at a place, particularly those four that are given at the beginning of the 50th saṁdhi, whil K omits these very stanzas there and the Jaipore *Ms.* distributes them over four different saṁdhis from 50th onwards. I give below these stanzas with their location in the four *Mss.* mentioned above.

44. (xii) चञ्चच्चन्द्रमरीचिचन्द्राचुराचातुर्यचक्रोचिता
चञ्चन्ती विचटच्चमल्लुतिथि श्रोद्धामकाव्यक्रियाम् ।
अञ्चन्ती त्रिजगन्ति कोमलतया चाचुर्यधुर्यो रसे.
खण्डस्येव महाकवे समरतान्नित्यं कृति शोभते ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 68th samdhi)

- 45 (xiii) लोके दुर्जनसकुले इतकुले वृष्णाकुले नीरमे
सालकारवचोविचारचतुरे लालित्यलीलाधरे ।
मद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ सांपत
क यास्यस्यभिमानरत्ननिलय श्रीपुण्डन विना ॥

(Found in all the four Mss at the beginning of the 80th samdhi)

The following three stanzas are found only in the Jaipore Ms.

- (d) 46 (1) सोऽयं श्रीभरत कलङ्करहित कान्त सुवृत्त शुचि
सज्ज्योतिर्मणिराकरो पुत इवानर्घ्यो गुणोभामते ।
वंशो येन पयित्रतामिह महामन्त्राह्वय प्रामवान्
श्रीमद्वल्लभराज—कटके यश्रामयन्नायक ॥

(Found at the beginning of the 42nd samdhi)

- 47 (11) यापीकूपतडागजेनसतीम्यस्तवेह यत्कारित
मव्यश्रीभरतेन सुन्दरधिया जेन सुराणां (पुराणं 1) महत् ।
तत्कृत्वा पूर्वमुत्तम रविरुति (1) ससारवार्धे सुखं
कोऽयत् (1) न्नसहयो (1) न्ति कस्य हृदय न वन्दितुं नहने ॥

(Found at the beginning of the 45th samdhi)

- 48 (iii) सजुडियजाणुकोप्परगीवाकडिचन्धणावयवो ।
अणुहवइ वेरिय तुम्ह ज पावइ लेहओ दुक्ख ॥

(Found at the beginning of the 58th samdhi)

It will be seen from the account of these prasasti stanzas that even the Uttarapurāṇa Mss preserve three different recensions, K representing the oldest, the Poona and Kāranjā Mss the middle and the Jaipore Ms the youngest. Leaving the question of the genealogy

- 35 (vi) अमृतं सागवद्गोत्रं कतिपुत्रविप्राभ्यामभिरुच्यते ॥
 सागवद्गोत्रं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सा दी वरपुत्रं निवृत्तम् ।
 एवमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 येनमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 63rd samdhi).

- 36 (vii) अमृतं सागवद्गोत्रं कतिपुत्रविप्राभ्यामभिरुच्यते ॥
 सागवद्गोत्रं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 एवमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 येनमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 64th samdhi).

- 40 (viii) अमृतं (i) कतिपुत्रविप्राभ्यामभिरुच्यते ॥
 सागवद्गोत्रं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 एवमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 येनमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 65th samdhi).

- 41 (ix) अमृतं (i) कतिपुत्रविप्राभ्यामभिरुच्यते ॥
 सागवद्गोत्रं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 एवमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 येनमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु ॥

- 42 (x) अमृतं (i) कतिपुत्रविप्राभ्यामभिरुच्यते ॥
 सागवद्गोत्रं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 एवमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 येनमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु ॥

(Both these stanzas are found in all the four Mss. at the beginning of the 66th samdhi.)

- 43 (xi) अमृतं (i) कतिपुत्रविप्राभ्यामभिरुच्यते ॥
 सागवद्गोत्रं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 एवमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु
 येनमुक्तं सागवद्गोत्रं ननु वेदाः सागवद्गोत्रं ननु ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 67th samdhi).

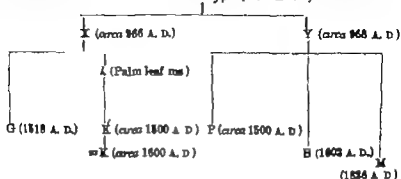
We have now an excellent account of the *Rāstrakūṭas and their Times* by Dr A S Altekar (Poona, 1934) We find that a few pages (115-123) are devoted there to the political events of Kṛṣṇa III (939-968 A. D.) We also have there a section dealing with education and literature (Chapter XIV) of the period And yet, we do not find any reference in the book to Bharata, the minister of Kṛṣṇa III, nor do we find any reference to the Poet On the contrary we read on page 412 a remark to the effect that there is hardly any output of Prakrit Literature during the period Puspādanta, under the patronage of Bharata and his son Nanna, composed three works in Apabhraṃśa, which covering as they do over 2000 pages of the size of the present volume, cannot be easily ignored, nor can Bharata, the patron of learning, be neglected, who constantly urged on the poet to make the best use of his gifts It will not therefore be out of place to construct the story of the life of Bharata, the forgotten patron of Prakrit Literature, from out of the material like the references in the works of Puspādanta and the praśasti stanzas

Kṛṣṇa III is known in Puspādanta's works by three names Tudiga, Suhatuṅgarāya (Sk Subhatuṅgarāja) and Vallabhanrpa He came to the throne in 939 A. D., and ruled up to 968 A. D. In this year he was succeeded by his younger brother Khottigadeva It was during the reign of Khottigadeva, in 972 A. D., that Mānyakheta, the capital of the later Rāstrakūṭas, was plundered by the king of Dhārā Bharata was the minister of Kṛṣṇa III Nanna, Bharata's son, also, is mentioned as a minister of Suhatuṅgarāya, i. e., Kṛṣṇa III Bharata however was still living when Puspādanta's Mahāpurāṇa was completed, i. e., upto 965 A. D. As Kṛṣṇa III died in 968 A. D., we have to suppose that Bharata must have died between 965 and 968 A. D., so that his son, Nanna, could succeed his father by 968 A. D. After the death of Bharata, Nanna extended his patronage to Puspādanta and induced him to write Jasaharacarīu and Nāyakumāracarīu

Bharata seems to have come from the family of Kondella gotra (Sk Kaundinya) This was a rich family and held the office of ministers (महामन्त्राद्वय वशाः, 46), but had become poor. There are references which indicate that Bharata regained the lost wealth of his family by devoted service to his master (सत्तानकर्मतो गतापि द्वि रमा रुय प्रभो सेवया) His grandfather's name was Annaīya or Annayya His

of the Mss. of the Uttara-purāṇa for the time being I present below in genealogical form the relation of the different Mss of the Ādipurāṇa —

Archetype (985 A. D.)



BHARATA, THE PATRON OF PUSPADANTA

There are in all 48 *pradasta* stanzas found in the Mss of the Mahāpurāṇa. Of these stanzas, six, viz 5, 6 16 30 35 and 48 are in Prakrit and the remaining are in Sanskrit. The Prakrit of these stanzas is grammatically correct and graceful, but we cannot say the same about the Sanskrit of the same. Prakritisms occur there pretty often (e. g. चीन in 29). The subject matter of these stanzas covers topics such as homage to the goddess of learning (वर्ष 6) and Ambikā (28), the poet Puṣpadanta himself (5, 30, 35 39 40, 45), the poet and his Mahāpurāṇa (37), the relation between Bharata, the patron, and the poet (1, 4, 14, 26 35, 37 38, 42, 43, 44), and the glorification of Bharata, the poet patron (remaining stanzas). Bharata is mentioned and glorified in the body of the work (I. 2-8; XXXVII. 8-8; CII. 15) and also in the Ghaṭṭā lines and the *praplika* at the end of each *saṃdhi* (पुष्पदन्तपुष्पदन्तिय नृपते) of the Mahāpurāṇa. There are three stanzas in Sanskrit in some Mss. of the Jambharacarī glorifying Nanna, Bharata's son and successor in office; and a long *pradasta* at the end of the Nayakmoḍīracarī (page 112) gives some

We have now an excellent account of the *Rastrakūtas and their Times* by Dr A S Altekar (Poona, 1934) We find that a few pages (115-123) are devoted there to the political events of Kṛṣṇa III (939-968 A. D.) We also have there a section dealing with education and literature (Chapter xiv) of the period And yet, we do not find any reference in the book to Bharata, the minister of Kṛṣṇa III, nor do we find any reference to the Poet On the contrary we read on page 412 a remark to the effect that there is hardly any output of Prakrit Literature during the period Puspadanta, under the patronage of Bharata and his son Nanna, composed three works in Apabhramśī, which covering as they do over 2000 pages of the size of the present volume, cannot be easily ignored, nor can Bharata, the patron of learning, be neglected, who constantly urged on the poet to make the best use of his gifts It will not therefore be out of place to construct the story of the life of Bharata, the forgotten patron of Prakrit Literature, from out of the material like the references in the works of Puspadanta and the praśasti stanzas

Kṛṣṇa III is known in Puspadanta's works by three names Tudiga, Suhātungarāya (Sk Subhatungarāja) and Vallabhaurpa He came to the throne in 939 A. D., and ruled up to 968 A. D. In this year he was succeeded by his younger brother Khottigadeva It was during the reign of Khottigadeva, in 972 A. D., that Mānyakheta, the capital of the later Rāstrakūtas, was plundered by the king of Dhārā Bharata was the minister of Kṛṣṇa III. Nanna, Bharata's son, also, is mentioned as a minister of Suhātungarāya, i. e., Kṛṣṇa III Bharata however was still living when Puspadanta's Mahāpurāṇa was completed, i. e., upto 965 A. D. As Kṛṣṇa III died in 968 A. D., we have to suppose that Bharata must have died between 965 and 968 A. D., so that his son, Nanna, could succeed his father by 968 A. D. After the death of Bharata, Nanna extended his patronage to Puspadanta and induced him to write Jasaharacarīu and Nāyakumāracarīu

Bharata seems to have come from the family of Kondella gotra (Sk Kaundinya) This was a rich family and held the office of ministers (महामन्त्राद्वय वरा, 46), but had become poor There are references which indicate that Bharata regained the lost wealth of his family by devoted service to his master (सतानक्रमतो गतापि हि रमा रुद्रा प्रभो सेवया) His grandfather's name was Annaīya or Annayya. His

The poet Puspadanta came of a Brahmin family of Kāśyapa gotra. His father's name was Keśava and mother's name was Mugdhādevī. Both of them were devotees of Śiva, but were later converted to Jainism. Puspadanta had a dark complexion and a lean body. He does not seem to have married. He was in extreme poverty, had neither property nor house, and yet he possessed a lord's noble mind (5). He seems to have been in the court of a king named Bharava or Virarāja, and written a poem on him, but being insulted there, left his court, and came to Mānyakheta, modern Malkhed, which was then the capital of the Rāstrakūṭas, and very prosperous (36). There he stayed in a grove of trees, outside the town; two citizens, Indrarāja and Annaīya by name, saw him there and persuaded him to go to the house of Bharata where he would have a good reception. The poet was at first unwilling because of his bitter experiences of the wicked world in the past. He was however assured by these men that Bharata was a man of a different type, that he was so kind and noble. The poet thereupon went to him, had a good reception, as assured. After a few days' rest Bharata requested him to write the Mahāpurāṇa so that his poetic gifts could be rightly used. It was in this way that the poet began his Mahāpurāṇa in the house of Bharata in the Siddhārtha year of the Saka era, 1 e. in 959 A. D. The poet was out of mood after he had completed his Ādipurāṇa, 1 e., the first thirty-seven samdhis, and halted there for some time. The goddess of learning appeared before him and encouraged him to resume the work. Bharata also induced him to complete the work. The poet thereupon finished his work in the Krodhana year of the Saka era, 1 e., in 965 A. D. He seems to have been highly pleased with his performance, and out of satisfaction and just pride he wrote—

अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीति स्थितिश्छन्दसा-
मर्थलक्षितयो रसान् विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतय ।
किं चान्ययदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्वियने
द्वावेतौ भगवतपुष्पदशानो सिद्ध ययोरीदृशम् ॥ (37)

in the same spirit which prompted Vyāsa of the Mahābhārata to say—
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्कचित् ।

For the Mahāpurāṇa is as sacred to the Jains as the Mahābhārata is to the Hindus. The poet attributed the successful completion of the

work as much to his genius as to the generosity of Bharata. His fame as poet travelled far and wide as that of Bharata for his generosity. It appears that Bharata died within three years of the completion of the Mahāpurāṇa, Nanna succeeded him in the office, extended his patronage to Puṣpadanta and asked him to write two more poems in Apabhraṃśa, Jambhacariu and Nayakumāracarīu. The glory of the Rāṣtrakutas, however soon came to the end. Their capital Mānyakheta, was plundered in 972 A. D. and the poet became destitute once more (कण्ठी दलितं करिष्यति यतः शत्रुघ्नस्य कविः 36)

WHAT IS A MAHĀPURĀNA?

The Digambara Jains hold that their sacred literature consisting of Purvas and Angas is lost; they do not therefore accept the authority of the Canon of the Svetāmbaras. The Canon according to the Digambaras, consists of four divisions (i) Prathamānuyoga, lives of Tirthankaras and other great men of the faith; in other terms, the kathā literature; (ii) Karandānuyoga, description of the geography of the universe (iii) Carandānuyoga, rules of conduct for monks and laymen; and (iv) Dravyānuyoga, philosophical categories or philosophy. According to this classification works like the present text fall under the category of Prathamānuyoga.

The Mahāpurāṇa is a term peculiar to the Jain literature and means a great narrative of the ancient times. There are purāṇas or old tales in the Jain Literature, but they narrate the life of a single individual or holy person. The Mahāpurāṇa, on the other hand describes the lives of sixty-three prominent men of the Jain faith. Jināsena uses the term Mahāpurāṇa as a synonym for Triśatīlakṣaṇa, while Hemacandra calls his work on the theme as Triśatīlakṣī puruṣacarita, i. e. the lives of sixty-three prominent men (śatīkīpuruṣa). Puṣpadanta uses the term Mahāpurāṇa to alternate with Tmatthimahāpurāṇagāṇanīkī a, Adoration of the Virtues or qualities of Sixty-three Great Men. The term purāṇa is defined in the Hindu Literature as follows :—

सर्गस्य प्रतिहर्गस्य रंशो मन्वन्तराणि च ।

रंशपुराणि चैव पुराणं स्यादक्षयम् ॥

The purāṇa deals with the five topics, viz., the creation, the dissolution or secondary creation, dynasties, epochs between the Manus and the history of the dynasties. This definition is applicable to our

Mahāpurāṇa as well, for we do find the five topics mentioned above in our work. Still it is interesting to see how the Jains themselves interpret the term Jinasena who is a predecessor of Puspadanta in the writing of a Mahāpurāṇa says —

तीर्थेशामपि चकेशां हलिनामर्षचक्रिणाम् ।
 त्रिपटिलक्षण वक्ष्ये पुराण तद्विद्विषामपि ॥
 पुरातनं पुराण स्यात्तन्महन्महदाश्रयात् ।
 महद्विषयदिष्टत्वात्तन्महाश्रेयोनुशासनात् ॥
 कवि पुराणमाश्रित्य प्रसूतत्वात्पुराणता ।
 महत्त्व स्वमहिम्नैव तस्येत्यन्योर्निरूप्यते ॥
 महापुरुषसचन्धि महाभ्युदयशासनम् ।
 महापुराणामान्त्रात्मत एतन्महर्षिभिः ॥ I. 20-23

“I shall recite the narrative of sixty three ancient persons, 1 e, of the Tirthamkaras, of the Cakravartins, of Baladevas, of half-Cakravartins (1 e Vāsudevas) and of their opponents (1 e, of Prati-Vāsudevas) The work is called ‘purāṇa’ because it is a narrative of the ancients It is called ‘great’ because it relates to the great (persons), or because it is narrated by the great (sages) or because it teaches (the way to) great bliss Other writers say that, because it originated with the old poet it is called ‘purāṇa’ and it is called ‘great’ because of its intrinsic greatness The great sages have called it a Mahāpurāṇa because it relates to great men and because it teaches the bliss” A Tīppana on I 9 3 of our text seems to make a distinction between *aiḥāsa* and *purāṇa* and says that *aiḥāsa* means the narrative of a single individual while *purāṇa* 1 e Mahāpurāṇa means narratives of sixty-three great men (अहहास एकपुरुषाश्रिता कथा, पुराण त्रिपटि-पुरुषाश्रिता कथा पुराणानि) The Mahāpurāṇa therefore is a work on the lives of sixty-three great men of the Jain faith, and thus occupies the same place of importance as the Mahābhārata or the Rāmāyana in Hinduism The Mahāpurāṇa however lacks the unity of the Mahābhārata or of the Rāmāyana and therefore cannot be called an epic in the strictest sense of the term

The sixty-three great men whose lives are described in a Mahāpurāṇa are classified under five heads I give their names below for ready reference —

- (a) The Tirthamkaras (24) (1) वृषभ or कृषभ, (2) अजित, (3) शंभव or समव, (4) अभिनन्दन, (5) सुमति, (6) पद्मव्रत, (7) सुपात्र्य (8) चन्द्रव्रत,

(9) जलदत्त or सुनिधि; (10) श्रीवत्स; (11) योगेश; (12) कालपुराण; (13) निरुद्ध; (14) कालदास; (15) वर्य; (16) राजनि; (17) कुमुद; (18) भर; (19) गति; (20) गुणग; (21) गति; (22) गति; (23) वार्य; and (24) नरपति.

(b) The Cakravartins (12) (1) भर; (2) वर्य; (3) मन्वत्; (4) कालदास; (5) राजनि; (6) कुमुद; (7) भर; (8) गुणग or गुणग; (9) पद्म; (10) इतिवत्; (11) जलदत्त or जल; and (12) नरपति.

(c) The Vāsudevas (9) (1) निरुद्ध; (2) विरुद्ध; (3) वर्य; (4) जलदत्त; (5) पुनर्विद्ध; (6) पुनर्विद्ध; (7) वर्य; (8) नरपति; and (9) काल

(d) The Baladevas (9); (1) जलदत्त; (2) निरुद्ध; (3) वर्य; (4) गुणग; (5) पुनर्विद्ध; (6) कालदास; (7) वर्य; (8) पद्म; and (9) पद्म (वत्स).

(e) The Prati Vāsudevas (9) (1) मन्वत्; (2) वर्य; (3) योगेश; (4) वर्य; (5) निरुद्ध; (6) वर्य; (7) वर्य; (8) वर्य; and (9) मन्वत् or मन्वत्.

It is to be noted that Hānti, Kunthu and Ara are Tirthankaras as well as Cakravartins.

WORKS ON SIXTYTHREE GREAT MEN

The oldest known published work on sixty-three great men is the Mahāpurāṇa or more accurately Ādipurāṇa of Jinasaṇa (c. 850-875 A. D.). Jinasaṇa calls his work *Triṣṭhalakṣaṇamahāpurāṇa* *saṃgraha*, and thus seems to have planned a complete Mahāpurāṇa. He was however unable to complete it, probably on account of his death. We get from his hand forty-two purāṇas only of the Ādipurāṇa, the remaining five purāṇas of the Ādipurāṇa and the whole of the Uttarapurāṇa being written by his disciple Gaṇabhadra and completed in 890 of the Śaka era, i. e., in 898 A. D. at Vaiṣṭhīpura, under the patronage of Lokāditya, a feudatory of Akṣaravara alias Kṛṣṇa II (880-914 A. D.). This Mahāpurāṇa is written in Sanskrit, and printed twice, first at Kolhapur with a Marāṭhī translation by Kallaṇa Nṛpa and again at Indore with a Hindi translation by P. Oditi Lakṣmaṇa Jain. It is written from the point of view of the Digambara Jains.

The second known work on the subject is the present work and belongs to the Digambara sect of the Jains.

The third work is the *Triṣṭhalakṣapūrvācārī* by Hemamandra. It is a Śvetāmbara work and is written in Sanskrit. It is one of the last

works of Hemacandra and so may have been written about 1170-72 A D It was published by the Jaina Dharma Prasārika Saṁhā of Bhavnagar in 1905-9, and a reprint of it is being issued at present

The Jain Granthāvalī published in 1965 of the Vikrama era, 1 c in 1907-8 records three works named Mahāpuruṣacarita on page 229 One of them is by Śilācārya (circa 925 of the Vikrama era, 1 c. 888 A D), is written in Prakrit and its Mss are said to be deposited in the famous Patan Bhandar No 1 and also at Jesalmer Bhandar The same book mentions another work on the subject in Prakrit by Āmrasūri on the authority of Brhattippanikā It mentions a third work in Sanskrit on the theme by Merutunga, Mss of which are deposited in two Bhandars at Patan and also at Ahmedabad I propose to give in the last volume a concordance of Jinasena-Gunabhadra, Paspadanta and Hemacandra, as also of Śilācārya and Merutunga if these two last named works become available to me

THE GLOSS ON THE CONSTITUTED TEXT

The reader will notice that the bottom portion of the printed text is divided into two parts The first part, separated from the text by a wavy line gives the variants found in the Mss or recorded in the margin of Mss, and also in the Tīppana of Prabhācandra The second part, separated from the first part by a double line, gives a short gloss on the text in Sanskrit I have culled it from the marginal notes in Mss G, K, M and P, and also from the Tīppana of Prabhācandra In selecting the gloss for this purpose I have kept in mind the difficulties which a reader is likely to meet with while going through the text, and I hope that if the reader is equipped with a good knowledge of the Sanskrit language and literature and some elementary knowledge of the grammar of the Prakrit and Apabhramśa dialects, he will be able to understand the text easily with the help of this gloss Extracts from Prabhācandra's Tīppana, where they appeared to be interesting but rather extensive to be accommodated at the bottom of the text are given in the notes at the end I hope this method of supplying the gloss at the bottom of the page will be appreciated by the reader as it taxes him less, and helps me to reduce the volume of notes It should be noted that I have not retouched the text of the gloss, but have retained it as it was found in Mss even though I felt at times tempted to improve upon uncouth Prakritisms or unwarrant-

ed historical allusions (see for example, the gloss on ४११ निदिशेत् on page 8)

ACKNOWLEDGMENT OF OBLIGATIONS

It now remains for me to perform the pleasant duty of thanking all those who, one way or another assisted me in the production of the present volume. I must thank in the first place the Trustees and the secretaries of the Manikchand Digambara Jaina Granthamālā who were kind enough to find the necessary fund for the preparation and publication of this volume, and I feel sure they will also find the necessary funds to complete the work. The poetic genius of Īśpadanta required the benevolent encouragement of his patron Bharata in the 10th century. After the plunder of Māyakheda in 972 A. D. the poet became desolate and remained uncared for for about a thousand years, and had it not been for the help that the Trustees of the Series offered to the Editor his efforts to bring the poet out of oblivion would have been of no avail. The spirit of Īśpadanta will thus take a special delight in having once more discovered the spirit of his former patron regenerated in the Trustees of the Series. The Editor hopes that the same spirit will find a few thousand rupees more to enable him to complete the task that he has undertaken to rescue from oblivion this monumental work of the Poet.

To Professor Hiralal Jam of King Edward College, Amraoti, I owe a special debt of gratitude. He moved heaven and earth to find the funds for this publication. He has helped me in various other ways, in securing the loan of Mss from Kāranjī and Jaipore, and in sending me bits of information that he came across. To Pandit Nathuram Premi, the veteran expert of Jain literature and an adventurous publisher of Jain works, I also tender my heart felt thanks.

I would like to record here my sense of high appreciation of the services which Mr. R. G. Marathe, M. A., formerly my pupil and now professor of Ardha Māgadhī at the Willingdon College, Sangli, rendered me in the preparation of this work. He did a lot of copying work for me and helped me at the time of collation as well.

Nowrosjee Wadia College, Poona }
August 1937

P. L. VALDTA

ग्रन्थ-परिचय

१ अपभ्रंश-साहित्यकी खोज

आज से बीस वर्ष पूर्व अपभ्रंश भाषा का उपलब्ध साहित्य नहीं के बराबर था। कुछ रफ़्त रचनाएँ जैन धार्मिक समाज में प्रचलित थीं, पर न तो विद्वत्समर को उनका कुछ परिचय था और न जैन समाज में ही भाषा की दृष्टिसे उनका कोई विशेष महत्त्व था। किन्तु गत बीस वर्ष में उस भाषा के अनेकों ग्रन्थों का पता चला है और धीरे धीरे उनका सूक्ष्म अध्ययन, सुसंशोधित प्रकाशन और विद्वत्समाज में आकर भी बढ़ रहा है। विशेष रूप से इस ओर ध्यान तभी से गया है जब से मने सन् १९२४ में कारजा के भट्टारे का अवलोकन किया और वहाँ के उपलब्ध दश बारह अपभ्रंश ग्रन्थों का परिचय मध्यप्रान्त के हस्तलिखित संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की सूची में प्रकाशित कराया, तथा उन ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ ही कारजा ग्रंथमाला की स्थापना करवाई। तब से मेरी इस साहित्य की खोज बराबर जारी है। जिसके फलस्वरूप मुझे इस भाषाका विपुल साहित्य उपलब्ध हुआ है। हर्ष की बात है कि इस साहित्य के अध्ययन, संशोधन और प्रकाशन में अब अनेक सुप्रतिष्ठित विद्वान् मेरा हाथ बँटा रहे हैं।

२ पुष्पदन्त के ग्रन्थ

इस खोज से अबतक जितने ग्रन्थों का पता लगा है, उनमें पुष्पदन्त के ग्रन्थ विशेष महत्त्वशाली ज्ञात हुए हैं। वे भाषा की दृष्टि से सब से प्राँढ़, काव्य की दृष्टि से सबसे सुन्दर तथा प्राचीनता में, एक स्वयम्भूके काव्यों को छोड़, सबसे पूर्व के प्रमाणित होते हैं। पुष्पदन्त के जो तीन ग्रन्थ अबतक पाये गये हैं उनमें से 'जसहर-चरित' प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादक श्रीयुत डा. वेद्य द्वारा ही सम्पादित होकर कारजा-सीरीज में और 'णायकुमार-चरित' मेरे द्वारा सम्पादित होकर देवेन्द्र कीर्ति-सीरीज में प्रकाशित हो चुके हैं। तीसरा ग्रन्थ यही प्रस्तुत महापुराण है। इसे भी कारजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था और इसी के लिये इस ग्रन्थ का संशोधन सम्पादन प्रारम्भ किया गया था किन्तु उस सीरीज में प्रकाशित होने में अभी कुछ विलम्ब होता। प्रकाशनीय साहित्य बहुत विपुल मात्रा में तैयार है। इसी से अवसर पाकर यह ग्रन्थ इस ग्रन्थमालाद्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

पूरे महापुराण में एक सौ दो सन्धि अर्थात् परिच्छेद हैं। इनमें से प्रथम सैंतीस संधियों में आदिपुराण समाप्त हो जाता है। यही आदिपुराण वर्तमान संस्करण में प्रस्तुत है। शेष पैंसठ संधियाँ उत्तरपुराण की हैं जिन्हें आगे दो ग्रन्थों में प्रकाशित कराने का विचार है। इस उत्तरपुराण का एक खण्ड मेरे एक जर्मन मित्र डा. लुडविग् आल्सडॉर्फ ने सम्पादित कर के अभी अभी जर्मनी में प्रकाशित

करा दिया जाय और इसी विचार से मित्र आससहोर्ण भी बड़े ही परिश्रम से अपने स्तंभकरण का पाठ नावरी छिवि में तैयार कर दिया, भूमिका का भी अंग्रेजी अनुबाध कर बाबा और मोदस व अनुक्रमविज्ञापि भी बना कर भेज दी। पर इसके प्रेस में भेजने में कुछ विस्मय हुआ और इसी बीच अंग्रेजी से उनका रोमन छिवि में अंग्रेज भाषामय भूमिकाविसहित स्तंभकरण प्रकट हो गया। तब विचार हुआ कि अब इसके नावरी छिवि के स्तंभकरण विक्रय में नहीं करने की आवश्यकता नहीं है। विद्वानों की बीच उपलब्ध हो ही गया है। अब उत्तरपुराण के प्रथम बन्ध प्रकाशन में ही बयास्थान इन का उपयोग करना उचित होगा। यही विचार कर इसकी छपाई स्थगित करा दी गई।

३ संशोधन-सामग्री

प्रस्तुत आदिपुराण का संशोधन आठ भाषीन हस्तलिखित प्रतिबों पर से किया गया है। इनमें से पाँच का तो पूर्ण रूप से उपयोग किया गया है और उनके पाठ-भेद विव गये हैं, और शेष तीन का जब तब उपयोग किया गया है, क्योंकि कि या तो उनके पाठ उस पाँच में न किसी एक के साथ अभिन्न थे या वे अपेक्षाकृत अर्वाचीन थे। जिन प्रतिबों का पूरा पूरा उपयोग किया गया है उनमें से दो ब्रह्माचार्यमन्-मिनमंवरि, कारंजा की हैं, दो पाँडारकर ओरिखंडक रिचर्ड ईस्टलैण्ड, पुना, की और एक तात्वासाहिब पाटील, नाइजी (कोम्हापुर) के पाठ से प्राप्त। इनमें से कारंजा के ब्रह्माचार्यमन्मंवरि की संस्कृत १५७९ में लिखित प्रतिलिपि प्रमाण रूपसे सामग्री रख कर पाठ संशोधन किया गया है।

४ प्रमाणन्वृत्त टिप्पण

पाठ संशोधन में सब से अधिक महत्वपूर्ण सहायता प्रमाणन्वृत्त महा पुराण टिप्पण से मिली। आदिपुराण-टिप्पण की एक प्रति सम्पादक की संहार कर-इम्प्रिंटपूठ से प्राप्त हुई जिसमें संस्कृत का उल्लेख नहीं पाया गया। उत्तर पुराण के टिप्पण की एक प्रति जयपुर से प्राप्त हो गई थी जिसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह टिप्पण संवत् १०८० = १०११ ईस्वी में, अर्थात् महापुराण के रचे जाने के साठ वर्ष के भीतर ही लिखा गया था। उक्त समस्त माकषं म राजा याज्ञ का राज्य था। प्रमाणन्वृत्त ने इस टिप्पण की 'सामरस्येन सिद्धांतिक से परिज्ञात करके तथा सूक्ष्मटिप्पणिका का अवलोकन करके लिखा था। संभव है यह सूक्ष्मटिप्पणिका स्वयं कवि पुष्करंत की ही किसी हुई हो।

५ संघियोंके प्रारम्भके स्फुट पद्य

महापुराण की मिक मित्र प्रतिबों में कुछ संघियोंके प्रारंभ में कवि के आश्रयदाता भण्ट की प्रशंसा के संघ पाये जाते हैं। इनमें से कुछ की भाषा प्राकृत और शेष सबकी

संस्कृत है। इसमें सन्देह नहीं कि इनकी रचना स्वयं कवि पुष्पदंत की ही है, क्योंकि अन्य किसी कवि को उनके आश्रयदाता की ऐसी गुणगाथा गाने के उत्साहका कोई कारण नहीं दिखता। दूसरे इनमें से कुछ छन्दों में स्वयं पुष्पदंत के व्यक्तिगत भावों और अनुभवों का उल्लेख है जो दूसरे कवि के द्वारा नहीं किया जा सकता। ऐसे कुल पद्यों की संख्या ४८ है। पर ये सभी पद्य सभी प्रतियों में नहीं पाये जाते और न उनमें से प्रत्येक छंद किसी एक निर्दिष्ट सधिमें ही पाया जाता है। किसी प्रति में कहीं कोई पद्य, तो दूसरी प्रतिमें कहीं अन्यत्र, या तीसरीमें वह बिलकुल ही नहीं पाया जाता। इस अवस्थासे अनुमानतः यह निष्कर्ष निकलता है कि ये पद्य कविने ग्रंथरचना के समय ही रचकर विशेष विशेष स्थानों पर नहीं रखे। ग्रंथरचना समाप्त हो जाने, तथा उसकी कुछ प्रतिलिपियाँ बाहर चले जाने पर यथावसर कविने जो पद्य कभी रचा उसे अपनी प्रति में किसी सधि के प्रारम्भ में लिख दिया, ऐसा जान पड़ता है। इससे उस 'धारानाथ नरेन्द्र' के उल्लेख वाले पद्य की गुत्थी भी सुलझ जाती है जो पूना और कारंजा वाली प्रतियों में ५० वीं सधि के प्रारम्भमें और जयपुर की प्रतिमें ६९ वीं सधि के प्रारम्भमें, और तात्या साहिब वाली प्रतिमें कहीं भी नहीं पाया जाता। इस पद्य में धाराके नरेन्द्र श्री हर्षदेव के मान्यखेट पर आक्रमण का उल्लेख है जो 'पाइयलच्छी-नाम-माला' के उल्लेख परसे १०२९ सवत् की घटना सिद्ध होती है। इस घटना का उल्लेख सात वर्ष पूर्ण समाप्त हुए ग्रंथ के बीच में कैसे आया यह बहुत समय तक मेरे लिये एक उलझन बनी रही जिसके सुलझाने के लिये मुझे अनेक अनुमान लगाना पड़े। किन्तु अब इन पद्यों की रचना के इतिहास परसे यह सहज हो समझमें आजाता है कि अन्य अनेक पद्यों के समान उसे भी कवि ने पाँछे रचकर अपने ग्रंथ में डाला होगा।

६ कविके आश्रयदाता भरत का परिचय

उक्त पद्यों की प्राकृत भाषा बिलकुल शुद्ध और सुन्दर है। संस्कृत पद्यों में कहीं कहीं प्राकृत का प्रभाव आ गया है। इन पद्यों का विषय कहीं सरस्वती देवी की उपासना है, कहीं कविका आत्म परिचय है, पर अधिकांश पद्यों में कविके आश्रयदाता भरत की प्रशंसा पाई जाती है। इन पद्यों तथा महापुराण की उत्थानिका व पुष्पिकाओं और जसहरचरित व णायकुमारचरित के उल्लेखों पर से मध्यात्मा भरत और उसके कुलुम्ब का खासा इतिहास हमें मिल जाता है। भरत राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराज तृतीय के मंत्री थे। इस नरेश के तुडुंग, शुभतुंगराय और बल्लभराय नाम भी पुष्पदंत के ग्रंथों में पाये जाते हैं। इन्होंने सन् ९३९ से ९६८ तक राज्य किया। उनके पश्चात् उनके लघुभ्राता खोद्विगदेव सिंहासनासूढ हुए। उन्हींके राज्य में सन् ९७२ (विक्रम १०२९) में उनकी राजधानी मान्यखेट पर धारानरेश हर्षदेव का आक्रमण हुआ था। महापुराण की समाप्ति अर्थात् सन् ९६५ तक भरत मंत्री जीवित थे। अन्य दो काव्यों की रचना के समय उनके पुत्र णण मन्त्रिपद को विभूषित कर रहे थे। इस बीच में या तो भरतजी का परलोकवास हो गया, या उन्होंने वैराग्य धारण कर लिया होगा।

भरत की विह्वल भोज के थे। उनके कुक्ष में महामात्र यह परम्परागत था। पर बीच में इस दुष्टमन्त्र को कुछ शुद्धि भोगने पड़े थे। इस दुरवस्था से भरत ने अपने कुक्ष का पुनरुद्धार किया। उनके पितामह का नाम अश्वप्य, पिता का देवध या ऐरव तथा माता का देवी था। इनके कोई ज्ञाता नहीं था। उनकी धर्मपत्नी का नाम कुन्धम्बा था। उनके सात पुत्र थे। जिनके नाम—वैवत, योवत, नक्ष, सोहन, युजवर्म, वृषप्य और संतप्य थे। भरत का शरीर सुदृढ़ और दूरोन्वित था और बर्ब इशाम। वे कुम्भराजकी भत्री, सेनानायक और हान्-दिमाय के अधिष्ठाता थे। इतना होने पर भी उनका वैषम्य तथा व्यवहार बहुत सीम्य और शिष्ट था। वे सटुषी की लानि और विद्यामयी थे। श्री और घर स्वामी का उनमें असाधारण संयोग था। उनका आचरण सबका निर्णय था। उनकमन में काव्य-रचना काव्य नायन और काव्य-लेखन होता जाता था। वैदिक, कीमूतवाहन, वृषीचि विष्वक्कुट और शातपाहन जैसे महाबाही थे। उनका घर सुनित्युत था। वारी रूप तडाक व देवमंदिर निर्माण कराने की अपेक्षा जैन पुराण की रचना और प्रसार कराना उन्हें अधिक अभीष्ट था। इसी हेतु उन्होंने कवि पुण्यस्त का आश्रय लेकर उनसे यह महान् उत्तम कार्य सम्पन्न कराया और संसार-समुद्रको तरंगों का साधन या किया।

७ कवि-परिचय।

कविपुत्र पुण्यस्त काव्यप मोक्षिष ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम कश्यप और माता का नाम सुन्धादेवी था। वे दोनों शिव के उपासक थे किन्तु पीछे उन्होंने जैन धर्म ग्रहण कर लिया था। पुण्यस्त का शरीर स्वाम और कृश था। उनका विवाह हुआ हो ऐसा जान नहीं पड़ता। उनके न घर-द्वार था, न वन सम्पत्ति, किन्तु उनका मन बड़ा ऊँचा और विशाल था। वे पहले किसी ऐरव या वीरराज नाम के राजा के आश्रय में रहे थे जिसकी प्रीति में उन्होंने कोई काव्य भी रचा था। किन्तु किसी कारण से सम्भवतः अपमानित होकर वे माण्डवंत जागये और वहाँ नगर के बाहर उपवन में तहल गये। हनुपत्र और मन्त्रवा नाम के दो नागरिकों ने उन्हें वहाँ देखा और इससे नगर में आकर भरत से मिलन का आग्रह किया। पहले कविपुत्र राजी नहीं हुए। क्योंकि उनका हृष कष्ट अनुभवी के कारण सुसार से और बलिष्ठ समाज से विरक्त हो गया था। किन्तु उन्हें जब यह आन्वसज विषा गया कि भरत सभी वृत्तों की प्रकृति के सज्जन हैं, तब वे बचपे मिलन पर राजी हुए। भरत के यहाँ उनका बड़ा रज्जगत स्कार हुआ। उन्हीं के दृष्टांत-धवन ॥ के रचल गये। कुछ दिनों के पश्चात् भरत ने उनसे महा-पुराण रचने की प्रार्थना की, जिससे उनकी काव्य-शक्ति का सुदृढित उपयोग हो और संसार का कल्याण हो। इस प्रकार कवि ने मित्रार्थ हन्त १५१ में महापुराण की रचना प्रारम्भ की। आदिपुराण पूरा होने पर कवि की फिर कुछ उन्नत हुआ जिसका स्वर्ण सरस्वती देवीसे विचारण करके उन्हें उत्तरपुराण पूरा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कवि ने महापुराण का कीर्तन राज १५५ में समाप्त किया।

उन्हें अपनी इस सफलता से बड़ा सुख और सतोष हुआ। उन्होंने कहा है कि “ इस रचना में प्राकृत के लक्षण, समस्त नीति, छंद, अलंकार, रस, तत्त्वार्थनिर्णय तब कुछ आगया है, यहाँ तक कि जो यहाँ है वह अन्यत्र कहीं नहीं है। धन्य है वे पुष्पदन्त और भरत जिनकी ऐसी सिद्धि मिली। ” इसे पढ़कर महाभारतकार व्यासके इन वचनोंका ध्यान आये बिना नहीं रहता—

‘यदिहास्ति तदन्यत्र यत्नेहास्ति न तत्कचित्’

जो यहाँ है वही अन्यत्र मिलेगा, जो यहाँ नहीं वह कहीं नहीं।

८ महापुराण के लक्षण

दिगम्बरमतानुसार महावीर स्वामीकी वाणी जिन ग्यारह ‘अंग’ और चौदह ‘पूर्व’ में ग्रन्थित थी वे अंग पूर्व सब विच्छिन्न हो गये। जो श्वेतावर अंग अब पाये जाते हैं उन्हें दिगम्बर समाज स्वीकार नहीं करता। वह अपना धार्मिक साहित्य प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, और द्रव्यानुयोग ऐसे चार अनुयोगों में विभाजित करता है। प्रथमानुयोग का विषय तीर्थंकरादि पुरुषोत्तमों का चरित्र वर्णन करता है। महापुराण इसी प्रथमानुयोग की एक शाखा है। उसमें चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ वासुदेव, नौ प्रतिवासुदेव और नौ बलदेव इन त्रैलोक्य शलाका-पुरुषों अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषोंका चरित्र वर्णन किया जाता है। पुष्पदन्त की इस रचना का भी यही विषय है और उसे उन्होंने “तिसष्टि-महा-पुरिस-गुणालंकार” नाम भी दिया है। जिनसेनने अपने संस्कृत महापुराण को भी त्रिषष्टि लक्षण नाम दिया है और हेमचन्द्राचार्यने भी त्रिषष्टि शलाका पुरुष-चरित।

जिनसेन और हेमचन्द्र के महापुराण छप चुके हैं। उनमें और प्रस्तुत ग्रंथमें कहाँ कैसा मेल व बेमेल है यह अन्तिम जिल्द की भूमिका में स्पष्ट किया जावेगा।

९ आभार-प्रदर्शन

इस महापुराण का सम्पादन मेरे प्रिय सुदृढ़ डॉ॰ परशुराम लक्ष्मण वैद्य ने किया है। पाठक इन विद्वान् सम्पादक से सुपरिचित ही होंगे, क्योंकि उनके सम्पादित अनेक प्राकृत जैनग्रन्थ छप चुके हैं। कारंजा-सीरीज का प्रथम ग्रन्थ (इन्ही पुष्पदन्तकी दूसरी रचना) भी इन्हीं विद्वान्द्वारा सम्पादित हुआ है। प्रस्तुत विशाल ग्रंथ के सजोधन सम्पादन में वैद्य जी ने कितना परिश्रम किया है यह मर्मज्ञ पाठक इस ग्रंथ के अवलोकन से ही समझ सकेंगे। अनेक प्रतियों में से सबसे शुद्ध पाठ चुनकर रखने में, अन्य सब पाठोंको फुट नोट में अंकित करने में, तथा उपलब्ध टिप्पणियाँ भी नीचे उद्धृत करने में उन्होंने बड़ी ही कुशलता और विद्वत्ता दिखलाई है। उनके इस परिश्रमके फल स्वरूप जिन्हें अपभ्रंश या प्राकृत पढ़ने का अभ्यास नहीं है किन्तु जो संस्कृत जानते हैं वे भी इस काव्य कलापूर्ण सुन्दर रचना का आनन्दोपभोग कर सकते हैं। उनकी इस निर्व्याज साहित्य-सेवा के लिये मैं तथा समस्त पाठकसमाज उनका उपकार माने बिना नहीं रह सकते।

म उपर कद चुका है कि इस महापुराण को पदसु कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था। और इस हेतु प्रथम इसकी हस्ताक्षरित प्रतियाँ कारंजा तथा अन्य स्थानों से संग्रह की गई थीं। अम्बावास जबरे ग्रन्थमाला फंड से इसकी प्रथम प्रत कीपी तैयार करने में तीनसी रुपया व्यर्ष हो चुका था, किन्तु पीछे इस ग्रन्थमाला में फंड की कमी के कारण इस अनुग्रहमाला प्रकाशन को रोकना पड़ा। इसी समय माणिक्यचम्पू-ग्रन्थमाला के अधिकारीबर्ग ने मुझे इस ग्रन्थमाला का सम्पादन और सहायकी मंत्री निर्वाचित किया और इस महाग्रन्थ के प्रकाशनकी अनुमति वही। अतएव माणिक्यचम्पू ग्रन्थमाला की ओर से मैं जबरे ग्रन्थमाला के अधिकारी बर्ग और विहापत गापाल सायजी जबरे का आभार मानता हूँ कि उन्होंने इस ग्रन्थ का प्रकाश न कर के कलस साहित्यो-द्धार की भावना से प्रेरित होकर अपनी लक्ष्य लक्ष सामग्री इस माला के उपयोग कार्य अर्पित कर दी।

१० आशा

यह साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास की सम्पत्ति के लिये विशेष रूपसे महत्त्वपूर्ण है। इर्माग्य से इसकी कवर करनेवालों की संख्या र्जन समाज में बहुत कम है। कितने ही समाजद्वितीय शास्त्रीय दानी बन्धुओं ने मुझे इस साहित्य के लिये इतना अधिक परिश्रम और व्यय करने से रोका है, और मेरे न कलमे-पर मुझे इस बात का बोधी बतलाया है कि मैं समाज का पैना इस अनुपयोगी प्रकाशन में व्यर्ष लर्ब कर रहा हूँ। ऐसी अवस्था में मैं इस समाज के अद्वितीय साहित्यसुखी और मेरे अर्द्ध मित्र तथा इस माला के सुयोग्य मंत्री एवं बाबूरामजी मेरी का विषयक से कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने ने इस साहित्य के महत्त्व की अच्छी तरह समझा है और अपने प्रभावशाली उद्योग से इस महाग्रन्थ का प्रकाशन संभव किया है। इस कार्य में कल विरोध जाबन् और संतोष होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि जैसा उन्होंने अपने बलम्य में कहा है, पुण्यवन्त और उनकी रचनाओं का परिचय सबसे पहले उन्होंने ही विस्तृतपारकी दिया था।

इस आशा ही नहीं यह निश्चय है कि उनके प्रयत्न और साहित्यमेरी समझ की उदारता से इस ग्रन्थ का श्रेय प्राप्त भी शीघ्र ही प्रकाशित हो सकेगा और इस प्रकार महाकवि पुण्यवन्त की समस्त रचनाओं का विस्तृतपार में प्रचार हो जायेगा। यह जानकर कितने प्रसन्नता न होगी कि पुण्यवन्त के पूर्वप्रकाशित हो ग्रन्थ बलहरपरित और जाबन्माराचरित अकाहावाह और नाबपुर विन्धविधा-सर्ग के पद-प के कोर्से में निपुण हो गये हैं।

माणिक्यचम्पूग्रन्थमालाकी अमीतक प्रकाशित सभी पुस्तकों का आभार छोड़ा रहा है जो इस ग्रन्थ के लिये अनुपयुक्त पाना गया। इसी कारण यह ग्रन्थ इस नई आकार में प्रकाशित किया जा रहा है। माला के पाठक, आशा है इस पक्ष करेंगे।

अमरावती }
१८-८ १० }

हीराकाङ्क शिव
सम्पादन और सहायकी

भाचार्य श्री दिनदत्त शान नरहर, जयपुर

तिसाडिमहापुरिसगुणालंकार

णाम

महापुराण

में ठहर कह चुका हूँ कि इस महापुराण को पहले कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था। और इस हेतु प्रथम इसकी इस्ताकिसित प्रतिर्गों कारंजा तथा अन्य स्थानों से संग्रह की गई थीं। अम्मावास पहले प्रथमाळा फंड से इसकी प्रथम प्रेस कोपी तयार करने में तीनही बरपा खर्च हो चुका था, किन्तु पीछे इस प्रथमाळा में फंड की कमी के कारण इस बहुम्यसाध्य प्रकाशन को रोकना पड़ा। इसी समय माबिकयचन्द्र-प्रथमाळा के अधिकारीवर्ग ने मुझे इस प्रथमाळा का सम्पादक और सहाकारी मंत्री निर्वाचित किया और इस महान् प्रयत्न के प्रकाशकी अनुमति दे दी। अतएव माबिकयचन्द्र प्रथमाळा की ओर से मैं पहले प्रथमाळा के अधिकारी वर्ग और विशेषतः गोपाळ सावत्री पहले का आभार मानता हूँ कि उन्होंने इस व्यवसाय का कमाक न कर के केवल साहित्यी-ज्ञान की भावना से प्रेरित होकर अपनी यह सब सामग्री इस माळा के उपयोगार्थ अर्पित कर दी।

१० आशा

यह साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास को समग्र के लिये विशेष रूपसे महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से इसकी कवर करवाकों की संख्या तीन सत्राज में बहुत कम है। किन्तु ही समाजहितैषी शास्त्रिणी बानी बन्धुओं ने मुझे इस साहित्य के लिये इतना अधिक परिश्रम और व्यय करने से रोका है और मेरे न कच्चे-पर मुझे इस बात का बोधी बतकाया है कि मैं समाज का पैसा इस अनुपयोगी प्रकाशन में व्यर्थ खर्च कर रहा हूँ। ऐसी अवस्था में मैं इस समाज के आतिथीय साहित्यसेवी और मेरे अद्वैत मित्र तथा इस माळा के सुयोग्य मंत्री पं० नाथूरामजी मेरी का विषयक से कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मे इस साहित्य के महत्त्व को अच्छी तरह समझा है और अपने प्रभावशाली उद्योग से इस महान् प्रयत्न का प्रकाशन संभव किया है। इस कार्य में उन्हें विशेष ज्ञान और संतोष होना स्वाभाविक ही है क्योंकि वेदा उन्होंने अपने बलव्य में कहा है, पुष्पवन्त और उनकी रचनाओं का परिचय सबसे पहले उन्हींमें ही विह्वलनारकी दिया था।

इस आशा ही नहीं वह निश्चय है कि उनके प्रयास और साहित्यसेवी समाज की उदारता से इस प्रयत्न का हीन भाव भी हीन ही प्रकाशित हो सकेगा और इस प्रकार महाकवि पुष्पवन्त की समस्त रचनाओं का विह्वलनार में प्रचार हो जायेगा। यह आश्चर्य किसे मरुचता न होमी कि पुष्पवन्त के पूर्वप्रकाशित दो ग्रंथ जलहरचरित और पाण्डुमारचरित अछाहावाय और नागपुर विन्वदिया-क्यों के पम्-ए के कोर्स में निष्पन्न हो गये हैं।

माबिकयचन्द्रप्रथमाळाकी असीतक प्रकाशित सभी पुस्तकों का आकार छोटा रहा है जो इस प्रयत्न के लिये अनुपयुक्त पाया गया। इसी कारण यह प्रयत्न इन बड़े आकार में प्रकाशित किया जा रहा है। माळा के छाहक, आशा है इसे पसंद करेंगे।

अमरावती }
१८-८ १० }

हीपकाज मिन
सम्पादक और सहामी

घत्ता—जेण सुणण सुहोहइ तिहुयणसोहइ होंति चारुफहाणइ ॥

10

उपज्जति पसत्थइ मुणियपयत्थइ मणुयहो पंच वि णाणइ ॥ २ ॥

3

त कहमि पुराणु पसिद्धणासु
उच्चदज्जु भूभगभीसु
भुवणेकरासु गयाहिराउ
तं दीर्णेदिणधणकणयपयर
अवहेरियखलयणु गुणमहंतु
दुग्गमदीहरपथेण रीणु
तरुकुसुमरेणुरंजियसमीरि
णटणवणि किर वीसमइ जाम
पणवेप्पिणु तेहिं पवुत्तु एम्व
परिमिरममररवगुमगुमति
करिसरवहिरियदिच्चक्कवालि
त सुणिवि भणइ अहिमाणमेरु
णउ दुर्ज्जणमउँहावकियाइ

सिद्धत्यवरिसि भुवणाहिरासु ।
तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु ।
अहिं अच्छइ तुडिगु महाणुभाउ ।
महि परिभमंतु मेपौडिणयर ।
दियहेहिं पराडउ पुप्फयंतु । 5
णवयदु जेम देहेण रीणु ।
मायदगोंछगोंदलियकीरि ।
तहिं विणिण पुरिस सपत्त ताम ।
भो खड गलियपावावलेव ।
किं किर णिवसहि णिज्जणवणंति । 10
पइसरहि ण किं पुरवरि विस्तालि ।
वरि खज्जइ गिरिकंदरि कसेरु ।
दीसतु कलुसभावंकियाइ ।

घत्ता—चर णरवर धवलच्छिहे होउ म कुच्छिहे मरउ सोणिमुहणिग्गमे ॥

खलकुच्छियपहुवयणइ भिउडियणयणइ म णिहालउ सूरुग्गमे ॥ ३ ॥ 15

c P तिहुयणु खोहइ

3 १ MP ओवद° and gloss in M उत्कृष्टकेशपाशम्, B नवदज्ज २ M बदीण°
३ MP मेवाडि°, B मेवाड° ४ K मायदगोंदिगोंदलिय° ५ MBP खज्जउ ६ M इउँहावकियाइ,
BP भठहावकियाइ

10 सुहोहइ सौख्यसमूहा 11 पयत्थ पदार्थ

3 1 b सिद्धत्यवरिसि सिद्धार्थनामसवत्सरे 2 a उच्चदज्जु उच्चदज्जुम्, b चोडहो चोह-
देशनृपस्य 3 b तुडिगु कृष्णराज 4 b यत्र मेलपाटीयनगरे 9 a तेहिं ताभ्याम् 11 a दिक्क-
वालि दिशामण्डले, करिसर° गजस्वर° 12 a अहिमाणमेरु पुण्यदन्तस्य विरुदमेतत् 14 धवल-
च्छिहे रज्ज्वललोचनाया, सोणिमुह° कटिच्छिद° 15 कुच्छियपहुवयणइ कुत्तिपतरात्रवन्नाति,
भिउडिय° भुक्कुटित°

पद्मनिर्वाणं तु सुहृत्मा तु
गुरुनाथपरमविपश्चिताम्
सज्जनसत्त्वधरात् पद्मम्
नरनृपसंघधरात् गरीशं
दुःखमन्मोहसंघारमन्
यथा—यौत जातु नहो मर्दिन एतज्जातिं नृकडदन्तम् जाणतु ॥

उपपन्नं सुहृत्सुहृत्मा तु ।
'मिदिदेयिपेवगन्मुम्भवंतु ।
हन्ति च योषोहिपदोहहन्तु ।
नृकडदन्तं नृकडदन्तं नृकडदन्तं । 10
य विजगति किं नामेन भरतु ।

मो गुणान्तरिर्हृदं निरुगति महत् पिच्छद परं संमाणा ॥ ५ ॥

6

लो विहिता निम्नि कथयिदु
आयुतु दिदु भग्नो जेम
पुं तातु नेन विजित परात्
संनोत्तु पिपयपेहि रन्तु
तुदु आयुतु पं गुणमणिहात्
पुपु एवं मनेपितु मनहार्द
यन्पद्मानिपेयभूमनां
नृकडदन्तं मोपनां
देवसुपुन कइ मणिद तान
जियसिपिपेयभूमनां जियसुपुदु
पं मणिद यानिद यीरना

नं निमुनिपि सो संवलिदं वंदु ।
यार्नरिमिपिहोतु जेम ।
यन् आरंभं अन्मापयितात् ।
निम्नुकडं पं परमधन्तु ।
तुं आरंभं पं पकयहो मात् । 6
पहंरिपिपेयभूमनां सुहृत्परात् ।
दिपिपेयं देवगं दिवमणात् ।
गदियार्द जेम कडदन्तिपेयं ।
मो पुपुनं ननिदिहियपान ।
निरिपेयं वीरं नरजगदिदु । 10
उपपन्नं लो निच्छत्तं पद ।

१ P डिदिद्विदेवि B डिदिदेवि २ M कडदन्त ३ P ननिदि thought marginal
Gloss विन्दतः

6 १ B Omits this line २ B Omits ६ of this line ३ M पुपु पुपु P पुपु पुपु
४ MBP परमधन्तं ५ B देवगं देवगं विजित ६ B वीरनाथ ७ MBPK ननिदि,
but GT निच्छत्तं and Gloss विन्द

7 ६ उदु-पदं तु उदु-पदं ८ ९ सज्जनसत्त्वधरा-देव, देवस्य पुत्रो मरु- 10 ६ पिपयदु
महान्निपेयभूमना- 11 ६ कडदु कडदु 13 दन्तिपेय विन्दतः, निच्छत्त विन्दतः

6 ६ ६ पद्मात् पुपु ६ ६ परमधन्तु विन्दतः ९ ६ देवसुपुन मने 10 ६ नरना-
निरिदु वीरनाथ रन्तु कडदन्तपरात् वीरं, कडदन्तपरात् वा कडदन्तपरात्, P वीरनाथ
कडदन्तपरात् रन्तु 11 ६ वीरनाथ कडदन्तः

ववगयविवेउ मसिफसणकाउ
णिक्कारुणु दारुणु वद्धरोसु
हयतिमिरणियरु वरकरणिहाणु
जइ ता किं सो मडियसराह
को गणइ पिसुणु अविसहियतेउ
जिणचरणकमलभत्तिहएण

सुदरपणसि किं रमइ काउ ।
दुज्जणु ससहावें लेइ दोसु ।
ण सुंहाइ उल्लयहो उईउ भाणु । ५
णउ रच्चइ वियसियसिरिहराहं ।
भुक्कउ छणैयंदहु सारमेउ ।
ता जांपिउ कच्चपिसल्लएण ।

घत्ता—णउ हउ होमि वियक्खणु ण मुणामि लक्खणु छंडु देसि ण वियाणमि ॥
जा विरइय जयघवहिं आसि मुणिंदहिं सा कह केम समणामि ॥ ८ ॥ 10

9

अकलंककविलकणयरमयाइ
दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं
णउ पीयइ पायजलजलाइ
भावाहिउ भौरवि भासु वासु
चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोणु

दियसुगयपुरदरणयसयाइं ।
णउ णायइं भरहवियारियाइं ।
अइहासपुराणइं णिम्लाइं ।
कोहलु कोमलगिरु काँलियासु ।
णालोइउं कइ ईसाणु बाणु । ५

8 १ MBP जुहाय २ P उयउ. ३ P छणइदहु. ४ P पयासमि but marginal gloss कवं
समानयामि वर्णयामि

9 १ B दत्तिल° २ MBP पायजलि° ३ M भारइ, B भारहमासु ४ MBP कालिदासु
५ MP णालोयउ

8 ४ a ववगय विवेउ नष्टविषेक, °कसणकाउ °कृष्णशरीर, b काउ काक 4 b ससहावें स्वस्व-
भावेन, लेइ युद्धाति 6 a मटियसराह मण्डितमरसाम्, b वियसिय सिरिहराह विकसितकमलानाम् 7 b
छणयदहु पूर्णिमाचन्द्रस्य, सारमेउ कुरुर 8 a °भत्तिहएण °मक्तियुक्तेन, b कच्च पिसल्लएण काव्य-
राक्षसेन पुण्यदन्तेन 9 लक्खणु व्याकरणम्, देसि देशी भाषा 10 विरइय विरचित्ता; अयवंदहिं
जगद्वन्द्वै; सभाणमि वर्णयामि

9. 1 a अकलंक व्यायकुमुदचन्द्रोदयकर्ता; कविल सांख्यदर्शने मूलकार; कणयर वैशेषिकदर्शने
मूलकार, b दिय वेदपाठक, सुगय बौद्ध, पुरदर चार्वाकमते ग्रन्थकार, णयसयाइ युक्तयोऽभिप्राया वा,
2 a दत्तिल विसाहिलुद्धारियाइं दत्तिलविसाहिलुद्धारितानि सगीतशास्त्राणि, b भरहवियारियाइ भरतमुनिहृत
नाट्यशास्त्रम् 3 a पायजल पाणिनिव्याकरणमाप्यम्; b अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा, पुराण त्रिपष्टिपुरुषा-
श्रिता कथा पुराणानि. 4 a भावाहिउ भावाधिक अर्थगौरववान्, वासु व्यासो महाभारतकार, b कोहलु
कूष्माण्ड कश्चित्कवि 5 a चउमुहु कश्चित्कवि, सयंभु पाँयडीवदरामायणकर्ता आपलीसंघीय.

[illegible]

नर कर्म करतु किरियापिबेत् ।
 नर जाणिय मई पद्य वि बिहसि ।
 सिरंतु धर्मंतु जयधरतु आतु ।
 परियधिउ नारिकौरसाह ।
 न कपी वि महार विपि अडिउ । 10
 न कडाकोसकि दिवचउ विहिउ ।
 नरसेई दिउमि अम्मदकतु ।
 कुडपन मरु को जलपिहाउ ।
 अं आसि कियेई मुजिगजहेपेई ।
 कि जहि अ ममिइह महुपरेन । 15
 मुहि मसिकुंथेउ कौं उल्लाह ।

प्रश्न—धरे धरे मर्मों अस्तारु दुष्प्रयोगारु विचरोकलय किं अन्वयः ।

ॐ नमः शिवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

10

बापबापासकेअससेआसिमो
 सामबन्धो लडबन्धोपसबन्धोसुहो
 गार्भुहो संमुहो होउ जकयो महं
 विप्रविहादणी बासबहेसरी
 बेपिबिहारीजी भुंमजी धंमजी

किंपरीबेसुबीनपुपीतोसिमो ।
 नारदेबाच देबाहिमो कुहो ।
 बितबंस्स पप भमेबं कइं ।
 सत्यसारंमकहोअमाअसरी ।
 नासि अरुअरे होसिया बंमबी ।

BP ବନ୍ଧୁ ଏବଂ M ବନ୍ଧୁ ଏବଂ MBP ବିଶିଷ୍ଟାବଳୀର ଏକ M ବନ୍ଧୁ ଏବଂ MBP ବ୍ୟବହାରକାରୀଙ୍କୁ

११. M. पाठशाला, काठमाडौं १२. B. पन्ना १३. K. कवि १४. MB. पन्ना १५. M. सिन्धु १६. G. पन्ना

9. 1GB का 14 MB सीमांकित

10 । MBP कीजिए । MB 'विद्यार्थी' P 'विद्यार्थी' ।

[illegible][illegible]

साहुदाणेण संजाइया जक्खिणी
उज्जयंतत्यलीकाणणावासिणी
सुंदरे मंदरे कंदरे कैलिली
पिकमायंदगोच्छेणें डिंभ गिय
खुद्दघाईविवेयावहा वाइणी
पोमवत्ताहवत्ता पवित्ता सई
कव्ववित्थारदुत्तारमगे सही
होउ बुद्धी महासत्थसामगिणी

णाणसम्मत्तवंती गुणायेक्खिणी ।
सव्वभासासमूहं समुव्वासिणी ।
तुंगणग्गोहपारोहं हिंदोलिरी ।
संथवती हसंती चवंती पियं ।
अविया गोरि गंधारि सिद्धाइणी । 10
णायचूडामणी देवि पोमावई ।
ठाँउ मज्झं मुहे देवया भारही ।
एरिसो छंदओ भण्ण सग्गिणी ।

घत्ता-मइ णिमियहो उयारहो सहगहीरहो जो णरु मसइ णियधहो ॥

जणदुच्चयणहिं दइहो तहो दुवियइहो दुज्जसु होउ मयधहो ॥ १० ॥ 15

II

अहवा हउं णिग्घिणु पाँवयम्मु
मिच्छाँहिरामरंजियविवेउ
उग्गयंसमावणिरंतराई
लइ हत्येँ झंपमि णहु सभाणु
लई तुच्छबुद्धि णिण्णट्टणाणु
लइ णिंदउ दुज्जणु मच्छरेण
करिमयरमीणजलयरवमालि

ण वियाणमि अज्ज वि किं पि धम्मु ।
ण वियाणमि जिणवरचयणभेउ ।
अलियाई जि कहमि कहंतराई ।
लइ कलसि समप्पमि जलणिहाणु ।
लइ अफ्फमि एउ महापुराणु । 5
लइ कहमि कव्वु किं वित्थरेण ।
चललवणजलहिवलयंतरालि ।

३ P कोलिणी ४ P °हिंदोलिणी ५ MBP °गोलेण ६ B omits this foot ७ BP उवयारहो
and gloss in P उपकारस्य उदारस्य वा ८ K होइ

11 १ M पावकम्मु २ MB मिच्छाहिमाण°, P मिच्छाहिमाण but gloss मिथ्याभिराम°
३ M उग्गव° and gloss उत्कट ४ MBP अदुत्तच्छ° ५ MBP करमि

7 a उज्जयंत ऊर्जयदिरि, गिरिनगरपर्वत 8 b णग्गोह षट्पक्ष° 9 a खुद्दघाई° खुद्दघादिबिवेकोप-
घातिका 11 a पोमवत्ताहवत्ता पद्मपत्राममुखी, b णायचूडामणी त्रिकणसर्पयुक्तमस्तका 12 a सही
सखी सहाया 13 a महासत्थसामगिणी महाशास्त्रसामग्रीसहिता 14 मसइ निन्दति, निषंघहो
महापुराणस्य 15 दुवियइहो दुर्विदग्धस्य, मयधहो मदान्धस्य

11 2 a मिच्छाहिराम° मिथ्या असत्य यथित्रकथादिक तत्राभिराम. अत्यासक्तिस्तया रक्षितो
विवेको यस्य स, b °भेउ °भेदो विशेष 3 a उग्गय उत्पन्न 4 a णहु सभाणु मानुशकं नम, b
जलणिहाणु समुद्रः 7 a °वमालि °कोलाहले

घत्ता-तर्हि छुहधवलियमंदिर णयणाणवरि णयर गयगिहु रिद्ध ॥
कुलमहिहरथणहारिण चमुमइणारिण भूमणु णं आइद्ध ॥ १२ ॥

13

सकेयांगयविरहीयणाइ	सासोयपवट्टियकचणाइ ।	
वहुलोयदिणणाणाफलाइ	णावइ कुलाइ धम्मज्जलाइ ।	
जहिं महुगंडुसहिं मिंचियाइं	विंभरियाहरणहिं अचियाइं ।	
सीमंतिणिपयपोमाइयाइ	वियंसंतविडववुड्डीगयाइं ।	
पियमणियसुहयाणासणाइ	जहिं मट्टरिसियवाणासणाइ ।	5
पट्टिपलियसूरभाचियरणाइ	उज्जाणइं णं भावियरणाइ ।	
उकलियालइ णवजोव्वणाइ	णिय मच्छइं णं सज्जणमणाइं ।	
जहिं सीयालाइ इसमाणियाइ	परकजसमाणाइ पाणियाइ ।	
जहिं जणैलुचणु कंटयकरालु	जलि णलिणं लिह्कावियउ णालु ।	
वाहिदि णिहियउ वियसतु कोसु	भणु को व ण ढंकइ गुणहिं दोसु ।	10
जहिं भमरु तर्हि जि मडिउ सुहाइ	मगहु मिरिणयणजणहु णाइं ।	

घत्ता—कुसुमरेणु जर्हि मिलियउ पर्वणुल्ललियउ कणयचणुणु महु भावइ ॥
दिणयरचूडामणियइ णहकामिणियइ कंचुउ परिहिउ णावइ ॥ १३ ॥

13. १ P वियसति but gloss विकसित २ M उपायलालइ ३ PK जणुलुचणु ४ M B P उदुल्ललियउ and gloss in P उच्छलित

12 छुह सुधाचूर्णम् 13 कुलमहिहरथणहारिण कुलपर्वता एव स्तना तान धरति, आइद्ध उरुहातम्.

13 1 a सकेएत्यादि-सकेतेनागता विरहिजना येयूयानेण, कुलपक्षे सकेतेन नागता विरहिजना येयु; b सासोएत्यादि-वनपक्षे, अशोकवृक्षे सह प्रवर्धिता काशनाशका चम्पकवृक्षायेण, अन्यत्र, अशोकै हर्ष सह प्रवर्धितानि काशनानि सुवर्णानि यत्र 3 a महुगंडुसहिं मयचुलकै, b विंभरिय विस्मृतानि साध्वर्याणि वा 4 a पयपोमाइयाइ पदपद्माहतानि, b विडव विटपा क्षाया, अन्यत्र विटय विटा इव 5 a पियेत्यादि-वनपक्षे, पिकानामभिमतता सुभगा आणाशब्दास्तेषामसन प्रचरण येणु, युद्धपक्षे, प्रियाणां मानिता अगोहृता सुभगानामाज्ञास्वना आदेशशब्दा 'सप्राम जित्वा मम हस्तिमुक्ताफलादिकमानेतव्यम्' इत्यादय येणु 6 a पट्टिपलियेत्यादि वनपक्षे, प्रतिस्खलितमादित्यप्रभाविचरण यत्र, युद्धपक्षे, प्रतिस्खलित दूराणां सुमटानां भावियरण प्रतापप्रसरण यत्र, b भावियरणाइ भावित परिकलित रण ये पुरुषे 7 a उकलियालइ कलोलमालाविराजितानि, पक्षे कलिरहितानि 8 b परकजेत्यादि-परकार्यं सति जना क्षीतला, स्वकार्यं उत्तावला (१) 9 b लिह्कावियउ गोपितम् 13 परिहिउ परिहित

अधियाणियकरदप्पणविसेसि
दीसइ सयिंयु महुमत्तिपाहिं
जहिं अलिउलु अलयावलि मिलंतु
अगणवावीसयदलहु जाइ
सजणियवहलमयरदरंगु
तं चेय खुदइ मत्तउ विहंगु

माणिकयाइयभिन्तीपणसि ।
मणियि सवत्ति हम्मइ तियाहिं ।
णिद्धादिउ सामाणिलि धुलंतु । 5
जलकीलिरयालावयणि टाट ।
जहिं सररहु सवोहइ पयंगु ।
सिरिहरहो अमुंदरु उट्टसगु ।

घत्ता—जहिं दीसइ तहिं महुउ जयउ जवहुउ ससिरिंयितविहसिउ ॥

उवरिविलयितरणिहे सगं धरणिहे पावइ पाहुउ पेसिउ ॥ १५ ॥ 10

16

जहिं मणहर सोहइ हट्टमग्गु
जहिं जेहलो भरिउ विहाइ माणु
फामिणिकमवियलियकुकुमेण
कणिरैणियसुकिकिणिणीसणेहिं
सुप्पइ गयमयहयफेणपंकि
जहिं राउलु रेहइ रयणजडिउ
जहिं धूवधूमकयमणवियार
जहिं विजयवडहदुहिसरेहिं
णवदिणयरकरतंविइ गोसि

यहुसंयउ णं जडचट्टवग्गु ।
पूरिउ पत्थेणं कणेहिं दोणु ।
णिल्लसइ जंतु जहिं जणु कमेण ।
गुप्पइ णिपडंतहिं भूसणेहिं ।
तंयोलुग्गालइ जणियसंकि । 5
णं अमराविमाणु गहाउ पडिउ ।
जलहरमंतिपं णच्चति मोर ।
सुव्वइ ण किं पि णारीणेहिं ।
विट्थिण्णइ जहिं पगणपप्पसि ।

१ M °रविअतिं विहसिउ

16 P पत्थेहिं ° MBP कणिराणियकिंकिणी° १ P सुम्पइ

५ a स विपु स्वप्रतिविम्बम्, b सवत्ति सपत्नी, तियाहिं स्त्रीभिः 5 a अलयावलि कुरलकेशपंक्तिः, b सा सा-
णिलि मुखश्चासानिले. 6 b पयंगु पतङ्ग सूर्य 8 a विहंगु हंस b सिरिहरहो कमलस्य तथा लक्ष्मीपते.
पुरुषस्य दुष्टसगोष्ठीव दृश्य 9 जवहुउ अभिनवमपूर्वम्, ससिरि विधत विहसिउ चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमणि-
विभूषितम् 10. तरणि सूर्य; पाहुउ प्रावृत्तम्.

16 I b महुसयउ बहु रत्नवस्त्राधिक तेन संस्तृतः, जडचट्टवग्गु मूर्तेशिष्यवर्ग 2 b पत्थेण प्रस्थेन,
पक्षे पार्थेन वागेन कृत्वा पूरितो द्रोणाचार्य. 3 b णिल्लसइ स्वलति; जंतु गच्छन् 4 b गुप्पइ पतति.
5 a सुप्पइ स्वलति 6 a राउलु राजगृहम्, रेहइ शोभते 7 a °कयमणवियार °श्रुतमनोविकाराः
°कृतसदेहा मयुरा 8 a विजयवडह° विजयपटह° 9 a गोसि प्रभाते.

बसा—हेवुठ जयसिरिसाटीहि राणकुमारहि बलभोबाजहि ताडिउ ॥

10

अभियज्जबाणूपयहि परकइबायहि जावर मोउ समाजिउ ॥ १६ ॥

17

तहि सेभिउ जामे अस्थि राउ
कजेसु वणु संजापवेउ
सीवामयु अ रामादिपयु
मियसमयामेसेमिपड्डुअयु
पविइंओ हव मिइअियओहु
बबभारि व शुद्धमि मुळमालु
ओईसव अ हयरोसहरिउ
जावर विम्वह संघाज हायु
सत्तंगु वि पाळइ रकु केम
पवओ हव पेइयमंममेहु
मंडळियमंडळपविइहुअरुणु

गाठउगुठ अ विष्णापमाउ ।
रिउबंसउहमि वं जापवेउ ।
सुरो हव परकुत्तंममालु ।
पावमि व पवंहुहाममालु ।
मयमारउ अ वासियममोहु ।
सुरवरकरि अ अविइंउदायु ।
वं अत्तययु यिउ होमि पुरिसु ।
वं वेयौयकरु महापहायु ।
पवाईमिबसु मियवेहु केम ।
मोबाहु व कवमहिउलमेहु ।
मियमाहु व मिहिउमियवसरु ।

5

10

बसा—वैवरेअहि मियि राणउ सो भीसीवउ सिहासमि दीहरकउ ॥

वेळिपिदेविरे मंडिउ वं मवईडिउ बहरीर सुयउकवउ ॥ १७ ॥

17 १ MBP मियुहु संवायु अयु १ MBP परवाकरु १ MBP अत्तेअहि ४ P वर जावी-
कउ ५ M वेळवेदी, B वेळमि P वेळवेमिहि.

10 हेवुठ कणुक, मोवाव मेरी (वरिः) 11 वरकरवाव हि विष्णापमिहि.

17 1 ॥ विष्णापमाउ अयवपुळका; वरि विहाराई- 2 ॥ लकावदेउ सीयमाउ, 3 ॥ परकुत्तंम-
मायु लपुमिराव अ सुई हव अस्थितेमा 4 ॥ पावमि वणवपुत्री हनुमल भीमो वा; पवंहुहाममायु वरकर
वअमः 5 ॥ पविइंओ वममाला; मिइअियओहु मिइअियओव पवे "ओइ"; ६ मयमाउ अ जाव;
पावि वममोहु वासियमरीवा पवे वासियमरीवा; 7 ॥ अविइंउदायु लमिअवमाला पवे वरकरवाव ८ ॥
"ओईउव वरमुमि 9 ॥ ववाई" अहण्णी मोवा वायवीरायेअमाल 10 "अववेहु" अत्तेय पवे लप
वेवा; अयवेवा इतिअईअहण्णीवा. 11 ॥ "मिहिउ" "परिउ"; ६ मिहिउमियवसरु मिहिउवमाला,
पवे, मिहण्णीवा मुणेअ अयव 12 अवईडिउ अमिहिउ.

18

अतुलियं यलपलकुलपलयकाल
तामायउ तहिं उज्जानवालु
अणवरयविहियन्नामतसेव
कुसुमसरपसरपसमणसमत्तु
अहिमयररयंरणरणिमियपाउ
आहृदलणिम्मियसमवसरण
चउतीसातिसयविसेमवतु
परमप्पउ परमु महाणभाउ
उप्पाइयकेवलं विमलणाणु
जगदुरियतिमिरणिहणेक्कभाणु
त णिम्मुणिवि दुज्जणहियम्मल्लु
परिवट्टियजिणधम्ममाणराउ
लहु पणविउ सत्तपयाइ गपि

जामच्छइ मेइणिसामिसालु ।
मिरमिहरचडावियवाहुडालु ।
मो पभणउ भो भो णिम्मुणि देव ।
णीमेममगलामउ पसत्तु ।
तेल्लोकणाहु जिणु वीयरउ । 5
चउदेवणिक्कायाणटकणु ।
अरहतु महतु अणतु सतु ।
तित्थयर वीर देवाहिदेउ ।
अट्टवित्पाडिहेगहिहाणु ।
विउल्लइरि पराइउ वड्डुमाणु । 10
परपुरटावाणल सुहउमल्लु ।
आसणु मुणवि रायाहिराउ ।
एहउ सुट्ठवयणु कैरतु किं पि ।

घत्ता—जय पयपणमियसुग्गुरु जय तिहुयणगुरु सामिय सयलपयाहिय ॥

जय णिहयणियामय भरहणियामय फुप्फयनतेयाहिय ॥ १८ ॥

15

इय महापुराणे तिमिद्रिमहापुत्तिमगुणालकां महाकइपुप्फयतविरइए

महाभव्वभरहाणुमणिण महाफव्वे सम्मइसमागमो णाम

पदमो परिच्छेधो समत्तो ॥ १ ॥

॥ सधि ॥ १ ॥

18 १ B °बलु ° M °खयरणिव° ३ MB °केवलविमल° ४ M विउलइर ५ MBP कहतु

18 1 b जामच्छइ यावदास्ते 2 b °वाहुडालु °प्रलम्बहस्त 4 a कुसुमसर° काम°, b णीसेत्त
मंगलासउ नि शेषमङ्गलाधय 5 a अहिमयर° आदित्य° 6 a आहृदल° इन्द्र° 7 b अणतु सुद्धात्म
इय्यापेक्षयानन्त, सतु पर्यायापेक्षया सान्त 10 b विउलइरि विपुलाचले, पराइउ प्राप्त, 18 a गपि गत्वा,
a करदु उषरन् 14 सयलपयाहिय सवलप्रजाहित 15 णिहयणियामय निहतनिजरोग, भरहणियामय
भरतक्षेत्रजनानां नियमदाता नियामक, पुप्फयं ततेयाधिय चन्द्रसूरीदपि तेजोधिक

पनिर्वाह करेवि वसन्तमणु अस्तिपथर्षसुष्मिड ॥

ना परमह साहं विषपरिवर्जितं पाप्मं क्षितिगहं गन्धद्विजं ॥ प्रथमं ॥

1

पर्यावरणमणि पलु बलिष्ठ
मार्पिणि का बि देवगुणमविधी
का बि मर्धद्वय महार महामर
कुबमर का बि मेर कसपागिनि
रूपयपालु का बि धुमिजालु
ज्वरकमजगंधोहरकरंड
कपयवपु का बि कनि चरिवड
बाबर महपलु उडुबिण्डुरिबड
का बि ससंग समुहमही विष
का बि स्वप्यल बेसागिनि व

[illegible]

MBP have at the commencement of this Samdhi the following stanzas in praise of the poet and his patron —

[illegible]

Gh gave t at the beginning of the third Saurāṣṭri and has कनराय for मुक-
राय, ब्रह्मराय for ब्रह्मराय and कौटिलि कनराय for कौटिलि कनराय.

१. १ MB फलाना १ MB "रामु" १ MBP (गहवेति) ४ MBP वेसुमनिकी ५ MBP
फलानका १ P व रवि

1. 1 एहमुत्तमिह हरेन कर्ता 2 पातु नार्त्त 3 क के निमित्त प्रिया 4 ना नि नि ननिनी की,
"ना नि नि" मागनामुत्त; 5 यो नि नि ननिनी 6 क के न ना नह "नन्तः 7 न कुवक न नीननन हृष्टी-
नननन 7 न मुनिना क न कुवकमुत्त "रा ना क न "रामुत्त 8 न "क न न न" क नानु व नानुनीकनि
न 9 क न रनन न रा नाना प्रनननन 9 न क न न न न क न नानन 10 न नह "नन" 11 न ननन
नननुत्त ननुत्त नी हृष्टी 12 नि नानन नी नि नानननुत्त हृष्टी. 13 क न न न ननुत्त ननुत्त
ननिनी

का वि जिणिंमत्तिपन्नारें
काहि वि दिट्ठउ पयहु थणत्थलु
मयणकुसवणरेहांरुणियउ
काहि वि घुलई हारु मणिमंडिउ
झलरिपडहमुइगसहासहिं

णच्चइ भरहभाववित्थारें ।
णाइ गिरगकुमिंकुंभत्थलु ।
समवंतेण पिण्ण न गणियउ । 15
णावइ कामें पासउ मंडिउ ।
वज्जतहिं जयजयणिगघोसहिं ।

प्रत्ता—आरूढउ महिचइ मत्तगइ मयजलघुलियचलालिगणे ॥

ण महिहरि केसरि खरणहरु पवणुल्लिलियतमालवणे ॥ १ ॥

2

चोइउ कुजरु कमसंचारें
चामरचवलें छत्तधारें
पत्तु णरेसरु तियसरवणणउ
णिम्मिउं सइ सोहम्मपहाणें
माणखभमणितोरणदामहिं
जलखाइयधूलीपायारहिं
वैल्लीवणपरिभमियमरालहिं
सुरणरविसहरयोत्तवमालहिं
गभीरहिं भुवणयलाऊरहिं
सरिगमपधणी सरसंधायहिं
उव्वसिरमाणच्चणभावहिं
ज रेहइ तहिं राउ पड्डउ

गडालीणभमरझकारें ।
गच्छमाणु संहं णियपरिवारें ।
दिट्ठउ समवसरणु वित्थिण्णउ ।
ठियउ एकजोयणपरिमाणें ।
कप्पियकपपायचारामहिं । 5
तियससरासणवण्णवियारहिं ।
चेईहरणाणाणडसालहिं ।
खयरुचाइयकुंसुमोमालहिं ।
वज्जंतहिं वहुमंगलत्तरहिं ।
तुवुरुणारयगेयणिणायहिं । 10
कणरणतआलावणिरावहिं ।
परमेसरु सवडमुहु दिट्ठउ ।

७ MBP °वणियउ ८ BP पिण्ण व ९ MBP घुलिय १० MBP आरूढु महीवइ

2 १ M छत्तें धारें, P छत्ताधारें २ P णिय सह परिवारें ३ M वलिय° ४ MBP सुकुसुममालहिं

13 b भरहभाववित्थारें सगीतभावविस्तारेण 14 b गिरगकुमिंकुंभत्थलु काम एव गजस्तस्य कुम्भस्थल-
मिव 15 a मयणकुस° नख°, b समवतेण कामखेदेन उपशमयुक्तेन वा मर्त्रा 16 b पासउ धन्वनपाश°
17 a °सहाहले °सहस्रै 18 मत्तगइ मत्तगजे 19 महिहरि पर्वते

2 1 a कमसंचारें चरणसचरणेन 2 a °चवलें °चपलेन 3 a °रवण्णउ रम्यम् 5 b कप्पिय°
विकुर्वणया कृत° 6 b तियससरासण° इन्द्रधनु 7 b णडसालहिं नाट्यशालामि 8 a °वमालहिं
°कोलाहले, b कुसुमोमालहिं कुसुमानामव समन्तान्मालामि. 11 b आलावणि घोणा 12 a ज रेहइ
यत् समवसरण शोभते, b सवडमुहु संमुख

यता—नीहोसणसिहरामीणु मिणु पिम्मनु ऊर्णज्जवत्तिहर ॥
 पाण्डु पुणहुं अगद्विणिणु भुज्जणमागद्विज्जवत्तिहर ॥ २ ॥

3

अप सपत्त	भुज्जवत्तिहर-1
मत्तहण	इमिहरण ।
यत्तहरण	मत्तधरण ।
मत्तहरण	ऊर्णमत्त ।
परिहरण	अप सपत्त ।
सत्तवत्ति-	अप सपत्त ।
वत्तवत्ति	मिग्गिमत्त ।
विज्जवत्ति	पत्तिवत्ति-1
सत्तवत्ति	मिग्गिमत्त ।
मत्तवत्ति	मत्तिवत्ति ।
पुण्विज्जवत्ति	मत्तवत्ति ।
अप विज्जवत्ति	विज्जवत्ति ।
यत्तवत्ति	वत्तवत्ति-1
पुण्विज्जवत्ति	विज्जवत्ति-1
मिज्जवत्ति	ऊर्णवत्ति ।
मत्तवत्ति	मत्तवत्ति ।
मत्तवत्ति	उर्णवत्ति ।

5

10

15

५ MBP विहरणं १ B विणु वत्तवत्ति

3. १ B अत्तवत्ति १ BP पुण्विज्जवत्ति १ MBP वत्तवत्ति but Gh. वत्तवत्ति and T वत्ति-
 वत्ति ५ MBP वत्तवत्ति. ५ B omits वत्तवत्ति

18 "वत्तवत्ति" वत्तवत्ति 18 पुण्विज्जवत्ति

3 2 3 वत्ति 7 वत्तवत्ति १ वत्ति ; १ विज्जवत्ति विणु वत्तवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति
 विज्जवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति. 18 ५-१ विज्जवत्ति साध्यावत्तवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति

18 ५ वत्तवत्ति - वत्तवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति. 18 ५ वत्तवत्ति वत्तवत्ति वत्तवत्ति

17 ५ वत्तवत्ति वत्तवत्ति

मुणिमहिय	महमहिय ।	
सुरहिरस-	विसमरिम ।	
कुसुमसर-	अणवसर ।	20
जय दुरह-	हरिसरह ।	
बुहतिलय	सुहणिलय ।	
रुहविलय	सुहवलय-	
जियतराणि	जय करुणि ।	
जलदमिर-	मणममिर-	25
घणतिमिर-	हरमिहिर ।	
जय सुमुह	जय समह ।	
जय सुमण	जय गयण-	
सुयसुमण-	पहगमण ।	
जय चलियचमरिरुह	जय ललियसुरकुरुह ।	30
जय गहिरमहुरमुणि	जय चरमपरममुणि ।	
जय विसयविसिगरुल	जयधवल जसधवल ।	
जय गसियजसवडह	गयगरुह जय अरह ।	

प्रज्ञा—सीहासणलत्तालंकरिय उत्तारेप्पिणु चउगइहे ॥

जय मयमयणिवहमयाहिवइ मइ णेजसु पंचमगइहे ॥ ३ ॥ 35

६ MBP गयणयल° ७ B गहगमण ८ B omits this line ९ B omits this line १० MB जय जय मयणिवह°

18 b महमहिय मखा यज्ञा मथिता येन, अथवा, महेशु पूजासु माहित पूजितो वाञ्छितो वा
19 a सुरहिरस° गोदुग्धम्, °विससरिस विपं तत्र सम 20 b °अणवसर °अविषय 21
a-b दुरहहरिसरह दुष्पापसिंहस्याष्टापद 24 b करुणि करुणायुक्त 25 a जडेत्यादि-जटानां मूर्खानां
दमका मनसा भ्रान्तिं प्राप्नुवन्त ये मिथ्यादृष्टय ते एव घनतिमिराणि तेषां हरणे मिहिर सूर्य 32 a विसय
विमिगरुल विषया एव सर्पास्तेषां गरुड 32 b जयधवल जगता मङ्गलध्वज. 33 b गयगरुह अनित्य.
35 मयमयणिवह° मदा एव मृगास्तेषां यूथम्, °मया हिवइ सिंह, पंचमगइ सिद्धावस्था.

५

इयं वैश्विनि शिषु यामिषरुद्र
संमर्तमर्षमात्रमर्षगत
पुष्कर महिषः संक्रमणात्
पावपासु बद्धव्याह्वयं
तं विष्णुपिबि भावोत्तरं यत्नहृद
सुनि मयिष मयमोहविहीनहि
नाहं जेनु मायिषिहि विरुद्ध
पदसु समासमि कालु अपारत
अपपरिचामसु सो साह्यागि
मुच्यते का वि सम्मत्तविपन्नसु

यथाहमहं कपि विविहृद ।
मुच्यते मतिमारणविषयः ।
अन्वहि शोचमसामि मन्त्रात् ।
कम महापुत्रसु अवहन्तः ।
वासागि पति न जन्महृद । 5
अष्टावक्रादि शोचयहि ।
पुत्रं वीरजिहिहं वृत्तः ।
सो अर्थं विप्रकामे ज्ञेयः ।
अस्तु अर्थं अकृत अमारितः ।
विष्णुपकालु पवत्तवत्तन्त्रसु । 10

वृत्ता—मा मुचिपयर्षकममर विव तनु न कालु वि हृद रहमि ।

ववहारकालु परमेष्ठिमुचि जिह विष्णुविहं विह तुह कहमि ॥ ४ ॥

5

अनुमंतरपद समत मायिषः
असांसु वि भावयिहि तु संवहि
संवहि पावयहि मधु मयिषः
होति महामुचिपिषावयिषहि

भापमि तहि अर्थवहि किञ्चिह ।
सत्समासहि योवत संवसहि ।
हृद विपकारिभित्तमर्ष मुचिपः ।
सह वि अष्टावक्र कव ग्रहिपहि ।

4. १ MBP वयि २ MBP मयमल; K मयमल but corrects it to मयमल; T मयमल
but explains : as लोके पञ्चमी अनुप २ MBP विवयहि

5. १ M ओष्ठसु २ MBP तत्तहि ३ MBP कः

4. 3 संमर्तमेव हि उत्तरमन्त्रात्प्राप्तमवयवम् 4 अ वद्धव्याह्वयं कर्मकमयो-
रुच्ये 5 क वासागि पति 6 क योवय हि मतिप्राप्तम् 7 अ वीरजिहि वीरिण्या अष्टावक्रा
वरिण्या मतिः 8 अ समासमि कालु कवयहि 9 क अकारि अनुप संवसहिः 10 क पवत्त व
वत्तनु मयमलमयो मयमलम् 11 तनु तरुह रहमि वीरयमि

5 1 अ अनुमंतरपद अन्तर्यामिदेवताकाशदेवतापरिचयना काले हृद अनु शिरोमन्त्रात्प्राप्त-
मवयवम् त काल कव इति कवयो; 2 अ वयहि अष्टावक्रे कवयो अन्तरीः 3 अ पुत्र पुनः 4 क विव
कारि विवर्ध महावीर्य 5 क ओष्ठसु वयिषा माया वयवविषयना मयमे

घडियहिं दोहिं मुहुत्तहु अवसर
तेत्तियहिं जि दिर्येसाहिं विरज्जइ
विहिं मासाहिं उहुमाणु णिवज्जउ
विहिं अयणिहिं सवच्छरु वुच्चइ
विहिं जुगेहिं दसवरिसइ जायइ
सउ दहेहिं ताडिज्जइ जामहिं

तीसाहिं तेहिं जाइ णिसिवासर । 5
मासु महारिसिणाहिं गिज्जइ ।
उहुहिं तीहिं पुणु अयणु पसिज्जउ ।
पचहिं वच्छेरेहिं जुगु वुच्चई ।
दहगुणियइ सयसंखइ आयइ ।
आवइ अइसहासु वि तावहिं । 10

घत्ता—सो सहसु वि दहहउ दससहसु होइ समासिउ मइ णिउणु ॥

ते दह वि दहहिं जइ गुणइ गुणि तो उपज्जइ लक्खु पुणु ॥ ५ ॥

6

सखाणाणिहिं णिमिउ चगउ
जाणिज्जइ फुडु अक्खियमेत्ती
पुव्वगे पुव्वगु णिहम्मइ
वरिसइ सत्तरि कोडिउ लक्खइ
परमाणमि ज देवे वज्जउ
पव्वु णउदु कुमुदु वि पउमस्खउ
अड्डु अममु हाहा ह्मइ तिह
मउलय लय वि महालइयगउ
सीसपकपिउ हत्थपहेलिउ
णाणाणामपमाणहिं मेज्जउ

चउरासीलक्खइ पुव्वगउ ।
लक्खमपण जि कोडि पउत्ती ।
जइ तो इह अवर वि अवगम्मइ ।
छप्पण्णेव ताउ संहसखइ ।
पुव्वपमाणु पउ तं लज्जउ । 5
णालिणु कमलु तुडियउ वि ससखउ ।
जाणहिं जिणवरेण जाणिउं जिह ।
पुणु वि महालयणामपसगउ ।
अचलप्पु वि वीरे उम्मीलिउ ।
एत्तिउ कालु होइ सखेज्जउ । 10

घत्ता—परमाणु अट्टु जइ मेलवहिं तो तसरेणु समुच्चइ ॥

अट्टहिं तसरेणुहिं पिंडियहिं एक्कु जि रहरेणुउ हवइ ॥ ६ ॥

४ MBP दिवसहिं ५ MBP रिउमाणु ६ MBP सुचइ ७ MBP दससहस

6 १ K सहसखइ २ M पुव्वे पमाणु ३ B हत्थपहिइउ, P ०पहिइउ ४ MBP रहरेणु

7 a उहु माणु ऋतुप्रमाणम् 10 a ताडिज्जइ गुण्यते, b अइसहासु अउदसहसम् 11 दहहउ दशगुणित
6 1 a संखा णा णि हिं गणितइ 2 a अक्खियमेत्ती आख्यातमात्रेण 8 a णिहम्मइ गुण्यते
6 a पउमस्खउ पयसजम् 8 a मउलय मृदुलता, लय लता, महालइयगउ महालतिकाइम् 9 a
हत्थपहेलिउ हस्तप्रहेलिका; b अचलप्पु अचलात्मकम्, उम्मीलिउ प्रकाशितं कथितम् 10 a मेज्जउ मेघ,

अदुर्हि राहरेणुयहि सम्मगहि
मिक्कम मयिष पुण अदुर्हि विक्कमहि
अदुर्हि सरिसवहि परिमाणिउ
परमप्पवदिदुअ को नूसा
अंगुल पाठ विहत्थि पुआर
अदरपवित्तु रंइ मणि भावहि
जोयवु रं पि मयहि शुभिआर
यम महाजोवणु वक्कमाविउं
तस्स पमाण काम्म राणी
कत्तरिवहि वंविहायहि सुउयुउ
होउ पणुआर केण्णै म गणहि
अरपई देमएहि वा विआर
तेहि मसंहिहि कडाउउउ
रं पि अरंउगुणिउं अउारउ
होउ उमुरोवणु शुभमाविहि

विहुरमाउ अदुर्हि विहुरमाहि ।
मियसिअत्थु कडिउ पित्तपन्थहि ।
अवपमानु देवागमि माविउं ।
अङ्गुलंगुल छरि ममासर ।
रोहि ताहि किर र्थमि वि हई । ८
रंइहि अङ्गुसासिहि पावहि ।
पंइहि पुणु कोवडु रंमिआर ।
अं जगमावकरणु अहिमाविउं ।
परिवह्मिण लैपरिवट्टिउणी ।
वा पुरिआर मित्तमविदेमई । 10
लंअउरसह पणु वि अवमहि ।
उरपई पक्किमोवणु सुई पुआर ।
दीअसनुएपमाण पण्डुउ ।
अवविदिमाउपमाभाभाउ ।
पुआममहकोडाकोडिहि । 15

पचा—तेत्थिपहि वि सापरसमहि कुउ काउअणु मई कविअउ ॥
सर मउ वि अवह वि पुणु मजमि केवळमावे अविउपउ ॥ ७ ॥

7 १ MBP लिखत् २ MBP लिखत्ति ३ M कविउ ४ MBP कवि लोअ पुणु वरिमिउ
५ MBP कोणी ६ T१ कपरिअ and adds उपरिवेति पडिअपवदेवार्त्त MBP कविमावहि. MP
पुणु B पुणु. १ MBP एअ विवमाउं

7 1 ६ विहुरमाउ रोपाम् 2 ६ विव विअत्थु देवार्त्तम् विहवक्क हि मिदेमिदेमइत्थुमिहि
8 ६ परिमाणिउ इअ कत्ता ६ देवागमि मिताव B ६ पुआई हाप्पा पण्णाम् ६ रवमि हत्थ
(कट्ठमि). 8 ६ अवमाण केरु वीअअमाणम् अहिमाविउ ममिअत्थम् ११ ६ कपरिवरसिउणी ल-
परिक्का विहुरा. 10 ६ अमि देवक 11 ६ अवमहि लोअव 12 ६ वरमह वरम् 14 ६ अवविदि
मविपति 15 ६ पुववा विहि कविउपविआमि । एत्थोत्तैरंउकोडिहि। कपटोपम समम्

8

सुसमसुसमु अण्णेकु वि सुसमउ
 दुस्समु अइदुस्समु पविहँत्ता
 ए ओहामियदावियइड्डिहिं
 भुयवलविहवसरीरिसरीरहिं
 वहुँतेहिं होइ उच्छप्पिणि
 सायराहं विभियगिक्काणिहिं
 तीहिं मि कालहिं तिणिण विहत्तइ
 दरिसियमाणवदेहारोयइ
 छँच्चउदुधणुसहाससरीरइ
 तिणिणदुपक्कपल्लियियजीवइ
 उत्तिममज्झिमाइ णिकिड्डइ
 घत्ता—णउ सत्तु असेसु वि मिच्चु तहिं सीहु गइदँ सडुं वसइ ॥

लायणवणवणविब्भमभरिउ जणवयजोवणु णउ ल्हसइ ॥ ८ ॥

9

बहुवोलीणइ तइयइ कालइ
 अट्टारहधणुसयतणु थिरजसु
 पडिसुइ णामँ जायउ कुलयरु
 अमममियाउ राउ मंथरगइ
 पुणु णं माणुसवेसु अणंगउ

थियपल्लोवमट्टभायालइ ।
 पलिओवमदहमंसु चिराउसु ।
 पुणु तेरहसयचावपईहरु ।
 अवरु वि हवउ णामँ सम्मइ ।
 अट्टसयाई सरासणतुंगउ ।

8 १ MP सुसमुसुसमु २ MBP सुसमुदुसमु ३ MBP दुस्समुसुसमउ ४ P पवहता but gloss
 प्रविभक्ता पृथग्गुणिता ५ MBP छचउदुधणुसहास ६ MBP विह्वसियगीवहिं

8 1 a अण्णे कु द्वितीय 2 a पविहत्ता प्रविभक्ता, 3 a ए एते पद काला, ओहामियदाविय
 इड्डिहिं स्फोटितदर्शितकद्विभ्यां हानिवृद्धिभ्याम्, अवसर्पिण्या कद्वि स्फोट्यते उत्सर्पिण्यां कद्विर्द्वयते 6 a सायराह
 सागरापमे 7 b वहुविहेत्यादि-दशप्रकारे कल्पवृक्षैर्मण्डितक्षेत्राणि, मयाङ्गत्तुर्यभूपासङ्गज्योतिर्दोषगृहाङ्का । भोज-
 नामन्नवत्त्राङ्का दशधा कल्पशास्त्रिन 8 a °आ रो य °आरोग्य, b इच्छासणिहं °इच्छानुरूपं °मा णियं प्राप्त
 9 b °अक्खं बिभीतक 10 a °पल्लियियजीवइ °पल्यस्थितिजीवितानि 11 b पइड्डइ प्रविष्टानि 12 णउ
 ल्हसइ न पतति

9 1 b °अट्ट भायालइ अष्टमे भागे काले 2 b पलिओवमदहमसु पल्योपमस्य दशमो भाग,
 3 b पईहरु प्रदीर्घतर 4 a मंथरगइ मन्दगति

अङ्कपमाधिपाठ आमेकद
सत्तसदाई पंचसत्तारे घनु
जेमेकद आमे पं दिपाड
सत्तसत्त पंचासई सुत्त
कमखजीवि सीमेकद मन्ना
पठिपाठसु किर को बड मन्ना
सत्तसदाई पंचुत्तरबीसई
मिरिकरपुत्रब्रह्मास्मिकेकद
पञ्चबीसुस्मिपाई विहंगारउ
ठसिपाई पुनु गुणमपिमैखिउ
पेठ वि पौनु आसु संजीविउ
छुमपपप्रहृत्तगि पसाहिय
कम्पुपाई कामिधिकवर्चिमउ
पदमंगाठ महीवळि अष्टिउ
पुज वि अस्तित पुञ्चबीसपुज

यथा—उत्तमायारं नयारं वैजायनह पञ्चासाहियारं वैजमि ।

तद्वाचं यत्प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं नृप ।

10

ममह भक्तिपाई केसियां वि
पुत्र जायह बलमुसियपाईह
कसुयंगाभियजपमायह

पंथनीसपदियाई पैलियाई मि ।
 यमुसवाई बाहिबंदजणियाई ।
 मित्र सो बाई बमपविमानाई ।

9 १ MP मुह १ MBP कलागर्हि १ MBP कलागर्हि धमि धामु पकरउ ४ MP दिगिमु
मकरउ ५ MBP एह सोमु का को लंगीवउ ६ MBP कालुगर्हि BP बाबलपह ६ MBP बाविउ
५ MBP देहकलप १ MBP कविउ

6. अनुसूचयेनेकहसुतु प्रालिप केसकरी 7. कलिङक कलिङक- 10. कसकलीनि कसकलीनि-
 11. कलिङक कलिङक कलिङक 14. सिङ्गार कलिङक 15. कलिङक कलिङक कलिङक
 16. कलिङक कलिङक 17. कलिङक कलिङक कलिङक 18. कलिङक कलिङक कलिङक
 19. कलिङक कलिङक 20. कलिङक कलिङक कलिङक 21. कलिङक कलिङक कलिङक
 22. कलिङक कलिङक कलिङक

10 १ अ व क ह णि य ई ऋ उ ऌ ए ओ नः णि र्निष्कभरण

पंचसयइ पुण सयसजुत्तहं
 णउदाउसु महियइ संजायउ
 तहु पच्छइ गच्छतं कालं
 अज्जवलोयहु आसि पहाणउ
 साययवीढह सयइ महिद्धिउ
 गउ सो णउयगउ जीवेप्पिणु
 सहइ पंचसयइ रणचडह
 पच्चाउसु पय पालहु जाणइ
 कडमोक्खकरणाह सउण्णउ
 पुच्चकोडिजीवियसपुण्णउ
 तिहुअणभवणत्थमु णं टिण्णउ
 गुरुउद्धरियवसुं चरमेहलु
 भूसणरयणकिरणहयतममलु
 मउडसिहसु हाराचलिणिज्जर
 ण अवयरियउ जंगंसु मदरु
 घत्ता—हुउ पच्छइ आयहं तेरहहं घाहुद्धारियभुर्वणभरु ॥

जियलोयहो णाहि व णाहिपहु णरस्संथुउ कुलयेरु पवरु ॥ १० ॥

20

II

णहयलि जंतजणेण णं याणिय
 अण्णु वि रुइरुक्खक्खइ दिट्ठइ

पाहिलएण रविससि वक्खणाणिय ।
 विंदुयविंदुएहिं उवरिट्ठइ ।

10. १ MBP चावहि २ MBP चदाहणामु ३ MBP उच्छज्जतं ४ MBP add after this line
 दीहपाहु उरयलवित्थिण्णउ ५ B °वसु ण मेहलु ६ M °जोग°, BP °जोग° ७ MBP जगममदइ ८
 MBP °भुवणहर ९ MBP कुलयरपवर

11 १ M ण जाणिय

7 a अज्जवलोयहु आर्यलोकस्य, b बहुजाणउ गहुभूत 8 a साययवीढह धनुषाम् 9 b सुरवोदि
 देवशरीरम्. 10 a रणचडह संप्रामप्रचण्डानां धनुर्दण्डानाम् 11 a पच्चाउसु पर्वप्रमाणाम् 12 a कड-
 मोक्खकरणाहं धनुषाम् 13 b सव्मावाउण्णउ सद्भावपूर्ण 14 b °अमयहलु अश्रुतफलम् 15 b सयण-
 तेयेत्यदि—स्वतन्त्रतेजसाद्योतितनभस्तल 16 b सयण-
 तेयेत्यदि—स्वतन्त्रतेजसाद्योतितनभस्तल 17 a आयह एतेषाम् 20 जियलोयहो जीववर्गस्य

11 1 a णहयलीत्यादि—आफाशे गच्छता जनेन कल्पतरूणा बहुलतेजस्वात् न ज्ञातो, b पाहिलएण
 प्रथमकुलफरेण प्रतिश्रुतिना 2 a रुइरुक्खक्खइ कल्पशृक्षस्य क्षयात्, ज्योतिरङ्गक्षयात्

वीर्यं वि शोषं भयस्त्रिं
 हृषा न मृगं वाक्यं जहयं
 सिद्धिं येषि वाहि वि परिहरिया
 शोर्षणं पुण्यं नृपं ज्योतिषा
 तादृशं ते दृष्टं पद्मसिद्धिं
 विपत्तिपक्षं तत्र विरहपदेन
 परिवर्तुमकाशं कुर्वता
 छन्दः मनुष्या मनुष्ये

अहरतः नक्षत्रां सिद्धिं ।
 तदप्यं ते साहिप तदप्यं ।
 सोमं सुखमप्यं विवर्धे भरिया । 8
 नृपं मृगं नृपं नृपं तदप्यं ।
 पंचमेव नृपं नृपं नृपं ;
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ।
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ।
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं । 10

धत्ता—कुक्षपरपदेन वि संसम्य विवर्धे नृपं नृपं ।

पद्मसिद्धिं हृषणपदेन नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं । ११ ।

12

नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं

नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ।
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ।
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ।
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ।
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ।
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ।
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ।
 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ।

१ MBP विव २ M विव विव B विव विव ४ MBP विव ५ D विव विव विव ६ P विव विव

७ MBP विव विव MBP विव विव ९ P विव विव १ MBP विव विव ११ MBP विव विव

12 १ P विव विव विव विव २ P विव विव ३ MBP विव विव विव

3 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं ४ नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं 5 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं 6 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं

12 3 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं 3 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं 4 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं 5 नृपं नृपं नृपं नृपं नृपं

घत्ता—जौं मणुणा चोदहमइण णरसिसुणालइ खंडियइ ॥

कसणम्मइ थियइ णहंगणइ चलसोदामणिमडियइ ॥ १२ ॥

10

13

विसंकारिदिकालणवजलहरपिहियणहततालओ ।

धुर्यगयगंडमडलुद्धावियचलमत्तालिमेलओ ॥

अविरलमुसलसरिसथिरधारावरिसभरतभूयलो ।

हयरवियरपयावपसरुगयतरुतणणीलसइलो ॥

पहुतडिचंडणपडियवियडायलरंजियसीहदारुणो ।

5

णच्चियमत्तमोरगलकलरवपूरियसयलकाणणो ॥

गिरिसरिदरिसरतसरसरभयवाणरमुक्कणीसणो ।

महियलघुलियमिलियदुदुहसयवयसालूरपोसणो ॥

घणचिक्खंल्लखोल्लसणिखेइयहरिणसिल्लिवकयवहो ।

वियसियणवर्कलंबकुसुमुगयरयपिंजरियदिसिवहो ॥

10

सुरवइचावतोरणालंकियघणकरिभरियणहहरो ।

विवरमुहोयरंतजलपवहारोसियसविसविसहरो ॥

पियपियपियलवतवंपीहयमग्गियतोयविंदुओ ।

सरतीरुल्लतहसावलिभुणिहलबोलसंजुओ ॥

चंपयचूयचारचंवचंदणच्चिणिपीणियाउसो ।

15

बुट्ठो झत्ति जस्स कालम्मि जण सुहयारि पाउसो ॥

४ MBP जायए ५ MBP चउदहमइण

13 १ MBP विसं and gloss in P सर्प २ P धुव ३ P °तडिपडण° ४ M हिंदुह, P डेंडुह, B डुडुह ५ MBP °विक्खिण° ६ MBP °कयव° ७ MBP °वव्वीहय° ८ P °विदओ ९ MBP °घव°

10 क स ण म्म इ कृष्णमेघा, °सो दा म णि° विद्युत्

13 1 विसं विपक्ककृष्णमेघ, °कालि दि काल° यमुनासदृशकृष्णमेघ 2 °मेलओ मेलापक समूह 3 °धिर धारा° अखण्डवृष्टि 4 °सइलो° पत्रयुक्त 5 °तडि° विद्युत्, वियडायल° विस्तीर्णपर्वत, रंजिय शब्दित 7 °सरसर° °जलस्वर° 8 दुदुह° निर्विष सर्प, सयवय शतपद सर्प, सालूर मेक 9 खणिखेइय गर्ताया निक्षिप्ता, सिल्लिव शिशु 11 °घण करि° मेघ एव हस्ती 12 °रो सिय° कोपित 13 °वंपी हय° चातक 14 °हलबोल° कोलाहल 15 पी णि या उ सो एयां वृक्षाणां प्राणसिम्न कृतम् 16 जस्स कालम्मि यस्य नाभिराजस्य काले, सुहयारि सुखकारी

मुष्णकुक्ष्याकंगुत्तपक्ष्मपतिसेसीवीहिमासपा ।
 कम्ममरणविषकमिसकणकपडभिवडिबसुर्पेसहामया ॥
 ववगवमोयमूमिमयमूहह सिरिअरवहरमासही ।
 आया विविहयण्णेवुमपेहीगुम्मपमाहवा मही ॥

20

प्रस्ता—तै वेमिपवि^१ अणयउ संजमिउ मउ महेप्पिणु सति तहि ॥
 लच्छीयवपेहिमयपच्छयनु अणउर जाहिजहिउ जहि ॥ १२ ॥

15

किं तदववह पवह पवेउह धर
 वंऊरं हरियाउनु किं वीसर
 गपकप्पहुम तेत्तु यिसज्जा
 मज्जई कवमरियउ विप्पज्जई
 जम्हई अउ उपासभविपावा
 मोआमोअ तेत्तु किं हामह
 ओ रसंतु वरिसह सो जंघयणु
 आ मिरि हम्ह जम्ह सा विखुअ
 सुत्ताउवपेयासि सुप्पज्जा
 कट्टपगारमु जीरणु वंकिअह
 कट्टिपवंसत्तवधिरकंई
 विवडमाअ जप्पुअरिपड अणु

पिण्डुरंतु विउ मेसावर वर ।
 वप वेव किं गज्जह वरिसह ।
 पवहिं जवर के वि उप्पज्जा ।
 विषमव पगमुर्गसंविप्पई ।
 वीहभुक्तापास पावा ।
 तं विमुचयेणु महिवह वीसर ।
 अ वंऊरं वीसर तं सुत्ताउ ।
 वंघरीपधुपिपकोमज्जह ।
 कम्ममूमिभूह संजावा ।
 अं मवुरउ सुत्ताउ तं विवईर ।
 यम महेप्पिणु जाहिजहिई ।
 हत्थिजुमि किउ महिपमायणु ।

6

10

प्रस्ता—कणकंडमसिहिमंजुऊजई पयणविहानई भाविपह ॥

कप्पाससुत्तपरिवृज्जई पडपेरिमम्मई वाविपई ॥ १४ ॥

१ MBP 'हुक्कमासपा' ११ M 'कण' १२ MBP वेमिपवि

14, १ MBP 'वि' MB 'विपयणु' २ P 'मिह', ४ MBP 'वरिवह' ५ P 'पविमम्म',

17 वडव कवमवाहि सुत्ताउवाहि सिहेली शिवा जलली व 18 'सहाउवा वडव' 19 वरवह
 रवाउही उप्पज्जमयसि 21 वड जवम्

14. 1 अ उववहह सन्ने वरीडि; वर वरिण, ४ जम्हई केडे पण्णादि, ६ अउवावजविवापा
 वपासज्जा; ७ उवकावातं वुवपेकेव 7 अ रनेउ जम्पमाव 8 अ वेवरीव जपरा 10 अ कट्टप-
 वरणु मीमभुहपमहमि ६ विवहह वुज्जली, 11 अ विरकई सुत्ताउव 12 विवकाउ मित्तव विव
 मय 13 विहिमवुववई वविउज्जममविधि, भाविवह उपासिपमि 14 'परिवहह वरिवरममि
 'परिवम्यई विपमममि

15

तासु घरिणि मरुणवि भदारी
अमरह पतिह पयपणवंतिह
कमयलराणं काह गविट्टु
पणिहहिं रत्तउ चित्तु पवमिउ
अंगुट्टुणहं ज गूढं
णीगेमउ विसिरउ वट्टुलियउ
जघउ कमहाणिह ओहरियउ
गूढह णरवहमंताभासह
णिविडसधियधह णं कव्वह
ऊरुयराभ णराहिवडमणह
जेण ससुरंणरु तिरुयणु जित्तउ
दिण्ण यत्ति तह सुोणीविंचह

जाहि मयसिरि अहगरयारी ।
लंघियाह अम्हह णंहयतिह ।
णम णाह णेउरहिं पघुट्टउ ।
अंगुलियाहिं सरलत्तु पयासिउ ।
गुण्णहं नं किं पिसुणहं मूढह । 5
मनिणउ मोहियाउ उज्जलियउ ।
टिट्टुं ण गलमिच्छह किगियउ ।
चायग्णाहं व रइयमंमासहं ।
देविति जण्डुयाह अइमव्वह ।
तेरणन्वभाह च रइमयणह । 10
कामतवु ज देवाहि वुत्तउ ।
किं वण्णमि गरुयत्तु णियवह ।

घत्ता—गंभीर णाहि तहि मज्झु फिसु उयरु सनुच्छंउ दिट्ठु मइ ॥

मसग्गवसें गुणु फासु हुउ जो णवि जायउ जम्मि सइ ॥ १५ ॥

16

तिवलीसोवाणेहिं चडेप्पिणु
सिहिणगिरिंदारोहणदोरह
पियवसियरणु वसइ भुयमूलइ

गेमावलिकुहिणी लंघेप्पिणु ।
लग्गाउ वम्महु मोत्तियहारइ ।
सुइसोहग्गु जाहि हत्थयलइ ।

15 १ T गहकतीए but adds गहयतिइ इति पाठे आकाशादागतेत्यर्थः २ MBP वित्तु पदरिखिउ,
T वित्तु वृत्तत्वम् ३ MBP गुफह ४ P दिट्ठा ण ५ M °समाणह ६ MBPK ऊरुयराभ ७ MBP ससुरयणु,
c M सवित्थय

15 2 b णहयतिइ आकाशादेन्या, अथवा नखकान्त्या 3 a कमयलेत्यादि—नूपुर इति हेतोः शब्दं
करोत्यस्माकमवशां विधाय चरणतलराने किं दृष्ट देवपकत्या, काह किम्, गविट्टुउ दृष्टम् 4 a रत्तउ चित्तु
मर्तरि रत्तं चित्तम् 6 a विसिरउ शिरारहिता, b य सियणउ स्निग्धा 7 a ओहरियउ अपकर्षं गता 8 a
गूढइ प्रच्छन्नानि, णरवहमंताभासइ राजमन्त्रसदृशानि; b रइयसमासइ पद समासा कर्मधारयादयः, पक्षे
मांसयुक्तानि 9 a णिविडसधियधइ सु श्लेष्टपदबन्धानि शरीरावयवबन्धानि च

16 1 a चडेप्पिणु आरुह्य, b °कुहिणी मार्ग 2 a सिहिण° स्तन°, °दोरइ सूत्रे रज्ज्नाम्
3 a पियवसियरणु प्रियवशीकरणम्, b सुइ° निर्मलम्

पीवरपीणपयोहैरकयकर
अच्छइ णाहिणरेसर जइयह
सुरणरवदणिज्जु जैगि सारउ
कामकंदकप्परणकुंठारउ
इय संचितिवि पुणु परिछिण्णउ
धणय धणय लहु करि गिरु भलउ
ता तं पेसणु जक्खे लइयउ

ताइ समउ सो पच्छिमकुलयरु ।
सुंयरइ सुरवइ णियमणि तइयह । 5
गुरुससारमँहणवतारउ ।
होसइ पयहु भवणि भडारउ ।
इदं धणयहु पेसणु दिण्णउ ।
पुरवरु चउदुवारु सोहिलउ ।
खणि साकेयणयरु पविरइयउं । 10

घत्ता—जहिं पवँणाइरियवसेण णंदणवणइं सुपत्ताइं ॥

णञ्चति फुल्लमुहमुकेण मयरदेण व मत्ताइं ॥ १७ ॥

18

जहिं सरवरि सिरिपयसफामें
परभुत्तें विमुक्कतमदोसैं
त तेहुड वि पीलु किं भजइ
सो तहु दाणु देइ किं भीयउ
वडपारोहइ हिंदौलतिहिं
जहिं कई अइपहसणरसधारउ
रत्तउ सारसियहिं जहिं सारसु
सहइ तमालधारयसारिउ

वियसइ कमलु णाइ संतोसैं ।
अहवा णंदिउ को वे ण कोसैं ।
महुयरउलु ण रोसैं रुजइ ।
अवरु वि गरुयउ होइ विणीयउ ।
जोइउ जक्खिहिं दरपहसतिहिं । 5
सुइ णियदिट्ठि धिवइ सवियारउ ।
कोवि परिट्ठिउ अहिर्णु सारसु ।
जहिं कैलु कोइलु लवइ गिरारिउ ।

17 १ M पजोहइ २ MPT सुमरइ, B सुमरइ and gloss स्मरति ३ MBP जगं ४ B
°समुण्णव° ५ MB °कुठारउ, K °कुठारउ but corrects it to °कुठारउ ६ MBP चउदुवारसोहिलउ
७ MBP पवणायरिय° ८ MBP °मुक्कएण

18 १ M परिभुत्तें २ P को वि ३ P कह ४ BP कइवइ पहसण° ५ M को ण ६ MBP अहि-
णव° ७ MBP कलु

4 a °कयकर °कृतकर, b समउ सह 5 b सुयरइ स्मरति 7 a °कप्परण° °छेदन° 8 a परि छिण्णउ
ज्ञातम्, निश्चितम् 10 a लइयउ गृहीतम् 11 पवणाइरिय° वायुरेव आचार्य

18 1 a सिरिपयसफामें लक्ष्मीपदस्पर्शेन 2 a परभुत्तें हस्ते जनैथ भुज्यते, विमुक्कतमदोसैं
पापोज्झितेन, अथवा, तम क्रोध, पक्षे तिमिरयुकराग्निरहितेन, b कोसैं कर्णिकया द्रव्येण च 8 a पीलु हस्ति-
बाल, b रुंजइ शब्द करोति 5 b दर° ईषत् 6 a कइ कपि, अइपहसणरसधारउ अतिप्रहसन
भारक हास्य कारयतीत्यर्थ, सुइ शुके 8 a तमालधारयसारिउ तमालवृक्षान्धकारस्य सा लक्ष्मीस्तस्या
रिपु, b गिरारिउ अनिवारितम्

पदरूपयकमिषहि द्वाहपठठ
अहि माविषि न करइ परपहर
अद्वारवदरमासविहचरं

महिहहि को न हार बाहुपठठ ।
बीड धरिषिहि को न न परहर । 10
अहि सयमव सुपकरं छेत्तरे ।

पद्या—अहि भण्णई कजमरपणीमिषई परिममंति सच्छेत्त वसु ॥
अणसिद्धिसिगपहारवुड महिसिहि पिअइ वण्णुसु ॥ १८ ॥

19

सुड सुड भावमूमि अहि विची
विनिड विनिड वैणि न पकर
अहि पति पदकमलोपरि सुप्पर
वर्णपारसु बोहि वणिअकर
कुवडयघरणिड न विवईरड
नं मविस्मजिअकम्मोपरिवड
वहुमाविअमऊरुईवावि
असिपसिवाहयवण्णविवावि

रिषिसिमिअ विमुअ परिची ।
पुण्णमासु न मेत्तेहुं लकर ।
पर पर पैडमडु पंक सिप्पर ।
फसु वडणु काई मि मणिअकर ।
अहि परिहीड वईठि परईड । 5
अवचारमडु वाणासरियड ।
नं पपवंपसु सुटवईवावि ।
नं सोइइ सचहि पापावि ।

पद्या—अं विपदि विवापरकंठ एविहिरवहि सिद्धिभावडु गवड ॥
ते जीवइ विमि ससिपरपुसिअममिमविअकधावइवड ॥ १९ ॥

10

P वड १ MBP छेत्त १ MBP पणरिअ

19 १ BP "सिमिहिसिमुड १ P मेवई १ MB वडमै पडु विप्पर; P वडमडु वडमै विप्पर १ MB वडमडु बोहि अहि विअइ, १ M adds after this line सुडमडुएणि विनिव वणिअकर, and gives सुडमडु मडुराणि अणि P reads in its place सुडमडुएणि विनिव वणिअकर, and after it reads विवईरडुविहि ववहरी विअइ, वडु वडणु काई मि मणिअकर, १ MB add after this line विअइ सिद्धिहि ववहरी विअइ, विअइ माइअइ विअइ सुअइ १ M अहि पति वईठि परईड १ MBP "वईठि, १ MBP "वईठि"

9 १ नं वडयक विअ वण्णविवा 10 १ परपहरइ वडुवडुएणि ३ बीड बीडमडु; परहरइ एविहिर; वरिअमडुवडुएणि वण्णविवा 11 १ वाचं एव 18 "तेरिइ" मडुर

19 1 १ सुड सुड वडा वडा विची लमडा ३ ३ पुण्णमासु कजमरपणीमिषइपरिममंति सच्छेत्त वसु; ३ ३ पके मडुरपकमै ३ ३ विवईरडु वण्णविवा ३ ३ परिहाव काठिका वईरडु वडुवडी ३ "मडु-इ" "मिअइ" ३ ३ व विवईरडु वण्णविवा ३ ३ विवापरकंठ वडुवडुएणि; विविवावडु वडुवडु 10 बीड विवईरडु; "पुविअ" "एव"; "व विमि" "वडुवडुएणि"

20

मरगयकयघरि पक्खविहूसिउ
इंदणीलघरि णहविष्फुरणें
जाणिज्जइ सामा पहसती
कणयरइयमंदिरि वियरंती
करकंकणु करैफरिसें जाणइ
दहिकुट्टिमयलि दइए आणिउ
तहिं जि पडीवउ जहिं सियणिवसणु
फलिहसिलालयमज्झि णिविहउ
पोमरायमंडवि आसीणी
घुसिणापिंदु ण णियति विसूरइ
चदणचिक्खिल्लें पहुँ चिडुइ

जहिं चंचुइ लक्खिज्जइ पूसउ ।
विमलें मोत्तियदामाहारणें ।
णाहें णवकुंदुजलदती ।
अवरविसंज्जाराउ वहंती ।
णेउरु सदेण जि अहिणाणइ । 5
कलरावेण हसु परियाणिउ ।
ठविउ ण पेच्छइ अइभोलउ जणु ।
पिहियकवाडु वि बहुवर दिट्ठउ ।
जेत्यु का वि हरिणच्छि पहाणी ।
जहिं सोहाइ ण सग्गु वि पूरइ । 10
जहिं कप्पूरधूलि णहि उडुइ ।

घत्ता—ण कलागमु अक्खरु णेय गुरु णउ दासत्तणु सविहिउ ॥

वइसवणें पक्केकु जि मिहुणु जहिं आणिलि माणिवि णिहिउ ॥ २० ॥

21

मदिरि मंदिरि सहसा भरियं
गिज्जतें मंगलसंघापं
घरसंचारियंकलस वि विट्ठा
णिच्चुप्पाइयसुरयणहरिसहि
विहुतारावलिदिणयरपंगणु
गुरुअच्चासणभयवसणडियउ

तोरणाइ रयणहिं विष्फुरियइ ।
देवदिणपडुपडहणिणापं ।
सरयब्भेसु वं चंद पड्डा ।
समज्जियदप्पणयलसरिसहि ।
दीसइ भूमिहि सयलु णहगणु । 5
णं सोहइ पायालइ पडियउ ।

20 १ B पखं २ MBP अवर वि ३ MBP करफसें ४ M फलिहसिलालयमज्झि, BP °सिला-
यलि मज्झि ५ MBP पठ but gloss in P पन्था

21 १ MBP °सचारिम° २ MBK य

20 1 a पक्ख वि हूसिउ पक्षयोर्विशिष्टा भूपा यस्य, b पूसउ शुक्र 5 b अहि णा णइ अभिजानाति
6 a द हि कु ट्टि मय लि धवलशिलोपरि, दइए भर्त्रा 7 a पडीवउ पतितम् 8 a फ लि ह सि लाल यं स्फटिक-
गृहम्, b बहुवर वधूवरम् 9 b पहाणी चित्रकारिणी स्त्री 10 a ण णिय न्ति रक्तत्वादपदयन्ती, वि सूरइ
खिद्यते 11 a पडु पन्था, चि कु ड आर्द्राभवति. 13 मा णि वि मानयित्वा

21 1 a सहसा क्षीप्रम्, भरियइ वदन्ति 5 a विहुं खन्द् 6 a अच्चा सण° हीलना

इह सो विदुः इह महारथ
मन्त्रमिहिरवर्षिण को संविद
जड योग्यनु विदोहि ज राडनु
बंमनु वणिचड व इनु व हाकिड
धम्मु व वणुडु व विषेवहमामिड
वेस ज कट्पह वामिपडुली
अहि व महज्वव पंवापुण्यप

इय नं मणिजि वचजपियारड ।
जहि वडजमहव मारें कुविड ।
सुखमिणु वड वीसह देवतु ।
जड पारसिड को वि कर्वाडिड । 10
पहुवह वहि व वेणं घोसिड ।
वज्जव सव्वं वारि कुमडली ।
कुविणपकारिणि जड कट्प पव ।

पद्या—मामज्जं मयखं माणुसं जहि पडु वि सुविसेसिड ।

सियपुष्कर्यंतु सो जहिजिड को मरहेव विडसिड ॥ २१ ॥

15

इह महापुण्य विस्सिमहापुग्गिगुणमकारं महाकरपुष्कर्यंतविरहप
महामन्त्रमहापुग्गिगुणमकारं महाकरपुष्कर्यंतविरहप
पुण्यो परिच्छेमा समतो ॥ २ ॥
॥ संधि ॥ २ ॥

१ P विदुः. ४ P कर्वाडिड. ५ MBP विषय. ६ M पणुडु वणु व B कणुडु कणु व; P वणु
महज्वव. ७ MBP वारि लव. K वारिणि.

१ ३ "मिहारव" विपठ्य १० के मापको १ ३ वृत्तमिणु वृत्त वचजमने जेठ काठ तेन वृत्त देवतु वैसा-
कवादि व वृत्तते ११ ३ वहि ज्वावि १२ ३ वैठ वैसा वडमि वणुली वैसावा पुर्विजवम; ३ वचव
जार्सी. १० ३ कुविड व कारिणि कुविणपकारिणी का वचवव विपयविनिर्वा प्रया १४ का वचव व वचमविपुडि
पुण्यमि १५ वि वपुष्क वतु वृत्तपुण्यवचन; मरहेव मरतवेनेव वारजकली मरतमहाकवेव

तहिं जाम मणोज्जु भुंजइ रंजु णिच्चलु णाहिणरिंदु ॥
मंडियसविमाणु कालपमाणु चितइ ताम सुरिंदु ॥ भुवक् ॥

I

पैहहि महिणाहं माणियहे	उयरइ मरुपविहि राणियहे ।	
छैम्मासहिं होसइ परमजिणु	णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु ।	
सम्मत्तसमत्तणु सभरमि	गच्चासयसोहणु लहु करमि ।	5
लइ एउ जि कज्जु महुं तणउ	दक्खालमि पेसणु घणघणउं ।	
इयं चित्तिवि पुणु हियवइ धरिय	छणससिमुहि पीणपयोहरिय ।	
सिरि हिरि दिहि देवी ललियकर	वर कति कित्ति लच्छी य वर ।	
छ वि एयउ चारु चवतियउ	पणएण णएण णैवंतियउ ।	
इंदीवरदीहरणेत्तियउ	सुरणाहणिहेलणु पत्तियउ ।	10
वेल्लहललयाणिहगत्तियउ	देविंदे ज्ञत्ति पउत्तियउ ।	

यत्ता—जाइवि णरलोउ भुजियभोउ णाहिणरेसंहु गेहु ॥

जिणगन्मणिवासु दुक्कियणासु सोहहु देविहि देहु ॥ १ ॥

GK give at the commencement of this samdhi आदित्योदयपर्वतादुरुतरात् for which see footnote on Second Samdhi, MBP give the following stanza —

बलिजीमूतदधीचिपु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।

सप्रत्यनन्यगतिकस्त्यागशुणो भरतमावसति ॥

1 १ MBP भोज्जु २ MP एयहि, B एवहि ३ MBP छहिं मासहिं ४ MBP इय चित्तिविणु हियवइ ५ P णमतियउ ६ M °लयाणियवत्तियउ, BP °लयाणिय° ७ MBP °णरेशरेगेहु

1 1 मणोज्जु मनोज्जम्, णिच्चलु निच्चलम् 2 मंडियसविमाणु मण्डितस्वविमान इन्द्रश्चिन्तयति, कालपमाणु तृतीयकालस्यान्तं कियान् वर्तते 4 b णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु सर्वार्थसिद्धेरप्यागत्य गर्भेऽ-तरिष्यति तेन ज्ञायते भुक्तिं विना कर्म न नश्यति 5 a सम्मत्तसमत्तणु सम्यक्त्वस्य समप्रत्वम्, सभरमि सस्मरामि, दर्शयामीत्यर्थः, b °सोहणु °शोधनम् 6 b घणघणउ सातिशयम् 8 a ललियकर कोमलहस्ता b वरपरा उत्कृष्टा 9 a छ वि एयउ एता श्र्यादिपङ्कदेवता 10 a इंदीवरत्त्यादि-नीलोत्पलदीर्घनेत्रा, b सुर-णाहणिहेलणु इन्द्रमन्दिर, इन्द्रालयम् 11 a वेल्लहललयाणिहगत्तियउ कोमललतानिमगात्रा, b पउत्ति-यउ प्रयुक्ता

हनु सो विदुष हनु महारथ
मन्मथमिहरचरित्रं के लखि
नर नारदनु विरोहि न रावहु
धनशु बलिबध न हनु न हाथि
घम्मु न यशुहुं न जियेबहमासि
बेध न कपय बह्मिबलुपी
जहि न महत्ताव संवापुष्य

हय बी मणिमणि अथवापिपारु ।
 जहि अवतनहय मोरें कुंविड ।
 सूर्यमिण्णु अठ दीसह वेडमु ।
 अठ पार्लिडि को वि कर्षाडिड । 10
 परुवह बाहिं अ वेरें घोसिड ।
 अज्जव सभं प्यारि कुम्भट्टी ।
 कृष्णवक्रादिनि अठ काडस पय ।

ब्रह्मा—नामज्ज्यं नयस्यं माणस्यं कर्हि पण्ड वि मयिसेसिड ॥

सियपुष्पाङ्गु सो जाहिभिड ओ मरौज सिइसिड ॥ २१ ॥

15

इय महापुराणे तिस्रिंमहापुराणसुबान्धकार महाकाश्यान्तरपठनिष्ठ
महामन्त्रमहापुराणकार महाकाश्या उन्मादपरीवर्ण नाम
पुराणो परिच्छेदो समप्तो ॥ १ ॥
॥ संधि ॥ १ ॥

१ P मिसेज्. ४ B बरालिह ५ MBP बिकनर ६ M पल्लव बापु व; B बरालिह बापु व; P वल्लु
बापुबापु ७ MBP बरि बल K बरालिह

7 १० "मि वारक "मिकम- 8 के बाबाके 9 के गुलामिन्नु गुलाम कलकामके 10 काई देव गुलाम देवदह बैला-
मनमि व गुलामे 11 के बाहि बाबाके 12 देव देवता महानि व गुलामि बैलाका कुर्चिकमन्; १३ बाबा व
बाबा. 14 के कुलाम व कारिनि कुलामकारिनी काकमवक मिकमकीविधि अया. 1५ का व मन् ई केमामे मूनि-
पुलादि. 1६ मि व मन् व मन् गुलामकाकाकाका; अहो व मरतकीनेव कलकामके मरतकाकाकाका.

तर्हि जाम मणोज्जु भुंजइ रेञ्जु णिच्चलु णाहिणरिंदु ॥
मडियसविमाणु कालपमाणु चित्तिइ ताम सुरिंदु ॥ ध्रुवक ॥

1

पेहहि महिणाहं माणियहे	उयरइ मरुएविहि राणियहे ।	
छैम्मासहिं होसइ परमजिणु	णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु ।	
सम्मत्तसमत्तणु संभरमि	गच्चासयसोहणु लहु करमि ।	5
लइ एउ जि कज्जु महं तणउं	दक्खालमि पेसणु घणघणउ ।	
इयं चित्तिवि पुणु हियवइ धरिय	छणससिमुहि पीणपयोहरिय ।	
सिरि हिरि दिहि देवी ललियकर	वर कंति कित्ति लच्छी य वर ।	
छ वि एयउ चारु चवतियउ	पणएण णएण णैवतियउ ।	
इंदीवरदीहरणेत्तियउ	सुरणाहणिहेलणु पत्तियउ ।	10
वेल्लहललयाणिहगत्तियउ	देविंदे क्षत्ति पउत्तियउ ।	

यत्ता—जाइवि णरलोउ भुजियमोउ णाहिणरेसँहु गेहु ॥

जिणगच्चाणिवासु दुक्कियणासु सोहहु देविहि देहु ॥ १ ॥

GK give at the commencement of this samdhi आदित्योदयपर्वतादुक्तरात् for which see footnote on Second Samdhi, MBP give the following stanza —

बलिजामूतदधीचिपु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।

सप्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥

1 १ MBP भोज्जु २ MP एयहि, B एवहि ३ MBP छहिं मासहिं ४ MBP इय चित्तेविणु हियवइ ५ P णमत्तियउ ६ M °लयाणियवत्तियउ, BP °लयाणिय° ७ MBP °णरेसरगेहु

1 1 मणोज्जु मनोज्ञम्, णिच्चलु निचलम् 2 मडियसविमाणु मण्डितस्वविमान इन्द्रध्वन्तियति, कालपमाणु तृतीयकालस्यान्त कियान् वर्तते 4 b णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु सर्वार्थसिद्धेरप्यागत्य गर्भेऽ-तरिप्यति तेन ज्ञायते भुक्तिं विना कर्म न नश्यति 5 a सम्मत्तसमत्तणु सम्यक्त्वस्य समप्रत्वम्, संभरमि सस्मरामि, दर्शयामीत्यर्थ, b °सोहणु °शोधनम् 6 b घणघणउ सातिशयम् 8 a ललिय कर कोमलहस्ता b वर परा उत्कृष्टा 9 a छ वि एयउ एता श्रयादिपद्देवता 10 a इंदीवरेत्यादि-नीलोत्पलदीर्घनेत्रा, b सुर-णाहणिहेलणु इन्द्रमन्दिर, इन्द्रालयम् 11 a वेल्लहललयाणिहगत्तियउ कोमललतानिभगमात्रा, b पउत्ति-यउ प्रयुक्ता

अज्यो जय जय जगगुरुजगणि	जय धनयल्लियल्लियहारमणि । 6
जय वम्मकाणणाणल्लभरणि	जय धम्मपिट्ठम्मन्नधरणि ।
परं निट्ठइ निट्ठइ पापमन्तु	सगज्जं मंविंतिउ मयल्लु ।
परं न्दउ मल्लिनाजम्मपल्लु	सुहं वृत्तिउहिं हाम्मइ जिणधरल्लु ।

यत्ता—जिग मग्गु जल्लु पर्याणि पडसु विग्गंयपज्जित्तु ॥

मोपेह्य परं ईल्लइ मेय अमरणिनामिणिग्गु ॥ ३ ॥

10

॥

फ पि अल्लयल्लिय भंयिणि पग्ग	फ पि आदग्गु अग्गइ भग्गइ ।
फ पि धग्गइ धग्गयणाहग्गु	फ पि लिप्पइ कुकुमेण चरुणु ।
फ पि जग्गइ मायइ मग्गुसग्ग	फ पि पार्गंमइ रिणोउ अवरु ।
फ पि परिक्कमइ जिमियाग्गिकरी	फ पि पाणि पग्गिट्ठिय द्दधरु ।
अक्कणाणउ फा पि किं पि काहइ	रिण्णउ कर्णइल्लु फा रि चहइ । 5
फ पि धग्गयार पिण्ण पग्गइ	फ पि सुग्गमग्गिग्गमल्लिहिं ण्णइइ ।
फ पि माल्लउ जेल्लेउ उज्जल्लउ	टोपेइ मेयल्लइल्लु सुपरिमल्लउ ।
छम्माम्मु जाम मज्जणिग्गिदिहिं	पयट्तु मग्गिहिं सोंक्कणिहिं ।
णिग्गमग्गेणति पिणिणिहिंयधणु	पुट्ठउ ग्यणिहिं चरंयणु ण्णु ।

यत्ता—एवि ये सरपेहिं रग्गि म्मुहग्गि उग्गिल्लियल्लियहारमणि ॥

10

मोपेति समग्गि सयणयल्लिग्गि सरं पेत्थइ म्मिणिणांवेत्ति ॥ ४ ॥

१ P लट्ठ ४ MBP विरद्वर्जलि° ५ MBP मग्गइ ६ MBP लट्ठिग्गमेव

४ १ P कण्णु २ P वेत्थ ३ M कोट्ठ ४ MBP मग्गइ ५ MBP वग्गंति ६ MB पद्वक्कणपणु ७ M इग्गियग्गोमि, BP हग्गि य यग्गोमि ८ MB पेत्थिहिं ९ MBP मुद्दगावलि.

6 a अज्यो हे मा 6 a °अरणि अग्गुत्तादक्काइस्, वग्गंमग्गमग्गंरग्गंरग्गोत्तादक्काइस् ८ °विट्ठ° पादप. 7 a निट्ठइ नदग्गि 8 ८ जिणधरल्लु जिग्गुग्ग 10 मेय मेयाम्, °सत्थु मार्थं समुद्

४ 1 a अग्ग य निलय अल्लिक्के उल्ले निलक्क, ८ पादं सणु दर्पण 8 ८ विणोउ विनोदम् ४ ८ पा रि हारे. 6 a अक्कणाणउ कणानक्कम्, ८ कणइल्लु क्काणाणुक्क 7 a माल्लउ पुष्पमाला, जेल्लेउ पग्गशाटी, ८ सवल्लइल्लु विल्लेपनम् 9 a प्रग्गणति प्राग्गणमग्गो, जिहिं जिहिं यधणु निधिपु निधिं स्थापितं पत्तं देन, ८ र य जिहिं रले, यद्दमक्कण पणु पग्गइ एव मेय 10 मग्गोमि मग्गोमग्गो, मुद्दग्गि क्षोभनप्रासादे, 11 समग्गि वग्गं अग्गं उपरित्तमग्गो वत्थ, सयणयल्लिग्गि दायनत्ते अग्गे प्रपाणे

5

पतिपा	गजाह्वहरतिपा ।	
सुतिपा	मिमीतिपाधिजतिपा ।	
वामप	मिसाविरामत्रामप ।	
इच्छप	मुहावई विपच्छप ।	
वैतर्ष	वउप्यपावर्षतर्ष ।	5
विष्मर्ष	हारतवृजविष्मर्ष ।	
मंसर्ष	मरासपाहर्षमर्ष ।	
मुंगर्ष	मिर्मनमर्षमिगर्ष ।	
वारर्ष	मिर्मिदुमिनिवारर्ष ।	
वेतर्ष	वमप डेकरनर्ष ।	10
वापई	वमममुगगावई ।	
वुयर्	वुरतगवमर्षवर्ष ।	
मासुर	मुमैतर्षवैतर्ष ।	
कोपन	वर्षतपिगमैवैर्ष ।	
मीसप	मुहा विमुकवीसप ।	15
सीहर्ष	विर्मवमानवीहर्ष ।	
वैविर्ष	विमागपई विविर्ष ।	
मपिच्छ	विमुवर्षकपिच्छ ।	
वैवर्ष	पुत्रावामवैर्ष ।	
ममुवई	ममुवाव सुहावई ।	20
मावई	मुहुमाव तमीवई ।	

5 १ PGT record २ लम्बु and add लम्बु एति पति लम्बु लम्बु पुदे वीतविर्ष २ M
कीमव १ MB "वैवर्ष", ४ MBP मुदेविमुव ५ M "विपव" ६ MPT "वुयव"

5 1 पतिपा क्ली; ६ लमाह्व हरतिपा २ ६ मिमीतिपा धिजतिपा मिमीतिपा विष्मर्षा ३ ६
वामप वामपे वामिपामपे वामिपामपे वा ६ "विपामपामप" "वैविपामपे ६ ६ इच्छप इच्छपा; ६ वि-
वामप विपच्छपे ६ ६ वामपामपवैवर्षव वामवर्षविपवर्ष ७ ६ वामवर्ष वामवर्षव; ६ वामपामपवैवर्षव
वामपामपवैवर्ष ११ ६ वामपामपवैवर्षव वामपामपे वामवर्ष वीतविर्षवर्षा येव, १६ ६ मुहा विमुक
मुहा; १७ ६ वामप विमुक; ६ विविप वामप १८ ६ विमुकवामप विविप विविपामपवैवर्ष १९
वैवर्ष वामप; ६ वामप वामप "वैवर्ष" वामप "वामप" २१ ६ वामवर्ष वामविपामप वामप

हसय	खमाणसेकहंसयं ।
रत्तय	सरतरे नरंतयं ।
रम्मय	चलं झसाण जुम्मय ।
उच्चमंड	धियमैकुमसंघडं ।
मायरं	पहुंल्लपंकयायरं ।
सायरं	रसतवारिभीयरं ।
आसण	मंयारिरूवभूसणं ।
सुंदर	पुरंदरस्त मंदिर ।
सोहण	महाहिणो णिहेलण ।
उच्चय	अणेयरंणसंचय ।
दित्तय	इयासणं पलित्तय ।

25

30

घत्ता—इय जोइवि मुळ पुणु पडिवुद्ध सिविणइ जं जिह दिट्ठु ॥

उइयइ पच्चहे अरुणमऊहे रायहु त तिहं सिट्ठु ॥ ५ ॥

6

ता णरवइ णारीसारियहे	अक्खइ मरुपविमडारियहे ।
विट्ठेण गइवें गुरुहु गुरु	होसइ णंदणु पयपणयसुरु ।
गोणाहें गोमडलु धरइ	सीहेण सविक्रमु वित्थरइ ।
सिरिदसाणि लहइ तिलोयसिरि	वामेण वि जाणहि पुरिसहरि ।
पावइ पविहररइयच्चणडं	जं विट्ठुउ पइ मयलंछणउ ।

5

७ BT वियम and gloss in T वियमोऽमृतजलम् ८ P पफुल्लं ९ MBP सरनं १० M सयारिं
११ MBP °सीसण १२ MBP उच्चय १३ B °रयणं १४ B तिहे

22 a हसय आदित्यम्, b खमाणसेकहंसय गगनमेव मानसरोवर तस्य हंसम् 23 a रत्तय अन्योन्यक्रीडा-
रत्तम् 24 b जुम्मय युग्मम् 25 a उच्चमंडं प्रकटम्, b धियमं भूतजलकुम्भयुग्मम् 26 a मायर लक्ष्मी-
करम् 27 b रसतवारिभीयर शब्दायमानजलमयानकम् 28 b मयारिं सिंह 29 b पुरंदरस्त
मंदिरं विमानम् 30 b महाहिणो नागेन्द्रस्य, णिहेलणं गृहम् 31 b रणं रत्नं 32 b पलित्तय प्रदीप्तम्
34 पच्चहे आदित्ये, अरुणमऊहे आरक्तकिरणे

6, 1 a णारीसारियहे स्त्रीमध्ये उत्समाया B a गोणाहें वृषभेण, गोमडलु भूमण्डलम् 4 b पुरिस-
हरि पुरुषसिंहः 5 a पविहरं इन्द्र

तं होतर सुव ज्ञानमपहरणु	यं पुन वि पैकोरुत करकिरु ।
तं मोहंघाटविषासपद	मध्यपणवलिपणवविषसमद ।
इसदुपडें होरी सोक्काविहि	कुमेहि वि सुरमहिसेयविहि ।
कमसापरसत्थरेहि विहि मि	शुनवंतु गहिद मुचयई तिहि मि ।
सिंहासयेण पंथमिय गइ	पावेसर ईसजमुदमइ । 10
विह्वेहि तियसणावई धरेहि	सेवेवैठ वेविहि विचइपेहि ।
रपणोहें विजसंपत्तिपणु	विह्वइर हुपासैं कम्ममनु ।

प्रस्ता—सिचियपफणु जणु विद विरजणु कहमि अ रफणमि शुम्भु ।
अगसम्यजणंमु धम्मार्णु होतर वंदणु शुम्भु ॥ १ ॥

7

दा तम्मि पत्तम्मि तइयम्मि काळम्मि	अक्कससोईतमपवत्तपळम्मि ।
कप्पहुमच्छेयपवविषविचारम्मि	ससिर्विदपविर्विचयत्तंघपाटम्मि ।
अक्कसपिणीसपिणीसंपवेसम्मि	अप्येत्तपम्मरसुइमरिचमासम्मि ।
मापामहामोहवंधवई कुमेवि	सापाई पडपाई पुब्बाई संवेवि ।
सोत्तइ वि तवमावकाओ पहावेवि	अपायमिचसित्थपरजम्मं समवेवि । 5
ईदिवाई विदिपाई जिधिवाई मंजेवि	तेसीसअक्कविहिंसमाजाठ मुंजेवि ।
अम्मंतपवअसुंकिपपहावेण	हिमहारजीहाटसिपवसइरुचन ।
आसाठमासम्मि किण्हम्मि बीयम्मि	संपत्तय उत्तपत्तावरिणम्मि ।
सम्भत्तसिद्धीविमाणाठ ओत्तर	पयेसपे अजणिगम्ममि सेवर । 1

6. १ M पुडीरु; P कोरु १ MB डेवइर
7 १ B हुव

७ ३ करकिरु पूर्वा ८ ३ इसदुपडें मत्तपुणेय; ३ कुरकहिसेय" पैपानिसेय" 10 ३ पचमिचवइ मुचि; 11 ३ "पावई" मत्तवाम् 1६ अयकज्जव" अक्कवाम्

7 २ ३ कप्पहुमच्छेयपव वि विचारम्मि कप्पहुमच्छेयव अतिमिचरे, ३ पत्तं पवारमि अक्का-
मपरे, ४ ३ अक्कसमिनीसपिणी" अक्कसिनीकाळ इव माणिनी ३ "मासम्मि मोक्कमले 5 ३ सोत्तइ वंज
मिह्वसपका सोत्त मात्तमा पहावेमि अगम्य ६ ३ "तवमाव" समज जणु 7 ३ हिंय" अक्काली पीहरो
वा; "विचयवइ" अक्कज्जमा. 8 किण्हम्मि बीयम्मि अण्णत्तीमात्तम् 9 ३ संवरइ संवरं अवे
करोति.

सरयच्चमज्जस्मि रुद्रदेइंदु व्व
आया स्रुरा गच्चवासं नमसेवि
तव्वासराए ष देवाहिवाणाइ
जप्पेण माणिक्खुट्ठी कया ताम

सयवत्तिणीपत्तए तोयविंदु व्व । 10
सगं गया रयदेवि पसंसेवि ।
रिक्खदणाइत्तपालिजमाणाइ ।
मासेहिं तिहिं हीणु संवच्छरो जाम ।

घत्ता—उयरत्थु अवाहु वहुइ णाहु तणुकिरणइ पसरंति ॥

मरुदेविहि वेहे ण नवमेहे णवरवियर णिग्गति ॥ ७ ॥

15

8

मासमि चइते पप्पे कसणे
उत्तरआसाढारिक्खवरे
जिणु तियसालावणीहिं झुणित
उत्तत्तदित्ततवणीयछवि
णं विप्फुरंतु अरणीइ सिहि
ण जीवसहाउ सिद्धसहए
णं अमयलवेहिं जि णिम्मविउ
जगु णरयपढंतउ णंवि सहिउ

अहिमयरवारि फुंडणवमिदिणे ।
जोयमि धम्मि वहुसोप्पयरे ।
मरुदेविइ णंदणु सजाणित ।
सुरवइदिसाइ णं बालरवि ।
णं दैप्पालिउ धरणीइ णिहि । 6
णं अत्थु महाकइकयकहए ।
णं गुणगणु पुंजेप्पिणु ठविउ ।
णं धम्मं पुरिसरुवु गहिउ ।

घत्ता—जगतमणिण्णासु लोयपयासु किच्चिवेल्लिवरकंदु ॥

मयमलपप्पहु कुवलयइहु उइउ जिणाहिवचंदु ॥ ८ ॥

10

२ M °रुदयदु व्व, T °इदु व्व ३ MBP रायदेवी ४ MBP जक्खिद°, but T रक्खिद° राक्षसेन्द्रा

8 १ B चइत्तहो, P चइति २ MBP फुहु ३ MBP बमि ४ M मरुदेवि, B मरुदेवे, P मरुदेवी°.
५ P दिक्खालउ and gloss दर्शित ६ MP णरइ पढंतउ ७ MB णउ

10 a रुद्रदेइंदु व्व महादीप्यमानचन्द्र इव. 12 a तव्वासराए तद्दिनादारभ्य, देवा हिवाणाइ इन्द्रस्याश्रया
14 अवाहु वाधारहित 12 णवरवियर बालार्करश्मय

8 1 b अहिमयरवारि रविदिने B a तियसालावणीहि त्रिदशवीणाभि, झुणित गायित 4 a
तवणीयछवि सुवर्णकान्ति, b सुरवइदिसाइ पूर्वदिशा इव 6 a सिद्धसहए सिद्धसमया श्रेण्या, यया सिद्ध-
प्यानेनात्मा दृश्यते 10 मयमल° मदाश्च मलाश्च, अन्यत्र मृग एव मल,, कुवलय° पृथ्वीमण्डल कुमुद-
संघातश्च

भावविशेष विषय विवेचनं
 उपपन्ने जाते ह्यप्यो
 कप्येत्तुं सप्तहाते जाता
 इतिमि विष्णासिधिविष्णाया
 रेतरेषावासावेषत्तुं
 संवत्सरो मातृपमचषेत्तुं
 यावत् जातेन विष्णाव
 बुद्धो विष्टे धम्मावेषा
 हर्मिषो एतावयपामो
 यस्मिन्कलात्ममोक्षकरो
 कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो
 पत्तो मैत्तो मंदयेत्तो
 कतिपसाद्विषयमिच्छाई
 पत्ते पत्ते सुखदमीमो
 एव बुद्ध तमिहमर्कं
 सज्जत्य वि वयस्यसख्यं
 सज्जत्य वि वयसावाजायं
 सज्जत्य वि पसरियज्जोव
 सज्जत्य वि सारमेवसाई
 तवपुत्तविषं पिब लहसमयं

मन्मथजर्जरावधिगते ।
 ज्ञानो ईदृस्तास्यकपो ।
 यदार्द्राया संज्ञाया ।
 ओहसवासे सीहविवाता ।
 गच्छते पक्ष्मा विवरेत्तुं ।
 संपन्नो बोहो मुचषेत्तुं ।
 सुमीमाय ह्वं वेन ।
 कश्चिन्नो संज्ञो सज्जो वंदो ।
 वेदविपलपीरपरिणामो ।
 रचयतेतयेजावदिसो ।
 कण्ठचमरविषिचारिपमिषो ।
 कीचार्द्रता बहुविहंतो ।
 इति इति सरसयवचाई ।
 मन्मथीमो धारयमीमो ।
 कश्चिन्नो साहसमीमो सिध्यं ।
 सज्जत्य वि वामरसंज्ञं ।
 सज्जत्य वि वावत्तविमार्चं ।
 सज्जत्य वि वयसुंमुद्रिणं ।
 सज्जत्य वि वयाहपमार्चं ।
 सोहृष्ट सुरवरपमाडकं ।

5

10

15

20

9 १ MBP निरुद्धं २ P "वदन्तु ३ MBP निरुद्धं but gloss in P निरुद्धं निरुद्धं वदन्तु
 T निरुद्धं वदन्तु ४ MB वदो तुद्धो ५ P वदन्तु ६ MB पत्तो. ७ MBP वदन्तु वदन्तु

9 वा दा बुद्धं कम् १ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो १० ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ११ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो १२ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो १३ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो १४ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो १५ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो १६ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो १७ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो १८ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो १९ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो २० ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो २१ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो २२ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो २३ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो २४ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो २५ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो २६ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो २७ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो २८ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो २९ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ३० ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ३१ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ३२ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ३३ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ३४ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ३५ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ३६ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ३७ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ३८ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ३९ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४० ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४१ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४२ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४३ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४४ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४५ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४६ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४७ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४८ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ४९ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५० ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५१ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५२ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५३ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५४ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५५ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५६ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५७ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५८ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ५९ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६० ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६१ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६२ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६३ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६४ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६५ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६६ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६७ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६८ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ६९ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७० ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७१ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७२ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७३ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७४ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७५ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७६ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७७ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७८ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ७९ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८० ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८१ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८२ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८३ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८४ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८५ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८६ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८७ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८८ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ८९ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९० ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९१ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९२ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९३ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९४ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९५ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९६ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९७ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९८ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो ९९ ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो १०० ३ कच्छरिच्छमाक्षरिचंगो

घत्ता—णवतणुरोमंनु दावइ उंचु जिणमवि हरिसु बहति ॥
तरुं चलदलपाणि णडइ व खोणि भावै घट्टुरसवति ॥ ९ ॥

10

महिसेहिं मेसेहिं	आसेहिं भासेहिं ।	
हंसेहिं मेरेहिं	कुंरेहिं कीरेहिं ।	
सरहेहिं करहेहिं	दुरणहिं वसहेहिं ।	
दीवीतरच्छेहिं	रिंछेहिं मच्छेहिं ।	
सारगसीहेहिं	तरुगिरिहिं मेहेहिं ।	5
सिहि जम महाभीस	णेरिय समुदेस ।	
मारुय कुवेरक	ईसाण णीसक ।	
मज्झाम्मि खामाहिं	मुद्धाहिं सामाहिं ।	
छणयदवैयणाहिं	णवणल्लिणयणाहिं ।	
थणघुलियहाराहिं	पसरियवियाराहिं ।	10
धयरट्टुगांमिणिहिं	सेहंतकामिणिहिं ।	
गयणोवडंतीहिं	सरसं णडंतीहिं ।	
वजंतवज्जेहिं	कीलतखुज्जेहिं ।	
वाहरविछेहिं	दुक्कंतमल्लेहिं ।	
यहुविहविलासेहिं	मंगलणिघोसेहिं ।	15
संचल्लिया पम्ब	णाणाविहा देव ।	

घत्ता—पावेवि अउज्झ परमदुगेज्झ परियचेवि तिवार ॥

फणि दिणैयर चंडु भणइ सुरिंदु जय णाहेय कुमार ॥ १० ॥

८ MBP उच्छु ९ MBP तरु वरदलपाणि

10 १ BP कुरेहिं २ MB दुरहेहिं ३ MB रिच्छेहिं ४ B मारुव ५ MBP °वयणेहिं ६ MBP °णयणेहिं ७ MBP गामणिहिं ८ MBP परदुगेज्झ ९ MP °दिणयर

10 1 b भासेहिं उच्छेके . B b दुरणहिं द्विरदेर्गजे 6 b समुदेस वरुण 7 b णीसक इन्द्र
8 a खामाहिं वृच्छोदरीभि 11 a धयरट्टु° हस , 12 a गयणोवडंतीहिं गगनादवतरन्तीभि . 14 a
वाहरविछेहिं करास्फोटनशब्दै 17 प रिय चे वि प्रदक्षिणीकृत्य

तेत्याउ सुदूँसहकरपसर
उप्परि द्वाहिं जि रवि परिभमइ
चउहु जि रिक्खोहु णिरिक्खियउ
तिहिं सुकु तिहिं जि सुरगुरु भणमि
सउ एम दहुत्तर लंघियउ
सहँसाइं गपि अट्टाणवइ
एत्तेण जि सोहइ दीहरिय
अट्टेव समुणाय हिमविमल
जहिं तहिं पत्तेण पवित्ततणु
देवाहिवेण तेल्लोक्कहिउ

जोयणहिं पसाहियसरयसर ।
पुणु असियहिं ससि सइं संकमइ ।
पुणु तेत्तिपहिं बुहु लक्खियउ ।
तिहिं अंगारउ तिहिं सणि गणमि ।
सुद्धायासु वि आसंघियउ । 10
अवर वि जोयणसउ तियसवइ ।
जोयण पण्णास पैवित्थरिय ।
अद्धिदुसरिच्छी पंडसिल ।
जय जय पभणंते परमजिणु ।
तहि उप्परि सीहासाणि णिहिउ । 15

घत्ता—पहु सहइ णिसण्णु कंचणवण्णु असहियतेयपसंगु ॥

णं कुरुहकरेहिं वेळिहरेहिं मंदरु ढंकइ अंगु ॥ १२ ॥

13

जिणणाहहु भावें मेरुगिरि
णं पर्णमइ फलभरणमियतरु
णं कोइलकलरवेण चवइ
पक्खालंतु व पहुकमकमलु
लिपइ व सविणय पणयवसेण
जोयइ व खु सु सियासियहिं
पणइ व पणच्चियणीलगलु

णं हरिसें दावइ णिययसिरि ।
णं धेल्लइ चमरीमय चमरु ।
णं फलिहसिलासणाइं ठवइ ।
आणइ जवेण णिज्झरणजलु ।
करिणिहसणचुयचंदणरसेण । 6
अहिणवणलिणच्छिहिं धियसियहिं ।
गायइ व हेणुमुणियरंणिय मसलु ।

२ P सुदुत्तहु ३ B गिरिस्त्रियउ ४ M सहसइ गपिणु, BP सहसा गपिणु ५ M सवित्थरय, BP सवित्थरिय,
13 १ M पणवइ २ M पणय ३ M सुमुणिय ४ MBP ०रुणिय

6 a तेत्याउ तस्मादागत, b ० मरयसर दारत्कालमरोवरन्, अथवा सरोजले जातानि सरवानि पद्मानि तैरुपलाक्षितं
सर 7 b सइ स्वयम् S a रिक्खोहु अश्विन्यादिसप्तविंशतक्षणाणि 9 a ति हिं शिभि, सुकु शुक्र, सुरगुरु
बृहस्पति, b अंगारउ अक्षरक कुजो मौन, मणि धनैस्वर 10 b सुद्धायासु शुद्धमाकाशम्, आसपिबत्त
आधितम् 11 a सहसाइ सहसाणि 13 b अद्धिदुसरिच्छी अर्धचन्द्राकारा 15 a ०हिउ हित 16
सहइ शोभते, 17 कुरुहकरेहिं वृक्षकरे, वेळिहरेहिं वल्लीवारकरे, मंदरु ढंकइ अंगु मेरुर्निजात् प्रच्छादयति,
13 1 b णिययसिरि निजधी 2 b चमरीमय चमरीरुण 4 b जवेण वेणेन 5 b करिणिह-
सणं दस्तिनिर्घर्षणं 7 a ०णीसगलु मयूर

मदरं छिवतियाइ चन्द्रदेवपतियाइ खीरसायरतियाइ । 16
 धोमयं कमतियाइ धंतियाइ थतियाइ जतियाइ पंतियाइ ॥
 हारदोरं कचिदामवभसुत्तकं कणाळिकुडलाहिं भूसिएहिं ।
 आइवीयकप्पपुगमेहिं आसणासिएहिं सम्मयाहिलासिएहिं ॥
 अट्टजोयणोयरेहिं एककठवित्थरेहिं अब्भय णिसुभएहिं ।
 हुदहोपयच्छिएहिं पाणिणा पडिच्छिएहिं उग्गयवुयंभएहिं ॥ 20
 चंदणेण चच्चिएहिं पुप्फदामवेडिएहिं ण घणेहिं सभएहिं ।
 एकमेकदोइएहिं पोमं पत्तछाएहिं सायकुभकुंभएहिं ॥
 सिंचिओ पुणचिओ णमसिओ पससिओ पसाहिओ महाइवेवो ।
 कामकोहमेहलोहमाणडभचं फलत्तवज्जिओ ह्यावलेवो ॥

घत्ता—जो णाणविसुद्ध जिणु सइवुद्ध सो ण्हाविड लइ ण्हाइ ॥ 25
 ब्रसवासहु तोड भत्तड लोड सूरहु दीवड टेइ ॥ १४ ॥

15

णिम्मलहु जि ण्हाणु विराइयड	मगलहु जि मगलु गाइयड ।
परमेट्टिहि जाणियसवरहो	किं अवर दिण्णु णिरवरहो ।
किं भूसणु भूसणि सणिहिड	किं जंगमंडणि मंडणु लिहिड ।
पविसुइइ ववगयभववरिणहो	विधेप्पिणुं सवणजुयलु जिणहो ।
विच्छूढइ मणिमयकुडलइ	ण ससहरदिणयरमडलइ । 5
चवलब्भपिसायहु णट्टाड	णाहेयहु सरणु पइट्टाइ ।
किं कोसिएण जगसेहरहो	सिरि सेहरु वद्धड मणहरहो ।

१ MB मदिर, K मदिर but corrects it to मदर १० P °डोर° ११ P ककणाहिं° १२ MBP °विंमएहिं, but gloss in P उद्रतोच्छलितजलबिन्दुभि १३ P पोमवत्त° १४ P °वण्लत्त°

15 १ P जगमडणु मडणि २ P विधेविणु

16 धो मय कम तियाइ व्योम व्याप्नुवत्या, धं तियाइ धावन्त्या 18 आइवीयेत्यादि—आद्यद्वितीयकल्पपुगवा-
 भ्याम् 19 एककठवित्थरेहिं मुखे एकयोजनविस्तीर्णं, अब्भय णिसुभएहिं मेघपटलविष्वसकै 20 हुदहो-
 पयच्छिएहिं 'शृङ्गाण भो' इत्येव मणित्वा प्रदत्तै, °यंमएहिं °विन्दुभि 21 समएहिं साम्मोभिर्जलमुपै, 22 सायकुभं सुवर्णं 24 चप्फलत्तं बहुप्रलापित्वम् 26 ब्रसवासहु समुद्रस्य

15 2 a जाणियसवरहो ज्ञातसवरस्य 3 a भूसणि भूषणभूते, 6 जगमडणि त्रैलोक्यमण्डनस्य,
 मडणु तिलक. 4 a पविसुइइ वज्रसूचिकया 5 a विच्छूढइ परिधापिते 6 a अचमपिसायहु अक्षपिशो
 राहुस्तस्मात् 7 a कोसिएण कौशिकेन इन्द्रेण

यकरोहासितं बलिपयम्
विपश्यन् हारं सेविय

हेतुमुद्येव परिमुचियम् ।
अवसायं किं पि य मौचिय ।

यथा—ओ धार्ढकाव किमर्द्धकाव सुरवर तासु करति ॥

10

मनु विपश्य मति यत् अर्द्धंति कसु कार्द ईकति ॥ १५ ॥

16

किं बुद्धि न हर्षं सुरपण्यो
कविसुत्तं कवियसि वरुप
किं लीहविषयं पद्म सिरि
कमलुर संविदियत् अममम
नं ममजीवन्तं तस्मिन्
कोमलसत्तं सुविमलमम
मई लब्धं विपश्यन्तु पद्म
नं करणकाकि सिद्धिनामिय

मविषं सु महमत्तं कंजयो ।
किंकिमिषत्तं वरु व सुलप्यत्तं ।
अरु अरुत्तं तं मेवन्तु गिरि ।
मंजीरुपुपुत्तु इय नं ममर ।
संसारमहात्मकमिदितरुत्तु ।
अहकिरपपत्तुपतिमिरमत्तु ।
मह्म ज्ञानं भूतपद्म सत्तु ।
तं वरुत्तु नं विद्विषावियत्तु ।

8

यथा—सुरसापरलोड आहविमोड व सहर विपश्यन्तासु ॥

मेषपिरिगुमि मदिर्द्धममि नं यत्तु अण्यासु ॥ १६ ॥

10

17

दृष्टं वरुत्तु निबन्धियत्तु
वैद्विषा विमलतु पिरिगुमि

लीसेनं सुपेदि पविष्यियत्तु ।
कजरकं वविषं व विद्विषि ।

१ MBP वविषा व BP वविषि.

16 १ P विद् १ M नुलपु वरुत्तु १ P वविषा

17 १ P वविषि २ MBP वविषि १ K "विपश्यन्ति"

8 ६ हेतुमुद्येव अकेतुकेन. 9 ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु. 11 मति विपश्य.

16 1 ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु २ ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु. ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु. ७ ६ वरुत्तु वरुत्तु. ८ ६ वरुत्तु वरुत्तु. ९ ६ वरुत्तु वरुत्तु. १० ६ वरुत्तु वरुत्तु. ११ ६ वरुत्तु वरुत्तु.

17 1 ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु २ ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु. ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु. ७ ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु. ८ ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु. ९ ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु. १० ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु. ११ ६ वरुत्तु वरुत्तु वरुत्तु.

णिजइ देवेहिं करेण कर	गुरुसगं को णउ होइ गुरु ।	
पंकयकेसररयधूसरिउ	कसैसीरयराण पिंजरिउ ।	
वणकुंजरकुभरथलपल्लिउ	करडयलगलियमयपरिमलिउ ।	5
संचलियसिलिमुहवित्तलिउ	णाणामणिफिरणाहिं सवलिउ ।	
परिघोलइ सिहरिदहु तणउ	ण पचवण्णु उप्परियणउं ।	
णहिं णहयरेहिं महियलि णरेहिं	पायालि पडतउ विसहरेहिं ।	
धावंतु यंतु वियलतु चलु	घदिउ सव्वणहुहि ण्हाणजलु ।	10

यत्ता—इच्छियगुरुमेव चउविह देव हरिमं केहिं मि णमति ॥

उट्टत पडत पुरउ णउत वारवार णवति ॥ १७ ॥

18

केण वि वाइत्तउ वाइयउ	केण वि सुइमिट्टउ गाइयउ ।	
केण वि वट्टसुक्किउ सचियउ	केण वि भावालउ णच्चियउ ।	
सवलहणउ केण वि ढोइयउ	केण वि आहरणु णिचेइयउ ।	
केण वि योत्तइ पारद्धाइ	केण वि तोरणइ णियद्धाई ।	
पडिहार को वि हुउ वडधर	कु वि पासि परिट्टिउ रग्गकर ।	5
पडु पडइ का वि अणुराइयउ	केण वि मालउ उच्चाइयउ ।	
कासु वि आलावणि णिद्धतणु	जहिं छिप्पइ तहिं तहिं करइ मणु ।	
सरलंगुलिताडिय रण्णणइ	णिज्जीव वि जिणवरगुण धुणइ ।	
तहिं अवसरि कर्यणाणावयणु	धुइ गुरुहि करइ दससयणयणु ।	
आयासु जि आयासहु सरिसु	उवमाणु ण तुज्जु को वि पुरिसु	10

४ P करोहिं ५ PT कासीरयं ६ MBP °सिलिमुहं ७ MBP कहव ८ MBP णमति

18 १ B णाणावयणु तणु

4 b कसीरयं कासीरज कुहकुमम् 5 b करडयलं गजकपोलं 6 a °सिलिमुहं भ्रमरा ; वित्तलिउ कर्तुरितम् 7 a सिहरिदहु मेरो 9 a यत्तु तिष्ठत्, b सव्वणहुहि आदिजिनस्य 10 चउविहदेव भुवन-वासिभ्यन्तरज्योतिष्कल्पवासिनो देवा

18 1 a वाइत्तउ वादित्रम्, b सुइमिट्टउ कर्णामृतम् 2 b भावालउ भावयुक्तम् 3 a सवलह-णउ विलेपनम्, b णिचेइयउ दत्तम् 6 a अणुराइयउ धर्मानुरागयुक्त 7 a आलावणि तन्त्रीवाद्यविशेषः, 8 a कयणाणावयणु कृतानेकध्वनय, b दससयणयणु सहस्रलोचन इन्द्र. 10 a आयासु आकाशम्

आहं परं हि समाजं पदं भणमि

ता परमं सर किं पई भूषमि ।

मत्ता—ओ कहइ कएण कर कब्येन जियवर तुह गुनपासि ।

सो विरै लक्षण करणुपण भूय मयार बखणसि ॥ १८ ॥

19

मुह पोतवितस्स चित्तं बबं वेमि
 जयस्यहोसोमेहिं संगहिपमगेहिं
 पत्तमस्मजं बुधावचितुज्जहिं
 मयधुम्मिरप्पमिहिं मिप्पसिक्कहिं
 असिक्कत्तुम्भंत्तण्डं चण्डताण
 जमपासिप्पिन्निवाणं सबाहीय
 इत्तं मो खेवंजम्मवानं पिह्वत्त
 जय काक्कात्तमिज्जम्भवीकेत्त
 जय दोरसेसारक्कात्तित्थार
 जय भात्तिसारात्तम्भात्तित्थमय
 जय तुम्भित्थित्थत्तंत्तंत्तंत्तं
 जय देव चण्डित्थित्थित्थित्थित्थ

अहमीम पिबुतमेवेवं वरेमि ।
 परवारिषिहामुखावंदिपंगेहि ।
 कुलकाहविष्णवर्गावावकरोहि ।
 कह बीममे तं महम्मोहमूहेहि ।
 जल्पमि बनि महेने पडताप । 6
 शिव का कपडमनं वेर देहीन ।
 परम परं जह को तं पमात्पु ।
 जय ईश्वारं वसुधैकमाकांक्ष ।
 जय ब्रह्मपञ्चावसामावासार ।
 जय वीरवामिहोहनाविष्टेव । 10
 जय जाह बीरय बीरह जाहप ।
 जय कृष्णसेतु मसेतु मस्तप ।

ब्रह्मा—अथ मेधरयामि तिरुयवस्तामि प्पुत्तिड मन्निड देहि ॥

कहिं अम्मु न कम्मु पाठ न धम्मु सहु वसहु मई जेहि ॥ १९ ॥

३ पृ ७८

19. १. K. लाली २. MBP *बाबुदेवी* ३. MBP गायकदेवी ४. M. सिन्धुली ५. B. लाली

11. कद कवि- 10 बरुएणि कसुअमु

19 1 हुइलासि-ऊव सोअयेव हयमावर्ष लख लखनाधारल ठव सोअवर्षे कनिम निउमह कसामी-
लर्न 2 सव हिब बधेहि वंछीसपरिमी 3 ६ भावाव बडेहि पर्यावही ॥ बनिबपुअं पराके
कनिमवर्षके ६ बडे कसवही, ॥ कसवस्यवाध कसवस्यवाध ॥ कसवसि-कसि कसवसि
कसवसि कसवसिपल्लव कसवसि कसि वीव ७ निवार पर्यावस्य ६ "सवस्य" कसव ११ ॥
पुनिमीनं पदवाव कसवस्य, पुअं व कसवस्य १२ ॥ कसिपुअं वसीवस्य विहावस्य १३ ॥ बनिब
वाधिय

20

देव सुण्हविऊण	भत्तीह णविऊण ।	
पहुपडहणाएहिं	थंगिदुगिगघाएहिं ।	
हुंणिकिटिमटकेहिं	अंअंसधोकेहिं ।	
भेमंतैभंभाहिं	ढकाहुडकाहिं ।	
करडाहिं काहलहिं	अल्लरिहिं मँदलहिं	5
तालेहिं सखेहिं	अण्णहिं असखेहिं	
बहिरियदसासेहिं	जयतूरघोसेहिं ।	
बहुवयणु बहुणयणु	करपिहियपिहुगयणु ।	
हरिसेण विच्छुरिउ	णियतरुणिपरियरिउ ।	
विबिहगहारेहिं	रसभावसारेहिं ।	10
उण्णयइ परिवडइ	आहढलो णडइ ।	
धम्माणुराएण	पयजुयणिवाएण ।	
सुरमहिहरो फुडइ	महिवीदु कडयडइ ।	
परिभमइ थरहरइ	णियदेहु संवरइ ।	
रोसेण पुँफुवइ	फणि फरसु विसु मुयइ ।	15
विसजलणु वित्थरइ	धगधगइ हुरुहरइ ।	
तावेण कढकढइ	जलयरकुलं लुढइ ।	
जैलही वि अलललइ	सेर ^१ समुल्लसइ ।	

घत्ता—रिक्खइ णिवडति दिसउ मिलति महिविवरइं फुट्ठति ॥

णच्चंतै इदं णयणाणदं गिरिसिहरइं तुट्ठति ॥ २० ॥

20

20 १ MB ठगदुगिग°, P थगदुगिग° २ MB दुणिकिटिमटकेहिं, P दुणिकिटिमटकेहिं ३ MBP भमत° ४ MBP मदलहिं ५ MBP विष्फुरिउ ६ P पडिवडइ ७ MB पुण्फुवइ ८ MBP जलणिहिं वि ९ MB सरस

20 2 a पडु सवैरव्यक्तशब्दवादित्रैरित्यर्थ 4 b हुडुक्का वायव्यशेष 8 a बहुवयणु शेषनाग, बहुणयणु इन्द्र, b °पिहु° पृथु 10 a अगहारे हिं अङ्गविक्षेपे 18 b सेर स्वेच्छया

इय यन्निधि गिन्निधि उरुहसिरि
 सच्छर सविपुत्रु कनु संवत्तिर
 संपीयसद्वोदाहरेण
 उनुर्कतिमारवारिपविह्वला
 दीप्तः अहन्तु यन्मन्त्रगणु
 नं योसिपमंननु मेहनिधि
 सिपञ्चकनविपद समुच्छ्रित
 वज्रावरि छति पदाहय
 उत्तरिधि करिहि इति आहय
 तिह्वयपरिपाञ्चपरमविहि
 विमु धम्मु नेय मोह सि पनु

माकनु सवारणवाभि हरि ।
 एवर्जरोक्षिपयववदमुभिः ।
 ये बाबर्ति सुरवरवदेव ।
 ईप्परि वंतेय वैवपह्वा ।
 नं योदसरि पुत्तिर कर्ममन्त्रु । 5
 त्रिनु ज्वाभिमिहि मंदाहमिहि ।
 नं दीप्तः इक्षविद्यानु धुक्तिः ।
 रावंगवि छेद य माहवद ।
 मायपियरुं सिधु होहयत् ।
 संगहिद तेहि सो पाचयिहि । 10
 मासियद पुरंदरेव विसदु ।

प्रज्ञा—जगमरु समस्त पुष्पवस्तु भंवनु छेपि अशीन ॥

सुरसंयुवपाय हरिसिय माय पुष्पवति आसीन ॥ ११ ॥

इय महापुत्राय तिस्रिह्महापुरिसगुचासंकार महाकरपुष्पार्जविरहस्य

महामन्त्रमहागुमन्त्रिय महाकन्धे विजयमार्गिसिपञ्चकनारं नाम

वह्मो परिच्छेदो सम्मत्ता ॥ १ ॥

॥ संधि ॥ १ ॥

21. १ P इप्परि वंतेय but gloss वाच्यवत्ता २ B वरुतिपुत्तिर P वरुतिपुत्तिर ३ K कनु
 वनु ४ MBP add after this foot. कौतुहलेन वरुतिवत् G gives in the margin in
 second hand, but K does not give it at all. ५ M उरु सि ६ BP पुष्पवत्तासीन

21. 1 इय इति श्रीगुरुः ; २ इय इय" लकीनयन"; हरि इय ३ उच्छर इय अन्तरतो
 मनेय इतिपुत्रु हो नरित ४ न कतिवारवारिकिन्निधा कतिवारसिरुत्तपन्देय ५ न अहन्तु अय
 त् ६ न वदाहमिहे वदन्ता ७ न वज्रावरि मनीषावम् ८ न यदयमिहि "परमो विद्या ११ न
 यद योमो; इरी वरुतेय कोवो प्रकुलेन कारकेन हनेन पुनर वमि कति; १२ न दीप्त
 अदीप्ता वरुतिवत् वरुतेसी मत्ता १३ पुष्पवति आनीय पुनो पुष्पवर्तरी वरुते कर्मवति एवमे मनीष
 वरुतिवत्.

IV

वरि पुणरवि सयणहिं परियणहिं जिणजम्मुच्छवु जो रइउ ॥
त पेच्छवि विसंहरु णरु खयरु सुरवरु कोउ ण विम्हइउ ॥ धुवकं ॥

I

जमेट्टिया—तणुअणुस्वहं रजियरूवइ ॥
देवि पसत्थइं भूसणवत्थइं ॥ १ ॥

घोलतउ मालइमालियाउ	थणयण्णामयधारालियाउ ।	5
कंकेल्लिपल्लवाइयकराउ	घाईउ समप्पिवि अच्छराउ ।	
किंकर गिव्वाण अणत देवि	सिसुणाहहु णिरु भावें णवेवि ।	
तं गुरुजुयलुल्लउं विमलणाणि	पुजेवि पसंसिवि कुलिसपाणि ।	
पुँच्छिवि गउ सयमहु सधरु जाम	कोसलपुरि वड्डइ वालु ताम ।	
उत्ताणसेज्ज णिम्मुकगयु	ण सिद्धिहि केरउ णियइ पंथु ।	10

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza —

सौभाग्य शुचिता क्षमा भुजवल शौर्यं वपु सुन्दर
सत्य सर्वजनोपकारकरण वृत्त स्वक सन्मतम् ।
हे विद्वन् भरतस्य भूतिजनन विद्यार्थिनामाशु य-
स्यैकेक गुणमङ्गमूर्जितधियां पुसामचिन्त्य भुवि ॥

MBP have the following stanza —

आश्रयवशेन भवति प्राय सर्वस्य वस्तुनोऽतिशय ।
भरताभयेण सप्रति पदय गुणा मुख्यतां प्राप्ता ॥

1 १ MBP पेच्छवि २ M विलिहरु ३ MB विंभयउ, P विंभियउ ४ MBP घाइयउ ५ MB सगुरु° ६ P पुछिवि ७ P णिमुक्°, K णिमुक्° but corrects it to णिम्मुक°

1 8 a तणुअणुस्वहं शिशुशरीरयोग्यानि भूपावस्त्राणि, b रजियरूवइ अनेकवर्णयुक्तानि 4 a देवि दत्ता 5 a घोलतउ लोलायमाना, b थणयण्णामय° स्तनदुग्धामृतम् 6 a कंकेल्लि° अशोक, b घाईउ घात्रीभ्य 8 a गुरुजुयलुल्लउ नाभिराजमरुदेवीयुग्मम् 9 a सयमहु शतमख., b कोसलपुरि अयोध्यायाम्. 10 a णिम्मुकगंथु नम्रो वाल., b णियइ पश्यति

बहुते बहुद विविधिसु	बेहते बेहद विविधिसु ।
बसते बसद विविधिसु	बसते बसद विविधिसु ।
पसते पसद विविधिसु	बहुतेते बसमद विविधिसु ।
मसतेपस विविधिसु	बहुते बसमद विविधिसु ।
विद बेहते बहुते पसा	बेहतेपस पुष्पर्वत पसा । 15
विदसपसा बेहते लघुबस	विदसपस बससु वि कसद ।

पसा—कविपुत्र विदसपसमद मर सलु संमाविषद ।

ते 'विदस' परमेसरेण ओहिर कनु परिपाविषद ॥ १ ॥

2

बेहतेपसा—समसमसुद कससाहाद ।

सुकसाहादमो विदसपसा ॥ १ ॥

समसमसुद विविधिसु	सोहद पुष्पर्वत पसासु ।
बेह विद विद विदसु	महिमेदसपसु कससु सलु ।
विदसपसु सुकसाहाद	बससु वि दारपीदारपसद । 5
बससपसिदसपसासु	संघर्षपस विदसपसासु ।
विद विद वि विद वि विदसु	सुद बसद वि समसपससु ।
बेहसाहाद सुकसाहाद	विदसपसपससु विदसपसु ।

MBP दसते बेहद १ MBP बसते १ MBP विदसु ।

2. १ B विद १ MBP बसतेपस १ MBP विदसु १ MBP बसद but gloss in P मरुद. ५ MBP विदसु १ MBP दसपसु MBP बससपसु but gloss in P मरुदपस बस क MBP दस P दस १ MBP बससपसु, P बससपसद १ MBP बससपसु १ MBP 'बससु विदस' and gloss in M विदसपस P 'बससपसु' and gloss दसपसपसु ।

11 १ विदसु दस लस 12 १ बसद कसि कसपसिदस 13 १ बहुतेते बसमस 14 १ पुष्पर्वत बस कसपसिद 15 १ बेहते कसल 16 १ कसविदसु दसपसु मर सलु बसद दसपसु; कसु सुकसाहाद संमाविषद विदस पसा 17 १ ओहिर कसविदस ।

2. 1 १ बस' उपसम; दस' इतिबस; १ बससाहाद बसमसपसपसासु, 2 १ सुकसाहाद कसपसपसु; १ विदसपसपसु विदस बससाहाद 3 १ 'बसद विदस' 4 १ पसु पससु बससपस कसि 5 १ विदस 'विदस'; बससपसु १ बससपसु कससु 'बससपसु' 6 १ बससाहाद बससाहाद मरुदपसु 7 १ १ सुकसाहाद १ 'विदसपसु' मरुदपसु

अहस्य ब्रह्म जासु पर पसिद्ध

जम्मेण समउ धम्मं णियद्ध ।

ण पुत्तिससुवपरिमाणु लल्लु

विहिक्कणन्मासविसेसु सिद्धु । 10

घत्ता—जसु को वि ण सणिहु भुवणयलि परमजिणिवहु णिरुवमरो ।

ससि दिणयरु मवर मयरहरु कि उवमाणउ वेमि तहो ॥ २ ॥

3

जभेद्विया-गुणगणसण्णाय

ववसयदुण्णय ।

तोसियजणमण

को वण्णइ जिण ॥ १ ॥

जो ससुहरु सो तहु कर्तिपड

चिततु व हुउ सकलकु गंड ।

दिणयरु-तहु तेण जित्तु णाइ

णहैयालि भमेवि अत्थवणु जाइ ।

जो सुगगिरि सो तहु णवणवीड

ज महिमडलु न तेण गीडु । 5

ज जगु त तहु जसपसरठाणु

ज णहु त तहु णाणपमाणु ।

जो जलणिहि सो तहु कायकोड

जो धम्महु सो मयमुक्ककड ।

जो वरकरि सो वाहणु मयधु

मीहु वि तहु सिंहासाणि णियहु ।

पसु कामधेणु हयसहियहेउ

जो वरधु सो वि पविट्टु जीउ ।

जो कप्पवस्सु सो कट्टु कट्टु

देवेण समानु ण को वि विट्टु । 10

घत्ता—सुर किंकर वासिउ अञ्छरउ सुरवट्ट ग्रि वावारि जहिं ॥

तिहुत्रेणु कुडुव परमेसरहो निगिविलासु कि भणमि तहिं ॥ ३ ॥

१२ MBP विसेसिद्धु but gloss in P °विसेप सिद्ध

३ १ MBP पुण्य but gloss in P सान्वयमं २ MBP वज्जि° but gloss in P व्यपगत°
 ३ M णहयलु ४ P तहु सो ५ MBP ण्हाणपीडु ६ MBT कायकुडु, P ण्हाणकुडु ७ P वग्गु वि सो
 ८ M पाविट्टु ९ MBP तिहुयणपहुत्तु

१० b जम्मेण समउ सहजोपनीता 10 b विहिक्कणन्मासविसेसु ब्रह्मण करणाभ्यासविशेष 12 मयर
 हसुसमुद्र

3 1, a गुणगणसण्णय गुणगणानामन्वययुक्तम्, b ववगयदुण्णय व्यपगतमिध्यानयम् ३ b चहुचन्द्र
 4 b अत्थवणु आस्तमन्म् 5 b गीडु ग्रहीत स्वीकृतम् 7, a कायकोडु गात्रप्रक्षालनकुण्डम्, b मयमुक्ककडु
 तद्वयान्मुक्कधनुष्य 8, a मयधु मदान्ध 6 a हयसहियहेउ, हतस्वहितकारणम् 10 a कट्टु कट्टु काष्ठ
 निकृष्टम्, कल्पवृक्ष रत्नमय पृथ्वीकायः, परंतु लौकिकदृष्टान्तेन काष्ठ कथ्यते कष्टमेव

५

— १ —

181

॥ संमेषिया—सेसबडीछिया

कीलबडीछिया ।

पड्या बाधिया

॥ केव व माधिया ॥ १ ॥

पविच्छयविधिदकीछाधिया

॥ समर्थ रमति सुखरकुमार ।

तणुतेभोहामियतरणिधु

॥ धन्यमाकाशकिर्पविधु ।

बूझीबूझत बभगवकडितु

॥ सहजायकबिलकोतअजडितु । 5

विचरमिधि कर महान्नेर

॥ समरिछाविधि करकरेव ।

विचर विरसेविधुतुकरपधु

॥ केव वि अचकोरत मुन्यवधु ।

सो तहि वि विचरत केर्य अह

॥ बभकमसामुदर भमरे बाह ।

कच वि पहाविठ हंसर्पाभि

॥ केव वि बोहाविठ मयसामि ।

केव वि काई वि केलेवडे विणु

॥ कर कीडे मोह अचर वि एणु । 10

गिध्यातु को वि हुत तेषतु

॥ कु वि बपुएतु कु वि विवु पौतु ।

कु वि मेरु महिदु भुयवकमदु

॥ कुं वि अण्ठोदर होमधि मनु ।

सोवतत कु वि सुहाएण

॥ परिवर्दे भम्माहोएण ।

पठा—होहं व को^१ को सुहं सुभरि वर^२ एवर्तत भुयगु^३

॥ बहर दिग्गह बुकिपमकेव कातु वि मणिगु व होह मनु ॥ ४ ॥

15

5

— १ —

॥ संमेषिया—बूझीबूझते

॥ कडिकिडिधिसते ।

विचरमडीलत

॥ कीकर वाकत ॥ १ ॥

4 १ MBP "अविन १ P विर १ MBP कुमलपु ४ M केव ५ MBP बलु १ M हंस
कचवि. ७ MB केवडे ८ MBP विणु कोतु ९ MBP बभिदु मनु. १ B omits this foot. ११ P
परिवर १२ MB हुत. १३ M को हो BP होही.

4. 1 ॥ वेचवकीछिया किण्णकीछाधिया. 8 ॥ पविच्छय"मिच्छित", ६ सवर्ण एह 4 ॥ "भो-
हामिय" शिरएणह "उरणि" पूर्व; ६ "विधु विधु" 8 ॥ कवित्र परिचयकपु. ६ बहवाव" कडो-
तव"; "अविन" अत्राधिया मुक्ककर्महिरतलत, 8 ॥ अचरिछाविधु विवेककलीनि 7 ॥ विचर कोको;
"हुकवरपु हुकलमेव एव केव 9 ॥ हुकवावि वण्णमन 10 ॥ केववर्त कीवकलत; ६ कर कति.
11 तेषतु कुतु; ६ "हीअ पयलत 12 ॥ अण्ठोदर कोव तुने तावपति 13 कोवतत कु
कच, सुहाएण भोत्रनविन ६ परिवर्द आलोचयति; अम्माहोएण एरेकलोवाकडिदएणवन्ति.
14 होहव को को "होही अच वव लपु" इति अत्र; 15 रिण्णह वण्णविधुति अतोति

संगंतु संतु ज किं पि धरद्
 धरणिदु वै चंदु व संचरेवि
 वलु जोक्खइ को^१ जि जिणेसरासु
 सो णोसासेण य जाइ तासु
 पुणु चूलाकंरणिजइ कयम्मि
 सपुण्णचंदमंडलमुहेण
 देवगंवरवरणिवसणेण
 भुर्यहेलंदोलियदिग्गएण
 हउ कदुउ गयणे समुल्ललतु
 णिम्मक्कजीउ णिहिद्वमग्गु
 णिवडतउ सचारेवि णेइ
 पहरै पहरै सो जाइ केम

इदु वि ण इ^२ त थामेण हरइ ।
 लहुयारी हत्थंगुलि धरेवि ।
 कंपावियमेइणिमहिहरासु ।
 णहु लंघेवइ किर सत्ति कासु ।
 उस्मिल्लइ भल्लइ णववयम्मि ।
 मरुपविमहासइतणुदहेण ।
 घोलंतविविहमणिभूसणेण ।
 चलपाणिवेणुदढंगएण ।
 णं दीसइ सयमहघरहु जतु ।
 गुणिसंगं को णउ लहइ सग्गु ।
 समवयसहु तं छिवहु मि ण देइ ।
 विसलाणिहे समुहु सूरु जेम ।

5

10

घत्ता—पडिछंदउ पुरिसरूवकरणे णाहं विहाए सगहिउ ॥

15

णवजोव्वणभावि जाम चडिउ णायणरामरेहिं महिउ ॥ ५ ॥

6

जमेट्टिया—कंचणगोरउ

धीरो^१ गोरउ ।

परिरक्सियपउ

णिववदियेपउ ॥ १ ॥

सिरिरमणीरमणुदामरगु

धरणिदुल्लगे णिवेसियगु ।

घरुणोवरि पाय परिदुवंतु

पवणोमरि करपैल्लव धिवतु ।

5 १ MBP त ण हु २ P वि चंदु वि ३ MBP जो जि ४ MBP करणुजइ ५ MBP देवगवत्थ-
 वर° ६ MBP भुयवळअदालिय°, but 'T' हेला अनायासम् ७ MBP दहुगएण ८ M गुणसंगं ९ B
 लहउ १० M जाय

6 १ MBP धीरउ २ MBP पल्लउ

-5. 3 b इदु-इन्द्र 4 a सचरे वि प्रगुणीभुय, -b लहुयारी लघुतरा 5 a जोक्खइ आकलयति 7 a
 चूला^१क्षौरम्, उस्मिल्लइ प्रकाशिते प्रकटीभूते, भल्लइ रम्ये 10 a हेलदोलिय^२ अनायासेन क्षिप्तः, b दहगा
 एण दण्डाग्रेण 11 a हउ हत, समुल्ललंतु सम्यगुच्छलन्, 13 a सचारे वि अग्रे गात्वा, b छिवहु मि
 स्पृष्टमपि 14 a प हरे प्रहारेण, सो कन्दुक, b विसलाणिहे दिदमर्यादाया 15 पडिछंदउ प्रतिनिम्बम्,
 विहाए विधात्रा

6 1 a कंचणगोरउ सुवर्णवर्ण, b धीरो समर्थ, गोरउ ज्ञानरत्न 2 a परिरक्सियपउ प्रतिपाक्षित
 प्रज 8 a रमणुदामरगु क्रीडार्थं विस्तीर्णो रत्नभूमि ।

लालागिह	रहिरजलोल ।	
बहुमलकलुस	धरियपुरीसं ।	10
कुच्छियगधं	णवविहरध ।	
णिह्रासत्त	पडइ पमत्त ।	
णिसि णिहाण	मडयममाणं ।	
उट्टइ मुद्धं	वणकणलुद्ध ।	
पहसमसत्त	कारिमज्जत ।	15
हिंडइ दियहे	णिवडइ विग्हे ।	
तरणियणरूण	असुहरणहणं ।	
वाहिविलीण	भुसगरीणं ।	
पित्तपलित्त	मिम्पसित्त ।	
पवणपहग	माणवियग ।	20
सेवताण	गुणवताण ।	
होइ ण सोम्य	वड्डइ दुम्ब ।	

घत्ता—परमभउ वाहासयसहिउ विच्छिण्णउ रयवधयरु ॥

इह ज सुहु लळउ इत्थिहि त कह सेवइ विउसु णरु ॥ ७ ॥

8

जमेट्टिया—ता कुलकारिणा

णायवियारिणा

सुहहलसाहिणा

मणिय णाहिणा ॥ १ ॥

भो भो कयसुरणरखयरसेव

सघउ णरजम्मु ण रम्मु देव ।

वळइ सुहु भुजइ णवर दुक्कु

वड्डते विहडइ बुद्धिचम्मु ।

7 a MB णिहासत्त २ MBP विहाण and gloss in P ग्लानम् ३ B पहसमसत्त ४ B कारिमज्जत
५ MBP ०हरणमए ६ MP मिम्पसित्त, B मिम्पलित्त ७ MBP इय

8 १ M वुद्धते, BP वुद्धं

9 a ०गिह ०भक्षकम् 10 a ० कलुस ०मलयुक्तम्. 13 a णिहाण—निद्रायुक्तम्, b मडय ० मृतक ०,
15-a पहसमसत्त मार्गश्रमथान्तम्, b कारिमज्जत कृत्रिमायादियन्त्रममानम् 18 a वाहिविलीण व्याधि,
मिर्नष्टम् 19 b में ० श्लेष्मा 20 a ०पहग ०प्रभ्रमम्, b माणवियग मनुष्यस्त्रीणां गरीरम् 23 पर
स मउ परावीनम्, विच्छिण्णउ सान्तर, सच्छिद्रम्, रयवधयरु अष्टविधकर्मबन्धकरम् 24 विउसु विद्वान्

8 1 b णायवियारिणा न्यायविचारिणा 2 a ०साहिणा ०वृक्षेण

बुद्धं च कर्पणहा मर्यामीद
सद्यः ईदृशसुखं मयि च होर
मद्यः संसाध जसाद जह वि
कच्छन्मयापि परकपण्यक्रमगु
नं विमुच्येति शिषु शिष्यसीत पुण्यिणि
चित्तर परमेष्ठन मयहिर्षंगु
भक्तं पि मयि कैरियावत्तु कम्पु
ता जायिषि शिवगण्यवर्गगु
सहसा कुत्साहं पैमिप्यहि

मद्यः शि जमुर्धनमः सपद । 6
मद्यः मुनि परमेष्ठावमोह ।
मयि मयि उवाचो वप्य तह वि ।
पणिपहि मर्णय पण्यजिहि जैमसु ।
पिड इहामुदु मयियन्तु मुण्यिणि ।
जयविर्णयचारि सिरिपयिपिकुं । 10
नेसद्विषयकपुण्यहं जगम्पु ।
ममहिष्मिषयकपुण्यहं जगम्पु ।
पयवाहरजाहविहसिप्यहि ।

अन्तः—ता कच्छमहाकच्छाहिवत्पुण्यः यजमरममियः ॥

कसपत्तुत्तपत्तयकप्यहि ममिहि जायिषि ममियः ॥ ८ ॥

15

9

जैमहिषा—कपमहिषाहहा
विज्जत मद्यसं

सिद्धयप्याहहा ।

कच्छानुपलप ॥ १ ॥

ता कच्छमहाकच्छाहिवहि
विज्जत प्याहमयु सुवपीड
पारक्य परमेष्ठन पिबाहु
गैप कुमुमंजलिहं जौपवास
कुंभेपिहि करि मंगुत्तयत पुत्रु
मुमुमुमियममियकममियपु

मद्य जायिषि सिरिपयिपियप्यहि ।

कामासवाक्यहरेत्तुपद ।

मायः सुखयु हरिकपिपिबाहु । 5

सुदि र्वयप पुण्यमयोहपम ।

पहिजत परमकुद वं पिहकु ।

कह मद्यः विविहपुवावमोह ।

१ MB कवपद; P लपद १ MBP कुवप. १ MBP "विजयकपि. ४ MB परिवावपु ५ MBP "ममियपु.

9 १ P "कपमय" २ K "केपुड" १ MBP कव" MP कुमुमंजलिह. ४ MBP मयोहपम
५ MP कुपयिहि; B कपयिहि

6 ६ परमीनामकीह वप्य कच्छाकुच्छ. 7 ६ कवपेहि जायिष 10 ६ विरिपरिमिकं गु जगमपि
11 ६ मयम्पु कुंभेपिहि 12 ६ "मसहिपु मया; ६ मयहिपिहि" कच्छाकुच्छ. 14 "पुण्यः पयो
"ममियपु ममियपु

9 1 ६ "पह सीमा. २ ६ कवपयं लपदपु ६ ६ "माववाक्यं पुत्रुमममियपु 5 ६ हरिकपि
पिबाहु मया पया हरिकपि मयु वप्य मय जगमपम १ ६ पिहकु मयुपु

माणिकमुक्कमुक्कपुरिउ
चंदोवचीणपट्टेहिं छइउ

णवसायकुभखंभेहिं धरिउ ।

महिदेविइ णावइ मउहु लइउ । 10

घत्ता—अमलिदणीलमणिपतियहिं णिविडकरोलिहिं भूसियउ ।

णं तिमिरहु रचियरतासियहो सँरणु णिवासु पयासियउ ॥ ९ ॥

10

जंभेद्विया—भम्मपसाहिउ

चिहुमसोहिउ ।

सन्नमेहउ

णं महिमोगउ ॥ १ ॥

कत्थइ रुण्यभित्तिहिं सुहाइ

सरयम्मखंड णिम्मविउ णाइ ।

कत्थ वि फलिहुज्जलु भूमिरंगु

णं गंगतैरंगु पवित्तिरंगु ।

कत्थ वि मुत्ताहलदिण्णछाउ

ण णक्खत्तचिउ गयणभाउ । 5

कत्थ वि हरियाऊँणमणिवरिहु

आहंडलधणुमडलु व दिहु ।

अहिणवहुमपलवतोरणेहिं

णावइ वसंतु माणिउ घणेहिं ।

पवणुज्जयणहयलघुलियकेउ

णरणिहयतूरमंगलणिणाउ ।

पाडहियकरगुलिणिहसणेण

दैककुंदकुंदकयणीसणेण ।

पडहुलउ कुंडवें छिउ तेम

झं धो ति दो ति रउ हुयउ जेम । 10

घत्ता—भंभाभेरीसरसखुहिउ पहु पुण्णाणिलेण चलिउ ।

आवेप्पिणु तहु मंडवहु तले णीसेसु वि तिहुयणु मिलिउ ॥ १० ॥

६ MBP सरण°.

10 १ M सन्नसमेहउ २ MBP महि आगउ ३ MB °तरगपविसिय° ४ MBP हरियाणु ५ MBP दकुकुदिदुदि ६ MBPT कुडवें

9 a °मुक्क° मौक्तिकानि, सुवक्क° स्वक्का 11 अमलिदणील° निर्मल इन्द्रनीलमणि, °करोलिहिं किरणपक्षिभि

10 1 a भम्म° आश्विन सुवर्णम् 3 b सरयम्मखंड शरन्मेघपटलम् 4 a भूमिरंगु कीदार्थ विस्तीर्ण प्रदेश, b पविसियंगु पवित्रीकृतगात्र 5 a °दिण्णछाउ° दत्तशोभ 6 b °धणुमडलु° धनुर्विस्तार, 7 b माणिउ अवतारित 9 a पाडहिय° पटहवादक, °णिहसणेण° ताडनेन, b °णीसणेण° शब्देन, 10 a कुंडवें वादनकाठेन, छिउ स्पृष्ट ताडित

पाडियउ सलोनह काइ लोणु
गाइजइ मंगलु अचरु धवलु
सो सुत्तेण जि सुत्तिउ विहाइ
तरुणिहिं उच्चायवि कयउ ण्हाणु
सोहइ लायणं विष्णुगु
सियसुहुमइ वन्थाइ परिहियाइ
मर्दरोमालिउ लइउ मउहु
देवहु देवयठवणाइ काइ
आणदं णंछिउ सयणु णंघु

चामरु जि पडउ संजणियमाणु ।
सणिहियउ कलमन्त्रउकु धवलु । 5
णीसुत्तु ण जडसंगहु मुण्ड ।
गोरगइ पाणिउ धावमाणु ।
णावइ चामीयररसु गलतु ।
आहरणइ ससहररुइहियाइ ।
दीमह णं सुरगिरिमिहुरु वियहु । 10
लोइयमगं णिहियाइ ताइ ।
वद्धउ कंकणु णं णेहवधु ।

घत्ता—भमराचलिजीयारवमुहलु मणसरोहणं पुलइयउ ॥

कट्ठपं रुसिवि जिणवरहो णिययसरसणु वलइयउ ॥ १२ ॥

13

जंभेट्टिया—विरइयठाणउ
उगयरोमउ

सधियवाणउ ।

विलसइ कामउ ॥ १ ॥

अमुणंतियाइ पुरिमिहु भाउ
हा वम्मइ तुंहु मि णिवारिओ सि
किं वग्गहु लग्गहु अज्जु ईसि
णं गज्जिउ हुंहुहि भणइ पम्ब
फणिसुरणरप्पयरकउच्छवेण

हा किं रईइ पयडियउ राउ ।
हा हे घसत किं पेरिओ सि ।
णिवडेसहु कईहि वि तवहुयामि । 6
किं तुज्जु वि रिउ देवाहिदेव ।
विरैसततूरजयजयरचेण ।

12 १ M सलोयहु, BP सलोणहु २ BP उच्चाइवि ३ MB मदारमालउहइय°, P मदारयमालउ
कइय ४ MBP णकिय सयणवधु ५ MBP मणसरोहणु

13 १ MB तुहु वि णिवारिओ २ MBPT कइयवि ३ MBP विलसत°, K विरसतु

4 a पाडियउ दत्तम, सलोणह सलावण्ययो, b सज णियमाणु सजनितामान चामर पूर्वमुजतरयाते नामि
मानयुक्त इत्यते 6 a सुत्तेण जि सुत्तिउ आवेष्टितेन सूत्रेण यद्ध इव, b णीसुत्तु श्रुतरहितो सूर्य जडमग न
त्यजति 7 b गोरगइ गौरागे 9 b ससहररुइहियाइ चन्द्रदोष्यनुकारीणि 11 a देवयठवणाइ काइ
कुलदेवतास्थापनया किम्, b लोइयमगं लौकिकाचारानुसारेण 13 जीयारव° ज्याशब्द°

13 1 a °ठाणउ मुष्टिवन्ध, धनुर्धराणामालीडप्रत्यालीढवेणवापाढादीनि वाणमोचनावसरे स्थानानि भवन्ति,
पक्षे चित्ते कृतस्थिति 3 a अमुणति याउ अज्ञातवत्या रत्या 5 a ईसि जिने 7 b विरसत° शब्दापमान,

संचलित परिणतं विष्णुमात्रं
यं संसारं प्रोमिषं निषेधं
तदिदं विष्णुं नोपेक्षिष्यति
येनैव मुमुक्षुः सैव मुमुक्षुः
संपिबुः कुंभचिह्नं जगत्प्रलयं
कल्पविधेयं मितात्रं केचि

भार्यसु तदु तर्हि धरिउ बाँद ।
 हा किं तुहु परिणहि बरमयेहु ।
 मयनंति पाहुउ मुषयसाद । 10
 सिद्धु सुदु बं र्णयपदु विमलु ।
 कद धरिउ नार्हि तितरिधकरण ।
 पाधिससु ययसपिउ मयेधि ।

धत्ता—अं पाणिनं कृत्तं ताम्रं करे विविहासासाहचरियम् ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥

15

14

अमेरिका-कयसिबसबिहे
बरु अयिबहे

अस्य ह्येति ।
अथ यः सूर्यवर्ति ॥ १ ॥

वयमेतु वयस इत्यादि विरिण्ड
 पियवेहाद्वारिण विचारंति
 विचारं विचि मिथियारं केम
 कमवीयकामिणीवयवेहि
 विदुः पदिवकवासंविवाहि
 एतेषुवाहव एव तदपि
 वेधिय वि इत्यिणु वीचरित वाह
 वेत्तीचमवहि संयुज्जमानु
 उद्योपकामव्योक्तिवहि

मध्येहि वारं पठिष्यस्य मण्ड ।
 नाह सुरुसिपिं परसंति ।
 पवत नरसिंहारं सतिष्ठि जेम । 5
 विपतपुपठिषिं वंद्य दहमेहि ।
 ते कश्च न कश्च न दुस्त्रिष्ठ रिवाहि ।
 वीपय भुपय नुरज्य परिधि ।
 न कप्यतपत्त वेहोसभाह ।
 वरवमविषहि जगन्मत्त । 10
 आसीपय सभं बहुविवाहि ।

यत्ना—वहसायनद आसु गह्वरि सङ्गं पञ्चदश पय मरिचसि भुम्भ ॥

सो वराणसि जि कुलसंतिवट होमै नरु जि संमर्ष ॥ १४ ॥

Y MBP कद. ५ MB प्रोवि. ६ P कद. MB कद. P कद. ६ MB कद.

14. १ MB धीविनिधि १ MBP आलीनएथी १ M चीथी. ४ MBP धीविनिधि

[illegible]

14 4 6 ହୁଏତ ସିଏ ଚଳି ଚାଲିଯିବ ? ବଡ଼ିବନ୍ଧୁ ତାହା 10 ୫ ଜାଣିବାକୁ ମିଳି ଯାଉଥିବାରୁ ।
 ୧୫ ୧୦ ୧୧ ୧୨ ୧୩ ୧୪ ୧୫ ୧୬ ୧୭ ୧୮ ୧୯ ୨୦ ୨୧ ୨୨ ୨୩ ୨୪ ୨୫ ୨୬ ୨୭ ୨୮ ୨୯ ୩୦ ୩୧ ୩୨ ୩୩ ୩୪ ୩୫ ୩୬ ୩୭ ୩୮ ୩୯ ୪୦ ୪୧ ୪୨ ୪୩ ୪୪ ୪୫ ୪୬ ୪୭ ୪୮ ୪୯ ୫୦ ୫୧ ୫୨ ୫୩ ୫୪ ୫୫ ୫୬ ୫୭ ୫୮ ୫୯ ୬୦ ୬୧ ୬୨ ୬୩ ୬୪ ୬୫ ୬୬ ୬୭ ୬୮ ୬୯ ୭୦ ୭୧ ୭୨ ୭୩ ୭୪ ୭୫ ୭୬ ୭୭ ୭୮ ୭୯ ୮୦ ୮୧ ୮୨ ୮୩ ୮୪ ୮୫ ୮୬ ୮୭ ୮୮ ୮୯ ୯୦ ୯୧ ୯୨ ୯୩ ୯୪ ୯୫ ୯୬ ୯୭ ୯୮ ୯୯ ୧୦୦

15

जम्भेद्विया—मर्साचार्य
परिरक्षितयजयं
देवासुरेहि संगीयमाण
रमणिहिं सहंरमणु णिविदुं जाम
रत्तउ दीसइ ण रइहि णिलउ
णं सगलच्छिमाणिक्कु दैलित
णं मुक्कउ जिणगुणमुद्धरण
अद्धउ जलणिहिजलि पइदु
चुंउ णियछविरजियमायरंभु
आहिंढिवि भुयणु अलद्धवासु
लच्छीहि भरतिहि कणयवणु
वारिहिरहलिमालोवणीउ

विग्नणिवारयं ।

तह वि हु तं क्रय ॥ १ ॥

चलचामरेहिं विज्जिजमाणु ।

रवि अत्यसिहरि संपत्तु ताम ।

णं वरुणासावहुधुसिणतिलउ । 5

रत्तुपलु णं णहसरहु धुंलितउ ।

णियगयपुंजु मयरद्धण ।

ण दिसिक्कुंजरकुंभयलु दिदु ।

णं दिणसिरिणारिहि तणउ गच्छु ।

ण गयउ रयणु रयणायरासु । 10

णिच्छुद्वि फलसु घ जलि णिमणु ।

ण उल्लाणउ जगभवणदीउ ।

घत्ता—पुणु संज्ञादेवयसादिस महि रंजिवि रापं विप्पुरिय ॥

कोसुर्भु चीरु णं पंगुगिवि णाहविवाहं अवयारिय ॥ १५ ॥

16

जम्भेद्विया—कज्जलसामलो
पत्तउ भीयरो

उहुदसणुज्जलो ।

तमरयणीयरो ॥ १ ॥

वियलंतउ मुक्कचउत्यपहरु

तं पीयउ संज्ञारायरुहिरु ।

महिपंकयमयरंउ व घणेण

आयतं अलिउलसणिहेण ।

15 १ MBP महुयारय २ P णिवदु ३ MBP पुलित ४ MBP गलित ५ MBP अरुणच्छवि-
रजियसारयच्छु ६ MB णिच्छुद्वि, P णिच्छुद्वि ७ MBP णियणु ८ MBP कोमुभवीरु ९ MBP विवाहे
16 १ MBP पत्तो २ MBP त

15 1 a मत्ताचार्य यद्यपि जगत्त्वामी वर्तते तथापि मात्रा आचार कृत 5 b वरुणा सावहुं पवि-
माधैव स्त्री; °धु सिण तिलउ कुद्धुमतिलक 6 a दलित पतितम् 8 a अद्धउ अर्धेयिम् सूर्यस्य 11 b
णिच्छुद्वि स्तलित्वा 12 a वारि हि रइ हि मा° समुद्रलहरीलक्ष्मी, °लोवणीउ लुप्त, अथवा, वारिधिलहरी
मालयोपनीत

16 1 b उहुदसणुज्जलो नक्षत्रदन्तोज्ज्वल

पुण्य भुवणु तिमिरछण्डं विहाह
 हामिदु वस्तु नं परिहरंवि
 ता उरु वंनु सूरवद्विसाह
 सर मवणामरं परसतिपाह
 न रेमाकरवयवसिद्धि पोसु
 सुरवम्भविसमसमावहाह
 न ममपविनुर्वर्द्धु वंनु
 माविपताउपपचपफसु
 भावासरंगि ससहावगीह
 नं इवदु वरिचय ववमछसु

वपिविहं विह कामरं वि पाह । ८
 वरुत नीलवद वंगुटेवि ।
 सिरिफक्तु न परसारिह विसाह ।
 तापवंगुत हर्षतिवाह ।
 नं तिहुवपसिरिफक्तुवपमासु ।
 तरणीपवविलुक्कि सपहाह । 10
 नंसवविहि केरुत वारं वंनु ।
 नं ववसगि सुतुत रावईसु ।
 नं कामपववविसवगीह ।
 तद्विह नं वपुणु विहिसु ।

वता—वरतापतंनुस विविधि सिदि ससि परिहृणु वविसस ॥ 15

विमिद्वविह विविधि ववसिपहि ववव वविपं कड तिह ॥ ११ ॥

17

अमद्विवा—ससहरकंविह
 मोहर मोवड

विधि पवपंविह ।
 वंनु व वोपड ॥ १ ॥

ता विधि पेनववड विवसवंगु
 माडवङ्गु जेव मुवव वासु
 तदाविधि उरुतमुवविह
 तदु वंसुद्वियड मवगाववाड
 तदु वाविजेव नंदिपड सुमिद

वारु ववववविहि वंनु ।
 मा पुविविहिसंमववासु ।
 वापु वुवड वेववि विह । 5
 वववडु वरुतवववावड ।
 मवववपसि वेववपविपड ।

१ M वरुतवविह, व B वुवववव ५ P वविह ६ MPT "वोववड, BP वव" ७ MB "वंनु
 ९ MP विमिद्वविह

17 १ M वुड BP वुवि, MB "विधि" २ MBP वतापुड

८ क कासड ववव ८ न वववाकड ववव वविह ९ न वीवा वववीव, 10 न वुरवववविपववववा-
 ववा व वुरवववविमववववववी वर ; क वेववा व वीव एव वर 11 न ववववि वुव वीव वववविमुव ;
 वंनु विह 12 न ववववववववव वव वव वव वव वव वव 13 न ववववववीव वव
 वाववव 14 क वरुतविह ववव 15 विविधि विपवा, 16 वविह ववव

17 क वुड वुरव ६ न वाव वंनु वविवावव वा वु वव विधि ॥ वववावव वव
 वविह १ वुविह वुविहवविवावव, क वेवववविप व ववववविह

इय णहउ अर्धेणिणिवेनु गणिउ
वज्जइं मज्जिपि साहारणाइ
सहसा मुहसोसुहोलेण
थिन्वणल्लदयभागविसेसु
उच्चमिरभाणामान्धियाहिं

पयात्तरु वि सो चेय मणिउ ।
कम्मारायी य समज्जाइ ।
उद्विक्कणु किउ हिंदोलण । 10
कउं णवर्णाहिं पुणु तहिं पंसेसु ।
आहइमेणइयान्धियाहिं ।

उत्ता—अमेदिइयणवकुमुमज्जिहिं देविहिं रेणिं पउट्टियहिं ॥

मोदिउ जणु मग्गणमोयणिहिं ण उम्महधणुल्लदियहिं ॥ १७ ॥

18

जमेद्विया-अतिणयकोत्तरो

भुवणिदियच्छरो ।

णवाइ मुरवइ

ढोहइ वगुमइ ॥ १ ॥

विरइय णदेहिं णाणारियाउ

चारी चत्तीम वि अंगहार ।

अण्णण्णदेहपरिठवणभिण्णु

करणह अट्टोत्तरु सउ वि दिण्णु ।

चोहइ वि सीमसच्चालणाइ

भूतदवाइं गजियमणाइ । 5

णय गीयउ जयणमुहारियाउ

छत्तीम वि दिट्ठिउं दावियाउ ।

अतिमरसपरिदिय जणियर्हाव

अट्ट चि रस सधेयणमहाव ।

पण्णं ऊणा पण्णास भाव

अउर वि अउउर भावाणुभाव ।

फुरणइं वल्लणइं अणिवागियाइं

णवतहिं तदि अवयंारियाइ ।

४ MBP कइय ५ MBP किउ ६ B रण°

18 १ MBPT अदिण° २ KT भुय° ३ MB चट्टइ ४ BP गीयउ ५ MBP दिट्ठउ
६ MBPT भाव ७ P वपुव ८ M करणह ९ MKT अवधारियाइ

8 b पयाहाउ रु म एग प्रयाहार इति अन्यत्र प्रसिद्ध 9 a मज्जिपि मृदादिभिर्मार्जयित्वा, साहारणाइ युगपत्सर्ववायनिपयाय, b पम्मा रयी सत्यवायानां मृदादिसामार्जनं कर्मा रयी नाम, 10 b उद्विक्कणु आलति-करणहिंदोलकरागविशेष 11 a °षण छडय धारा विनेसु वर्णच्छट्टकधारास्त्रयस्तालविशेषा 14 मग्गण-मोयणि हिं कामबाणमोचनिकाभिः प्रेक्षकजनप्रमोदजनिकाभिश्च

18 1 b अदिणय कोच्छरो अभिनयदक्ष, b भुवणिदियच्छरो भुजेषु निहिता अप्पारसो येन 3 b चारी पदप्रचार 4 a अण्णण्णदेहपरिठवणभिण्णु परस्पर शरीराभ्यवेपुं, यया पादो हस्ते, इत्थं पादे, b करणह शरीरमनेकधा प्रतिष्ठाप्य क्रियन्ते इति करणानि 5 b भूतदवाइ भूतत्त्वानि 6 a गीयउ ग्रीवा, b दिट्ठिउ प्रेक्षितानि 7 a अतिमरस° शान्तरस°, जणियहाव जनितस्यायिमावा,

पुत्र पत्नीं वीथियपपरयाई
मुद्राई पेम्मीयाई कसर्बतु
वाटसापनइवइ इरैतु

छंडवैधपमोर्ध भिन्नयाई ।
विष्णेइई मिद्रुयाई तैसर्बतु ।
विहडिबैचकठकरं मेळवंतु ।

10

यथा—वदितु पविर्बिषु विपदसिरिप अरुचकिरणमाछाफुरिड ॥

उपैवइरि महापपहु कवरि अर्धैरसर्ब छतु व यरित ॥ १८ ॥

19

संमेहिया-ससिपावाइया
अक्षिरवरसभिया
ईसाइ पविर्मेळ
तं पसरियकरो

हुक्कं पिब यथा ।
उपैव व भिसिभिया ॥ १ ॥
मोर्धसुचकळं ।
पुसइ व तमिहरो ॥ २ ॥

वै सोहर वीथिये अंबुशीड
अकुमार्मंतु अं छोयवकतु
अं वाडवमि अइसायपतु
अं ताहि वि केरत अइरविंतु
अं वासपविडवंकुड विविधु
ता ताहि सोहमि अंसारसाव
कास्तु वि इयगवबौडित रवण्तु

अइमहिर्सापवपुडि विण्तु वीड ।
अं पंतु सेसतु सीसरवण्तु ।
अं विरिबिधियपिडिहमासगातु ।
अं विरिबैवइवहि पयमण्तु तंतु ।
अं अरकपडि पवळड विहिण्तु ।
कास्तु वि कडिमुठत वीर्ध हाव । 10
कास्तु वि यणुं अण्तु सुवण्तु अण्तु ।

१ MB अणुवकाजोए, PT अणुवकाजोए. ११ MBP अण्तु १२ BP विहडिबपवड १३ MBP
उपवइरि १४ MBP व रसत

19 १ MBP इय २ BP वमिडके. ३ MBP हे. ४ MBP व ५ MBP वीव ६ MBP
“अपमि पुवविण्तु” ७ MBP विवि ८ MBP “अववण्तु” P “अं वण्तु” ९ MBP “अणुवइ” १ M वय
करवने विण्तु. B अणुववि अणुवड P अवि कडि विण्तु ११ MBP हाव वीड. १२ M अणुवण्तु P अणु
सुवण्तु

10 “ववरवाई करवमिडि; ३ छंडवव” वृत्तीकहातैगुदात्मविण- अणुवकाजोए. 12 ताटावई
अणु-

19 ३ ३ ववइ वरडि; विविभिया पविण्ठी B ३ मोर्धसुचकळ अणुवण्तु एव अणुवण्तु ४ ३
पुवइ मारि, विहडि वीथिया. B ७ वीथिय वीथु ३ वीथु वरवण्तु ४ ३ वाडवण्तु मोर्धवण्तु
9 वाडवमिडवंकुड विविध एव इडकसावाहुर- विविधु विविध- 10 ७ वीथिय वीथिय वीथिय.

जो जं मग्गइ तं तीसु दिण्णु
संमाणियाइं सुहिपरियणाइं
वित्तइ विवाहि विहवेण साहु

काणीणदीणदालिहु छिण्णु ।
चोत्थइ दिणि मुक्कइं कंकणाइं ।
थिउ रज्जु करंतु णएण णाहु ।

घत्ता—जसवइसुणंदरायाणियहिं पणपं हियवइ भावियउ ॥

सियपुंफयतु सो रिसहंपैहु भरहखेत्तणिवसेवियउ ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महामव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे कुमारविवाहकल्लाणं णाम
चउत्थओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ४ ॥

॥ संधि ॥ ४ ॥

१३ M सो तासु १४ MBP सिरिपुप्फयतु १५ MBP रिसहु पदु.

14 ८ णएण न्यायेन 16 सियपुप्फयतु शुरुकुन्दपुणवदन्ता यस्य

V

पिबमेकह गवकाह पजहि विधि मुहकापिणि ॥

पिबमसह सेपुरंगह नाहिनपमैबहारिणि ॥ मुवकं ॥

1

एचिता—कयेसिसिरवरकिरपिहिविहिरवरसरबैबपडि सुतिपा ।

पविमकसरककमसकककपडुकोमसकडिपमसिया ॥ १ ॥

कैसवर कसेवाहिबं सोहमापा

कबकडिबईसी ब मिहायमापा । 5

सुटवहुपकाकचपाडिचतौरं

विबैडिपट्टैरचर्ममीरबीरं ।

हरिचरमोपडिपुरिचमुसाधुं

सैसिकैतपम्मापविजिर्तमाधुं ।

करिचचविमिण्णसोवण्णरायं

सिचिचपगपं वेण्णय सङ्कपयं ।

ससहप्पमंकारमूं विसाय

एचिमवि मुहे बीहरंत विसाय ।

GK has at the commencement of this Samvhi the following stanza—

सुवीणां क्व सुव क्वपुत्रवहुरिच वरुवा
मा तं इकंय वाक्कमप्यकसिचं उण्णहि कम्महा ।
मुये बीमपसिचकक्कपुक्कैरंमुविहकत
एकैउप्पेव वरुइयं व अया बीवीरविण्णसि ॥

MBP have the same stanza, but M reads "इण्णमिक्कैयमा and DP read "इण्णमि-
क्कैयिमा for इण्णमिक्कैयमा and MBP read बीवीरमुवि for बीवीरवि

1. 1 MBP "सिपुर" 2 M "बवहारिणि" 3 M "कवकडिबईसी" 4 "सिहिरवर" 5 MD "क-
वक" 6 MBP have before this line एवमीयमा नाम करो GK has एवमीयमा 7 M
"मिहव", P "मिहिव" MB "कतय" MB "विमिण्णमाधुं"

1 1 पिबमेकह बीमपसिचकक्कैयमा 2 "विमिहवर" कम्म; सुतिपा छल. 3a नहिबं कविचमु
3a "ववावतव" एवण्णकव; 4 विवडिबं मिमि 5 "सोपमि" कम्म; 6 कडिचतं कम्म
कम्ममि. 8a विमिण्ण बीमपराय निरसुसहपमंमूं 6 केलरायं कम्म 7 विवाह पूर्विकमा.

सयदलदलालयिरुदतर्भंग
दसदिसि वदुपिच्छरंगतभंग
अमरिसस्रसफालणुद्वतसदं
सयलमवि औलोयण सविसत

सरवग्मसारिच्छतिगिच्छंपिंग । 10
जलरपलणपफपालियहिंदसिंग ।
फरिमयरमालारउद् समुद् ।
णियवयणपोमम्मि छोणीयल त ।

घत्ता—इय पेच्छिवि परिहंछिवि सुप्पहाइ सीमंतिणि ॥

कयरैहहो गय णाहहो धरु पुरधिचूडामणि ॥ १ ॥

15

2

रचिता—पभणइ सुणंसु पुरिसहरि सुरगिरि सप्पि रवि सरवगेयही ।

मइ णिमि निचिणयम्मि दिट्ठा पिययम गिलिया इमी मही ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि णराहिउ घोसइ
मंदरेण दिट्ठेण पियारउ
ससहरेण सूहउ सोमाणणु
सूरं सूर पयावें दूसहु
रयणायरेण सवसपहायर
महिआहारें रिउ मंजेसइ
कइहि मि दियहहि होइ णिरुत्तउ
तो सब्बन्धसिद्धिअहिहाणहु
पुव्वपुणसपयसपुणउ

चकावट्टि तुह नणुरुहु होसइ ।

माहिरायाहिगय गरयारउ ।

फतिवंतु कतासुहमाणणु । 5

सरवरेण पयडियसिरिसगहु ।

चडि चार चोइहरयणायरु ।

छप्पड वि मेइणि भुजेसइ ।

देवि^१ ण चुक्कइ ज मइं वुत्तउ ।

सइ अहमिंदु चलिउ सविमाणहु । 10

जसवइदेविहि गाव्भि णिसणउ ।

१ BP° रुदं° १० M °तिगछ°, BP °तिगिठि° ११ B समालोवण, P मालोय १२ MBP परि-
यच्छिवि १३ M कयरायहो १४ M घर°

2 १ MBP णिणुणि २ MBP °वरोवही ३ M देव ४ MBP °अहिहाणहु

10 a °रुदं° शब्द कुर्वन्त, b असा रिच्छ° अनुपमम्, तिगिच्छ° मकरन्द 11 a उणिच्छ° उल्लयण°,
b अहिं° अदीन्द्र° 12 a अमरिस° अमर्ष क्रोध, b करिमयर° जलहस्ती 13 a सपिसत प्रविशत्,
b वयणपोमम्मि वदनकमले, छोणीयल पृथ्वीमण्डलम् 14 परिहच्छिवि वितर्क्य, सुप्पहाइ सुप्रभाते
15 कयराहहो कृतशोभस्य, पुरधिचूडामणि यशोमती

2 4 a पियारउ सर्वथा प्रियतम 5 b कतासुहमाणणु कान्ताया सुख मानयति 9 b पयडिय-
सिरिसगहु प्रकटितलक्ष्मीसग्रह 7 a सवसपहायर कुलप्रभाकर, b चडि हे तरुणि

वृत्ता—मुनेषुप्यभि सितुस्तंमभि केहि कपड कात्तु मुहुं ॥
ते कुत्तव मयव वि यव विवविहिंति इन्द्रासुहु ॥ २ ॥

3

रश्मिता—सुपमरपसपमावकेडवरे विवविपयं वडिपयं ।
सिद्धपयवहवपकरेहापहिं व कयं जवतयं ॥ १ ॥

एते गेष्मि पियव व कायव	पेहव तौहं कायं संजायव ।	
विपहि पसतिप मुहुति मुविममि	विपवपुष्पां यह महमंडकि ।	
जसवहयहि विवसियपंकयमुहु	यवमासीहि कप्यजव लपुवहु ।	5
ता तहि कहि सुखुहुदि वज्जव	के संतोसं सायव वज्जव ।	
हापु हैति वारव जपि संठिप	कीस व मापुस हरिसुवठिप ।	
मेह सवति सुगंधं सविमं	विमुहां विव कायं विममं ।	
मायासु वि वीसव मयवज्जि	वीसव भापुपु के संमज्जि ।	
मंदरुडपव वित्तैरिव	पज्जपु के कुपेरु परिपठ ।	10
सापमोसियवामहि मूवि	पहु वि वज्जव सवहुं पावि ।	
महि सवं वज्जव वडि वडपावि	के वज्जव महमवयोसिहि ।	

वृत्ता—सरपविहि के जवपहि पर विवति महु कव ॥
मदवविपहि परिपुविपहि वेहीमुपहि पववह ॥ ३ ॥

५ T records a P पुण्यपत्रे and adds पुण्यपत्रे इति वने पुण्यपत्रमुपार्तव वना.

3 १ M कडवरे; BP कडवरे but gloss in P कावरे. २ MB कविपियव; P कविपियव. ३ MBP मुहु ४ MBPK विवविहिंति ५ MBP मुहु

II पुण्यपत्रे पुण्यपत्रे उक्तः उत्तरैव पुण्यपत्रे वनिप. 10 विवविहिंति विवविहिंति.

3 १ कडवरे कडवरे, विवविहिंति वनिप विवविहिंति वनिप विवविहिंति वनिप वनिप कडवरे कडवरे कडवरे. 2 सिद्धपयवह विवविहिंति; उक्तं कडवरे कडवरे कडवरे 3 ४ एते एते एते एते. 10 ५ वनिप. 14 वनिप विव विवविहिंति.

4

रचिता—णियगुणरयणणियरकरमंजरिधयलियणिचइधंसओ ।

विसरिमसुंफयमाहिसाहासिउ धहुइ रायहसओ ॥ १ ॥

णोमकरणचूलाकरणाइउ	सञ्चु वि फयउ विसेसधिराइउ ।	
जणणीजोव्वणफलेंगोछो इव	विहलियलोय कप्पयच्छो इव ।	
सुंदिवयणामययिंदुपवेसु ध	मित्तचित्तसगहणणिवेसु ध ।	5
गुणसंसापयासमगो इव	रोयमोयउज्जिउ सगो इव ।	
पिउमहावसचउ रुढो इव	यंधुणेहणंघणवेढो इव ।	
किंकरयणमंणचिंतामणि विव	अरिमहिहरसिरंमोदामणि विव ।	
णिहिलणायसम्भावणिही विव	हणकरणउडरणविही विव ।	10
भारसोदु गइययं मही विव	भूरिभोयमारिहु अही विव ।	
दुणिहालउ मज्झण्णरवी विव	यज्जवेहु जमारिपवी विव ।	
लायण्णवुपवाहसरो इव	विलयावदहु कुसुममनरो इव ।	

घत्ता—सिरि उरयलि महि असिदलि भुंइ जयसिरि जयकारिणि ॥

जसु णिवसइ मुहि सरसइ फिसि तिलोयविहारिणि ॥ ४ ॥ 15

5

रचिता—गिरिसरिफलसकुलिसकमलंकुसविसदसलफणणाहिओ ।

सुरणरखयरमणिवीणारयगाइयजसपसाहिओ ॥ १ ॥

ण सोहग्गपुंजु णिध्यडियउ	णाइ पयावें विहिणा घडियउ ।
जलिवि जलिवि उल्हाइ ण जीवइ	जासु भएण णाइ सिहि णीचइ ।

4 १ M सुकय° २ MBP नामकरण ३ P चूडा° ४ MBP °गुणे ५ P विहसिय°, ६ MB बुह-
 वयणामय°, P बुहणयणामय° ७ MBP धण° ८ P °सिरि ९ MBP गइयय १० MBP भुयज्जुद.

4 1 °करमजरि° किरणसघाता, °णियइधंसओ° राजवदा 2 विसरिस° आद्वितीयम्, °सुकय-
 साहिसाहासिउ पुण्यश्रुतायाधित 5 b °णियेसु स्थानम् 7 a पिउसहाव° प्रियः स्वभावः पितृस्वभावो
 वा, रुढो प्रसिद्ध 9 a नाय° न्याय, b °विही विघाता 10 b °भोय° भोगा फटाटोपश्च 11 b जंमारि°
 इन्द्र 12 a अयुपवाहसरो समुद्र, b विलयावदहु वनिनावृन्दस्य 13 अभिदलि खणपत्रे, मुइ भुजे

5 1 विस वृषभ, °अहिओ बाधिक 2 °पसाहिओ° मण्डित 3 a णिच्चडिउ कपोत्तार्ण 4 a
 जलिवि जलिवि प्रज्यल्य प्रज्यल्य, उल्हाइ ज्वालारूपतां परित्यजति, अग्नारावस्यो भवति, ण जीवइ ज्वालारूप-
 यैव नावतिष्ठति, b णीवइ विध्याति, अग्नारूपतामपि त्यजतीत्यर्थ

जोइसछदतक्कायरणइं मल्लगाहजुज्झइ कयकरणइं ।
 वेज्जैणिघंटोसहिबित्थारु वि बुज्झिउ सँव्वलोयवावारु वि ।
 चित्तलेप्पसिलवरतरुक्कम्मइं पवमाइ अवराइं मि रम्मइं ।

घत्ता—पयणयसुरु तिहुयणगुरु जासु सइ जि वक्खाणइ ।

अइविमलउ सो सयलउ कलउ किं ण परियाणइ ॥ ६ ॥

16

7

रचिता—पुणरवि णियसुयस्स सो णिवरिसि णेहवसेण भासए ।

गिरिथणिधरणितरुणिपरिपालणविहिविसयं पयासए ॥ १ ॥

पभणइ पहु भो पढमणरेसर	अत्थसत्थु णिसुणहि भरहेसर ।	
ववसाए सुसहाए सपय	होइ णिरुत्तउ पयपाडियपय ।	
अलसत्तें खलसगें णासइ	सा मइ एहउ तुह सुय सीसइ ।	5
असहायहु जणि किं पि ण सिज्झइ	हात्थि वे सुत्तसमूहें वज्झइ ।	
जाइ णाव मारुइण विलगें	जलइ जलणु तासु जि ससगें ।	
मंति सुरु दुहसहु सुहि सहयरु	तासु करेज्जसु कज्जि महायरु ।	
जणि कज्जु जि मित्तिरिहि कारणु	तेण ण किज्जइ तहिं अवहेरणु ।	
तं पि वुद्धदारेण समुब्भइ	बुद्धि वि बुद्धं सेवइ लब्भइ ।	10

घत्ता—सिरपलियहिं मुहवलियहिं मुँइ जराइ णिव्वच्छिय ॥

जे सत्थइ कम्मत्थइ कुसला ते मइं इच्छिय ॥ ७ ॥

३ B वेज्ज ४ MBP सयल

7 १ MBP णिसुणहि २ MBP हात्थि वि ३ MB सुहदुहसहु, P दुहसुहसहु ४ MBP बुद्धि-
 चारेण ५ B बुहसेवइ ६ MP सिरि पलियहिं, B सरे पलियहिं ७ MBP सुय

11 b कयकरणइ आवर्तननिवर्तनप्रवेशनादिकृतचेष्टानि 12 a वेज्ज° वैद्यकम्, णिघट° कोश 13 a
 तरुक्कम्मइ काष्ठकर्माणि

7 1 णिवरिसि राजर्षि 2 गिरिथणि° गिरि स्तन. यस्या सा पृथ्वी 3 b अत्थसत्थु नीतिशास्त्रम्
 4 a सुसहाए सुमहायेन 5 b एहउ ईदृशम्, सीसइ कथ्यते 7 a मारुइण विलगें वायुना पृष्ठतो लभेन
 8 a सुरु सुभट, दुहसहु दु खस्या सोढा, सुहि सुद्धत्, सहयरु मित्रम्, b महायरु महादरम् 9 b अव-
 हेरणु अवगणनम् 10 a समुब्भइ विचार्यते 11 मुइ सुय, णिव्वच्छिय तिरस्कृतास्वरूपा 12 कम्मत्थइ
 कर्मकरणे

४

रक्षिता—विषमहमयविहङ्गपक्षिसाहचर्यपरणर्पितहारिणौ ।

पङ्क्तिरद्वयविनासप्राप्तसु पिहानय राहचारिणौ ॥ १ ॥

बुद्धिलुप्ततोषियमहिर्मेढक

मंतचारिणमहिर्बाह्वद्व

बुद्धा जेहि न साक्षि मतिर

कच मुचंति कया वि मतिर ।

ते सुंदर आपसु बुधियुक्ता

कुम्भकसिन्धुमयजसं बुद्धा । ४

होति अमुह बुधसंयुक्ता

वैषम्यवाच तिर्के वि सुयंघा ।

बुधसंयुक्त बुद्धि उन्मत्त

सा सत्तविह कुमार कहिअर ।

सुखसा लक्ष्य वि संधारण

मायसु गहसु बाणु निष्पन्नमसु ।

तिविह होर मंगु संवधिनि

सा वि कौह वि तिष्ठपक्षितामि ।

विष्णुविष्णुवाचसंयुक्तमय

शुक्लमयसु सुयय विषममयसु । १०

तार मंगु भवसे विष्णुअर

सा पंचविह कहंति महामर ।

पता—आहता कम्मतर पदमुवाच विहङ्ग ।

परसति वि यत्तुति वि वेत्तु कसु आपवत् ॥ ८ ॥

९

रक्षिता—अवि न सहसित पुरिस बंधोरिस तुक्यावापरकर्म ।

अविहङ्गमिहिविहङ्गपक्षिसिद्धि वि आपसु मंतकपस्तमं ॥ १ ॥

सुययुक्तरणु बुद्धिमायु वि

वार्य कुम्भकसंगमसु वि ।

अप्यययससमसु आ सुख

बंधपीर सा पुत्त पञ्चर ।

किसि पञ्चपासु सङ्ग बाधिसं

वत्त मविअर महिवापुर्के । ४

४ १ MBP वृत् १ MBP विह व. १ MBP कति. ४ MBP विषमर.

९ १ MBP वृत्तरिह.

४. १ "परवर" कर्म; "विहङ्गारिणौ वापुसा ॥ वहुमिरद्व" विहङ्गमिहिविहङ्ग; विहङ्गम विहङ्गम; उहवारिणौ विहङ्गमिहिविहङ्गम ४ १ वतिह वर्य इति (व + वतिह). ४ १ बुद्धि-युक्त विहङ्गम; ४ "वत्त" "वत्त". ४ १ वत्तारणु कम्मतरमिहिविहङ्ग ४ १ वत्तारणु विहङ्गममसु कम्म-रिहिविहङ्गम. ११ तार तथा विहङ्गम बुद्धा १२ आहता कम्मतर वर्यो कर्म वहुवाच कर्मविहङ्गम.

९ १ "तुक्क्यावापरकर्म" तुक्क्यावापरकर्म. ४ कुम्भकसंगम कर्म. ४ १ वत्त वर्य वत्त वर्यमिहिविहङ्गम.

चउवण्णासमु धम्मं तद्वत्तिय
ते अप्पणु पइं पुरउ करेवा
तादं कम्मं जगसत्तिपयामउ
अय तिवरिस जव तेहिं हृणेवउ
जं जि पढेवउ त जि करेवउ
इंसणणाणचरित्तु कहेवउ
धम्मचेरु अहवा कुलउत्ती
णिच्चण्हाणु जिणपडिमापूयणु
इय मज्जाय विलववि लपड

अज्ज वि सुंदर होंति ण सोत्तिय ।
हीण दीण वाणेण भरेवा ।
जणियभूयगैहयणसतोसउ ।
जणहु जीवदयवयणु भणेवउ ।
असि ण धरेवउ दाणु लएवउ । 10
तिउणउ सुत्तु सगीरि उँवेवउ ।
अण्णणारि मइं ताह ण उत्ती ।
णिच्चहोमु णिच्चातिहिभोयणु ।
ते एहिंति जीउ मारिवि जड ।

घत्ता—सुयस्मंगहु करुणावहु दाणु धराणिजणधारणु ॥

16

इय इट्टउ मइ सिट्टउ एत्तियकम्मवियारणु ॥ ९ ॥

10

रचिता—वियलियमलमईहिं मंतीहिं कुंमग्गय परिक्खिय ।

पैसुसममिणमसेसमहिचलयमहो णरणाह रक्खिय ॥ १ ॥

पढेणहवणदाणइं वाणिज्जइ
सुइहु मंणु वत्ताणुट्ठाणु वि
अवरु कुसीलकारुजीवित्तणु
कम्मरहिउ जणि भहु ण भुजइ

इय वणियहु कम्मइं णिरवज्जइ ।
वण्णत्तयपेसंणसमाणु वि ।
एम कम्मि संजोएवउ जणु । 5
धम्मविवज्जिउ त पि ण किज्जइ ।

२ MBP गहगणं ३ K त जि पढेवउ ज जि करेवउ ४ MBP वसणु णाणु चरित्तु ५ MBP धरेवउ,

10 १ T reads कुमग्गय and explains it as पादामे स्थितम्, it however records a p कुमग्गय and explains it as कुत्तित्तमार्गे प्रवृत्तम् २ M पसुसम ३ MBP पडणइ वणदाणइ ४ P पुणु ५ MBP पेसणु संमाणु

6 a आसमु आधमा, तद्वत्तिय त्रयी विद्या, b सोत्तिय विप्रा 7 a पुरउ करेवा अमे कर्तव्या
8 b भूय भूतं 9 a अय अजा त्रिवर्षयवा एव येपामङ्करोत्पत्तिर्न विद्यते 11 b तिउणउं सुत्तु विणुण
यशोपवीतम् 15 सुयसगहु धृतसंगह, करुणावहु दयामार्गे 16 इट्टउ इयम्

10 1 वियलियमलमईहिं विगलितपापमतिप्ति, कुमग्गय कुत्तित्तमार्गे प्रवृत्तम्. 2 पसुसममिप
पञ्चसदृशमेतत्, यथा गवादीनां पालनं क्रियते 4 a वसाणुट्ठाणु वार्तानुष्ठानम्

अण्णाय ण दविणु णासेवउ
रोसुप्पण्णउ वसणु तिहेयँउ
इय सत्तविट्ठ भरेण ण किज्जइ

तिक्खदंइ सुंफस्सु भासेवउ ।
मइं महिवइस्साणि विण्णायउ । 10
रिउछज्जग्गाहु हियँउ ण दिज्जइ ।

घत्ता—सुइ कोट्टु वि मउ लोहू वि माणु हरिस्सु सहू कामँ ।
गुरु घोसइ सिरि होसइ पयहु गयपरिणामँ ॥ ११ ॥

12

रचिता—एकंतरिउ मिच्चु गिरंतैरु सत्तु भणनि सूरिणो ।
तासु महति मंतु पट्टपेसिय गूढा लिंगधारिणो ॥ १ ॥

गूढ वि पडिगूढहिं जाणेवा
फीरइ कालि गमणु घवगयमलि
विग्गाहु हीणँ अहय समानँ
दुग्गासिएण समानु वि किज्जइ
एम अलद्धउ लम्भइ मंडलु
उप्पाइज्जइ दवु पसत्थं
तित्थहिं धरिउ रज्जु थिरु अच्छइ
सामि अमबु रट्टु घणु सुहिं बलु
इउ सत्तंगु जेम्भ णउ रिज्जइ

जे विरुद्ध ते तहिं णिहणेवा ।
आसणु घट्टुकणतणजलमहियलि ।
बलवतेण सधि कयदाणँ । 6
मिच्चु वि पडिक्खत्तु ण णिज्जइ ।
परिरक्खिज्जइ कय चित्तियफलु ।
तं दिज्जइ अट्टारएतित्थं ।
रायाइल्लउ रायहु ण गच्छइ ।
भणु सत्तमउं दुग्गु हयपडिवलु । 10
तेम तणय वसुमइ पालिज्जइ ।

घत्ता—इय भाविउ सिक्खाविउ चकवट्टिलच्छीहरु ॥

णियजणँ णं तवणँ वियसाविउ कमलायर ॥ १२ ॥

४ MBP सुकरसु भासेवउ. ५ MBP रोसुप्पण्णु वसणु तिहणेवउ ६ P adds after this line णिच्छउ
मइ हियइ संभाविउ ७ MP चित्तु

12 १ MBP गेरतर २ MBPK दीणँ ३ M कयमाणँ ४ MBP दुग्गासिए समानु जि किज्जइ

10 a रोसुप्पण्णउ वसणु तिहेयउ अन्यायेन द्रव्यनाश, तीक्ष्णदण्ड, परपवचन चेति रोपोत्पन्न भिभेद
व्यसनम् 11 a भरेण आतिशयेन 12 सुइ सुव

12 1 एकतरिउ एकदेशान्तरस्थ राजान मित्रम्, गिरंतर समीपस्थ शत्रुम् २ तासु महति मंतु
तस्य शत्रो भिन्दन्ति मन्त्रम्, लिंगधारिणो विविधवेपथरा 5 a विग्गुह संभ्राम 6 a दुग्गासिएण
समानु दुर्गाभित्तन सह संधि क्रियते, ७ पडिक्खत्तु शत्रुत्वम् 9 b रायाइल्लउ अनुरागयुक्त् 10 सुहि
सुदत्त. 11 b वसुमइ पृथ्वी 12 तवणँ सूर्येण

13

रचिता—गुणमणिफिरजपसरमरैसमिपुष्पपतिमिरमेक्यो ।

हृद बहसवजपवजमससिपविहृपवहवजकीकनो ॥ १ ॥

यम्मात्मेतु कुसलु तेयंसिड
अपिसुणु वहुप्पणु अरुसुणु
मैहरिदिहव समसु विपिदिह
हृपलोव अदीहरमुत्त
यिद संमरजसीलु विम्मलवड
मूळकवसु मेहावि सयावड
पुणु सम्भत्तविमाजु आपड
असवहरेविदि वीवड पवणु
मवड अमंतवीव पुणु अमुर

हियमियमहुरमासि विवसंसिड ।
सुर सुपीव वजवहु महासुणु ।
सहसुप्पणुवुदि अमवंसिड । 5
पुरिसम्भड पसणु शुभमत्त ।
सपेह्णु अविमविट्टु आसुत्त ।
वि वणिक्कड मात्तपवड ।
वसहसेणु आमं संवावड ।
पुणु वि अमंतविजड रिडमहणु । 10
वीव सुपीव मत्तकरिकटुत्त ।

यत्ता—गोवर्गगई अविमंगई पुष्पपहावपडम्भड ॥

गुणलुत्तई सड पुत्तई पवमार वप्पण्णई ॥ १३ ॥

14

रचिता—अवयवजयवजवजकरकमपकसयसावपवसोहिया ।

समिबसविसवविरसेविसवेहवि सीपैसिपपसाहिया ॥ १ ॥

धीय सडवजव कोमलगाती
असवहसरसटीरि संमूई

अक्कवैसिपिज्जिपवजवती ।
वंगी आमं अवर वि हूई ।

13 १ GK have गुरई for रचिता from this Kadavaka onwards to the end of the Sanskrit. १ P वजमिय १ B वजमिदिह ४ B वजमपिणु ५ MBP वणु. १ B अविमविट्टु. ७ BP अवड but glow in P अमुर ८ MBP सुपीव ९ MBPT मववह

14 MB "अक्कवजव" १ MB "मिक्कवहवि" १ P "आवसिटी" ४ MB "पहाहिया".

13. 3 यम्मात्मेतु अमंमिबी तेवसिडतेवली 4 ३ महावणु वजवीरवणु; 5 ४ वह रिदिहव अमिदिहव; 6 ५ हृपवीव हृपलोवी वीववि; अदीहरमुत्त वीवजमंमत्त; ७ पुरिसम्भड पुरिसविजड; ८ ५ वजमपिणु एविमिणु; विम्मलवड विमलमती विमलवणु; ९ अविमविट्टु अ-
वुट्टिविजड; 10 ५ वजवजव वहुत्त वजव; वजवज वजव ॥ १३ वजवपई अममंमवजवजवजवजव

14 २ अविमविजड-अविम विजव वीव एविमविजवविजव वीव वजव वजव.

वियलियसोयहि भुंजियभोयहि
 छुउ सव्वत्थसिद्धि परमेसर
 सिद्धु अविपिकवंससुच्छायउ
 तुच्छवुद्धि अप्पउ अवगण्णमि
 गज्जमाणजलहरजलणिहिसर
 पुण्णमियंकवयणु जसहलतर
 पुरकवाडपविउलवच्छत्थलु
 दलियासामयर्गलगलसंखलु
 तणुमज्जप्पयसि रहरंगउ
 वियडणियंनु तयविवाहर

पुणु वि सुणंदहि णंदियलोयहि । 5
 हुउ मणहर णं मरगयमैदिहर ।
 वालउ घाहुवलि वि तदि जायउ ।
 पहिलउ कामपउ किं वण्णमि ।
 फलिहपईहथोरकरपंजर ।
 सिरिकीलारिंदिसमभुयसिर । 10
 विससहूलपु अविउलवलु ।
 णीलणिद्धमउपरिमियकुंतलु ।
 अगं सहु जि अउवु अणगउ ।
 उच्छुचावजीयासधियसर ।

घटा—णवजोत्थणि जायइ घणि पंचहिं तेहिं पयंदहिं ॥

15

पुरथीयणु कंपियमणु विद्धउ कोसुमकंदहिं ॥ १४ ॥

15

रचिता—पसरियमयणजलणहुयरसवससुसियंगेहिं कालिया ।

विलवइ चंलइ घुलइ सुहयस्स कए तहिं का वि वालिया ॥ १ ॥

का वि पलोयइ पयणियनुट्टिहिं

मउलियललियहिं वलियहिं दिट्ठिहिं ।

का वि पपसु पडंती दीसइ

का वि सविणय किं पि सभासइ ।

५ M °गिरिवर ६ MBP °सच्छायउ ७ MBP कामदेउ ८ M °गलगयसखलु ९ P °कोतलु.

15 १ MBP ववइ २ MPK चलियहिं

7 a अ वि पि क व स सु च्छा य उ अपकवशवत्सुकान्ति 9 b फ लि ह प ई ह ° अर्गलावत्प्रदीप ° 10 a पुण्ण
 मिय क व य णु पूर्णचन्द्रानन , b गि रिं द स म भु य सि र गिरीन्द्रसमानोज्ञतांस . 11 b विसं वृषम , अ वि
 य ल व लु स्थिरबल 18 a द लि या सा म य ग ल ग ल सं ख लु दलिता आशामदकलाना दिग्गजानां गलशृङ्खला
 येन 13 a रं इ र ग उ र ते रत्नभूमि 14 a वि य ड ° विकट °, तं ब विं बा ह र तांश्च रथ यद्विम्बीफलं तद्वद्रथ
 ओष्ठो यस्य , b उ च्छु चा व जी या सं धि य स र इक्षुचापप्रत्यक्षासधितशर 15 प च हिं ते हिं ते पयमि पुत्रै ,
 कामपक्षे, स्तम्भनमोहनशोषणकर्षणवशीकरणै 16 को सु म क ड हिं पुण्यमयैर्वाणे

15 1 ° मयणेत्यादि- कामामिना जनितो यो रस प्रेम तद्वशेन शोषितानि दग्धानि अक्षानि यस्या ,
 अत एव कालिया श्यामवर्णा 2 घुलइ पतति, सुहयस्स कए सुमगस्य कृते 8 b मउलियं मुकुलितं,
 सलज्जतया किञ्चित्सकुचिताभिरित्यर्थ

का पि मभइ विजउ आसिगण
ता दामइ मुइ तापइ करी
संपनि दीसबइ विसमइ
कैनाइरणइ रयणभित्तउ
तमायणपण गियइ अपभिरि
क पि तत्तुं पाप पफासइ
देरि विरिचिउ के बि मीमूवइ
काइ बि जायेतिइ मबरजउ
काहि पि बीबीचंपण इस्मिय

७४ मन्त्रोऽहं मेवमिदं प्रमथि । ६
 भाष्यं सुखिणमपारं जगती ।
 कः पि मोहममिष्यत तर्हि ममाह ।
 का पि दहं कंकु कङ्कितुत ।
 कः पि आमापदु सारं हंती ।
 धृवरं तुमु तनुं न निहाह । १०
 यद्विद्वन्मतिं विद्वत् सिद्धिं कुरु ।
 वक्ष्यते मणिं विद्वत् मन्त्रं वदत ।
 वेदमसमिद्धं कुरुष्वति गच्छिष्यत ।

प्रश्न—पर मातृ कर्मगतं का वि वेह करि वेउह ।

उद्दामे ह्य कामे संतापित्तं सुखं विन्दते ॥ १५ ॥

15

16

पविता—कुरुष्यसपथमोहमाज्ज्वरणीं प्रहरणवचसिपुं ।

इतिवयमिह ब्रह्मंति एतन्नीपत्र कस्तु सिधेइविद्यासिर्प ॥ १ ॥

जिह जिह सुंदर नेहा रम्य
सौम्य सुसंजु पद्म कुमार
कारि कद कदाकि कद कोमल
काहि वि विरहाधि पदकि पल
सह कान महसमयागमने

निह निह विषयत इत्य वरष्महि ।
 वेष्मनिह बाहुयवि कुमाप्य ।
 तनुवापिष कडर सरकोममु ।
 ययमु वि कयमु हृषत बीतुप्यु ।
 विषय का वि विषयमपागमने ।

1 MBP प्रोपेडि \rightarrow MBP एचयु \rightarrow M सिटोम \rightarrow MBP रोर \rightarrow B कनिमीयुव \rightarrow P कसामासि
16 \rightarrow B इति \rightarrow MBP रोर \rightarrow P निरुपिडि

[illegible]

मउलिय फुल्लिय मल्लिय काणणि
णिग्गय पल्लव णवसाहारहु
पइ मेलेप्पिणु लवइ व कोइल
मुहमरुपरिमलमिलियसिलिम्मुह
का वि चवइ पिय हउं तुह रत्ती
का वि भणइ पिय करि केसग्गहु
का वि कहइ लइ चुंवाहि धयणउं

मंडणु देइ पुरंधि ण काणणि ।
मुयइ तत्ति विरहिणि साहारहु ।
सुहयत्ते किर भूसइ को इल । 10
जे ते णं कंदप्पसिलिम्मुह ।
अज्जु गइय मह दुक्खे रत्ती ।
वियलउ मालइकुसुमपरिग्गहु ।
अवर मं देहि किं पि पाढिवयणउं ।

घत्ता—णउ मेल्लइ क वि योल्लइ म करहि काइं वि विप्पिउ ॥ 15
घर वित्तु वि णियच्चित्तु वि सयलु वि तुज्जु समप्पिउ ॥ १६ ॥

17

रचिता—क वि रुणुरुणइ किं पि सुइसुहयर मणरुहविसिहसल्लिया ।
पिययमवयणकमलरसलंपडि तरुणीमहुयसल्लिया ॥ १ ॥

जो सूहउ महिलहिं माणिज्जइ
गन्धि सुणंदहिं रूवरवणी
णवजोव्वणि चडंति सा लज्जइ
रत्तुप्पलु पयसोहइ जित्तउ
भूवंकत्तणु थणयइत्तणु
पडिआयहं दंतहं धवलत्तणु

कंदप्पु जि पुणु कहु उवमिज्जइ ।
तासु वहिणि अवर वि उप्पणी ।
चंडु कलंकं धयणहु लज्जइ । 5
तेण वि अप्पउ सलिलि णिहित्तउ ।
अहरहु केरउ अंइराइत्तणु ।
जणमारण णयणहुं मि चलत्तणु ।

४ B मडलु ५ K सिलीमुह ६ MBP म किं पि देहि
17 १ M अइरत्तणु, BP अइरायत्तणु

8 b ण काणणि का स्त्री मण्डन न ददाति आनने सुखे, अपि तु सर्वा ददाति 9 b साहारहु स्वाहारस्य, अयवा
सा हारहु हारस्य 10 b इल पृथ्वी 11 a °सिलिम्मुहु अमर, b °सिलिम्मुहु वाण 15 विप्पिउ
विप्रियमनिष्ठम्

17 1 रुणुरुणइ सकाममव्यक्तशब्द करोति, मणरुहविसिह° कामबाणा 2 तरुणीमहुयस-
ल्लिया तरुण्येव मधुकरी भ्रमरी 4 b तासु बाहुवले 5 a पयसोहइ पदकमलशोभया. 7 a धणयइत्तणु
स्तनकठिनत्वम्, b अहरहु अधरो दरिद्र ओष्ठश्च, तत्र दरिद्रेऽतिरागित्व दोष, ओष्ठे तु गुण. 8 a पडि-
आयह पूर्वमेकवार पतिता पुनरुद्रतास्तेषां दन्तानाम्, पक्षे पराजयात्प्रत्यागतानां धवलत्व कथम्

सुयहं महंतु कहतु अणेयइं
एम भडारउ अच्छइ जइयहुं

विण्णाणइं णाणइं बहुमेयइं । 10
भग्गी पय दुक्कालें तइयहुं ।

घत्ता—अविवेइय घर आइय चवइ जिणेण गिरिभिस्सय ॥
पहु दहविह सुरमहिरुह अवसप्पिणियइ भक्खिय ॥ १८ ॥

19

रचिता—सयमहवियडमउडतडमणिगणवियलियविमलवारिणा ।
धुयकमकमलजुयल परमेसर पइ मि महारिवारिणा ॥ १ ॥

कप्पंधिविणासि संहोरहु
जिण्णइं अंवराइं मलमलिणइं
तणु लायणु वणु परिल्हसियउ
लग्गणखंभु अणु को अम्हहं
असणवसणभूसणसपत्तिहि
णिहिलकलाविसेससंपत्तिहि
तं णिसुणेवि जायकारुणं
करिसणकरण धरणु मयणिवहहं
पहु घह भोयणु भायणु रंजणु
सेज्ज सरीरताणु जलधारणु
असि मसि सिणु वि जं जिह जेहउ

णउ परिरिक्खय भुक्खामारहु ।
कालें विहडियाइं आहरणइं ।
जडरहुयासैं रुहिरु वि सुसियउ । 5
एवहिं सरणु पइट्टा तुम्हहं ।
भवणजाणसयणासणजुत्तिहि ।
करि णिच्चित्तं असेसहि वित्तिहि ।
देवें पउरणाणसंपण्णं ।
हरिकरिमेसमहिसविसकरहहं । 10
घरु पर्यणविहि पीडु मणरंजणु ।
हारु दोरु केऊरु सकंकणु ।
अप्पिस्सउ लोयहु तं तिह तेहउ ।

घत्ता—परमेसर सुंघरियधरु आइपुरिसु कमलासणु ॥

जगु पेसिवि संतोसिवि पालइ खत्तियसासणु ॥ १९ ॥

15

19 १ MBP ° दारिणा २ MB सधारहु but PGKT सहारहु ३ MBP को विणउ अम्हहं
४ K णिप्फत्तिहि ५ P णिघत ६ K °सपुण्णं ७ M °वस° ८ MBP परियणु वि ९ MBT जलवारणु,
but T records a p जलधारणु and remarks 'जलधारणु छत्रम्, अथवा जलधारणु चापीकूपतडागादिकम्'
१० MBP सुचरियधरु

11 b पय प्रजा

19 2 पइमि त्वयापि, महारिवारिणा महाहु खनिवारकेण B a सधारहु प्रलयकालात्, b भुक्खा
मा रहु भुधामरीसकाशात्. 5 a परिल्हसियउ हीन जातम्, b जडरहुयासैं जठराग्निना 6 b एवहिं
इदानीम् 8 b विसिहि जीविकायाम् 11 a रंजणु अलजल अलिजरो वा, b पयणविहि पचनविधि 12 a
सरीरताणु कवचादिकम्, जलधारणु छत्रादिकम्, 14 सुघरियधरु सुश्रुतभूमि

20

रविता—अथ वि मविध बविधवर इत्यहं सुपरिपक्वमिच्छयहा ।

कथं परिपक्वमिच्छयमं ब्रूयात् वि पयविधविधिविच्छयहा ॥ १ ॥

येहं येहपात्र कुंभाद वि

विष्णुपीठं मासिउ बम्माद वि ।

येहिं वं वि विपक्वमु पपासिउ

ताहं तं वि कुम्भेवै मासिउ ।

एसुव सैपव कोकव कोसव

कथा हीर कीर कस केरव । 5

वंग कर्किग वीर काकव

वपुव कवज कुव गुजर वज्र ।

इविह गवड कम्माव वपाव वि

पारस पारिबाय पुष्पाव वि ।

सुर सुरव विवेहा काव वि

कोय वंग मासव पंचाव वि ।

मायव कहे मोह येवक वि

कह पुंउ हरि कुव मपाव वि ।

देवमावसासुम्माव ससकिव

साहारव अरुव पर वंमव । 10

मिच्छिस्वरिपुणेहिं कुसंवर

अहंसेव बसिक्कववर ससवर ।

अथा—अहंवरिपिं अहंवरिपिं महि सोहव अठपासिहिं ॥

अवैगामहिं आरामहिं केसहिं एवकुसोसहिं ॥ २ ॥

21

कुंभं—अठविहगोठपां अठपां अठपां भूमिच्छयो ।

कायव पुपां पुष्पवमिच्छो सुवैविध्यवेसयो ॥ १ ॥

20 १ K बविधविधं २ P 'पुष्पाव', MB 'पुष्पाव' ३ MBP कं. ४ MBP अवर.
५ MBP अ. ६ MBP अविच्छय. MB कवमासिहिं MBP केसहिं

21. १ MBP call this complete एविह, GK call it कुंभं which it is २ MB पुष्पं
३ B सुवैविध्यवेसयो

20 I 'अठविधं' अठविह गठमा; 'पुष्पाव' पुष्पाव ३ परिपक्वमिच्छयमं अठपासिहिं
अठविधमिच्छयमं अठपासिहिं ४ येहं येहपात्र कुंभाद वि ५ येहिं वं वि विपक्वमु पपासिउ
६ एसुव सैपव कोकव कोसव ७ कथा हीर कीर कस केरव ८ कवज कुव गुजर वज्र
९ पारस पारिबाय पुष्पाव वि १० कोय वंग मासव पंचाव वि ११ मायव कहे मोह येवक वि
१२ देवमावसासुम्माव ससकिव १३ साहारव अरुव पर वंमव १४ मिच्छिस्वरिपुणेहिं कुसंवर

21. १ भूमिच्छयो अविच्छय

खेडइ थियदुवासगिरिसरियइं
 पंचगावैसयसहियमडवइ
 दोणामुहइ जलहितीरत्यइ
 सुणिरूवियसविणयसेवायर
 पयणियरायसुरिंदाणदै
 वण्णचउक्कमग्गु उवएसिउ
 तिहुयणरायहु महिरायत्तणु
 कम्मभूमिसंपय वरिसंतहु
 पुव्वहुं वीस लक्ख गय जइग्गु
 णाहिणरिंदामरसघायहिं

कव्वडाइं माहिहरपरियरियइ ।
 रयणजोणिपट्टणइं अउव्वइं ।
 संवाहणइ अहिसिहरत्यइ । 5
 वइरायरपहइ जे आयर ।
 ते रक्खाविय कुलयैरचंदे ।
 दंटे दोसु असेसु पणासिउ ।
 कवणु गहणु तउ : णुयपहुत्तणु ।
 कणययणधारहिं वरिसंतहु । 10
 वडु पट्टु जगणाहहु तइयहु ।
 कच्छमहाकच्छाहिवरायहिं ।

घत्ता—सिंहासणि णिवसासणि आसीणउ परमेसरु ॥

जयसिरिसहि पालइ महि बहुहलहरउवणीयकर ॥ २१ ॥

22

रचिता—हयमलचरणकमलजुयणिवडियविसहरखयरभूयरो ।

अकलुसतियसतरुणिकरपल्लवचालियचारुचामरो ॥ १ ॥

भोयविरामि लुहवेविरतणु
 घरि उच्छुरसु पियहु जेणायउ
 सोमप्पहु कोक्किउ कुरराणउ
 हरि हरिकतु कहि वि हरिवसहु
 कासवु मघवु भणेप्पिणु घोसिउ
 अघरु अकंपणु सिरिहरु भाणिउ
 चोहैहमयकुलयरापियणदणु

उडियकरयलु णीसेसु वि जणु ।
 पडु इक्खउवसु ते जायउ ।
 सो जायउ कुरुवंसपहाणउ । 5
 कउ पुंरिमिल्लु पुरसु सपससहु ।
 उग्गवसेमूलिल्लु पयासिउ ।
 णाहवसि सो पहिलउ जाणिउ ।
 मरुएवीमणणयणाणदणु ।

४ MBP ° गाम° ५ K कुवल्यचदै

22 १ MBP पुरमिल्लु २ MBP उग्गवसु ३ MBP चउवह°

3 a दुवास° द्विपार्थ° 5 b अहिसिहरत्यइ पर्वतशिखरस्थानि 6 b वइरायरपहइ वज्राकरप्रसृति,
 a आयर आकरा खनय 7 b ते आकररत्नानि 14 उवणीय° उपदौकित°

22. 1 हयमल° हतमल परमेस्वर, °भूयरो मनुज 6 a हरि हरिनामा पुरुष, हरिकतु कहि नि
 चन्द्रवत् कान्त इति भगित्वा, b पुरिमिल्लु आय 7 b °मूलिल्लु प्रथमपुरुष

कविबलसिरमणिहयपयजैड

सकलसुख सपुत्र संतेजस ।

१०

कविबलसिरमणिहयपयजैड

यच्छह रज्जु करेणु महाहड ।

धत्ता—एव पासह वनबाकह पावमम्मु मामासुड ॥

सिरिमकहें सहुं मरहें पुण्यपर्वतु रिखेसव ॥ २२ ॥

इय महापुराणे तिषाहिमहापुरिसगुणाखंकारे महाकहपुण्यपर्वतविरहप

महाप्रबन्धमण्डाशुमन्विय महाकण्ठ आहरेममहापदवर्गी नाम

पंचमो परिच्छेदो नमस्तो ॥ ५ ॥

॥ संधि ॥ ५ ॥

४ H "नोरपुजेति H नोरपुजेति

११ कविबलसिरमणिहयपयजैड १२ महाहड महापिठ १३ सिरिमकहें श्रीमन्मोद.

VI

अण्णहिं दिणि मभवणि मुरगगहि मधुउ मपयमारउ ॥
फणिउणुयहिं मणुयहिं सेवियउ भिउ अयाणि मडाउ ॥ १ ॥ भुपकं ॥

I

मलययिलमिया—कचणघट्टिया	मणिमणजडियइ ।
हरिचरघरियइ	पट्टिगुनियइ ॥ १ ॥
आम्माणि आसीणउ परमपहु	अमरहिं किं यणिजइ रिमहु । 6
दिण्णइ चोउरिपट्टामणइ	मुंयिचिन्दित्तयेत्ताम्माइ ।
रयणंनियइ लोत्ताम्माइ	दडुण्णयाइ इट्टामणइ ।
पणेत्ता पाहाणा भोणि मिलिय	तहिं मणिमण्ण यहु मंडलिय ।
कु वि णरचइ धुमिणं समन्ताउ	ण मिरिकाभिणिराणं गहिउ ।
कु वि दीनइ चउणभूयसिउ	गंडुरु णं णियजसेण भरिउ । 10
मयणाहिविलित्तउ को वि णं	ममिग्गिमीयउ धरइ य तिमिउ ।
णिदि कहिं मि धुलइ हाताउल्लिय	कम्माइ ण जलहरि पिज्जुलिय ।
फात्तु वि पटंति चमरइ चला	ण पित्तिसुभिमिणिहि मयदलइ ।
कण्णभूलियालुल्लइ	गणुगटइ तहिं महुयउ धुलइ ।
सो केण वि पंतु णियारियउ	तंरोलहु पाणि पम्मागियउ । 16

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza

धीयांदेव्यै जुष्वा। वादेयी दृष्टि सता लक्ष्म्ये ।

भरतमनुगम्य सांप्रामनयोरात्ययिक प्रेम ॥

GK do not

1 १ MBP चाउरिपट्टासणं २ MBP मुंयिचिन्दित्तपट्टासणं ३ G गणमेलिय ४ MBPT कु वि णिवर

1 1 सभवणि स्वप्रागदे, सपयमारउ मपसिमारक 2 अ त्था णि आत्माने मभावाम् 4 a इ रि
वरं सिंहवर, b पहुं प्रमया 6 a चाउरिं गादीति देवी 7 b दं दुण्णयाइ दण्डवदुत्ताने 8 b सं नि
सण्ण उपविष्टा 9 b सिरिकाभिणिराण लक्ष्मीप्रिया 11 a मयणाहिं कस्तुरिका 12 a निदि उपे,
b क सणइ कृष्णदारीरे मेधे 13 b पित्तिसुभिमिणिहि नीरिरेव लोभना पद्मिनी तस्या, सयदलइ पद्मनी
14 b कणुगटइ दण्ड करोति 15 a गो भ्रमर

यथा—अगसामिहि कोमिहि मयच्छहि मि बंधारपबंधिपयहि ॥

पचबेताहि संतहि र्खमिबहि अहि विरोहु मभिक्किणहि ॥ १ ॥

2

मच्छविच्छसिपा—अय मिसण्णो
सिगाण्हय

पणवपमण्णो ।
रामाभिपरो ॥ १ ॥

विपमंमि अणं अहि मसिवर
पहुअम्मइ सेवाम्भणं
कमकंपहु अहु विहाअणं
आसुअु अम्मिआमेअणं
अवठंमअु अण्णवणंसवणं
सविवारउ कायभियच्छवणं
सेअियववअववारवणं
अवअ वि अं विअणं विगहिअं
मण्णहु मांअुअु सामिहि तवणं

अहिअर परंपहिहारवर ।
विपुअिअु डिमअु पइअणं ।
हिआरउ मंअंआअणवणं ।
अरमोअि पणअणअणवणं ।
अइअंअु अण्णवणंसवणं ।
इअुअमअेअुअंअणवणं ।
पण्णिअु पाअणमारवणं ।
न म अरअु अण्णवणारहिअं ।
अंअु अीअणअु अण्णवणं ।

5

10

यथा—इय तण्णिअु अविअउ सेवपहो अरिमोविहि वअु अंअउ ।

इअुअरिअेअिअंअण मा अियउ तअु अणं ॥ २ ॥

3

मण्णविच्छसिपा—अुरअरअरउ

अय मअरउ ।

अण्णअु अीअहि अुरअर मांअहि ॥ १ ॥

५ MBP कमिहि कोमिहि १ P अहिअहि

2 १ MBP अं १ M अणं १ M अरहि, BP अरहु ४ MBP अण्णु. ५ MB अहि
माअहि

3 १ MBP अरअु २ MBP अरअु

11 कमिहि अेअणमारोअं काअणे अरअरअं अेअ अण अहिअणा ते 12 अहिअहि अेअिअरु

2 3 अ विअमअि अिअिअमअि 3 अहिअर अहिअणा 4 अहु अिअणअण अण्णवणं
5 अंअंअं अु 9 अ अंअंअं अेअ 11 अ मण्णहु अण्ण 12 अहिअमअि अण्णवणं अरअरिअं
अण्ण अण्ण अु अण्ण

संचितइ अयहीणाणधरु
पुव्वहं परमेसरेण रमिय
भुजंतहु महि तेसद्धि गय
अज्जु वि माणि मण्णइ मत्त गय
अज्जु वि घैरि रइ किंकरणिवहि
को हुयवहु इंधणेण धवइ
को भोएं जीवहु करइ दिहि
जाणंतु वि मुज्झइ देउं जहिं

वारहरविसंणिहकुलिसयरु ।
कुमरत्तं धीम लक्ख गमिय ।
अज्जु वि अवलोयइ चवल हय । 5
इच्छइ अज्जु वि मंदण सधय ।
अज्जु वि ण विरप्पइ कामेसुहि ।
सरिसलिले सरिणियराहिवइ ।
वलेवनउ मव्वहु कम्मविहि ।
अण्णाणु अवरु किं भणमि तहिं । 10

घत्ता—रइराविउ भाविउ एँउ जगु किं पि णं याणइ जुत्तउ ॥
सकलत्तहिं पुत्तहिं मोहियउ णिवटइ हेट्टेहुत्तउ ॥ ३ ॥

4

मलयविलसिया—दुट्टे धिट्टे
ण तुह धणेण

डज्जानु तिट्टे ।
तित्ति इमेण ॥ १ ॥

अज्जु वि णउ फिट्टइ भोयरइ
अज्जु वि पडुहियउ णउ उवसमइ
सरणिहिसमाहं मइ पयडियउ
णट्टाइ धम्मकम्मतरइ
आयारइ पंचमहव्वयइ
ण पयासइ णवपयत्थसहिउ
इय चित्तिवि इदं जाणियउं

अज्जु वि णउ चितइ परम गइ ।
माणनरमणीरमणउ रमइ ।
अट्टारहकोटाकोडियउ । 5
दंसणणाणइ चरियइ वरइ ।
अणुचयणुणवयसिक्खवावयइ ।
सिद्धंतु अणाइ अरुहं कहिउ ।
अवहिप्प भवियव्वु पमाणियउं ।

३ MBP रइ घरि ४ B °णिवहो ५ B कामसुहो ६ M सरणियरा° ७ MBP सव्वह बलवत्तउ ८ MBP जाणतउ ९ K एहु १० MBPK एम ११MP ण जाइ, B ण जाणइ १२ MBP हेट्टाहुत्तउ

4 १ MBP ण उवसमइ २ T सरणिहि° ३ B Omits this foot ४ MBP °महावयइ ५ MB अरुहकहिउ

3 6 b सदण रया 7 a किं कर णिवहि सेवकसमुहे 8 a धवइ ध्यापयति, b सरि णियरा हि वइ समुद 9 b कम्म विहि कर्मप्रकार, कर्मैव विधाता 11 रा विउ रजितम्, भा विउ पुन पुन प्रकर्ष नीतम्

4 1 b तिट्टे हे तृप्णे 5 a सरणि हि समाह सागरोपमानम्

यत्ता—जहिं लोयण तिहुअणु जलहिसम सुइसखाइ सुललियहिं ॥
चर्लवद्धहिं अद्धहिं मुक्कियहिं वत्तावत्तंगुलियहिं ॥ ५ ॥

6

मलयविलसिया—विरईपुसिरे वंजे सुसिरे ।
नृकयपससे जाँयउ वंसे ॥ १ ॥

सरु जेत्यु झुणंति सुअत्थसुइ
कंपंतियाइ उगगमु तिसुइ
वत्तंगुलि मोक्खवसेण कय
सरिसहु धेवंउ कंपतियए
गंधारणिसायविर्वलिययाइ
पयणियवेणू णाणायरेहिं
पयद्धियउ जि देवागामि भाणिउं
घणु कसतालजुयलाइयउ
अमरहिं जिणमणसंसाइयहिं
उप्पणउ उरठाणंतरए
कमरइयपमाणहिं संलिवइ
सुइसु वि सरि ग म प धेणी यणाम

थिय मुक्कंगुलि व सुअट्टसुइ ।
मुक्कगुलियइ ह्यउ दुसुइ ।
संहु सजें मज्झिमपंचमय । 5
सामणसरंतरसंणियए ।
अद्धइ मुक्कइ अंगुलिययाइ ।
तुंवरुणारयसंणिहसुरेहिं ।
णिक्कलु तेप्पु वि तंतीरणिउ ।
समहंत्यु देविं जैहिं चालियउ । 10
पारद्धउ गेउ महाइयहिं ।
वाँवीस सुइउ णहंतरए ।
वहुंतु णाउ बुद्धिहिं धिवइ ।
सर सत्त तेसु दोणिण वि जि गाम ।

c MBP चवलद्धहिं, T चवलद्धहिं but explains it as स्थितमुक्कामि

6 १ MBP विरइयपुसिरे २ MBPT वज्जियसुसिरे ३ MBP णिकयपसंसे ४ MBP जाओ.
५ MBP जेसु ६ P सुअत्थवई ७ BP कपतियाउ ८ MBP उगगउ ९ P सहुं मज्जे, १० MBP धेयउ
T धइवउ. ११ M सामणं सरंतरसंणियए, B सरंतरसंणियए, सरंतरसंणियए १२ M विचलियाइ, B विच-
लियाइ, P णिचलियाइ १३ MB अंगुलियाइ, P अंगुलियाइ १४ P तिपुब्बि १५ MB समहत्थ १६ K
सचालियउ. १७ P जिणसमणं १८ MBP बावीस वि सुइउ १९ MP पपणीसणाम, B पपणिणाम

16 वत्ता वत्तंगुलियहिं उक्कविशेषणविशिष्टाभिरन्यक्कन्यक्काहुलिभिः.

6 1 a विरईपुसिरे विरतिप्रोच्छके, अनुरागोत्पादक इत्यर्थे B a सरु खर 5 b सजें वद्धजेन
सहु 6 b सामण सरंतरसंणियए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्त 8 a णाणायरेहिं नानादरैर्जानादरैर्वा 6 b
णिक्कलु तेप्पु वि तंतीरणिउ तन्त्रीवाद्य द्विविध निष्कलं त्रिपच (तेप्पु) 12 b णहतरए आकाशे 13 b
णाउ नाद

8

मलयविलसिया—दह चउगुनिया
भासाण सा

संखा भणिया ।
छह वि विहासा ॥ १ ॥

भणियउ रजियवुहयणमणउ
पकुणवण्णास वि ताण जहिं
संजोय ताण वहुदिण्णरस
भणु कासु ण सा दिट्ठिहि भरइ
तेरहविहु सीसु पणाजियउ
णवतारउ परिपालियरइउ
तेत्तियविहु पुणरवि भावियउ
भू सत्तमेय परहिययहर
सत्तविहु चिबुंउ चउ मुहहु राय
सोलहविहु तिविहु चउव्विहु वि
उरु सरविहु पासजुयलु तिविहु
कडियलु जया कमकमलाइ
सउ करणहं वसुसंखाहियउ
चउ रेयय णडगुरुकित्तिधय
चारिउ सोलस दुअसंखियउ
वीस वि मडलइ पयासियइ

पयारइ दहवर मुच्छणउ ।
किं वण्णमि गेयारभु तहिं ।
णीलजस णच्चइ विमलजस । 5
णच्चती जणहियवउ हरइ ।
छत्तीस दिट्ठि परियचियउ ।
अट्ठ वि रइयउ वसणगइउ ।
णंदप्पयाउ फुड दावियउ ।
छव्विह णासा कचोल अहर । 10
णव गल चउसट्ठि वि करण भाय ।
किउ करणमग्गु भुउ दहविहु वि ।
पोट्टु वि पायडियउ त तिविहु ।
तव्विहइ जि णिहियइ विमलाइं ।
चलवत्तीसंगहारमियउ । 15
सत्तारइ पिंडीवध कय ।
णच्चियउ जियन्वहिं अक्खियउ ।
ठाणाइ तिण्णि सदरिसियइ ।

घत्ता—सचरियहिं धरियहिं थौइयहिं भावहिं णडइ अणेयहिं ॥

भौसाइहिं जाइहिं णवरसहिं दावियणाणामेयहिं ॥ ८ ॥

20

8 १ MT विउउ, B चिवउ, GK चिउउ २ M पसासियइ, P पसाहियइ ३ MBP आइयहिं,
४ K हासाइहिं

8 2 b विहासा विभापा पइ भवन्ति 8 a परिपालियरइउ पोपितरागा 9 b णंदप्पयाउ नवे
नन्दास्तेपा प्रकार 10 a भू भुकुटी 11 b करण भाय हस्तानां भेदा 12 b सुउ भुज 18 a सर
विहु पञ्चप्रकारम् 16 a णडगुरुकित्तिधय नटाना गुर्व्या कीर्तित्वजा 17 b जियक्खहिं जित्तिन्दियैगणव
देवादिभि 19 थाइयहिं भावहिं स्थायिभावै रत्यादिभि

VII

कयतिहुयणसेवें चित्तिउ देवें जणि भुउ किं पि ण दीसइ ।

जिह दावियणवरस गय णीलजस तिह अवरु वि जाणसइ ॥ १ ॥

I

संदेय—इह संसारदारुणे बहुसरररसधारणे ।

वसिऊणं दो वामरा के के ण गया णरवरा ॥ १ ॥

पुणु परमेसरु सुसंमु पयासइ

धणु सुरधणु व णणंदे णासइ । 5

इय गय रह भइ धवलइ छत्तइ

सासयाइं णउ पुत्तकलत्तइ ।

जंपाणइ जाणइ धयचमरइं

रविउग्गमणे जति ण निमिरइ ।

लच्छि विमल कमलालयवासिणि

णवजलहरचल बुहुउवहासिणि ।

तणु लायणु वणु खणि खिज्जइ

कालालं मयरदु व पिज्जइ ।

वियलइ जोव्वणु ण करयलजलु

णिवडइ माणुसु ण पिक्खउ फलु । 10

तुयहि लवणु जसु उत्तारिज्जइ

सो पुणरवि तणि उत्तारिज्जइ ।

जो महिवइ महियइहि णविज्जइ

सो मुउ घरदारणे ण णिज्जइ ।

घत्ता—किर जित्तउ परवलु भुत्तउ महियलु पच्छइ तो वि मरिज्जइ ॥

इयं जाणिवि अद्धउ अवलविवि तउ णिज्जणि वणि णिवसिज्जइ ॥ १ ॥

MBP have, at the commencement of this samdhi, the following stanza -

इहो भद्र प्रवण्डावनिपतिभवने त्यागसख्यानकर्ता

कोऽय इयाम प्रधान प्रवरकरिकराकारगाहु प्रसन्न ।

धन्य प्रालयपिण्डोपमधवलययोधौतघात्रीतलान्त

ख्याता वन्दु कवीनां भरत इति कथ पान्य जानासि नो त्वम् ॥

MB read इहे for इहो, प्रवण्डाघनि° for प्रवण्डावनि°, and °सख्यात° for °सख्यान° GK do not give it

1 १ M reads खंडियं throughout २ T ससमु but adds सुसमु वा शोमनोपशमयुक्त
३ P खणद्ध ४ MBP तियहिं ५ B इउ ६ B अधुमु, P अद्धउ ७ MBP अवलवियमुउ but gloss
in P तपो गृहीत्वा

1 B a ससारदारुणे दारुणे ससारे 4 a वसिऊण उपित्वा 5 a सुसमु शोमनोपशमयुक्त
द्वादशानुप्रेक्षारूपं वा 7 a जपाणइ पालखीति देवी 8 b बुहुउवहासिणि पण्डितद्वेषिणी 9 b काला
कालभ्रमेण यमभ्रमेण 11 a तुयहिं वीमि, b तणि उत्तारिज्जइ तृणे तृणसत्तारके तृणोपरि स्थाप्यते,
मृते तृणोपरि स्थाप्यत इत्यर्थ 13 जित्तउ जितम् 14 अवलविवि गृहीत्वा

2

कहयं—बहिरपयव्यहरणं
मज्झा मज्जाणं घण

किं जोयह भुपपहरणं ।
मरचविरहियं जयमिणं ॥ १ ॥

अह वि चरति भीर वर किंजर
यदह जन्तु मन्त्रस विद्याहर
पद्विबलकुलकाणवकायाकल
पेज्याखणवुम्भर विषाहर
अह वि चरति बेहमा मासुर
अह परसर मवरहरमनरि
सरसपिपिरिहरिकहरकहरि
बहलतमर्मपारमहिमूसर
तो वि जीउ केहिजह काळ

अदण बहल सपबल बरमापर ।
भूय पिछाय जाय ससि विषापर ।
इव पद्विबलमिह महाबल । 5
कुलपर बहलमिह हरि हलहर ।
पबलतहपवीण बलसुर ।
किंकरहरिकरिखबुहतरि ।
पुष्पवेसकुमिसारसि पंजरि ।
अह परसर गंय पायाकर । 10
हरिजा हरिणु व मिठकिरपणै ।

मत्ता—एव बुद्धिभि असरणु बेमिभि तिपणु केन वारिणु न विज्जवे ॥
तं माणुसबलं वापाविसस ममर कळेबद तुल्लवे ॥ २ ॥

3

कहयं—मिलसययसेजायमो
एहो विप जगि जीयमो

होई होइ विमोपेमो ।
ममर सकम्मविणीयमा ॥ १ ॥

एज वि अह अयंभु जहंसर
हयउ कुमाणुसासि बुद्धिहाउउ
एज वि मणुहउ सबल बलतरि

पुम्पउ पुजु पुजुवि पुपसउ ।
एज वि जीउ बह बहलउउ ।
एज वि सुरबद ममिममणुहरि । 5

2 १ MBP कल्पवर्ण MBP देव कल्पवर्ण २ MBP बुद्धिबल ४ MBP उदयवर्ण
५ MBP कविमत्त

3 १ P लीलाव १ P विमोप

2 1 ६ बुद्धवहरण मुर न हरणं च, 2 नम एवमं अलर्षं का ६ चवमि न हर कल, 8 ६
अदण वापिजणपदे 8 ६ बहलहरं सपुत्र, ६ "बुद्धिहरि म्भुहाम्भरे 11 ६ हरिमा हरिपु व विरेन
मन हल 12 विवरणु मनीषाकमिणा, विज्जवे मणुविणम् 13 काव विमोपे मममिरेरेन मणुवेरेन वा
3 1 ६ होउ कुला 2 ६ "विमोपेमो जेति 8 नवंसल मणुप, ६ पुम्पउ वरि, पुप-
सउ पुपिण ६ ६ बुद्धिहाउउ पुपेल 8 ६ मणुहउ सपद मणुपरी विम, ६ "पुरहरि विमोपे

अप्पउ पुण्णहीणु पडिवज्जइ
एक्कु जि णहि णहयरु थलि थलयरु
एक्कु जि सृंगजोणिहि उप्पज्जइ
एक्कु जि दूहउ दूसहु दुम्मइ
एक्कु जि तरइ मरइ वइतरणिहि

सयमहविहवपलोयणि झिज्जइ ।
एक्कु जि विलि विसहर जलि जलयरु ।
परिहि तलिवि पडलिवि खाणि खज्जइ ।
णरयविवरि णारइयहि हम्मइ ।
चरइ जलणपज्जलियहि धरणिहि । 10

घत्ता—एक्कु जि भवकहमि णिवडइ दुहमि रइसुहपकयलप्पउ ॥

एक्कु जि तवताविउ णाणं भाविउ होइ जीउ परमप्पउ ॥ ३ ॥

4

खडय—इय णिसुणिवि एयत्तण
एक्कु जि जीउ वरायओ

गाढं णियमह णियमण ।
सयलु वि अण्णु जि लोयओ ॥ १ ॥

अण्णहिं परमाणुयहिं णिवज्जइ
अण्णु जीउ अण्णु जि दुक्कियमलु
अण्णहिं कुलि कलत्तु परिणिज्जइ
अण्णु जि मित्तु सयंजि कयायरु
अण्णु जि मिच्चु होइ धणलोहं
अण्णु जि भणइ महारउ मत्तउ
अण्णहिं जंति खणद्धं रहवर
परमत्थे ण को वि जणि कासु वि

अण्णु जि पिंहु गग्गि सवज्जइ ।
अण्णु जि सुक्कियउ अण्णु जि तहु फलु ।
अण्णु जि कौ वि पुत्तु णिप्फज्जइ । 5
अण्णु जि होइ सण्णेहउ भायरु ।
जीउ तइ वि मोहिज्जइ मोहं ।
णउ जाणइ जिह सयलहिं चत्तउ ।
हयवरगयवरचिंघ सचामर ।
एक्कलउ जि जाइ पुहइसु वि । 10

घत्ता—राएण णिवद्धउ इदियलुद्धउ सुहु अण्णु जि महु भावइ ॥

ससहाउ ण पेक्खइ अण्णु जि कंखइ जीउ महावइ पावइ ॥ ४ ॥

३ MBP मिगजोणिहि ४ M परिहि तलिज्जइ पडलिवि सज्जइ ५ B खिज्जइ

4 १ MBP सुविउ २ MBP पुत्तु को वि उप्पज्जइ ३ MBP सकजि ४ M सण्णेहं ५ MBP एक्किउ ६ MB जणि, P मणि

6 b झिज्जइ सियते 8 b परि हि परैवित्रे 11 एक्कु जि असहाय एव, °प क य छ ण्णउ कमले भ्रमर 12 त व ता वि उ तपस्वापित

4 1 a एयत्तण एकत्वम् 2 a वरायओ वराक, b अण्णु जि भिण एव, लो य ओ लोकथेत-
नाचेतनपदार्थसघात 3 b पिंहु देह 4 b सुक्कियउ सुकूनम् 5 b पुत्ते त्यादि—आत्मा वै पुत्र इति वेदाव्य-
वृथेत्यर्थ 7 a मिच्चु भृत्य 8 a मत्तउ विवेकशून्य 10 a पुहइसु वि पृथ्वीशोऽपि 12 ससहाउ
निजस्वरूपम्, महावइ महापतिं महतीमापदम्

5

बंदय—बंदकसावरमरसियमो
आवाजेम्मु विचारण

मिथ्यासंज्ञमवसियमो ।
आहिंइह संसारण ॥ १ ॥

करवगहिं कप्यज्जठ कइयहुं
सिंहु सिंहु किंकिं विंकिं विहाइउ
बारबार पवारिउ करिउ
एहु कि बहुपरिं तहिं पारंमिउ
ओहामिउ मामिउ ओनामिउ
अज्जमेहिउ मोहिउ महिं पाहिउ
करियंतु कातेहिं विहिंज्जठ
सतिहिं इहिउ केतिहिं पीकिउ
अम्मविहेइयेहिं पुण्योकिउ
पूवहुंकि कप्येहिंवि पसिउ

आगयविपरिहिं केमिंवि तरवहुं ।
अज्जकिउ पुमिउ बभित विधिंवाइउ ।
विज्जुनरअउतरवारिंविपारिउ ।
अकिउ इकिउ पयमकिउ विंहुंमिउ ।
सुकि कयनंति संकामिउ ।
विरसमाहु करवजहिं पाहिउ ।
केदीदुहाकि मुंसकहिं कुण्णउ ।
अकिवजसज्जकोकिहिं आकिउ । 10
सेउमकिंवावज्जहिं ससिउ ।
अहिउअहिउयेहु आवाहिउ ।

पदा—मवि रोसु अरंतइं एवि पहरंतइं कम्मइ गणु विहसु वि ॥

सुहु अवि उमंयइं आगयसंइं अययविमोअज्जमेसु वि ॥ ५ ॥

6

बंदय—सिंहीसु व पज्जहीसु व
मुंजंठो मज्जसंयमं

बंदीसु व पज्जहीसु व ।
अ अइह जीवो विज्जयं ॥ १ ॥

आवकंअकोइमअरंइहिं
सीइअउसुअरसाहुंइहिं

आरसआसमाममेवंइहिं ।
आउमीउमंअज्जमआरंइहिं ।

5 १ MBP संयमि वसिउ २ MBP "अम्म" ३ MB विपहिं ४ MBP सुणं ५ M "विहसुव

5 1 a "रउ १

अवि विविवाइव

१ ओहामिउ अमिउओ ओनामिउ अरंयुओ वामि २ करिउ विपारिउअ विहिंज्जठ
विमिउ ३ केदीदुहाकि मुंसकहिं ४ इहिउ पी ५ पुण्योमिउ पुंसवैउ ६ "अज्जमेहिं
अम्मविहेइये ७ अहिउ अहिउयेहु अविउअउविउअरं ओवमिउ अय पारिउ ८ विहसु विमउ
अज्जमेउ

6 २ मज्जसंयमं अज्जमेउउ ३ "आरउ" अज्जम

कीरकुरकुंजरसारंगहिं	लौक्यपारावयहिं तुरंगहिं ।	5
कुंकुडमकडमहिसमरालहिं	मेसवसहखरकरहसियालहिं ।	
सेढाँसरदतरच्छहिं रिछहिं	मयरमहोरयकच्छवमच्छहिं ।	
तिक्खतिरिक्खदुक्खसंदाणहिं	सभवंतु णाणाविहजोणिहिं ।	
वलणिम्मथणु णियलणिवधणु	भारारोहणु णौणावधणु ।	
छिंदणु भिंदणु ताडणु तासणु	उक्कत्तणु सरीरविद्धंणु ।	10
सरपाहाणसंघसघट्टणु	लोट्टणु आवट्टणु परिवट्टणु ।	
दलणु मलणु मुसुमूरणु जूरणु	पीलणु पडलणु दारणु मारणु ।	
छुँहतिण्हाकिलेससंतावणु	भारारूढदेसपुराणमणु ।	
एव दुक्खलक्खाइ सहेप्पिणु	जीउ तिरियगइ कह व मुएप्पिणु ।	
घत्ता—णियकम्मवसायउ होइ चिलायउ पारसु वच्चरु सिँहलु ॥		15
हुणच्चीणाणिवासउ अमणुयमासउ णउ पावइ अज्जवकुलु ॥ ६ ॥		

7

खंडय—मेच्छो ण कुण्ह णियहिय	करइ दुलघ दुक्कियं ।
विहुरावत्तरउइए	णिवडइ णरैयसमुइए ॥ १ ॥
जइ वि लहइ अवियलु पविमलु कुलु	हियइच्छियउ किं पि संपयफलु ।
खमदमसमसंजमसंजुत्तहं	तो वि ण लहइ संगु गुणवतहं ।
कुगुरुकुदेवकुमगो मुज्झइ	जिणवरवयणु कया वि ण बुज्झइ ।
जडविडकहियहु मयवहधम्महु	लगइ काइं मि कुच्छियकम्महु ।
लुद्ध मुद्ध चंडिइ मडिवि मिसु	पियइ मज्जु कवलइ सरसामिसु ।

6 १ M लाययं २ B कुकुडं ३ MBP सेहां ४ MP °रिच्छहिं ५ MBP णासाविधणु.
६ MBP छुहत्तण्हां ७ M °गावणु ८ MBP सिंघलु ९ MBP अमुणियमासउ, but gloss in P
नरमापारहित

7 १ MBP मुणइ २ B णरइ समुइए ३ P °कुसम्मं ४ MBP °कम्महु ५ MBP °धम्महु

10 ७ उक्कत्तणु उत्कर्तनम् 12 a मुसुमूरणु पिण्डाकरणम् 15 ° वसायउ अधीन 16 अमणुय-
मासउ नरमापारहित, अज्जवकुलु आर्यकुलम्

7 1 a मेच्छो म्लेच्छ 2 a विहुरावत्तं दुखावर्त 3 a अवियलु बन्धुजनादिपरिपूर्णम् 6 a
मयवहं मृगवध 7 a चंडिइ मडिवि मि सु चण्डिकामिष कृत्या

पञ्चवशि ब्रैतई ण बभ्भ वरवसु
विरसंतई सिरपममु सुंभिज्ज
पुण्णविसद्वद अभावा भावा

मारुत मयिणि होइ पुणरणि पडु ।
 सो षि तहिं नि मग्ग मारिखइ ।
 जो षं करइ सो नि तं पावइ । 10

पठ—यसु पावित्रि पाञ्चर वाक्ये पिञ्चर सन्धु मोक्षसु पावित्र्य ॥
 अत्र पण्डिति कर्म्ये ता किं धर्म्यं पाठयितु सेवित्र्य ॥ ७ ॥

8

अदसं—दुपेयदुपिया सम्यसं
आया रेणा जइ अया

अंति एतद्वरमप्यर्थ ।
परिधया त्रियवरणया ॥ १ ॥

भेषकहियमंतहि आयामह
 सोतिउ समोसोकनु किं भेषकह
 भियहिमह मुह भाहहि कंदह
 ताहिबह संसुह बसह
 जाह पुरीनु बिपुनि बपह
 छेपहु देखि भयिनि बसबाह
 गाह बहप्य तयपरि जेही
 हा हा बंभजेन मापयि
 पियरपकनु पककनु गिरिकह
 भापंतउ बुद्धे पकसाह
 पड देह किं छिछिं पुपह

सो भयानक कौस न होमा ।
 कि कुसरीरं बद्ध भयान ।
 छपेसु छपक कमिठ छिमा । 5
 यपसु यिरोहि कि यपे कुमा ।
 कुपिहकेव सुपि संमूर ।
 कुपु अनेसरं नभं जावर ।
 सुपि हेरिपि कि रोहिपि ठेही ।
 यपहु यपविपि हरिसाविपि । 10
 असलं विपयविपि भयान ।
 होह कवि मि इंगसु न भयान ।
 विमरंमं नभे छिप्य ।

4 MBT REVIEW

8. १ P हुबलु २ M लम्भोतु B लम्भोतु; P लम्भोतु ३ MBP लम्भोतु व MJ
हुबलु MBP लम्भोतु व MBP हुबलु रीतिनि ४ MBP लिख वलिद ५ MBP लिखलि वलि
रीतिनि.

॥ अथ हस्तसूक्तः ॥ ११ ॥ अथ हस्तसूक्तम्

8 1 = इववइइमिवा अओ होमिना। ६ वरावर^३ लोका ३ अवा अवा ६ दिववरववा
 दिववाविमिवा ३ ६ अवा अवा इववावे वरावरि^३ मुलवा प्राववरि^३ वेरेदि ६ ६ अमिवा वव
 १ मिवदि निववदि। ६ मुवदि नी ३ अवा अवा वववरी वववरी मुलवरी ११ = निववरवव
 निवव अवावरि^३ ६ दिववरि^३ दिव दिववविवा

अण्णण्णै रंरै रगिज्जइ

परमागमरसेण णउ भिज्जइ ।

मूहु जिणिंदसेव कहिं पावइ

सवणु गहणु घरणु वि ण विहांवइ ॥ 15

घत्ता—मायारउ मण्णइ मुणि अवगण्णइ जीवहिंस पडिवज्जइ ॥

माणुसु वि हवेप्पिणु पाउ करेप्पिणु पुणु संसारि णिमज्जइ ॥ ८ ॥

9

खडयं—ईसिं णिउचिय जोव्वण

कामकोहतवभावण ।

काउ सेवइ जो वणं

सो पावइ त भावण ॥ १ ॥

अवरु वि जायउ उव्वणठाणइ

जोइसकप्पणिवासविमाणइ ।

वाहणु वेयालिउ छत्तियधरु

वाइत्तयवायउ सब्भेयरु ।

णच्चणु गायणु सुइसुहदावउ

अण्णु वि होइ असम्मयभावउ । 5

णवर मरतु सतु उव्विज्जइ

वेवइ चलैइ घुलइ परिखिज्जइ ।

हा कप्पहुम हा माणससर

हा णीहारहारसंणिहयर ।

हा अच्छरउलमणसंमोहण

हा परियणपडिवक्खणिरोहण ।

हय्वलिपलियरोयसयसचय

हा हा दिव्वदेह हा णववय ।

हल्लकारसार सहसंभव

हा गधार मधुर वीणारव । 10

हा देवंगवत्थ णिच्चुज्जल

हा मदारदाम चल सभसल ।

घत्ता—सम्मत्तविमुक्कहु जिणपयचुक्कहु अवसें हियउ ण सुज्जइ ॥

सगगु मुयंतहु पलयहु जंतहु कांसु सरीरु ण ढज्जइ ॥ ९ ॥

१ M विभावइ

9 १ MT इसी and gloss मुनिर्गत्वा, P इसि २ MP सुवसहदावउ, ३ MBP वलइ, ४ MBP हा वलिं ५ MBP सचुय but gloss in P देह ६ सोल्लकारं ७ MB कासु ण हियवउ, P कासु वि हियउ ण

15 b वि हा व इ विभावयति प्राप्नोति 16 मा या रउ मातूरत विप्र समानयति

9 1 a ईसि ईपत, णिउ चिय सवृत्तं कृत्वा 2 b भावण भवनवासिदेवत्वम् 4 a उव्वणठाणइ व्यन्तरदेवस्थाने 4 b सब्भेयरु भण्डो भवति सभ्यादितर 5 a उव्विज्जइ चिन्ता करोति, 9 a सचय देह, 10 b गधार गीतम्

पहिलउ दाणवणरयाणिवासउ
यीयउ मणुयतिरिक्खणिहेलणु
कप्पाकप्पदेवणेवच्छउ
मोक्खु वि आयवत्तसणिहयरु
परमाणुयपरमाणु ण पेक्खामि

पह्लथियसरावसकासउ ।
वज्जोवमु पयत्थपरिघोलणु ।
तइयउ जग्गु मुहंगसारिच्छउ ।
जो त पत्तउ मो अजरामरु ।
ससारियहु सोक्खु किं अक्खमि । 10

घत्ता—चउगइहि मैरत्ते पुणु पुणु हत्ते विहसिवि देवे वुत्तउ ॥

सुहदुक्खणितरि तिजगम्भंतरि जीवे काइ ण भुत्तउ ॥ ११ ॥

12

खंडय—सारमेयवुद्धिगय

सारमेयसिचजोगय ।

एसो कम्मकले वर मण्णइ तहं वि कलेवर ॥ १ ॥

अट्टिलट्टिकुट्टयलणित्तउ
पासुलियातुलार्हि घणघडियउ
पट्टिवंसखंभुण्णयमाणउ
मेज्जमंसचिक्खिल्लविलित्तउ
सेयसुक्कमेत्थिकदुग्गंधउ
वोक्खयतकिमिउलमलपोट्टु
अम्मंतरि किर केण पलोइउ
णिच्चमुत्तलालाजलथिप्पिर

दीहरणाउणिवंधणैवत्तउ ।
सधिहि सधिहि खीलियजडियउ ।
जंघाजुयलु सँमोद्धियथूणउ ।
णवदुर्गार लोहियससित्तउ ।
छिंरुत्तुदाहिजालसंरुद्धउ ।
वियालियरसवसीसँदु विट्टु ।
वाहिरि चम्मपडलपच्छाइउ ।
रोइ पूइ अन्दुउ सताचिरु ।

10

३ M भवत्ते, BP भमत्ते

12 १ MBP सारमेयवुद्धिगय ° P तह व ३ MBP णिवधणवत्तउ ४ MB पसिलिया°, P पासुलिया°
५ MBP खीलिहि ६ BP समोद्धिय° ७ P मज्ज° ८ MBP °दुवार° ९ B °मधिक° १० P थिर°, K
छिर° but corrects it to थिर° ११ MBP °वीउजि and gloss in P वीभत्स अपवित्रम्

7 b पयत्थपरिघोलणु पदार्थानां जीवानां वा परिघोलन प्रवृत्तिर्यसिन् 8 a °जेवच्छउ मण्हनम् 10 a
परमाणुयेत्यादि— परमाणुमात्रमपि ससारिणां सुखं न

12 1 a सारमेयवुद्धिगय प्रचुरमेदसावृद्धिगतम्, b सारमेयसिचजोगय श्वानशिवादियोग्यम् 2a
एसो जीव, कम्मकले ससारे, b कलेवर शरीरम् 3 a °कुट्टयल कुण्डल°, b °णाउ ज्ञायु° 4 a
पासुलिया° पार्श्वस्थिसचात 5 b समोद्धियथूणउ भग्नस्त्वभवत् 7 b छिरुत्तुदाहिजाल° शिरा एव गण्ड-
पदालेपां समूहेभूतम् 8 b °वीसँदु वीभत्समपवित्रम् 10 b रोइ सरोगम्

घत्ता—गुणवंतु अणाइउ सुहुमु विवेइउ तिगइ दुअंगणिवद्धउ ॥
जिउ कत्तउ भोत्तउ भवतणुमेत्तउ उड्डुगामि ससिद्धउ ॥ १३ ॥

14

खड्गय—एतंहु पावहु णिच्चरं जे विरयंति ण संवरं ॥
ताण दुक्खदंघकडी पडिही सीसे णं तडी ॥ १ ॥

रुज्झइ चित्तु ज्ञाणवित्थारं	फासविलौस धरणिसत्थारं ।
रसुं पसुपिंडग्गहणायारं	दिट्ठि ण घेप्पइ कहिं मि वियारं ।
सवणु सुसरि दुसरेसु वि सरिसउ	कीरइ पयलियरइआमरिसउ । 5
णासारंधु गधैअविहत्तिइ	मणवयकायदुरीह तिगुत्तिइ ।
दुरियहु सुयरिउ रक्खणु दिज्झइ	रोसु यमाइ हौतुं णियमिज्झइ ।
अविणयगारउ माणु मउत्तं	मायाभाउ समुज्जयचित्तं ।
लोहु सुपत्तदाणपविहाण	अहवा सव्वसगपरिचाय ।
मर्यविच्चसु परगुणसभरणं	जिप्पइ हरिसु हांतु सुथिरमणं । 10
देप्पु वि घोरवीरतवचरणं	राउ रंसियरामापरिहरणं ।

घत्ता—पिहियासववारहु जुत्तायारहु अहिणउ कम्मु ण पइसइ ॥
ज चिरु जीवासिउ तं पि अपोसिउ कायकिलेसं णासइ ॥ १४ ॥

15

खड्गय—मणमेत्ते वाचारण एसो कीस ण कीरण ।
सासयसुहओ सवरो होह होमि दियंवरो ॥ १ ॥

६ MBP उद्धगामि

14 १ P ए तहु and gloss ए आगमे प्रसिद्ध, तहु पावहु तस्य पापस्य २ P °दुवकडी ३ MBP °विलासु ४ MB रसवसु, P रस पसु° ५ MBP गधु अ° ६ MBP एतु ७ M समुज्जल° ८ P महविच्चसु ९ B omits this foot १० MBP रसिउ रामा°

15 १ मणमेत्तए

18 दुअ गणि वद्धउ तैजसकर्मणशरीरवद्ध 14 भवतणुमेत्तउ यद्धवे यच्छरीर गृहीत तन्मात्र

14 1 a एतहु आगच्छत, 2 a °दवकडी असत्ताज्ञानपात, b तडी विद्युत् 4 a रसु जिहा, पसु पिंड गहणायारं पशुवतिपिण्डग्रहणेन मुन्याचारेण 5 b पयलियरइआमरिसउ नष्टरागद्वेषम् 6 a गव अविहत्तिइ सुरभिरसुरभिरिति गन्धविभागाकरणेन, b °दुरीह दुष्टेच्छा 9 a °दाणपविहाए अतिथिसवि मागेन 10 a मयं मद 18 अपोसिउ अपुष्टम्

15 1 a मणमेत्ते मनोमात्रे 2 a °सुहओ सुखद

केसालुंचणणिञ्चेलचहिं कंचणतणसुहिरिउसमचित्तिहिं ।
 विसमपरीसहसहणव्हासहिं रोयातंकहिं कासहिं सासहिं । 10
 जम्मणमरणणिवंधुद्धोइउ एम खविज्जइ कम्म पुराइउ ।

घत्ता—जिह्व हर्षणिज्जरणे वद्धे वरणे रविकरेहिं सरु सोसइ ॥
 तिह्व णियमियकरणे रिसितवचरणे भवकिउ कम्म पणासइ ॥ १६ ॥

17

खडय—इय काऊण णिज्जर जे हणंति भवपंजरं ।
 णीरोय अजरामर ते लहति सोक्खं वर ॥ १ ॥

जेण मोक्खफलु त पाविज्जइ सो धम्मधिउ एहउ गिज्जइ ।
 खम्मसमायलतुगयदेहउ महवपल्लउ अजवसाहउ ।
 सच्चसउच्चमूल सजमदलु दुविहमहातवणवकुसुमाउलु । 5
 चउविहचायपसारियपरिमलु पणियभव्वलोयल्लप्ययउलु ।
 दियसदोहसइकयकलयलु सुवरणरखेयरसुहसयफलु ।
 दीणाणाहदीहसमणिग्गहु सुद्धु सोम्मं तणुमेत्तपरिग्गहु ।
 वंभचेरछायाइ सुहासिउ रायहंसणियरेहिं समासिउ ।
 एहउ धम्मसफ्फु लक्खिज्जइ जीवदयावईइ रक्खिज्जइ । 10
 द्वाणु ठाणु भट्ठारउ किज्जइ मिच्छामयहु पवेसु ण दिज्जइ ।
 नीलसलिलधारइ सिंचिज्जइ एम पर्यत्ते वड्ढारिज्जइ ।

४ MBP° तिण° ५ MB णिंधे आइउ, P °णियघइ आइउ ६ K हर° and gloss इत°

17 १ BPK पर २ M खम्मसमायलतुगयदेहउ, B खम्मसमायल तुगयदेहउ, P खम्मसमायल-
 तुगयदेहउ ३ MBP सुवरणर° ४ MBP सोम् ५ MP क्षाणठाणु, B क्षाणठाणु ६ B पवेत्ते ७ M
 पट्ठारिज्जइ, B वड्ढारिज्जइ

11 a णियधुदाइउ जन्ममरणप्रपन्धकरणे उद्धाइउ प्रपत्तम् 12 हयणिज्जरणे हतनिर्हरणेन वरणे
 पालियन्धनेन

17 1 b भवपंजर सत्तार एव यन्दिगृह सत्तारसप्तानध 3 b धम्मधिउ धर्मरक्ष, गिज्जइ प्रति-
 पाद्यते 4 a खम्मसमायल तुगयदेहउ क्षमा क्षमातल पृथ्वीतल तदन्तान्ध्यादुष्टत प्रादुर्भूतो वेदो यस्य
 6 a चउविहचाय° अणुप्रत महाप्रत श्रुतदानमभयदान च 7 a दियसदोह° मुनिमसूह पक्षिसंपातय 8 a
 °दीहसमं दीर्घप्रम 9 a सुहासिउ सुष्टु सोभित 11 क्षाणु ठाणु ध्यानमेव व्याणुम्, b मिच्छामयहु
 मिष्यात्वमृगानाम्

पुष्प पद्मेसव सख्यं सुखं	काँठे मय्य वचनं पिबेत् ।	
विह वरणीयहस्तु तिह बुद्धिः	कामाकामिबानिहरतकिह ।	
तज्यपदं सुखं सांमं	बंधनवारणमारण्यममं ।	6
बुद्धिबुद्धिमात्रमममरियं	दोह मकामं पिबेत् तिरियं ।	
विरहं वेदमयहोयहि	कामं पिबेत् रिसिसंतीयहि ।	
सिसिपदासनिषासापरयहि	दण्डमूममसावककरयहि ।	
पियपदियं कपिसमहिषं	गोपुद्गलासयहि नवसं	
पक्कमासवीरिसंमुचयसहि	वृद्धविसिर्षपाविष्यासहि ।	10

यथा—दोहपदीसासहि मुनितपुमुचहि परतवद्वय तत्त ॥

जीविह ईमुक्तु यकह केवलु बहूकम्ममके वत्त ॥ १५ ॥

16

जंढवं—कुंढं अंतं वंम	जार्चकुनिज यितुंमर ।
वयपायवधितूरं	सग्न यियमयवारं ॥ १ ॥

पेक्षमासदोमानाहायं	विधिहावमाहरसवधिर्यहि ।	
दीहमसुखेयहि मकधरयहि	जार्चविक्रमं वयवयवरयहि ।	
बोसमसुखयहि	वज्रियवरतुजेसपसयहि ।	6
सुखमासासमसावमायं	हवयेहहि भेधियसिबिहायं ।	
वैद्यमसयपुद्गलतन्मासहि	जमकवकप्यकपुयमाकोसहि ।	
वायवहस्तुर्जपियकायहि	सीरयहि परयवद्विहायहि ।	

१ P वर, १ MBP वरहं ४ BP लोच, ५ MBP "जान्द, ६ M निरिक्तान्द, BP रिसिक्तान्द
७ MBP "रिसिक्तु" MB वेज" ९ कम्ममके परि"

16 १ MBP कुंढं १ P वृद्ध्यापुपुता" १ M जालिनि

8 ६ विह वरणीयहस्तु तिह बुद्धिः कामी बुद्धिपूर्वो व्यापारतन्मासोपक्रमस्यै निवेद
यथा या तज्यपदं सुखं सांमं 7 ६ रिसिक्तान्द यहि मुनितपु 10 ६ दोह पदी-
दोह मकामं पिबेत् तिरियं 11 मुनितपुमुचहि मुनितपुदेव मुच तत्तम्
12 ७ विह वरणीयहस्तु तिह बुद्धिः जमकवकप्यकपुयमाकोसहि 13 मुनितपुमुचहि मुनितपुदेव मुच तत्तम्
पुद्गलतन्मासहि 14 वज्रियवरतुजेसपसयहि 15 सीरयहि परयवद्विहायहि

16 1 ६ विह वरणीयहस्तु तिह बुद्धिः 2 ६ "विह वरणीयहस्तु तिह बुद्धिः" 3 ६ विह वरणीयहस्तु तिह बुद्धिः
४ ६ विह वरणीयहस्तु तिह बुद्धिः ५ ६ विह वरणीयहस्तु तिह बुद्धिः ६ ६ विह वरणीयहस्तु तिह बुद्धिः

केसालुं वणणिचे लत्तिहिं
विसमपरीसहस्रहणभासहिं
जम्ममरणणियं धुद्धोड्ड

कंचणतण्णसुहिरिउसमवित्तिहिं ।
रोयानंकहि कासहिं सासहिं ।
एम खविजइ कम्म पुणइउ ।

10

घत्ता—जिह हर्षणिज्जरणे वड्डे वरणे रविकरेहिं सरु मोसइ ॥

तिह णियमियकरणे रिसितवचरणे भवकिउ कम्म पुणासइ ॥ १६ ॥

17

रड्डयं—इय फाऊण णिज्जरं
णीरोय अज्जरामर

जे हणंति भवपंजर ।

ते लहन्ति सोक्ख वर ॥ १ ॥

जेण मोक्खफलु त पाविजइ
खेमरमायलंतुगयंदेहउ
सच्चसउच्चमूलु सजमदलु
चउविहत्तायपसानियपरिमलु
दियसंदोदनइकयकलयलु
दीणाणाहदीहसमणिग्गलु
वंभत्तेरत्तायाइ सुहामिउ
पहउ धम्मरुक्खु लक्खिजइ
हाणु हाणु भहारउ किजइ
सीलसल्लिधारइ सिन्निजइ

सो धम्मधिउ पहउ गिजइ ।

महयपल्लउ अज्जवसाहउ ।

दुविहमहातवणवकुमुमाउलु ।

5

पीणियभच्चलोयल्लपयउलु ।

सुरवरणरखेयरसुहसयफलु ।

सुद्धु सोम्मं तणुमेत्तपरिग्गलु ।

रायहंसाणियरेहिं समासिउ ।

जीवदयावईइ रक्खिजइ ।

10

मिच्छामयहुं पवेसु ण दिजइ ।

एम पर्यत्ते वट्ठारिजइ ।

✓ MBP° निज° ५ MB निक्खे चाट्ट, P° निक्खे चाट्ट ६ K इ° and gloss इत°

17 १ BPK पर. = M गममायलंतुगयंदेहउ, B गममायलु तुगयंदेहउ, P गमसामयलु-
तुगयंदेहउ २ MBP गुरणरउ° ४ MBP सोम् ५ MP हाणहाणु, B हाणहाणु ६ B पवत्ते ७ M
पारिजइ, B गट्ठारिजइ

11 a निर्वधुद्धोड्ड उन्मरणप्रयत्नकरणे उद्धोड्ड प्रयत्न 12 हयणिज्जरणे हयनिर्जरेण वरणे
पाणिपथेन

17 1 b भवपंजरं मया तद परिहृतं समारमंभाय, 3 b धम्मं धितं पर्यत्तः ; गिजइ प्रति-
पाद्यो 4 a नमसमायउतुगयंदेहउ धम्मं शनानं पूणीत्तं तदन्तर्गम्यावुत्तं प्रवृत्तौ देशे सम्य-
गे व उ निरुपायं अन्तर्गम्यावुत्तं नहानां धुत्तं नमसदानं च 7 a दियसंदोहं सुमिसुहं पडिपयत्तं 8 a
“दीहममं दीपममं” 9 a सुहामिउ तुगु दोषिण . 11 हाणु हाणु ध्यानमेव सन्तुन, ६ मिच्छामयहुं
मिच्छामयगुणायस

19

संख्य—इयं जो चिंतितं गिनयमणे
मोक्षार्थं भवसंपन्नं

अणुवेकस्त्राओ थिय वणे ।
सो पावइ परंमं पयं ॥ १ ॥

महु पुणु सरणउ सिद्ध भडारा
अक्खसोक्खपक्खे णिरु णिच्छिहं
इयं चिंतति वहति समत्तणु
सकं जिणमइ जाणिय जावहिं
वंभसगलोयंतकयालय
पुव्वजम्मकयधम्मपहावण
घल्लियकुसुमजलिकेसररय-
ते भणंति भावें मउलियकर
पइ ण मुणित ज तं किर केहउ
सुसिर अणु तिलोयणिवासउ
जीउ कम्म पोगलंविट्ठिण्णउ
तुहु सइंभु सैसमाहिविसुद्धउ
इंदियपाणासजमु छडिवि

दंडकिंमीरकम्मविणिवारा ।
भवसिप्पीरभारहुयवहसिह ।
पउणंती रइभूमिणियत्तणु । 5
लोयतिय संपाइय तावहिं ।
देहकंतिदीवियदिप्पांलय ।
अणुटिणु संभाविय सुहभावण ।
रयमहुयरउलसवलियपहुपय ।
जय देवाहिदेव परमेसर । 10
किं गिरि किं परमाणुउ जेहउ ।
किं आयासु अलक्खपयसउ ।
भणु तुह णाणें काइं ण भिण्णउ ।
चारु चारु जं सइं पडिद्युद्धउ ।
अप्पउ सीलगुणोहें मंडिवि । 15

यत्ता—उप्पाइवि केवलु अवियलु गयमलु तच्छु सुसच्चउ अक्खहि ॥

पायालि पडंतउ पलयहु जंतउ भुवणु भडारा रक्खहि ॥ १९ ॥

19 १ B परमपयं २ P दिठं ३ MBP °पक्खइ ४ M णिप्पिह ५ MBPT चित्तंति,
gloss in MT हृदयमध्ये, but in P चिन्तयति सति ६ B सपावियभाविहिं; P सपाइय ताविहिं. ७ MBP
°दिवालय and gloss in MP दीपविमाना, but T दिप्पालय दशदिकपाला ८ P °केसररियं ९ MBP
परिमाणुउ १० BP पोगलु. ११ MBP सयमु १२ MBP सुसमाहिं.

19 ३ b °किं म्मीरं विचित्तम् 4 a अक्ख सोक्ख पक्खे इन्द्रियजनितसौख्यवर्गे, णिच्छिह नि-
स्पृहा, b °सिप्पीरभारं पलालसघात 5 a चिंतति चिन्तयति सति, b पउणंती प्रकुर्वती, रइभूमिणि-
यत्तणु रतेभूमेश्च निर्वर्तनम् 9 a b केसररयेत्यादि-केसररजसि मकरन्दे रतानि यानि मधुकरकुलानि तै-
कृत्वा शबलितानि प्रमुपदानि यैर्लोकान्तिकैर्देवैः 12 a सुसिर अलोकाकाशम्, b आयासु लोकाकाशम्

सोणंदेयदु दिण्णु सुहंकरु
 अण्णेकदु अण्णण्णइं दिण्णइ
 पत्त्यंतरी संपेसिय राणा
 छम्बवडावणिपसरियतेयदु
 णरकरकोणाहयहिं गहीरहिं
 धवलहिं मगलेहिं गिज्जतिहिं
 कौमिणिमित्तगत्तरोमंचहिं
 ससहरमणिमणहिं णिकलुसिहिं
 जय रायाहिराय पभणत्तहिं
 हासससंककाससकासइ
 फण्णहि कुडलाइ आइइइ
 फरि कंकणु गाले हारु विलविउ
 कडियले रयणकिरणविण्णुरियइ
 वंभसुत्तु उरि चारु चडाविउ
 हरिकरिससिरिविण्णुवण्णिवद्धइं
 परिमुक्कमलइ धवलइ छत्तइं
 मय मायग तुरग सलक्खण

पोयणपुरु पविहिण्णवसुधरु ।
 मंडलाइं ढोइयधणधण्णइं । 5
 देवें जे पक्केक पहाणा ।
 लग्गा रायमहाअहिसेयदु ।
 वज्जत्तहिं चामयिरत्तहिं ।
 खुज्जयवावणेहिं णच्चतिहिं ।
 होमदाणपारभपवचहिं । 10
 मयलत्तित्थजलभरियहिं फलसहिं ।
 यहिमिचियउ भग्गु सामतिहिं ।
 पौरिहाविउ सुइसुब्भइ वासइ ।
 चदाइच्चह तेयसमिद्धइ ।
 सिरि सेहरु महुयरमुहचुविउ । 15
 वद्धउ कडिसुत्तउ सहु नुरियइ ।
 तिलप तइयउ णयणु व दाविउ ।
 उम्भियाइं विमलइ कुलविंचइं ।
 ण जिणकित्तिभिसिणिसयवत्तइं ।
 पुज्जिय गह काणीण चियक्खण । 20

घत्ता—उच्चाइउ आयहिं पइअणुरायहिं आसीवायणिघोसहिं ॥

सिरिभरइकुमारदु महिमत्तारदु वद्धउ पट्टु णरेसहिं ॥ २१ ॥

22

खडय—सीहासणसिहरासिओ सोहइ भुअणपसंसिओ ।

गिरिकडण धुयकेसरो केसरि व्व भरहेसरो ॥ १ ॥

21 १ MBP °वावणेहि २ BMK कामिणिसित° ३ MBP पहिराविउ ४ MBP °विच्छुरियइ
 ५ B पट्टु

4 a सोणंदेयदु सुनन्दापुत्रस्य बाहुवले 5 b मडलाइ देशा 8 a कोण° वादनकाणम् 10 a °मित्त
 मित्र°, b °पवचहिं विस्तारै 11 a णिकलुसिहिं निर्मलै 16 b भिसिणि सयवत्तहिं कमलिनीकमलै,
 21 आयहिं एतै, पइअणुरायहिं पत्त्यनुरागै

22 2 b केसरिव्व सिंह इव

बभ्रुसिर्बहसमोदयसुरवद
बहुविमानमारे बं बाधियत
आयवर्ण पुस्तहि बं पुस्तित
पियस्तसहसकासबाहवगु
बं सुरपहि भावतहि बाह
कुञ्जरेहि बं मेहहि छरवद
हरिपादवदहृत्तु बं सुरवपु
विदुविभक्तवज्ज्यासवयाह
गद तहि अहि अष्टार रंकिरसदु

तहि अवसरि वीसर विदसंवर ।
धैयवदहि पावर पतुविपद ।
तदवीयवहसहि भोवस्तित ।
आवर जियवरपुष्पमहावपु ।
रंक्वेहि एभिमरियत बावर ।
असियगहि बं विदुवसरवद ।
बं अक्कसंवर अवपीतसगुण ।
एव परवद सुरपणु वीसर ।
रिपवहाहु विज्वाहु महापदु ।

प्रस्ता—कमलासयु केलेसु मसहद बासदु सिद्धु दुदु इव विचयद ।

आमीपरमडियर एयवहि अडिबर पडि विसज्जव जियवद ॥ २२ ॥

23

अडव—केव वि गहिरे बाहयं
केव वि सरसं बाधियं

केव वि मरुर गारव ।
पहुपपुपयसं वधियं ॥ १ ॥

अमरविद्यासिम्भिकरमेयहिपहि
इवज्जवज्जमेरियवदवहि
वडिअवधुबाहवहि वदहि

वहिवर हेतु विपेजुवहि वडिपहि ।
पवपुवदरिसेलुवरवहि ।
रंदावंधेहि वरिवहि ।

22 १ B "विस्तार" १ MBP उत्तर १ M वरवरेण ४ MBP बाज्जत ५ M तदवीयवहरेहि
ओदुत्तित । B वरवरेहि ओदुत्तित P वरवरेहि तुक्कितित but T ओवस्तित १ B माह. ७ B "अव
वपु M एविवधु. १ MBP वद

23 १ MBP हेतु K हेतु but corrects it to हेतु १ M वर १ T सिद्धवपु ४ M
"मेरेहि

8 १ "विस्तार" सिद्धु मार्ग १ विचयवद विन्दोर्मममरम् 9 "वरदु वीतिमुचम् 11 रविचयदु
एविवधु १ विज्वाहु विज्जिय अवमेव उमेव बाह वरवरे 12 वदकासपु कमज्जव ज्ज्या विचारवत्त-
त्तम्; केवउ विवोतामरवर्जलेन ज्ज्यो रंदावदत्तम् न मरुद उदारु अस्तेयवत्तम् मरुदुज्जववोवदवत्तम्
वावपु वरवरेवत्तम् मरुदुमिअमेवत्तम् मरुदुमिअमत्तम् सिद्धु इवज्जवत्तम्, तुद्धु हेवोपेवत्तम् मरुदुमत्तम् इव
कर्मत्तम् तत्तम् मरुदुमत्तम् मरुदुमत्तम्, विचयवद मरुदुमत्तम् मरुदुमत्तम् मरुदुमत्तम् मरुदुमत्तम्

23 ४ १ सिद्धु वरुदु इवत्तम् 8 १ विचयवदु बाधियत्तम् १ वदवत्तम् वरुदुमत्तम्

वयणुग्गीरियथोत्तवमालहिं
 कचणकुभसहासहिं सित्तउ
 सण्हउ तिहुयणसामिहि जोगगउ
 दोइउ णिवसणु पुणु पंगुरणउ
 भूसणाइ विण्णाइ ण मण्णइ
 सतहु किहं रुच्चति रसोल्लइं
 होउ पदुच्चइ संभाचइ जिणु

णिग्गयरीरवारिधारालहिं ।
 दंससयट्ठलक्खणसञ्जुत्तउ ।
 किं वणिज्जइ अंगि धं लग्गउ ।
 तणुतावइ णं णाणावरणउं ।
 मोहणिबधणाइं अवगण्णइ ।
 वम्महपहरणाइं फुडु फुल्लइं ।
 मलविलेवसारिञ्चु विलेवणु ।

10

घत्ता—पज्जलियपईवहु ससिरविभावहु धूयगारयधूमउ ॥

णिग्गतउ टीसइ सुकइ समासइ णं मलपडलविलेवउ ॥ २३ ॥

24

खडयं—इहिदूवकुंरुचंदणं

वदिवि मयणवियारओ

सियसिद्धत्थयचदण ।

सिवियारुहु भडारओ ॥ १ ॥

सत्त पयाइं जाम जयवदहिं
 तेत्तिवइं जि भावेण णवतहिं
 उट्टियदेवमहाकुलकलयलि
 चल्लिउ अणुमग्गे सियसेविइ
 आरणाणवदलललियंगउ
 दोण्णि वि णावइ मोहणवेल्लिउ
 पियविच्छोयसोयपिज्जंतउ
 वरकंचीकलावगुण्पंतउ
 तुरिउ चलंतु खलंतु विसठुलु
 घणथणजुयलणिवेसियकरयलु

पढमुच्चाइय सिविय णरिंदहिं ।
 वरविज्जाहरेहिं विहसतहिं ।
 पुणु चंदारपहिं णिय णहयलि ।
 णाहिणराहिउ सहं मरुणविइ ।
 जसवइणदउ पच्छइ लग्गउ ।
 णं कामेण विमुक्कउ भल्लिउ ।
 णयणजणमलमइल्लिज्जंतउ ।
 तणुपासेयविंदुयिप्पंतउ ।
 णीससंतु चलमोक्कलकौंतलु ।
 णिवडमाणअणिहालियमेहलु ।

5

10

५ MBP दह° ६ P विलग्गउ ७ MBP किं ८ M °विलेविउ

24 M दूवकुंरु वदण, BPK दूवकुरवदण २ M वसतु व सवुलु, B खलतु व सठुलु ३ M णिवड-
 माणु, P णिविडमाणु

6 a °वमाल° कोलाहल 18 स सिर वि भावहु शशिरवीणा भां दोसिमावहन्ति अनुकुर्वन्ति ये तेपासु

24 1 a °वदण रक्कचन्दनम् 7 a आरणाळ° कमलम् 9 a विच्छोय° वियोग 11 a
 विसठुलु शिथिलम्

अलीहिं चचलेहिं छण्णकजकेसरे
पलोइऊण त सरीतुसारसीयलं

तरति णो सुरासुरा वि जत्थ के सरे ।
णहंगणावइण्णओ रिसी वसी यलं ।

घत्ता—तहिं हियइ पसण्णउ सिलहि णिसण्णउ णिव्विण्णउ णरजोणिहे ॥

ससिर्विवसमाणहि मलपरिहीणहि सिद्ध व सिवपयखोणिहे ॥ २५ ॥ 15

26

खंडयं—विविहच्चणविहिकारिणा
अइरावयकरिगामिणा

विष्फुरतपविधारिणा ।

पुणु पुज्जिउ सुरसामिणा ॥ १ ॥

परमसिद्ध णियचित्ति धरेप्पिणु

जाइ ताइं ससहावें कुडिलइं

आलुंवेविणु घित्तइ केसइ

चिहुर लुक्कं जे हयतमपडलें

जणवयसंदरिसियझसमुदइ

परिसेसियउ मउहु रइरंगउ

मुक्कइं कुंडलाइं मणिजडियइ

कंकणु मुक्कउ मोत्तियहारें

मुक्कउ कडिसुत्तउ सहुं लुरियइ

अंवराइं मुक्काइ अमोल्लइ

ससारासारउ मुणेप्पिणु

किमलंकारें देहहु भारें

मोहजालु जिह मेल्लिवि अवरु

मुट्ठिउ पंच ब्रडत्ति भरेविणु ।

धुत्तविलासिणिकुलइ व कुडिलइं ।

एम मुणति धम्मु जगि के सइ । 5

लेवि पुरंदरेण मणिपडलें ।

घित्त तुरंतें खीरसमुदइ ।

णं वम्महसिहरेहि सिहूरमाउ ।

रविससिर्विवइं णं णिव्विडियइं ।

सहुं णिज्जिय मियकुं णीहारें । 10

विज्जुलैया इव ण्हविष्फुरियइ ।

जाइ सरीरहु सुट्ठं सुहिलइं ।

पचमहव्वय चित्ति धरेप्पिणु ।

अण्णउ भूसिउ वयपवभारें ।

क्षत्ति महामुणि हुवउ वियवरु । 15

26 १ MBP मुक्क २ MB सिहरंगउ ३ BP णिव्विडियइ ४ MB मियक ५ BP विज्जुलदा
६ MB अहविष्फुरियइ ७ M मुक्क

12 a छ ण्ण क ज के सरे प्रच्छादितपद्मकेसरे, b तरतीत्यादि—यत्र वनालये सुरासुरा के न तरन्ति, सर्वेऽपि
तरन्त्येव, सरे सरोवरे 13 सरीतुसारसीयल नदीजलविपुषा शीतलम्, b रिसी ऋषि, वसी जितेन्द्रिय,
यल च+अल अत्यर्थम् 14 णिव्विण्णउ विरक्त 15 सिवपयखोणिहे मोक्षस्थानपृथिव्याम्

26 1 b पविधारिणा इन्द्रेण 5 b केसइ के स्वयम् 6 a लुक्क लुप्ता 7 a जणवयेत्यादि—
लोकानामसदृशितमत्स्यमुद्रके, लवणकालोद्याम्यामन्यसमुद्रेषु मत्स्यादयो न सन्तीत्यागमात्, अथवा क्षसकुमत्स्यमुक्क
उदक यत्

उत्तरसाहचरिनिर्वा भवमिह विणि
 दुविदु वि मयि पवित्रज्ज्वा संजमु
 परियंविनि सामिह विममत्पद
 ययई वेहालोहयकहयई
 अजयमनु महुजयह पयह
 गय विमगहहु जयजालैषण
 विपविद्याचकन अहैततड
 ओ वज्जहु सकिउ जाहीसै

महुमासहं पकयमि सियवैविनि ।
 गड विमयासहु हरि हुपवहु जमु ।
 अकड वि जणु जामिपविममत्पद ।
 कवि बाहीससयई पीवहयई ।
 विमपुरवड बाहुबळि पयह । 20
 अकर वसहसंयाहय जैदण ।
 बाटीयणु असेसु परियतड ।
 समडं तेण तारं जाहीस ।

यत्ता—एकवडहु केरड अगमयगारड हँतु विसहि मरहे सड ॥

यिउ वंपि अउज्जहि वैहरितुमगहि पुष्कर्यतु मरहेसड ॥ २१ ॥

25

इय महापुण्ये तिसहिमहापुण्यसांकार महाकापुष्कर्यतविरह
 महामज्जमरालुमज्जिय महाकज्जे विनयिष्यन्त्यन्तः जाय
 ससमो परिच्छेजा सम्मसो ॥ ७ ॥

॥ संवि ॥ ७ ॥

MBP अमर १ MBP अमरिणि and gloss in P १ १ MBP अमर ११ MBK
 अमर ११ M अमरिणैगहि

16 & विनयि वि विनयारके हुप्पवहि हार्य 18 & विनयि वि विनयिणैगहि 19 & वेहालोहय-
 कहयई वेहालोहयकहयई & बावहयई अजयमनु २० & अहततड अनीन तड 23 & बाही में
 जामिपविममत्पद ; & बाही में जामिपविममत्पद 24 अहैततडे सड तेण

VIII

सीर्हासणु णरवइसासणु महियल्लु तणु अवियप्पिवि ॥

गुणैवंतहे तवसिरिकंतहे थिउ अप्पाणु समप्पिवि ॥ १ ॥ धुवकं ॥

I

आवली—धरिऊणं इसी सुणिग्गथवेसय

दूरविमुक्कसंगयं जणियतोसयं ।

तिस्सो रइक्कएण परिसोसियगओ

5

एयत्त भरेण झाणालय गओ ॥ १ ॥

चिरु चरियइ चरियइं संभरेवि

जगसामिणि गोमिणि परिहरेवि ।

मणमारहु मारहु करिवि छेउ

अइसच्चहु तच्चहु सुणिवि भेउ ।

तणुमरणइं करणइ णिज्झिणेवि

मयसिमिरइं तिमिरइ णिज्झुणेवि ।

घरवासहु पासहु णीसरेवि

चिहइंतउ जतउ मणु धरेवि । 10

सहुं लोहें मोहें वहिवि खेरि

णियजणणि व वहिणि व गणिणि णारि ।

संकुज्झिवि गुज्झिवि सइं जि सिक्ख

सुइवइणी जइणी लेवि दिक्ख ।

GK give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza —

एको दिव्यकथाविचारचतुर श्रोता धुघोऽन्य प्रिय

एक काव्यपदार्थसंगतमतिश्चान्य परार्थोद्यत ।

एक सत्कविरन्य एष महतामाधारभूतो विदां

द्वैतेतौ सखि पुण्यदन्तभरतौ मदे भुवो भूषणम् ॥

MBP, however, give this stanza at the beginning of IX with variants जना-
for विदाम् and भूपौ for भूषणम् . At the commencement of this Samdhi they read
the following —

मातर्वसुधरि कुतूहलिनो ममेत-

दापृच्छत कथय सत्यमपास्य साव्यम् (शाख्यम् ?) ।

त्यागी गुणी प्रियतम सुभगोऽतिमानी

किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतार्थद्वयम् ॥

1 १ MBP सिहासणु २ MBP तणु व वियप्पिवि and gloss तणमिव गणायेत्त्वा ३ P गुण-
वतहो ४ P ०कंतहो ५ M तस्सा ६ MBP एयत्त and gloss in P एकान्तम् ७ MB जयणी

1 1 तणु अ वियप्पिवि शरीरमाविगणय्य 5 तिस्सा रइक्कएण तस्सास्तप कान्ताया समोगार्थम्,
परिसोसियगओ त्यक्ककाय 6 एयत्त एकत्वम्, 7 ७ जगसामिणि लक्ष्मी, गोमिणि पृथ्वी 9 ७ मय
सिमिरइं मदस्य सैन्यानि 11 a खेरि वैरम् 12 a संकुज्झिवि शङ्कामुज्झित्वा, ७ जइणी जैनी

अहो हो किमेयस्स एणण होही
पुणो पट्ठणं किं व जाही ण जाही
ण कंताकुटुंबेण मोह विणीओ
जडाजालधारी सपारोहसोहो
मणूमण्णणिजो गियारी गिसुंओ
इमस्सेरिसो धीरधीरावहारो

घणते कहं वा गिसाहाइं णेही ।
मणोहारि रज पि काही ण काही ।
ण सहूलपंचाणणां पि भीओ ।
घुलंतंगसण्णो वडो णं कुरोहो ।
इमो देवदेवो परो आइवमो । 15
पं दुव्वहो चारुचारित्तभागे ।

घत्ता—ज' धवलें अइअतुलवलें दुग्गुं खुरेहिं णिभिण्णउ ॥

तेहिं कसरहिं विहुणियसंसिरहिं एकु वि पउ णंउ दिण्णउं ॥ २ ॥

3

आवली—उच्चिमयधवलचिंधमहिमावसारओ

करिवरजूहणाहपल्लाणभारओ ।

परजम्मंतरे वि परिरूढतेयओ

पियसहि रासहाण कह होइ णेयओ ॥ १ ॥

गयगंडकंहुंकहुयणवाह
को वि सहइ फणिमुहचुवियाइं
को वि सहइ दूसह दंस मसय
को वि सहइ णगत्तणु गिरासु
पाउसजलधाराविप्पियाइं
को वि सहइ सिसिरि पडंतु सिसिरु

को वि सहइ किडिदाढावलेह । 5
ताण चिय कंटोलवियाइं ।
पोसियकसाय दुव्वार विसय ।
णिच्च गिरसणु गिरिदुग्गवासु ।
को वि सहइ विज्जुअडप्पियाइं ।
उण्हालइ दिणयराकिरणपसरु । 10

७ B नीही c MBT धीरवीरावहारो, but gloss in T धीराणा धैर्यापहारक, P वीरधीरावराहो, but gloss धीराणामपि धैर्यापहार ९ MB जे १० MB खुरहिं णिभिण्णउ ११ P जरकसरहिं १२ M सुसिरहिं १३ MBP ण वि

3 १ P किह २ MBP चढं ३ B कठालवियाइ ४ MB ससिरि but gloss in M धीतकाले

11 b गि सा हाइ अहोरात्राणि 18 a विणीओ विनीत प्रापित 14 b कुरो हो वृक्ष 15 a मणूमण्ण-
णिजो मनुमिरपि पूज्य 16 a धीरधीरावहारो धीराणामपि धैर्यापहार 17 धवलें धुर्यद्वयेण
18 क सरहिं वत्तरे

3 ३ परिरूढतेयओ प्रख्यातप्रभाव 4 रासहाण गर्दभानाम् 8 a वाह घाघा, b किडिदाढाव
लेह सूकरदष्टाविदारणम् 8 a गिरासु फलानपेक्षम् 9 b क्षडप्पियाइ पतनानि 10 a सिसिरि धीतकाले,
सिसिरु शीतम्.

परसंयकहापी केन विदुः	का यि वाहर वसदु तमिय विदुः ।	
अथेय वनु कि वयु मरमि	यक जाहवि तं मियरजु करमि ।	
अथेय वनु समरमि पुनु	यद जाहवि आमिगमि करुनु ।	
अथेय वनु अमिधुविपारं	सधिसई मपरंकरंविपारं ।	
सरवरि परसपिनु विपमि ताम	तज्जार न येवर औउ जाम ।	15

सता—अथेयं माणगुणं विहमिनि परद धुधर ॥

परममद आरंभियक पञ्चतुं यपि किह सुधर ॥ ३ ॥

४

आवली—मिहंत समिमि मिज्जर एमा सयं
वहुंतमि आर वुडुपयं विवं ।
अथमो वणमि सहित्तव रंरं
करवइवरियमय मिधाव रंरं ॥ १ ॥

विसेमे विपण	तदगिरिगहय ।	6
परक्यैरं	मातृज परं ।	
मंगूज पुरे	तं विविहपरं ।	
मरहसुन मुई	वेर्यमनु करं ।	
अथेदि पण	पडिचणमिणं ।	
पुणवविपयं	वईपंचमये ।	10
वपुंगतनुं	पचवंति मनुं ।	
मंत्रियमसिहि	कुसुमंरुतिहि ।	

५ B संव १ MB विपमि ७ MBP वुडु मि

4 १ MB लिखें, K लिखें but corrects it to लिखें १ MBP have before this line वसिमिना नाम उरी GK have वसिना नाम उरी १ MBPT "ए" ५ MBP वेचमि ५ MBP "ममि" १ M adds this foot in the margin and MB read after it वादेवइव वपुंगतनुं वी विज्जमयं after वपुंगतनुं ॥ read वरिपमिन्नव वपुंगतनुं

11 ३ विदुः वपुंगतनुमकाहम्

4 1 अतो वका, 2 वुडुपयवरी ५ वम् 3 वंरं व वुडुपयवरी, 4 विवये विवये 5 ३ परं पडिह.

गयजम्मरिण	पुज्जंति जिणं ।	
जंपंति इमं	धीरो सि तुमं ।	
ण मुपसि कमं	गहियं णियमं ।	15
अम्हे चवला	पविलीणवला ।	
तुह मग्गचुया	हा किं ण मुया ।	
मणैधरियगई	इय भाणिवि जई ।	
अज्जवसवणा	णिम्मियभवणा ।	
थियह्रिणगणे	णिवसंति वणे ।	20
कदं पवर	मूल महुरं ।	
मालूरदलं	भक्खति फलं ।	
सीय विमल	पपियंति जलं ।	
सिरधुलियजडा	वियरंति जडा ।	
किर ते वि मुणी	ता दिव्वमुणी ।	25
ससिरविसयणे	उगय गयणे ।	
मा लुणह तरं	मा धुणह मरं ।	
मा खणह महिं	मा कुणह सिहिं ।	
मा विसह सरं	मा हणह परं ।	
एसा ण विही	जइ णत्थि दिही ।	30
ता णिवसणय	तणुभूसणयं ।	
गेण्हह तुरिय	दुट्ठ दुरियं ।	
असुविहवणे	भवसंकमणे ।	
जं आसि कयं	त जाइ खयं ।	

यत्ता—जिणालिंगे उज्झियसगे जं किउ पाउ दुरासे ॥

तं तुट्ठइ कैह वि ण फिट्ठइ जीवहु जम्मसहासे ॥ ४ ॥

85

७ P मणि ८ MBP °हरिणयणे ९ MP विरयति १० MBP कह व

19 b °भवणा गृहाणि 20 a थियह्रिणगणे स्थिता हरिणानां गणा यत्र 23 a मालूरदलं वित्त
पत्रम् 26 a स सिरविसयणे आकाशे 27 b मरं पवनम् 29 a सर सरोवरं पानीयम् 35 पाउ पाम्
36 जम्मसहासे जन्मसहसेण

सोहृद् गुरुयणमि कयमाणवज्जणं

गिरिवरदारणमि करिदसणमंजण ॥ १ ॥

रयणमयमहंदासणसमेउ

जिणपुण्णपवणपरिछित्तकाउ

णियणाणु पउजिवि तेण मुण्डिउ

मगंति बाल किं भुअणभाणु

पर तेण विमुक्कु घरत्थकम्म

सामंतमत्तिसेविउ णरेसु

देसवइ गामु गामवइ छेत्त

घरवइ पुणु ढोवइ कुरमुट्ठि

जइ पत्थिजइ ता को वि गरुउ

लइ कयउ कुमारिं जुचु साहु

सो पत्थिउ जसु जसु जगपयासु

पोमावइपरमाणंदहेउ ।

तहिं अवसरि कपिउ णायराउ ।

जं सालएहिं जिणु पुरउ भणिउं ।

जर देइ देइ ता तिजगदाणु ।

पारद्धउ विमलु मुणिंदधम्म ।

महिवा संतोसिउ देइ देसु । 10

छेत्तवइ किं पि कुडैएण भत्तु ।

तिट्ठयणवइ पाटइ पयहिं सिट्ठि ।

लहुपत्थणाइ पर होइ चरुउ ।

सो पत्थिउ जो तेलोर्कणाहु ।

सो पत्थिउ जसु सुरवइ वि दासु । 15

घत्ता—णिच्चलमणु समतणकंचणु जेण वित्तु पट्ठिवण्णउ ॥

मोम्बवत्थिउ सो ज पत्थिउ तं हउं करमि अंसुण्णउं ॥ ६ ॥

7

आवली—णरलोयमि ते हमिह योहकारणं

जाय किं भणामि सुकयावयारणं ।

अचचंता वि दैति तरुणो महाहल

सुपुरिसदसणं पि ण हु होइ णिप्पल ॥ १ ॥

6 १ MBP सुदेहि जिणपुरउ २ MBP देउ ३ P येत्तु ५ P येत्तवइ ५ MB कुलएण, P कुलएण in second hand ६ MB तद्दलोक् ७ MBP ण सुणउं

7 १ MBP भणेमि

6 ८ णायराउ नागराजो धरणेन्द्र 10 ८ णरेसु नराणामीश, अथवा, पुरुपेपु 11 ८ कुडएण प्रत्येन

12 ८ सिट्ठि जीवसुट्ठि सिमुवनम् 13 ८ चरुउ हितकर

7 1 णमेत्यादि— नरलोके तौ नमिबिनमी तिष्ठत, हमिह भद्वं पाताले तिष्ठामि, तथापि एतौ मम क्षोभकारण जाता

बुधर्—तो विमामजमेव धरजेय कयं संमरियजियवरं । 6
 पत्ररफौकडपुष्कराकर्तास्मियसमहिमहिहरं ॥ १ ॥
 महिहरदैवकैवरायपजमिमापकूरहरिवरं ।
 हरिभोरुकिरोसवितामियजासियमसर्जुजरं ॥ २ ॥
 कुजरचहुसचरणपेदिपेत्तुजपाडियपयडमूडई ।
 मूडहयंभनुंयपाविहमनदहपजडियहुयवई ॥ ३ ॥ 10
 हुयवहविष्णुसिगाडासावसिजसियसंमत्तकावयं ।
 कावयसंमिसप्यामुभित्तावांसकिपसपसतुरपयं ॥ ४ ॥
 सुरपचमरियजडयजडयाराकरियसुविउतवरं ।
 धंवारयडकुंरंततदिवेडाईडसकापकनुरं ॥ ५ ॥
 कधुपदिप्यवापवितियपुष्पावयडहयसंययं । 15
 सैयवडविठेम्पविसहरमुहकाडियविठसंययं ॥ ६ ॥
 वीरजकुसुममुसिपफडसससंयुडडवयिपवयं ।
 मसैवकामसामफभिरामार्मियसरसवययं ॥ ७ ॥
 जसजमिडियठमियडीसमरमडयासुडियमेहसं ।
 मेहडियाविठमिडककिंकिमिडककसयसमुपेसई ॥ ८ ॥ 20
 हय वरविवरकुहउरवहयसजडयडकंपकारिया ।
 वियडफभाहिकडवूडामिकुवडयमारपारिया ॥ ९ ॥
 पडुकमकमडयमियजमिविचमिवरहिवबीडवाहया ।
 कति समाणयव विठो रिचहो गरडहरराहया ॥ १ ॥

१ P डी. १ MBP कडा ४ P "जगलिय" ५ MBP "वरिवेव" ६ MBP "कड" M "उज-
 कनडिय", B "तामरवडिय", P "तामरडिय" and gloom उपवडिह K "तामरडिय" but in
 blood hand "तामरडिय" MBP "उमिड" १ MBP "कनय" १ MBP "वैव"

6 "कड" संयय 7 "जावेय" "जावययम्", 8 हरिभोरुकि विहवविसास ठेड जोडहयः
 10 "हरविहयवडई" जडयमिवर्ययययुयू 11 "तामरडिय" तामरडिया 12 "मरिवचडव"
 पुरयेय 14 "कनुरं विठवर्न" वया वयाति 15 "डमेव" कनूरकड "वरव वैवयययम्" 16 "का-
 य" पुमिया 18 "कम" स्वाभा. 21 "कुहर" फौत 22 "महिकड" मियत 23 "बीज" वावयं
 24 वरवहरराहया वावययय वरवययय

घत्ता—आवेष्णिणु कर मजलेष्णिणु थुउ मुणिदु थुइलक्खहिं ॥

25

मुहंघुलियहिं अक्खरलंलियहिं जीहहिं दसंसयसंखहिं ॥ ७ ॥

8

आवली—कंतामुहपलोइरं भोयलालसं

भुवणवणं डहेइ मोहो मलीमसं ।

जइ तुह वयणवारिणा णेय सित्तयं

ता कह जियइ मयणसिहिणा पलित्तयं ॥ १ ॥

दूसियघरासमो भूसियणियागमो ।

5

सोसियमईमलो पोसियमहीयलो ।

मयगयणियत्तओ कयवयपयत्तओ ।

भावियजयत्तओ तावियसंयत्तओ ।

खंचियाविसायओ संचियविरायओ ।

लुचियसिरोरुहो वचियदुरग्गाहो ।

10

कुंचियगईवहो अंचियजसावहो ।

मावईसोहओ आवईरोहओ ।

छडियकुसंगओ खंडियअणगओ ।

दडियसइंदिओ पंडियपवंदिओ ।

तवयरणपरियरो जमकरणभयहरो ।

15

समसरणजोयओ भवत्तरणपोयओ ।

सज्जणाणग्गणी सिद्धिचितामणी ।

सपयासगमो धम्मकण्हुमो ।

११ P मुहि १२ MBP °वलियहिं १३ P दुसहससरहिं

8 १ GK have before this line -अमरपुरी छदो, MBP have अमरपुरी नाम छदो.
२ M °सगतओ ३ B omits this foot

8 1 लालस लम्पटम् 4 मयणसिहिणा पलित्तय कामाग्निना प्रदीप्तम् 5 b °घरासमो गृहस्था
भ्रम 7 b °पयत्तओ प्रयत्न 8 b °सयत्तओ °स्वगात्र 11 a °गईवहो °गतिमार्ग, b अचियजसावहो
श्लाघितयशोधारक 12 a मावई° लक्ष्मीपति 15 a °परियरो सामग्री, b जमकरण° मरण रोगो वा
16 a समसरण °उपशमगृहम्, b °पोयओ प्रवहणम्

मन्त्रविष्णोसी मन्त्रो	सिद्धपयासी सिद्धो ।	
विस्तृतमहो ह्यो	बोसविर्द्ध विष्णो ।	20
पावहायी वरा	तं परार्ण पय ।	
वैपवेभो तुमं	तादि दीर्घं मय ।	
विष्णुभो विर्द्धो	तुम्हा विम्बिभो ।	
परह्राबाधभो	वह्निपरमात्मो ।	
मात्रभो मन्त्रभो	रोहिभो रिच्छभो ।	25
जापभो हं मन्त्रे	कारभो रत्न ।	
तुम्हा पवित्रुत्तिमा	का कया सा कमा ।	
धम सुता धम	जासि कासे पय ।	

वृत्ता—विष्णु वीदिदि अण्ड विदिदि पार्यं तमु पक्काखिड ॥
 वमिणयण्ड विष्णमिसहायण्ड मुहससिर्दिण्ड विहाखिड ॥ ८ ॥

80

9

भाषणी—वर्हि पर्यपिं सभा सुहावर्ण
 महिमहि वारिक्कय पयो सि किं वयं ।
 कस्स तुमं सुसीक वमहाय सेमुहं
 वमिमिसखेयवेहि किं वेण्णसे मुहं ॥ १ ॥

वीधेसंतासियामिषणरिण्डु	तं विर्द्धिभि विदिर्णपर कयिण्डु ।	5
हर्तं भुववि पसिद्धय वायराय	कंमारिण्वर्णविड तिक्कयताय ।	
कावत्तमु कुत्तमसंतासयण्डु	इह वेण महारत सामिण्डु ।	
कारण्डु विष्णरुड मुर्द्धेरका	तयण्डु वि पय महु कयिण्ड कण्डु ।	
त पेसिंय केव वि कारणव	विहाभिण्वर्णविडकारणव ।	

v MB विष्णुभो ५ MP add after tho. वीधेसंतासयो वरुणवर्णोत्तमो B adds only वीधेसंतासयो.

9 १ MBP वीधेसं १ B विष्णुभि ३ MB सुतु एण्ड MBP मयेदिन

20 = विस्तृतमहो विस्तृतोवातक ह्यो वाहित वक्ता विस्तृत तयोऽव्ययवत्तक पूर्वः 22 & तादि
 एव 27 & कया कमाय, 29 वाह परावर्णेव

9 १ कया सुहावर्ण सभा पुण्यकारण्ड २ महिमहि वारिक्कय हे वही, वही विपार्थः 6 'वमि' व
 वमि' 6 & वमारि' इत्या 7 कुत्तमकारणव क वक्तावत्तकः 8 = विवैहव वैष्णव कया

परहितं वे वि णमिविणमिणाम
तुहुं देजसु ताह णयामणाउ
आसणथरहरणं ढल्लिउ संचु
पायालु मुदवि अवयरिउ पत्थु
जो खंडइ लिपइ सुरहिणण
एवहिं सो दीसइ धुंघु समाणु

मइ मग्गिहिंति सिरिसोम्भकाम । 10
रगसेडिउ उत्तरदाहिणाउ ।
मइं जाणिउ तुम्हारउ पवंचु ।
हउ अरैहदेवपेसणममत्थु ।
देवं णिज्जाइयणियहिणण ।
परिचत्तउ पुब्बिहउ विहाणु । 15

घत्ता—लहु आवह काइ चिरावहं जोइ मुणवि मप्पयरइ ।

मइ सिट्ठउ पहुउवइट्ठइ भुजह णाणाणयरइ ॥ ९ ॥

10

आचली—इय वयणं कुमारवीरेहिं इच्छिय

णवर णहयले विमाण णियच्छियं ।

मारुयधावमाणधुयधयवडंचियं

गुणिणा झत्ति णायणाहेण णिमिय ॥ १ ॥

णंविऊण सटोसारमहरं

जुंजिहयहिंडियविसहरिणउलं

गयणंगणलगासिर गरुयं

उम्भयपुल्लिंदकदारुणयं

सीहाणुलगाभीयरसरह

सुरवरभवणेण सरमहरं ।

दूवकुरपीणियहरिणउलं ।

ओत्सहिहयसत्तसिरगरुय ।

हरिणहहयफरिंददारुणयं ।

सुररमणीवाहियहंसरह ।

5

५ MBP अरुहदासपेसण° ६ MBP धुउ

10 १ All Mss have before this line मात्रासमकं ° MBP जुजिहरहिंडिर° ३ MBP दुव्वकुर°

11 a णयासणाउ नगाथिते द्वे श्रेण्यौ, b खगसेडिउ विद्याधरश्रेण्यौ 12 a °धरहरणे कम्पनेन, सञ्जु शरीरबन्ध 14 b °णियहिणण मोक्षेण 16 चिरावह चिर कुरुताम्, सखयरइ विद्याधरसहितानि

10 5 a सटोसारमहर स्वदोषारम्भविनाशकम्, b सुरवरभवणेण विमानेन, सरमहर सरोवर-जलधारकं विजयार्थं रम्भायुक्तइ वा 6 a °विसहरिणउल शृपसिंहनकुलम्, b °हरिणउल मृगमयातम् 7 a गरुय महान्तम्, b सत्तसिरगरुय सत्त्वानां शिरसि शरीरे च रुज व्याधिम् 8 a °कदारुणयं कन्दै-मूलैरुणं रक्तम्, b कदारुणय मस्तकै कृत्वा दारुण रौद्रम् 9 a °सरह अष्टापदम्, b °वाहियहसरह वाहितो हसयुक्तो रमो यासिन्

तीरासिपयपीवाहण्यं	नुमयदुग्धदुग्धपयाहण्यं ।	10
पडरररमरियरररररर	वररररपीयपिपोहररर ।	
संररिपिसियरररररररर	रयियररियररररररररर ।	
बीसरियहाररररियमररियं	त्रियरररिमाकपमररिमररियं ।	
वाररयमुपिद्विसियरररररर	हररररियरररररररररर ।	
फरियररररियमुकविसिगिरर	वररिवापियरियरियरियरियरर ।	15
वरररुयकमररररियररररर	वीररं सररं मरियररररर ।	
पुन्याररररररियरररररर	कवररुहेरि वरररररररर ।	

अन्ता—मडमीसरि नमिनिबमीसरि गिरि वररु पमाहउ ॥

रयवाक्य सापररररर मुग्धं व संरररर ॥ १० ॥

II

मायली—वियसियरिद्विद्विमुमरिज्जरिज्ज

मरियररररररररररररर रं महीकरं ।

रयवायररररररररररररर ररर रररर

रयवायररररररररर ररर रररर ॥ १ ॥

रं वररररियररररररररर	वररर रररररररररररर ।	5
रंयारररररि ररियरररर	पररररररररररररररररर ।	
रररररं वररर ररररररर	ररररं वररर रं रररररर ।	

v M "अवाहउ" ५ M "विमरर" ६ P "वरररर" MBP "ररियरर"

10 मररीवाहण्यं विवाहणीयां वाह्यं वरियं, ६ दुग्धं वररर ६ "दुग्धवाहण्यं दुग्धवररररियं,
11 ॥ "अवाहउरर कनरररर ६ "विवाहउरं" "विवाहउरं" 12 ॥ मरररियररररररर रररररर वरररर-
वायरररररं व मुग्धं ररं ६ वरररररं वररर 13 ॥ मरियं महीकरं वररर ६ "पररिवावररि वं महीकरं वरर-
रर 15 ॥ वरररररि—वररररररररररररररररररररर वरर ६ वरररररि—वरररररररि रररररररि
वररररि: ररररररं वररर वरर, 16 वरररुयक मरियरररिमुग्धं; वरररररि वररररर व वररं वरररररर
रिय वररररर रर; १० मरियररररर रियवावररररररररर मरियर 17 ६ "वरररि रररररर 19 ररर-
रर ररररररर

11 1 "विमर" वरररर 2 वररर" वररर रररररर व, ६ ररररररररररररर रररररररर
वररर वररर रररररर मुग्ध: वररर ररं वररर ररररररर रररररर मुग्ध: ० ६ वरररर" वररर रर वर-
7 ६ वरररररर रररररर रररर ररररररररररर वररर

उवल्लोसरिरससिहिजोयवणु
णिसि चदयतसलिलेहि गलइ
माणिकपहादिण्णावल्लोउ
रययमउ मव्हु रयणियरभासु
रयणराणलगविचित्तसिंशुं
दोवासहि तासु थियाउ ताम
उत्तरदाहिणियउ मणहराह

गसवाइ व सह णिवडियसुपण्णु ।
वासरि रविमणिजलणेण जलइ ।
जहि चक्कवाय ण मुणंति सोउ । 10
पण्णास मलि वित्थारु जासु ।
जो पचवीसजोयणइं तुंगु ।
दीहत्ते लवणम्ममुहु जाम ।
सेढीउं दोणिण विज्जाहराह । 15

वत्ता—महि मोइवि दह वरि जाइवि दहजोयणवित्थिणी ॥
पक्केकी विहवगुरुकी णाणारयणरवणी ॥ ११ ॥

12

आवली—तत्थ चउत्थकालटिठिसिचिहाणयं
पचधणूसयाइ मुणिरयणिमाणय ।
णीण कम्मभूमिपरिणामजोयओ
परविज्जाहलेण अहिओ विहोयओ ॥ १ ॥

कुलजाइकमेण समागयाउ
पुव्वाउ ताउ णिव्व हियाउ
संहिउवसगें धीरें समेण
पारभियमुहामढलेण
विज्जाहराहं णियमैं वर्णण

दूमहतवताववसंगयाउ । 5
अवराउ पयत्तं सादिथाउ ।
सुइदेहं होमं संजमेण ।
चरुगंधध्वक्कुल्लचणेण ।
विज्जाउ होंति ससहावण्ण ।

11 १ MBP गयणगलगमुविचित्तं > B °संगु ३ MB मेडिउ दोणि वि, P सेडिउ वेणि वि
४ MBP णाणाणयर°

12 १ P °कालटिठि° > T भयरणिमाणय, but notes a p मुणिरयणीति पाठेऽप्ययमेवार्थः ।
३ MBP कम्मभूमिणाम° ४ MBP सहिओउसगंधीरें ५ MP °गुण्णवणेण, B गुण्णवणेण ६ MBP कमेण

8 a उवल्ल° धातुपापाण 11 a रयणियरभासु चन्द्रकान्ति 13 a दोवासहिं द्वयो पार्श्वयो 15 मोइवि
मुक्त्वा, वरि उपरि

12 1 चउत्थेयादि—चतुर्थकालस्थिते शरीरेत्सोधादिलक्षणाया सम्यक्विधानम् > मुणिरयणि-
माणय ससहत्तप्रमाणम् ३ णीण नृणां मनुष्यानाम्, कम्मभूमिपरिणामजोयओ कृप्यादिकर्मयोगज 7 a
संहिउवसगें सोढोपसंगेण 9 a वएण व्रतेन

वज्रगलु वज्रविमोड अवरु
 सोलहमी पुरि सयईमुहि होइ
 रयचिरयपउरखगजम्मखेणि
 अपरज्जिउ कंचीदामु दोणि
 झसइंध कुसुमपुरि संजयंति
 विजया खेमंकरु चंदमासु
 सुविचित्त महाघण चित्तकूड
 ससिरविपुरि विमुही वाहिणी वि
 मज्झइ रहणेउरं चक्रवालु
 जार्थउ जयमगलजयरवेण

महिसारु पुरं जयपूरं चि पवरु ।
 चउमुहि यहुमुहि जाणंति जोइ ।
 आहंडलणयरि विलासजोणि । 15
 सविणय णहु खेमैयरीउ तिणिण ।
 सुर्कउरु जयंती वइजयति ।
 रविभासु सत्तभूयलणिवासु ।
 अण्णु वि तिकूड वईसवणकूड ।
 सुमुहीपुरि णिच्चुजोइणी चि । 20
 तहिं सयलखयरकुलसामिसालु ।
 णामि फणिणा णिहिउ कउच्छवेण ।

घत्ता—एकेकी पुरं हिं चिरिकी गामकोडिपाडिवद्धी ॥

णामिरायहु धुयणाहेयहु धम्मं संपय सिद्धी ॥ १३ ॥

14

आवली—पुरिसा भूयलम्मि विरला सुधीरया

परउवयारवावडा होंति धीरया ।

एको अहव दोणि पायालराइणा

सरिसा णत्थि भइ धरणिदमोइणा ॥ १ ॥

वारुणासासुहाओ फुडं जाणिमो

अज्जुणी वारुणी वइरिसंधारिणी

विजुंदित्त पुरं गिलिगिलें पट्टण

वंसवत्त पुरं कुसुमचूलं पुरं

वामसेढीपूराणावलिं भाणिमो । 5

अवि य केलासपुव्विल्लया वारुणी ।

चारुचूडामणी चंदमाभूसणं ।

हंसगव्वं पुरं मेहणाम पुर ।

५ B जउपुर ६ B सयडमुहि ७ M खेपुरीउ, BP खेमपुरीउ ८ MBP सुकउरि ९ P वइवण^१,
 १० P गेउरु चक्रवालु ११ MBP जोयउ १२ M विहवगुरुकी, BP पुरहिं गुरुकी

14 १ M सरसा २ MBP भइ णत्थि ३ MBP पुराणावली ४ P विज्जदत्त ५ MBP किलि-
 किल ६ MP वसवत्त, B वसवत्त

23 पुर हिं वि रि की पुरै विमक्का

14 1 सु धी र या सुवुद्धिरता 2 वा व डा व्यापृता 5 a वारु णा सा सु हा ओ पश्चिमदिशामुखत
 प्रारभ्य

कुलचहुमंडणु भत्तारभत्ति
माणहु मडणु अदीणवयणु
कइमडणु णिव्वाहियणिंभु
पियपेम्महु मडणु पणयकोउ
किंकरमडणु पहुकज्जकरणु
सिरिमंडणु पडिययणु णिरुत्तु
पुरिस्तहु मडणउ परोवयारु
उद्धरिय वे वि णमि विणमि भाय
अहवा किं होसइ किर परेण

असि रायहु मडणु मंतसत्ति ।
भवणट्ट मडणु वरणाग्रियणु ।
गयणहु मडणु ससि कमलवंधु ।
आरमहु मंडणु खलविओउ ।
णरवइमडणु पाइक्कमरणु ।
पडियमडणु णिम्मच्छरत्तु ।
धरणिंठे पालिउ णिव्वियारु ।
को पावइ एयहु तणिय छांय ।
परिणवइ दइउ सव्वायरेण ।

15

घत्ता—किं किज्जइ अण्णे दिज्जइ सव्वहु पुण्णु जि सामिउ ॥

ते किंत्तणु भरइपहुत्तणु पुप्फयंतर्गयगामिउ ॥ १५ ॥

इय महापुराणे निसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइण

महाभव्वमरहाणुमणिण महाकव्वे णमिविणमिरज्जलमो णाम

अट्टमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ८ ॥

॥ संधि ॥ ८ ॥

५ M सोहइ ५ MBP होइ ६ MBP °गइ°

10 a °णिबधु काव्यम्, b कमलवंधु सूर्य 18 ते पुण्येन, किं त्तणु कीर्तिर्यस्य, पुप्फयतर्गयगामिउ
आकाशगामि सर्षलोकाकाशव्यापि कीर्तनम्

IX

ता झाहउ जिन्नेहु विपमवर्षसब परखिउ ॥
पुण्यर कहुइ मासि जाई जोउ बिसखिउ ॥ १ ॥

I

हेछो—परिबितर जिनेसरो जुखिं कर्बो ।
महिमापाज्जासिमो सुखी भईयो ॥ १ ॥

जिह ठेलेक बीउ सब बीरै	तिह माणुसखरीब जाहारै ।	5
भाहार बि जो पण बिमिसे	सिखर कहर कोक मेरि ।	
बखिउ जाहाकमुहेसहि	पुण्य पण्य सेबुरमासहि ।	
जखोबज्जहि पूरकम्महि	देवपचकपहि विबखियजम्महि ।	
जिगिबीकजरसैपुणापहि	बीरहमखबिप्यापहिपाहि ।	
जीबबहारमचंजममीसहि	परमपचसक्याहगासहि ।	10
यजहरयजियहि ज्जाप्योसहि	बखिउ बचपहि मि बहुरोसहि ।	
बीउसु सयसु न कि पि मनेबउ	रससु रसै मैकु बिहजेबउ ।	
कपठेपकज्जिठाबसउ	संजमज्जामेपु समसउ ।	

MBP give at the beginning of this Sāndhi, the stanza एको विपमवर्षसबपरउ
etc for which see notes on page 121

1 १ BP "कसरपरजिउ १ GK call this couplet हेकमुर् only at this place;
throughout the rest of the Sāndhi they call it हेका १ MBP छरयो १ MBP बखि
१ P मयै १ B कुरुकसहि १ M "पणुगाहि ११ कुरुकपहि P पणुगाहि १ MP कसर
१ M कसर १ MBP रसै रसउ. ११ MBPT "सैकसपउ

1 1 झाहउ जाउ, परखिउ पराजिओ सिखिउ 2 बीउ कव्यापकजोलेन 4 पूरउ छुखुकि-
6 6 का न कुं कज्जम् 7 १ जाहाकमुहेसहि जय वर्ग बीब कर् लकनकसिकम् परेकिं कर् हुनि-
मुर्खिल पाककरमम् 8 १ जखोबज्जहि मुर्खि बहुरा बखिबसये बखिबकसब संपुज्या का सिने 9 १
बीउ बि ली रसिउ; १ बीरहमक" कुरुकमखिप्यापिबिप्यापिउ ते व बका —कुरुकमप्युकिपकप-
कुरुकिमेकबम्यापि; ककपुर्कपिपुकाकन मका कसरक जमि 11 १ कावाबीरहि बीब बहुरोवा
बीबक कसाककोवा रस रसकोवा ककोकरोवा रसाकोवा कवीरव ज्जाबरोमयेति पदकपहि
रोवा 12 १ कवपकप्यायेपु ज्जाबरोमयेति

सुक्कु लुक्कु सउवीरन्मुक्खिउ
पाणिपत्ति सइं मइ भुंजेवउ

णवकोडीविस्सुद्धु सुपरिक्खिउ ।
चरियाचरणु जगदु दरिसेवउ । 15

घत्ता—जइ हउं अळमि अळु केम वि ण करमि भोयणु ॥
तो जिह प णर भग्गो तिह भज्जिहइ तवोवणु ॥ १ ॥

2

हेला—आहारें वओ तिणा तवो तिणा जियक्खो ।
अक्खणां जप समो होइ तेण मोक्खो ॥ १ ॥

इय हियइ घेत्तूण	जोयं पमोत्तूण ।	
सिद्धत्यणामाउ	तम्हा वणंताउ ।	
विहरेइ परमेद्धि	जुयमेत्ति गयदिद्धि ।	5
जीवे ^३ ण दुम्मेइ	पेच्छलु पउ देइ ।	
रमणीयथामेसु	णयेसु गामेसु ।	
तं विणयणयमरिय	पणमंति णायरिय ।	
अब्भुवरसालीण	जोयति ^४ गामीण ।	
भइयाइ कपंति	अण्णे पयंपंति ।	10
एसो महीराउ	एसो महादेउ ।	
घणकणयघण्णाइं	पपण दिण्णाइं ।	
मंडेलिय महियलइं	काऊण बहुहलइं ।	
पयस्स पडिवत्ति	उवयरह सहस ति ।	
इय भाणिवि सहलइं	विविहाइ फलदलइं ।	15

१२ MBP सउवीरें भुक्खिउ, K सउवीरन्मुक्खिउ १३ M परिक्खिउ १४ MBP भग
2 १ MBP तवें २ MBP जुयमेसु ३ MB जीव ण दूसेइ, PT जीव ण दूमेइ ४ MBP
जोयत ५ MBP मडलइ

14 a सउवीरन्मुक्खिउ काडिकेनाभ्युक्षितम्, b णवकोडीविस्सुद्धु मनोवाक्यै श्रुतकारितानुमतसमुक्तैर्नि
शुद्धम् 17 तवोवणु तपोवन मुनिसघात

2 1 वओ वणु, तिणा तेन, जियक्खो जितेन्द्रिय 2 समो कर्मक्षय 5 b जुयमेत्ति चतुर्हल-
मात्रे 10 a भइयाइ भयेन 15 a सहलइ आर्द्राणि

ममगाहियामार्	ममगुमुनशामार् ।	
ईदुमर् ईदुपर्	मापपर् मापपर् ।	
सुपदियर् मीमयर्	मिगारपरजसर् ।	
मसिन गहिरुप	पयमि निहिरुप ।	
पादम्प त वेति	वाङ्मा प पार्पति ।	२०
अन एमम्पार्	वर्पगवम्पार् ।	
कहिसुलकम्प	मोमिहाव मीजीव ।	
ईदुपर् ईदुपर्	यं सुग्मवमर् ।	
गहिरुपमवम्प	उवमेति वृक्षम् ।	
अन कुसीपाड	मज्जामि वीपाड ।	२५
सापम्पपुग्माड	हार्यति वृक्षम् ।	
पारम्पुर्गार्	मापगोर्गार् ।	
निमिगेर् पारम्पि	उववपर् पट्टम्पि ।	
वारपुत्तुर्गार्	वमपववत्तार् ।	
मोमिसीनर्गुर्ग	विधार् मरिर्ग ।	३०
अन्य ममर्पति	अन्ये पयमर्पति ।	
मा मपपमपवाह	मा वापज्जववाह ।	
मा नवपमिहिरीह	मो नवमिरीपाह ।	
मो वृक्षवृक्षम्	मा वरम् वरमेव ।	
मिज्जमावमव	मिर्गेवृक्षोमव ।	३५
पातवमि कि मीमि	वड हगमि वड एममि ।	
इय ममिभि अज्जहि	वडुर्पमिपज्जहि ।	

१ MB इतिपुन्येयः, P इतिपुन्येयः = MBP इतिपुन्येयः. Mp वरम् १ MBPT वरम्. पुन्य and glow in T मन्त्रः १ B omits मिमिर्ग वरम्; P adds it in the margin in second hand. ११ M adds after this वेति विवरः; P adds it in the margin in second hand. १ MBP add further वरम् इतिपुन्यः ११ MBP ममिभि १२ MBP वरम् १२ MBPT इतिपुन्य १३ B वि १ MBP वरम् १ M वरम् वरम्

०६ ईदुमर् ईदुपर् मम ३ ममवमववह वरम् वरम् २९ म वरम् विरीह वरम् वरम् ३० वरम् वरम् विरीह वरम् वरम् ३१ वरम् वरम् विरीह वरम् वरम्

बोलाविओ जइ वि पहु चवइ णउ तइ वि ।
परणिहियणियच्चिउ महिवीदु विहरंतु ।

घत्ता—हिंडइ जाम जिर्णिदु चरियामग्गि पइट्टउ ॥ 40
ता सेयसणिवेण गयउरि सिविर्णैउं दिट्टउ ॥ २ ॥

3

हेला—पल्लकासिपण मउलतणेत्तएणं ।
रयणिविरामजामए संपसुत्तएण ॥ १ ॥

ससिप्पहाणुजम्मिणा	भवाणुवद्धधम्मिणा ।	
णिसायरो दिवायरो	करीसरो सरोवरो ।	
महण्णवो सुरधिओ	यल्लुद्धरो मयाहिओ ।	5
सवाहुजित्तसंगरो	रिऊण छेयणकरो ।	
भेरक्खमेक्ककंधरो	महामढो धणुद्धरो ।	
घुलंतपुच्छपच्छलो	विसो विसाणउज्जलो ।	
णियच्छिओ सकदरो	घरो विसंतु मदरो ।	
इमो सुदंसणोहओ	पणट्टदिट्ठिमोहओ ।	10
णिसंतए पलोइओ	समाणसे विचेइओ ।	
पहायए महाउणो	समासिओ समाउणो ।	

घत्ता—तं णिसुणिवि कुरुणाहु सिविणयहल्लु आहासइ ॥
को वि जगुत्तमु देउ तुह मंदिरु आवेसइ ॥ ३ ॥

१९ BP सुइणउ

3 १ M बलद्धरो २ MBP भरेक्खमेक्ककंधरो ३ MPK °पुछ ४ MBP °फलु

3 3a ससिप्पहाणुजम्मिणा सोमप्रमस्यलघुप्रात्रा 5 b वल्लुद्धरो मदोत्कट, मयाहिओ मृगाधिप
7 a भेरक्खमेक्ककंधरो भरेक्खमेक्ककंधप्रदेश 9 b विसद्ध प्रविशन् 10 a सुदंसणो हओ शोभनत्वा
सघात 12 a पहायए प्रभाते, महाउणो महायुष 18 कुरुणाहु सोमप्रम

देखा—सासिरविमुहमहीहसरसपहिगोमुवाओ ।

अपममंदव एव गहसिपपीमुमीओ ॥ १ ॥

नीकजडाकसावभीमाकिड
 एरीपपरररररररिहवाहड
 तावप्यहि निमि अवरि पड्डुड
 बावभापजपपपसमई
 को वि मजइ मजओपहि पसहि
 को वि मजइ सामिप इय किऊड
 को वि मजइ मेरड घड भावहि
 बंडु व पिनिअ पिनिअ पिररंतड
 बरिभिहि प्रेरंगगु संग्राहड
 निम्यभाड मणि लोड्डु बईसिड
 मजगु मजगहदि संजोहड
 आदि भाह ऊह तपुडवपरजई
 वरसहि पडि सुसिरससमगाड
 बोझावियड ए कि पि वि भासहि

सिहदि व अवरमाऊह कासिड ।
 अमोड्डु व ऊईसपायोहड ।
 पाटीपरहि निरंजगु सिड्डु । 5
 उड्डुड कऊपगु अवरजपसई ।
 इई पंजकिपड अऊमि ओरहि ।
 एऊवार पडुउड सिऊड ।
 मिअमसि पडु कि व विहासहि ।
 अरवड गेहि गेहि पइसंतड । 10
 ताड व भाड व देड पडोहड ।
 एम अवीति ताड पवअमिड ।
 पोसि वेडु भासगु वि पडोहड ।
 लंगड ओळिड डेमोहवरई ।
 मुंजहि मीपगु मुळु वि ओम्यड ।
 मुंजिमुंजि कि अण्यड सोसहि । 15

मता—पुनि कऊपगु निमुजेवि सविमासे अरिभारिड ॥

अंकाजईहविहसु पुनिअ विपहडवारिड ॥ ४ ॥

4 १ M "अरसपुपकजो B अरसोपि पुपकजो; P अरसपिना पुपकजो; T अरि अरस
 १ MBP ओड्डुनीओ १ MBP अरपण" ४ M "अरि" ५ M अरसगु लपार B परिभिरपण
 अंकाज P अर लपु लपार १ MBP हरिगु ४ M अरगु अरगुअ B अरगु अरगुअ M
 अरगुअ

4 1 "अरि" अरगु; "मो" अरगु.. B अंकाजिड अरिअ अरगु; १ अंकाजिड अरिअ अरगु
 अरि. 15 ४ अरगुअ अरगुअ अरगुअ अरगुअ अरगुअ अरगुअ 17 अरिअ अंकाजिड 18 अरगुअ
 अरगुअ अरगुअ अरगुअ अरगुअ

5

हेला—ता पडिहारण भाणियं भवावहारो ।

जो लच्छीकडक्खविक्खेवे वि णिवियारो ॥ १ ॥

सिरेण णवेवि सुरायलि ठवियउ

जेण पयासियाइं मइगम्मइं

भरहहु तुम्हहु मेइणि दिण्णी

सो आयउ तेलोक्कपियामहु

सहुं सेयंसकुमारें णिगाउ

संमुहु प्तु णिहालिउ जिणवर

णहसरि रवि सररुहहु कयग्गहु

सामि सणेहैभरेण भरेप्पिणु

सोमप्पहेण पलद्धपससे

मुहु जोइयउ णेत्तसयवत्तहिं

जो तियसेसरेण सइं णवियउ ।

घहुभेयइ जणजीवणकम्मइं ।

जेण णवल्लवित्ति पडिवण्णी ।

तं णिसुणिवि उट्ठिउ सोमप्पहु ।

ताम पलवपाणि ण दिग्गउ ।

णं वसुहगणाप पैसरिउ कर ।

णं जगमवणखंभु भयंमयमहु ।

कर मउलेवि पणामु करेप्पिणु ।

देवि पयाहिण तहु सेयसे ।

हरिससुयओसाकणसित्तिहिं ।

घत्ता—अइपसणमुहु होइ संभासणु पडिवज्जइ ॥

पुव्वमवंतरणेहु जणैदिट्ठिप जाणिज्जइ ॥ ५ ॥

6

हेला—जिणमवल्लोक्कण कुंयरेण लोयसारो ।

सिरिमइवज्जजंघजम्मंतरावयारो ॥ १ ॥

पैउद्धो असेसो

सुणीणं पहाणं

सवासो दैसेसौ ।

वराहारदाणं ।

- 5 १ MBP भणिय २ MBP ० विक्खेवणिवियारो ३ MBP पसरियकर ४ MBP भयमयवदु
५ MB सणेहु मरेण ६ BP अइपसणु ७ P जणदिट्ठे
6 १ MBP कुमरेण २ M has before this line सोमराई छद, BPGK have सोमराई,
MBPK पवुद्धो ३ MBP सदेसो

- 5 ३ a सुरायलि मेरौ 4 a मइगम्मइ मतिगम्यानि लोकजीवनकर्माणि, 9 b भयमयमहु
भयानां मदानां च विनाशक 12 इ हरिससुयओसाकणसित्तिहिं हर्षाश्रुमिहिकाकणसिक्के
6 ३ a पउद्धो प्रवुद्ध

मये अं विहर्ण्य	कपाजंतपुष्पा ।	5
समाह्वयसकं	मये तं पि वर्यं ।	
पुणो तेव वर्यं	महो हो विहर्तं ।	
हृयं मत्त वाणे	पयार्थं पुपार्ण ।	
अधूरं अयह	अंमार्थं अयार्ह ।	
अमायो अयोहो	अयोहो अयोहो ।	10
अयेमो अयेमो	अयेमो पि अयेमो ।	
विमुक्तपपाणे	अर्जगावहाणे ।	
पविरो मर्हो	अर्जतो मर्हो ।	
असेगा असेमो	अहाभापकिमो ।	
मुहार्ण विहायो	मुहार्ण उवायो ।	15
अहार्ण विहायो	महार्ण विहायो ।	
मैमायो असायो	हमो देवदेयो ।	
कपायो विहायो	समत्यो पसत्यो ।	
अवा अंविमो	हमो पुष्पाविमो ।	
पयो मोक्षगामी	हमो मत्त सामी ।	20
पुपार्णवपुमो	हमो पचपुमो ।	

पद्या—अगणुव शुक्लपुष्प मोक्षवर निष्ठास्तव ॥

एह आहारपिमिस्तु ममेह समप्रपवास्तव ॥ १ ॥

४ M अयार्ह अयार्ह and addar अयार्ह; B reads अयार्ह अयार्ह ५ P पि एयो and होम एका
६ M अयोमो अयोमो and adda- अयोमो अयोमो P अयोमो अयोमो अयोमो अयोमो, ७ M अयो
८ MBP एह ९ B अयार्ह

8 अ ययार्ह अयार्ह; पुपार्ण इत्याम् 9 अ अयार्ह अयार्ह; ६ अ ययार्ह अयोमो एतयो एतयो 11 ६
अ ययोमो पि ययोमो पुष्पार्णवपिमिस्तु ममेह समप्रपवास्तव 14 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो 15 ६ अ ययार्ह
अयोमो पि ययोमो 16 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो 17 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो 18 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो
19 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो 20 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो 21 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो 22 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो
23 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो 24 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो 25 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो 26 ६ अ ययार्ह अयोमो ययोमो

हेला—अथरामणिपसंदिशानां देवि लोया ।

नाह इमे ण लेंति परिमुक्काममेया ॥ १ ॥

कण्ण लेह जो फामे गन्धउ
मंचयसेजायलइ मभयणइ
गाह देदि देदि ति पगेमइ
विचु लेह जो इदिय पुजइ
धंभण तावम संचसणभग्गा
दुद्धरजीलेवत्यहिं ददिय
दुक्खिभरपरिदुक्खणीणा
जे लेंता ते विड विड देंता
पत्थरणाव ण पत्थर तागइ
जासु अवभारभपरिगाहु
धम्माभासु पाउ जो भावइ
कत्यइ मिच्छामग्नि पइहुउ
सल्लं सम्मत्तेण वि उज्जिउ
सददाणु णव पंचहु सत्तहु
ईसीसि वि वउ जेण ण पालिउ
मज्झिमु देसवरित्तालंकिउ
दुक्खं दुयसदप्पकदप्पहिं
भूसिउ सवियसासयसोक्खहिं
उत्तसु पचु पउ पणविजइ

भूमि लेह जो लेहं घेत्यउ ।
गेणइह जो माणइ रहरमणइ ।
जो घणण अयाणउ पोसइ । 6
मंसुं गाह जो पुट्टि ममजइ ।
पावयम्म ससारु लग्गा ।
अप्पउ पव वि हणिचि पाम्मदिय ।
सुंमुदि णिवटंति अयाणा ।
णउ जाणहु के गुणंति मटना । 10
अवम कुपचु भवणवि मागइ ।
सरइ कया वि ण इदियणिगाहु ।
अण्णु वि अण्णाणिय कारावइ ।
कुच्छियपत्त रिमीसहिं सिद्धंउ ।
हवइ अवचु सइ जि मइ उज्जिउ । 16
करइ पयाहु जिणेमपवत्तहु ।
त जैवण्णु मइ पचु णिहालिउ ।
सम्महंसणि कहिं मि ण संकिउ ।
णाणचरियम्ममत्तवियप्पहिं ।
सीलगुणहिं चउरामीलकपहिं । 20
पयहु पौनुयभोयणु डिजइ ।

7 १ MBP घत्थउ २ MB गुत्थउ, P गत्थउ ३ P पेय खाइ ४ MBT अवयणं ५ MBP
पव हणेवि ६ M °परियट्ठणं, P °परियट्ठणं but gloss परिस्मरणं ७ B ण जाणहु ८ MBP किं
९ MB °रु भु परिगाहु १० MP दिहुउ ११ MBP जहण्णु १२ MBP दुरज्झय १३ MB कामय,

7. 1 °पस हि सुवर्णम्. 2 b घत्थउ ग्रस्त 6 a पुजइ पोषयति 7 a सचसण भग्गा स्वयसन
ममा 10 a वि दे ह्या दि— विटा ये ददति तेऽपि विटाः 15 b अवचु अपात्रम्, 16 a णव नत्तानि,
पचहु पयास्तिकायानाम्, सत्तहु सत्ताना पदार्थानाम् 17 b पयाहु पदार्थानाम् 19 a दुरदुयं दुरोद्धतं.

9

हेला—इय कहिऊण तेण जुवराइणा समगं ।

दाययदेज्जपत्तववहारसारमगं ॥ १ ॥

सुइधोयदेवगणिवसणणियत्थेण	जलभरियदलपिहियभिंमारहत्थेण ।	
परिटिण्णधाराजलुध्दुअतावेण	सद्धम्मसैद्धावसुप्पण्णभावेण ।	
भवेभरणसंभरियमुणिदानैयस्मेण	वरचरमदेहेण विच्छिण्णजस्मेण ।	5
पियजपणालोयणुब्भयणेहेण	धरणीसतोसेण गुणरयणगेहेण ।	
इसिकहियसुंयसूइसभिण्णसोत्तेण	चंदकचारित्तचैवइयगंत्तेण ।	
कुरुजगलार्वाणिवइलहुयभाएण	मउमहुरणाएण सेयसराएण ।	
आओ गुरु सो जि णंतेण सीसेण	ठाभणिउ जिणु णमिउ पणवंतसीसेण ।	
ता सरइ हिययस्मि रइकुमुइणीजूरु	तूसविय जगणालिणु हयमालिणु रिसिसूरु 10	
असणेण तणु ताइ णिव्वहइ तवयरणु	तवयरणतावेण खतीइ मलहरणु ।	
मलहरणि संभवइ केवलु महाणाणु	लयविरमु सुहुं परमु जइ जाइ णिव्वाणु ।	

घत्ता—इय चितिवि सो थक्कु पत्तु तवेण विसुद्धउ ॥

चिरु सेयसवसेण सेयसं पर लद्धउ ॥ ९ ॥

10

हेला—एव कस्स ठाइ भवणस्मि भुक्षणणाहो ।

केण भवतरस्मि चिण्णो तवो अमोहो ॥ १ ॥

णवकलहोयकुंभगव्भाणिउ

कुरुणाहें पल्हत्थियउ पाणिउ ।

9 १ BP °सव्भावसुपसण° = MBP भवदिण° ३ P°दानघस्मेण ४ MBP °सुइसूइ° ५ MB °गेत्तेण but gloss in M भूपित गात्रम् ६ MBP °वणिक्कणित° ७ M सुइपरमु

9 3 a °णि यत्थेण नेपय्येन 5 a भवभरण° भवस्सरणम् 6 b धरणीस° राजान 7 a °मु य सूइ° श्रुतज्ञानसूचि 9 a णंतेण नस्सेण 10 a °जूरु सकोचक 11 a ताइ तथा तन्वा, b खतीइ मलहरणु क्षमया पापनाशो भवति 12 b लयविरमु अविनश्वरम् 14 सेयसवसेण पुण्यविशेषवर्धन, सेयसं त्रेयसा, पर मोक्ष

10, 2 अमोहो सफल परिपूर्णम्

मोहैवद्धणवपेम्महिरी विव
रयणसमुज्जलवरगयपति व
सेयसहु धणपण णिउजिय
पूरियसवच्छरउवर्वासे
तहु दिवसहु अत्थेण समायउ
घरु जायवि भरहे अहिण्डिउ
पइं मुपवि को गुरु संमाणइ
पइं मुपवि को चित्तुं सक्कइ
पइं मुपवि दिसिपसरियजसंयरु
जय सेयसदेव पभणंतहिं

सग्गसरोयहु णालसिरी विव । 5
दाणमहातरुहलसंपत्ति व ।
एक्कहिं उहुमाला इव पुंजिय ।
अम्भयदाणु भाणिउ परमेसें ।
अक्खयतइय णाउ संजायउ ।
पढंमु दाणतित्यंकरु वंदिउ । 10
पत्तविसेसदाणविहि जाणइ ।
परम्पउ कहु मदिरि थक्कइ ।
अण्णु कवणु कुरुकुलणहदिणयरु ।
सयुउ सुरणरवरसामंतहिं ।

घत्ता—महियालि धम्मरहासु एयइ तोसियमक्कइ ॥

15

जिणसेयसकयाइ वर्यदाणइं वरचक्कइं ॥ ११ ॥

12

हेला—धम्ममहारहो विलंघियदयावडाओ ।

एयहिं विहिं मि वहइ णिहयंगयारिराओ ॥ १ ॥

एम भणेप्पिणु गउ भरहेसरु
तिहिं णाणिहिं सुद्धं परिणामे
अट्टाइज्जहिं दीवहिं ज ज
उज्जुयवकहिययमुणियत्थउ
पंचवीसवयमायउ भावइ

एत्तहिं महि विहरंतु जिणेसरु ।
अचलचित्तु मणपज्जवणामे ।
माणसु चितइ जाणइ त तं । 5
देउ पराइउ णाणु चउत्थउ ।
तिहिं शुत्तिहिं अप्पाणउ गोवइ ।

३ MBPT मोहणिद्धं ८ M adds after this line -अहिय पक्ख तिण्ण सविसेसे । किंचुणे दिण
कहिय जिणसें । भोयणवित्ती लहीय तमणारें । दाणतित्तु पोसिउ देवीसें ५ MBP पढमं ६ MBP
पत्ताविसेसु ७ MB ०जयसरु ८ MBP तवदाणइ

12 १ M माणस, BP माणसु

11 5 a मोहे त्या दि—मोहेन वद्धा नवप्रेमणि सति स्वपतौ हीरिख लज्जेव 9 a अत्थेण समायउ
अन्वर्थकम्, b णाउ नाम 15 धम्म रहासु धर्मरयस्य

12 1 विलंघियदयावडाओ अवलमदयापताक 2 णिहयगयारिराओ निहताज्ञारिराउ ,
7 a पंचवीसेत्यादि—एकैकस्य हि व्रतस्य स्थैर्यार्थं पद्य पद्य भावना पद्यविंशतिव्रतमातर

आणाविचउ णामणिगंथउ

पुणु अवांयविचयं पि महत्थउ ।

अवरु विवायविचउ वित्थारइ

थिरु सठाणविचउ अवहारइ ।

घत्ता—इय विहरंतु धरग्गि सिद्धिवरंगणरत्तउ ॥

वरिससहासैं णाहु पुरिमतालु संपत्तउ ॥ १५ ॥

14

हेला—तां दिट्ठं लवंगलवलीलयाहरालं ।

अलियाल पियालमालूरसायसालं ॥ १ ॥

वणु विडगणेवत्थहिं छइयउ

पियैमाणुसु व सरसैकटइयउ ।

णिच्चोसोयउ कंचणवंतउ

वंधुपुत्तज्जिवेहिं महंतउ ।

रेहइ कुलु व समुण्णइपत्तउ

रक्खसपुरु व पलासणिउत्तउ । 5

सुरभवणु व रमाइ पसाहिउ

उज्झाउ व सुयसत्थहिं सोहिउ ।

सुइवयणु व चंगउ णिच्चप्पलु

संगामु व वणवियसियउप्पलु ।

णयणु व अंजणेण सोहिल्लउ

थणजुयलु व चंदणिण पियल्लउ ।

रमैणिणिडालु व तिलयालंकिउ

वहुवाहु व करवंदहिं संकिउ ।

तालै दुरु व सज्जै गेउ व

महै सोहइ णिवइणिकेउ व । 10

१० B अवायविरय

14 १ B तो २ M विडगणे कत्थहिं, B विणगणेवच्छहि ३ MBP ०माणुसु ४ P सरसु ५ MB णिच्चोसोय ५ P समुण्णय ६ MBP सुयसत्थे ७ MP रमणिणिडालु ८ P महै

12 a आ णा वि च उ आज्ञाया द्वादशाङ्गायागमस्य विचयस्तदर्थानां चेतसि स्वल्पपरिभावनम्, णा म णि गं थ उ शब्दोच्चारणरहितम्, b अ वा य वि च य मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्र्येभ्य कथं जीवस्यापाय स्यादिति चिन्तनमपायविचय, महत्थउ सवरनिर्जालक्षणमहाप्रयोजनप्रसाधकम् 13 a वि वा य वि च उ कर्मविपाकपरिचिन्तनम्, b स ठा ण वि च उ लोकसस्यानपरिचिन्तनम् 14 ध र ग्गि ध रा ग्रे

14 2 अ लि या ल भ्रमरयुक्तम् 3 a वि ड ग णे व त्थ हिं वनपक्षे, विडङ्गवृक्षा एव नेपथ्य आभरणानि ते, प्रियमनुष्यपक्षे, विटानां कामुकानामाहनेपथ्यैराभरणैर्नखादिभूषणैर्वा 6 b सु य स त्थ हिं शुक्रसमूहैराकर्णित शास्त्रैश्च, अथवा, श्रुतानि शास्त्राणि यैश्चात्रैस्ते 7 b व ण वियसियउप्पलु जले विकसित पद्म, अन्यत्र मणे विकसितमूर्ध्वमुच्छासितं पल मास यत्र 8 b व हु वा हु सहस्रबाहु, क र व दैं हस्तचन्द्रेण करवदीवृक्षैर्वा, सकिउ सकीर्णं सेवितम् 10 a स ज्जै सर्जरसवृक्षेण पङ्केन च, b महै बलात्काररणेन

पापवेदित्वा पापास्तु व
भवस्तु व कार्यैर्लुब्ध
महिमाविजिम्बुं व मनुजित्त

रत्नवर्णविराजित विद्यास्तु व ।
यसि य सुधीरे ज्ञेय विमुक्त ।
सरयवममियमुसंगति भुञ्जत ।

अन्ता—कुसुमाभोगमिसेष ज संमुखेन पर्यन्तर ॥

आनापन्निकसरेहि पद्मि योत्तु व सुखर ॥ १४ ॥

11

15

हेका—तहि जेवणवपमि धम्मोददस्समूहे ।

आसीना सिक्खयसे विम्मस विस्ससे ॥ १ ॥

अत्रकविराजुत्तमरपवन्ध
जपि सोकुत्त संसागि विचिहु
हेतु अत्रिज्जपास्तु व वंय
कास्तु देहपईणु रीजस्तु
सं सिवसाद किं पि माविज्ज
सोवैगास्तु वीरिज सुद्धमस्तु
अर्यस्यस्तुयत्त अज्जावाह
एव सपि संमाविजमम्य
तहि देहपयडिहि सुज्ज आवाहि
सम्यत्त सुद्धहावि पहिवात्त
एसिना संठिप्य सविहत्त

सुखर पद्म पवित्रकविसम्पद ।
सोकव्यापाव दुक्खु मरं विहुत्त ।
आहरणं मारिज्ज मंयत्त ।
रोपमिसेष रंयत्त मूहत्त जपु ।
जेव व वीर गमि वप्यज्ज ।
खड्गं वमरं वास्तु सत्तत्त ।
हायर वस्तुविहु सिद्धगुणोत्त ।
अप्यमपि गुणठावि व सम्यत्त ।
जपि अत्तु आहत्त तावहि ।
मयवति सत्तु सविवात्त ।
अविषंदिहि छत्तीस त्रि विहत्त ।

6

10

१ MBP वरंरति १ MBP "हर ए ११ M वसुह १२ B वर

15 १ MP वर २ M वर व विम ३ वर व विम ४ MBP "वत्त" ५ MBP वर

५ P वर ६ MBP वर ७ MP वर विमि

18 ६ "वत्त" व

15 ४ ६ लोकव्यापाव लोकव्यापाव ३ ८ वर व विम व्याप्त वर व विम व्याप्त ७ ८
सि वर व लोकव्यापाव ९ ८ वर विहु सिद्धगुणोत्त वर विम सिद्धगुणवत्त -अर्यत्त वर व वर
वत्त, वत्त वर वत्त वर वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त
वत्त ११ ८ वर व व वि वि वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त
वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त वत्त

सुमुमसपरायउ पावेपिणु
पुणु जीयउ उवसंतकमायउ
ग्रीणकमायचेरिउ पडिचणउं
त सवियकु पकु संघियारउ

तेण जि झाणें लोह एणेपिणु ।
कययहलेण जलु घ मुणिरायउ । 15
घीयउ सुम्राणु अवरणउं ।
मोलहपयइरयकनयगारउ ।

घत्ता—इय तेसट्टिपईहिं पइयहिं णाणमरुउ ॥

परमण्ययहु सहाउ अमणु आणिटिउ हचउ ॥ १५ ॥

16

हेला—ता डिट्ट जिणेण तिजेगं पि एकरांध ।

तिमिरुजोयवजियं गयणममियरंघं ॥ १ ॥

कमसाहणपडिगलणविहणं
सुमुमइं दुरंतरीयइ दव्यइ
भाणु घ भूरिकिरणमंताणं
तहिं अवसरि जिणणाहमणण घ
असहंताइं च गव्यु अणिंदहं
सुरतर साहाकर णचंति च
संजायहिं दमदिसिघदपूरहिं
कण्णवाडिउ णउ काइ वि सुम्मइ
णिग्गय सीहणाय गयदिग्गय
ससुद्धुणीहिं णाय संरोहिय

एणं भावाभाउपमाणं ।
पेक्कइ जाणइ मइसा सच्चइ । 5
मोहइ केवलि केवलणाणं ।
वीस तिणिण अवरइं भणियइ णउ ।
आसणाइ कपियइं सुरिंदह ।
सुमुमइ संतोसेण मुयति व ।
कप्पि कप्पि घटाटंकारहिं ।
जोइस्सवान्हिं विणिहयडुम्मइ । 10
वर्तरेहिं पडपडइ समाहय ।
अणेणं अण्ण देव संचोहिय ।

c P छंडि १ MBP चंडिउ १० MBP अवियारउ

16 १ MBP तिजय २ MBP add after this कसुणमासि किण्हएयारसि, उत्तरादरिक्कि
(P उत्तरसाटि रिक्कि) जइ जाणसि । तहिं उण्णु णाणु परमेट्टिहिं, लोयालोमपयारणमेट्टिहिं ३ MBP
जाणइ पेच्छइ ४ MB जिणु णाहं ५ MB गव्य ६ MB मइ जायहिं P सहजायहिं ७ P विणिहियं
but gloss विनिहतं c MBP वितरेहिं ९ MBP अण्णहिं

15 b कययहलेण कतकफलेन; मु णिरायउ मुनिराज 17 a सवियकु सवितरं, b सोरुहेत्यादि-
पोडप्राप्रकृतिरज क्षयकारकम्

16 2 अभियरंघ अलोकाकाशम् 5 a कमेति—कमेणार्थसाधनानौन्द्रियाणि तै प्रतिस्वरुं द्वा
पदोपार्थपरिच्छिप्तप्रतिबन्धस्तेन विहीनेन रहितेन 6 b वीसेत्यादि—द्वार्थिद्यादिन्द्रा इत्यर्थ

यत्ता—उपाह्वाजसर्वकिं मैमिपुणेति पठितम् ॥

बहुविहगुरवेन जगत्समुद्भवं गच्छि ॥ १६ ॥

17

हेता—ता संज्ञेन विविधो पीपिपाथिविहा ।

संपत्तो ज्ञेय एतन्मो गार्हो ॥ १ ॥

हार्वीहारसुरसतिमुसारण्यहो
गमिपुत्रवर्षेणमयकसपगंइत्यहो
कामवितागई कामकवी चहो
कंदकंदकपसमि परिचहो
संवतसमुहो वास्तुच्छोपरो
दीहवरमेहो दीहवस्तुसमो
सईवस्तुपवपविममहुमिहवहो
बावर्बलो महापवुंहुविचरो
मुक्तविहारकवासिचतुमेकमो
मिचसिहृत्पूरीरवामोदिमो
कनकनोयममहावृत्तिमावृत्तिमो
इति कन्याजपयई समुदाहमो

अर्द्धवर्षाहविहमविहाविहवहो ।
जमपगिपिचिहृत्संकाचकुंमत्यहो ।
पवकपविहपवकवकवकुंमहवहो । 5
इसवस्तुपलेहिं जववर्हिं महुपिमहो ।
दीहैरकंदगुक्तिं संरो ज वस्तुपवहो ।
दीहपरवामो दीहवीताहमो ।
वकवपविहवैकवकमकविमपवसंजहो ।
मुक्तिवर्षासुपी तसिपमिचकुंजहो । 10
मवकवस्तुपविहवविहवगुजामो ।
कनकवकवसपेजावहोचोदिमो ।
ईधिपार्हिं वंरोहिं परिपविमो ।
जत्य संज्ञेनो तत्य संज्ञीहमो ।

यत्ता—मवविग्रहज हरेण जमवर्षस्तुमवर्ष ॥

16

ये मार्गगमिसेन जायत दीवत मंद ॥ १७ ॥

१ MBP जमव

17 १ P अर्द्धवर्ष २ P "कनकवकवगम" ३ MB दीहैरगुक्ति ४ MBP जो ज वस्तुपवहो

५ MBPT "दीहो" (M कनकवकवपविहमहुमिहवहो B कनकपविहमहवपविह", P कनकवकवक-
वासिमहु" ६ B "पविहकनकविह" M "मिचिहृत्तरो १ MP हविमव", B "मुनेम" १ MBP
कराहो

18 ज मि व ह वै हि वस्तुपवैरकमपुवैव

17 ३ जवेन जेन ४ के मिहमविहमविहवहो मिपुत्रवर्षमयकसप

४ के "संकाच" "जमव" ५ "पुनक" "जमव" ६ "मिहो" "विमहु" "वहो" "वीताहमविपुत्र" ७ "वावही" "मुनेम" १४ के
"कनकवो" "कनक" "वहो" "वहो"

18

हेला—वत्तीसवरवयणसोहिल्लओ रसतो ।

वयणविवरविणिग्यर्यद्वदंतवतो ॥ १ ॥

दति दंति सरु सरि सरि पोमिणि	पोमिणि जा तूसावियगोमिणि ।	
पोमिणियहि पोमिणियहि पोमइ	तीस दोणिण छड्यणरवरम्मइ ।	
णालिणि णालिणि तेत्तियइ जि पत्तइ	णावइ जिणवरलच्छिहि णेत्तइ ।	5
पत्ति पत्ति एक्केकी अच्छर	णच्चइ हावभावसरसकोच्छैर ।	
तं पेच्छिवि सुच्छायउ सँधुरु	सच्छर सामरु चडिउ पुरदरु ।	
इदँसर्मिदसमाण जि साहिय	तायर्तिस किर मंति पुरोहिय ।	
परिसदेव देवेसकुमारा	आदरम्ब पुणु असिवरधारा ।	
चलिय अणीयतियससेँणा इव	लोयवाल दुगंतणिवा इव ।	10
खिम्मिससुर पाडहिय पियारा	अभिओय वि चल्लिय कम्मारा ।	
अवर पइण्णय पउर पयाणिह	रिम्ब मियर्क सूर तारा गह ।	
जक्ख रक्ख गधच्च महोरय	किंणर किंपुरिसा वि पिसायय ।	
भूयगरुडदीवुवहिकुमार वि	अग्गिवाउतडियणियकुमार वि ।	
दिकुमार तवणीयकुमार वि	णायकुमार वि असुरकुमार वि ।	15
आइय आँवेतह सविमाणहुं	पेलावेल्लि जाय णहि जाणहुं ।	

घत्ता—सदाणियउ गणहि हरिणकलंकु अजुत्तउ ॥

ससि करडयलणिहट्टु मयँचिक्खिल्ले लित्तउ ॥ १८ ॥

18 १ MBP °द्वदंतो २ MB छड्यणरवि रम्मइ ३ MB °कुच्छर ४ MBP सिंधुरु ५ MB इदमहिदसमाण ६ MBP °सेणावइ ७ MB णिवावइ, P णिवासइ ८ MBP मयक ९ MB आवतँ, P आवेतहु and gloss आगच्छताम् १० K °चिक्खिल्ले

18 ३ b °गो मि णि लक्ष्मी 4 b छड्यण° पट्चरणो भ्रमर 6 b °कोच्छर दक्षा मनोज्ञा वा 8 a इदसम इन्द्रसमा, इदसमाण इन्द्रस्य सामानिका 9 b आदरक्ख आत्मरक्षका 14 a उवहि-कुमारा, उदधिकुमारा b थणियकुमारा मेघकुमारा 16 a पेलावेल्लि ठेलाठेलीति देशी, b जाणहुं यानानाम् 17 सदाणियउ सघट्ति

हमा—अभि वि मा सुहार तेयं ये कामिपंगो ।

त्रिचक्रसाहमेव मतिषो पि की व तुंगां ॥ १ ॥

को वि मय्य भूयु कि पति कोपहि
का पि मय्य मा इति म कोपहि
को वि मय्य मा जयमि मगाउ
को वि मय्य कि मूसड कामहि
का वि मय्य मा पाहि विमहय
को वि मय्य मा सविपउ वतुहि
का वि मय्य संवहि कि परसहि
को वि मय्य आवहि समिपउ
मोटं मोह सपकगीडुरे
को वि मय्य वेसावरहुरे
को वि मय्य मादय तुं ओसर
को वि मय्य वेसाउ आईडयु
पय्यर पुंयु बमहं जयसहू

वयु महारउ वंतु व ओपहि ।
माउ सीडु कि मुंयु मयसेपहि ।
हंसड पय्यु बमहं मगाउ । 8
मडु मगाउ वंतु व विहामहि ।
पय्यदि कि व वतु करदहकह ।
वतंउ रिंयु मयपव म वेतहि ।
सखे मडु पारंयु म भासहि ।
पूसड पूसपव खडु मय्यउ । 10
माउ वतुवउ सयउ वतुंर ।
वहउ पय्यु कि पय्य विपारि ।
मा मयहि मयउ वतुपय्यउ ।
पयिरसविपयु होउ मयमंडु ।
त्रिचक्रसाहमेव पयवेसहू । 16

मया—काह पि वेविह कयव करि बीतुपयु हीसर ॥

मडुगयहि विपहि सविमविहिरमहि विहसर ॥ १९ ॥

हेमा—मय्य सुपविमसिपी गहियकुसुममाका ।

ये वाकासेकविपी मय्यसायसासा ॥ १ ॥

19 १ MBP वम २ MB वेव. ३ MBP विंयु MB वयु. ५ M वं. ६ MBP वय-
र ७ MBP वर ८ MB सयपव P सयपव but gloss सविपयमि ९ MBP वयंर पुं
20 १ MBP वरमिपी

19 1 वेव व वेव वयवेवेव. 8 सविमव वने 16 वमिपव वई वमविममि
17 विपहि विपे कुने.

अवरेक्का वि सचदण दीसइ
सोहइ अवर वि कुंकुमपिंदे
अवर सदप्पण णं मुणिवरमइ
अक्खयधारिणि ण मोक्खहु सहि
अवर सुसेयदेह णं सुरसरि
मलविरहिय अवर वि विज्जा इव
णच्चइ अवर सरसु भावालउ
वायइ अवर ततिवज्जतरु
एम पसण्णपसाहियवयणहि
सोहम्माहिउ सत्तावीसहि
एम देव संचलिय जावहिं
इदाणइ त णिमिउं जेहउ

णं मलयइरिणियववणासइ ।
पुव्वदिसा इव सिंसुमचंदे ।
अवर मयरचिंधे सरि णं रइ । 5
थणदुहडी णं सुहधणणिहि महि ।
अवर सहंसमोर ण गिरिदरि ।
अवर सुरहि पप्फुल्लियजाइ व ।
गायइ अवर कूडताणालउ ।
वण्णइ अवर परमतित्थंकरु । 10
अच्छरकोडिहिं चल्मृगणयणहिं ।
ईसाणु वि परिमिउ चउवीसहि ।
धणपं समवसरणु किउ तावहिं ।
मइं जडेण किं सीसइ तेहउ । 15

घत्ता—चारहजोयणरुंदु हरिणीले तलु वद्धउ ॥

परिवट्टलउ विसुद्धु धूलीसालउ णंदउ ॥ २० ॥

21

हेला—मोत्तियदसणहसियसुरणाहवावलीलो ।

रयणपंसुंविणिमिओ सहइ धूलीसालो ॥ १ ॥

सुयपिच्छेच्छवि कहिं मि विरेहइ
कथइ लोहिउं संझाराउ व
अब्भतरि जगईउ पहाणउ

कथइ अंजणपुंजु व सोहइ ।
कथइ पंडुरु कुदणिहाउ व ।
ताउ होंति सोलइ सोवाणउ । 5

२ MB मलयगिरि° ३ MBPT add after this line का वि गहियकत्थूरय (P कत्थूरिय) वरइ,
सामलगि गावइ धणधणतइ (B धणवणतइ); T also notes a p धणधणतइ ति पाठे निविडमेधपफि .
४ MP °तालालउ ५ MBP °मिग° ६ B णदुउ

21 १ P पसुणिमिओ २ MB °पिच्छ, P पुछ ३ MBP सोहइ

20 3 b °वणासइ वनस्पति 6 b थणदुहडी उज्जतस्तनी 8 b सुरहि सुरभि 9 b कूड
ता णालउ कूडतानालय विस्तृतानमाना 10 a वज्जतरु वायविशेष 14 a इदाणइ इन्द्रादेशेन
16 °सालउ प्राकार, णद्धउ वेष्टित

21 2 रयणपसुं रत्नधूलि- 4 b °णिहाउ निवहः 5 a जगईउ उपर्युपरि वीणि पीकानि,

बडयोडरमूसियड विसाळड	पसरियणावामधिमरणाळड ।
माजलेम ताहुप्परि संयप	संयप सेवामर सपंडा के मय ।
बडहुं मि विधुर्हि वपारि समुज्जय	ईसवसेचन मि इयजवमय ।
बडहवाहपडिमापरिवाणिय	फाबिहाणवमाजवडयकारिय ।
पुणु वीवीड सकमळ ससकिलड	वगमाधिबड जार् वगमहिलड । 10
ठीरपयवकरअंमरिविचड	बडपहपापरियम्मविचिचड ।
कुपकपधारिड वं विवसचिड	ममिपहईगड वं रहुचिड ।
विसधाहपपावियकडोळड	पुणु काहयड रमिवसमाळड ।

मसा—पहमियसरवहपहि वाडनार्पतिगिभिहि ॥

परिहड जारे विपति देवागमणु बळधिहि ॥ २१ ॥

15

22

हेळा—अहि महिड रईए ईसीहि मचईसो ।

सुरवहुकेपिवाहि सुरहसिहस्यसंखो ॥ १ ॥

पुजएड अंतदि जवतुमवेसिड	कुसुमाळड वं वम्महमसिड ।
पंतिहि रणड वं वरवेसड	पळवमियड वं सुहिपरिहाळड ।
कंडरपड वं विपवममिळिबड	वसति व माववसेवळियड । 6
वं वरवहवावड कोमळियड	काडाकावहुं पासिड वमिवड ।
विपदिबड अहिजवरससारड	वं कासुपमईड सविवारड ।
का वि वेसि तहि वेवड कंवणु	सयव वि वारि समीहड कंवणु ।
कम्पी का वि छळसि मसोवड	मिहे वुव विह विर रमर वसावड ।

य B सय ५ MBK सयवड. १ MBP वरविड ७ M विपवमिड, B ५वेसि ८ M विपिचिहि;
II विपिचिहि; P विपिचिहि

22. १ P वरि and gloss वातु कासिकणु २ M इपहि ३ MBP वरविवाहि ४ MBP
वरवि ५ MB विह विह विह, P विह विह विह and gloss वसा वी; K वुव but corrects it to विह

10 ८ वरीड वय 11 "वरमयति" विरवतवण, ३ वडवहवा" वडुपविच वडुईवरीवण
12 ३ "रहवड वपावव वळवळवड, रहुचि विह ववणुवण: 16 विह वि वरवति.

22. 1 मसिड वमिवड रईए रमिविचिचि ६ ३ काकाकावहु कासवकववमवि १ ३ व-
विवारड विवारवडिहा वमिव वमिव 8 ववणु वळवळवड

तन्मी का वि गपि पुष्पायह
क वि मायदहं मगु न मन्त्रे

होई निमंदिणि कुड पुष्पायह । 10
निमंदिणिहि लीन न मन्त्रे ।

यत्ता—किसलयदन्तफल्गोहं चलचन्द्र निहृत् ॥
अमर फलयेमेन तंगु को वि रद पूर ॥ २० ॥

23

हेला—चित्तयेधमधारिणो जणियकामभाया ।
धोद्विषणन्याहने जहिं ममति देवा ॥ १ ॥

पुणु हिरण्यद्वयउ मरिजउ
अयमेतु न कामफटफराह
जहिं चउगोउराईं सविधियईं
अष्टोत्तरमयमगामहईं
तहिं चितर पडिहागमभाया
पुणु पैणिहिउ उदयमि विमालउ
ताउ तिभूमिउ नयमनसुत्तउ
यहुयजउ धररायमभूमिउ

न जिणेण यमगियउ यजउ ।
गुरुपायाग पाग न उक्ताह ।
जहिं यहुमगलदन्त्रे निधियईं । 6
नय वि निहाणह दयउनिहईं ।
मीयगपुलिसगयागनिहया ।
चउमिु दो दो पाउयमालउ ।
णाइ पउत्तिउ सुंफइपउत्तउ ।
आयउ नं चोत्तगाह मामिउ । 10

यत्ता—उदयदिमहिं कुदिणीहि पुणु वि कया वि न निट्टिय ॥
दो दो दिणमंधूय तहिं भूयहेंउ पविट्टिय ॥ २३ ॥

१ MBP अरुं गारि होइ पुष्पायह ७ BP रावद ८ M अरु ९ B गान् १० MBP अमर वि
धोरमिधे

23. १ B पादिवण २ MT पविही, BP पणहीउ ३ MBP मयगिउत्तउ ४ MB मयउ
P मयूता ५ M धूयहण.

10 ७ पुष्पायह पुरपप्रपानस्य 11 न मायंदहु पापशे भावाणाम्, अन्यत्र मा लक्ष्मिचन्द्र तयो;
७ निव° चन्द्र.

23 4a अष्येयु अग्रयेता 8 n पणिहिउ मार्गो 9 n तिभूमिउ निगमिपुता 10 n चहु-
यजउ यदुवादिना यदुदीरकाय 11 कुदिणीहि मार्गस्य 12 दिणमंधूय दासम्भूता, भूयहेंउ धूरयश

परमहसु जो सञ्चउ वुज्झइ
अमयवभपउ जो जइ दावइ
सीहणेव जेण वणु सेविउ
जेण ण पसु घाउउ णियमगाइ
पसुवइ सो जि भटारउ बुधइ
जो पंचिदिय दुइम पीलइ
मोहचक्रु जें चप्पिवि चूरिउ

हंसु तासु धइ केम विरुज्झइ ।
विणयासुयवडाय सो पावइ ।
सीहचिंधु तह केण ण भाविउ ।
तासु जि वसहु थाइ चिंधगाइ । 10
दुट्ट अवर किं अप्पउ सुचइ ।
पीलु तासु धयवहु अणुसीलइ ।
चक्रु चिंधु तहु होइ अवारिउ ।

घत्ता—पुणु पायारु विचित्तु चउदुवार सुपसत्थ ॥

जहिं थिय णायकुमार मरगयदडविहत्थ ॥ २५ ॥

15

26

हेला—पुणु वि धूवदोहडी पवरणट्टसाला ।

अहिणवभावसोहिया ताउ णवरसाला ॥ १ ॥

उव्वसिरंभतिलोत्तिमणामउ
पुणु दीहर दहविह कप्पहुम
पुणु वेइय कलहोयहु केरी
पुणु वि दुवारइ पुण्णपवित्तइ
णिच्चु जि कीलियसुरसघायहं
पुणु पओलि लाघिवि पासायह
पुणु धूहइ मंणितोरणमालउ
मणुउत्तरगिरि व्व गरुयारउ
सुद्धायासफलहसपत्तिउ

जहिं णडंति तियसाहिवरामउ ।
दरिसियभोयसार णिरु णिरुवम ।
पियकता इव सुहइं जणेरी । 6
दरिसावियवहुमगलवत्तइ ।
भभाभेरिपडहणियह ।
पंति हारतारासुच्छायह ।
पुणु फलिहमउ सालु सुविसालउ ।
कप्पदेवपरिगन्धियदारउ । 10
तहु आलग्गिवि सोलह भित्तिइ ।

२ MBP चक्रचिंधु

26 १ MBP पुणरवि धूयदोउटी २ B कलहोय ३ MBP णिणायहं ४ MBP पुणु तोरण^०,
५ B तित्तिउ

8 b विणयासुय^० गरुड 11 a पसुवइ पक्षुपति शिव

26 1 ^०दोहटी द्विघटी घटद्वयम् 2 अहिणवेत्यादि उव्वसिरंभादीना विशेषणम् 6 a कलहोयहु
सुवर्णस्य 9 a धूहइ रत्नस्तूपा ,

यथा—तर्हि मंडनमग्नस्तु वेदक्षिपिहि समारिठ ॥

सोस्रपयदक्षणेहि पीडु सुहृद विरगिण ॥ २६ ॥

27

हेका—अवसिस्त तामु उपरि कृष्णानवधिसाराय ।

अन्यसुखराहिना वि सिरिधम्मचक्रपारा ॥ १ ॥

अथ हिरण्यवीडु तद्दु क्षयि
एष्यारुंगतुरपगोधापिहि
हरपवहरिदामयतशुभंफहि
पुष्टि वि विरीक रूढ पीडुस्त
अनुपपन्नमीपरपक्षिपद
मरणपक्षिमियदीहपक्षिहि
उत्तरं तिष्ठि तारं उद्धरिपहि
विसिगापपद्धरकपक्षिदंवरं
मामंउतु मंडनं अं माधुहि
विष्णासिपदुर्दसकविहिहि
एषपुष्करचक्रपहि पसाहि
कंकेहि नं पतनसोहित
विह विह देपुं पुष्टि वज्र

अनुकेउपरिमिद पक्षिपक्षिहि ।
आरणासुसिधयहरिजापिहि ।
सोहृद धपहि गक्षिमचक्रपहि । 5
तासुप्यरि सीहासंउ मंडन ।
विमंनु समंतमहमजिदविपद ।
सहृद कट्टि कक्षेपयपक्षिहि ।
विष्मकाई अं जाहृद करिवां ।
तिष्ठि वि जाहृद ससहृपक्षिहि । 10
अह मासंकेपिषु संप्राप्तुहि ।
सहृद पक्षुद अं पक्षेहिहि ।
विर्वमजविनाद राउ व यरंउ ।
मसंस्तुंउमिहृदु रमिपक्षु ।
तिह तिह धम्मजक्षि अं मज्जर । 15

यथा—अं माधोसह यम पुंनुदिसरेन गहीरे ॥

परमवहो तिहृपयजाहृ अं सुपहृ ससारे ॥ २७ ॥

27 १ M मुक्षिपद, B क्षिपद १ MPK विहृपय, B विहृपय १ MB विहृ १ B पुष्करपुष्टि १ B एष पक्ष १ MBP विष्मका १ MBPT उद्धरि MBP वि. १ M मण्डनं-विहृ वक्षिमचक्र, BP वक्षिमचक्रपिहृदु रमिपक्ष but T कट्टा पक्षि १ MBP वज्र.

12 अकारि क इत्

27 4 एष्यारुंगतुरपगोधापिहि ; वरम हृदी, योधादि वक्षः, अं आरणासु चक्रमण्ड, मुक्षिपद योधापक्ष 5 हरपवहरि वक्षः, वामय पुष्कराणा 6 अं विरीक वक्षपुंरि विमिहृरुंउत्त. 7 अं वपुष्क वं मुपमं, मादी वरं वक्ष 8 अं कंके वक्ष एषिपक्ष 11 अं जाहृद मंडे विहृद अरि मीप, वक्षपुष्टि वक्षमि एषी 12 अं एषह वक्षिपक्ष. 14 अं मसंस्तुंउमिहृदु वक्षपिहृदु रमिपक्ष वक्षमपुष्टि

28

हेला—अधिरलकुदकुडयमंदारपंकयाइं ।

समसलसिंदुवारकणियारचंपयाइं ॥ १ ॥

जिह जिह कुसुमइं पडियइ गयणट्ट
णवपसंहिदंडइं सपसंसइं
जयवकरयलंदोलणचचलइं
खीरतरंगा इव परिघुलियइ
पंहुराइं चमरइ सुविसिद्धइं
जं जं सुंदर लच्छिहि अंगउ
तं तं सयलु वि तहिं जि समप्पिउ
णियपहणिचेइयचंदकउ
पंचसहसधणुउच्छयमाणइं

तिह तिह करसरणिवडियमयणट्ट ।
पीयपासपडियाइं व हंसइ ।
गुणठाणारुहणाइं व विमलइं । 5
कित्तिहि अंगा इव संचलियइं ।
दयवेल्लिहि फुल्लाइं व दिट्ठइं ।
जं जं काइं मि तिहुयणि चंगउ ।
को वण्णइ जंमारिधियप्पिउ ।
समवसरणु गयणंगणि थक्कउ । 10
सेणियं कहियउ जिणवरणाणइ ।

धत्ता—जो उच्छेदु जिणिंदे धणुपंचसपहिं धल्लिउ ॥

तरुधरगिरिखभाह सो वारहगुणु धोल्लिउ ॥ २८ ॥

29

हेला—अट्टगुणेण रंदभावेण संपउत्तो ।

गाढं धूहवेइयाणं पि सो पउत्तो ॥ १ ॥

इय धणपं वेउल्लिउ जायहिं

जय जिण कण्ह रुह चउराणण

इदं णविउ भडारउ तावहिं ।

जय तवरामारइसुहमाण ।

28 १ MB पियपासपडियाइ P पियपासपडियाइ २ MBP तिहुयणि काइ मि ३ MBP उणयमाणे. ४ MP add after thus विससहससोवाणविहाणे, चउदिसविरइयहत्यपमाणे, B adds these after सेणिय कहियउ जिणवरणाणइ ५ MBP सेणिय कहिय जिणे वरणाणे ६ MBP पण्डित, T पण्डित ७ P पण्डित and gloss कथितम्

29. MBPK अट्टउणेण

28 4 a °पस डि दंडइ कनकमया दण्डा, b पीयपासपडियाइ पीतपाशवन्धकनकदण्डे पासास उपमा धृता 12 उच्छेदु उत्सेध, धल्लिउ कथित

X

परमेसरु युणिउ पुरंदरेण परिसेसियभैवभयमरणरिण ॥

परमप्पय महु पसीय सुसम सैमवसरणपरियरिय जिण ॥ १ ॥ ध्रुवक ॥

I

दुयई—तुह पट्ट चदणाइ संतोसु ण णिंदइ वहमि मच्छर ।

तह वि हु कुणसि अणयपणयाण दुहोहमुहोहवित्थरं ॥ १ ॥

तुह वीयरउ णिधूयकम्मु	तुहुं हिसावजिउ परमधम्मु ।	5
जो पइं सेयइ तहु होइ सोफ्फु	तुह पडिक्कूलहु सभवइ दुक्खु ।	
तुहु पुणु ढोहिं मि मज्झत्थभाउ	इहं पणुउ फुट्ट वत्थुहि सहाउ ।	
णिदिज्जइ रवि पिच्चाहिण्हिं	चंदु वि वाण णिवाइण्हिं ।	
ते दोणि वि पयइ किं करति	ससहावें णहयलि सवरंति ।	
ससिसुगेसहिसंघाउ जेम	भुवणोवयारि जिण तुहुं मि तेम ।	10
सरु दूसिवि जो ण वि पियइ चारि	तहु तण्हइ णिवडइ तिच्चमारि ।	
जो रसइ तासु तिसणासु सज्जु	सरवरहु ण एण णं तेण कज्जु ।	
जिह गरुलमंतु गरलंतयारि	तिह तुहु वि सहावें दुरियहारि ।	
अणवरउ भडारा भूयसामि	जहिं तुम्हइं तहिं हउं समउ जामि ।	

All Mss have, at the commencement of this Samdhi, the following stanza —

जग रम्म हम्म दीवओ चंदविष
धरत्ती पलको दो वि हत्था सुवत्था ।
पिया णिहा णिच कच्चकीला विणोओ
अदीणत्त तिस ईसरो पुप्फयतो ॥

MBP however read धरत्ती for धरत्ती, सुवत्थं for सुवत्था, and पुप्फदतो for पुप्फयतो in the above stanza

1 १ MB ° भवभवनरिण, P ° भवभमरणरिण. २ MBP सिद्ध महामइ पढम जिण ३ MBP पडिक्कूलइ ४ M इय ५ K ण तेण ६ B तुम्हइ तहिं हउं सर, P तुम्हइ हउं समउ

1 4 अणयपणयाण अनताना प्रणतानां च 8 a पिच्चाहिण्हिं पिच्चाधिकेनै, b णिवाइण्हिं पीहितै 12 a रसइ आस्वादयति, तिसणासु वृत्तानां, सज्जु सय 18 a गरुलमंतु गरुलमन्त्र, गरलंतयारि विपविनाशक

छप्तायन्मपयसपययनेण
आदसणसणिह मति पिहाइ
मंधर स्वीयतु तरुसुरगिमाग
अणुगेच्छतत णाहो सुहाइ

मतिरुह णमति गुरुफलमरेण ।
परमाणदे जणु जमि ण मार ।
जोयणपमाणु धियरइ समीर ।
पच्छइ लग्गाउ णेहेण णाह ।

16

घप्ता—जले दुग्धु पाति तगगिणिउ मामिउ पिटरइ जहि जि जहि ॥
तणे कटय कीटय पत्तर धि धूलि पणासइ तहि जि तहि ॥ २ ॥

3

दुग्ध—सुरगपेम्नेण परिमलमिलियालितुनेहि माणियं ।
धणियकुमार मेह येरिसति मेहचरगंधराणिय ॥ १ ॥

पट्ठगइ पच्छइ परिपुलंति
जहि देइ पाउ ताहि कणयसमत्तु
पंचद पट्ठणु भुयणि कासु
अट्टारइ धग्धणइ धरति
णह सादिमु यि रेइ मलयिदीणु
दिग्धुणि पयियमइ पयिसि
जहिपदमिराकडउ विचिउ
लीलासयोदियमय्यनैण
जो पेच्छइ दूरु माणु गरु
गिजिययणुसमयणयतरा

पणिपाइ सत्त सत्त जि चलेति ।
सुरसजोइउ मचरेर विमलु ।
हरि कुलिसधारि हरि जोगु दासु ।
रोमनिय णवइ ण धरिसि ।
धोयंयणीलमाणिकमाणु ।
पटुसमसदासधणुमाणेत्ति ।
ग्यर्णाररत्तु रुचियिउ रिउ ।
तह भग्गागइ गच्छइ धम्मचाणु ।
तह विहएइ माणकसायडमु ।
परवाइ पि देति ण उचराइ ।

6

10

१० MBP अणुगच्छइ ११ MB जह दुग्धु १२ B तिण

3 १ P परिमल २ MBP महार ३ P गवल ४ B एवइ ५ MBP काय ६ MBP
रयणापवत्तरदिग्धु ७ MB ८ नय ८ MBP अगइ ९ MB माणगधु

12 a उहाल° पत्तनयः 14 a ययय मन्दः, तरुसुरदि सार तरुणां सुरभि गौरा तेन सार मत्तः
16 a सुहाइ गुगायते.

3 8 a परिपुलंति विलगन्ति 6 a अट्टारइ धग्धणइ गोधूमदासियवर्णपमापयुद्धनामान-
कान्तिनिकोद्वराजमापा । कानाशनालमथ येणवमादपी न शिम्वा कुलत्यचणवादि सुवीजधान्यम्. 7 a सदिगु
दिशागहितम्, ८ माणु आजनम्. 9 b रयणा ररत्तु रत्नमयेरे सहितं अत एव रक्तम्; 12 a विजिययडु-
समयणयतराद निजितानि पटुसमयानामनेकमतानां नयान्तराणि गुणिविशेषा ये

पेकिहाइय मईय चरहरति	अविर्तित मोपम्यउ बहंति ।	
अविपीड पहावृक्षियछिपिडु	वीसह बरहिसहिं सुहायबिडु ।	
बायबोहेसु वि के वसंति	ते ते मुई महु संमुहु मयंति ।	18

मत्ता—मउक्षियकरीड पयविबसिरठ सकीड मयविमुक्षियउ ॥
परिबीडिह काहि विविदिईके तहि पयाउ इयपुक्षियउ ॥ १ ॥

॥

पुवई—पयहर कयवासिसुरउयविउ अक्षियसंयं गहरई ।
देविउ अयविवाउयेवाय वि भावयउवविस्तई ॥ १ ॥

पुपु रर कुमार वेतरसुरिह	पुपु ओहस कयामर वरिह ।	
पुपु तिरिय विपेउवावाकराउ	केसरि कुंजर सख कोछ ।	
बैहसंति गबेसाह व कमेय	निबमसिचंत भूतिप समेय ।	8
जब जब वंजविहहिं कउपयहिं	सयविं सविमाजाकउपयहिं ।	
वीहाउपु मेतिवि काइबभाउ	महमिहहिं पुंड किइत्यपउ ।	
अउरविठोसियउगपंकपयहिं	उपयोसियकुछुअनंनंकपयहिं ।	
मउवाककिहुविपमहिपयेहिं	योकेतकुसुमभावाउकेहिं ।	
उवागीईगाहाउअपयहिं	उवायिपकउपपुईउपयहिं ।	10
संधुउ सोहम्यीसाउपयहिं	अवरेहिं मि तियसपहाउपयहिं ।	

१ MBP वरिभा; T परिहा and glow प्रतिमा, ११ B गह, १२ MB अविमरहा; B अवि
हउविभा १३ MBP महु महु उहु १४ MBP अउर १५ BP लजउ १६ MP परिमरीप,
१७ MB विविह
4 १ MBPK अउपु २ MBP पुविउ ३ M वरहउ ४ MBP यवेतय ५ M उउउ
६ P अयविपयि

18 ॥ पेकिहाइय आनुयममिपति प्रतिमा सा हता येवाह; ६ अविहिविउ वरिहं १४ ॥ अविभाउ
अविमर १५ वरिवाविह वरिवायिकवा अयेय; ववाउ अया
4. १ वरहई अविमरली २ वयविवाउ अयवाउ येवा; आउय अयमयविउ येवा; वरहई
येवी. ६ ॥ अयेवाइ अयवउय ६ ॥ उउउ वि अविह ॥ ७ ॥ अउयवाउ अविमरली अविमर १० ॥
अउयविह अयवउय

घत्ता—जय दुम्महवम्महणिम्महण दोसरोसपसुणाममिहि ॥

जय सयलविमलकेवलणिलय हरणकरणउद्धरणविहि ॥ ४ ॥

5

दुवई—जय कंकालसूलणरकंदलविमहरविलयमिरहिया ।

जय भगवत संत सिव सकिव णिघचियत्तरण परहिया ॥ १ ॥

जय सुकईकहियणीसेसणाम

वामाविमुक्क ससारवाम

जय पयडियधुयससंयंभुभाव

जय संकर संकर विहियसति

जय रुइ रुइतवग्गगामि

महपव महागुणगणर्जसाल

जय जय गणेस गणवइजणेर

वेयंगवाइ जय कमलजोणि

सहिरणणविट्ठिपडिवण्णगम्म

जय परमाणंतचउक्कसोह

जय जण्णपुरिस पसुजण्णणासि

भमियण णियगिउयगामीम ।

जय तिउरहारि हर हांग्घामे ।

जय जय सयभु परिगणियभावर । 5

जय ससहर कुवलयट्ठिण्णकति ।

जय जय भवसामि भयंवसामि ।

महकाल पलयकालुग्गकाल ।

जय यम पसाहिययमचेर ।

आईवराह उद्धरियसोणि । 10

जय दुण्णयणिहणण हिरण्णगम्म ।

भावधेयारहर दिवसणाद ।

रिसिससईहिंसाधम्मभासि ।

5 १ MBP वलय° २ P सुकय° ३ MBT हीरवाम and gloss in T धीरप्रसन्न, अथवा हीरो
रत्नविशेषत्वं नमोऽ ४ MBP °ससईभु° ५ B परिगणिय° ६ P °गणविसाल ७ M पावघपारहर, BP
पावघपारहर ८ M रिससस अहिंसा°, BP रिसिमस अहिंसा°

12 °पसुपासविहि पशुप्राश पलाल तस्य शिखी अमि 13 हरण करणउद्धरण विहि हरणं मित्या-
दर्शनादे, करण सम्यग्दर्शनादीनाम्, उद्धरण दुर्गातिक्रमे पततामुद्धृत्य स्वर्गापवर्गप्रापणं तेषां विधिर्विधानं यस्मान्,

5 1 °कदल° कपालम्, °विलय° विलयावनिता स्त्री 8b भीमधण भयहारक 4 a वामाविमुक्क
वामाविमुक्क, ससारवाम ससारप्रतिकूल, b तिउरहारि जातिजरामरणस्य मित्यावर्धनादेर्वा विपुस्य विनाशक,
हीरवाम धैर्यस्य धाम 5 b परिगणियभाव ज्ञातपदार्थ 6 a सफर शकर मुखकर 7 a रुइतव
गगामि उग्रतपसामप्रगामी, b भवोवसामि ससारोपशमक 9 b गणवइजणेर शृपममेनादीनां शिष्याणां
जनक 10 b वेयंगवाइ सिद्धान्तवादिन् 12 a °अणतचउक्क° अनन्तचतुष्टयम्, b भावधेयार° शिष्याणां
13 b रिसिसस + अहिंसाधम्मभासि ऋषिभिः प्रशस्य अहिंसाधर्मस्य च प्रतिपादक

अय माहव विदुषणमाहवस
अय बीपयिमाहव परमाहव
अगि सो केसउ जो रापरंतु
के सव ते सव जे परं हसति
अय कासव का सबपिहि तुममि

महसवण वृत्तिपमवृत्तिसेस ।
गाययण केसव परमाहव ।
तुह जीरायणु करि केसवसु ।
अह पायपिह रउपि बसति ।
पेरतव बिसि पितोह अमि ।

15

पता—अय गयण हृपासव बंद रवि बीचय मदि माहव सखि ॥

महुममहेसर अय सयस पकवाडियकमिमकमिम ॥ ५ ॥

20

6

पुवर्—अय अय मिय पुव सुखोपयि सुगय कुमगावासा ।

अय पाहुंड विदु रामोपर हयपरबाहवासवा ॥ १ ॥

आमाहं पयिवाहं जाहं जाहं
हं हं उरपाहियन
मैरिहवविहीजहि आरिसेहि
सोवेचहि पंरउसामयहि
पउहि अवि मरउह कहिब वच
सयपपरवापुवियपयवाणु
राजियहि पुनु पण्डितवयणु
उपयणु महरा पुण्डित
ता रायं अवरैहि मि वरेहि

तुह देव अरुहं ताहं ताहं ।
तुह पायणु कनिअउ सेउ केव ।
कि पुण्यसि तुहु मयारिसेहि ।
कंजुहममाहवहोअयहि ।
हुंजहि मदि मदिवर पउकउ ।
पउेहिहि अचतु अचतु पाणु ।
आहससविहि अचउरपणु ।
तुहं अचतु अचतु अचतु उंनु ।
पवाचित अिजवव सिरकवकपेहि ।

5

10

१ MBP विदुषिये, १ MBP बीप मरी.

6 १ MBP मर मिय १ MBP हा एरहि १ P पर १ MB 'वावरै', P 'मवरै'
५ MBP एमउत. १ MBP 'अवर्'.

14 १ विदुषणमाहवस मय मय बीहं वलवव 15 १ बीपयण माहवस 16 १ सो केसव जो राप
वंगु व केसु उममव स केसव १ केसवसु केसवसु 17 १ केसवका रि— के कता १ के कता
इरमि. 18 १ सवपिहि पउरवाता 19 बीपय मयमय 20 अहुवयहेशर कयपयसिपयविर्नुवी
मरेपर सवव पवीपरीकपरीपुव

6 3 १ वयवह एरमयि 4 १ केउ वयव 5 १ आरिसेहि अयुतवी 8 १ अयपवर
वतु मि वय" अयपवरव अविमयिअवयव केवकैलवव व कयवी विदुवा देव

पुणु चित्तिउ किं जोयमि रहगु
मज्झत्थु सच्छु णिम्मुकसंगु
धम्मणे सुरत्तु कलत्तु पुत्तु
धम्मं सपज्जइ पुहविरत्तु
गंभीरणायणिम्महियवेरि

किं तणयताँडुं दरियारिभगु ।
किं वदमि मुणि सुद्धतरंगु ।
पहरणु वि होइ णिदलियसत्तु ।
कराणिज्जु पहिल्लउं धम्मकज्जु । 15
देवाविय लहु आणदभेरि ।

घत्ता—भायंगतुरंगहिं णरवरहिं रहधयचमरहिं परियरिउ ॥
वेयालियकयकलयलमुहलु भरहणराहिवु णीसरिउ ॥ ६ ॥

7

तुवई—पत्तो समवसरणमसुहहरणं खयकालवारण ।
मयरानाणविणित्तमुत्ताहलमालाल्लुलियतोरणं ॥ १ ॥

हरिणाहिवासणासीणगत्तु
पडलोमीपियसेविज्जमाणु
जिणणाहु दिट्ठु भरहेसरेण
णं मत्तमऊरं वारिवाहु
णं सिद्धं संभावियउ मोक्खु
कंपावियदिच्चकाहिवेण
जय भुवणभवणतिमिरहरदीव
जय भासियपयाणेयभेय
सकयत्थइ कमकमलाइ ताइ
णयणाइं ताइं दिट्ठो सि जेहिं
ते धण्ण कण्ण जे पइं सुणति

तिउणियससिसमसेयायवत्तु ।
चउसट्ठिचमरविज्जिमाणु ।
णं णेसरु णवपंकयसरेण । 5
णं वाइएण रससिद्धिलाहु ।
णं हंसं माणसु जणियसोक्खु ।
पारद्धु थुणहुं चकाहिवेण ।
जय सुइसवोहियभव्वजीव ।
जय णग्ग णिरंजण णिरुवमेय । 10
तुह तित्थु पसत्थु गयाइं जाइं ।
सो कहु जेण गायउ सरेहिं ।
ते कर जे तुहं पेसणु करति ।

७ MBP °तुहु ८ MP भरहु णराहिउ, B भरहणराहिउ

7 १ MBP °सरण असुहहरण, KT °सरणमसुहहरण २ B °विलित्त° ३ BK °ललिय°

४ M तुव

12 b दरियारि° दसा शतव 16 a °णाय° नाद 18 वेयालिय° भट्टचारणादिका

7 1 असुहहरणं अशुमनाशकम् 2 °विणित्त° विनिर्गत 3 b तिउणिय° त्रिगुणित° 4 a पर
लोमी° इन्द्राणी 5 b णेसरु सूर्य 6 a वारिवाहु मेघ, b वाइएण रसायनकारकेण 8 a दिक्काहिइ
लोफपाला 9 b सुइ° भूतिरागम 11 b तित्थु समवसरण निष्कमणादिस्थानं वा

जो कामधेणु सेविउ सुधामु
दुद्धरवयभारधुरगु धरिवि
णित्थरिवि पराइउ णाणतीरु
जें लंघिउ भवदुर्पहु दुलंघु
तहु वसहहु कयपणिवाँउ भाउ

जें तोडिवि घल्लिउ मोहदामु ।
अपवत्तियतित्थवहेण चरिवि ।
वीसमिउ असोयहु मूलि धीरु ।
जो घवलु धवैलवुंदहु महग्घु । 10
णियणिल्लहि णिसण्णउ भरहराउ ।

घत्ता—कयपंजलियरु पणमंतसिरु मत्तिहरिसवियसियवयणु ॥
संसारदुक्खणिव्वेइयउ जोर्यवि मिलियउ भव्वयणु ॥ ८ ॥

9

दुवई—ता णिग्गतधीरदिव्वल्लुणितोसियफणिणरामरो ।
जीवाजीवणामकयभेयइं तच्चइं कहइ जिणवरो ॥ १ ॥

सभैवाभव जीव दुमेय होंति
चर्डरासीजोणिहिं परिभमति
वियलिंदिय सयलिंदिय अणेय
आहारसरीरिंदियमणाहं
जं कारणु णिव्वत्तणसमत्थु
तं छव्विहु परमेसैं पउत्तु
जिह णारपसु तिह स्रवरसेसु
परमैं तितीस सायरसमाइं
पइंदिपसु चत्तारि होंति
ता जाम असाण्णउ पंचकरणु

ते सभव सकम्मैं परिणमंति ।
अण्णण्णदेहरापं रमति ।
एकिंदिय भासिय पंचभेय । 5
आणामासापरमाणुयाहं ।
तं पज्जत्ति त्ति भणंति पत्थु ।
अहमेण ठाइ अंतोमुहुत्तु ।
दसैंवरिससहासइं वसइ तेसु ।
मणुपसु तिणिण पलिओचमाइं । 10
वियलिंदिपसु पंच जि कहंति ।
सण्णउ पज्जत्तील्लक्खणु ।

६ MB ° दुप्पड ७ M धवलवदहु, B धवलवदहु, P धवलविंदहु and gloss समूहस्य ८ MBPK
कयपणिवायभाउ ९ MB जाएवि

१ 9 १ B °तासिय° २ M भव वाभव ३ MBP परिणवति ४ MBP चडरासिलक्खजोणिहिं
भमति ५ BP दहवरिम°

8 ८ °दामु बन्धनम् 9 ८ अपवत्तियतित्थवहेण अवसर्पिणीचतुर्थकाले केनाप्यप्रवर्तिततीर्थमागेण
11 a °दुप्पहु दुर्मार्गे 14 जोयवि दृष्टा

9. 11 a चत्तारि आहारसरीरेन्द्रियोच्छ्वासनिश्वासरक्षण पर्याप्तय

यपहि जे पञ्चपंति जेय

ते जति अपञ्चता अजेय ।

पञ्चपंतहु अनाह बाबालु

जागि सखहु मिष्णमुहुतु कामु ।

यत्ता—मोपकिर तिरिचहु माणबहु सुरजापहु बिईधियड ॥

15

आहारपंगु कामु बि गुमिहि कम्मु ठेठ सयधई बि धियड ॥ १ ॥

10

हुवाई—तिरिय हवति हुविह तस धावर धावर पंचमेयवा ॥

हुवाई भाठ तेय बाळ बि य बहुविह हरिचकायवा ॥ १ ॥

मसुरिय कुस्तक सूर्यकछाव

परिधाविरधयसंछाव माव ।

तोरनतकवेहपगिरिपकेसु

सुखरवसुसंजामहिपकेसु ।

जाबाविहसोपरि सरिखरेसु

पण्णारख निजमयमयकेसु ।

5

अबरेसु बि बहुकेतंतरेसु

वर्मतपरिदुपणहवकेसु ।

असरसरसतोषामयसु

एषाव कमेय बि होह वसु ।

अरनकिन न मिळार बालुयाह

सखी सिमिये जागि वहु केह ।

हुविह बि मट्टिय किर पंचवज्ज

अह होह होह संकिन्ज बाळ ।

यत्ता—कसिंयाकव हरिय सुपीबकिर पंदुर अवर बि घुसरिब ॥

10

पेही महिकामहु मठय मदि पंचवज्ज मई बजारिय ॥ १ ॥

11

हुवाई—कैचन तंडय तंव मणि हव्य अरपुहई पवासिया ।

बाकमिखोरचारकवमहुसम अकझाई बि मासिया ॥ १ ॥

१ MBP वज्जतु अमर हव कवसु ४ MBP मिडमिड ६ MBP दिव

10 १ K पुहई १ MBP चार १ MBP निजमयमयकेसु. ४ MB सिमिय; P कसिंय

५ MBP कसिंयाक १ P महिकामहु बीनहु मठय मदी

11 १ MBP ठंडय

14 ३ मिष्णमुहुतु कामुहुई 15 मोपकिर मोपकिरहु

10 ४ तीरन इरापकीरन; ३ वज्जतु अमरहवकेसु अरपुमिड. ३ ३ वंरत मोकला.

॥ ३ सखी वसु ३ संकिन्ज बाळ.

दूरदु दरिसावियधूममलिणु
 उकलि मंडलि गुजाणिणाउ
 गुच्छेसु गुम्भवल्लीतणेसु
 सुँपसिद्धु वणासइकाउ एसु
 पजत्तेयर सुहुमेयर वि
 साहारणाहं साहारणाहं
 पत्तेयहुं पत्तेयइ गंयाहं
 धारहसहाससंवच्छराहुं
 आउहि परमाउसु सत्त झुणइ
 तइयइसहासइ गंधवाहु
 परमेण जि अइअवरेण उचु
 तुंदाहि कुक्किर किमि खुब्भ संख
 तीइदियं गोभिपिपीलियाइ

असणी तडि रावे मणि जोई जलणु ।
 दिसँविदिसाभेणं मिण्णु वाउ ।
 पव्वेसु रक्खसाहाघणेसु । 5
 उप्पज्जइ जई घोसइ जईसु ।
 दुमसाहारण पत्तेय के वि ।
 आणापाणइं आहारणाइं ।
 छिंदणभिदणणिहण गयाइ ।
 सुहुमाहु दह जि दह दो खराहुं । 10
 अहरत्तइं चिधिहि तिणिण भणइ ।
 दहसहसाइं जि वणसइसमूहु ।
 सव्वह जीविउ अंतोमुहुत्तु ।
 वीइदियं मइ भासिय असख ।
 चउरिंदिय मच्छियमहुयराइं । 15

घत्ता—परिवाडिण किं पि णाणभवणु एयह जुत्तिइ सावडइ ।

रसु गंधु णयणु फासहु उवरि एक्केकउ इंदिउ चडइ ॥ ११ ॥

12

दुवई—पज्जत्तीउ पंच कमसंठिय छह सत्तहु प्राणया ।

तेसिं हाँति एम पभणति महामुणि चिमलणाणया ॥ १ ॥

पच्चिदिय सणिण असाणिण दोणिण

मणवज्जिय जे ते धुवु असाणिण ।

१ MB °मणिजाइ २ MBP दिमि° ४ M दिण्णु, P भिण्णवाउ, ५ M सुवासिद्ध°, BP सुपसिद्ध°
 ६ M जिइ, P जिउ ७ MBPT पत्तेयगयाइ ८ MBP णिहणइ ९ M रुदाहि सुक्किर, रुंदाहि कुक्किर,
 T रुदाहि गण्डपद १० MBM वेहदिय ११ MBP तेइदिय

12 १ M मणि

11 4 a °गुजाणिणाउ घोपशब्दयुक्त 6 b जइ जगति 9 b णिहण विनाशम् 10 b दह जि-
 दह दो द्वाविंशतिसहस्राणि, 11 a आउ हि अपाम्, b चिधि हि अग्ने 12 a तइयइसहासइ ग्रीणि
 धर्यसहस्राणि, 13 a अइअवरेण अतिजघन्येन 14 a रुदाहि गण्डपद 16 णाणभवणु शानाश्रयम्,
 सावडइ सपद्यते

सिक्कासाचाई ज अति पाव
 यमु जव त्रि समाधिच पैव ताई
 छहि पञ्चासिहि पञ्चासपहि
 मज्जपयज्जपयउसमाचपहि
 वृद्धि मि क्षिपति सन्धिय तिरिकम्
 कळयर छसाह पैवपपार
 जेहपर समुजा कुंडवियउपकळ
 यळपर कळपय कळपिह जमेव
 कसपय महोरप अजपराह
 मुपसिपय त्रि वनजाविय समेव

अज्जावगूहैवमूहमाच ।
 वझरउ त्रिभिनु मज्जपियपहि । 8
 संपासपज्जपयमसापपहि ।
 माज्जापौजाउ अमाचपहि ।
 अज्जमि जाजाविह दुभिरिपय ।
 कळपय मयपेहउर सुसुवार ।
 अज्जेह कम्ममयज्जेमपकळ । 10
 पळसुर पुळसुर करिसुजहपाय ।
 हिं ताई गळु वि कळसु होर ।
 चरुहुगणाचावामयेव ।

पता—अळयर जळेमु कळ तळपिरिसु पळपर गामपुरेसु वळ ॥

वीवोपहिमेहकम्मसि तहि पैहमु वीउ मासंति जेजे ॥ ११ ॥ 16

13

हुचई—जोपयकळमु अज्ज वहुपविहळ पुहु गयपविजमेप्या ।

अरिय मसंकाहीकवरसायरवळपापारधारया ॥ १ ॥

जंहीवो पाईसंडो
 मारो वीरो प्रथमहुजमि
 कुंडससण्णो खंडो कळगो

पुनवरवरीवो हूमंडो ।
 जंहीसा कळबोदकपौमो ।
 मुळगवरो मवरो वि हु कुचपो । 5

१ MB गूह कळमुजम १ MB गूह कळमुजम but corrects it to गूह कळमुजम १ MBP "गलाउ
 ४ MBP अज्जापहि ५ M अहव १ M पड १ HP कळ ७ MBP पुकळ १ M वरीवर
 १ MBP तिर १ MBP करिसु ११ MBP पळसु १२ M जिने K जिने but corrects
 it to कळ

13 १ MBP तळ १ P जाहलजी १ MBP त्रिपयरी ४ MBP कळ ५ MBP कळ

12. ४ ३ अज्जापहि—१ निपयो कळ कळपयउसमाच पैव गूह अज्जापय तळपिह उता मज्जपय
 पैव १ ३ समपिह कळपय १ ३ पळसुपहि पिरिपि १ ३ कळर कळपयमिपि

13 १ मज्जपयज्जपयउसमाचपहि ४ ३ अज्जमि जाजाविह १ ३ कळपय मयपेहउर १ ३ कळसु होर १ ३ चरुहुगणाचावामयेव ।

कॉचो एव दीवसमुदा	दूणर्पिह दावियणियमुदां ।	
एणसुं तिरियाणं ठाणं	जलयरथलयरणहयरयाणं ।	
वियलिदियपर्चिदिययाणं	पर्णिह वोच्छं कायपमाणं ।	
साहियजोयणसहसुच्छेहं	पउम दीसइ वड्डियदेहं ।	
अवि य ठुकरणो को वि वरिट्ठो	यारहजोयणदीहो दिट्ठो ।	10
होइ तिकोसो तिकरणवंतो	चउकराणिहो जोयणमेत्तो ।	

यत्ता—लवणणवि कालणवि विउले हांति सयंभूरमणि हस ॥

सेसेसु णत्थि जिणभासियउ सेणिय णउ चुक्कइ अवस ॥ १३ ॥

14

दुवई—जाणसु जोयणाहं अट्टारह लवणसमुहमच्छया ।

णव वरसरीमुहेसु छत्तीस जि कालेण दिसच्छया ॥ १ ॥

अवसाणमहणवि जे वंहति	ते जोयण पचसयाइ हांति ।	
गयणगणचरहं थलंभचरह	समुच्छिमगम्भसरीरघरहं ।	
कइवयचावइ काहं मि गणंति	तणुमाणु पम मुणिवर भणंति ।	5
कासु वि संमुच्छिमजलयरासु	पजत्तिल्लहु जोयणसहासु ।	
जलगम्भजम्मि मवियाइ ताहं	पंचं जि जोयणहं सयाहयाइ ।	
पयह तीहं मि समुच्छिमाह	परिवज्जियपजत्तीकमाहं ।	
अक्खिउ जिणेण दीसइ विअत्थि	परमेणोगाहण णरविहत्थि ।	
थलगम्भयदेहि तिगाउयाइ	परमेण माणमावहु गयाइ ।	10
सुहुमहु वायरहु मि धुहुं पवण्णु	अगुलभसंखभायउ जहण्णु ।	

६ MBP दूण पि हु ७ MB add after this लवणोमहि कालोवहि सामे, सेस समुद (B सो समुद वि) वि दीवहु णामे

14 १ M णवर सरी°, BP णव जि सरी° २ BP वसति ३ P काहिं ४ MBP पच वि ५ M विहत्थि, BP वियत्थि ६ MPT विअत्थि ७ MB धुउ, P धुव°, K धुउ

6 दूण पि हु द्विगुणपृथक्, दा वि य णि य मु हा दर्शितनिजाकारा 10 a ठुकरणो को वि शंख 11 a ति करणवतो खज्जरक, b चउकरणिहो भ्रमर

14 1 सरीमुहेसु गप्पादीना समुद्रप्रवेशस्थानेषु 2 दिसच्छया विशां प्रच्छादकाः 5 a काहमि कैपाचित्, 7 b सयाहयाइ शतगुणितानि, 9 a विअत्थि विगतास्थि 10 a तिगाउयाइ तिस्रो गव्यूतय ।

पत्ता—अगि सुदुमधिगोयसमुष्मयहं भवि यत्तमसहं न वि रहित ॥

विदिदु कुसुमयंत पदुषा उंतिमु जलवराहं कहित ॥ १४ ॥

इय महापुण्य निरुद्धिमहापुरिसगुणार्ककारे महाकरपुष्करतटविरहप

महामध्यमरहाणुमणिय महाकष्ये तिरिक्तोपादाने नाम

वसमो परिच्छेदो समसौ ॥ १० ॥

॥ सधि ॥ १ ॥

८ M विदिदु कुसुमयंत १ M वलवराहं १ MBP तिरिक्तोपादाने.

12 वसमसहं न + वलवराहं वलवराहं ॥ विदिदु वलवराहं

XI

पुणु इंदियभेउ वम्महपसगणिवारण ॥

भासियउ असेसु लोयहु रिसहभडारण ॥ धुवक ॥

1

जाणइ सणिउ जो पज्जसउ	पुट्टउ सुणइ महु गयसोत्तिउ ।	
णिहोयैणतिउ पुट्टपविट्टउ	रुवुं णियच्छइ अप्पमिट्टउ ।	
फासु गंधु रसु णवहि जि भावइ	धारइजोयणेहिं सुइ पावइ ।	5
सैत्तेतालसहस्सइं दिट्ठिइं	अवर वि दोण्णिं सयइं तेसट्टइ ।	
चार्म्मियदियहु विसउ वप्पणाणउ	जेहउ केवलणाणं जाणउ ।	
गंधगहणु अंइवत्तसमाणउ	सवणु वि जवणालीसंठाणउ ।	
दिट्ठिइं पडिम णिपज्ज मसूरी	अक्खिय जीहं सुक्कप्पायारी ।	
संहरियतसंदेहेसु पयासउ	फासु अणेयरूवविण्णायउ ।	10

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza —

सूर्यात्तेज गभीरिमा जलनिधे स्थैर्यं सुराट्रेर्विधो
सौम्यत्व कुसुमायुधाद्य सुभग त्याग यत्ने सन्नमात् ।
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धाम्ना सत्ये साप्रत
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशस खण्डकवेर्वल्लभ ॥

M reads विधौ for विधौ, MB read कुसुमायुधात्सुभगता for कुसुमायुधाद्य सुभग, and खण्डकवेर्वल्लभ for खण्डकवेर्वल्लभ

GK do not give it

1 १ MP गयसुत्तउ, B गयसोत्तउ २ MB णिलोयणु ३ B तित्तपुट्ट ४ MBP रुउ ५ MBP सत्तेवालीसहसइ ६ MBP विणि ७ MBP अइमुत्त ८ MBP दिट्ठिहि ९ M जीय १० BT सुहरिय ११ MB तसदेवेसु

1 B अ सणिउ समनस्क, b पुट्टउ स्पृष्ट, गयसोत्तिउ श्रोत्रगत 4 a णिलोयणतिउ नेप विना श्रीणि स्पर्शनरसनप्राणानि, पुट्टपविट्टउ नासिकादौ प्रविष्टमतिमुक्तकायाकारप्राणेन्द्रियप्रदेशे स्पृष्ट गन्धादिक जानाति, b अप्प रि मट्टउ अस्पृष्टम् 5 a णवहिं जि भावइ नवयोजनात् स्पर्श गन्ध रस जानाति 6 a दिट्ठिइं चक्षुर्दर्शनस्येष्टानि 8 a अंइ वत्तसमाणउ अतिमुक्तपुष्पाकारम्, b जवणालीसंठाणउ यवकणसम् नालिकासदृशम् 10 a °हरियं वनस्पतिकाय

समर्पयन्तु तांस्तु सुरसत्पुङ्गव
मनुपतिरिक्ताह ॥ यि पञ्चसर्प
सुखं वाचयन्तु जगदीश
परिधिं वाचयन्तु सुसुपुङ्गव-
विपदिषि यि विपदोन्मोह
पाप्मनोन्मोह देवसाधनं
सर्वपुङ्गव जगत्पुङ्गव
मन्थरामासह सप्तहरवचनं

हुं ह वि पारयमन्तु अहम्पुङ्गव ।
मोयमूमिषियमन्तु पञ्चमर्त ।
जम्मासिह तिरिक्तावरोह ।
ओमिहि हौति सकम्मासमुन्मह ।
संपुङ्गव विपद हौति गम्मुम्माह । 15
मौसा गम्मापिवासे सप्तवर्ष ।
ताई विहि मि तिहिदा पुङ्गु सेसह ।
संसावत्तओमि योरवचनं ।

पञ्चा—तर्हि जीव ज्ञेयं यत् कर्तव्यं संपुङ्गव तनु ॥

विषकम्मावसेन हौति मरेपिपु जंति पुङ्गु ॥ १ ॥

20

2

हौति जगत् कृन्मुम्मावओमिहि
जगत्पि ओमिहि उहिपवचहि
होविबहुपञ्च जिपंति सहरिसह
ताईविपद मि पापमिमीसह
जगत्पिबहु जगत् जम्मासिह
मन्थरु पुष्पकोहि उचहृष्टी
वासाह वायाज्जिसहासाह
पविचहि ताई हुसचहि मन्थर

कसव पम जहि सुहओमिहि ।
पापजगत्पवचसावचहि ।
मई विष्णापञ्च वाचवचिसह ।
पञ्चजगत्पास जि किं विवचह ।
विष्णुवहि पञ्चविपद मि भासिह । 5
कम्मापिमूवचं मि विहि ।
जगत् जिपंति ज्ञापजीपसह ।
पञ्चिवाचमई तिहि परिगविचह । 1

११ MB "जगत्" १२ MBP "जि प व चह" १३ K reads this line before line 12 १४ MBP वाचवचिसह १५ MBP पापमिमीसह

2. १ P "जगत्" २ MBP "जगत्" ३ P "जीवता" ४ M "जोमन्थर"

11 क अहम्पुङ्गव जगत्पुङ्गवसि 12 क जीवमूमि विषकम्मावचयतई जगत्पुङ्गवजगत्पुङ्गव मोयमूमिषियमं जगत्पुङ्गवजगत्पुङ्गव विष्णुमूमिषियमं जगत्पुङ्गवजगत्पुङ्गव 14 क-क तुल्यपुङ्गवो मि हि सहरिसह 16 क पापमिमीसह ३ मौसा उहिपवचिसह 17 क जीवपुङ्गव देवसाधनं देवसाधनं जगत्पुङ्गव जगत्पुङ्गव देवसाधनं देवसाधनं देवसाधनं ३ ताई विहि मि देवसाधनं ३ तिहिदा जीवा जगत्पुङ्गव देवसाधनं देवसाधनं देवसाधनं

2. ३ क-क विपदोन्मोह ४ पापमिमीसह उहिपवचिसह ६ क-क जगत्पुङ्गव जगत्पुङ्गव ७ क-क जगत्पुङ्गव जगत्पुङ्गव जगत्पुङ्गव

येत्तावेकमइ कर्हि मि तिरिक्कहं
मायाविय कुपत्तदाणेण वि

ण्हउ उत्तमाउ पंचक्कहं ।
एए हॉति अट्टमाणेण वि ।

10

घत्ता—इय करिय तिरिक्क ण्वहिं माणव वज्जरमि ॥
पण्णारह तीस णवइ छ भेय वि संभरमि ॥ २ ॥

3

तिरियलेंथिमज्झत्थु मुहासिउ
जोयणाह णरयेत्तु रघण्णउ
जंजूदीउ सच्चदीयेसरु
छावीसाइ पंच अहिययरइ
दाहिणभरहु तेत्थु वित्थारें
उत्तरदाहिणाह वेयड्डह
पचवीस उच्छेहु समासिउ
सहु गायण्णहु वित्थरु साहिउ
पचुत्तरसण्ण सहुं लक्खिय
अर्घरहिरण्णवतु तम्माणउ
होइ महाहिमवहु रुंदत्तणु
दोणिण ददोत्तराह धुंयु सिट्ठउ

मणुउत्तरगिरिवलयविहसिउ ।
पणयालीसलक्खवित्थिण्णउ ।
पंहु लम्बु जोयणपरिवित्थरु ।
जोयणसयइ विहियणरणयरइ ।
पंरावउ भणु तेणायांरें । 5
पण्णास जि पिहुल्लु गुणह्णह ।
ण्हु सहसु हिमवतहु भासिउ ।
सउ तुंगात्तें सिहुरि वि र्साहिउ ।
दोणिण सहस हिमंवरइहु अक्खिय ।
साहिउ दोहिं मि पंहु पमाणउ । 10
चउसहासअहियउ उद्धत्तणु ।
हंमियगिरिदि वि तेत्तिउ दिट्ठउ ।

घत्ता—येत्तहुं गुरु खेत्तु गिरि गरुयारउ गिरिवरहो ॥

मा भति करेज्ज घयणु ण चुक्कइ जिणवरहो ॥ ३ ॥

3 १ MBP तिरियलेंठु २ MBP एकलक्खु जोयणह पवित्थरु ३ MBP छावीसाइ ४ MBP
अदरावउ ५ MB तेणुपयारें, P तेण पयारें ६ MB पयासिउ, T पयासिउ ७ MB हइमवयहु ८ MBP
अवर ९ MBP एए १० MBP धुउ ११ MBP रुम्मिहि दुयिहु वि १२ P खेत्तहु चउयणु खेत्तु गिरि
वि चउयणु गिरिवरहो, T seems to have the same reading येत्तेत्यादि- क्षेत्रादुह गुण (?)
क्षेत्र गिरिगिरिधत्तुण

12 ण वइ छ पणवति, तथाहि- लवणोदकस्योभयोस्तटयोश्चतुर्विंशतिथत्तुर्विंशतिरन्तरद्वीपास्तथा कालोदस्यापि

3 4 a अहिययरइ अधिकतराणि, 5 b तेणायांरें तेन आकरेण 6 a वेयड्डह विजयार्थानाम्
8 a साहिउ साधिक, b साहिउ कथित 10 a तम्माणउ तत्प्रमाणम्, b दोहिंमि द्वयोरपि हैमवत-
हिरण्यवतो

4

अथस्यार् विरितिसहासार्
अथिर्न किं पि होति हरिवरिसा
अथस्यार् सोमसहासार्
साधियार् विरितिरु पिहस्य
नीधिरु तं वि न कोर विवाय
पदेयद ठेचीमसहासार्
अथस्यार् सवायसीसार्
अथस्यार् सवायसीसार्

पथवीथ ओपयार् पयासार् ।
तं वि माणु रेमपयु सहासिह ।
सां वि अथहि थौरवार् ।
सायस्यार् मथिर्न मुंयस्य ।
विर्न पि विरितिर्न वरिम ईर ।
अथस्यार् अथस्यार्मीसार् ।
अथु वि मथु पयायसहासार् ।
एत माणु अथ अथसि विरिति ।

5

पथा—अथ येसार् पथ मीयपुन्यवैतथिरवार् ।

अथ अथवीथि तिथि वि अथपुन्यवैतथिरवार् । ४४

10

5

पामु पाम विमर्षसरोयद
पथ सहासि वीहस्य मुय
पथ अथिर्न भागमि वेति
अथ महाविमर्षु वरिति
तिथिर्न पि गुण्येन वरिति
तिथिर्न वि विरितिसहासार्

पथस्यार् वामु पथिर्न ।
अथोपयार् गहीरिम पुय ।
विहिरिमार्पुविरिति वेति ।
ओपयार् विरितिर्न मथ ।
अथ महापुमि वि मर् अथिर्न ।
ओर महापुमिपयार् विरिति ।

5

4. १ MBP ठेचि वि वि २ MB वपयु. ३ MBP वपयु ४ MBP विरिति ५ MBP वीहस्य ६ BP ठेचि

5. १ MBP वीहस्य, २ MBP विमर्षि. ३ MBP वरिति ४ MBP ओपयार् ५ MBP तिथिर्न वि वर; P तिथिर्न वि वर. ६ MBP महापुमिपयार्

4. 1. १ विरिति सहासार् अथस्यार् 2. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 3. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 4. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 5. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 6. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 7. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 8. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 9. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 10. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार्

5. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 2. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 3. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 4. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 5. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 6. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 7. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 8. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 9. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार् 10. १ अथिर्न वीहस्यार् वीहस्यार्

णिद्धणीलणयरायणिप्रिट्टउ

सोहइ रम्मरम्मिकयठाणं

नेवदु जि केसरिसरु दिट्टउ ।

पुंडरीउ तह अद्धपमाणं ।

घत्ता—मिगिहिरिदिहिकंतिफिंसिलच्छिणामालियउ ॥

देवीउ घसति सरवरि मुंफयकीलियउ ॥ ५ ॥

10

6

पोममहापोमहं तिगिंछहं

जलपूरियगिरिकंदरदरियउ

गगा सिंधु रोहि भंगाली

हंरि हरिकंत सीय सीओयय

फैणयकूल रप्पयकूलाली

पयउ भणियउ चोहइ सरियउ

अद्वाइज्जहं पच जि मदर

केसरिदोपुडरियहं सच्छहं ।

मुणसु महाणईउ णीसरियउ ।

रोहियास मयग्गइ लीली ।

णारी णरकंता वि मओयय ।

रत्ता रत्तोया वि भ्रमाली ।

घयगुणियउ सत्तरि चित्थरियउ ।

यहुवेयइरायरकुलसुंदर ।

5

घत्ता—चप्पारगिरिंद कुडलरुजगिरि सुकारगिरि ॥

येत्तंतहि अत्थि गहुविहसिदरुद्धरियसिरि ॥ ६ ॥

7

जंजूदीवदु वाहिरि धफहं

पदम सुसंकिण्णहं पुणु रदहं

कयतिहेयगुणं संजुत्तइ

ठाणहं जाहं सहावासुफहं ।

ताहं होंनि मल्लयपडिछंदइ ।

कम्मभोयभावेण विहत्तइ ।

५ P महापुंडरीउ तह अद्ध. c MK °दिहिकित्तिपुदिलच्छि° १ M गृहकयकीलउ, BP गृहकयकीलियउ

6 १ MBP तिगिंछह २ B omits this line ३ B omits this line ४ P कसयकूल.

५ MP चउदह

7 १ M सल्लइणडि° २ B कयतिहेण गुणं, P कयतिभेयगुणं

7 a °णयराय° नगराजः पर्वत

6 ३ a भगाली कलोलयुका ७ खेत्तंहि क्षेत्राभ्यन्तरेण

7 1 b ठाणइ अन्तर्द्वीपा, सहवासुफह अपरित्यक्तस्वरूपाणि 2 b मल्लयपडिछंदइ शरावा
काराणि B a °तिहेय° उत्तममध्यमजभन्था, अधोमध्योर्ध्वविस्तारविभिन्नानि वा, ३ कम्मभोयभावेण कर्म
भूमिभाव स्वचेष्टया फलाहारादिग्रहण तेन

सुखसमुद्रि मृदुवासीसर्
बहुबोध्यसपमावबिसेसर्
पीपुसिर्षं बो बो ररररर्षं
विगन्वाहरवर्षं विषेकक
रम्भं सोमर्षं विषयविह्व

काष्ठोपर्य ठेसिपर्षं वि देसर्षं ।
मैसि कुम्भोवमूमिमाषासर्षं ।
महसहावर्षं मन्वहृगसर्षं ।
कैवर्षं घषवर्षं हरिपर्षं सवर्षं ।
विर्षवाहोर्षं विष्वागमि सिह्वर्षं ।

8

यथा—पद्मो न्यधारि पुंनैभारि तर्षि सिमघर ॥

पुष्पाविसु होति कसरविधि विष्मास वर ॥ ७ ॥

10

8

सुखिककण्य कण्यपावरण वि
हरिमुह करिमुह मससामकमुह
सहृदयक मसविसायक
सयल वि कण्य पंकममोषक
भङ्गुरकवर्षं रवण्य
पुष्प वि पैकिमोवमु जीविप्यु
हरिहिमकोहिवपीवकवण्य
हारपीरककण्यकुंडकवर
महर्षंवि बीजापकवर्षं
मामवेमोत्यनपमवर्षंवि
पर्यंवि कण्यकवर्षंवि मरि कवर्षं
यहममविर्षंमुसिमसुहृषंवि

कैवकण्य ससकण्य कुम्भपुव वि ।
कार्षसयमुह कवर्षं कवर्षं ।
सत्तारुहकवर्षंरसमायक ।
पद्मोवय विरिगिहिवमोषक ।
कण्यवर्षं विषेहो विविष्वा ।
होति मसजयकवाधि मेप्यिपु ।
पीससुमोवमूमिविप्यु ।
विष्वावय विरवकवर्षंसेह ।
विविहविहृषकवर्षंमुहमंवि ।
मंवरुविहृषुममावर्षंवि ।
मोर्ष विरवक मणुपवि मुहवर्षं ।
कविपसहावर्षं विद कविमंवि ।

8

10

१ MBP विह्वं ४ MBP विष्वागमि ५ MBP विह्वं १ MBP पुष्पाविसु

8 १ P कवर्षं कवर्षं २ MPK विविष्वा ३ MBP कण्य ४ P कवर्षं ५ MBP
मोवकवर्षं ६ MBP पवि ७ MBP रवण्य B माव १ P पुव १ BBP मुव

6 ६ महसहावर्षं एवममवर्षंविपुषावि ७ ६ कवर्षं रवण्यवि

8 8 ॥ सत्तारुहकवर्षंरसमायक कवर्षंरसमायककवर्षंरसमायक ६ ६ पवीकवर्षंरसमायक

9 ६ महर्षंवि मवर्षं

पृष्ठा नृ निष्पिण पत्त अविष्पिण्णु

ह्येति वाच्यमात्रेणैव निष्पन्नम् ।

गत्ता—नीमैयि पट्टा भोगभूमि धुअ मणुय जिह ॥

महं पतन्त्यमेव धेनुय द्वापयत ह्यनि तित ॥ ८ ॥

16

9

दृष्टपचयितः कामसूमाणुस
 मेच्छ नीज एण पागम पय्ये
 इद्धिअणिद्धिंत अज्जणर
 पागुपय गल्फय महापल
 होति अणिद्धियत पाणापिह
 जिणु अहमेण जियइ पात्तति
 तद्दु अद्धिययग्ग मीरे पउत्तउ
 पुण्यह नउगामीत्तप्पेयात्
 पुण्यकोटिम्मामण्णु वि धिग्गक
 पक्कनु मासु अयणइं सयच्छर
 णर पिसेट्ठद्वियगफउग्गम
 गप्पेसु वि गन्ति तणु लेप्पिणु
 उत्तमेण धर्णुत्तयद्द णितीद्दा
 सत्तहत्थ चउद्धत्थ तिहत्थ पि
 तग्गहो वि होति लह्दययरा

अज्ज मेच्छ इच्छानाणियस्स ।
 भाग्यार्हाय निरुह निरय्य ।
 इद्विचत जिणयर सधेय्य ।
 चारण विज्जाहार उज्जलकूल ।
 लिधिंस्संभागायत्तण सुह ।
 भेहिउ सारु पाग्ग्यैइ जीयइ हरि ।
 सनसगार नधि निक्कमुचउ ।
 परमाउमु जिणहरिंस्संगायइ ।
 जीयइ कम्मभूमिजायउ जरु ।
 पे यि जियति कइयय धाम्म ।
 ते सज्जा मग्गि भमुच्छिउम ।
 अय्य वि कइयय विरयइ जिणपिणु ।
 पच्च संधायइ सयइ परंहा ।
 निणिट्ठेण पउत्त सुद्धय वि ।
 अइराहस्स धाम्मण सुज्जयग ।

2)

10

15

घत्ता—मणुष्यं न क्षीति सत्तममणिर्गय विसम ॥

जिह्वं निहते उ घाटकायक्यभास्वतम् ॥ ९ ॥

११ MBP मरोपिणु. १२ P मीत नि इह उत १३ MBP अद्य.

9 १ P बद्धर, but it records a p गव्वर. २ M भद्द ३ M गरिगद् ४ MBP °श्र
एवं ५ B निस्स°; P विमट् ६ M भुण्णवद् ७ MB गमाद् सयाद्, P सयाद् गमाद्
८ MB गाराम्

9 2 b निरुह परस्परवितादादिता निर्दिष्टाः . 7 b निरुह सप्त निमित्तम् . 8 a एवम् एवम्
11 a निरुहद्वयमकटगम निरुह प्रसोदादिद्वयं तस्यानुपपत्ता 18 a निरुह सप्त निमित्तम् .
प्रदीपा 15 b अद्वयस्य अतिरूपः

होति के कि वृक्षहमिद्रावस
 र्वरूपपरिवायय बमामर
 जंति के तिरिक्कय कि ते मित्रि र्वैयर
 सावयवयहोव सोवहम
 तिसिक्कय किणु पुणु तहु कप्पि
 चणुमिनुतजमसिसमभित्त
 मित्रिगेव होति वयमरपर
 भा सर्म्यत्पसिद्धि विम्वंयई
 वारड मरिपि य वारड जाय
 ममर य वरपहु वारड सभाहु
 होइ तिरिक्कय कि वरपहगामिड
 पमियाडई तिरिक्कय तिरिक्कय

जौहसयबमबर्णतर्हि तावस ।
 माजीव वि सहासापश्य मुर ।
 पर सम्भत्तापहवत्पर ।
 सम्यु बहर मानुसु बुद्धविमल ।
 का वि न भुंज्य महमिद्वै छिदि ।
 संजमेन सुखे बरित्तै ।
 बभविष कष्टमिगेहज्जामर ।
 हार धुर सम्भत्तपत्तयई ।
 सुद वि न सुद मुजिजाहु विवेकर ।
 बकर सविहिबिईसियमम्यहु ।
 मिह विह मानद बुक्खापोमिद ।
 बविक्खद मययई मयपत्तय ।

यथा—तिरिहि पहरि ॥ होति मज्झि तिरिक्ख सोममज्झयहि ॥

पश्चिमोत्तमश्रीणि अग्रा कर्हति ईहंमुचरि । १० ।

संलाञ्छ के जीवाहारिय
संरिचब जंति पदम जीवाचमि
पुह्र बडत्थी जंति महोरैय

अण्योऽप्येव विचारिष्य मारिष ।
पश्चिन्ना सद्यः वेत्तुमिदं हृदयनि ।
पञ्चमिषदि केसरि मैत्रमारय ।

10 १ MBPT बन्धन १ MP बन्धन विनिर्देश त वि वि १ MBP बन्धन. १ MBP बन्धन
T बन्धनबन्धन १ MT बन्धनबन्धन

11. १ P नियन्त्रण लक्ष्य २ K प्रत्यक्ष ३ P माहोदय. ४ MP नियन्त्रण B नियन्त्रण

[illegible]

महिलउ छैट्टहि वि हुरफमियहि
आयउ मघविहि लहर णरत्तणु
णिग्गउ अंजणाहि किर णिव्वुइ
सेलहि वंसहि घम्महि आइउ
णर तिरिया सलायपुरिसत्तणु
सव्वत्थ वि माणुसु उप्पज्जइ
राम उड्डगइ सोक्कइ सामिय

हॉति मणुय मेच्छ वि सत्तमियहि ।
को वि अरिट्टहि देसवयत्तणु । 5
को वि कहिं मि पावइ पंचमगइ ।
होइ को वि तित्थयरु मर्हाइउ ।
णउ लहति णिम्मलु जसफित्तणु ।
एम पउत्तइ सुत्तु पउजइ ।
केसव सव्व अहोगइगामिय । 10

घत्ता—पडिसत्तु कयंत णउ णारायण पीणकर ॥

णरयहु णिगिवि हॉति ण हलहर चकहर ॥ ११ ॥

12

तिहिं कायहिं णरत्तु ण विरुद्धउ
वायरपुहइ तोय पत्तेयहं
णउ लहति सुरणियर सतामस
अक्कमि णरयवात्तु भीसावणु
पढमासीयहिं सिट्ठुं सहासहिं
चउवीसहिं वीसहिं विहिं अट्ठहिं
एम सहससखाहिउ घणु भणु
आयामु वि असंखु संखेवें
रयणसक्करप्पह वालुयपह

तिरियत्तु वि जिणयुद्धं बुद्धउ ।
देवें चवेवि हॉति किर एयहं ।
पुण्णसिलोयत्तणु आजोइस ।
णाणाडुक्कलक्कपदरिसावणु ।
पुणु वचीसहिं अट्ठावीसहिं । 5
अट्ठेहिं णाणसहाउवइट्ठहिं ।
खरपंकयलक्खु जि मटत्तणुं ।
पुहइहिं पुहइहिं अक्खिउ देवें ।
पकप्पह धूमप्पह तमपह ।

५ MBP छट्टिहि ६ MP हुरफिमियहि ७ K देसवइत्तणु, P सव्वइवइत्तणु ८ P महावउ ९ K माणउ सु
12 १ B पत्तेय वि २ M देवत्तणु वि होइ किर एयहु, B होति समागय देवत्तहु कि वि, P
देवत्तणु ण होइ किर एयह ३ MBPT पुण्णसलायत्तणु ४ B सिट्ठु समासहिं ५ MB केवलणाणं, M
records a p अट्ठहिं for केवल ६ B omits this foot, P reads it after 8 b, MBP add
after this मोलह चोरासी सहस जि शुणु, एक्केउ जि लक्खु रुंदत्तणु ८ MBP रयणप्पह सपर वालुप्पह

11 4 a हुरफ मियहि दु खव्याप्तायाम् 5 a मघविहि पछपा, b अरिट्टहि पयम्या
6 a अजणाहि चतुर्थ्या 7 a सेलहि तृतीयाया, वसहि द्वितीयाया, घम्महि प्रथमस्या

12 1 a तिहिं कायहिं पृथिव्यव्वनस्पतिभि 2 a पत्तेयह प्रलेखनस्पतिकायानाम् 8 b पुण्ण
सिलोयत्तणु पुण्यलोकत्व शलाकापुरुषत्वं च 6 a विहिं अट्ठहिं पोढशभि 7 a घणु पिण्ड, b खरपंकय
लक्खु खरभागे पोढश सहस्राणि पद्धभागे चत्तरासीतिसहस्राणि, मदत्तणु पिण्डत्वम्

अवर वि नतिमिह तमतमपह
पयः पयतमजामभिरुह

मिहपईमियवहुपारपह । 10
सप्त जरयभरणीः पतिरुह ।

पचा—पुहर्मु पिहार् हंति सहापमपंकरं ॥

पनमिमिरुहार् मयभियजपयभित्तिरुह ॥ १२ ॥

13

लीन पुनु वि पयबीन डि मकरं
रह पुनु तिमिह पनु पंखरं
मोररपहं तहि मायापहं
महिमपार् पतिममियपहं
माहबीनकंटाभिरुह
पनु सुकिन्हीनमेमापह
कंति रहु सहसति मुहं
हवर विहंयभापु तहि मेच्छं
कासिगाळपुंजमभिरुह
विरुपमीमभिरुह पैमुप्यह
जिह जिह ते मुवंति मयपहं
वाडाभीनपु मुहं मिमापह

पुनु पयपारह वाभियपुकरं ।
सकनु विमार् पंथ भेरिहपहं ।
इतिरुहिरुहिरुहिरुहिरुह ।
हेडुमुहमाभेरियपहं ।
हुपार्मार् हुपामतिमिरुहं । 5
पयज्जनि तिरिय मर भापुस ।
वेडमिह जिहपु हुंरुहं ।
अभिरुहार् मिमपहपहं ।
पपडिपहंरुहंरुहंरुहं ।
कथिहकैस परमारकककहं । 10
तिह तिह तं तं संदियपहं ।
महवा पाड किं किं किर बापह ।

पचा—हेडुमुह इति ते पवंति मयिपचकनं ॥

सर् अरुहं इति मयवि पतिहमंति रुहे ॥ १३ ॥

१ ॥ मकर १ MB मिवरं

13 १ P मिहार् १ MPT मरुहपह, B मरुहपहं १ M मरुहपह, BP मरुहपह, v B omits this foot ५ B omits this line. १ P "मरुह" ५ P मरुह मरुहं P के व १ MB मरुह

13 मिहार् मिहमार्

13. 2 के मरुहपह मरुहपह B के मरुहपह मरुहपह ५ के मरुहपह मरुहपह.
6 "मरुह" मरुहपह ॥ के मरुहपह मिहमरुह ५ के मरुहपह मरुह मिहमरुहपह.
9 कासिगाळ पुंजमभिरुह 10 के मरुहपह मरुहपह

14

णउ मज्जत्थु मिन्नु उवयारिउ
खेत्तसहाउ तेत्थु किं मण्णइ
सुहाणिइ तणु दुधेरु भूयलु
जं करेण लेंतहुं जि मरिजइ
सांदियकरचरणणणगत्तइ
फलइ घजमुट्ठि व्य कढेरैइ
मैहिहरकुहरदि विण्णुरियाणण
कुहिणिउ जलणजालपञ्जलियउ
णहाइ जहिं जि तहिं ईमियपिंडइ
विहिं तिहिं पचहिं पीडिणि धारियहु

जो जो दीसइ सो सो वहरिउ ।
जं सुयकेवणिससु धि ण वण्णइ ।
उणहु मीउ दुद्धरु चंडाणिलु ।
वइतरणीविसु विसु किं पिज्जइ ।
रुग्गइ गग्गसमाणइ पत्तइ । 5
पैणि पटति णिइलियमरिगइ ।
गंति पिउव्यणाइ पंचाणण ।
जहिं ययइ तहिं गल्लयणु मिलियउ ।
पूयगहिरकिमिभगियइ कौटंइ ।
णहायहु पूयद्रहहु पीमरियहु । 10

घत्ता—उफत्तिवि तासु दिज्जइ कत्ति णियाम्मणउ ॥

आयसवलयाइ सिहितोवियइ निहसणउ ॥ १४ ॥

15

पेच्छइ जहिं जि तहिं जि जमसासणु
भुंजइ जहिं जि तहिं जि दुग्गंधइ
आहरियइ पुग्गलइ अकामहु
णिसुणइ जहिं जि तहिं जि दुव्वयणइ
ज चप्पइ त तं विरसिल्लउ
ज अग्गायइ तं कुणिमगउ
उद्धंसासु अइसासु जलोयरु

यइमइ जहिं जि तहिं जि सुलामणु ।
णीरसाइ फगसाइ विग्गइ ।
असुहत्तेण जंति परिणामहु ।
फंसइ जहिं जि तहिं जि यरसयणइ ।
ज चितइ तं त मणसल्लउ । 5
णारैयगेत्ति णउ काइ मि चगउ ।
अच्छिक्कुच्छिसिरवियण महाजरु ।

14 १ P दुतर २ MBP जं ३ MBP कठोरइ ४ M वर, P उषरि ५ MBP मदिकुइरवरी
६ MBPT दुम्मिय ७ MBP कुट्ठइ ८ MBP किति ९ MBP तावियउ

15 १ P जहिं तहिं जि २ MBP कुणियगउ ३ MB णरयवेत्ति ४ MBP उद्धंसासु

14 8 a सुइ णिइ सुचीसदशम् 8 a कुहि णिउ मार्गा 9 a इमिय पिंडइ पीडितम् धरारति
11 कति चर्म, णियासणउ परिधानम् 12 सिहितावियइ अभिना तापितानि
15 7 b ०विशण वेदना

संमर्षति बुद्धियद्विषयोऽहम्

सम्पन्नं वादिह्यारम्भः ।

यथा—अप्युमील्यु कामु सोकनु य मम्मर किं पि वदि ।

सापरीरु बुधनु कार कहिम्भ राय तदि ॥ १५ ॥

10

16

हउं वापयणु पविमायणु
 यम मयंतु कपणु व कुण्ड
 दाववमिबहि पविमोरम्भ
 तुडु वावव विरमवि मरवारिउ
 विममहागिरिगेवपिउ
 पविउ यम गिउवि तुडु विमह
 वाविममरम्भहवि विमह
 हउ हउ यडु यम पवारिउ
 सुम्भर पारउ वारय गारवि

हउं मदिम्भ हौतउ मुहमायणु ।
 मावमिरे तुफउ संतप्य ।
 सुम्भमायु मा यम मविम्भ ।
 वरमदिमदिमकापमि मारिउ ।
 लीहं यम हउउ तुडु कुम्भ ।
 मदिमं वम वविम तुडु हउम्भ ।
 वयमेव हरिणु तुडु यम्भ ।
 यं वापय उमणु संवारिउ ।
 विमहमायु वीर्णामपि सम्भवि ।

5

यथा—कपणकपणवि विमममुसकवि रिउ वरम्भ ॥

10

विमहनु वि ताई पारम्भकवि परिमम्भ ॥ १६ ॥

17

मय्यं मणु सुंयहं सविउ
 मय्यं मणु तिसवि मिम्भ
 मय्यं मणु हुमासवि तिसउ
 मय्यं मणु सुउणं पविउ

मय्यं मणु सुंयुवि पेविउ ।
 मय्यं मणु रवि मिम्भ ।
 मय्यं मणु पसु य विविउ ।
 मय्यं मणु विपावि उविउ ।

५ BP अनुमील्यु कामु ६ MBP सोकनु

16 १ MBP कुण्डमि २ MBPK कपणं but GT कपणं ३ MP वरिम्भ

17 १ MBP तुडु २ MBP तुमवि ३ MBP read this line as मय्यं मणु ययं
 मिम्भ मय्यं मणु तिसवि ययम् ४ MBP विमह16 B & वापयमिबहि वीरमहवि, वविमोहवि मय्यं ॥ ३ ववारिउ वविमि, ४ &
 ययं ववि मय्यं मय्यं वा ३ वयमेव वविमोहवि वयं (१) वयम्

अण्णहु अण्णं खग्गु विराड्ठउ
लैड लड एवहिं काड णिरिक्खगहि
तउ अउ तंवउ सीसउ ताविउ
पिवसु पिवसु अरहत्तु ण याणइ

तहु केरउ जि मासु तहु दोइउ । 5
मृग वराय मारिवि किं भक्खगहि ।
अण्णहु मल्ल भणेप्पिणु दाविउ ।
चगउ कउल्लु तुज्जु वप्पयाणइ ।

घत्ता—उम्मगो जति ण णिवारिय णिद्धम्ममइ ॥

परघरिणि रमति जिह पइं रमिय णिवद्धरइ ॥ १७ ॥

10

18

अग्गिचण्ण तैत्तिथि अहरत्ती
तिह एवहिं आलिंगहि माणिणि
मणिणिवि णवजोच्चण परचाली
येत्तुब्भउ माणसु तणुजायउ
एउ एम पावोहे लइयहं
तेत्थु ण णारि ण पुरिसु सुयंसउ
पढमहि पुंढविहि णारयगत्तइं
वीयहि पण्णोरस दोवारहं

लोहविणिम्मिय ण तुह रत्ती ।
ण्ह करिंदकुंमपीणत्थणि ।
अवकंडहि सामरि कंटाली ।
असुरोईरिउ अण्णोण्णायउ ।
पंचपयारु दुक्खु णारइयह । 5
णग्गउ णिहु असेसु णउंसउ ।
भयघणुतिरयणिछंगुलमेत्तइं ।
धणुरयणिउ अगुलइं वियारहं ।

घत्ता—भवहरदेहाउ पहरत्तु राणि रणरणइ ॥

गरुयारउ होइ णारयदेहु विउच्चणइ ॥ १८ ॥

10

19

तइयहि एकतीसधणुतुंगइ
चोत्थियाहि रयणीदुयजुत्तइं
पंचमियहि धणुसउ पणवीसउ

एकरयणि भणु कयदुरियंगइं ।
धुउ चावइं वासट्ठि पउत्तइ ।
चट्ठिउ वउ आवइ आभीसउ ।

५ MP लइ तइ एवहिं ६ MBP मिग

18 १ MBP तत्ती २ MBP माणसु. ३ MBP पुहरहि ४ MBP पण्णारइ

19 १ B रयणीअजुत्तइ

17 b a विहाइउ विभक्तः 8 b कउल्लु चार्वाकः

18 B a परचाली परली, b साम लि कूटशाल्मलीतर 4 a माणसु मानसिकम् 6 b सुयंसउ
शोभनशरीरावयव 9 रणरणइ अरतिजनके

21

अकपमि सुर दहयसुपचविह वि
 एयहि रयणणहहि धरिसिहि
 असुरवरह चउसट्टि समकपइ
 बाहत्तरि लम्बाइं मुवण्हं
 दीवसमुदथणियतडिणामहं
 एकेकहु लक्काइं छहत्तरि
 लम्ब णवइ लेसाहिय धीरहं
 कोडिउ सत्त दुहत्तरि लक्कइ
 भावणभवणइ एम पउत्तइ
 भूयरक्कसावासविसेसइ
 अवराइ मि पंचिमलसिरिहारइ
 धेतरेणयरइ अयरमणीयइं

सोलह दु णव पंचविह पुणरवि ।
 विवरंतरि घट्टरइरसथत्तिहि ।
 णायवरहं चउरासीलक्काइं ।
 भवणहं भूरिमासमौहणहं ।
 आसाणलकुमारवग्गामह । 5
 अकपइ एम मयणमयकेसरि ।
 आवासाहं समीरकुमारहं ।
 पिंडीकयइ हौति पच्चक्खं ।
 चउदह सोलह सहस्र णिरुत्तइं ।
 दीणावेणुपणवणिग्घोसइ । 10
 घणगयणयलजलहिर्नरतीरइ ।
 हौति गणतह सखाइयइं ।

घत्ता—जोयण सय सत्त अणु वि णवइ मुण्वि धर ॥

णहि जोइसवास ते णरलोयहु उवरिचर ॥ २१ ॥

22

अद्धकविट्टसरिससठाणं
 पंचवण्णरयणावल्लिखइयइ
 जोयणसइ खेत्तम्मि दहोत्तरि

संपाराहियइं हौति विमाणइं ।
 वीहल्लत्तं पुणरवि रइयइ ।
 अयलइ माणुसलोयहु धाहिरि ।

21 १ MBP धरिसिहि २ MBP असुरघरइ ३ MBP °भाइण्ह ४ M बहत्तरि ५ K चोइह ६ K णिउत्तइ ७ MB परिमल° ८ MBP सरितीरइ ९ MBP वितर° १० MBP अइ°, K अय° but corrects it to अइ°

22 १ MBPT बाहलत्तं पर ण वि and gloss in T परेण न विरचितानि केनापि ७ MBP जोयणसय°

21 ४ a सम कसइ सर्वज्ञस्यावधिशानिर्ना वा प्रत्यक्षाणि 4 a सुवण्ह सुपर्णकुमाराणाम्, b भूरि-
 भासमाइण्ह प्रचुरप्रभासमाकीर्णानाम् 5 b आसा णल कुमार° दिक्कुमाराणामभिकुमाराणां च 7 a लेसा
 हिय पठधिकाः 10 b °पणव° पठह 11 a पविमलसिरिहारइ प्रविमलश्रीधारणे

22. ४ a जोयण सइ खेत्तम्मि योजनशतक्षेत्रे

अर्धैर्दं मंथियमंदापदि
 वरीस कि कनकां सोहम्मा
 दुरई सण्णुमारि माहिंवर
 अत्थि विमाणां ववधियसोऽन्नां
 पन्नास कि छेत्ति किंविदु
 सुद्धमहासुद्धा वादीस कि
 थापय पापय मारय मन्नुप
 हेहिमोवद्धा पन्नास
 सत्तुत्तव मज्झिमहि माविद्धा
 वव कि ववत्तदि पंथापुत्तदि
 ववत्तत्तववववव विवेपई
 पन्नासयां व वेविने विववई

यियां असेवणीववित्पारे ।
 ववुवणीसीसापि सुत्तम्मा ।
 अद्दुल्लवव परिममियसुत्तिय ।
 वंमि वेवंमुत्तदि वववववव ।
 सहसई होति विवाहिबसिद्ध ।
 वव सवारासहसाराई सहस कि ।
 ववववववव सत्तवस्य सत्तुप । 10
 ववव कि सत्त सुत्तवववववव ।
 ववव पद्द ववत्तमहि माविद्धा ।
 पंथ विमाणां सोक्कवित्पदि ।
 सत्तावववविसहासां पवई ।
 वंमि वि वेवणीसीं वव ववव । 15

मत्ता—मेवई तुंगु विदि कप्पदि वववेव विणु ।

वोवववई सवाई ववमाणां वववव विणु । २२ ।

23

पंथसपाई विदि मि ववविद्धा
 वप्पदि विदि ववत्तदि सववई
 पन्नासपाई विदि विदि वववमि
 पुणु वववववव हम्मुवववव
 पुणु वव ववई विवो पुवववि वव
 पुणु वववई वववि विमाणां

वव वंमि कि विदि ताई पंथिद्धा ।
 ववई ववई वववमविविद्धा ।
 सपाई विदि पुणु विदि कि विदिक्कमि
 वववववववव सववव ।
 पुणु पन्नास समीत्त वववव ।
 पंथवीसवववव पववव । 6

1 K ववई. 2 MBP ववव वववववव. 3 MBP वववववव. 4 P ववविद्धा. 5 MBP वववववव
 6 MP वववववव. 7 MBP वववववववव. 8 P ववव वि पुणु वेववव ववव. 9 K वेवव वि वव.
 10 K वववव.

23 1 MBP वव 2 MBP वववव 3 MBP ववव K वववव but corrects it to
 ववव. 4 MBP पुणु MBP विणु

6 = ववव ववव

23. 2 = ववव वववव वव ववववव. 3 = ववव वव ववववव. 4 = ववव वव ववववव. 5 = ववव वव वववव.

सव्वट्टहु चूलिय लघेप्पिणु
तम्मि तिलोयहु सिहरि णिसण्णी
ससहरहिमणिहच्छायायी
जोयणाइं जोइय णीसल्लें

वारहजोयणाइं जाएप्पिणु ।
पणयालीसलक्खविट्ठियणी ।
सिद्धयत्ति भव्वयणपियारी ।
अट्टमपुहइ अट्ट वीहल्लें ।

10

घत्ता—सविमाणहु मज्झि संयणि महारुहि समयमणु ॥
उववादसहावे भिण्णमुहुत्तें लेंति तणु ॥ २३ ॥

24

मउडेहिं हारेहिं
कंचीकलावेहिं
भूसापंहासेहिं
घेउव्वियगेहिं
चउरंसठाणेहिं
अणमिसहिं णयणेहिं
विच्छिण्णतौवेण
कणयं च गयलेव
णक्ख्खाइं चम्माइं
रत्ताइं पित्ताइं
मीसियउ मासाइं
मत्थिक्खसुक्काइं
सोहग्गगेहम्मि

केऊरंदोरेहिं ।
मजीररावेहिं ।
अइसुरहिसासेहिं ।
लक्खणपसगेहिं ।
माणवणिवाणेहिं ।
ससिसोम्मवयणेहिं ।
पुण्णप्पह्वेण ।
जौयति खाणि देव ।
ण सिराउ रोमाइं ।
ण पुरीसमुत्ताइ ।
ण बलासकेत्ताइं ।
णउ अत्थि वोक्काइं ।
देवाण देहम्मि ।

5

10

६ MBP बाहुल्लें ७ MPT सयणु

24 १ P °होरेहिं २ P °पसाहेहिं ३ MBP अणिमिसहिं ४ MBP °सोम° ५ MBP °तावेहिं.

६ MBP °प्पहवेहिं ७ MK जायत

11 स य णि म हा रु हि शयने वित्रशालिकायां महोहे, समय म णु समयमनुकूल प्रतिमय समयमारभ्य भिन्न
मुहूर्त यावत्तावत्कालेन परिपूर्ण शरीरं शुद्धातीत्यर्थ

24 5 a चउरंसठाणेहिं समचतुरस्रसंस्थाने, b माणवणिवाणेहिं मानवाकारे 8 a कणय
सुवर्णमिव 11 a मीसियउ इमंभु दाडिका, b बलास लेप्पा 12 b वोक्काइं कलिजा (?)

घत्ता—फासँ पडिचार सणकुमारमाहिंदरुह ॥

रूवेण करति उवरिम चउकप्पय विवुह ॥ २५ ॥

26

पुणु चउकप्पसमुधभव सुरवर
घरि चउकप्पहिं मणपडियारा
सप्पडियार णिणवि अणिंदहु
अहमिंदहु पासाउ जिणिंदहु
कहमि आउ तियसहं सुहसगमु
णायहुं पल्लइं तिण्णि वियाणसु
अट्ठाइज पल्ल सोवण्णहं
सेसहं होइ दिवहु णिरुत्तउ
एकु पल्ल सहसं वरिसहुं
एकु जि सुकु सएण समेयउ
पंच सत्त पुणु णव प्यारह
एकुण एकवीस तेवीस वि
चउत्तीसैकताल अडदौल वि
सोहम्माइहिं भणइ सतिलयहं

होंति सहपडिचार सुहंकर ।
पत्तो उवरिम णिप्पडियारा ।
अतुलसोक्खु णिहिलहु अहमिंदहु ।
गयरायहुं तिरायं वइवदहु ।
असुर जियति एकु सायरसमु । 5
घणदेवहुं पल्लु जि परमाउसु ।
दीवह दोण्णि पुंणपरिपुण्णह ।
चदु जियइ लक्खं संजुत्तउ ।
जीवइ टिणयरु घट्टियहरिसहु ।
तारारिस्सहु ऊणउ णेयउ । 10
तेगह पण्णारह सत्तारह ।
पंचवीस भणु सत्तावीस वि ।
पंचावण्ण जि पल्लइ जगरवि ।
आउ अरुंयंतहं सुरचिलयहं ।

घत्ता—ये सत्त दसेव चोहंहरारह वि ॥

वीस जि वावीस उड्डु एकु चट्ठिसु केह वि ॥ २६ ॥

16

26 १ MBPK अट्ठल २ MB णिराय° ३ MBP पल्ल परिपुण्णहं ४ MBP चउत्तीसे°
५ MBP अडताल ६ P सणुयतह ७ MBP चउदह छदह अट्ठारह ८ MBP उड्डु एकु ९ K कहमि

26 2 a घरि उपरि 4 b तिरायवइवदहु त्रिभुवनपतिवन्द्यानाम्, त्रिराज्यपतिवन्द्यानाम् 8 a
से सह विशुदमिवातस्वनितोदधिदिक्कुमारणां 10 a सएण समेयउ शतवर्षाधिक पत्यमेक शुक्रो जीवति, b ऊ-
णउं किंचिद्भनम् 13 b जगरवि जगद्भास्कर 14 a सतिलयह सतिलकानां देवीनाम्, b सुरचिलयहं
सुरधनितानाम्

ओजोहार पक्खिसंघायहं
अहमिदं वि करति तेत्तीसहिं
वत्तीसेक्कीस पुण तीसहिं
एक्केकउ जि एम पडिहम्मह
आउणिवध महोवहिसखाहिं
पल्लजीवि पुणु मिण्णमुहुत्तं
ऊससंति केइ वि पक्खेण जि
सरसइ सुरहियाइं अहमिट्ठं
आहरति दवियाइ सइत्तं

मणभोयणु चउदेवणिकायह ।
वोलीणहिं घरवरिससहासहिं ।
एक्कुणतीसहिं अट्टावीसहिं । 5
सोलीहमे वावीसहिं जिम्मइ ।
णीससंति तेत्तियहिं जि पक्खहिं ।
णीससंति अह ताहं पुहत्तं ।
असुर असंति अहिय सहसेणं जि ।
सुहुमइं सुद्धइ णिद्धइ इट्ठं । 10
परिणमति सहस त्ति तणुत्तं ।

घत्ता—ससारिय जीव चउविह चउगइभिण्ण जिह ॥
इंदियभेएण पंचपयार पउत्त तिह ॥ २८ ॥

29

काए छव्विह चवलथिरेण वि
जलणिहिविहं वि कँसाए जाया
संजमदंसणेण तिचउव्विह
भव्वत्तेण विविह सम्मत्तं
आहारं आहारिय जे जे

तिविह तिविहजोपं वेएण वि ।
अट्टभेय णाणं विण्णाया ।
लेसापरिणामेण वि छव्विह ।
सण्णि असँण्णी दो सण्णित्तं ।
चउसु वि गइसु परिट्ठिय ते ते । 5

२ MBPK ओजाहार ३ MBP तेतीसहिं ४ MBP सेक्कीस ५ MBP पविहम्मइ ६ MBPK सोलहमइ ७ MBP आठ णिवहु ८ MBP पुण ९ MBP केइ जि पक्खेण वि १० MBP सहसेण वि

29 १ MBP छव्विह थिरेण तसेण वि, T चवलछिरेण चपलस्वभावाना स्थिरपृथिव्यादीनाम् २ MBP विह व ३ MB कसाम ४ MBP असण्णि दोणि

8 b मण भो य णु मानसाहार 4 b वोली ण हिं व्यतिक्रान्ते 6 a पडिहम्मइ प्रतिहन्यते 8 b अह ताहं पुहत्तं अथवा तेषां भिन्नमुहूर्ताना पृथक्त्वेन आगममापया त्रयाणामुपरि नवानामध निवसन्ति 9 b असति अश्रन्ति भोजन कुर्वन्ति 11 a दवियाइ पुद्गलद्रव्याणि, सइत्तं स्वचित्तं, b तणुत्तं तनुरूपेण

29 1 a का ए छव्विह पल्लजीवनिकयेन, चवलथिरेण चपलस्वभावेन पृथिव्यादिस्थिरस्वभावेन च 2 a जलणि हि विह चउर्विधा, b अट्टभेय णाणं पञ्चज्ञानानि त्रयीज्ञानानि तैरद्वैतं 8 a सजमेत्यादि—राययथाख्याता परिहारविशुद्धेरभावात्, दसणेत्यादि त्रीणि दर्शनानि क्षायिकौपशामिकक्षायोपशामिकानि, तथा चत्वारि चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानि 4 a भव्वत्तेण विविह भव्याभयौ द्विविधौ.

केनचित्समुद्य विव्याहयरागय
 ते न वेति व्याहार विचारिय
 ममापराधार्थं बोद्धेहमेव
 मिथ्यामिदं पश्चित्तं भीषत्
 अविरपद्यन्माहि ब्रह्मार्थं
 कुरु पुत्र पमत्तर्तुमचन
 कुरु होर अरुतु अरुतु
 इहमर्तु सुदुमराय आविहार
 बाणमर परितोषकसायक
 उच्छिद्यतिविहस्यौरमर्तुत

अरुतु अरुतु सिद्ध परमपुत्र ।
 सेत जीव आरुति व्याहारिय ।
 विमुक्तहि शुभकार्य मि पर्य ।
 सात्त्विक भीषत् मीतु वि तीपत् ।
 पञ्चतु विरपाविरत पञ्चतु । 10
 सत्त्वतु अण्यतु शुभसुख ।
 अविष्यतिहृत अरुतु अरुतु ।
 पञ्चतुसुखार्तु भविहार ।
 तेजस्य सत्त्वोदितु आवर ।
 उच्छिद्यत् अरुतु पद अरुतु । 15

पञ्चा—पारय अचारि अचारि वि पुत्र सुखम् ।

तिरिपय वि पञ्च जीवितेति अरुति पद ॥ १९ ॥

30

कम्मविहम्ममाय सत्त्वोप
 सत्त्वोपसत्त्वोपसत्त्वोप
 तां वेदु जा होर समासम
 केम वेदु सिद्धिपरिणाम
 जीवो उरुतु जीव विपत्तु

सात्त्विकसत्त्वोप विपत्तु ।
 होति जीव अविपत्तिविपत्ति ।
 सा सत्त्वोपसत्त्वोपसत्त्वोप ।
 तेम कम्मोपसत्त्वोप वि विपत्तु ।
 विपत्तुसत्त्वोपसत्त्वोप पमत्तु । 6

१ MBPK पञ्चर १ MBPK विपत्ति २ MBP "सत्त्वोप" MBP अविपत्ति अरुति

१ MBP अरुति १ MBP अरुति वि

30 १ MBP कम्मोपसत्त्वोप १ MB अविपत्ति, P विपत्ति

8 = केनचित्वादि—केनचित्वादि कथा समुत्पन्नं पुनरिति अत्राप्यप्युक्तं पुराणस्य वैशेष्यं अस्ति उक्तं
 आद्यपञ्चमं अन्तरा आद्यपञ्च एव 10 = विरपाविरत विपत्तिविपत्ति विपत्तिविपत्ति 12 = अरुतु
 अण्यतु १३ = अविपत्तिविपत्ति 14 = अरुतु अण्यतु 15 = अविपत्तिविपत्ति 16 = अविपत्तिविपत्ति
 17 = अविपत्तिविपत्ति 18 = अविपत्तिविपत्ति 19 = अविपत्तिविपत्ति 20 = अविपत्तिविपत्ति
 21 = अविपत्तिविपत्ति 22 = अविपत्तिविपत्ति 23 = अविपत्तिविपत्ति 24 = अविपत्तिविपत्ति
 25 = अविपत्तिविपत्ति 26 = अविपत्तिविपत्ति 27 = अविपत्तिविपत्ति 28 = अविपत्तिविपत्ति
 29 = अविपत्तिविपत्ति 30 = अविपत्तिविपत्ति 31 = अविपत्तिविपत्ति 32 = अविपत्तिविपत्ति
 33 = अविपत्तिविपत्ति 34 = अविपत्तिविपत्ति 35 = अविपत्तिविपत्ति 36 = अविपत्तिविपत्ति
 37 = अविपत्तिविपत्ति 38 = अविपत्तिविपत्ति 39 = अविपत्तिविपत्ति 40 = अविपत्तिविपत्ति
 41 = अविपत्तिविपत्ति 42 = अविपत्तिविपत्ति 43 = अविपत्तिविपत्ति 44 = अविपत्तिविपत्ति
 45 = अविपत्तिविपत्ति 46 = अविपत्तिविपत्ति 47 = अविपत्तिविपत्ति 48 = अविपत्तिविपत्ति
 49 = अविपत्तिविपत्ति 50 = अविपत्तिविपत्ति 51 = अविपत्तिविपत्ति 52 = अविपत्तिविपत्ति
 53 = अविपत्तिविपत्ति 54 = अविपत्तिविपत्ति 55 = अविपत्तिविपत्ति 56 = अविपत्तिविपत्ति
 57 = अविपत्तिविपत्ति 58 = अविपत्तिविपत्ति 59 = अविपत्तिविपत्ति 60 = अविपत्तिविपत्ति
 61 = अविपत्तिविपत्ति 62 = अविपत्तिविपत्ति 63 = अविपत्तिविपत्ति 64 = अविपत्तिविपत्ति
 65 = अविपत्तिविपत्ति 66 = अविपत्तिविपत्ति 67 = अविपत्तिविपत्ति 68 = अविपत्तिविपत्ति
 69 = अविपत्तिविपत्ति 70 = अविपत्तिविपत्ति 71 = अविपत्तिविपत्ति 72 = अविपत्तिविपत्ति
 73 = अविपत्तिविपत्ति 74 = अविपत्तिविपत्ति 75 = अविपत्तिविपत्ति 76 = अविपत्तिविपत्ति
 77 = अविपत्तिविपत्ति 78 = अविपत्तिविपत्ति 79 = अविपत्तिविपत्ति 80 = अविपत्तिविपत्ति
 81 = अविपत्तिविपत्ति 82 = अविपत्तिविपत्ति 83 = अविपत्तिविपत्ति 84 = अविपत्तिविपत्ति
 85 = अविपत्तिविपत्ति 86 = अविपत्तिविपत्ति 87 = अविपत्तिविपत्ति 88 = अविपत्तिविपत्ति
 89 = अविपत्तिविपत्ति 90 = अविपत्तिविपत्ति 91 = अविपत्तिविपत्ति 92 = अविपत्तिविपत्ति
 93 = अविपत्तिविपत्ति 94 = अविपत्तिविपत्ति 95 = अविपत्तिविपत्ति 96 = अविपत्तिविपत्ति
 97 = अविपत्तिविपत्ति 98 = अविपत्तिविपत्ति 99 = अविपत्तिविपत्ति 100 = अविपत्तिविपत्ति

जिह सिहिभावहु वधइ इंधण
असुहें असुहु सुहें सुहु संघइ
अभव जीव जिणणाहें इच्छिय
मइसुँओहिमणपज्जव केवल
णिदाणिदा पयलापयला
चक्खुअचक्खुदंसणावरणउ
तेहिं विणासिउ णवसंरायउ
दंसणमोहणीउ सम्मचु वि
दुविहु चरित्तमोहु विक्खायउ
तं कसायजायउ सोलहविहु
पदमकसायचउकु सुभीसणु

तिह कम्मेण जि कम्महु वधणु ।
सिद्धमडारउ किं पि ण वंधइ ।
एकु ण ते वि अणत णियच्छिय ।
णाणावरणविमुक्क सुँणिकल ।
थीणागिद्धि णिदा पुणु पयला । 10
अवही केवलदंसणवरणउ ।
वेयणीयदुगु सायासायउं ।
मिच्छुचु वि सम्मामिच्छुचु वि ।
णोकसाउ णामेण कसायउ ।
इयर भणेसमि पच्छइ णवविहु । 15
सत्तमणरयगामि दिहिदूसणु ।

घत्ता—अइकोहु समाणु माया लोहु वि दुत्थयय ॥

उवसमहुं ण जाइ जइ वि पयोहइ तित्थयय ॥ ३० ॥

31

अवर अपच्चक्खाणु गुरुकउ
संजलणु वि जलंतु उल्लोविउ
भँयरइयरइदुगुलउ जित्तउ
सुर णर णरय तिरिय चउआउ वि
गइणामउ वि जईणामु वि भणु
तणुसंघाउ तणुहि सठाणउं

पच्चक्खाणु चउकु विमुकउ ।
धीपुंसंदराउ उँडाविउ ।
हासु वि सँहुं सोएण णिहिँसउ ।
वायालीसविहेयउं णाउं वि ।
तणुणामउं पुणु तणुहि णियंघणु । 5
तँणुअगोअंगु वि णामाणउ ।

१ MBP सिद्ध भडारउ, K सिद्धमडारउ but corrects it to सिद्ध ४ MBP °सुद्धोहि° ५ MBP सुणिम्मल, ६ MBP °दंसणहरणउ ७ K दुक्कयय but corrects it to दुत्थयय

31 १ MBP चउक २ P उँडाविउ ३ MBPT उँडाविउ ४ MBP भइरइयरइ° ५ MBP सह, ६ P विहित्तउ ७ P णिरय ८ MBP जाइणउ, ९ MBP तणुअगोअंगु वि णिम्माणउ

7 a सधइ उपाजयति 17 दुत्थययदु खतर

31 1 b विमुकउ विमुक्क सिद्धे 2b °राउउडा विउ °भाववेद क्षपित 3 b णिहिँसउ विनि-
क्षित 4 b नायालीसेत्यादि—णिण्डत्वेन द्वाचत्वारिंशन्नामप्रकृतय, 5 a गइणामउ नरकतिवेदमनुष्यादि-
गतित्नाम 6b णामाणउ निर्माणम्

पयडिहिं माणवंगु मेहेप्पिणु
जे गर्य जीव परमणिन्वाणहु
चरमसररीमाण किंचूणा
णिम्मल णिरुवम णिरहंकारा
उडुंगमणसहावै गपिणु
अट्टेमपुहईवट्टि णिविट्टा

सुद्धंसहाउ सैंडु लहेप्पिणु ।
डुहविरहिडु सासयठाणहु ।
ववगयरोयसोय अविलीणा ।
जीवदव्वघण णाणसरीरा ।
उडुलोउ सयलु वि लंघेप्पिणु । 10
अमव जीव जिणदेवें दिट्ठा ।

घत्ता—ते साह अणाह दुविह अणंत जि विविहदुहे ॥
ते पुणु ण मरंति णउ पडंति ससारमुहे ॥ ३२ ॥

33

णउ बाल णउ बुडु
णीसाव णित्ताव
णाणंग णिम्मेह
णिकोह णिल्लोह
णिव्वेय णिज्जोय
णिद्धम्म णिकम्म
णीराम णिकाम
णिव्वेस णिल्लेस
णीरस महाभाव
अव्वत्त चिम्मेत्त
ण बुहाइ घेप्पति
ण सैयाइ झिज्जति

णउ मुक्ख सुवियडु ।
णिग्गाव णिप्पाव ।
णिण्णेह णिहेह ।
णिम्माण णिम्मोह ।
णीराय णिन्मोय । 5
णिच्छम्म णिज्जम्म ।
णिब्बाह णिद्धाम ।
णिग्गंध णिप्फास ।
णीसह णीरुव ।
णिच्चित णिव्वित्त । 10
ण तिसाइ छिप्पंति ।
ण रईइ सिज्जंति ।

✕ B सिद्धसहाउ ५ MBP सयमु ६ MB गय परम जीव ७ MBP दुक्खविमुक्कहु ८ K उडुंगमणु
९ K अट्टमि
33 १ P णीसास २ MBP णीताव ३ MBP रुवाइ

6 a मा ण व गु नरशरीरम्, b स इ भु सहज 8 b अ वि ली णा कदाप्यपरित्यक्तसिद्धस्वरूपा 11 a °व ट्ठि
°पृष्ठे 12 सा इ अ णा इ अनादिसादिकालद्वयापेक्षया पर्यायार्थिकद्रव्याधिकनयापेक्षया वा
33 3a णि म्मे ह निमेषस पञ्चेन्द्रियज्ञानरहिता केवलज्ञानिन 8a णि व्वे स निर्देया, 12 b सिज्जं-
ति पीड्यन्ते.

याहाय मुञ्जति
अ मध्ये क्षिप्यति
निर्हं अ शर्ष्यति
अमणा वि ज्ञायति
सिद्धाय अं सोक्तम्
किं माणवो को वि

भोक्तुं न शक्नोति ।
 न ह्येव धृष्यति ।
 अपाया विप्रेक्षति ।
 क्षयरापरं सति ।
 तं कदा चमस्तु ।
 सर्वं वायु वैश्वि ।

यथा—परिविश्वमुक्ता पञ्चम्याह इत्येव विमले ।

ॐ शिखरं सोमसु तं यं वि कासु वि उपजयते ॥ ३३ ॥

39

पशु पुष्टिह कीर माई अविनाय
 यम्मु अयम्मु दो वि ईशुशिरय
 गहताओमाहससककक
 सनु अयाह समर बौहउठ
 सासु हासु अन्नाह बउओपठ
 विहि मि ओयभहसोव विपयउ
 ते जि अओउ ओहपयसउ
 सहे गीये कये फासे
 बांध वेस अईउपयस वि

कहामि अतीव वि जेम विधि
आपासे काठे सहु सुखिय ।
के वि सुखेति सुखाय विपन्न
सीदै कम्ह अयामि अर्जुन ।
अर्माअम्माई सखतिओपद ।
अत्ताहु वि अर्जुन सुखिअय
योअम्ह होइ पंगुअर्जुन ।
हुउठ मिच्छअप्यविच्छासे ।
परमाण्ड अविहाइ असेहु वि

अथा—यै सखसि वि पञ्च पञ्चसखसि प्रपञ्च पञ्च मञ्च ।

पुष्पाणि वि धृत्य बौधायनाय मां हविर्ह मय्य । ३९ ।

४ B मुक्ति P मुक्ति and gloss बोधनति ५ MBP जलनति नि ६ MBP दुः ७ MBP ८ MBP नर

34. १ MBP वाहकित्त २ P वाहकित्त ३ MB टीकर; P लवर व MBP वाहकित्त
४ MBPK वाहकित्त T टीकरवाहकित्त ५ MBP वाहकित्त. ६ M वाहकित्त पर वाहकित्त
वाहकित्त वाहकित्त वाहकित्त; ७ वाहकित्त वाहकित्त वाहकित्त वाहकित्त

॥ ५९ ॥

34 ४ गतुः सप्तमः अथाहं जगत्पतिः समस्तं वीर्यं कर्मणः कथा समस्तं ४ ॥
अथाहं जगत्पतिः ४ ॥ अथाहं जगत्पतिः ४ ॥ अथाहं जगत्पतिः ४ ॥

35

गंधु वण्णु रसु फासु सँसहउ
थूलुसुहुमु जोणहाळायइउ
थूलुथूलु पुणु धरणीमंडलु
सुहुमइं कम्माइयइं सणामइं
वण्णाइयहिं रसेहिं अणेयहिं
पूरणगलणसहावणिउत्तइं
भासिजंतउ परमजिणिंदे
वसहसेणु सुहभावें लइयउ
सोमप्पहु सेयंसँणरेसरु
इय रिसहहु परिमुक्कविसाया
वैम्ही सुंदरि अज्जिय संघहु
दंसणमोहणीयपंडिरुद्धउ
तावस कंदाहारु मुपपिणु
मोक्खमग्गगामिहि परमेसरु

सुहुमु थूलु वज्जरइ समइउ ।
थूलु सलिलु वीरेण णिवेइउ ।
सग्गविमाणपडलु मणिणिम्मलु ।
मणभासावग्गणपरिणामइं ।
परिणमति संजोयविओर्याहिं । 5
पोग्गलाइं विविहाइं पउत्तइं ।
णिसुणिवि धम्म सुधम्माणंदे ।
पुरिमतालपुरवइ पाँवइयउ ।
थिय पव्वज्ज लेवि हयमयजरु ।
णिव चउरासी गणहर जाया । 10
कतियाउ जायाउ महग्घहु ।
एकु मरीइ णेय पडिवुद्धउ ।
थिय कच्छाइय रिसिक्खउ लेप्पिणु ।
हुयउ अणंतवीरु अग्गेसरु ।

घत्ता—सावउ सुयकित्ति सावइ देवि पियंवइय ॥ 16

भरहेण वि पुज्ज पुप्फयंत पैह जिणि रइय ॥ ३५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाकइपुप्फयतविरइए

महाभव्वमरहाणुमणिण महाकव्वे महावत्थुणिहेसो णाम

एयारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ११ ॥

॥ संधि ॥ ११ ॥

35 १ M सुसइउ २ MBP add after this सुहुमुसुहुमु परिमाणुविसेसइ, लग्गहिं णिवइवि
अप्पपएसइ ३ P पव्वइयउ ४ MBP सेयसु णरेसरु ५ MBP वमी ६ K परिक्खउ ७ MBP पइ, K
पइ but corrects it to एह and gloss एतस्मिन् जिने

35 1 ७ समइउ सार्दवयुक्क उपसमाद्रौ वा 4 a सणामइ ज्ञानावरणादिनामयुक्तानि 12 ७ एकु
मरीइ एको भरतपुत्रो मरीचिनामा प्रतिबोधं न प्राप्त, 16 एह जिणि एतस्मिन् जिने

अरिषपदिहारणि यत्तुसारणि विजगदपिष्ठविजयापदं ॥

विहमिपसाधारणि मेरुविकारणि मरुतं दिव्यं पयापद ॥ १ ॥

।

सुद सुद सारयागमि अयमाणु
 नं रीसर बोमन्दिठ मयण
 नं जगहरि वीरुसोड वन्दु
 अर रसे वि विता सर गयरया
 ससिकुमगाधिपजोषहाजखण
 विहुरै कमलु सारय ससंकु
 सो अज वि रीसर मलविरुनु
 तेम त्रि रोसे यवि तिन्नु तवह
 पंकस्वर सुंकर अलिषयासु
 कुबकपदिहिगण्ड वार् राउ
 तद कुसुमामोपे महमईति
 अलि दणुदभंसि रीबाहपिठ

वहु वार् घोपहरिलीसमाणु ।
 सारयमरुहियसंकु कयण ।
 सापमापिपयुंशुवमिन्नु । 6
 नं कारिचई सज्जककपार् ।
 पन्नासिपार् नं विमसेष ।
 तनु तव त्रि अमाठ पिठपंकु ।
 विपदिमपराहवि को व कुरु ।
 सरवहसुदि किं विविद्यु लहर । 10
 अरुमाचणु वंपवई कस्तु ।
 कयपंजुजीवसुंछायमाड ।
 रयकविछई सखिछई ववि वईति ।
 महमसा नं गापंति सौंड ।

वत्ता—सारयमयसंकुणु वरुंविपजणु वीर मयमसिणु व हातर ॥

15

सो ईद कयसंसिदि विजजसपंसिदि प्पु वि अयई रीतर ॥ १ ॥

1. १ MBP लेणुदरणि but gloss वरियवईयदने १ MBP सिणु १ P मोवलिठ १ P वरिच १ MBP विरुद १ MBP सिमि वणु १ MBP पुण्डर T विरिहारन होपहरको वरुव. १ MBP "वप्यव" १ P पलोई १ T पलोई ११ MP वणु १२ MBP ई

1 1 अरिषपदिहारणि अयमाणुम्भो, यत्तुसारणि पुत्रविमहविजयिपयजकवदिवरुई-
 मयदे "अपि विमवावर्त" कलीपिकली अयवद् ३ अ य ए व अयेव मयवा, 5 वीरुसोड वीर-
 वन्देवम् 10 के वरवहसुदि पूर्वा कयकमपरा, वयह वरुई विमवमि वा, 12 अ य व एवा पलो
 वा, 14 अ वा व ह सि व वलकईवरीपः कयवर्ण रूखर्णः के वीर मयवा, 15 व य ई वरवा,

2

पणवेप्पिणु लेप्पिणु सिद्ध सेस
आवेप्पिणु पइसेप्पिणु अउज्ज
मणु दोयवि जोयवि तणयवयणु
दालिहु रउहु पवासियाहं
णिहणिवि घरेण चामीयरेण
मंतिवि अहगु पंचगु मनु
परियाणिवि माणिवि बुहु चारु
अइवगिउ मगिउ को ण कप्पु
भुयदंडचंडविक्रममण
गंभीरतूरलक्खइं हयाइं
कयसमरहं अमरहं थरहरंति
असुरिदहं णाइंदह पियाइं
उट्टइं फुट्टइं गिरिमहियलाइं
थिरभावहं देवहं जाय संक

अवठंभिवि रुभिवि सयल देस ।
परचक्रमुकपहरणदुगेज्झ ।
परियंचिवि अंचिवि चक्करयणु ।
काणीणहं दीणहं देसियाहं ।
णाणाविलासतोसायरेण । 5
को सत्तु मित्तु को तव्विरत्तु ।
ओहारिवि धारिवि रज्जमारु ।
भणु केण ण केण वि मुकु दप्पु ।
लक्खंडमंडलावणिकयण ।
दुप्पेक्खइं रक्खइं हयमयाइं । 10
गत्तइं सोत्तइं यहिरत्तु जंति ।
पायालइ विउलइं कपियाइं ।
झलझलियइ वैलियइं सरिजलाइं ।
रवपेहिय डोहियै रवि ससक ।

घत्ता—तहु तिजगविमइहु तूरणिणइहु मिलिउ दुग्गणिव्वाहणु ॥ 15

परमडलंसाहणु गहियपसाहणु ज्ञाणि चउरंगु वि साहणु ॥ २ ॥

3

णिग्गयं णिवयलं
कणयकुंतुज्जलं

घरियहलसव्वलं
चंदणसुपरिमलं ।

2 १ MBP भयगयाइ २ MB झलझलियइ ३ MBP चलियइ ४ MBP रहं ५ MP जेहिय ६ M परमडल
3, १ MB ०कंतुज्जल

2 1 b अवठ भि वि हठादाकम्प, रं भि वि प्रतिग्राहयित्वा 4 d दे सि या ह परदेशजनानाम् 6 a अहगु अमत्रोऽविकल, पंचगु मनु सहाया साधनोपायो देशकालबलावलौ । विपत्तेश्व प्रतीकार पयात्रो मन्त्र इष्यते 7 b ओ हा रि वि अवधार्य 8 a अइवगिउ अतिगर्वित 15 दुग्गणिव्वाहणु दुस्तरे प्रदेशे निस्ता-
रणसमर्थम्

3 1 b ०सव्वल तिलपीडनायुध घाणी

अरिहरमिहापणि गणेश्वरपणि त्रिजगमष्टिपित्रयाण्डं ॥
विहसिपसाहापणि मेरुपिकारणि मरुद विष्णवे पयाण्ड ॥ १ ॥

1

गुड गुड सरयागमि मय्यमानु
मे हीमरु मायेतिथि कएव
मे जगहरि पीतुतोड कयु
मरु हर्से वि विरा सरे मय्यरयाई
समिहुंमगसियजगहाउसने
मिहरेरु कमलु सरय मनेहु
सो मज्ज वि हीमरु मळविट्ठु
हेम जि रोमै पणि तिष्ठु वरार
पंकपणरु सुंदर मळियवाणु
कुममपदिहिर्माण्ड कारं पण्ड
वड कुसुमामारे महमहीति
मळि ठुलुमयति पीवाहपिंड

ण्डु कारं घोषहर्षीममायु ।
सरयम्महादिपारांडु कएव ।
साधमासिपशुंनुकपिडु । 5
मे मारिहरं सज्जकपारा ।
पक्कगतिपारां मे निम्मकेव ।
तडु तण जि लमाउ पिडपिडु ।
विपदिमपराहमि को व कुडु ।
सरयहसुदि कि विमिसलु लहर । 10
जगमासणु मंमबरे कणु ।
कवर्षपुडीवसुंमपममाउ ।
रयविहारे सळिकरे वणि वरीति ।
महमसा मे गायति सौंड ।

पसा—सायममपण्डणु कएपिपयणु की मयमळिणु य होतड ॥
सो हीं कयसंतिहि त्रिजगसवसिहि पडु जि पण्डं देतड ॥ १ ॥

15

1. १ MPT ठेपुहारणि has 2000 इतिवर्षप्रपट्टे २ MBP निणु ३ P मीयविड ४ P
कएरिठ ५ MBP मिरर ६ MBP मिति वंहु ७ MBP गुणकर T मिरिहाररु होरएरुको मय्य
८ MBP "उपकार" ९ P मयोह; T मयोह ११ MP कएव १२ MBP ह.

1. 1 अरिहरमिहापणि मय्यमहामुखमे कणुसारणि गुडमिपयविहसिपसाहापणिकारणिकरि-
मय्यरे "मळि विहसिपसाहापणिकारणिकरि मय्यमहामुखमे ५ म मय्यम मय्यम ६ म मय्यम मय्यम
मय्यममहामुखमे १० म सरयहसुदि मय्ये मय्यममय्यम; मय्यम मय्ये मय्यममय्यम ११ म उड उड मय्ये
म १४ म मय्यममय्यम मय्यममय्यममय्यम १५ म मय्यम मय्यम १६ म मय्यम मय्यम

2

पणवेप्पिणु लेप्पिणु सिद्ध सेस
आवेप्पिणु पद्दसेप्पिणु अउल्ल
मणु ढोयवि जोयवि तणयवयणु
दालिहु रउहु पवासियाह
णिहणिवि चरेण चामीयरेण
मंतिवि अहगु पचगु मत्तु
परियाणिवि माणिवि बुद्ध चारु
अइवगिउ मगिउ को ण कप्पु
भुयदंढचंदविक्रममण
गंभीरत्तूरलक्खइं हयाइं
कयसमरह अमरहं थरहरंति
असुरिंदह णाइंदहं पियाइ
उट्टइं कुट्टइ गिरिमहियलाइं
थिरभावहं देवहं जाय सक

अवठभिवि रंभिवि सयल देस ।
परचक्रमुक्कपहरणदुगेज्ज ।
परियचिवि अचिवि चक्ररयणु ।
काणीणहं दीणहं देसियाह ।
णाणाविलामतोसायरेण । 5
को सत्तु मिच्चु को तच्चिरत्तु ।
ओहारिवि धारिवि रज्जमारु ।
भणु केण ण केण वि मुक्कु दप्पु ।
छक्कपडमडलावणिकण ।
दुप्पेक्कइं रक्कपइं ह्यमयाइं । 10
गत्तइं सोत्तइं बहिरत्तु जति ।
पायालइ विउलइं कपियाइं ।
अल्लअलियइ वैलियइ सरिजलाइं ।
रवपेल्लिय डोल्लियै रवि ससंक्क ।

घत्ता—तटु तिजगविमहटु तूरणिणइहु मिलिउ दुग्गणिव्वाहणु ॥ 15
परमंडलसाहणु गहियपसाहणु खाणि चउरगु वि साहणु ॥ २ ॥

3

णिग्गय णिचल
कणयकुंतुज्जलं

धरियहलसच्चल
चंदणसुपरिमल ।

2 १ MBP भयगयाइ २ MB झल्लिलियइ ३ MBP चलियइ ४ MBP रह ५ MP
जेल्लिय ६ M परमडल
3, १ MB ०कतुज्जल

2 1 b अवठभिवि हठादाक्रम्य, रुभिवि प्रतिग्राहयित्वा 4 d देसियाह परदेयजनानाम् 6 a
अहगु अभङ्गोऽधिकल, पचगु मत्तु सहाया साधनोपायो देशकालमलायलौ । विपक्षेय प्रतीकार पद्माङ्गो मन्त्र
इष्यते 7 b ओ हारिवि धवधार्य 8 a अइवगिउ अतिगर्वित 15 दुग्गणिव्वाहणु दुस्तरे प्रदेशे निस्त्वा
रणसमर्थम्

3 1 b ०सच्चल तिलपीडनायुध घाणी

पियं छत्तचम्मं सुरम्मं महत्तं
हरीकीरपिण्डोहकतिलकाभो
पुरोहो गिरोहो च भीमावयाणं
समे वेसम वेसमे सामकारी
गिही को वि देवो मैहिङ्गीसमिद्धो
सुरागारकिम्मीरकम्मावयारो

महावीरसंधारवित्थारवंत ।
करी गिजियाणिददेविदणाओ ।
गिवासो पयासो पयासंपयाणं । 5
चमपुंगवो दुग्गामग्गावहारी ।
महत्तेण पुण्णेण रायस्स सिद्धो ।
परो को वि अण्णो गिकेऊहकारो ।

घत्ता—इय साहियभुवणाहि चोईहरयणाहि सहु णरणाहहु इच्छइ ॥
हयगयरहवाहणु चलिउ साहणु सयलु रहंगहु पच्छइ ॥ ४ ॥ 10

5

मणिरहचरे चडिउ
दढकदिणभुयजुयलु
किं भणमि पुरिसहरि
सदूलवरसंधु
अलिणीलधम्मेलु
दुवंकुरालेण
उम्भिन्नत्तसेसेण
सचलिउ भरहेसु
घउ घइण पडिखलिउ
भेसिउ अहहेण
करि घुणइ गियकडु
भरओ रुहेण
मग्गाइ भायणइ

ण इंदु णाहि चडिउ ।
अइवियदवच्छयलु ।
वलतुलियकुलसिहरि ।
वहिरंधजणवधु ।
तेलोकपडिमलु । 5
दहिचदणालेण ।
मगलणिघोसेण ।
ण मयणु णरवेसु ।
णरु हरिहि दैरमलिउ ।
करहस्स सहेण । 10
महि गिवाडिओ मैठुं ।
घित्तो वलहेण ।
चुण्णाइ गोहणइ ।

4 १ B °विच्छोह° २ M गिरो ३ MBP महद्दी, ४ MP चउदह°

5 १ MB नहवलिउ २ MBP °धम्मिल्लु ३ P दलमलिउ ४ MBP मेहु

3 ४ दे वि द ना ओ ऐरावणो हस्ती 5 a भी माघयाण भीमानामापदाम्, ६ पया सो प्रकटम्, पया सपयाणं प्रजाना सपदाम् 6 a वेसम विपमम् 7 a गिही गृही भाष्ठागारिक 8 a °किम्मीर° विचित्रम्; ८ गिकेऊहकारो सूत्रधार स्थपति .

5 10 a भेसिउ भय नीत , अहहेण अभहेण.

सरसमुत्तिगादर्थं	कव्येतरपिवाक्यं ।	
गुह्युरियकादर्थं	गुह्यककोटादर्थं ।	
मुक्तार्थं	मुक्तियमसिपार्यं ।	५
बद्धतोपीर्यं	बद्धिपद्यापीर्यं ।	
गदियसोबाह्यं	बद्धिपद्यिपबाह्यं ।	
बद्धापस्यस्य	परिहियविहृत्यं ।	
पूर्वैर्भाष्यं	बोद्धपदिभाष्यं ।	
संततकव्यामरं	बद्धिपद्यकव्यामरं ।	10
पुष्टिपद्याप्यभिर्	बद्धिपद्यमपुष्ट्यं ।	
कामिनीमुक्तियं	किंकिणीमुक्तियं ।	
पुष्टिपद्याप्यभिर्	उत्तमपद्यप्यं ।	
बद्धिपद्यिपपुष्ट्यं	दिग्भ्यामभिर्बद्धं ।	
पद्यपुष्ट्यप्यप्यं	मिर्गिपद्यप्यप्यं ।	15
पुष्टिपद्यमप्यप्यं	पुष्टिपद्यप्यप्यं ।	
परिममिबमप्यप्यं	मुक्तकव्यामरं ।	
मक्षिपकविसेहं	कास्यकविसेहं ।	
पुष्टिपद्यप्यप्यं	बद्धकव्यप्यप्यं ।	
बद्धपुष्ट्यप्यं	मुक्तियमपिहार्यं ।	20

मत्ता—कव्यरिक्तबद्धिपद्यं अगदस्यमर्यं बालियप्य पद्यार्यं ॥

वर्येमात्यपदि मर्यादं गुरंयदि सेष्यु व कव्यर मर्यं ॥ ३ ॥

॥

मयी कागामी कामिनी बद्धर्यं
र्यं कव्यर्यपुष्टं पद्यार्यं

मिनीसकामाभिर्ब्रामाप्यमिर्
कव्येयं सुतेयं कव्यर्यं कव्यार्यं ।

१ MBP कव्यर्यं २ MP कव्यर्यं ३ MBP कव्यर्यं ४ MBP कव्यर्यं ५ MBP कव्यर्यं ६ MBP कव्यर्यं
कव्यर्यं कव्यर्यं T कव्यर्यमर्यं, but records ७ कव्यर्येति पद्ये कव्यर्येति कव्यर्येति मर्यर्येति
P कव्यर्यं ८ MBP कव्यर्यमर्यं ९ P कव्यर्यं

३ ३ कव्यर्यपिवाक्यं अगदकव्यर्यपिवाक्यं ४ ४ कव्यर्यपिवाक्यं ५ ५ कव्यर्यपिवाक्यं ६ ६ कव्यर्यपिवाक्यं ७ ७ कव्यर्यपिवाक्यं ८ ८ कव्यर्यपिवाक्यं ९ ९ कव्यर्यपिवाक्यं १० १० कव्यर्यपिवाक्यं

४. १ ३ मिनीसकामाभिर्ब्रामाप्यमिर् कव्यर्यं मिनी कव्यर्यपिवाक्यं ३ ३ कव्यर्यपिवाक्यं ४ ४ कव्यर्यपिवाक्यं ५ ५ कव्यर्यपिवाक्यं ६ ६ कव्यर्यपिवाक्यं ७ ७ कव्यर्यपिवाक्यं ८ ८ कव्यर्यपिवाक्यं ९ ९ कव्यर्यपिवाक्यं १० १० कव्यर्यपिवाक्यं

पियं छत्तचम्मं सुरम्मं महत्तं
हरीकीरपिछोहकंतिहकाओ
पुरोहो गिरोहो व्य भीमावयाणं
समे वेसम वेसमे सामकारी
गिही^१ को वि देवो मैहिहीसमिद्धो
सुरागारकिम्मीरकम्मावयारो

महावीरखंधारवित्थारवंतं ।
करी णिजियार्णिददेविंदणाओ ।
णिवासो पयासो पयासंपयाणं । 5
चमूपुंगवो दुग्गमग्गावहारी ।
महंतेण पुण्णेण रायस्स सिद्धो ।
परो को वि अण्णो णिकेऊहकारो ।

धत्ता—इय साहियभुवणहिं चोहहरयणहिं सहं णरणाहहु इच्छइ ॥

हयगयरहवाहणु चल्लिउ साहणु सयलु रहगहु पच्छइ ॥ ४ ॥ 10

5

मणिरहवरे चडिउ	ण इहु णहिं वडिउ ।
दढकडिणभुयजुयलु	अइवियडवच्छयलु ।
किं भणमि पुरिसहरि	वललुलियकुलसिहरि ।
सहुलवरखंधु	वहिरंधजणवंधु ।
अलिणीलधम्मेलु	तेलोक्कपडिमहु । 5
दूचकुरालेण	दहिचदणालेण ।
उक्खित्तसेसेण	मंगलणिघोसेण ।
संचलिउ भरहेसु	णं मयणु णरवेसु ।
धउ धइण पडिखलिउ	णरु हरिहिं दैरमालिउ ।
मेसिउ अहदेण	करहस्स सहेण । 10
करि धुणइ णियकंठु	महि णिवडिओ मैहुं ।
भरओ रउदेण	घित्तो घलहेण ।
भग्गाइ भायणइ	चुण्णहिं गोहणइ ।

4 १ B °विच्छोह° २ M गिरी ३ MBP महदी, ४ MP चउदह°

5 १ MB गहवडिउ २ MBP °धम्मिल्ल ३ P दलमलिउ ४ MBP मैहुं.

8 ढ दे विंदणाओ ऐरावणो हस्ती 5 a भीमावयाण भीमानामापदाम्, b पयासो प्रकटम्, पयासपयाणं प्रजानां सपदाम् 6 a वेसम विपमम् 7 a गिही गृही भाण्डागारिक 8 a °किम्मीर° विचित्तम्, b णिकेऊहकारो सुतधार स्थपति

5 10 a मेसिउ भय नीत, अहदेण अभद्रेण.

जपपक्षिणबेसाह	बेसेरि पिहिसाह ।	
परिगक्षिणबेसाह	हा भण्डि वासाह ।	15
बैरवद्वयपक्षिण	महुसीद्वयबिवाह ।	
रसकण्ठिण धूरंति	कह कह व विपरीति ।	
अर्धतपोवेण	तेसोककणेण ।	
पिरपोरबाहेण	सेणादिपाहेण ।	
पञ्चसुखपणेण	इहवृद्धरणेण ।	20
गिरिधो वृक्षिर्जति	मम्या पञ्चति ।	
दूरं सममोच	बहाधुममोच ।	
संवाप्तपुष्पाहं	पञ्चति सेव्याहं ।	
जपपाहिणमार्हं	गामार्हं वीमार्हं ।	
विषमार्हं मेढरं	विशेषकर्मार्हं ।	25
इहवृद्धिवासाहं	अर्धं वेसाहं ।	
पविस्तु रोहं	अहिधो विरोहं ।	
विषमविषमिषस्तु	सुखरसार्हं पञ्च ।	

यथा—पंडर पैगावह मदिबकि योकर विवरसरसुहर्मरं हो ॥

अथहेमइय रायं धुतु धुतु भाये साडी वं हिमबंतहो ॥ ५ ॥

80

6

वं सिहरिप्रपेहकविसेवि	वं रिसहवाहजसपयवावि ।
विममक भावह विमवाहवाय	मयरीकेय वं वमोहवडाव ।
वं विसमविर्ज्यमडसंति	धरजीपकि लोडी वंदकंति ।
वं विर्ज्योपकसहोपकुहिनि	वं कितिदि केरी कहुप वदिनि ।

५ MBPK वेहर १ MBPT अरपहुक MBP add after this जपकविममवेध. ६ MP add after this वमोच वदिप १ MBP वेडाह १ MB वेडाह. ११ P "वाहो

6 १ MBP वमोहवडाव १ P विममक मड संति १ G विर but glow विर.

18 अ वाह वर्म. 25 अ वेडाह विमोचवि 27 अ अदिधो विरोह वमोह विरोचक. 80 अ डी परिचयप्रद

6 80 "विममक मड संति" उद्भववापुमममो 4 अ "वोचक मडोच" अतिविर्ज्य वपम

गिरिरायसिहरपीवरथणाहि
विर्यलियकदरदरिवाडिय सच्छ
सिय कुडिल तहु जि णं भूइरेह
आयासहु पडिय धरित्तियाइ
पक्खलइ वलइ परिभमइ ठाइ
णिग्गय णयवम्मीयहु सवेय
हसावलिललयविइण्णसोह

णं हारावलि वसुहंगणाहि । 5
धरणिहरकरिंदहु णाइ कच्छ ।
णं चक्खवट्टिजयविजयलीह ।
सुपडिच्छिय णं पियसहि पियाइ ।
णियठाणभंसंचिताइ णां ।
विसपउर णां णाइणि सुसेय । 10
उत्तरदिसिणारिहि णां वाह ।

घत्ता—चदुरयणणिहाणहु सुट्ठु सुलोणहु धवलविमलमंथरगइ ॥

सायरभत्तारहु सइ गंभीरहु मिलिय गंपि गंगाणइ ॥ ६ ॥

7

जहिं मच्छपुच्छपरियत्तियाइं
धेप्पंति तिसाहयगीयपहिं
जलरिट्ठहिं पिजइ जलु सुसेउ
सोहइ रत्तुप्पलदलरुईइ
जहिं कीरउलइ कीलारयाइ
जहिं कंकहारणीहारछाय
जहिं पाणिइ पंडुत्त अच्छराइ
परिहाणु सहत्थे धरिउ ताइ
मायगहुं दाणे वहर णेहु
जडसगे विउसु वि जड जि होइ

सिण्णिउहुच्छलियइ मोत्तियाइं ।
जलविंदु भाणिवि वप्पीहएहिं ।
तमपुजहिं णावइं चदतेउ ।
पुणु सो जि णां संझारुईइ ।
दहिकुट्टिमि णावइ मरगयाइं । 5
कल्लोल हसपक्ख वि ण णाय ।
उप्परियणु दिहुं ण जंतु जाइ ।
जपिउ हो ण्हाणे पत्थु माइ ।
जा तहु धिवति तवसि वि सुंदेहु ।
कमलावासेसु सुयति भोइ । 10

४ MBP विवरियं ५ MBP उत्तरदिसं ६ MBP सलोणहु

7 १ MBPK °पुछं २ B °उच्छलियइ ३ MBP वप्पीहएहिं ४° MBP जड ण दिहु
५ MBPK सदेहु

6 b कच्छ कक्षा 7 a भूइरेह भस्मरेपा 10 a णयवम्मीयहु पर्वतवल्मीकात्, b विसपउर नदीपक्षे
जलप्रचुरा, नागिणीपक्षे विपप्रचुरा 11 b वाह वाहु

7 1 a परियत्तियाइ अमिहत्तानि 2 a तिसाहयगीयपहिं लपया शुष्ककण्ठे, b वप्पीहएहिं
घातकै 8 a जलरिट्ठहिं जलकाकै 9 a मायगहुं हस्तिना चाण्डालाना च, णेहु चिकणत्तं रागध 10 b
मोइ सर्पा

घत्ता—गिरिणहधगणियलहिं जलणिहिदिविर्गहिं वहरि छाय मसिद्विचिदि ॥
भुयणत्तयगामिणि जणमणरामिणि पद मरिम् तुद किचिदि ॥ ८ ॥

9

वणे जफिणी जफाफीलाधियारे
पधावतमायगदाणवुगध
विसंक्कं जसंक्कं कयारिंदम्मंक्कं
पकीरंति दूरं ममा भूमि एसा
गवक्कतणिगंतधूमोहवासा
विमुद्यति पहाणभागा दयाण
भरम्मणदेहा जहिच्छ वल्लहा
तरुणं तणाण पधावनि दासा
पदज्जति जाणाविहा भक्कमेया
सरिच्छेण दीहेण पथेण भग्गा
वल्लिज्जति दिज्जति गासा फरीण
पपेच्छति अण्णे धंय साहिणाणं
णं ससंति अण्णे णंदिम्मं काम
इमो वेसगे वेसरी लेउ चार
कंडुद्धगीवा वणंते पयट्टा
हले होउ जत्ताइ पत्ता णिविग्घ
इंजं जत्थ केणावि रीणेण वुत्त
सहट्टं सट्टं सदेव समिद्धं

तथो नमि गंगाणइंवारतारे ।
घुल्लतुल्लपालिद्धय चारुचिंयं ।
वल्लं गयमेणाटिणाणाइ थक्क ।
तटिज्जति द्रमाइं चंदोवहासा ।
गदज्जति मन्वारिमा भूगिमासा । 6
गयाणं पि दवत्तरवेणागयाणं ।
गया रासना गम्भीदिण्णमहा ।
पलिप्पति चुल्लिणिहिता हुयासा ।
णरा के रि भुंजेपि णित्तगसेया ।
पमुत्ता मुहं मेहिणीफडलमा । 10
तण भोयण म्माण्लेणं हरीण ।
पर्यपति अण्णे परंइं पयाणं ।
भमामो कह णिच्च गामाउ गामं ।
परेणेव धुत्तो परो वाग्वाग ।
लयापह्वं पाणिय लेति उट्ठा । 15
पिए पेच्छ द्रमाइ आगच्छ सिग्ग ।
मनेसाणिवास सचिंधोवउत्तं ।
इम पव गएण ठाण णिंरंइं ।

७ MBPT °पियलहिं

9 १ MBP झसंक्कं २ MB णिग्गति ३ MB वल्लिहा ४ MBP पवधति ५ M गाणपाण
६ K ण पेच्छति ७ ययंसाहिणाणं ८ M णमसति ९ MBP णरिंद मकाम १० MB कओउद्धगीवा, P
कओवुद्ध° ११ PK उट्ठा १२ MBP इम १३ BP विपद

16 वहइ छा य शोभां धरति

9 2 b °पा लिद्धय वक्षवेष्टितपताका 4 b च दोवहा सा मण्डपिका 5 a °वा सा गन्धा 9 b
णि सं ग सेया निर्गताहस्वेदा 11 a य लिज्जति यलिदानेन तोष्यन्ते 13 a कामं पट्टाण्डपृथ्वीप्रभाजना
भिलापम् 14 a चार जीवन तृण वा 17 b सवेसा णि घा स वेदयागृद्धसहितम्

यथा—विपयवह विरयवह मविपयवहयह सार् सन्नाहु कवह्वयह ।
अं सुंरवहसुंरवह वेह पुंरवह पदु सउहवह विरिसेव्यह ॥ ९ ॥

20

10

सामंत महासामंत केवि
सजादिवसिहृहेसमिह
हुय रयवि पुणु वि डमामिह भाणु
मयमयमकेय महाडिहमाणु
छत्तमयारधमहमाणु
सुत्तरिमेटीरयगहमाणु
जम्मारेलुववमिहमाणु
मरायपहाह बीडिहमाणु
मंसहंतिह मडवममह महेतु
मपेहहवहवररमाविपय
वायावाहयहसंकडेय
वकीसवमूवहरेरिवगु
मादहिवि विहयमिहिरवहकिपि
मंयोवममनोवीरगुपु
संचखिह विजयपुंहुहिविपाह

मंडविप महामंडविप तेवि ।
विप रयपसायविहव्यपुह ।
सममविपजमहजमहमाणु ।
हरिकाकावीरं पुण्यमाणु ।
पहरणविपुकरवहिं बीसमाणु ।
मवहरकामिविपयमिहमाणु ।
वेवपुडिपाह कवडिहमाणु ।
सौंरु सविहनु साहिमाह ।
अं वसुहावविपय पिचै वंतु ।
वपविपयहहसंदाविपय ।
वविपय सुतिह रंगारंकेय ।
वहहु पच्छर वनु वाहणु ।
केसविपिसौव अं विरिहविपि ।
करंविहिववावगुजपवमुह ।
सुरवहविसार रयाविपय ।

5

10

15

यथा—उहुंविपि मीयव कवरयवायव पुणु यकमयो वाहह ।
महिहरीरेविवासां माहययोसां पदु गौहवर पयहह ॥ १ ॥

१४ MBP हउवव हउव वेह पुहह १५MP विहमिह
10 १ MBP कं २ B omits वीविजवाणु ३ B omits this foot. ४ B omits this line ५ MP विपु वं. ६ B omits वमपुह ७ MBP वेवमकेय MP वेवविपेय ८ MB करि विहिव ९ MBPT वरपाह

10 5 ३ सममविपका विहविरवसपण ७ ५ वमोह कंर 8 ३ वसुहावविहव वसुहावविप विपु वह विप वणु 10 "ववह" वेवहरेठवह 15 ५ विहवमिह विहवमिह 16 ३ सुरवहविसार वृहिवि 16 उवरववावव वणुपुह

II

जहिं मंथिजइ अइयदु दहिउं
 जहिं कहुइ मयउ गोवियाइ
 नपेवि धरिउ मंदीरेण
 हो हो एलि गोविणि मइं जि रमइ
 मा कहुहि केयाकहुणीइ
 अइमएणं सिद्धिलीहउं देह
 तकाइं पमेय जि जहिं धियति
 घयदुद्धइं जहिं पंथिय पियति
 जहिं गोविइ पेच्छिउ वि नरपहाण
 मूरंगिउ तपु अविचिस्तियाइ
 महियइमुएपंकयरमणतण्ड
 जहिं कुर्णरिदइ रिद्धीउ जेम
 काएलियचससइ सुणति
 वचइ सकेयदु गोवि का वि
 जहिं दंति तालु कीलीपयासु
 जहिं सिंगसमुफगयतरवरेहि

थंसत्तणु कामु वि होइ ण हिउं ।
 दीहं गुणेण ण पिउ पियाइ ।
 परिभमइ णां घणघणकपण ।
 मयाणु ण तुह कामागि समइ ।
 इय गज्जिउ जहिं णं मयणीइ । 5
 किं दहिउ ण अण्णु वि मुयइ णेह ।
 गार्मीयण तकाहि किं करंति ।
 गयपएसम मूह णिइइ सुयति ।
 यच्छुल्लउ मेहिंवि घसु साणु ।
 घिउ दहिउं तगयणेस्तियाइ । 10
 जहिं नठिय णीसामुण्ड मुण्ड ।
 मंहेसिउ गलेहिं दुंज्जति तेम ।
 ण करइ घरकैमु वि सिर धुणति ।
 मज्झप्पसि यहुडिभया वि ।
 मडलिय 'मोय गायति गसु । 16
 दणीरिउ धीर धुरंधरेहि ।

घत्ता—त गोहं मुयतं गहणि चरतं हरिणसिंगसयकदहिं ॥

मयमासाहारइ कुहरागारइ विदुइ सयैरपुलिंदहिं ॥ ११ ॥

11 १ MBP अइयदु २ MBP यदुत्तणु ३ B मंदीरण ४ MBP गोविणि ५ MBP सिद्धिलीहय ६ B गानीय ७ MBP पंथिय जहिं ८ B नुराणेइ ९ MBP मणिवि १० MBP मूर-
 विउ ११ MBP अवचिस्तियाइ १२ M दंति १३ MBP महियीउ गलेहिं १४ MBPK दुज्जति
 १५ M घरकम्मु वि सिर, BP घरकम्मु सिर १६ MBP कीलानयासु १७ M गोय १८ MBP देवारीउ
 चार. १९ M समरपुरिंदहिं

11 1 a अइयदु आतिघनम् 2 a मयउ रविका, b ण पिउ पियाइ प्रिय प्रियया इव 3 a
 मदीरण रविकानिरोधकलोहयलयादिना, प्रियपक्षे, मन्दरतेन 5 a केयाकहुणीइ यस्याकविभ्या 7 b
 तकाहि तत्त्वविचारणे तर्क 9 b साणु द्या 10 a मूरविउ उत्कालितं तापितम् 11 b णीसामुण्ड निशब्ध
 रूपा, मुण्ड नधू 16 b धुरंधरेहिं शृपमे 18 मयमासाहारइ मृगमासाहारै

13

अहिवाभिउ राण चगरयण
 सुययणु अहगु तुरगरयण
 उग्गभिउ णहंगणि दुमणिरयण
 कइवयणेहिं सह सूरस्सु
 पहरणपरिपुणु मल्लमहनु
 चलपन्नयणधयउदललनु
 ओल्लयियकिंकिणिरणप्रणंतु
 सल्लिलणिहिम्मिल्लिधोइयपणहिं
 तत्तारिचम्मल्लट्टीहणहिं
 छक्कटपुहउत्तयाहिंयेण

आद त निह वयस मि दंढमयणु ।
 कणिरयणु म्हायल्लयंकरयणु ।
 आरुद्धउ मंदणि पुरिस्सरयणु ।
 ण माणस्सपंयइ गयहगु ।
 परिभमियच्चज्जिउरार इतु । ६
 णाणामणिक्किण्णिहिं पच्चलनु ।
 तियमिदत्त माणि धिरुद्धउ जणनु ।
 सुद्धमसुहवुल्लियतंगणहिं ।
 रहु कट्टिउ मारुयजयणहिं ।
 अत्तलोउउ जल्लणिहिं पन्निवेषण । 10

घत्ता—हरिणेण व गज्जर भग्गु ण भज्जर पटु ण कासु किं रक्खइ ॥

मरुद्धयक्कलोहिं चलभुयडालहिं रयणायस ण णवइ ॥ १३ ॥

14

उक्खित्तवइ व मोत्तियतंदुलारं
 भीण्ण व रायहु लइय धेल
 ण दोयइ जलमयगल सेरत
 माणिक्कइं पवरप्पयालयाइं
 णं धोहइ वटवाणलपेइवु
 सव्वार्ज्जउ जिह सगु धग्ग
 उम्मुक्कविधिहजल्लयस्सणेहिं

तोयइ ण अग्गंजलिजलारं ।
 वानइ व धिउल्लसल्लित्तसेल ।
 जल्लणरकिंकरक्कग्गहपुग्गंत ।
 ण वरिस्सइ तीरल्लयालयाइ ।
 ण वेदिवि रक्काइ जउंदिवु । ६
 पटुआणइ किंकर किं ण कएइ ।
 ण जपइ पायाल्लणणेहिं ।

13 १ P °वल्लियंक्क° २ MP °परिपुणु° ३ MBP विभउ ४ MBP °सल्लिल्लुणिदिमपणहिं,

14 १ P दोयइ २ MBP रसन, K गतत but corrects it to रगतं. ३ BP दरमइ
 ४ MBP °पईउ ५ MBP जवुदाउ ६ MBP सव्वार्ज्जउ

13 1 a अहि वाभिउ पूजितम् 2 a सुययणु शुक्वर्णम्, अहगु अमहम्, ६ लोद वल्लयय
 रयणु लोहल्लययवददन्तम् ७ a दुमणि° आदित्य 9 a सवारि सारथि ; च मल्लट्टी° कया

14 7 a °सणेहिं शब्दे, ८ पायाल्लणणेहिं वटवामुरी

गुण्य—बोमणपयस्योरवैद्यस्यतिथिकेचरभमिबधना ।

कद्विपतिरुद्वयकोद्वयकमागवअनकुसहा ॥ १ ॥

सुमहवपूयविरहसमुद्रमुद्रसिहिपिच्छविषयना ।

ययमपयवरयंकवेधिरियगुनामाममूचना ॥ २ ॥

होपवकविकेसवहिरुनवादनतवयययना ।

तिष्णानुद्वयपहरपविषीरिपमारिपमोरहविषया ॥ ३ ॥

हृद्यपवैतिवैतकयमविरुसंविषयवारवोरवा ।

तस्मैतवचररतपीनुप्यकविरुयकव्यपूरया ॥ ४ ॥

विसिपसरंतविमलसमियरविहवरवहवसमर्पया ।

वंसवितेसवावमुताहवमरीकहकरमाया ॥ ५ ॥

पीयसुपीयकुसुमरवसुपिपमहिहरकवर्मया ।

सवरीवययकमसरसंयकवैतुवरियार्थमया ॥ ६ ॥

हरयकमारकमविषयवअवहरविचारिष्यकायया ।

माया पदुसमीधि मवक्रियकर विविहाकिपाययया ॥ ७ ॥

गुहमववचविहिसपिपेहमहीयककम्यमाकया ।

ते अवलोद्वय कद्वेय अवतवर्तवाकया ॥ ८ ॥

वैतततवअविषययमुसियामोपमिहंतमहवर ।

वैतकसंगंतकटोक्तमकतियकवरवहवर ॥ ९ ॥

कव्यवसुमुतामयपोहरपुमुप्यकवियवीर्य ।

पया परिवयेव सह महिवह वारवरसरिपुवारव ॥ १० ॥

पदा—मावाविह साहय वयि तुपसाहय विसि पयविधि परमेसह ॥

ये किनु विनसासमि विर्य वृष्मासमि कववासेव वरसह ॥ ११ ॥

12 १ M has before this क्व पयडिवा १ MBP वयु १ MBP "वयमविन" ४ MBP "वि" ५ P "विहिव" १ MBP "वहिवविसिपोर" ७ M विषय T विषय but gloss तव वय MBP वि

12. २ "वयम" वि; कुसहा गुणना ८ तववववतं तववववतम् 11 "कद्वेयवा" "कद्वेयवा" 14 "विहिव" वि 20 "वुवारव वयना कव्यवसुमेववयम्

16

धनुवेयजाणुं परिछिण्णमाणु
णं कालं भासुरु कालदंहु
धम्मुज्झिउ पलयहुयासलीलु
पिच्छंचिउ चंचलु ण विहगु
अइदूरगामि णं परमणाणु
अइदीहायारउ ण भुयंगु
अइगुणिहि परंमुहु होवि गयउं
अइलोहघडिउ णं लुद्धंविचु
अइमोक्खगामि ण चरमदेहु
णावालउ ण तच्चिय महतु

वधेप्पिणु णिरुवमु किं पि ठाणु ।
णरणाहं पेसिउ वज्जकंहु ।
गुणकोडिविसुक्कउ णं कुसीलु ।
उज्जयगइ ण सुयणतरगु ।
अइसुद्धिवतु ण सुकझाणु । 5
अइप्राणहारि णं खलपसगु ।
णं माणुसु कुसमयर्मत्तिहयउ ।
अइगयणगमणु णं खेयरत्तु ।
अइकटिणभेइ ण णइपवाहु ।
हुंकारे चोइउ णं सुमतु । 10

घत्ता—मागहहु णिहेलाणि हरिणीलंगाणि खुत्तु कणयपुंखुज्जलु ॥

रइणिजियकज्जलि जउणाणइजलि णं पप्फुल्लिउ सयदलु ॥ १६ ॥

17

भूमंगमीसभिउडीहरेण
सुरसमरसहासमयकरेण
देवेण समुहपरिग्गहेण
भणु केणुप्पाडिय जमहु जीह
णायउलवलयविलुलंतु गीहु
भणु केण कलिउ मंदरु करेण
भणु केण खलिउ णहि भाणु जतु
भणु कासु करोडिहि रिट्ठु रसिउ

विप्फुरियदसणढसियाहरेण ।
दुणिरिक्खविचस्सखयंकरेण ।
तं पेप्पिक्खवि गज्जिउं मागहेण ।
भणु केण लुहिय खयकाललीह ।
भणु केण णिसुंभिउ धरणिवीहु । 5
उट्ठाविउ सुत्तउ सीहु केण ।
णिच्चिण्णउ प्राणह को जियंतु ।
भणु को कयतेंदंतंति वसिउ ।

16 १ MB °जाण २ MBP उज्जुय° ३ MBP अइसिद्धिवत्तु ४ MBP °पाण° ५ MBP
होइ ६ MBP °भति° ७ B लुद्धरत्तु

17 १ MBP विलुलंत २ M धरणिपीहु ३ MBP पाणहं ४ B रिट्ठु ५ P दत्ततयसिउ

16 4 b उज्जयगइ सरलगति 7 a गु णि हि शरासनान्मुत्तेष 10 a णा वालउ नौयुक्क, पक्षे
नमनशील तच्चिय नदीप्रवाह तात्त्विकथ, b सुमदु परममन्त्र 12 जउणाणइ° यमुनानदी

17 4b लुहिय प्रोच्छिता 5 a गीहु गृहीतम् 6 करोडि हि शिरोम्यनि, रिट्ठु काक,

किं विदुमयारं तदुं किं पठ
मा ज्ञेयदि महिषद तिष्ठन्महि
होर्प्यिषु अष्टाई पश्यु ताम
तद मुदर वंकिर इत समुदु

तेकीकपियामहु जासु ताद ।
तद तमिय पाप मज्जापेक्षि ।
पठ कंयमि महिषकि वसमि जाम । 10
मा किं पि करदि मच्छद रज्जु ।

पञ्चा—पारसु प मेहर जणु किं बोहर जणिय सहावहु ओसहु ॥

जसु जासु किं सायद अचसें सायद सो संमासर नियपपहु ॥ १४ ॥

15

तदधीमंयारं व सख्यभारं
कंयप्यिषु रप्यभारवभारं
छाप्यिषु पुत्रु तेसिबहिं तदि
रिडमबहु पछोहनि विवबरेव
अष्टोडिबर्बय विवसियेग
धर्यरिय बपहैर धरज बरज
संवाकिय सरिसरसायर्म
विबडिय पुरवर पापार मेह
बरवीरहिं जामहु विष्णु मिहि
हप्यिषु पुत्रु मुयबसविमहु
किं मेवरसिहद सख्यबर्बसिड

अहिसिबियतीर्यमावभारं ।
पहसप्यिषु बाप्यबोयभारं ।
संवेहिं सरोसहिं ओमवेहिं ।
अष्टाभिड धणुहुं धणुबरेव ।
महि बकिप विवपमिमावमुयंग । 5
विष्णासिय तासिय पविठुरंग ।
भासंकिरं जम बरसवज पवज ।
गज मयगळ मुडिवाकावजम ।
सुय कप्यर बर भवैमंतदेह ।
अवर नि बवंति हा बडु सिहि । 10
मज्जीयद भायर मीसें सहु ।
किं जगुं कयकिवि काकेम हसिड ।

पञ्चा—पापामि कयिबहिं महिदि जरिबहिं सभि सुरिबहिं कपिर् ॥

धणुमुजबंकारं अहरीमीरे जासु प डुपठं विपियडे ॥ १५ ॥

• MBP टेलेक • MBP दीपयिषु अष्टाभि १ व हु

15 १ MBP कप्यर १ M भासवज BP भासवद १ P बरवीर • MBP मुहि ५ MBP
मीमबहु १ B • विपियडे • MBP व बडु PK कपियर १ P विपियडे

18 का व द सखरः का व द सखरः

18 १ • वभाह जणमि ॥ १ मुडिब • जम 11 भावद कयकरीसि 14 नि वि ड जमम्.

16

धणुवेयजाणु परिछिणमाणु
णं कालं भासुरु कालदंड
धम्मज्झिउ पलयहुयासलीलु
पिच्छंविउ चचलु ण विहंगु
अइदूरगामि ण परमणाणु
अइदीहायारउ ण भुयंगु
अइगुणिहि परंमुहुं होवि गयउ
अइलोहघडिउ ण लुद्धंविउ
अइमोक्खगामि णं चरमदेहु
णावालउ ण तच्चिय महतु

वधेप्पिणु गिरुवमु किं पि ठाणु ।
णरणाहं पेसिउ वज्जकंदु ।
गुणकोडिविमुक्कउ ण कुसीलु ।
उज्जयगइ ण सुयणंतरगु ।
अइसुद्धिवतु ण सुक्कणाणु । 5
अइप्रौणहारि ण खलपसंगु ।
ण माणुसु कुसमयर्भत्तिहयउ ।
अइगयणगमणु ण खेयरत्तु ।
अइकट्ठिणभेइ ण णइपवाहु ।
हुकारं चोइउ णं सुमतु । 10

घत्ता—मागहहु णिहेलाणि हरिणीलंगणि खुत्तु कणयपुखुजलु ॥

इइणिज्जियकज्जलि जउंणाणइजलि णं पप्फुल्लिउ सयदलु ॥ १६ ॥

17

भूमंगमीसभिउडीहरेण
सुरसमरसहासभयकरेण
देवेण समुदपरिगहेण
भणु केणुप्पाडिय जमहु जीह
णायउलवलयविलुलतु गीदु
भणु केण कलिउ मंदरु करेण
भणु केण खलिउ णहि भाणु जतु
भणु कासु करोडिहि रिदुं रसिउ

विप्फुरियदसणडसियाहरेण ।
हुणिरिक्खविवक्खखयंकरेण ।
तं पेक्खिक्खि गज्जिउं मागहेण ।
भणु केण लुहिय खयकाललीहु ।
भणु केण णिसुंभिउ धरणिवीदु । 5
उट्ठाविउ सुत्तउ सीदु केण ।
णिट्ठिणणउ प्रौणहं को जियंतु ।
भणु को कयंतदंतंति वसिउ ।

16 १ MB °जाण २ MBP उज्जुयं ३ MBP अइसिद्धिवतु ४ MBP °पाणं ५ MBP होइ ६ MBP °भतिं ७ B लुद्धरत्तु

17 १ MBP विलुलंत २ M धरणिपीदु ३ MBP पाणहं ४ B रिदु ५ P दततवसिउ

16 ४ b उज्जयगइ सरलगति 7 a गु णि हि क्षरासनान्मुनेध 10 a णा वालउ नौयुक्क , पक्षे नमनशील तच्चिय नदीप्रवाह तात्त्विकथ, b सुमतु परममन्त्र 12 जउंणाणइ° यमुनानदी

17 ४b लुहिय प्रोच्छिता 5 a गीदु गृहीतम् 8 करोडिहि क्षिरोस्थिति, रिदु काक ,

मधु कन विहंसित मधु मातु केपेह विसधित कुलिसपातु ।
 पता—केपेह विहंसित एतु पारमिह सो मधु मधु न सुखर ॥ 10
 विधंसु जमापतु मीयत काजसु विहि वि धनु हई सुखर ॥ १७ ॥

18

एव मयिनि लेव कट्टि कपलु धाराखर भावर मेहजातु ।
 पडताडनकंधियमरबैसातु भसि करि करिमासिबर्तुपतु ।
 बहमुद्रिपिपीडित बहर बरि हस्तु न विहरि न बंसमाति ।
 बसुपंदर कसिमंडमसरिपु हरि कपिनि ठुडि छोदिपणु ।
 पड पेडिनि केव वि करन कोतु भासु को वि हनु हनु मरंतु ।
 मोणन मुसुंदि परेनु वि तिसनु केव वि करि करपड मिदिमातु ।
 बाधेनु सेनु हस्तु सति मुसुनु हनु सज्जनु कपेनु मुसुकुसनु ।
 केव वि मुसुनु केव वि विहनु केव वि मुसुनु कस वि मरंगु ।
 केव वि मडिनिह मुसुंतडीह केव वि करपडस्केव सीह ।
 केव वि संकोरन करह सरह कु वि बाहवि पारन नाम सरह । 10

पता—ता मागहमंतिहि कपकुडसेनिहि पचपेपियु उकारन ॥
 उवससहजवबहि तापदि पचपदि पावसिनिमुहु ओरह ॥ १८ ॥

19

तंदि विहिरै विहुरं भन्वपारं मुरजलुपचपरसेंतपारं ।
 विमतवबहु विविहमिरीसरसु विवकाखईहंसधिवसपतु ।
 पपहु मरहनु न बरसि जीई विच्छड दोहारं मरति तोरं ।

१ MBP वुड

18 १ MBP कपातु १ MBP हनु १ MBPK पतिह सिपु ४ P विहमातु ५ MBP
 पता १ MBP कपतु

19 १ P सिहि and glow वाये १ MBP केहिनु १ M कपपति. ४ M के नि. ५ M के नि.

11 विष्मिह मयिहनु

18 ४ ३ को नि न पतु एवकोपन ६ ३ मि मि मातु मीमाकोपनी (१). ७ ३ कं वतु कर्मीवना
 कुता ९ ३ न वि व नि मता

19 २ ३ का कपड कपडतु वाज वतु ३ ३ दो हई विवपति.

मणु रंजिवि जुंजिवि अवहिणाणु
पुणु अक्खिउ खल्लयणमइयवट्ठि
भो मागह किं जुज्झग्गहेण
जइ अल्लु ण इच्छहि तासु सेव
तुहुं एक्कु ण अवरइ सुरसयाइं
लिहियहु किं किं कीरइ विसाउ
ते वयणे सो पैरिमुक्कदप्पु
अवलोयवि सरलिविपंतियाउ

दक्खविउ ससामिहि गपि वाणु ।
उप्पण्णउ महियलि चक्खवट्ठि । 5
मुइ पहरणु किं विणडिउ गहेण ।
तो तुम्हइं णउ अम्हइं मि देव ।
तहु मदिदि दासत्तणु गयाइं ।
दीसइ पणविवि रायाहिराउ ।
थिउ मंतपहावे णाइं सप्पु । 10
भावेप्पिणु मंतिपउत्तियाउ ।

घत्ता—मागहिण अगावे सविर्णयभावे चक्रेण व दिवसेसरु ॥

पणविवि थुइवयणहिं णाणारयणहिं पूइवि दिट्ठु णरेसरु ॥ १९ ॥

20

सविहवविम्हावियसयमहेण
जय भरह महागयलीलगामि
तुहुं इंदु इंदरिद्धीसणाहु
तुहुं जमु जमकरणु ण का वि मंति
तुहुं घणउ धैणउ सुहिणिहियकामु
ईसाणु महेसरणवियपाउ
तुह असिजलधारइ हरियछाय
तुह असिजलधारइ उद्धसासु

विहसेप्पिणु योल्लिउ मागहेण ।
तुहुं इह जम्महु महु परमसामि ।
तुहुं हुयवहु अरिवरदिण्णडाहु ।
तुहुं वरुणु सयलजणविहियसंति ।
तुहुं पवणु पवलवलदलणयामु । 5
तुहुं एक्कु जि जगि रायाहिराउ ।
अरिणरवइ तरु के के ण जाय ।
वड्डारिउ भुवणंतरि ण कासु ।

६ B किकर ७ K पविमुक्क ८ MBP सरलियपतियाउ ९ MP add after this भरहेसरायणाम-
कियाउ, सुरणरखेयरभय(M सय)गरियाउ, ता तेण वि चित्ति चमकियाउ, वाएप्पिणु अक्खरपतियाउ,
B adds भरहेसरायणामकियाउ, जुझणिजियरवियरकतियाउ, ता तेण वि चित्ति चमकियाउ, चक्खइमरहणाम-
कियाउ १० M अकुडिल

20 १ MBP °विभाविय° २ MBP °दाहु ३ MBP घणइ ४ MBP महीसर° ५ B omits
this line ६ MPK अहिरवइ ७ B omits this line ८ MP उद्धसासु

5 a °मइयवट्ठि संचूरक 6 b मुइ मुख, गहेण पिशाचेन 9 a लिहियहु भवितव्यताया 11 a
सरलि विपतियाउ वाणलिखिताक्षरपक्षय

20 5 a घणउ लक्ष्मीदायक कुवेर 7 a हरियछाय हतमहातमस, अन्यत्र नीलवर्णा 8 a
°सासु उद्धवास सत्य च

तुह असिद्धसमाप्ति परिच्छेदति यदुत्तमिह वि रयपादर तर्षति ।
 तुह असिद्धसमाप्ति महादुर्गा रिद्धयदुर्गपर्वसुपरिदुर्गा । 10
 तुह असिद्धसमाप्ति कुक्षि असोढ हृष्य विधि विप मुत्तमोढ ।

यत्ता—तुह अत्र पयावह पदममहीवह महिवाहर्हि मायि मायिड ॥
 ताराजम्बवर्हि वय पयवर्हि पुर्णैर्दत्त विह सेविड ॥ २० ॥

इय महापुण्ये तिस्रिमाहपुरिसगुबाईकारे महाकापुष्करपर्वतविरह
 महामन्ममराशुमन्विप महाकप्ये मागहपसाहर्ष नाम
 बाणमो परिच्छेदो समसो ॥ १९ ॥
 ॥ सेवि ॥ १९ ॥

XIII

सोहिवि मागहु गैहविसमु णविवि पसिद्धसिद्धिण्यारहो ॥
रजिवि सीहु व चरतणुहि भरहराउ गउ दाहिणदारहो ॥ धुवक ॥

I

घरणीसरो चलइ	गरुडद्धओ घुलइ ।	
सिमिरं समुल्लइ	धुलीं णहे मिलइ ।	
सुरसिहरिहर कमइ	पडिवलइं उवसमइ ।	5
हरिवयणलालाइ	करिदाणवेलाइ ।	
जणजणियसकेण	तरोलपकेण ।	
चरणाइ लिप्पंति	हारोहिं गुप्पति ।	
अइगरुयभारेण	सामतचारेण ।	
दसदिसिवहं भमइ	पुहईयलं णमइ ।	10
णाइणिहिं णउ रमइ	विसवाणिय वमइ ।	
कइ कँह व भरु सहइ	मउ मुपइ गइ महइ ।	
फणिपुगमो तसइ	लवणघो रसइ ।	
णरवइभुण वसइ	रणजयसिरी हसइ ।	
पराणिवजल गसइ	विसमत्थलिं कसइ ।	15
वरवाहिणी चरइ	हुँगा पि पइसरइ ।	

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza —

तीप्रापदिवसेपु वन्धुरहितेवैकेन तेजसिना
सतानक्रमतो गतापि दि रमा इष्टा प्रभो सेवया ।
यस्याचारपदं वदन्ति कवय सौजन्यसत्याम्पद
सोऽय श्रीभरतो जयत्यनुपम काले कलौ साप्रतम् ॥

GK do not give it

1 १ P सहेप्पिणु २ MB गहिवि समु, P महिवि समु ३ P सुरसिहरि संकमइ ४ MBP कइ
वि ५ M दुग्गे पि

1 1 गह विसमु ग्रहे आक्रमणे विपम, °णेयारहो° प्रापकस्य 5 b पडिवलइ दायुसैन्यानि, 6 b
°वेलाइ प्रवाहेण 11 b वाणिय जलम् 12 b गइ महइ कुत्रापि गन्तुवाञ्छति 15 b कसइ पूर्णकरोति,

कइलुअइ कइहिं पसंसियउ
परलच्छीगहणुकंठियउ
अत्यमिउ सूर तमभरियदिसि

थिय हैरिवरि हरिवरभूसियउ ।
घणि साहणु सयलु वि संठियउ । 10
थिउ णिसि उववासं रायरिसि ।

घत्ता—महिणाहेण समचियइं णियकुलविंधइं चावइं चकइं ॥
झाइउ मंतु महारिहर दीवकंवाडइ विहडिवि थकइं ॥ २ ॥

3

तहिं अवसरि दिणयर उग्गमिउ
रहु वाहिउ सहसा तेण किह
कसपहरतुरियपेरियतुरउ
विरसियरहगरोसियउरउ
मणिघटाजालहिं झणझणइ
कइवयजोयणइ महासरहो
पव्वालंकरियउ णं वरिसु
सुविसुद्धवंसु गुणणमियतणु
गुणु कडिवि लीलइ जे णियेउ
रेहइ सर दिणयरणिम्मलहो

भरहेसं जिणवरिंदु णमिउ ।
सपुण्णमणोहरं पुण्ण जिह ।
मरुफसफारफरहरियघउ ।
पहरणपरिपुण्णसुवण्णमउ ।
भडभारकंतउ णं कणइ । 5
जलु लंघिवि पुणरवि सायरहो ।
कोडीसर किं ण जणइ हरिसु ।
सुकलचु व पहुणा लइउ धणु ।
कर सवणि ससि व्य सहइ थियउ ।
णवणालु व कुंटलसयदलहो । 10

घत्ता—कहइ व जाइवि णरवइहि महु सगेण वि चइइ खलत्तणु ॥
गुणथिरकरपरियडियउ कण्णालंगु चावकुडिलत्तणु ॥ ३ ॥

4

जीयाविमुकु जीवियहरणु
बहुलक्खगाहि सो मग्गणउ

ण दिणयर खरपसरियकिरणु ।
ण पेसिउ दुर्यउ अप्पणउ ।

१ MBP हरिवरेहिं हरि भूसियउ १० MBP दो वि

3 १ MBP ° मणोरह ° MBP जोजियउ ३ MBP ° लग्गवाव°

4 १ MBP जीयाइ मुक्क ° MBP दवर

18 दीवक वा डइ जम्बूद्वीपकपाटानि

3 8 a क स° चर्मयष्टिका, b मरुफ स° वातस्पर्श 6 a महासरहो महान् सर शब्दो जल च यस्य स समुद्र 7 a पव्वाल क रियउ पूर्वभिरमावास्यादिभि ग्रन्थिमिथ्य अलकृतम् 9 a णियउ नीत्त, सवणि कर्णे श्रवणनक्षत्रे च

4 1 a जीया विमुकु प्रत्यक्षया विमुक्क 2 a मग्गणउ मार्मणो बाणो याचकश्च

विचरित्त सारमंडवि वरतणुहि
 कंसवर्षुस्त्रेणुजोहयत
 सुरणुवप्यधीकाहयत
 अरविर्बर्बिमलाजहो
 मरुतु जो जो य सेव कर
 ता तेव जि ते वि समिच्छियत
 गत तहि जहि सारं अछर मरुतु

कह कह व य समार तहु तणुहि ।
 सो तेव लपयि पमारवत ।
 विहुरं वरयणामपपरं ।
 महु भाइजिनेसरबंदपहो ।
 सो सो अहि नद भमर वि मर ।
 योवत नियणुतु हुगुच्छियत ।
 मयवरमसि जंभियसरु ।

यत्ता—यन्त्रियि जाठं सगोशु कुरु पजविड सो मरिवेहमत्तारु ।

हुरं मि तुच्छयमफक्षि कम्पार सिरि कह परपडिहारु ॥ ४ ॥

5

इंदीवरलोयणु सच्छमणु
 हुर विमाहु विमाहु विमाहो
 परं सामिय संधिर्न जातु सव
 पिठ जातु अण्डिु किमिडु सारं
 कर कर यवत हापबडि
 कर सुरवरबीडहसंमवारं
 कर वेडपरं कर कंठवारं
 कर विध्वर्गं नत्परं वरं
 यस्तु व जीवहु यस्तुवणु
 तं विस्तुयिनि मरुं बोत्तिवत
 कजाहि कम्पणु निययवत

पमवार वरतणुमहिलुक्षियतु ।
 हुर संघायु जि कारु महो ।
 बैडसंविड मयवार तहु पमव ।
 पुष्पहि विनु पहु को कर परं ।
 जं मरिपुक्षियत हापबडि ।
 कुरुमरं विधं विव नवजवारं ।
 कर विध्वर्गं सत्परं यवजवारं ।
 कर योत्तरं वरं नामरं ।
 परमसर हुरं जि मस्तु सणु ।
 यत वि अवर वि मोक्षेक्षियत ।
 अछरि महु होरवि जावयत ।

१ M तत v MP "पुडैयु" ५ MBP मरिजुवतारु ९ MBP हुरयि वयतुच्छयि

5 १ MBP हुर २ B छवि ३ M वरवविड v MBP ईरं ५ MP नोक्षियत

9 ६ वरहु लय 11 हुरहि वि वयवमरि.

5 9 विमाहो कौराव ६ महो वयवमरि. 8 ६ वरसंविड वपु कौराव संघा: कंवि-
 वयवमरि वरव यम.

घत्ता—पूरइ महु महिवइ जसेण दविणविल्लासु वासु किं वणिणउ ॥
उत्तमु जगि अहिमाणु धणु एउ वयणु किं पई णायणिणउ ॥ ५ ॥

6

पप्फुल्लियदुमरसदावाणिय	सुंर्यपिंछरिंछकोट्टावाणिय ।
वरतणु सुरु जिणिवि सुहावणिय	वेइय धरेवि दीवहु तणिय ।
पुणु जयदुंदुहिसइहु मिलिउ	सहु रापं साहणु संचलिउ ।
पच्छिमैदिसि संमुहु धाइयउ	सव्वत्थ जि कहिं मि ण माइयउ ।
हयमुहपयलियफेणुजलउ	सव्वत्थ जि भँडथडसंकुलउ ।
सव्वत्थ जि गयमयसिंचियउ	सव्वत्थ जि धयमालंचियउ ।
सव्वत्थ जि गेज्जावलिरणिउ	सव्वत्थ जि वदिर्विंदह्णुणिउ ।
सव्वत्थ जि छत्तणिरुद्धदिसु	सव्वत्थ जि सुराहिगधंसरसु ।
सव्वत्थ जि भमियभमिरभमरु	सव्वत्थ जि चलियचचलचमरु ।
सव्वत्थ जि परिघाँइयअमरु	सव्वत्थ जि सचरंतत्तयरु ।
सव्वत्थ जि कामिणिगीयसरु	सव्वत्थ जि विलसियकुसुमसरु ।

घत्ता—रुप्फ मलतु दलंतु गिरि जल्लु सोसंतु णिवेण णिवेइउ ॥

साहणु एम चलंतु पहे सिंधुमहाणइदारु पराइउ ॥ ६ ॥

7

अवल्लोइय रापं सिंधु किह	विब्भमधारिणि वरवेस जिह ।
दावियमय णावइ हतिरिहउ	विबुहासिया वि सगहियजह ।
गिरितवासिहि णं परिघुलियजह	रणवित्ति व सोहइ ब्रसपयड ।

६ M विलास ७ MBP अहिमाण° ८ MBP पइ किं

6 १ MP सुयरिच्छपिच्छ°, B सुयरिच्छपिच्छ° २ B °दिससमुहु ३ B णडथड° ४ M वंदविंद°

५ MBP °गधरसु ६ MBP °भमरिभमरु ७ M परिघाविय° ८ B विगोइउ, P गिवोइउ

7 १ B हतिरिहउ

12 वासु व्यासो विस्तर

6 1 a पप्फु ल्लि ये त्यादि—प्रफुल्लितैर्द्रुमैरुपलक्षिता रसाया धृतिव्या दा व णि या वेदिक्का, b °को
व णि य कौटुकोत्पादिका 8 b °सरसु शृगारादियुक्तम् 9 a °भमिर° अमणशीला ,

7 1 b वरवेस वरा वेद्या

जिह जिह गलंति जामिणिपहर
जिह णहि सुक्कंगमु दरिसियउ

तिह तिह विइण मउरइपहर ।
तिह विडि सुक्कंगमु दरिसियउ ।

यत्ता—ता चकउलहं पंकयहं तवकिरणपूरियमुवणोयर ॥

विरयहं णरणातीयणहं जीविउ देंतु समग्गउ दिणयर ॥ ८ ॥

9

सिंधूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे
फोइलकुलकलयालि वियसियसयदलि रंभवणे ।
उववासु करेप्पिणु जिणु पणवेप्पिणु पीणभुउ
णरवइ जयमायर कयणियमायर रिसहसुउ ।
जेमँभउहाभावइं चकइ चावइं जियरणइं
अहिअचिवि दिव्वइं हयरिउगव्वइ पहरणइं ।
णं भूरिपहायर चंडु दिवायर णहवडिउ
मणिगणवेयडियइ कचणघडियइ रहि चडिउ ।
पेरिय जोत्तारें हरि हुकारें तिर्य्यमइ
मणपवणमहाजव अमुणियखुररव गयणगइ ।
कयभडकडवंदेणु वाहियसदणु चैवलघउ
करिमयररउदहु लँवणसमुदहु मज्झि गउ ।
ता खंचिउं रहवर भेसियजलयर सलिलवहे
जोयंति सुरासुर किंणर खेयर जर्क्ख णहे ।
रापं सुइसोन्नर णियणामक्खरभूसियउ
थिर ठाणु णिवंधिवि सरु गुंणि संघिवि पेसियउ ।
अवरणवणाहहु लच्छिसणाहहु पडिउ घरे
तडिवंदु व भीसणु काणणणासणु गिरिसिहरे ।

5

10

15

५ MP सुक्कंगमु ६ MP सुक्कंगमु

9 १ M विकमइ, B विकमइ २ P °महणु ३ MBP धवल° ४ MBP मज्झि समुदहु सो जि
गउ ५ MBP खाचिय° ६ MBP थक् ७ P गुणु

12 b वि डि विटे

9 ४ जयमायर विजयलक्ष्मीकर 8 °वेयडियइ खाचिते 9 जोत्तारें सारायिना 15 सुइ-
स्रोक्खर श्रुतिमुखदानि 17 अवरणवण° पाथिमसमुद

अहङ्कारिण जाई सुखमिमाह
 यमुद्धति व दीप्त मुक्तसर
 कमलेन कोसलपिण्ड व धर
 अहङ्कारिण यमुद्धतिमाह
 रीतवयावसिर्पुत्रिय
 यं महिमविशिष्टवदेत्तरिय
 गवहपर्वद्वारपरिमितिय
 आ मिमित्य भवि एववापयो

अहङ्कारिण व पंचमिमाह ।
 अहङ्कारिण सपिण्ड जाई अह ।
 आ महिमविशिष्टि अमुद्धति ।
 अहङ्कारिणपिण्डि इति ।
 एवहंतकुमुदपरिपुत्रिय ।
 अहङ्कारि व अहङ्कारिण ।
 अहङ्कारिणपिण्डि अहङ्कारिण ।
 एति पुति व एव वापयो ।

यत्ता—वाहि तीरि मुक्त सिमित वामत्वविरुद्धि संपत्त ।

यं वीरविशिष्टिकाभिनिहि विवदित मित्र विरुद्धि रत्त ॥ ७ ॥

8

यत्तामिह विवेसि विह संज्ञा
 विह कुटिल व दीप्तपिण्डि
 विह संज्ञापयं संज्ञित
 विह मुक्तपुत्र संज्ञापित
 विह विमि विमि विमि विमि विमि
 विह एवविहि कमल मङ्गल
 विह यत्त कमल विज्जा
 विह वीर विवदित वित
 विह कुटिलपुत्र मङ्गल विवदित
 विह वीर पाल मङ्गल

विह पंचमि विमि माभिपत्त ।
 विह कंठाहृत्पिण्डि विमि ।
 विह वेदापयं संज्ञित ।
 विह अहङ्कारि संज्ञापित ।
 विह विमि विमि जाई मिमि ।
 विह विरुद्धि विवदित मङ्गल ।
 विह अहङ्कारि विज्जा ।
 विह विवदित करपत्त विह ।
 विह वीरविमि मङ्गल विवदित ।
 विह वीर मङ्गल मङ्गल ।

१ P अहङ्कारि १ MP "अभिनि पंचमि" ५ MBP वीर. २ P "अहङ्कारि" १ MBP वीर
 ५ MBP "विहृति. MBP अहङ्कारि"

8 १ P वीर २ B omits this foot. १ MBP "वैर" ५ MBP अहङ्कारि मङ्गल. M
 records ५ P अहङ्कारि for मङ्गल, P अहङ्कारि मङ्गल

7 ५ अहङ्कारि कुटिल 8 ५ "अहङ्कारि" वीरपिण्डि 10 ५ अहङ्कारि अहङ्कारि वीरपिण्डि व अहङ्कारि कुटिल.
 11 ५ एववापयो अहङ्कारि ५ अहङ्कारि अहङ्कारि अहङ्कारि 18 मित्र वीर; विरुद्धि अहङ्कारि

8. 1 ५ "अहङ्कारि" विमिपिण्डि. १ ५ "अहङ्कारि" विमिपिण्डि

जिह जिह गलति जामिणिपहर
जिह णहि सुकुंगमु दरिसियउ

तिह तिह विइण्ण मउरइपहर ।
तिह विडि सुकुंगमु दरिसियउ ।

घत्ता—ता चक्रउलहं पंकयहं तंवकिरणपूरियभुवणोयरु ॥

विरयरुं णरणारीयणहं जीविउ वैतु समुग्गउ दिणयरु ॥ ८ ॥

9

सिंधूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे
कोइलकुलकलयालि वियसियसयदलि रंभवणे ।
उववासु करेप्पिणु जिणु पणवेप्पिणु पीणभुउ
णरवइ जयमायरु कयणियमायरु रिसहसुउ ।
जैमैभउहाभावइं चक्रइ चावइं जियरणइं
अहिअचिवि दिव्वइं हयरिउगव्वइं पहरणइं ।
णं भूरिपहायरु चंडु दिवायरु णहवडिउ
मणिगणवेयडियइ कंचणघडियइ रहि चडिउ ।
पेरिय जोत्तारै हरि हुंकारै तिर्यक्कमइ
मणपवणमहाजव अमुणियखुररव गयणगइ ।
कयभडकडवंदणु वाहियसंदणु चैवलधउ
करिमयरउइहु लवणसमुइहु मज्झि गउ ।
ता खंविउं रहवरु मेसियजलयरु सलिलवहे
जोयंति सुरासुर किणर येयर जर्झ णहे ।
राणं सुइसोक्खर णियणामक्खरभूसियउ
थिरु ठाणु णिवधिवि सरु गुंणि संधिवि पेसियउ ।
अवरणवणाइहु लच्छिसणाइहु पडिउ घरे
तडिदंहु व भीसणु काणणणासणु गिरिसिहरे ।

5

10

15

५ MP सुकंगमु ६ MP सुकंगमु

9 १ M विकमइ, B विकमइ २ P ०मदणु ३ MBP धवल ४ MBP मज्झि समुइहु सो जि
गउ ५ MBP खचिय ६ MBP यक् ७ P गुणु

12 b वि डि विटे.

9, 4 जयमायरु विजयलक्ष्मीकर 8 ०वेयडियइ खाचिते 9 जोत्तारै सारायिना 15 सुइ
सोक्खर धृतिसुखदानि, 17 अवरणव ० पश्चिमसमुद्र

ना विषयिष्ठं महिषमि गहमा करयमि ब्राह्मणं	1
सुखैर्गन्धार्गं बाणु पद्मार्गं जाह्नवः ।	20
ता तमि विगिरिं तिहिरिं विदुर् अकगर्गं	
के मत्ताविभर्गं मत्तात्रुर्गं जाह्नवः ।	
हर्गं बाणयमर्गं बाणयमर्गं बाणयमर्गं	
महु मगदहु कर्गं अगमयगार्गं मय जर ।	
मुर्गं करहि गिरार्गं परिहवगार्गं ना त्रिविहि	25
के ना अगिवापिष्ठ अगिगिरिमापिष्ठ मुर्गं विपहि ।	
हृय मेव यपार्गं कर्गं विपार्गं गयत् तहि	
अमर्गिगमापिष्ठ पुर्गहि यपार्गं विपार्गं अहि ।	
पविमुर्गवर्गार्गं विदु पद्मार्गं मगदु विदु	
मविर्गं मयगार्गं सुहवगिर्गार्गं अर्गुं त्रिह ।	30

प्रता—कुर्गुमर्गं कर्गकगर्गकर्गं वार्गवर्गं मि परवार्गवार्गवार्गो ॥
 रयवर्गं वार्गवर्गं मूयवर्गं विग्वर्गं मेव वार्गवार्गवार्गो ॥ ९ ॥

10

सुपमिपुमविहि हर्गमिप यविहि	परवर्गु कविहि ।
पुष्पापरं गुमिर्गिगिर्गार्गं	वर्गवर्गिगार्गं ।
वपुर्गिगिर्गिर्गिर्गार्गं	सुपेवार्गिगार्गं ।
वर्गार्गं मग्गवर्गार्गं तार्गं	वार्गवार्गिगार्गं ।
कर्गवार्गं विगिर्गिर्गिर्गार्गं	वर्गवर्गिगिर्गार्गं ।

१ MBPK गुरार्गं १ MBP ता १ MBP कुर्ग ११ MBP "वार्गवर्गं २२२ ॥ एतेषां एतेषां एतेषां
 वा ११ MBP वार्गु ११ P वार्गवार्ग वार्ग
 10 १ M वार्ग BPT वार्ग १ MBP वार्गवार्ग

२० वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग
 वार्गवार्गवार्गवार्गवार्ग

10 1 वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग
 वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग वार्गवार्ग

मान्त्र मागद धंगग मग	कालिग कोगे ।	
पारम यच्छर गुञ्जर यराट	कण्णाट न्नाट ।	
आहीर कीर मधार गउट	णेवान् चोउ ।	
चेईम धेग मरु हुदरेडि	पचाट पोंट ।	
कौफण केरल कुग कामरुय	मिहल पाय ।	10
जालधर जायत्र पारियाय	णिजिणिधि गय ।	
पञ्चतयासि णामिग लेधि	णियमुद धेधि ।	
हेलोइ तिरुंटावणि हरेवि	अमि करि कंगेवि ।	
यिजयदह सुमुण् चण्डि गउ	मंणासहाउ ।	
दियहिदि पत्तु त' मिहिरि पेम	मणि मोक्कु जेम ।	15
दिट्टउ महिएग मुंमरेण सुमर	हुंरंग कुदर ।	
सरंगेण यिहियि भीममगु	समहेण समह ।	
कलययिणण फलैययिगु	तुगेण तुगु ।	
गुरुयत्तु गरुययत्तुम्भयेण	भावर धिंरण ।	
गजियगउ पटिगजियगणणं	उच्चियधरण ।	20
हिसियत्तुंरु मत्तुरंगण	सरधोरण ।	
अणंतससाधउ सायण	पालियरण ।	
आन्धउ पत्तिउ पत्तियेण	यिजयण कण ।	

घत्ता—गिरि मोदइ दीहत्तणेण पुत्तायस्समुंरु सपत्तउ ॥

तिदि तिदि मंडदि मेइणिदि मेरादइ घ दइये धित्तउ ॥ १० ॥ 26

१ MBP जुग ४ MBP दुरंदि ५ B हेलाइ निगजाणि ६ MBP तह ७ MBP मुनि, K न्नि
but corrects it to मुनि ८ MB मत्तुरेण मत्तु ९ B पत्तिययिगु १० GK add after it
अन्धयधउ ११ MBPT मत्तुरंगण १२ MB मत्तु^०

16 a म्मरेण शोभास्येण; मुसर भोगन सर पानीय गरोवणे पा यव, b कुदरेण पृथिवीयेण पर्वतेन,
कुदर उप 17 b समहेण पुजाया सहितेन, समह मत्तुमुण 21 b सरओरण सज्जो गिरि
तत्रावुरणे 22 a गायण रुक्मीपदेन, b पालियरण पालितप्रतिशे 28 a पत्तिउ पृथिवीय,
26 मेरादइ मयादाकरणे दण्ड

तदि नैवसति शुद्धास्तु ब्रूते
 आवासिष्ठ महापि सैवगु बलु
 महिस्रदसमहकैवलिष्ठ सद्य
 वास्तुभियार् पिच्छरं पच्छर
 गोमंडसेहि विष्ण्वरं तप्यरं
 कृष्णवियार् कोरुक्कुच्छरं
 विष्णुकरं मुच्छरं सप्यकरं
 मयब्रह्मरं वंभरं विष्ण्वरं
 सुत्तरं रत्तां रैवहपदि
 विष्णुकरिहि विष्णुविरि विष्णुकरि

शुद्धादवरकरंकिरेसुरं ।
 कविस्वपहरककुक्षियद कमु ।
 कम्मवरकुष्ठापदि विष्णु तठ ।
 विष्णुवियार् सद्यप्यकरं ।
 सुसुम्भरियार् नंदववप्यरं ।
 मयतसियार् रसियार् वाहकरं ।
 वृक्षविष्णु वयार् सद्यप्यकुच्छरं ।
 यत्तदि तेत्तदि रैवहा मयार् ।
 परमिदुक्करं नवनेहोहपदि ।
 सुहृदहि विष्णु वंभंति हरि ।

प्रसा—अपसिति लब्धासिध सुहृद यवहि जपवप्य विद विष्णुसह ॥
 येष्मिहि मर्यादिविष्णुसह कुर्वुंप्सर्वतर्हि न विष्णुसह ॥ ११ ॥

इय महापुण्ये विस्मिन्महापुरिसगुणात्मकारे महाकरगुण्यमंतविरहय
 महामन्त्रमर्यादुमन्त्रिय महाकप्ये विष्णुवक्तुवप्यसाहर्षं नाम
 तेष्टमो परिष्केभो समस्तो ॥ १३ ॥
 ॥ संधि ॥ १३ ॥

11 १ MBP अपरप्राप्त्यु पप्रति. २ MBP "वक्त्रिह पुरि १ MB ब्रह्म" ४ MBP वर्यिह
 ५ MBPK वृक्षरं ६ MBP वृक्षरं. ७ MBP रसियार्. ८ MBP "वक्त्रिहरेहि ९ MB वंभं P वंभं.
 १ BPK गुण्यसह

11. ४ अ वा कु वि ना द नवनेहियारि; ५ व सद्यं सद्यपि ६ अ "महकैहि वप्यरं; ७ अ वि-
 तु ब्रह्म वंभियारि.

3

दुवई—ता मजीरहारकेऊरकिरीडफुरंतभूसणो ।

अमरो अमरसमरसंघट्टविहट्टियवहरिसासणो ॥ १ ॥

छट्टियावलेवो	इच्छियंधिसेवो ।	
रिद्धिवुद्धिवंतो	आगओ तुरंतो ।	
भूयभक्तिकामो	तगिरिदणामो ।	६
सेलसिगवासो	सुद्धसेयवासो ।	
घंदिओ णरिंदो	तेण चीरंचदो ।	
हारमिदुधामं	दिव्वपुप्फदामं ।	
कंकणं किरीड	कुभमभणीडं ।	
पंडुरं पसत्तं	चारु हारि वत्तं ।	10
कुंजरारिवूढं	हेमरर्णवीढं ।	
हिच्चकंजलीलं	भम्मदडणालं ।	
सव्वलोयमोल्लं	कित्तिवेल्लिफुल्लं ।	
चामरेण जुत्त	णिम्मलायवत्तं ।	
हासहंसवण्णं	राइणो विइण्णं ।	15
मंगलं पहाणं	तित्थतोयण्हाणं ।	
रुक्खरोहियासे	तम्मि भूपणसे ।	
अच्छिओ छमासं	देवदारुवासं ।	
घल्लरीललतं	माणियं घणंतं ।	
णिग्गयगिग्गजाल	मंदधूममालं ।	20

3 १ MB °सहट्ट° २ MB छट्टिया° ३ P भूप° ४ MB चीरवदो ५ MB °मडणीड ६ MBP हेमवण्ण°

3 1 °केयूर° बाहुरक्ष 2 °सघट्ट° भेलापक संमदो वा, °सासणो सा लक्ष्मीत्तस्या स्वन आशावचन वा 3 ६ इच्छियंधिसेवो इष्टा पादसेवा यस्य स 5 a भूय° भूप, ६ तगिरिदणामो विजयार्थनामा, 9 ६ अभणीडं जलमृतम् 11 ६ हेमरर्णवीढ हेमरत्नपीठम् 12 a हिचकंजलील इता अनुकृता कसस्य पद्मस्य लीला बोभा येन, ६ भम्म° सुवर्णम् 17 a °रोहियासे °प्रच्छादितदिशि 19 a घल्लरी° वल्ली,

5

दुवई—कज्जलणीलवहलतमपडलविणासियणयणमग्गण ।

वच्चइ वाहिणीह ण सुहेण महीहरकुहरदुग्गण ॥ १ ॥

इय चित्तिवि फरि दोहवि कागणि
ते सोहति विवरघरभित्तिहि
फरणियरेण ताहं तमु सारिउ
घहइ सेण्णु जयदुंदुहि चज्जइ
उग्गमंतपडिरवगंभीरहि
संदणमुक्कचक्किकारहि
महिहरविवरमग्गु ण फुट्टइ
इंदु वरुणु वइसवणु विसैरइ
सायरु कह व ण महीयलु रेल्लइ
चंदाइच्चुयलु णहि झुल्लइ
पम सेण्णु गळ्ळंतउ दिट्ठउ

चमुपमुहेण लिप्पिय ससि दिणमणि ।
णावई णयणई णरवइकित्तिहि ।
णिसि दिवसई सोहति णिरारिउ । 5
पलयकालि ण जलणिहि गज्जइ ।
दुरयघडाघटाटंकारहि ।
धाविरवीरंधीरहुकारहि ।
रोलं तिहुयणु णाई विसट्टइ ।
मेइणि कह व भारु साहारइ । 10
मवरु कह व ण ठाणहु चल्लइ ।
णील्लु णिसहु केलासु वि हल्लइ ।
अद्धगुद्दार्धरणियलि पइट्ठउ ।

घत्ता—रायहु केरणण परिवारणण पहि जंतं परमयसाडें ॥

मणि आसकियउ मुहु वकियउ फणिसखकुलियकैकोडें ॥ ५ ॥ 15

6

दुवई—किंणरगच्छभूयकिंपुरिसमहोरयजम्बरकल्लासा ।

पहुणो तण्णिवासि संजाया वंतेर के ण के वसा ॥ १ ॥

तओ दोणिण भूमीहरते णईओ
समुम्मग्गणिम्मग्गणाभालियाओ
तडालग्गडिंडीरिपिहुग्गयाओ

सुकारंडभेरुंडलीलारईओ ।
जलावत्तकीलतमीणालियाओ ।
गिरिंदस्स गुज्झंतरा णिग्गयाओ । 5

5 १ MBP °धीरवीर° २ MBP वि जरइ ३ B णीलि णिसहु, K णीलणिसहु ४ K धरणियलु
५ P ककोडें

6 १ MBP वितर

5 2 वा हि णी हं सेनासनाह 12 a झुल्लइ कम्पते 14 परमयसाडें दाधुमदविष्वसकेन
6 2 के ण के के न के, अपि तु सर्वे 3 a भूमीहरते पर्वतमध्ये

जं हारदोरकेऊरकदयकंचीकलाचमउडाचलंयिमद्वारदामसोभंतजम्स-
जक्खीविमाणछणं ।

ज भीयेरं वराकरालचक्राणुगामिमंडलियसूरसामंतकौतकरवालचाव-
संघायसंकडिहं ।

जं दंतिदाणधारापवाहपममंतरेणुदीसंतदसद्विषाणणभरंतसेणाणरुद्धरिय-
विविहृच्छचिंथं ।

जं भिच्चदेहपरिलयसेयणीसंदविंदुहयफेणसल्लिचिक्खंल्लंतहृषुण्यंत-
सयदसंकिण्णकुहिणिदेसं ।

10

यत्ता—त पेच्छिवि पणु उत्यरिउं थलु योल्लिंइ मेच्छकुलेसहिं ॥

एवहिं को सरणु दुक्कउ मरणु रिउ धारय चउहुं मि पासहिं ॥ ७ ॥

8

दुयइ—गिरिदरिसरिमुहारं जो लंघइ पदु सामन्यवंतओ ।

सो अम्हारिसेहिं किं जिण्यइ निजियइहंदिंयंतओ ॥ १ ॥

घटुकालहु दइवेण निवेइउ
बयणु सुणिवि आवत्तचिलायहं
धीरं मत्तं एउ पबुच्चइ
सन्नु सहिजइ जं जिह दुक्कइ
जहिं मंडणु तहिं अवसें खंडणु
विसहर परणरसेणविआरा
सुमरहु सामिसाल सच्चावें
तेहिं मि ए आलाव विवेइय

हा हा पलयकालु संप्राइउ ।
मेच्छमहामंडलमहिरायहं ।
आवइकालइ घाह ण मुच्चइ । 5
हयविहिंविहियहु को वि ण चुक्कइ ।
धीरत्तणु जि मणूत्तहु मंडणु ।
ते तुम्हहं कुलदेय मडारा ।
किं भयण किं किर यल्लावें ।
णाय मेहमुह मणि निज्जाइय । 10

१ MB भीयरवदाडाकराल°, P भीयरवदाडाकराल° १० MBP °विकिच्छ° ११ MBP कोलिजइ
8 १ MBP °दहदिहतओ २ MBP सपाइउ. ३ MBP आवडकालि घाह णउ मुच्चइ. ४ MBP
निवेइय ५ °मेहमुह

8 वरारा° धेष्ठा आरा 10 °जीसद° निप्यन्द

8. 4 α आवत्तचिलायह आवर्तकिरातनाओ. न्नेच्छराजयो 9 b वलगावें वल्लावें

10

दुवई—सलिलुत्थल्लरेल्लपडिपेहणहयदुमविगयारिंछओ ।

णवघणरावमुइयचंदक्कफलावुद्धसियपिंछओ ॥ १ ॥

दीसइ लग्गउ चासारत्तउ

असिजलि णिवडिवि जलु पुणु धावइ

तहिं तं ण मिलइ गमणु जि मग्गइ

धुवइ किं पि अलिंपिंछहिं दलियउ

फो मंडणु विसइ गिउघरिणिहि

वंस घस तुहु मइ वडारिउ

महु सर प्रणहारि णावइ सर

धोयइ मयमायंगइ दाणइ

थक्क सचक्कवाय गइ णं सर

तौ भणइ णरणाहुपुरोहिउ

एयहु पडिविहाणु लहु किज्जइ

ता रापं बलवइमुहु जोइउ

सेणामहिलहि णावइ रत्तउ ।

भडभुयवंडहु संमहु आवइ ।

लोहं गिलियहु फो किर लग्गइ । 5

वहुमुहलियउ पत्तावलियउ ।

ढालइ सिरसिंदरं करिणिहि ।

एवहिं परचिंघे वेयारिउ ।

इय गजंतु व भणइ जलहर ।

दुम्मेहइ रुच्चति ण दाणइ । 10

तोइ तरति ण के के किर णर ।

लोउ देव उवसगं रोहिउ ।

अइणु वारिवारणु चित्तिज्जइ ।

तेण वि पेसणु द्धत्ति विवेइउ ।

घत्ता—णियमणि चित्तियउ तैलि धित्तियउ तं चम्मरयणु जणभरधर ॥

उप्परि पुणु थविउ जगगउरविउ धवलीयवत्तु जियससहर ॥ १० ॥ 16

11

दुवई—वारहजोयणाइं वित्थारं सिविर कुलीरमाणिण ।

पविउल्लत्तचम्मकयसपुडि थिउ वरिसंतु पाणिण ॥ १ ॥

10 १ K सलिलुच्छल्ल° २ MB पाणहारि, P पाणिहारि ३ MBP ताम भणइ ४ M अयणु.
५ MBP धत्तियउ ६ K °आयपत्तु जिह ससहर

11 १ MBP वरिसत

10 1 सलिलुत्थल्ल° जलेनोत्पादित, रेल्ल° नालित २ °चंदक्क फलावुद्धसिय पिंछओ मुक्क-
चन्द्रकाणा मयूराणां फलापा उद्भवसिता 3 a चासारत्तउ वर्षाकाल 6 a धुवइ क्षालयति 8 a वंस वंस
हे ध्वजदण्ड 10 b दुम्मेहइ दुष्टमेधानां दुर्मेधसां च 18 b अइणु चर्मरत्नम्, वारिवारणु छत्ररत्नम् 16
जियससहर निर्जित चन्द्र येन तादृशम्

11 1 कुलीरमाणिण मत्स्याना प्रीतिकरे.

गन्धपयसु धरणिबलु गिरिदिहद रेतिवत पक्षिण्य पदरेज तोय्य पेक्षियत् ।
 मर्यादयत्तेहिं राय समुगमिमि विपसंति वरयत्तय बार् समामिमि ।
 ते दोष वरिसंति ते जेय बार्पति द्युर्द मिदुर्द सोकबार् मार्पति । 5
 रयजोवरे साहर्ष जाम संवर्य वर्यविष्णुगमिमि अक्षितु व रर कर ।
 ब्रह्मब्रह्मोपाय विषयमिमि संमर्य कागणिष्णुपायससिपयिं बावय ।
 सत्ताहरते गय जवर कुयेहिं ब्रह्ममविहोहिं मारणविहोहिं ।
 ईगाकहरिणीककाविहिंकायेहिं मुहकहरिणिमुहगरकगिमायेहिं ।
 वस्तुगमूर्मपमंशुरिपमायेहिं सिमुससहरारकाकाकयेहिं । 10
 विदुविपपरदं वज्रमदं वीदेहिं नारतलोर्ध्वककजमज्जहिं ।
 गद्यादिमायेहिं परिपक्षिपयेच्छेहिं ककहिष्णुप्येच्छोसाहकयेहिं ।
 बीसासविषययमोक्षितयं वी मर मर मर्यंति मर्यासिक्केहिं ।
 हरिकरिमहाजोहसामेतपम्माह विजययद विजययद वेदि पद संघाह ।
 यमाहिपमज संगामपुतेन कसेवि देवादिदेवैस्स पुतेन । 15

मता—परपरपुत्रबहो रायं जवहो वीरपु सु रं वर ।

ओ विरहरजोहं नवजकहोरे वीरियकयंतु वं कुद्व ॥ ११ ॥

12

दुपर—ता सोकेहसहासजन्मामरविट्परगयपारिणं ।

मया सक्षिपयाह पीतु विष ब्रह्मरहरिजपाहिं ॥ १ ॥

कर्म वरिमिहामर छिन्ना	वर्यं बार् विज्ञापति विष्णा ।
तं नवकोपयि यय मयवस यत्रि	यय मयवस यय सा सेनामयि ।
मेच्छन्परिदेहिं सखदयु वज्रदं	दोर्जायैह किं किरं पक्षिबन्धं । 6

१ MBP "सिद्धेहिं" १ B "सिद्धिपरा" v MBPK "नीकं" ५ MBP "मर्यादयेहिं" ९ MBP
 वर्यादयेहिं P "वेदेवपुतेन" MBP लं वीरपु विरि वर ९ MB "वय", P "वय" १ "वय"
 GK omit वर्यादयेहिं ११ MBP पुत्रकहं वरय.

12. १ MBP "दोर्जायै" २ MBP "दोर्जायै" ३ MB "किं".

६ ६ ब्रह्मब्रह्मोपायं कर्मोपपन्नान्; धनुःशक्तिं धनुः ५ ६ दोष दोषोपाय ७ ६ ब्रह्मब्रह्मोपाय
 पुत्रयो वर्यादयेहिं वर्यादयेहिं, १० ६ मर्यादयेहिं लरी १६ ६ विजययद विष्णुपाय

विसैमरियहं किं किर सुयणत्तणु
छिह्णैणेसिहिं को रजिज्जइ
चरणविज्जिउ को जसु पावइ
रणजइ जउ गज्जिउ घणणाणं
सिरचूलायुं वियभूभायहिं
दिण्णहिरणवत्थसंघायहिं
साहिवि मेच्छराउ गंजोल्लिउ
पहु हिमवंतु पराइउ जावहिं
देवय दिव्वदेह णउ सा सरि
राउ णिहालिवि कलसविहत्यइ

वंकगइल्लहं किं गुणकित्तणु ।
अणिलासिहिं किं पइ पोसिज्जइ ।
णिच्चभुयंगहं णिच्च जि आवइ ।
घणणाउ जि सौं कोकिउ राणं ।
दूरंतरहु णमसियपायहिं । 10
दिट्ठु राउ आवत्तचिलायहिं ।
अणुतीरें सिंधुहि पुणु चलिउ ।
आइय सिंधु भडारी तावहिं ।
सिंधुकूडवासिणि परमेसरि ।
लहु भडासणि णिहिउ पसत्थइ । 15

घत्ता—सिंधूदेवयण जलयरधयण अहिसिंचिवि थुउ मउलिवि कर ॥

दिण्णी माल तहो भरहाहिवहो णवपुप्फयंतरथियमहुयर ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाकइपुप्फयंतविरइय
महाभव्वभरहाणुमाण्णय महाकव्वे आवत्तचिलायपसाहणं णाम
बोद्धमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १४ ॥

॥ संधि ॥ १४ ॥

४ P विसहरियइ ५ P छिह्णैणेसिहिं ६ MBP कोकिउ सो ७ P सिंधुवदेवइ ८ B °पियमहुयर

12 7 b अणि ला सि हिं वायुमसै सर्पे 8 a चरणं चारित्रं पादाश्च 12 a गंजो ल्लिउ रोमा-
शित उल्लसित प्रसु 17 णवपुप्फयंतं नवानि पुष्पाणि कान्तानि यस्याम्, नवपुष्पाणा वा शन्तो मृष्यम्

2

णिक्खित्तसुरासुररहणियले
णवचंपयकुसुमावासियउ
वहुदोरहिं दूसइ ताडियइं
करिसालाणडसालाहरइ
हरिवरमंदुरउ समुंडियउ
ठवियइं मणिमडवियासयइं
दुव्वारवइरिमयपहरणइं
दक्खत्रालियसैसहररयणियहि
कुससयणि पसुत्तउ सइ भरहु
करि धरिउ सरासणु राणएण
आरुहिवि रहंगि ण सक्कियउ
जो लोहवतु परमग्गणउ
किं अच्छइ णवर उँदु गयउ

हिमवतकूडतलधरणियले ।
साहणु सडंगु आवासियउ ।
रणवडहसहासइ ताडियइं ।
उब्भियइं पउरसालाहरइं ।
णं घडदासीउ सुमुंडियउ । 5
अवराइ मि दिव्वइं आसयइं ।
अहिवासिवि भूसिवि पहरणइं ।
पोसहु पडिवज्जिवि रयणियहि ।
उग्गमिउ दिणाहिवु णहि भरहु ।
वहु विहरिउ मडलराणएण । 10
वइसाहठाणु सइं सक्कियउ ।
सो गुणि संणिहियउ मग्गणउ ।
हिमवंतकुमारहु णं गयउ ।

घत्ता—पडिउ सपगणए उँपुंखु वाणु अवलोइउ ॥

चित्तिउ तेण मणे को पइउ काले चोइउ ॥ २ ॥

15

3

किं पाणि पसारिउ फणिमणिहे
दीहरजालामालाजलिउ
केसरिकेसर उल्लूरियउ

तडयडिहे णहि सोदामणिहे ।
पलयाणलु केण पडिक्खलिउ ।
कालाणिनु केण वियारियउ ।

2 १ P reads after this मिहुणइ रमति रतासयइ, अवराइ मि दिव्वइ आसयइ, णियपहणिज्जय-
देवासयहि २ MB read after this मिहुणइ रमति रतासयइ, णियपहणिज्जयदेवासयइ ३ BP ससिहर-
रयणियहि ४ P रहंगि ५ MBP उद्धगयउ ६ M पपगणए, B पसगणए ७ MB उप्पखु

3 १ MBPK पडिक्खलिउ २ MBP कालाणलु

2 5 a समुंडियउ मन्दुरोभयपार्थनिखातकाष्ठद्वयेन सहिता 6 b आसयइ आधया गृहाणि 8 a
दक्खालियेत्तादि—दर्शित शगधरश्चन्द्र एव रत्न चूडामणिरत्न यया रज्ज्या, b रयणियहि रज्ज्याम् 9 b
भरहु नक्षत्रप्रच्छादक 10 a राणएण रा द्रव्यं तस्य आनयनप्रहणकारिणा राज्ञा 11 b वइसाहठाणु
पामपदजानु मुवि मुक्त्वा अपरमूर्ध्वीकृत्य वैशाखस्थानमुच्यते, स किं यउं सम्यक् कृतम् 12 b गयउ गदो रोग

3 B b कालाणिनु प्रलयवात

मेसिपि सिनुसति एणवेणिणु रिसहमिबिहो ॥
पुनु लंबछिठ पडु मपरत्तु बनेत्तु भमरिहो ॥ १ ॥ सुबकं ॥

1

सेजासेप्याहिरपरिचरिह	हिमबंतु धरेपिणु सचछिय ।	
सोहर मच्छंती पुज्जमुह	कुडबंसवाहपत्तिवपमुह ।	
दीसर सेकत्वकि कावणकं	महितीपुनु व साहामवने ।	6
पार्थामहिदहफसरसहर्ण	कत्थर किमिगिभिर्न वावर्ण ।	
कत्थर ररत्तर्न सारत्तर्न	कत्थर तवत्तर्न तावत्तर्न ।	
कत्थर सरत्तर्न विस्तरत्तर्न	कत्थर कत्तमरिपर्न कंदर्तर्न ।	
कत्थर बीमियवत्तीहर्न	सिहुई मत्तर्न वाहत्तर्न ।	
कत्थर हरिणर्न वत्तियार्न	पुनु गोरीयेपडु वत्तियार्न ।	10
कत्थर हरिणहवत्तियार्न	कटिहुंमुच्छकिवर्न मोत्तिपार्न ।	
कत्थर सुम्मा कम्मिणिपुत्तिर्न	कपरीकरत्तीवारत्तर्न ।	
कत्थर मत्तकत्तर्न वत्तियार्न	कत्थर सुपण कि कि मत्तिर्न ।	

मत्ता—कत्थर किचत्तिर्न गार्हत्तर्न सचचपिवात्त ।

रिसहवाहत्तर्न कम्मिणिपुत्तियेपडु सारत्त ॥ १ ॥

MBP give at the commencement of this Samdhi, the following stanza.

त्वन्तो वत्त वत्तिदि वाचकमत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्त
वत्तिवत्त मत्तिवत्त मत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त
वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त
वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त

MB read वत्तिवत्त for वत्तिवत्त ॥ does not give 1

UK give it at the commencement of Samdhi XV

1. 1 MB "मत्तिवत्त"; P "मत्तिवत्त" but records P "मत्तिवत्त" 4 MBP
मत्तिवत्त 1 MBP "मत्तिवत्त"

1 5 6 वा वत्तवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त
मत्तिवत्त 11 12 वत्तिवत्त वत्तिवत्त वत्तिवत्त

2

णिमिखत्तसुरासुररइणियले
णवचंपयकुसुमावासियउ
बहुदोरहिं दूसइं ताडियइं
करिसालाणडसालाहरइ
हरिवरमदुरउ समुडियउ
ठवियइं मणिमडवियासयइं
दुव्वारवइरिमयपहरणइं
दक्खालियसैसहरयणियहि
कुससयणि पसुत्तउ सइं भरहु
करि धरिउ सरासणु राणपण
आरुहिवि रहंगि ण संकियउ
जो लोहवतु परमगणउ
किं अच्छइ णवर उँदु गयउ

हिमवंतकूडतलघरणियले ।
साहणु सडंगु आवासियउ ।
रणवडइसहासइ ताडियइं ।
उम्मियइं पउरसालाहरइं ।
णं घडदासीउ सुमुडियउ । 5
अवराइ मि दिव्वइं आसयइ ।
अहिवासिवि भूसिवि पहरणइं ।
पोसहु पडिवजिवि रयणियहि ।
उग्गमिउ दिणाहिवु णहि भरहु । 10
वहु विहरिउ मडलराणपण ।
वइसाहठाणु सइं सकियउ ।
सो गुणि संहियिउ मगगणउ ।
हिमवतकुमारहु णं गयउ ।

घत्ता—पडिउ सैपंगणए उँप्पुखु वाणु अवलोइउ ॥

चित्तिउ तेण मणे को पइउ कालें चोइउ ॥ २ ॥

15

3

किं पाणि पसारिउ फणिमणिहे
दीहरजालामालाजलिउ
केसरिकेसर उल्लुरियउ

तडयडिहे णहि सोदामणिहे ।
पल्याणलु केण पडिक्खलिउ ।
कालाणिनु केण वियारियउ ।

2 १ P reads after this मिहुणइ रमति रत्तासयइ, अवराइ मि दिव्वइ आसयइ, णियपहाणिज्जय-
देवासयहि २ MB read after this मिहुणइ रमति रत्तासयइ, णियपहाणिज्जयदेवासयइ ३ BP ससिहर-
रयणियहि ४ P रहंगि ५ MBP उद्धगयउ ६ M पपगणए, B पसगणए ७ MB उप्पुखु

3 १ MBPK पाडेखालिउ २ MBP कालाणलु

2 5 a समुडियउ मन्दुरोभयपार्श्वनिखातकाष्ठद्वयेन सहिता 6 b आसयइ आश्रया गृहाणि 8 a
दक्खता लिथे लादि—दर्शित दाशधरधन्द्र एव रत्न चूडामणिरत्न यथा रजन्या, b रयणियहि रजन्याम् 9 b
भरहु नक्षत्रप्रच्छादक 10 a राणएण रा द्रव्य तस्य आनयनग्रहणकारिणा राज्ञा 11 b वइसाहठाणु
वामपदजानु भुवि मुक्त्वा अपरमूर्ध्वीकृत्य वैशाखस्थानमुच्यते, स किं यउ सम्यक् कृतम् 18 b गयउ गदो रोग

3 8 b कालाणिनु प्रलयवात

किं केव गदगपनकाहस्तु	मनु केव विसुमिड वमकरणु ।	
इहवद्वि मातु पुरंरखो	किं सिहव पडोद्वि मंहरखो ।	5
विपहतो विमंविड अकहि	पडिहूविड केव हर्षुं विहि ।	
विहीविस्तवपु विरिपिजयड	के हाकाहस्तु विसु मविजयड ।	
अगि केव मातु विसेववड	मातु केव रोसु वप्याववड ।	
को पाड पटावड अहवकडो	को सुपहुवड विपभुववकडो ।	
किं न मरु करवावेव हड	न विपावहुं किं सो वकमड ।	10
सड मरु वि केव विसविजयड	वैवविडमु कातु पवविजयड ।	

अन्ता—जेव विमुकु सड अरवीहुं समातु फकिवहो ।

सो महु मरु रवे अह पावड सरु सुविहो ॥ १ ॥

५

इह तेव गविजयड	पुनु कतु सविजयड ।	
पिछेहि पविजयड	विपीर विविजयड ।	
विस्तव विविजयड	मंतेव मंविजयड ।	
विपवमि विविजयड	रापव वविजयड ।	
मंवेहि वविजयड	पुछेहि वंविजयड ।	5
पुछेहि वविजयड	केव वि न वंविजयड ।	
इपवेरिखतातु	अववेरिखो वाणु ।	
ता वमि विविजयड	सुपविजयडविजयड ।	
विजिजयविजयड	परिछेवविजयड ।	
वविजयविजयड	अवविजयडविजयड ।	10
विजुयहि वविजयड	मवाविजयविजयड ।	

M विमविजय BP विमविजय व P इहवद्वि. ५ MBP कि ९ MBP अरवीविजय. ७ M विजय वड.

4. १ MK विविजय ५ M वविजय ९ MP परिछेवविजयड

५ अहवद्वि पविजयड ७ कतुपहुवड अरवी पविजय 11 अहवद्वि वड अहवद्वि.

4. 1 कविजय व पुछेहि वड. 8 अ विजय व वविजय 10 अ वविजय वरवी 11 क
ता वि वविजय मावाविजयविजय.

वेह्लीहिं यन्त्रियां	अप्पगद ललियाइ ।
गाढं विमिद्वार	सग्गमाइ मिद्वारं ।
इद्वार दिद्वार	दियण पर्यद्वार ।
अग्निमीद्वग्गहम्स	आणाइ भग्गस्स ।
जो जियइ सो जियइ	इयरस्स गयणियइ ।
अइरेण अययइ	वइयसु त्रि भुवें मरइ ।
पुणु पुणु वि जोणवि	इय तेण चाण्णि ।
सइ समियसमरेहिं	अयवहिं मि अमरेहिं ।

15

घत्ता—दिद्वउ चणवइ चमगहिं चामीयन्ददहिं ॥

रयणहिं मोत्तियहिं पणवतें णियभुयददहिं ॥ ४ ॥

20

5

गरणाहं रयणहिं पुजियउ
सो किंफेगल्ल मणि धरिवि गउ
हरिसइसुभीमगुहाहरदो
दीसइ गिरिमेहल्लघुलियवण
णिज्जरजलदुद्धपवाइधर
रइगारउ णावइ कुसुमसर
रसवंतु णाहं णच्चैण पवर
बहुविहुमोहु ण मयरहर
बहुककणु णं महिमहिलियर
हरिसेविउ ण जिणु परमपर ।

हिमवंतु कुमार विमज्जियउ ।
राणउ पुणु तिहुयणत्तजउ ।
सइ आइउ घसहमदीहरदो ।
ण धरणिहिं केरउ एहं चणु ।
णिगु णाएल्लिभं सोफयय ।
मयवंतु णाहं कुपुत्तिसपसर ।
यहुणावाल्लिउ बहुविचर ।
यहुफलपयासि ण पुणमर ।
यहुओसहिहु ण भित्तयवर ।

6

४ MBP पद्वार ५ MBP धुउ ६ MBP अयरेहिं अमरेहिं ७ MBP पणवतहिं

10

5 १ MBP हिमवतं २ B किं करत ३ MBP आयउ ४ M एव ५ MBP पणवतं
६ MBP महिलियर

12 a वेह्लीहिं आवलीभि 16 b राय णियइ क्षयकाल 17 a अइरेण अचिरेण, पीप्रम् 18 b वाएणि
पाचमित्ता
5 7 b बहुविचर बहुच्छिद्र बहुक्षी च 8 a विहुमोहु प्रवालौघ, मयरहर समुद्र
महिमहिलियर पृथ्वीमहिलाया कर, b भित्तयं वैद्य 10 a हरिसेविउ इन्द्रेण सिंहय सेवित, १०

करिहकयमुससपिमिप्यतनु
सुखायवरमणीप्रापयित

ये को वि महामह ररपरु ।
ये विवजससासकप्यं मु पिउ ।

यत्ता—तह महिररु तह पच्छररु बजहुं मि पासहि ।
करकिहियककरहि मयपतिवकामसहासहि ॥ ५ ॥

6

अहि बीसह तहि मयपरसहित
बितर मय्याहित बहुरुबह
अज्जज्जहि पयहि मुत्तिपर
बोकाविप के के बर विवह
मय्यर परमेसव पयु पर
बहुपरवरकरयककाकिपर
छत्तंगरैजमारेव हव
धापयकंठसीसावयहि
जा विजिय ककममरहि विपर
असिवाकियकज्जसत्तु मह
बबकत्तु कुकमयवईवरतो
सिपिमयउ जाह तहि गोमिबिहि
विपदंति मयंस वि छति पिह

मोकत्तु ब पिउ मुत्तिगवमहित ।
करि वामु मिहिररु महु तयउ ।
ईह एवर बसुमरुत्तिपर ।
मोईछहु मय्यर तो वि मर ।
को हुउ पय्यरपउ मुपवि बर । 8
हउ विपहित सिरिपुज्जाकिपर ।
मयमररु मसी मुपय यम ।
असिपिपिय मयकयउसपहि ।
जा कसे छमह वउ विपर ।
बहुसत्तु वंकिम बह । 10
पुनु मेकिवि यमत्तु पासि सैयो ।
मासुसुगुरिउ बरवायपिहि ।
बारिहि करिणीरव पीमु मिह ।

यत्ता—तयं मुत्त बिह पुनु पुनं सहुं सहुं मय्यर ।
बसुमरु ईमुत्तिम जयि केव वि समउ व मय्यर ॥ ६ ॥

15

MBP "पुनरिह".

6 १ MBP हव २ MB "रमहारेव. ३ MBP अविपयित" ४ MBP "वररररी. ५ MBP
वररी ६ MP आत्तु गुरिय; ७ आत्तुगुरिय. ८ MBPT सिपुमि

6 ६ बीला निव अविपयित्या अप्या. ७ ७ पुज्जा विवह पुनप्या. ८ ८ "को कायवई" बीला-
पदेवि ९ मिहिय बीला 10 ९ बहुरु वान्कहि 11 ६ तुये स्याति—तुयं तुयस अपमि पर
पासा. 12 ६ बरवायपिहि बरकयूः 13 ६ बारिहि मयमय्यमय्यामा 14 ६ पुमि व पुनये
वेरवायि.

पक्ष्माद् वि ण लब्ध इ धनि जतिं
 मद् जेहा परिचय को गणद्
 परमेम मारायणु जेण गउ
 पढ फेडवि जिह्मेण्ण पुह्ण
 ता घालमराललीलगइणा
 रापं रायणु ओहाणियउ
 कम्पामणिहेहात्रायिउ
 गिम्हण्डु रइमणगायफारो
 णमेण भरु भरहादिउ
 हिमयतजलहिपेर मर
 ता तियसतिं मारुणानियउ
 पइ जेहउ को धि ण चणयइ
 फेहु अग्गइ धायइ कमलफणि
 दालिहहारि फिर फासु यनु
 अग्नि फासु धइगियिउंमयर
 पइ मेहिधि णाणहु कयणु घर

किं णाउ लिहिज्जइ ण्णु नतिं ।
 जे जे गय ने पुरोहु भणइ ।
 सो पणु जयमि ण केण फेउ ।
 तिह णामु धि फेडिज्जइ णियइ ।
 धीलामलमंलिणेण वि पइणा । 5
 अण्णहु फासु वि उत्तारियउ ।
 णियेणाउ गिगिदि चटायियउ ।
 हउं पुत्तु पडमंतिरथकग्गो ।
 योहउ पग मयियलि अतिर जइ ।
 छम्पण्ड वि णिजिय यणुह मइ । 10
 भरतेमर जयजयफानियउ ।
 को णम मसकि णाउं थयइ ।
 फमलालय कमलाणणिय मिरि ।
 तिजगतंतामि फिर फासु जनु ।
 पइ मेहिधि को फिर कपयइ । 15
 परमेणु फासु देउ पियर ।

यत्ता—ऊँ विक्कमेण गोत्ते वल्लेण णैयजुयत्ते ॥

तुज्जु त्तामाणु तुहु वि अण्णे माणुममेत्ते ॥ ७ ॥

सरवरजलकीलियसारसय

हरिसाधियचपयसारसयं ।

7. १ P विउ २ MB °मलिणणण वि पइणा, P °मलिणणणपइणा ३ MBP णियणामु. ४ MB पडमु ५ P वहुअग्गइ ६ M दारिह्णइ ७ MBP तिजगत° ८ MBP यदरिबीरत्तय ९ MBP परमणु १० MB कुलेण ११ MBP णयजुत्ते.

7 5 b धीसेत्यादि—लज्जामलमलिनेन स्वाभिना. 6 a ओहा रियउ रिसे व्यवधारितम् 10 a °पेरत्त पर्यन्ता.

8 1 b °चंपयसारसय चम्पकदृशानां मध्ये सारास्तेषां शतानि, चम्पकलक्ष्म्या रसो वा यत्र,

कायपयपिहिंविषकुञ्जरयं
फलमायेवपसुरनवविह्व
भासहिवासारिपविसहरयं
मार्ग्य तममहं चरविहरं
वसियं नह पशुणा पञ्चरूपं
महिमाजबन्तु वीसंक्रमह
हिमबन्ततक्षय त्रि विह्वमह
गागहहहिरिकरिमहिमपस
विपयहहि विह्वविधि चंद्रवतु
जगसंसिपमसिषापसिपहिं

गयजंगवविगयपिहुञ्जरयं ।
रहपर्यथिममहिं सपरविह्वं ।
यणसुरहिंसमीहिमविसहरयं ।
सपयं सेव्यं परंपरविहरं । 8
सारिहिकरकसचोरपरयं ।
पुष्पविसमार्यं संक्रमह ।
विपयेहिं जंतु वसुहं क्रमह ।
अचर्कमिभि र्कमिभि मदि सपक ।
यंवाहपिपुसिपह विपय वतु । 10
शेजुवहिं विपयंषापसिपहिं ।

अथा—वीसह पंडुगड हिमबन्तसिहिरि विगगाई ॥

ये मरुतु सजडे असविमसिडे सग्नि विसपाडे ॥ ८ ॥

9

समिरपयमय	परिममियमय ।
उयपयगहिरे	अयविहुरहरे ।
उगवियपहरे	सुरसपिनिहरे ।
विपसह गुणिनी	अमरेवरपयी ।
असहारमयी	अममयहमयी ।
उयसमिषयया	वुपमयचयया ।

6

8. १ MBPT *विपयहि २ MP add after this विमज्जन्तु पुनरिगगाई वं वरह वहि
वहंरिगगाई वं विपयविहुरहरे वदिविपुमिहि वं मविहुरहं D add after this वं विपयविहुर
हरे वं विमज्जन्तु पुनरिगगाई वं वरह वदिविपुमिहि वं मविहुरहं १ MBP वेपुयं
सकमयचयहिरे. २ MP वरवपिहिरे. ३ MBP वजुवहि

9 १ MK अमरपयमयी but T अमरपयमयी

23 विपु वरहं वरवपुपुनरय B = *विह्वं पाया केदवरेवारा-विह्वरमयी इत्या येवविपयवदह
4 वं वेवारा-वपुगविह्वरमयी गवहिने वपमयी रं गुणं वय B के वरवपिहिरे वजुवपिहिरे
7 वं वी के वदह विपुवहि वं वदह वदह वदह वदह वदह B के वदह वदह वदह 11 वं वसि
पयविहिरि वविहुरहं वविहुरहं ; वं वजुवहि वजुवहि ; वं वजुवहि वदह वदह वदह

वरगयगमणा	कयजिणणहवणा ।	
पविउलरमणा	पीवरसिहिणा ।	
पंकयचलणा	सिरकयसुमणा ।	
पसरियपुलया	वणसुरकुलया ।	10
विरइयतिलया	मणसियणिलया ।	
णरणवियपया	चलमयरधया ।	
मुणिमइविमला	हिमकरधवला ।	

घत्ता—गगा णाम सइ सुरसुदरि णयणपियारी ॥

रूवे जोव्वणेण देवाह मि विम्हयगारी ॥ ९ ॥ 15

10

णरवइचरियं	गुणविण्फुरियं ।	
हियं धरियं	चलिया तुरियं ।	
तिचलितरगा	देवी गंगा ।	
णिवसामीवं	पीणियभावं ।	
पत्ता धीरा	सालंकारा ।	5
भुवणपसत्था	मंगलहत्था ।	
दुत्थियमित्तो	परहियजुत्तो ।	
जगगुरुपुत्तो	पंकयणेत्तो ।	
उत्तमसत्तो	गुरुर्यणभत्तो ।	
जायविबेओ	भावियमेओ ।	10
ढोइयदाणो	कयसमाणो ।	
खलकुलचंडो	दाचियदडो ।	

२ K omits पीवरसिहिणा ३ K omits पंकयचलणा ४ MBP विमय°

10 १ MBP हियवइ २ K गुणयणभत्तो

9 9 b °सु मणा पुष्पाणि 10 a °पुलया पुलको रोमाश्च , b वण सुरकुलया व्यन्तरदेवकुले जाता 11 म ण सिय° मदन्

10 4 a °सामीव °समीपम्, b पी णि य भा व इष्टवित्तम्

मासिपसामो	ससिचिषामो ।
रामाकामो	पायडकामा ।
इपसिचिषिहो	मिहो मरहो ।
मसिमराय	कुसुमकराय ।
योत्तगिराय	ववियसिराय ।
विष्वासीय	पुणरवि सीय ।

16

अथा—वडवदिसासिपहा ये पुष्पिमार ससिकपहो ॥

अमपमरिड कम्पु पव्हरियड सीसि करिहो ॥ १ ॥

20

11

कडरहउ कडपोवहु कर
मयहाड हाड बीहापविहु
हिमबंतसिहचिहोसोरिय
अह बंसुपु तिह बंसुपु
रसना मनुसना छटियहि
सोहंती विष्नी करवहि
पंतीरि विरहउ सुरपवहं
छतरं सयवतरं सिरिकपहो

कर मडकिवि मंजु वि मिहिर सिरे ।
करवपु बंसु मानिकसिहु ।
विष्पड बिहिर सुरवरसरिय ।
व सहर परमि जापारसुय ।
माळो अकिमाळाकंडियहि ।
वह्विषयडसावरवहि ।
पंडित विपवडउ सुरपवहं ।
वतपहं वेवतपहं मयमि वहे ।

5

अथा—इय गेणिवि निवेण मजहरमपकमीकागर ॥

पुजिवि पडुविय विपमववहु मय गंगावर ॥ ११ ॥

10

11. १ MBP गडवावर. १ B मडकिवि १ MB गवहाट. ४ MB "सिहचिहो" ५ B कडर
B वटोड

18 के ससिचिषामो लीमलेमली व. 19 वडवदिसासिपहो ववियसिपसिराय; पुष्पिमार
वृषिमवा कम्पु 20 वडवदिसासिपहो मजहरीमि विपमि

11 1 के मडपु मुकुट 2 के वडवपु वपु वरीमवव मजपुवव कम्पु. 4 के वडवपु वरमव-
पुने अमपमरिड ॥ ५ मडुरवना वपुवववा; ६ के विमहि कम्पु ७ के वडवदिसासि—वडवदिसा
वडवदिसा वा वड वडव वड कम्पु वडव वडव वडव वडव वडव वडव वडव वडव वडव वडव वडव
वडव के वडववहं वडववववव ७ के वडव वडववव

12

पहु विजयलच्छिआलंगियउ
 सुरसरि साहेपिणु णीसरइ
 सरितारेण जि पुणु सचरइ
 जहि धूलि होति गिरिं तरुवर वि
 सरि छजइ उगयपफयहिं
 सरि छजइ हंसहिं जलयरहिं
 सरि छजइ सचरतझसहिं
 सरि छजइ चर्कहिं संगयहिं
 सरि छजइ सरतरंगभरहिं
 सरि छजइ कीलियजलकरिहिं
 सरि छजइ बहुजलमाणुसहिं
 सरि छजइ सयडहिं सोहियहिं

भणु केण ण दंसणु मग्गियउ ।
 वलु दिण्णदौणु कयणीसरइ ।
 हा हरिणैवदु तहिं किं चरइ ।
 उल्लियरओहें रहिउ रवि ।
 वलु छजइ चित्तैछत्तसयहिं । 5
 वलु छजइ धवलहिं चामरहिं ।
 वलु छजइ करवालहिं झसहिं ।
 वलु छजइ रहचक्कहिं गयहिं ।
 वलु छजइ जलतुरगवरहिं ।
 वलु छजइ चल्लियमयकरिहिं । 10
 वलु छजइ किंकरमाणुसहिं ।
 वलु छजइ सयडहिं वाहियहिं ।

घत्ता—जिह जलवाहिणिय तिह मंहिवइवाहिणि सोहइ ॥

महिहरमेयणिहिं पयहिं किं किर को णउ घीहइ ॥ १२ ॥

13

अक्खिउ णिग्गमणपवेसु जहिं
 घेयइगिरिंदहु पच्छिमहे
 मृगमगलग्गअलियल्लियहिं

पत्तउ णरणाहु दिणेहिं तहिं ।
 जिह आसि तिमीसहिं दुग्गमहे ।
 कडयगुहाहिं पुट्ठिचल्लियहिं ।

12 १ MBP °आलिगियउ २ MBP दिण्णदाण ३ MBP हरिणविंदु किं तहिं ४ MBP गय
 ५ MBP विधेयत्त° ६ M चक्कहिं हसगयहिं ७ P °तरगतरहिं, but gloss तरङ्गसमूहे ८ M adds
 after this वलु छजइ कीलियजलकरिहिं, which obviously is the scribe's mistake ९ MB
 किं किर. १० MBP णिववर° ११ M महिहरभोयणिहिं १२ MBP एयह किर

13 १ M णिग्गमणु २ MBP भिग°

12 2 b क य णी सरइ कृता नि स्वानां दरिद्राणा रतिर्येन 4 b उल्ल लिये त्यादि—उच्छलितो यो
 रज संपातस्तेन रहिओ आच्छादितो रवि 9 a सरतरङ्ग° जलस्य तरङ्गा 12 a सयडहिं स्वतटे, b स-
 यडहिं शकटे 13 जलवाहिणिय जलवाहिनी नदी, °वाहिणि सेना 14 महिहर° पर्वता राजानश्च,

13 2 b तिमीसहिं तिमीससज्ञायां सिन्धुयुहायाम् B a अलियल्लि° व्याघ्र,

तेहि विषयक सेणु विषयक विह
 विहिवारे भविष्य कथाविह
 इणु इहे पुणु वि कथाहि विह
 पणु पसाहि वि पति कहु
 छम्मास कसेवड पणु मई
 असिद्धकथापणुपणुसकसेव

य विहिवार गिरिहृदय विह ।
 मुणु जोम्य पिसु विह कहु ।
 विहिवेयिणु कथाहि विह ।
 कथाहि विहिवेयिणु सहु ।
 कथाहि विहिवेयिणु पति ।
 ता कमुपमुहण महामहण ।

प्रता—पुष्करपत्रेण पुणु हरिवंश कथे वि पतिहे ।

10

आकसि वि हणु विहिवेयिणु कथाहि पतिहे । ११ ।

14

विहिवेयिणु विह विहिवेयिणु
 विह विहिवेयिणु मयपणु
 सुकरवसमापमि कथाहि विह
 तहि कहु मीणु जो जोहिवि
 तेणु वि विहिवेयिणु कथाहि
 पतिहे विहिवेयिणु कथाहि
 कथाहि विहिवेयिणु कथाहि
 कथाहि विहिवेयिणु कथाहि

विह विहिवेयिणु विहिवेयिणु ।
 विह विहिवेयिणु विहिवेयिणु ।
 विहिवेयिणु कथाहि विहिवेयिणु ।
 तहु मयपणु कथाहि विहिवेयिणु ।
 विहिवेयिणु कथाहि विहिवेयिणु ।
 कथाहि विहिवेयिणु कथाहि ।
 कथाहि विहिवेयिणु कथाहि ।
 तहि विहिवेयिणु कथाहि ।

6

प्रता—य विहिवेयिणु कथाहि विहिवेयिणु कथाहि ।

सम्माह सियकड वि विहिवेयिणु कथाहि पतिहे । १४ ।

10

१ MBPK विह व MB "उपपन्न P कथाहि K कथाहि ५ MBP पुष्करपत्र १ P कथाहि
 MBP हरिवंश कथाहि MBP हरिवंश

14 १ MBP कथाहि १ MBP कथाहि १ MBP "कथाहि ५ MBP कथाहि ५ P "कथाहि

६ ६ विहिवेयिणु कथाहि विहिवेयिणु कथाहि ।

14. 6 ६ कथाहि विहिवेयिणु कथाहि विहिवेयिणु कथाहि १ ६ कथाहि विहिवेयिणु कथाहि

15

ता मतिहिं गुज्झं ण रक्खियउ
 तुह माउयाहि मथरगइहि
 णामे णमि विणमि कुमारवर
 णहयरवइ हया अविअलहे
 हल्लियसाहाफुल्लियवणइं
 उहामहं गामहं तेत्तियउ
 भुंजति रमति गमति दिणु
 त णिसुणिवि भूसियसमरधुर
 गय तेहिं भणिय खयराहिवइ
 महियलि उप्पणउ चक्कवइ
 तहु पुत्तु भरहु लहु अणुसरहो

परमप्पयतणयहु अक्खियउ ।
 ते दोण्णि वि भायर जसवइहि ।
 गभीर धीर रणभारधर ।
 णियसंति एत्थु गिरिमेहलहे ।
 पण्णास सट्ठि खगपट्टणइ । 5
 कोट्टिउ धरणेण विहत्तियउ ।
 पणवति तुहारउ जणणु जिणु ।
 पट्टणा पेसिय गणवद्ध सुर ।
 छक्खडमंडलावणिविजइ ।
 जो रिसहणाहु भुवणाहिवइ । 10
 अहिमाणु मडप्फर परिहरहो ।

घत्ता—पत्तियववित्ति जइ णउ सयणवित्ति पडिवज्जइ ॥

गुरुहुं सडिंभैहं मि दोसिल्लहं दंढ पउंजइ ॥ १५ ॥

16

तो' वंधुणेहभउ भावियउ
 हियउल्लउ धीरु वि कंपियउ
 तणुतेयपूरपिगलियणहु
 अम्हहं आराहणिज्जु हवइ
 भणु जलणहु उप्परि को जलइ
 भणु मोक्खहु उप्परि कवण गइ
 हय घोसिवि ताइ विसजियइ

खयरिंदहिं कज्जु विहावियउ ।
 पणएण णएण पयंपियउ ।
 जिह देवदेउ तिह पुणु भरहु ।
 भणु तवणहु उप्परि को तवइ ।
 भणु पवणहु उप्परि को चलइ । 5
 भणु भरहहु उप्परि को नृवइ ।
 आयइ अमरउलइं पुजियइ ।

15 १ MBP गुज्झु २ P सडिंभरह

16 १ MBP ता २ MBP णिवइ

15 2 a b माउयाइ भायर तव मातुर्यशोमत्या भ्रातरौ 5 a हल्लिय साहा° वलितशाखा . 8 b गणवद्ध सुर अक्षरक्षका देवा 11 b मडप्फर मिथ्यागर्व

16 8 a तणु ते ये त्यादि-तनुतेजसो देहप्रभाया भरेण पिङ्गलित नभो येन

दूरं गुदरुर्ध्वं विप्रेमियं
आर्य हरिहरिचरनदेवार्थं
अभि वे पि सहाय्य जीर्णरिय
कुमन्धिधसयार्थं समुच्चियं । (10

यत्ता—धयर्ध्वकुरुहि परिचारिय देय समाचरहि ॥

अहि निवसह विपय तहि आर्य रयणविमार्जहि ॥ १६ ॥

17

मगसिपकरोहि पणविपनिर्णी
अगहारु निव कुमन्तामि तुहुं
परं दिवुर आर्य भोमरु
गुह तापदु हयबम्मीनरुहा
आमीपरमणिभिम्मवयार्थं
अहिपार्थं आसि विहृणार्थं
ता मुंजुं वे ता मुंजुं जि मरु
तं विमुनिवि पार्थं आसिपठ
मंजु आवापणु अ विरमिपठ
मिह मगहृमयपूडामणिवा
मिह पवहि मरु वि नमन्पियार्थं
पदु बोहिह अमिनिममीसोर्णी
परं दिवुर वयवार्थं हार मुहुं ।
परं दिवुर अरि सिटि परमरु ।
आपसं परमजिनसरुहो ।
अहत्तमार्थं वेपरपुवरुहो ।
अह पयहि परं पञ्चिबम्भार्थं ।
अमर्हं पुणु वैरयंवरिय गर ।
अप्याचर्धं अं अ विजासिपठ ।
तं मुम्भहि वयंठ ववसिपठ ।
विरयसि मरुपरुह कनिवा । 10
वाचहि धयरण्यवार्थं विपार्थं ।

यत्ता—अविमवर्णद्वहा वसर्धंतदु रिजिनवाहरो ॥

अमिनिममीसरुहि पञ्चिबम्भ लेय वरुवाहरो ॥ १७ ॥

18

यपदु कंयोविपनिहृणयवाहा
पणविपिणु गव गच्छिमेमजरो ।

1 P दलरु. MDP वीमरिय M विहिमिनिमिण, B विहिवसिपिण, P विहिमिनि १ MBP
अमविमवर्ध

17 १ M अरुव १ MBP तुहुं जि मरु १ MB वरुंवरिय ४ B पु १ B वरुं

18 १ P वरुंवरिय

10 १ विहिमिनिमिणवाचहि विहृण वय विमवर् ता हय वयववार्थं वे ।

17 १ १ अहिपार्थं कर्णोमेव वरुवार्थं १ १ वरुवार्थं विहृणवार्थं अ

रणैर्धीरं यत्नः जिह्वयिषि ।
उरग्निसूक्तफण्यान्तु ।
मुह्यारि उर्ध्वं न भाव यत् ।
पद्म यमोद नभः नियमयत् ।
परिमोद न्योद पद्मयु ।
रत्न भयः पद्म यत् ।
विपद्गर्ह गार्ह यत् ।

गङ्गा गिरिगिरि पञ्चनाथ पद्मावती ॥ १८ ॥

10

19

जगन्निर्दिष्टं निर्दिष्टं चंद्रं नयि ।
 अभ्यासयामासिर्दिष्टं ।
 गंधारं धीमं धार्मिकं पुनः ।
 सैरभरियं स्वयं उच्यते ।
 फेलाभगिरीमहं लहं गयं ।
 जिज्ञासुगन्तव्यं भवति ।
 निर्दिष्टं निर्दिष्टं तापियं ।
 फेलाभगिरीमहं लहं गयं ।

७ महिकामिणिदि भुयदड पदमियमग्गउ ॥ १९ ॥

10

19. १ MBP कागनियद् मणिमद्, २ MB गवमेण ३ MBP जस्तभरियउ, ४ MB विन्नादमद्

19 1 a प्रदमयुषि परिपूर्णं मार्गं दृष्टिपथो न भवति 2 a षण्णियदृष्टिग्या 3 a संघ
सेतुबन्धेन, b गरभरियउ जलपूर्णा 4 a कुहरदु पर्वतस्य, कुहरदु मुद्राया 5 a संघ

ओ मध्यपक्षिणादिहियासिद्ध
 ओ इतिपिपसीवसिदिबसेद्ध
 अदि रिद्धिं कुमसाद्यापयं
 अदि संकीर्ये न रदि मुवर
 अदि सद्यदिबंति ममध्यपक्षि
 अदि मभिभित्तिदि येभिभित्ति सप्यु
 अदि शेर्मवीह मभिभित्ति ठक्यु
 अदि संवचमदिबैह पतिरिपि
 मुहसासयान् विचहद पिपह

विचहदसिरपयादभिविद्ध ।
 अद्युपमादियंरंरुद्ध ।
 किंरलीसरिपहरसपरं ।
 अदि जाहदकिंमठ स्यां सुवर ।
 सवरीकेयारं वि मध्यपक्षि ।
 महिसिदि कीरह पतिवचमसु ।
 मरपयवह्नु जावर इरिपु ।
 नहयवह्नु सुती केमपिदि ।
 मवरह्नु वि सुयंगह्नु प्य मर ।

यथा—येभिभित्ति अममदिपु अदि अकिभित्तिदीह न इतर ॥

10

त्रिभमाह्वयण पतिवचमपिभ अम दीतर ॥ २० ॥

अदि इंद्रीकदहर्दियत
 किं मोचित किं न सुसारक्यु
 अदि ओसदिदीवत पञ्चकर
 अदि जापठ शुभपणमंदिपत
 विजवाहं मोसियं जीवव
 सुपत्तिपि सेवर जापु ठह

विदि मंकारं न विमंजिबं ।
 अदि सेवर सेवर सीकरह्नु ।
 एपिदि पुकिडु सुद्धं सेवरह्नु ।
 मुपिधेनं सुवह्नु पंदिपत ।
 अदि पयु वि विमय वि अमरव ।
 अदि दिंदर अजेसरिपयह ।

20. १ MBP पु १ MBP दीहं पु १ M "लभते न रदि; B "लभते न रदि; P "लभते न रदि ४ MB अमरपक्षि ५ MBP "लभते न रदि ६ MBP दीहं. MBP "लभते. १ B अमरपक्षि २ MBPT विविध and gloss in T विविध. १ P ४ MBP दीहं.

21. १ B अमरपक्षि २ MBPT विविध and gloss in T विविध. १ P ४ MBP दीहं. 20. ३ ४ "दीहं विविध" विविध. ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

21. १ ३ न विमंजिबं न इतरा २ ३ सद्यं सद्यं सद्यं सद्यं सद्यं ३ ३ सद्यं सद्यं सद्यं सद्यं सद्यं

पोमावइहसु कढक्खियउ
जसु तीरइ पवणहु तणउ मउ
धारहकोट्टेहिं अहिट्टियउ

जहिं वरुणहु मयरु गिरिभिन्धियउ ।
सिहि मेसें सहू कीलाणिरउ ।
जहिं समवसरणु सह सठियउ ।

घत्ता—तहु गिरिवरहु तले धरणीसें सिविसैं विमुक्कंउं ॥

10

णावइ मदरहो चउदिसु तारायणु थक्कंउं ॥ २१ ॥

22

मणिमउडपट्टभूसणहरिहिं
कंठोलवियमुत्तावलहिं
तणुतेउज्जलियवणत्थलिहिं
कइवयणिवेहिं सैंहुं सुद्धमइ
आवतहु रायहु सो सिहरि
सीहोत्तणचमरीचामरइ
मयणिम्मर घर गज्जत गय
णं दरिसणु अग्गगाइ ठवइ

सुरवरकरिकरदीहरकरहिं ।
उच्चाइयणवकुसुमजलिहिं ।
उवसमवंतहिं पसमियकलिहिं ।
पहु गिरिसिहरारोहणु करइ ।
णिज्झरजलधाराभरियदरि ।
छायादुमलत्तइ सुंदरं ।
घणयर किंकर गडय गवय ।
ण कोइल कलरवेण लवइ ।

5

घत्ता—तरैवत्ते गिरिणा फलु फुल्लु पत्तु ण दिण्णउं ॥

महिहरु महिहरहु अवसें पालइ पडिवण्णउं ॥ २२ ॥

10

23

आरुहिवि धराहरवरसिहरु
परमैप्पय पयपइ पइसरइ

अइरुदचंदकररासिहरु ।
जिणसमवसरणि तहिं पइसरइ ।

५ P सिमिह ६ MBP पमुक्कउ ७ B थक्कइ

22 १ MBP °हरहिं > B °णउकुसुम° ३ MBP सह ४ MBP सिंहासण° ५ MB तरुवत्ते

23 १ MBP धराधर° > MB परमप्पय पइपइ पयसरइ, T पयपइ प्रजापति, P परमप्पय पयवइ

पइसरइ and gloss परमात्मपादौ प्रजापतिर्भरत स्मरति

9 a अहि ट्टियउ सहितम्

22 8 a दरिसणु प्राभृतम् 9 तरुवत्ते तरुपात्रेण, वृक्षभाजनेन 10 महिहरु पर्वत, महिहरहु

वृत्पस्य

23 1 b °कररासिहरु किरणसमूहाभिभावकम् 2 a परमप्पय परमात्मानम्, पयपइ प्रजापति-

र्भरत

परंयारु वि वारिउ जारयह
ज अणुहरियउ अलियंजणहो
मुहणिंगंतउ पंहं खचियउ

तुहं णाहु सुट्टु विज्जारयहं ।
तं गाहु पाउ अलिय जणहो ।
तुह सभवि देवहिं खं चियउ ।

यत्ता—इय भरहेण युउ परमेसरु जिर्यपचिदिउ ॥

अमरासुरमणुयखगपुप्फंदंतफणिवटिउ ॥ २४ ॥

10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकहपुप्फयंतविरद्वए
महाभव्यभरहाणुमण्णिण महाकव्ये उत्तरभरहपसाहणं णाम
पण्णरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १५ ॥

॥ सधि ॥ १५ ॥

७ MBP परदार णिवारिउ ८ B जिउ पचि° ९ MBP °पुप्फयत°

6 b विज्जारयह रत्नलभविद्यारत्तानाम् 7 a अणुहरियउ अलियजणहो अमरस्य ७
स्रष्टवमित्यर्थ , b अलिय मिथ्या 8 b ख चियउ आकाश व्याप्तम्

एकवेधियु विजयवक्त्रममलु योपरेवि कइकासहो ॥

साकेबहु संयुहुं संवडिउ थयविजाहु विजयासहो ॥ युवकं ॥

1

सारवाक्ये—एविविहकज्जकुंडका एयमेहस्य मउवपइधारा ।

कडिया मंडलेसय केयरसुरेण कंडवइधारा ॥ १ ॥

होर भिरित्तु विविसें समधनु

किं न किं न किर संवूरिउ वनु

किं न किं न देसंतउ कंडिउ

किं न किं न पहरनु जवछोइउ

किं न किं न वरसाहनु बाहिउ

कपपरइमंडियपडिहारे

पुरवारिहिं माहणु कइका

कुंडमेव उववइउ विजइ

विप्यर कुसुमकरहु संसववनु

भरि भरि मीरइइ विजवैवनु

वप्यैव कइनु भरिइइ मन्नाहि

सकडिअहु मंडु सुविहि

करिवरकंयलनु मर्मेहापिहिं

किं न किं न किर कैहमियं वनु । १

किं न किं न सुखी जयउ वनु ।

किं न किं न कुणु नि जासंविउ ।

किं न किं न पडिसेनु विजइउ ।

किं न किं न परंउनु साहिउ ।

मौवेते पडुकेवावारे । 10

मउ देवैमवनु परिइइइ ।

कपूरे रंयवकिं किइइ ।

वजइ सुरतवइवतोरनु ।

होवेवडिबसिइवपचंवनु ।

कन्धोसिउ मंयनु सुरकज्जहिं । 15

छाहु कविअदपमिअविहिं ।

विजिअंतउ वासरपेविहिं ।

GMBP gave at the commencement of this Samdhi, the following stanza—

अतिपुइउमि कवेइं वविअयै लैरकेण्टा वडि ।

वयल कइमा वा डीरिण्टावोइ विजययु ॥

MBP read लैरकेण्टा for लैरकेण्टा and कइमावा for कइमा वा K does not give it.

1 १ MBP कइमावाहल २ M कवेइं ३ मिनी P विजिअ and gloss विविउ T विजिअ

४ B कविअ ५ M वडिउ ६ MBP वावारे ७ M देवउ वनु ८ P वजइउ वनु ९ gloss कइका

MBP वजइइ १ MB वनु २ P वीर ३ MP वयल ४ M वविअहिं ५ MBP "वडि

1. 2 विजयासहो विजयइं वि. 5 ॥ विजिअं कविअयैकमयमेव 6 ३ वनु वनु 15 ॥

विजइ विजिअ कुंडमकरहु वयलवइउवतोरनु वनु; वजइवनु वरुवैवतोरनु वडिउ.

घत्ता—महि सयल वि खगें णिज्जिणिवि कयदिव्विजयविलौसहिं ॥
उज्जहि मँरहाहिउ पइसरइ सट्ठिहिं वरिससहासहिं ॥ १ ॥

2

आरणाल—णउ पइसरइ पुरवरे रयणमँयहरे जयसिरीवरंग ॥
भगुरभासुँरारयं णिसियधारयं राइणो रहंग ॥ १ ॥

थक्कउ चक्कु ण पुरि परिसक्कइ	कुक्कइहिं कव्वु व णउ चिम्मक्कइ ।	
णं कौवाणलजालामंडलु	णं पुरलच्छिइ परिहिउ कुडलु ।	
भरहपयावें कायँरिजायउ	माणुविउ ण छज्जइ आयउ ।	5
इंदचदपडिक्कलणसीलउ	धगधगंतु खयहुयवहलीलउ ।	
एहु जि चक्कवट्ठि अवलोयहु	णयरें दीवुँ धरिउ ण लोयहु ।	
मणिमऊहमालावेलाँउलु	रायदिवायरपुण्णयरुज्जलु ।	
सुरहिगधु सिरिसेविउ समसलु	णं णहसरि विहँसिउ रत्तुप्पलु ।	
वलयायारहु णिरु सच्छायहु	अवसें देइ धरणि कँर आयहु ।	10

घत्ता—त चक्कु ण णयरिहि पइसरइ वेसहि जणियवियारउ ॥
हिर्यउल्लउ कवडसयहं भरिउ णावइ धुत्तहं केरउ ॥ २ ॥

१३ MBP विलासिहिं १४ MBP भरहेसर

2 १ MBP °मयहरे २ MB भापुरायय ३ MBP कायड जायउ, ४ MBP धरिउ दीउ.
५ K °वेलाजलु ६ MBP विगसिउ ७ MBPKT कर ८ M हियहुल्लउ

19 पइसरइ प्रतिसरति

2 B b चिम्मक्कइ चमत्कृतिं करोति 5 a काय रंजायउ कातरीभूतम्, b आयउ आगतम् 6 a °पडिक्कल ण सीलउ आभिभव कहुँ समर्थम् 7 b दीवु दीपो दिव्यं वा 8 b राये त्यादि—रफोत्पल राजमानै-
र्दिवाकरस्य पुण्यै प्रगल्लै करैरुज्ज्वल विकसित भवति, चक्रं ह राजदिवाकरस्य चक्रवर्तिन पुण्यान्वेव करात्तै-
रुज्ज्वल भवति 10 a वलयायारहु वृक्षाकारस्य चूडाकारस्य च, b धरणि भूमिं स्वी च, कर दण्डो हस्तश्च,
आयहु अस्य चक्रस्य 11-12 जणिये त्यादि—यथा धूर्तस्य हृदय वेदयाया न प्रविशति तथा चक्रं नगसां न
प्रविशति

वृत्ता—सो मण्डर कचसु मरिचि मने कइ एवि कई वि विरमर ॥
 तो सहु कबो सहु साहजेव परं मि जरिब भिनुमर ॥ ५ ॥

6

आरवाले—जो जिप्यर न हारिवा कुसिसधारिवा पचइसुइउरोले ।
 सो विममरु भाजने जिप्यर दाजने देन कइइकाये ॥ १ ॥

हिरमिष्यमहिषरधामर्ते	एसविषिबहणेसिबसामर्ते ।	
कचरिचिरिजिपयमोहे	मरपरिबिपुयसुधयमोहे ।	
जियमुयसतिपरजियमरुहे	सं भिनुमेवि पर्यपिउ भरुहे ।	5
कमहु कमचयु को हरिचावर	मई मुयवि किर कचयु रसावर ।	
एय को वि किं जगि संतावर	को किर सिधिसिहादि सं तावर ।	
कहु महु ठणउं पहुचु न मावर	केँ पठिबछिउं संतु बौदि मावर ।	
केर महरा को वावजार	एय पुहर कोँ किर पावजार ।	
भासमुइमरभिकरवाकहु	का वासकर महु करवाकहु ।	10
को किर मिष महाप मारु	को विविवाय मनु वि मारु ।	
किं किरि बणिपण कंयये	मयपंतहु विवरर कं दये ।	

मृत्ता—इय जंपिचि रुई विखरयु नविनवविहिरमनोकाहे ।
 सबकई मि सयससर्पयचरु केहु विष्णु दारकाहे ॥ १ ॥

MBP ५५ ५

6 १ MB "जिह्वि १ MBP १६ १ P ५५ ५ MBP १६ ५ ५ M ५६ १ MBP
 संनवरु

6 १ शरिवा वरमेय 8 ५ विसेत्तादि—हिती कौटी निचो वरपिनी मरोपटीयं लनेले
 कम्मीय कत्रय वेव तादकेय मरोय. 4 ५ तुवरा नोहे सोत्तया पुनिवा पोदेय. 5 ५ वरहे कपडेतेय.
 6 ५ रथावद हुपेपति 7 ५ विहि विहादि सं तावर नविजवावावि नवतयाय तावति. 8 ५ कचइ
 नविल 9 ५ वावजइ नवपति. 10 ५ वावजइ नववति 10 ५ "विह्वि करवाकही मेविनोरपाइकन
 12 ५ विवरर कं दये कयकाय देवेन कइ निजनि 18 नविनवविहिरमनोकाहे नविनवविहिर
 विनवकरकेय नवमोपटीयं देवावा

आरणालं—ता विगया वहुयरा जणमणोहरा णिवकुमारवासं ।

दुमदललैलियतोरणं रसियवारणं छिण्णभूमिदेसं ॥ १ ॥

तेहिं भणिय ते विणउ करेप्पिणु

सामिसालतणुरुह पणवेप्पिणु ।

सुरणरविसहरभयइं जणेरी

करहु केर णरणाहहु केरी ।

पणवहु किं वहुवेण पलावें

पुहइ ण लब्भइ मिच्छागावें ।

तं णिसुणेवि कुमारगणु घोसइ

तो पणवहुं जइ वाहि ण दीसइ ।

तो पणवहु जइ सुंसुइ कलेवर

तो पणवहु जइ जीविउ सुंदर ।

तो पणवहु जइ जरइ ण शिज्जइ

तो पणवहु जइ पुट्टि ण भज्जइ ।

तो पणवहु जइ वलु णोहइइ

तो पणवहु जइ सुइ ण विहइइ ।

तो पणवहु जइ मयणु ण तुट्टई

तो पणवहु जइ कालुं ण खुट्टइ ।

कंठि कयंतवासु ण चुंहुट्टइ

तो पणवहु जइ रिद्धि ण तुट्टइ । 10

घत्ता—जइ जम्मजरामरणइं हरइ चउगइदुंक्खु णिवारइ ॥

तो पणवहु तासु णरेसं हो जइ संसारहु तारइ ॥ ७ ॥

आरणालं—पुणरवि तेहिं गहिरयं सवणमहुरयं परिसं पउत्त ।

आणापसरधारणे धरणिकारणे पणाविउ ण जुत्तं ॥ १ ॥

पिंडिखहु महिसंह महेप्पिणु

फिह पणाविज्जइ माणु सुएप्पिणु ।

वक्कलणिवसणु कंदरमंदिर

वणहलमोयणु वैर तं सुंदर ।

7 १ MBP वबोहरा, T वउहरा दत्ता २ BPK 'लुलिय' ३ MBP वहुएण ४ MBP तइ and throughout elsewhere in this Kadavaka ५ MBP सुयिर but T सुसुइ ६ MBP फिट्टइ ७ MBP आउ ८ MBP कयतपासु ९ MBP चहुट्टइ १० MPB 'दुक्खइं वारइ ११ MP ता, B तहो १२ MBPK णरेसरहो

8 १ B omits धरणिकारणे, P महिहि कारणे २ MBP वरि

7 1 वहुयरा वहुतरा वबोघरा दत्ता 7 a सुसुइ सुसु शुचि 9 b विहइइ विनदयति, 11 a चुहुट्टइ लगति, b कालु आयु

8. 1 गहिरय गभीरम् 8 a पिंडिखहु खलखण्डम्, महेप्पिणु अभिलष्य

जो मणुयत्तणु भोपं णासइ
चिन्तु समत्तणि णेय णियत्तइ
मरइ रसणफंसणरसवहुउ
खज्जइ पलयकालसहूले
मंजरु कुंजरु महिसउ मंडलु

तेण समाणु हीणु को सीसइ ।
पुत्तु फलत्तु चित्तु सन्नितइ ।
मे मे मे करंतु जिह मँडेउ ।
टज्जइ दुप्पगुह्यासणजालें ।
होइ जीउ मँकाह माहुडलु ।

10

घत्ता—केलासहु जाइवि तवयरणु ताए भासिउ किजइ ॥

जेणेह सुदूसहतावयरि ससारिणि तिस छिज्जइ ॥ ९ ॥

10

आरणाळ—इय मंणियं कुमारया मारमारया समरमा पसण्णा ।

दरिवियरियवराहयं सवरराहय काणण पवण्णा ॥ १ ॥

दिट्ठु तेहिं केलांसि जिणेसरु
जय रिसिणाह वसह वसहद्धय
जय जाणियपरमक्खरकारण
जय सुहवास दुरासायारण
पुणु वि पंच परमेट्ठि णवेप्पिणु
पंचमहारिसिवयइं लँपेप्पिणु
पंचिदियपमाउ घजेप्पिणु
पचायारसार पावेप्पिणु

सथुउ रिसहणाहु परमेसरु ।
जय तियसिंदमउलिलालियपय ।
जय जिण मोहमहातरुधारण ।
जय ससहरसियवारिणिवारण ।
पंचमुट्ठि सिरि लोउ करेप्पिणु ।
पंचासवदारीइं पिहेप्पिणु ।
पंच वि सर मयणहु तज्जेप्पिणु ।
पंचपंचविहु धम्म धरेप्पिणु ।

5

10

७ M मिट्ट, BP मेडट, c MBP मकडु

10 १ MBP भणिजो २ MBP समरमापवण्णा and gloss in MP उपशमलक्ष्मीं प्राप्ता ३ MP सवरराह, but T सवरराहय शवरणां भामो भा यत्र ४ MP केलास ५ B छहेप्पिणु ६ B ०दारइ रंभेप्पिणु

७ a णेय णियत्तइ नैव नियन्त्रयति 12 b माहुडलु सर्पविशेष . 14 ससारिणि तिस ससारवृण्णा विपयाकांक्षा.

10 1 समरमा उपशमलक्ष्मीका , पसण्णा प्रसप्ता 2 ०वियरियं विचरिता , सवरराहयं शवरणां राहा शोभा यत् 5 a परमक्खरं मोक्ष 6 a सुहवास शुभस्य सुखस्य वा गृहरूप 6 b सस-हरेत्यादि—शशधरश्चन्द्र तत्तुल्य सितं शुक्ल वारिणिवारण छत्र यस्य 8 b पंचासवदाराइ मिथ्यात्वाविरति प्रमादकपाययोगा 10 b पंचपंचविहु दशविध

पत्ता—इहगुणि मजममाणु संविहित माक्काहु संमुहं पत्तिं ।
 संतहि अण्ठेठट्टु तणुदहहि अण्ठ करिपे भूतिं ॥ १० ॥

II

भारव्यासं—ता पत्तो वरं पुंरं निवहरा धीरं भजरं सुणसु राया ।
 हसिणो तुहं सहीयप सीलसायप भञ्ज देव जाया ॥ १ ॥

एहं हि परं बाहुवलिं सुवुम्मा	अहं तव कररं वं तुम्हं पणवरं ।	
ठं विमुजेयि पुराणे कसंठे	भट्टसामंतमंठिसंतुत्तं ।	
कोसु देहं परियेणु पथमत्त	मज्झइ भंतवत्तं मणुरत्त ।	४
कुसु उणु वलु सामाणु सुहत्त	विहितवत्ताणुपत्तं जसकित्त ।	
विण्णं विपाय्हादि तुहंसणु	पात्तिं बुद्धिं रिद्धिं वत्तुत्त ।	
कुंजरं वाक्खं मदिहरं जंगु	अत्थि तासु एहं कररं तुहं ।	
अपसत्तु जावज्जं वि वं सररं	जाम सहायसहासं वं कररं ।	
जाम वं जम्माहं पत्तसंयमे	पत्तयम्मभिमहणुम्ममे ।	10

पत्ता—जावज्जं वि जाव वं करि एहं तोवत्तुपत्तु वं वंयरं ।
 निर्म्मज्जिप मात्तसयसवहि जाम वं गुणि सव संयरं ॥ ११ ॥

12

भारव्यासं—अ हं माए महाहणे जा महाहणे दाहणे समत्था ।
 जा वं हररं विपाय्ठं तुहं महीयसं तिप्पल्लमाहरणे ॥ १२ ॥

वाम तासु वृद्धे पेसिज्जर	अहं वरं पणवरं वा पात्तिज्जर ।	
वं वा पुणु बाहुवलिं परिज्जर	वंधिणि अण्ठगारि विहिज्जर ।	
एमं मेणु जं ठेव पंडिज्जर	वा वरं तहं वृद्धं विहिज्जर ।	४

✓ MBP पेसिज्जर. MBP पणिकर.

11. १ MBP हर. १ MBP वं पुम्मा १ MBP तुत्तं ✓ MBP वीह १ MB वल्लु
 १ MBP हरं ✓ M रिद्धिं बुद्धिहरत्तम्. MBP विम्पज्जिप

12 १ MBP एह

11. ४ ३ वं पत्तिं तत्तु वत्तिसंयम् १ ३ तुहं वीह तुहं वत्ता. 11 वाव वाव.

12. १ महाहणे महात्तमे; महाहणे महात्तमे, महात्तमे.

णियवहरत्तु सत्तुविद्धमणु
देसजाइकुलमुधु पसिद्धउ
विविहविसयभासाभामिहउ
तेयवंतु रक्खियपहुतेयउ
गंड दूयउ परिचोइयपत्तउ
जहिं वणतरसाहहिं महु वियलइ
अइदीहरपवाससममहियहिं
रसविसेसधारामहमहियइ
पुफहिं गुंफइ माल विहिंदिहं

सुहइ सुलम्बणु सोमु सुदंसणु ।
पंडिउ पट्ट पट्टलच्छिसमिद्धउ ।
दिट्टुत्तर महिमाइ महल्लउ ।
महुखाणि औदेउ अजेयउ ।
पोयणपुर वहुदिवंसहिं पत्तउ । 10
चलकंकेलीपिहयु विल्लइ ।
पदसताहिं वि समंताहिं पहियहिं ।
जहिं रज्जति फलाइं सुरहियइं ।
चउदिसु वणुणुणति इंदिदिर ।

घत्ता—सरु मेळिवि करेण णियद्वियउ रत्तु पवहुँलु रसियउ ।

15

विंवीफलुँ अहर व वणसिरिहे जहिं कणइल्लं ढसियउ ॥ १२ ॥

13

आरणाळ—चरकेदारदारण सालिसारण कसणघवलपिच्छां ।

अणुअणुअणियघणकणं कणिसमणुदिणं जहिं चुणंति रिंछा ॥ १ ॥

णिद्धणत्तु जहिं चदै दावित
जहिं विहार पासाउ पियारउ
उववासु वि चट्टण रइजइ
जहिं केण वि कीरइ ण सुरागमु

माणुसि कत्तइ पेय विहावित ।
णउ णारियेणकट्ट रइगारउ ।
णउ रोप दुव्वालिं किजइ । 6
होइ गुणीण गुणेहिं सुरागमु ।

१ M पत्तु विद्धमणु ३ MBP आदिय ४ MBP गयउ दउ ५ MBP °दियहहिं ६ MBP पत्तउ ७ MBP
समत्तहिं ८ MP add after this ण कामिणिवयणइ अहरसरइ, पुणु पिज्जहिं जलाइ सरिसारसहिं ९ MBP
गुफइ १० MBP विहिंदिह ११ MBP पवट्टु १२ MBP विंवीहलु

13 १ MBP वरु, T केयार° २ MBP °विंछा ३ MBP चरति ४ MBP णारियणदेहु

6 a णियवहरत्तु निजस्वाम्यनुरक्त 9 b आदेउ आदरवान् 10 a परिचोइयपत्तउ वाहितवाहन .
12 b समंताहिं समन्तात् 13 b सुरहियइ देवहितानि सुगन्धानि वा 14 a विहिंदिह पर्यटनशीला ,
b इदिदिर अमरा 15 सरु मेळिवि शब्द कृत्वा 16 कणइल्लं शुकेन
13 1 केदारदारण वप्रमाणं 2 अणु स्तोकम् 3 a-b णिद्धणत्तु क्षिग्ध ज्योत्स्नायुक् नक्तं रात्रि ,
न पुनर्मनुष्ये निर्धनत्वम् 4 a-b विहार पासाउ विहारशब्दवाच्य प्रासाद', अथवा कीना पक्षिणा धारक ,
प्रासाद , न ह नारीजनो विगतहार 5 a उववासु गृहमध्ये वास आहारत्यागश्च, चट्टण चट्टेन पक्षिणा,
6 a सुरागमु मयागम मयापानम्, b सुरागमु देवागमनम्

रिद्ध सिद्धाच्छं वि रिचिचिच्यदि
नसिद्धाच्छं वि रिचिचिच्यदि
यह स्या नवतु र्बुधु जोषु
जेतु कुसादुर्बुधु नीतमे
यैयत्तु विचयत्तु ययत्तु

षड माषिकमरुदपरिक्वहि ।
 षड विसिद्धमारुतसंक्पय ।
 षड विद्वद् षड विसंतत षड ।
 षड वारि षड रायवर्ष षड । 10
 षड षड षड षड षड षड ।

यथा—शुभजयिनिर्हि कीर्तागिरिजयर्हि ब्रह्मपादपपायार्हि ।

ॐ सोमः सोमिषतोऽयं मंदिः अहं मि वापि ॥ ११ ॥

14

आख्याः—तदि सुशुक्लरूपो पद्मपत्रो वह्ने पाप्मे ।

राधाकेयवुवाएय द्विपयहाएय धान्नेहि रिजे ॥ १ ॥

कचपर्यईयद भासुद भावित
मुद्रिबंतु अक्षम्भुवम्भुव
तं भिन्नुभिवि गतं कडुविहत्त
अप्पद देरि जजिज्जमोह
ता कंर्ये भविंमं न वापि
ता कडुमहरेव जसविम्भु
वाहुवलीसु देव कचमंतु
संसुद मडुविपर्यज्जिपोमं

तर्हि पदिहाक तेष बोझाभिर ।
 मनु बन्धनं दुर्गतिं पशुहृदय ।
 कहरं कुमारं पद्ममिममत्यय ।
 अस्मिन् अस्मिन् मनु सन्मिय बन्धन ।
 भावयन्ति कुरु परस्यपि ।
 परस्यपि पदम्भमुद्गमम् ।
 इति विदुः न आह्वयम् ।
 को बन्धनं न विदुः न परित्यजे । 10

भ्रष्टा—गृह बलुगुमडंकारियव केवल व माणु विहित ।

एतद् ब्रह्महृदयेऽस्मिन् ब्रह्मसंज्ञायाः प्रतीकम् ॥ १४ ॥

* MBP "हल्लनर K "हल्लनर but corrects it to "हल्ल" & MBPT वगु. MBP वगु
 * MT प्रसारक. & P वगु. & MBP वगु

14. MBPT प्रकृषी १ MB एकाग्र, १ MBP "वृक्षक. ४ MBP वनमि" ५ MBP वरी. १ M "वृक्षक" MBP केवटिवाय व वरत T विहित लव

[illegible]

14. 1 "ହୁକମ୍‌ବୋ ଡାକ 4 ଇଲ୍ୟାକ୍ଟ୍ରୋନିକ୍ସ ଲ୍ୟାବ୍‌ସ୍‌ଟା ୩ ଇଲ୍ୟାକ୍ଟ୍ରୋନିକ୍ସ ଲ୍ୟାବ୍‌ସ୍‌ଟା
2 ଇଲ୍ୟାକ୍ଟ୍ରୋନିକ୍ସ ଲ୍ୟାବ୍‌ସ୍‌ଟା

15

आरणालं—पियवयणं पि भासियं सुइसुहासियं भुत्तकामभोया ।

तुह जयवढहसहेणं जगविमहेणं णउ सुणंति लोया ॥ १ ॥

जय कुसुमाउह रइरमणीवर
पइं पेच्छिवि घोळइ उप्परियणु
चिहुरभारु दढवंधु वि पसिढिल्ले
चलइ वलइ लोयणजुयलुल्लउ
रंभा णवरंभा इव डोलइ
देवै तिलोत्तिम तिलु तिलु खिज्जइ
मेणइ मीणि व योवइ पाणिइ
पम धुणंतहु दिण्णउं आसणु
हिमइरिजलहिमज्झि महिरायहु
कुसलु खेउ कुरुवंसणरेसहु
कुसलु खेमु णमिविणमिकुमारहु
दूवै वुत्तउ कुसलु णरिंदहु
एकु जि अकुसलु सुहिउकंठिउ

अलिमालाजीयासंधियसर ।
वियलइ णारिहि णीवीवंधणु ।
हवइ रयंवु सवइ सोणीयलु । 5
दीसइ अंगु वूढसेउल्लउ ।
रइवापं आहल्ल वि हल्लइ ।
विरहें उव्वंसि उव्वेइज्जइ ।
पिय संतप्पइ रवियरमाणिइ ।
णिवसणु भूसणु किउ संभासणु । 10
कुसलु खेउं भरहहु महु भायहु ।
कुसलु खेमु जलहरणिगघोसहु ।
कुसलु खेउं पत्थिवपरिवारहु ।
कुसलु णाह णिहिल्लहु णिवविंदहु ।
जं तुहुं देवै दूरि परिसंठिउ । 16

घत्ता—दूरत्थहं वंधुहुं णेहु जइ णासइ पिसुणकयंतर ॥

रवि मेल्लइ किरणइ पंकयहं ताइं णिवारइ जलहर ॥ १५ ॥

16

आरणालं—भो भो दणुयणिम्महा सुणसु वम्महा कुणसु चारु चित्त ।

सह गुरुपण भाइणा तिजगताइणा रुसिउं ण जुत्त ॥ १ ॥

15 १ MB जयवढसहेण २ B सिद्धिल्ल ३ P देवि ४ MBP उव्वंस ५ MBP उव्वंस
६ MBP दूरि देव
16 १ M °णिम्महा २ MBP गरुण

15 5 b रयवु शुक्म् 6 b वूढसेउल्लउ उत्पन्नत्वेदाद्रिम् 9 b पिय प्रभो, रवियरमाणिम्
करसतापेन 16 पिसुण कयंतर पिसुणकृतचित्तमेद .
16 2 ° ताइणा रक्षकेन.

को ससह को किर करमेकर	को समुद्र को बलकसोकर । १
को तुई मरु कवण किर बुधर	पहल बुधई विपणु म बधर ।
कवणकवणु कि कुलुमहि अंभमि	रयबापव करसकिई सिचमि । ४
सुरह अन्तर बीबड बोहमि	हैंरि बिहीनु कि पई सोबोहमि ।
तापह पच्छर भरह मि राजव	तुई बुधराव अगेईपहाव ।
माचे मरह बिचह मुपपिणु	बीबड एकमेव मनुजेपिणु ।
तदविचंडकंडहवपईहहि	अरिबखंडितवपिहहहि ।
बापविपईहवोबंडहि	आकिगियव केहि मुपबंडहि । 10
तेहि व पुचरवि एवि कुलिअर	शुंरुईवि अविजयव अलिअर ।

मत्ता—कुलसामि महाबलु सुपणु मुपि वड वबंठि के राजव ।

अरि ताई होइ शक्तिइव अह अमपुदिह प्यावड । ११ ।

17

भारजाई—ओ बरचउलुअयरे पडमविचवरे वंकवअिआय ।

विचवैतो पपासिमो केव मुसिमो रापअिआय । १ ।

आहु बड रिचवडु बिहुंमर	आहु बंड परईह विवमर ।
आहु पुतेहु पुपारव पच्छर	मुरव मुरिच विवड सई गच्छर ।
कागवि विचमवि ससि वि शुंरुकर	यवर यवर तिहुवडु अर इच्छर । ४
अपर कणु होनु विचरेव	असि अमु कडुर सणु केव ।
अमु अमु अरंतु अहमासर	सेवावर सेवावर आसर ।
मागहु वरतनु केव पहासु वि	बिजिड सुव वेपुविमासु वि ।
केव सिमीलकवाह विहहि	सिपुवेविअहिमासु पओहि ।

१ MB इई मि हीनु ५ MP अगेनु प्यावड ५ MBPK बापु मरु विचु ६ ॥ परिचई and घोस परिचई. ७ MBP "बर" ८ MBP हुपवण

17 १ MBP अहमासर

॥ ४ बरइ वरं ; विचहु विचवरे ४ ६ अमुवेमिनु अमुवई कल 1४ पवापड प्रअणं पवण

17 ४ ६ विववइ मसिअमि, ४ ८ पुपारव पवाअमि मरु ॥ ६ यवर रवपि, ४ ८ आवइ आपअमि, ६ अ हु माणा ॥ अहमा अह अविचवैव कीमरी, ६ सेवावइ केवमा आसर

दिण्ण केर हिमवतकुमारहु
तहिं अप्पणं णाउं सणिहियउ
तं तहिं दीसइ ण उण कलंकउ
विसहरउलइं सविसहरवरिसइं
णं पालेययसेलकिरीडहु
पुणु आइउ वसहंइरिसुतीरहु । 10
छाहिछलेण व ससिणा गहियउ ।
णिवणाँमकिउ भमइ ससंकउ ।
जित्तइ मेच्छउलइं सामरिसइं ।
पुणु भउ जणियउं गंगाकूडहु ।

घत्ता—हुकी मंदाइणि कलसकर लोप दीसइ केही ॥ 15

थिय प्हाणकरणमणणिवणियडि मज्जणवालिणि जेही ॥ १७ ॥

18

आरणालं—जस्सायासगामिणो खयरसामिणो विहिर्यहिययसल्ला ।

णमिविणमीसणामया णिरह णिम्मया जायया वसिल्ला ॥ १ ॥

पुणु वेयडुहु कुलिसं ताडिउ
णट्टमालि साहिउ मालायरु
असमु वइरु किं तेण समाणउ
पिंछकमंडंलुमंडियहत्यहु
चक्रवट्टि गुणमणिरयणायरु
मा पज्जलउ तासु कोवाणलु
हा मा दुरयरएहिं विहिज्जउ
मा उच्छलउ छइयदिसमेरउ
मा धावंतु महत्त महारह
पुर्वकवाहु जेण उग्घाडिउ ।
पयजुइ पाडिउ णं पायडणरु ।
जं माणुसु रिच्छउ उत्ताणउं । 5
रोसु जणइ त मुणिवरसत्थहु ।
आउ जाहुं अवलोयहि भायरु ।
मा णिडुहउं तुहारउ भुयवलु ।
पोयणपुरपायारु दलिज्जउ ।
हैरिखुरखयखोणीघूलीरउ । 10
मा पिसुणहं पूरंतु मणोरह ।

२ MPB वसहरिउ तीरहु ३ MBP °णामकउ ४ MBP मिच्छाउलइ ५ M records a p राए
for लोपं

18 १ MB विहय° २ M पुब्बिकवाहु ३ MP ण माणसु, B माणसु ४ MBP °कमडल°
५ MBP णिडलउ ६ B वडिज्जउ ७ BP हयखुर°

10 a केर आश 11 b छा हि छलेण छायाव्याजेन 13 a सविसहरवरिसइ विसहरा मेघास्तेषा वर्षणेन
सहितानि 14 a पालेययसेल° हिमपर्वतो हिमवान् 16 मज्ज ण वालिणि ज्ञानपालिका दासी
18 2 णिरह निष्पापा, णिम्मया निर्मदा 4 b पायडणरु सामान्यमनुष्यसदृश 9 a दुरय
रएहिं हस्तिनां दन्तै, विहिज्जव विमज्जताम् 10 a छइयदिसमेरउ आच्छादितदिङ्मर्यादम्

काव कंठकावलिहि म विरल
देहि कप्यु विहप्यु हनेपियु
त विहपेपियु पाहुषकीसै

पञ्चकाशु सोपिठ मा करिख
एकसु मरु मांने पञ्चपियु ।
पडिअपिठं मूर्मगविहीसै ।

मरु—कप्यु अण्यु न होमि हतं मुषयकरु विचारि ।

संकेत्ये सो मरु केरण पडु करिअह विचारि ॥ १८ ॥

19

कारकाह—हे दिनें महेसिया दुरियपासिया कवरैसमेत ।

त मरु विहिपसासर्न कुसविहसर्न हर को पडुत ॥ १ ॥

केसरिकेसव बरैसवअण्यु
को हत्येव विवर सो केस
हर्न सो पञ्चपमि को सो मन्वा
कि अम्मवि देवहि महिपिबिह
कि लडु अम्मर दुरवर पविह
कडु बंड तं ताहु नि सारु
करिअरररररररररररररर
मरु हर्न कि मरु मुर्माव

मुद्रवडु सण्डु मरु घरनीवडु ।

कि कप्यु कडामरु केस ।

महिअकेव कडम पणुअर ।

कि मरुपिठिठिहहि समविह ।

विहिअठिठिठिह कि रोमविह ।

मरु पुडु नं कुमारु केस ।

अर विहपमि एहि के नि मरुअ ।

तरे मुद्रव अर मुद्रव विहव । 10

मरु—तहु मरुवि मरु पोरपणवव माहविपिठे विहव ।

अम्मिअर वडव अवि विहिपिठिहि अर न सरर पडिपिठव ॥ १९ ॥

MBP हरिअ १ MBP विवरपु हरेपियु

19 १ MBP विहव १ B omia व मरु विहियसाम १ MBP हरिअ, but records १ १
१ MBP पणव १ MBP "कडिपिठि सो रोमविह १ BP add other 11x हरिअविह
केसविह १ MBPT वरु MBP मुषय T मुषय पाहुषाण्यु १ MBP १ MBP १ MBP
१ MBP विहव

12 १ कंठकावलि हि मनुष्यकावली विरल वरु, १ करिअ वरु, 14 १ मूरमगविहीसै मूरम-
गविह, 19 १ मरुअवपणव मुषय, १ मरु अण्यु १ १ विहव वरु १ १ "कडिपिठि विह
पिठि पाहुषा १ १ मरुअ वरु 10 १ मुषय वरु मुषयवर्ण

20

आरणाल—ता दूण जपिय किं सुविप्पिय भणसि भो कुमार ।

याणा भरहेपेसिया पिंलभूसिया होंति दुण्णिवारा ॥ १ ॥

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ	किं खरेण मायगु खलिज्जइ ।
खज्जोएं रवि णित्तेइज्जइ	किं घुट्टेण जलहि सोसिज्जइ ।
गोप्पएण किं णहु मौणिज्जइ	अण्णाणं किं जिणु जाणिज्जइ । 5
वायसेण किं गरुड णिरुज्जइ	णवकमलेण कुलिसु किं विज्जइ ।
करिणा किं मयारि मारिज्जइ	किं वसहेण वग्घु दारिज्जइ ।
किं हसें ससकु धवलज्जइ	किं मणुएण कालु कवलज्जइ ।
ढेंहुहेण किं सप्पु डसिज्जइ	किं कम्मेण सिद्धु वसि किज्जइ ।
किं णीसासें लोउ णिहिप्पइ	किं पइं भरहेणराहिउ जिप्पइ । 10

घत्ता—हो होउ पडुप्पइ जपिण राउ तुटुप्परि वग्गइ ॥

करवालहिं सूलहिं सच्चलहिं परइ रेंगणि लग्गइ ॥ २० ॥

21

आरणालं—ता भणियं सहेउणा मयरकेउणा पत्थ कहिं मि जाया ।

जे परदविणहारिणो कलहकारिणो ते जयस्मि राया ॥ १ ॥

घुड्डु जंवुउ सिवं सदिज्जइ	एण णाइं महु हासउ दिज्जइ ।
जो वलवंतु चोरु सो राणउ	णिच्चलु पुणु किज्जइ णिप्रौणउ ।
हिप्पइ मृगेंहु मृगेण जि आमिसु	हिप्पइ मणुयहु मणुएण जि वसु । 5
रक्खाकंखइ जूहु रएप्पिणु	एक्खहु केरी आण लएप्पिणु ।

20 १ MBPK किं खज्जोए २ P सोखिज्जइ ३ P मणिज्जइ ४ MBP हिंहुहेण, ५ MBP भरहु ६ MBP पडुप्पइ ७ K रणगणु मग्गइ

21 १ MBP सिउ २ M णिच्चल ३ MBP णिप्पाणउ ४ MBP मिग्गहु मिगेण ५ P वुड्डु

20 5 a मा णिज्जइ उपमीयते 10 a णि हिप्पइ निक्षिप्यते 11 वग्गइ विप्रहाय चेश्ते 12 परइ प्रभाते

21 1 सहेउणा समुत्तिकेन B b एण णाइं अनेन न्यायेन 5 b वसु धनम्

ते विवर्तन्ति तिष्ठोर्गविहृत
मात्रमंगि बरं मरण्यु न जीयित
वाचन मर्षं घात तद्गु संसमि
सिद्धिसिद्धांतं वैविधु वि न सख
पदु कि परतन्त्राव परिवाह

सीहह केरव मंहु न विहृत ।
पद्वत वृथ सुहु मर्षं मोषितं ।
संघारात न धमि विवर्तसमि ।
महु मणसिमहु विवर्तं को विवहृत ॥१०
कर परसरर सरनु सिर्षेवर्तु ।

वृत्ता—संघट्टमि सुहुमि गयघट्टहु वसमि सुहृद रत्नमम्यर ॥

पहु वाचन वाचन बाहुबलु महु बाहुबलिवि अम्यर ॥ २१ ॥

22

आरवाचं—ता वृत्ते विविमामो विवर्तुं यथा तस्मि विवर्तविवाचं ।

सो विवर्तय सापरं सारसापरं पत्रविर्तं महीर्षं ॥ १ ॥

विस्तनु देव बाहुबलि घरेसर
कन्तु न वंघर वंघर परितर
परं नर पेच्छर पेच्छर सुयक्तु
मातु न कंठर कंठर मयस्तु
संति न मर्षर मर्षर कुलकलि
मुक्तु न कवर कवर मुनिर्वह
देव न देव माह सुह पोयनु
दोयह रयवर नर करिरयवर

नहु न संघर संघर मुनि सर ।
संधि न इच्छर इच्छर संघर ।
आन न पच्छर पच्छर विवर्तु । ६
वैवु न विवर विवर पोयितु ।
पुह्र न देह देह बाबाबलि ।
मंगु न कटुर कटुर पंडर ।
पर कायमि देसर रत्नमोयनु ।
दोयसह कुपे नरनरनवर । 10

वृत्ता—संताणु कुलकलु मुनिर्वह पत्रवस्तु नर पुह्रर ॥

मन्त्रायविवर्तित सामरितु नवर्षे शहर सुहृद ॥ २१ ॥

(B लीज' = MBP लिपि & MBP बलि. १ M बायित १ MBPK एव; G मात bat writes above 1 UT in second hand, ११ M विवर्तित वैविधु न वि न कवर ११ MT लिपि ११ MBPK लिपिरु

22. १ MBP वृत्त २ MB वरवर; P नवविधो ३ MBP वृत्त & DPP वस्तु वस्तु- ५ MBP पुत्र

10 & विविह वाता 11 & परतन्त्राव परितरन रत्नम्य-

22. 1 पावरं सररु; आरवाचं वा अन्वयी एवा वृत्तियो तयो आकरम् 8 & वृत्तिर्वह वृत्तिवह; 10 & नरनरनवर नरनरनरनरनरनरनर 12 वाहक वाचन- वस्तुवस्तुवस्तु

23

आरणालं—ता परिल्हसिउ दिणमणी ण म्निरोमणी गयणकामिणीण ।

अत्थं पडि णिवेइओ रुइविराइओ णाइ जामिणीण ॥ १ ॥

मावेसहि भणेवि अइरत्तउ
णं चउपहरहिं वणु अहिकतिहि
णाइं पवालकुभुं दिसणारिइ
पउलिवि तलिवि दलिवि दलवट्टिवि
दंडरहियजणलोहियलत्ती
उग्घाडिवि ससहरमुह णिद्धहि
णं सिंदूरकरंडं ग्रसञ्जिइ
मयरंदुल्लोलु व जगकमलहु
गोमिणीइ हरिरइरसभंरिउं
अत्थमियउ जाइवि अवरसइ

दिवसहु दिण्णु दीरुं सिहितत्तउ ।
जायउ लोहियहु णहदंतिहि ।
घरिवि मुकुं दिक्करिगणियारिइ । 5
जीवरासि जगभायणि घट्टिवि ।
कालेढां विव दिसिर्वहि धिच्ची ।
संमुदियहि तियसासामुद्धहि ।
दाविउ लवणजलहिजललच्छिइ ।
णिउ वाण्ण वरुणमुहकमलहु । 10
पोमरार्यवत्तु व वीसरिउ ।
रत्तु मिच्चु णं गिलियउ वेसइ ।

घत्ता—पुणु दीसइ सञ्जारायण भुवणु असेसु वि रत्तउ ॥

सहुं गिरिंदरिसरिणदणवणहिं लक्खारसि णं धित्तउ ॥ २३ ॥

24

आरणालं—आसोसियखमारसो खवियतावसो तरुणिदंसणाओ ।

ण णरमणि ण माइओ दिसहिं धाइओ सहइ मयणराओ ॥ १ ॥

संज्ञारायजलणु जो भमियउ
संज्ञारायघुसिणु ज सकिउ

सो तमजलकल्लोलहिं समियउ ।
तं तमोहमयणाहं ढकिउ ।

23 १ MBP दीउ २ MBP कुभ ३ MBP मुका ४ MBP मलिवि ५ B कालिं दाविय
६ MB दिसवहि, P दिवसहि ७ MBP °भरियउ ८ MBP °पत्तु ९ MBP वीसरियउ १० MBP
गिरिसरत्ति°

23 2 अत्थं पडि णिवेइओ अस्तपर्वत प्रति समर्पित, रुइविराइओ दीप्तिविराजित, णाइ तथा
यामिन्या 8 a मावेसहि मा आवेसहि मा प्रवेशं कुरु 5 b दिक्करिगणियारिइ दिक्करिहस्तिन्या 7 b
कालेढा विव दिसिर्वहि धिच्ची कालेन अण्डमिव दिक्षु क्षिप्तम् 11 a हरिरइरस° कृष्णकीढारस; b पोम-
रायवत्तु पद्मारागभाजनम् 12 a अवरसइ अपरदिशा

24 8 b समियउ पीडित 4 b °भयणाहं मृगेन्द्रेण

संज्ञापयिष्ये को' कुहिङ्ग
 बंदमहिं समकदि मय्यङ्ग
 मयपिहेष वीसह सुप्रसारङ्ग
 विसह गवककहिं यवपदि घोषह
 रंभायादे धिवक बंधारङ्ग
 एपासेवमिहु तेजुज्जल
 रिङ्ग कत्तह वीसपारङ्ग
 मोरें पंडुव सन्नु बिपयिषि

सो समसंवेदमवरपेडिङ्ग ।
 किं जावहुं सो तासु किं कय्यङ्ग ।
 तय्येसु बोरिदि मत्तारङ्ग ।
 बहुराव व ससितेड पिडाकह ।
 पुजसंक पययह मत्तारङ्ग ।
 मिहु भुयंगदि वं मुत्ताहसु ।
 धरि पवसंतड किरणुजेरङ्ग ।
 मुजें कह व ज गहिङ्ग सडयिषि ।

प्रता—पंगासरि हसपककहं रिपेदिहिरिगडयकं ।

आयं ससियरपयवाडियं भवकां किं किं यवकं । २४ ।

25

भारवाक—ममयमभियकंपिरे मयकंपिरे पयपयिषयवसंत ।

एरसर्पसर्पिरे पियवमा विरं एव निरि रंरं । २५ ।

केव वि मययमि विहियङ्ग करयसु
 काह वि को वि सुहङ्ग जाठियिङ्ग
 पीहंरि पविहृपेसुमयि
 पयवककहिं एमपीवरंगङ्ग
 सोहह विनु नहर रिङ्ग संकिङ्ग
 हारे कय का वि सयवाकह
 विवाहरपयवसंसितङ्ग
 कत्ताविङ्ग एरससिङ्गवाह

कयवककसि वावह रसुमसु ।
 मीमसुसुहंरु मयिङ्ग ।
 केव वि का वि धरिप करयवि ।
 को वि सहुंकुमेव पारं इव ।
 वं मययवसुहह भंकिङ्ग ।
 वाविङ्ग वाहें वंयवमाकह ।
 काह वि मययवसु पविहृपे ।
 काह वि विविविविङ्ग कय्यह । 10

24. १ MBP व १ P केरिदि १ M विरंरं व B omits this foot. ५ M एवमर.
 ६ M विविविङ्ग.

25 १ B "एरससि १ MBPK एर १ MBP यवय व MBP कय.

६ ६ "वैरम" हसी. ७ ७ वयविहेष पयमिष. ८ ८ रंभाया विवावार. ९ ९ वयवह मययमि.
 11 १ १ वीसपारङ्ग कय्यमर ६ ६ "वैरम" कय 18 १८ पयवककह कय्यवमि.

25 ६ ६ "वैरम" कय वीर वरिप ७ ७ वयव मयिपड.

का वि रयावैसाणसमरीणी
को वि का वि सवहहि रंजइ गुणि
जाम एहु वेसाणरु अच्छइ
जणणि महेली मणि अवहारमि

चंदणकइमवाविहि लीणी ।
अक्कसमाण मज्झु परपणइणि ।
तावण्णहि को वयणु णियच्छइ ।
गुरुपय छिवमि ण पइं अवहेरमि ।

धत्ता—इय कवडकूडमउजपियहि दाणेण र्व वसिह्यउ ॥

15

णारीयणु रमिउ विडाहिबहि वेढिवि णिरुवमरुवउ ॥ २५ ॥

26

आरणाल—दीहा वि रयमिहुणह चक्कवियणहं पहियवंदयाणं ।

मडहा हवइ रयणिया चंदवयणिया रयविहिंदियाणं ॥ १ ॥

ता उग्गमिउ सूर पुच्चासइ
किंसुयकुसुमपुजु ण सोहिउ
चार सूर वसहु ण कदउ
मज्झु परोक्खइ आवइ पाविय
एम भणंतु व गयणि व लग्गउ
तवुं करोहउ कैहिरु णिसाढें
कुंकुमलोलु व मण्णिउ घरिणिइ
मिलियउ सोहइ विहुममहियलि
मिलियउ सोहइ रत्तइ सयदलि
मिलियउ सोहइ जण अहरल्लइ
राउ मुयतु जि गुणसजुत्तउ

रइरंगु व दरिसिउ कामासइ ।
ण जगभवणि पईवुं पवोहिउ ।
लोहिउ ससि रोसेण दिणिंदुं । 5
कमलिणि वेळि भाणिवि संताविय ।
णं रयणियरहु पच्छइ लग्गउ ।
चित्तिउ एंतु सळिइकवाढें ।
रत्तु दुवंकुरु कंदरहरिणिइ ।
मिलियउ सोहइ ककेलीदिलि । 10
मिलियउ सोहइ रमणीकरयलि ।
महिहरतीर धाउ जलरेल्लइ ।
अरहंतु व रवि उण्णइ पत्तउ ।

५ P °रयावसाणि ६ MBP वि

26 १ MBP रइ° २ MBP पईवउ बोहिउ ३ MBP सूर° ४ MBP दिणदउ ५ MB तव
६ M सहिर. ७ MBP ककेलिहि दलि

11 a °समरीणी °धमेण क्कान्ता 12 b अक्कसमाण मात्तुत्त्या 14 b गुरुपय छिवमि गुरुपादौ
सृशामि, ण पइ अवहेरमि त्वां न वसयामि 16 वेढिवि आलिहय्य

26 1 दीहा वि दीर्घाणि, चक्कवियणह चक्कवाकाना एव विगणाना पक्षिगणानाम् 2 म डहा लच्ची,
रयविहिंदियाण रतानां विटेन्द्राणाम् 18 a णिसाढें निशाचरेण

XVII

देवागमि रविउगमि चलकरवालललावियजीहो ॥

जाइवि णदाणंणहो भिडिउ भरहु रणि सीहु व सीहहो ॥ धुयकं ॥

1

ता समरविचु विसरिमु विरुद्धु
कढिणयरपाणिपीडियकिवाणु
तिवलीतरंगमंगुरियमालु
अरुणच्छिछोहरंजियदियंतु
दूययवयणहिं वडियकसाउ
सुँयरेप्पिणु तायहु तणउ चारु
तो धरिवि णिरुमँवि करमि तेम
महु कुद्धहु रणि देव वि अदेव
इय गज्जिवि असितासियसुरिंदु
ता मउडवड मडलिय चँलय
महिबडियकणयकवीकलाव
एकेक पहाण गिरिंदधीर

विप्फरियदसणडसियाहरुद्धु ।
उँद्धुयमीसियहयमउहकोणु ।
ण सीहु कुडिलदाढाकरालु । 5
ण पलयजलणु धगधगधगंतु ।
जपइ सरोसु रायाहिराउ ।
जइ कई व ण मारमि रणि कुमार ।
अच्छइ कँरि जिह णियलत्थु जेम ।
सो ण करइ किं महु तणिय सेव । 10
जा उट्टिउ भरहु महानरिंदु ।
केऊरसकंठाहरणघुलिय ।
अइमीसण थिय णं कालभाव ।
सहु रापं लहु सणद्ध वीरं ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

वल्लभकम्पिततनु भरतयश सकलपाण्डुरितकेशम् ।

अत्यन्तदृढगतमपि भुवन बम्भ्रमति तथितम् ॥

M reads °तनुवरं and B reads कम्पितवर for कम्पिततनु, MP read विभ्रमति for बम्भ्रमति GK do not give it

1 १ MBP दयागमि रविउगमणे २ MBP विप्फुरियदसणु डसिया° ३ M records a p for this foot धणुगुणे रोवि दिडवज्जवाणु ४ MBP दयाहि वयणं ५ MBP सुमरोप्पिणु ६ P कह वि ७ MB णिरुमिवि, B णिरुजिवि ८ P करिवरु णियलत्थु ९ MBP तो १० MBP चलिय ११ MBP गरिंद १२ B धीर

1 8 a विसरिमु अद्वितीयम्, b अहर्द्धु अधरोपरितनमाग 6 a °छोह° विशेष 8 a चारु आचार 12 a चलय उत्थिता 13 b कालभाव यमस्वरूपा

यत्ता—सर्वेभ्यस्तु तद् भवत्यप्यहं का वि नारि यमनहं अहं जानहि ॥
किं वि महारत उभयैरित् तो विपयम सुतरमपि म मावहि ॥ १ ॥

2

बहु का वि मयह इत्यापयण
मरिचिरित्तुम्भार एव अहं वि
तं यवयव तुष्ट पोरिसजसेण
बहु का वि मयह एव वि सुताह
तुष्ट करणित्तुम्भारिपरि
इतं किरिचया इह कुत्तुमिपयि
बहु का वि मयह महिमाहरेण
रिचयामेह पिय उवपारकारि
बहु का वि मयह महिमावगाहि
कियेव हयव वि नारि अहं
विम मिहरेव विम विमयह मिहह
बहु का वि मयह पोरिसजपारं

किं कीरह मयिककयसयण ।
यवयव सोहह इति तह वि ।
आवेअस्तु पिय मयह एवसेण ।
किं तुम्भ पसारं नारि हह ।
परिभुमिक्तुमयुचमपिपरि ।
अहंवि किरिचय एव मयि ।
महं विजहि किं कीरं करेव ।
आवेअस्तु एवसमसेवहारि ।
अमिअस्तु पिय पविचयवपारि ।
बहुयप्यहं य वसह तेव एव ।
वीरिण्या हयव अस्तु वरि वडह ।
ताविपपित्तुमहं पाविचयपारं ।

यत्ता—कहवा कयै मयोहरण जेव मयेव महामययैकि ॥
विमयै पयह सुवयवयै तास्तु किन्ति भर्मेह महिमंडलि ॥ २ ॥

11 MBP कनकगंधं मययव १४ K कवलि but close कवलि
2. १ MBP किरिचयि २ P किरिचयि किरिचय एव यदि, but records a p किरिचय कयि
अस्तु. ३ MBP किरिचयि ४ कीरं करेव ५ MBP रिचयामेह. ६ MBP किं कयेव हयव ७ MBP
किरिचय ८ MBP एव पावयव but M records a p in the margin. किरिचय हयव. ९ K
कयेव १ MBP विहह

12 कवयविरिच कवलिह
2. 5 = करणित्तुम्भारिपरि करणित्तुम्भारिपरि 6 = अहंवि कीरं 7 = महिमाहरेण
महामययैकि 8 = विम मिहरेव 9 = उवपारकारि महामययैकि 10 = पविचयवपारि पविचय
कयेव मयये 10 = कयेव किरिचययै

3

ता रायचयेण रणतूरलक्खाइं	किंकरकैराहयइं तासियविवक्खाइं ।	
सुरदतिखयजलयजलणिहिणिणायाइ	थंगियगिगिदुगिदुगिगि संदिण्णघायाइं ।	
पहुपडहमइलमहारावरोलाइं	किंकरकैरब्भमियसल्लसलियतालाइं ।	
मुहपवेणतुसुतुरियकाहलवमालाइ	गज्जंतभेरीहिं हल्लमुहलवोलाइं ।	
तडिवडणतडयडियगुरुकरडटिविलाइ	विरसतमल्लरिसरोसरियसेलाइं ।	5
णीसासभारेण पूरियइ विमलाइं	हहहुयंताइ वरसंखर्जमलाइं ।	
अवरंइ वि पहाइ परियलियसंखाइं	जयविजयसिरिकामिणीसोक्खकंखाइं ।	
रंजतरुजाइ भंभंतंभंभाइं	हल्लावियाहिंदमहिसीयरब्भाइं ।	
चलियाइ सेण्णाइं सणाहसोहाइ	वरकुंजरारुढरणरुढजोहाइं ।	
णरकरविमुक्कासखुरखयधरग्गाइ	चलधूलिकविलीं विप्फुरियखग्गाइ ।	10
परिमिलियमडलिययलसारवताइ	धीवतपाइक्करधरियकौतौं ।	
रहचक्कचिक्कारभेसियभुयगाइं	णिवल्लच्छाहीहिं छाइयपयगाइं ।	
जंक्खदखयरिंदभूमिंदभीमाइं	खयकाल्लकीलाहि कील्लविरामाइं ।	

घत्ता—इय भर्त्ताहिउ णीसरिउ जाम समउ मतिहिं सामतहिं ॥

ता वेयालियचरणहिं विण्णवियउ बाहुयलि णवंतहिं ॥ ३ ॥

15

4

परियणजलेण णहु महि पिहत्तु	उत्तुंगतुरगतंरंगवंतु ।
करिमयरपसारियचंडसौह	सियपुंडरीयडिंडीरपिहत्तु ।
लायण्णपउरगंभीरघोसु	दुग्गाउ चोद्वैहरयणाहिवासु ।

3 १ B °करहयइ २ MBP ठगिदुगिगिगिदुगिगि ३ MBP °करब्भमिय° ४ B °सललिय°
 ५ MBP °पवणहयकुहर (P कुहय) वुठ्ठगियकाहलइ ६ P °हलमुसल° ७ MBP °खरकरड°
 ८ MBP °जुयलाइ ९ MBP अवराइ पहाइं १० MBP भंभंतंभंभाहिं ११ MBP °सायरमाइं १२ BP
 °कवलाइं १३ MBP विप्फरिय° K विप्फरिय° but corrects it to विप्फुरिय° १४ P घावति
 १५ MBP °कुताइ १६ MBK °कालकालाहि १७ B कीराहिरामाइ १८ भरहणराहिउ

4 १ MB महि णहु २ MB दुग्गमु ३ MBP चउदह°

3 5 b स रो स रि य से लाइ °शब्देनोत्सारितपर्वतानि 8 a °रं जाइ वादित्रविशेषा, b सा य रब्भाइ
 सामरा अभाणि मेघाध 10 a °विमुक्का स विमुक्ता अथा 15 वेयालिय° वैतालिकाः

संज्ञयसोदित्यसमूहबन्धु
 असमोक्षिपमंक्षिपतिभगतीह
 ययययययययययययययय
 गुम्भुपरि देव असिद्धसररु
 सुविचित्रवर्षतपसिपसरेण
 हर्षं यत्तु वारि कि पठर मयहि
 कि वल्लह हृयवत्तु लक्षणेहि
 कि कुसुमबाण त्रिभमपु हर्षति
 अरुणार कि मययेहि मातु

पंथगर्मतपावासिबन्धु ।
 आर्षक्षिपयिबकुळे कुर्हीह ।
 दूरययययययययययययययय
 वर्यययय वर्यय वल्लहसुतु ।
 ता वृयय वातुययययययययय
 कि काळतु मयय जीव येवहि ।
 कि वल्लह लययय विसरयेहि । 10
 गोमात्र मययय कि कर्षति ।
 पठर वि रिच मत्तु व मर्षति मातु ।

यथा—एतु वि पठ य समोक्षरमि वावावाहि वंयु विर्यमंमि ॥

मावन्तु विवसार्पय्यो सरवरपयिहि वर्येत्तु विर्यमंमि ॥ ४ ॥

5

गर्भतु यम पञ्चयज्ञतेज
 जोर्यतु विपयुययामसेर्षु
 द्विपय संवातु य मार केम
 केम वि वञ्जी अवकाययय
 केम वि इयिक्क सेगामयिक्क
 केम वि गुप्तु वर्ययय वरि वि वापि
 केम वि विवत्तु लोणीयययय
 केम वि वरिद्ध करवातु वर्य

संवातु सिरिवातुवयिद्ध ।
 कातु वि वरिद्ध रोमंत्तु वर्यु ।
 वर्यययययययययययययययय
 असिद्धेर्षुय रमवाययययय ।
 सय्योक्कवत्तु केरी परमसिक्क । 6
 वर्यययि य वर्यययि वरिद्धमायि ।
 वं ययय वरिद्ध पर्यययययय ।
 वं ययय वरिद्ध विवययय ।

v P यययि. ५ MB "गुम्भुयययय; P "गुम्भु यययय K "गुम्भुयययय but corrected to "गुम्भुयययय
 T यययय ययययययय ६ MBP "गुम्भुययय K यययय ७ MBP "ययययय" ९ MBP
 यययय १ BP ययययय ११ MBP "यययययय १२ MB ययय १३ B ययययय; X ययययय
 5 १ G ययय K यययय २ MP ययय ३ MBP ययययय v MBP यययय ५ MBP
 ययययय ययययययययय ६ MBP ययययय; BP ययययय v P यययय

4. 4 ५ "योदित्य" यी; 5 कुर्हीह ययय 6 ५ "मयोदित्य यययययययय" 11 ५ योमात्र
 ययय 12 ५ ययययय ययययय 13 वावावाहि यययय 14 ययय यय यययययय
 5 1 ५ यययययय ययययययय 2 ५ ययययय ययययययय ६ ५ यययययय ययययय.

भइ को वि भणइ पर हर्णमि अज्ज
पइ तुच्छु पउर रिउ हउं वि धीरु
अवरुंढहि लहु दे देहि हत्यु
आयडिउ पइहि पसाउ जेहिं

णिक्कंटउ सामिहि देमि^१ रज्जु ।
भणु सुदरि किं कीरइ वियार । 10
को जानइ पुणु संजोउ केत्थु ।
रणि जुज्झमि अज्ज भुपरिं तेहिं ।

घत्ता— भासइ को वि महासुहइ सुइ सुइ कंति ण एवहिं मंज्जमि ॥
णिग्गवि रायहु तणउ रिणु अज्ज सीसदाणेण विसुज्झमि ॥ ५ ॥

6

भइ को वि भणइ कयवणमुहेहिं
जइ खज्जइ आमिसु रक्खसेहिं
जइ अंतइ गिद्धं लइवि जंति
भइ को वि भणइ हलि हत्यु देमि
कंढवि णरकण अवर वि करेणु
भइ को वि भणइ हुइ खंडखांडि
सुंदरि गयणंगणि लंयमाणु
भइ धरणिघुलिउ लइ रिउ विहत्तु
जं पेच्छहि बहुरुहिरें किलिणु
वच्छयलु महारउ तं जि लेहि
हलि सामलंगि उर्फुल्लवयणु

जइ भिज्जइ उरु करिमुहरुहेहिं ।
जइ पिज्जइ सोणिउं वायसेहिं ।
तो मरणमणोरह मैहु सरंति ।
गयदत्तमुसैलु कइवि लेमि ।
उड्ढावमि अयसतुसोहरेणु । 5
महु कर पेक्खेज्जंत्तु पैक्खित्तोहिं ।
अविमुक्कवेरि दावियकिवाणु ।
तुह मंगलंसुक्कजलविलित्तु ।
परिमुक्कदीहणारायभिण्णु ।
सघुसिणु करयलु अहिणाणु देहि ।
जइ णिवडिउं पेच्छहि तवणयणु । 10

घत्ता—तो^२ मेरउ सिर तरुणि तुहुं चित्ततुलारोहेण विवेयहि ॥
सहुं पत्थिवपरिवाल्लिण सरिसउ किं व ण सरिसउ जोयहि ॥ ६ ॥

८ K इणिवि १ MBP करमि १० MBP मुज्झमि and gloss in MP मोह करोमि, K मज्झमि but मुज्झमि in second hand

6 १ MBP गिद्ध २ B मय ३ K सुसल ४ M पेक्खिज्जहि ५ MBP पेक्खिज्जहि ६ MBP परमुक्क^३, M records a p सरु मुक्क^४ ७ M अहिणाहु ८ MBP ओकुल^५ ९ M ज णियडउ, BP अ णियडिउ १० MBP सो ११ MBP परिपालिण

18 मज्झमि मनोहर करोमि

6 5 a कंढवि चूर्णाकृत्य, b अयसं अपयश

शुद्ध गन्धिय शुद्ध संशामभेदि
 शुद्ध विष्णुः शुद्धवदि साहिमाभि
 शुद्ध काशं जीविय दीद जीह
 पिय लायपाल जीवियविदीह
 शुद्ध मन्मार्तं वद्विहिय धरणि
 शुद्ध अर्धवर्धार् पस्तेहपाह
 शुद्ध मध्यवर्धरियर् वज्रियार्
 शुद्ध वज्रर् हत्युमायियार्
 शुद्ध कौतर् धरियर् समुहार्
 शुद्ध मुक्तिविशेषि कर्तव्यर्
 शुद्ध मय कावर पश्यरियमार्
 शुद्ध मेहेवरयवार्धमवर्ग

न मुक्तिवप तिह्यपु गिमिभि मा
 शुद्ध एतदि पत्तु वज्रपाभि ।
 पसरिय माधुमर्मसासबीह ।
 डाहिय गिरि वज्रिय वद्विह सीह ।
 शुद्ध पश्यवज्रार् हसिउ तपि ।
 शुद्ध वज्रवज्रार् पद्यवियार् ।
 शुद्ध कान्तु गमार् वज्रियार् ।
 शुद्ध लेहर् मिषदि मामियार् ।
 पूर्ववर्ध कापर विम्बुहार् ।
 शुद्ध पुर्ववज्र शुधि विदिर् कर्त । 10
 शुद्ध वीर्य संव न विमान ।
 शुद्ध भासवारवार्धवर्ग ।

यथा—शुद्ध शुद्ध कायनि वसुधार्दि सेष्मार् ज्ञान हर्षति पद्यवर्ध ।
 अंतर्दि ताम पश्य तर्हि मति अर्धति समुप्यिभि विपदेव ॥ ७ ॥

विदि वज्रर् मक्ति ओ सुर्व वज्र
 तं जिमुपिभि सेष्मार् धारिवार्
 तं जिमुपिभि वज्रसाकुरियार्
 तं जिमुपिभि धारपवज्रियार्
 तं जिमुपिभि जिद्वीर्ध वज्राह

मनु वीर्य रिमह्य सन्धिय ज्ञान ।
 वज्रियार् वज्रार् वज्रारिवार् ।
 वज्रवर्ध मूर्ध वारियार् ।
 वज्रवज्रर् कोसि मिषेवियार् ।
 विम्बुहार् वज्रवज्रिवज्रार् । 8

7 १ MB "वज्रवर्ध" २ MBP "वज्रवर्ध" ३ MBP "वज्रवर्ध" MBP "वर्ध" ५ MBP
 वज्रवर्ध ६ MBP "वज्रवर्ध" MB "वज्रवर्ध" M "वज्रवर्ध" १ M "वज्र" २ MBP "वज्रवर्ध" ११
 M "वज्रवर्ध" १२ M "वज्र" १३ MBP "वज्र" १४ P "वज्रवर्ध" १५ MBP "वज्र" १६ M "वज्रवर्ध" BP "वज्रवर्ध"

8 १ MBP "वज्र" २ MBP "वज्रवर्ध" ३ MBP "वज्रवर्ध" T "वज्रवर्ध" वज्रवर्ध वज्रवर्ध

7 1 a शुद्ध वीर्य 8 b "मया वज्रवर्ध" यातावर्धवर्ध 4 b वज्रवर्ध वीर्य

8 5 a विद्वज्रार् वज्रवर्ध

तं णिसुणिवि मय मायंग रुद्ध
तं णिसुणिवि मच्छरभावभरिय
रह सच्चिय कट्टिय पग्गहोह

पडिगयवरगधालुद्ध कुद्ध ।
हरि फुरुरुरंत धावत धरिय ।
वारिय विंधंत अणैय जोह ।

घत्ता—परिसेसियरणपरियरइं गुरुयणवरैणसवहसणहियइ ॥

सेणणइ उज्झियकलयलइं थक्कइं कुट्टि णाइं आलिहियइं ॥ ८ ॥ 10

9

पणमियसिरेहिं मउलियकरेहिं
उगमियरोसपसमतएहिं
तुम्हइ विण्णि वि जण चरमदेह
तुम्हइं विण्णि वि असलियपयाव
तुम्हइं विण्णि वि जगधरणथाम
तुम्हइं विण्णि वि सुरहं मि पयड
तुम्हइं विण्णि वि णिवणायकुसल
तुम्हइं विण्णि वि जण जणहु चक्खु
खरपहरणधारादारिपण
किर काइ वरापं दंडिण
दोह मि केरा मज्झत्य होवि

वाहुवालि भरहु महुरक्खरेहिं ।
विण्णि वि विण्णाविय महंतएहिं ।
तुम्हइ विण्णि वि जयलच्छिगेह ।
तुम्हइ विण्णि वि गमीरराव ।
तुम्हइं विण्णि वि रामाहिराम । 5
महिमैहिलहिं केरा वाहुदड ।
णियतायपायपंकरुहभसल ।
इच्छहु अम्हारउ धम्मपक्खु ।
किं किकरणियरै मारिण ।
सीमतिणिसत्थे रंडिण । 10
आउहु मेळिवि खममाउ लेवि ।

घत्ता—अवल्लोयंतु धराहिवइ एत्तिउ किज्जेउ सुत्तु सुत्तुत्तउ ॥

तुम्हइ दोहं मि होउ रणु तिविद्धु धम्मणाएण णिउत्तउ ॥ ९ ॥

४ MB मच्छरभावरहिय, P मच्छरमारभरिय ५ MB फुरुरुरंत ६ MB अणंत ७ M चरणसवहसणहिय-
यइ, B °चरणसवहसणहियइ, T सवहसणहियइ ८ P कोट्टि

9 १ MBP उगमित रोद्ध २ MBP road तुम्हइ विण्णि वि जयलच्छिगेह, तुम्हइ विण्णि वि जण
चरमदेह ३ MB महियल केरा ४ MBP आउह ५ MBP किज्जइ सुद्ध ६ MBP धम्म णाएण

8 a पग्ग होह रदिमसमूह 9 °सवहसणहियइ शपथधृतानि 10 कुट्टि कुट्टये भित्ति

9 2 b महंत एहिं मन्त्रिभि 7 a णिवणायकुसल राजनीतिकुशलौ 10 b सीमतिणिसत्थे
स्त्रीसमूहेन 12 सुत्तु सुभाषितम् 18 धम्मणाएण धर्मन्यायेन

परिभ्रष्ट भवरोप्यद विद्धि चरत्
 बभिवत् हंसावमिमाविष्य
 वरपत् पुपु नदि ओषधु देव
 सुखाह विभिन्न वि भिन्नमातु ताम
 अवरुप्यद विभिन्न वि परक्रमेण
 तनुसोदाहसिपपुरंवेदेहि
 किं दूहविपदि नवजात्यजेन
 किं सन्निधे बंदाहकिप्य
 किं तप्यं गुरुपदिदूहस्य

मा पंतसपस्यनवसपु करत् ।
 अवरुप्यद विद्धि पाविष्य ।
 कंद करि विपतं सुरंति नैव ।
 एकेन तुद्धिज्ज् एतु जाम ।
 येनैतु कुद्धिपतिरि विद्धिमेव । 5
 ता विद्धि रोरि मि सुरदेहि ।
 किं पविष्य वि कदुपं नवप ।
 किं दातं पेशनसंकिप्य ।
 सुविधीपसुनसिरसुस्य ।

पचा—अथ कर्तुं सुहासिपदं मंतिरि मासिपदं नवपपयदं ॥

10

ताहं करिहं रिद्धि कंजा करि सीहंसनसंकरं रपयदं ॥ १ ॥

II

इय विद्धि विद्धि मंतिमं
 नवसंविद रोसु न परिवर्द्धि
 सक्तसापमाव मासंयु दूध
 नवजातु पदु मुपवद्धि सीह
 देष्टि विद्धि वरिद्धिवा
 नं हंति कुगाह पेशमेगाह

दुहातुगामि बीसेसु संतु ।
 नवसंविदसिपसिपमेवदेहि ।
 रोरि मि नवकोरु पेशमेव ।
 येनैतु रविपिपु न किरनसंतु ।
 विद्धि विद्धि नविद्धिवा । 5
 विद्धिपासा ईव मुविद्धिमेव ।

10 १ MBP पतसपस्यनवसपु ॥ पतसपस्यनवसपु T पतसपस्यनव २ B करि कर १ MBP
 विद्धि ५ MBP नवसंविद रोसु ५ T नवसंविद १ MBP करि करि MBP विद्धि P विद्धि

11 १ MBP नवजातु पदु १ MBP पदु १ MBP संतु ५ MBP देष्टि ५ P देष्टि
 पचा १ MBP विद्धि ५ P मंतिमं

10. 1 १ पतसपस्यनवसपु पतसपस्यनवसपु 8 वंशाहं विद्धि नवजातसोदेन 9 ॥
 दूधपदिदूधपदि मंतिपुदेष्टिसिद्धिमेव. 10 दूहापि नव दूहापि नव नवसंविद सीहंसनसि

11. 1 १ दूहातुगामि दूहातुगामि बीसेसु संतु रविपिपु 5 १ नविद्धिवा नविद्धिवा
 विद्धि

ण तावसि भग्नी विडरई
णं कमलपति ससियरई

णं सेलभित्ति गंगाणई ।
कुमुओलि व मउलिय रविरई ।

यत्ता—ठिउ हेट्टामुद चक्कवइ णिजिउ पडिभइदिट्टिपहावई ॥

घट्टियणवकुसुमजलिहिं णदातणुरुदु संशुउ देवहिं ॥ ११ ॥

10

12

मओमत्तमायगलीलावहाग
फणिंदेण चदेण इदेण दिट्टा
सरतेहिं आलोइय सच्छणीर
महापोमसुत्ताहिमाणिकदित्त
महीरंगरगतकुल्लोलमालं
सिरीणेउरालावणधंतमोरं
तरंतामर रोयराइकाल
ससीछाहिसारंगडेवंतसीहं
हुणतालिकोलाहलं सौरसिहं
सुयाणेयपफिर्वदजफिंपदसहं

रमावामवच्छेत्थलोलंतहारा ।
पुणो दो वि राया मरंते पइट्टा ।
विमाल गहीर तुसारोहतारं ।
मरुधूर्यतिगिच्छिधलीविलित्तं ।
मरालीपहालगलीलामरालं ।
भिसाहारपूरतचंचूचऊरं ।
जलुब्भंतमीणं लयापत्तणीलं ।
समुत्तुगफेणावलीछण्णतूहं ।
इणुम्मकपायावलीफुल्लफुल्लं ।
पमंजतहर्त्तियदसोर्डाविमइ ।

5

10

यत्ता—ताहिं विणिण वि जण ओयरिय पट्टणा वित्त जलंजलि भायहु ॥

वियंलइ उप्परि मेहलहे णं मंदाइणि हिमइरिरायहु ॥ १२ ॥

८ P °ईइ ९ M ण कुमुउलि वररवियरईइ, B ण कुमुउणिव णवरवि°, P ण कुमुउलि व णवरवि°

12 १ MBP वच्छत्यलोलवि° २ M °तिगिच्छ°; B तिगिच्छि°, P तिगिच्छ° ३ MB गेयपारद°
P खेयपारद°, T रोयर चक्कवालं ४ MBP °सिहं. ५ M सारिसिहं ६ MP °पेक्कत° ७ MBP नि-
मज्जत° ८ MBP सुडा° ९ MBP वियरइ

7 a विडरईइ विट्टरत्ता 8 a °तईइ°संतत्ता, b कुमुओलि कुमुदपंक्ति 9 पडिभइ° बाहुबलि.

12. 1 b रमावास° लक्ष्मीनिवासम् 2 b सरते सरोवरमध्ये 3 b °तार शुभ्रम् 7 a रोयर° रवि-
रम् 8 a ससीछाहिसारंग° चन्द्रप्रतिधिव्ये स्थितं हरिणमुद्दिश्य, °डेवंत° धावन, b °तूइ तटम् 9 b इणु-
म्मकपायावली° आदित्येन मुक्ताना किरणाना समुहै

13

L

पञ्चपुत्राणि पापिणि पुत्रु वि बह्वि
 बह्विपामि धारयती सुवरासु
 य मरणायमहिहरि बंधवकंसि
 बंधती शीघ्र सखिधरपार
 य मुरसति बहवत्तरंगपार
 धाम्निमिणि पुत्रु मरुदु पिमुद
 पञ्चपुत्राणि बह्विपु ताह रात्र
 बह्विपारि य सरपम्माबनीह
 सखिधर जलसोत्तर्ह पुरिवाह
 उन्मोसित पित्रु महासरोहि

हेङ्गामुह कलमसि य पुंसिप ।
 शीघ्र तापसि य मरुदसु ।
 न पीरमहीरहि हंसपति ।
 यं बंधमदु बंधिप सुगार ।
 गयपुत्रुर्ह मसमुसुमार ।
 ध्वस्तपयं गुरुजलसुख ।
 यवमह त्रिभुक्तिहृ यं तिष्ठोद ।
 यं उपपत्तिहरि मसहरकरि ।
 बहुपरिपन्नसपयं पुरिवाह ।
 बाहुबलिनरादिबन्धकरोहि । 10

महा—सीसु पुत्रुं मुपेनु उनु सत्वरवारिपवाहं सितम् ।

पडिमासोरियत् पुहवर वाहं करिदु करिहं त्रिभु ॥ १३ ॥

14

बह्विपरिपुत्रासायसपण
 बह्विपमंडलियकुंरसपण
 रोसादकपिधरं बह्विमेव
 सीधेव य उन्मोसकसरण
 पीडिमाह तेरु उन्मोसाह
 पुत्रुसर वि कयधेमंतसोह
 भविष्याविपन्नसिधममसार
 किं किं कयमेव पडोदण

बह्विपरिपुत्रासायसपण ।
 परिपुत्रु सत्वरंगपण ।
 सपेव य अरुमासीविसेव ।
 विपमपिधर माह बरेसेव ।
 एतु पित्रु बह्वर पुत्रु सुख । 5
 परं वेदा कहि बंधति मोह ।
 महिषाव वाहरो मोहिवाह ।
 पीरंताहं सखिधरं मोहण ।

13. १ MB पुत्रु बह्वि २ MBP पुत्रिमा ३ MBP सत्वरंगि मरुदु. ४ MP बह्विधः B
 मरुदु. ५ MBP पण ६ MBPK पुत्रु. ७ MBP "बोपरिवर

14. १ MBPK उन्मो २ MBP "ममिमा" ३ MB विपरपमेव

13 ३ ३ ताह वि तापसि ४ ३ "यहीरहि हंस

14. 1 ३ बह्विपेता हि—बह्वि त्रिभुक्तिपुत्रिमाः उन्मोसाहं बह्वि मरुदुपेव मस ३ ३ वर
 ५ ३ ३ ३

ए एहि देहि भुयँजुज्झ तेम

ता भणइ जइणि णिप्फलु जि भसहि

जाणंतु वि देवि^१ णिरत्थु भणहि

महिलाण गोहँ हउं सयणमग्गि

अल्लु जि एयंतरु होइ जेम ।

धणुवाण महारा काइं हसहि । 10

पियविरहुल्लेइउ किं ण कँणहि ।

गोहाण गोहु कट्ठियइ खग्गि ।

घत्ता—जइ सयणत्तणु मणियउं तो किं मग्गहि पुहइ भडारा ॥

णियधणकर्णमयकयविवस पत्थिव सयल होंति विवरेरा ॥ १४ ॥

15

तओ भुयभडणि भायर लग्ग

कुलीण कुकारणि माणमहल्ल

सुक्कचणकुडलमंडियगंड

चिराउस चंदचडावियणाम

समत्थ सिराण रईण णिकेय

असंक खगंक झसंक विपंक

मिलंति मिलेप्पिणु हत्थि धरति

पैडंत जि गाहणिवंधणु देंति

विईद्ध वि गाह वलेण मुयंति

अलंभुयजुज्झविहाणसयाइं

करति वि धीर अविहवियंग

पयाणभरस्स धरिस्सि ण तिण्ण

फलोणयपायवपिट्ठु व झुण्ण

ण चल्लिय कुंचिय कूर फणिंद

तओ ह्यमाणिणिमाणमएण

णरिंदसिरोमणि धट्टपयग्ग ।

पहाण महावल विण्णि वि मल्ल ।

पसारियवाह सरोस पयड ।

सुविक्रमवत णराहिवकाम ।

महारह भौरह भक्खरतेय । 5

जसंसुपसाहियपुण्णससक ।

धरेप्पिणु देह धँडेवि पडति ।

कडीयल्लु कंडु णिरुभिचि उंति ।

मुएप्पिणु उड्डिवि झँत्ति वलति ।

पर्वप्पणकट्ठणवेढणयाइ । 10

णिंरंकुस णाइं मयंध मयग ।

विमुक्क रवेण दिसाकरि धुण्ण ।

णहे गय पक्खि वणेयर रुण्ण ।

दरीकुहरेसु णिलीण पुलिंद ।

णारामरसंगरलद्धजएण । 15

४ P भुयजुयल्लु ५ BK देव ६ MBP कुणइ ७ M मोहु, but records a p गोहु ८ P कणयमय^१

15 १ K °पुट्ट° and gloss घृष्ट २ P सकचण° ३ MBP वारहभक्खर° ४ MBP घडेण

५ MBP पडति जि गाढ° ६ MBP गिरुद्धु वि वाहु, K गिरुद्ध वि गाह ७ MBP जति ८ MBP पचपण° ९ PK जुण्ण

10 a जइ णि जिनपुत्र, अस हि असमद्ध प्रलपसि

15 2 a कुकारणि पृथ्वीनिमित्तम् 4b णराहिवकाम देवौ 5 b भक्खर° आदित्य 6 b जस
सु° यश किरणा 12 b झुण्ण सकुपिता 13 b वणेयर मृगा

XVIII

णहु लघिउ सुरगिरि चालियउ धीरें सायरु मवियउ ॥
करहिंभु व वंमहु तणउ सुउ उच्चाइवि पुणु थवियउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

<p>णं कमलसरु हिमोहयकायउ जं ओहुँलियमुहु पहु दिहुउ चक्कवट्टि णियगोत्तहु सामिउ हा किं किज्जइ भुयवळु मेरउ महि पुण्णालि व केण ण भुत्ती रज्जहु कारण पिउ मारिज्जइ जिह अलि गधें गउ संघारहु भडसामंतमंतिकयमायउ तंहुलपसयहु कारणि राणा डज्जउ रज्जु जि दुर्कळु गुरुकउ सुहणिहि भोयभूमि सपर्ययर</p>	<p>दवदैहुउ रुक्खु व विच्छायउ । तं बलि भणइ हउं जि णिकिहुउ । जेण मैहंत भाइ ओहामिउ । 5 जैं जायउ सुहिदुण्णयगारउ । रज्जहु पडउ वळु समसुत्ती । धंधवहुं मि विसु संचारिज्जइ । तिह रज्जेण जीउ तंवारहु । चित्तिज्जंतउ सव्वु परायउ । 10 णरइ पडंति काइं अविआणा । जइ सुहु तो किं ताप मुक्कउ । कहिं सुरतरु कहिं गय ते कुलयर ।</p>
--	--

घत्ता—दुल्लंघहु दुक्कियललणहो दूँसहदुक्कदुरतहो ॥

भणु दाढापजरि पडिउ णरु को उव्वरिउ कयतहो ॥ १ ॥ 16

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

शशधरविभ्यात्कान्ति तेजस्तपनाद्भीरतामुदधे ।

इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरत कृतो विधिना ॥

GK do not give it

1 १ P उच्चावि २ P हिमहय° but gloss हिमाहत ३ P दवदैहु व ४ B ओहुँलिय मुहु
५ MBP महत्त ६ P हा अ जायउ ७ P बधवाहु विसु ८ B दुक्कल्लगुरुकउ ९ P सपर्ययर १० B दुल्लघिय-
दुक्किय° ११ MB दूँसहो

1. 2 करहिंभु हस्ते बाल इव, थवियउ भूमौ मुक्क 4 b बलि बाहुबलि 5 b ओहा मिउ
अभिभूत तिरस्कृत 6 b °दुण्णय° अविनय. 9 b तवारहु नरकम्

२

काष्ठमुपगच्छ को वि न पुनर
मई पर देहा बहु देहायि
एयहि नरनरिहासु न गमन
पदिष्यन्तं न केन पाप्मिना
न मानुष्य घमेन न मित्र
देव मनुष्य नमसाह करेजसु
अप्यत क्षणिकविद्यासै रंजहि
पाहयिष्यतिपवीतुप्यकविद्विहि
तं भिस्तुविमि मरुतसै तुनार

सुवचस्यु मि पञ्च पर पञ्च ।
पुनरर पुनरपात्र बोकायि ।
अपयि अचसु भायक किह इमम ।
किह हियवठ कमुसै मरुतिनार ।
हो भिक्षु तेन किं किनार । ४
तं पदिष्यन्तं तं न करेजसु ।
कर महि तुहं वि नपयिष मुंजहि ।
हउं पुणु सरसु कामि परमेष्ठिहि ।
परिष्वस्यन्ति पञ्च न वनार ।

पञ्चा—संतिउरसयपहं परिष्वस्यं नीसेसहं मि विनंतहं ।

10

हउं जितउ परं तुहं सर भविहं पम सूचसु गुणवंतहं । २ ।

३

नार परं विममुपहिं नरोक्षिउ
ता किं नरुं एयसु मई एनार
परं जिची खमा वि घममावै
परं जिह देयवंतु न विनापन
परं पुनसकसंकु पन्पासिउ
पुरिसरस्यु तुहं जगि पञ्चसु
को समसु पचसु पविननार
परं सुपयि तिहुययि को नंगत

भूमंक्षिउ लक्षि नप्यासिउ ।
पुणु नीवंतु को वि किं पेननार ।
परं तसिउ नरोक्षिउ सपयवै ।
नउ रंजीव होर एयवाय ।
नाहिपरिष्वसु नप्यासिउ । ४
जेव नचउ महु वसु वेवसु ।
जयि अस्तवक पानु किर वनार ।
अप्यु नचसु पचसु नचवउ ।

२ १ MBP भिक्षु नारं तेन किर किनार; K भिक्षु तेन नारं किर किनार, but corrects
II to हो भिक्षु तेन किं किनार. २ MBP नरिउ

३ १ MBP नरिमेवति २ MBP नरनरु ३ MB पुणु मि नवीउ; PK पुणु मि निव
४ MB लोमिउ ५ MI लोमिउ B लोमिउ

२. ३ न देहा नि न नरिहास; ४ नो कामि न निप्यासिता नरिहास ५ न निनार न नप्युनरु

३ ४ कामा नि पुमिनायि ५ न नरिउ इमम. ६ ५ वेवसु न नप्युनरु

अणु कवणु जिणपयकयपेसणु

अणु कवणु राक्खियणिवसासणु ।

घत्ता—ससि सूरहो मंदरु मंदरुहो इंदहु इंदु अणीयउ ॥

10

पर पक्कहु णटाएविसुय तुह ण णिहालमि वीयउ ॥ ३ ॥

4

जं तुहुं दुव्वयणेहिं णिच्चच्छिउ

जं सरवाणिण णिरु सित्तउ

तं एवहिं खेम करि महु वधव

आउ जाहु उज्जाउरि पइसहि

पट्टु णिवंधमि भालि तुहारइ

एवहिं रज्जु करतउ लज्जमि

एवहिं इदियछडु विवज्जमि

एवहिं कम्मणिषधेण भजमि

जं दिट्ठीइ सरोसु णियच्छिउ ।

जं जुज्झंतं पेह्लिवि धित्तउ ।

जिणवरतणय तिजगमणसंभव ।

अज्जु जि तुहु सिंहासणि वइसहि ।

अक्ककित्ति जीवउ तुह केरइ । 5

एवहिं परमदिक्ख पडिवज्जमि ।

एवहिं पुण्णु ण पाउ समज्जमि ।

एवहिं जोए प्राणं विसज्जमि ।

घत्ता—वधव वणवासहु पट्टुविवि धरणिमोहरसमंतं ॥

मइ एवहिं दुज्जसभायणेण भायर काइ जियतं ॥ ४ ॥

10

5

सज्जणकरुणं सज्जणु कं पइ

जइयहु हउं सिसुत्ति सहकीलिउ

मज्झु वि तुज्झु वि कवणु पराहउ

जे गय ते सयल वि मग्गिवि मिसु

तेत्थु ण काइं वि दोसु तुहारउ

जइ एवहिं धरित्ति ण समिच्छहि

तं तिसुणिवि भरहाणुउ जंपइ ।

तइयहु पइ वि किं ण परित्तोलिउ ।

मज्झु वि तुज्झु वि कवणु महाहउं ।

भावइ भोउ ताह णावइ विसु ।

वंदणिज्जु तुहु जगि गइयारउ । 6

तां जे दिण्णी तहु जि पयच्छहि ।

4 १ MBP जं दुव्वयणेहिं २ M महु खेम करि ३ MBPK ०णिवधणु ४ MBP पाण

5 १ MBP किं ण पइ मि २ P adds after this तुहु जि जेहु महु सामि महारउ ३ MPK तो,

10 अणीयउ प्रतीन्द्र, उपमां प्रापितो वा

4 7 a ०छडु ०वशत्वम्

5 1 b भरहाणुउ भरतानुजो बाहुषलि 4 b भावईत्यादि—भोगस्तेषा विपमिव प्रतिभायते,

तदि ब्रह्मसिद्धिं यथेति विदितं
सुखं संतापि यथेति महाबलि

मतिरिति भूमिनाहु संतोषित ।
यत् कलासु यत्पयत् सुखसिद्धि ।

यथा—यत्तु जंतु सुयंतु करिष्यसि मदि माहंतु बहिमाजित ॥

साकेयहु यत्तु विषयमजु मतिरिति मद्दह जाजित ॥ ५ ॥

10

6

यत्तु गिरिवरि वाहुबलीस
विदुषिदुष्टं यत्तुयदुष्ट
यत्तुयदुष्टं यत्तुयदुष्ट
ओ यत्तु शीसह पुंतिर्यथायति
यत्तुयमायगहीरकयकारे
येसु तुम्ह येसज व विम्यत्
यत्तु मेतिरिति बोसु वि बोसायति
तुह शास्त्रमिमयत्तु व यत्तु
यत्तु तासिद यत्तुयसगत
कंरप्यदु वि यत्तु यत्तु सासिद
तुह विम्यत्तु यत्तुयसगत
विम्यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु

यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु
विदुषिदुष्टं यत्तुयदुष्ट
येसुकोयुगवति यत्तुयदुष्ट
यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु
यत्तु यत्तु यत्तु यत्तु

6

10

४ MBP यत्तु

6 १ MBP यत्तुयत्तु १ G यत्तुयत्तु १ H यत्तु यत्तुयत्तु ४ MBP यत्तुयत्तुयत्तु ५ MBP यत्तुयत्तु
यत्तु १ MBT यत्तुयत्तु T record १ यत्तु यत्तुयत्तु यत्तु यत्तु यत्तुयत्तुयत्तुयत्तु MBP यत्तुयत्तु
P यत्तुयत्तु यत्तु MBP यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु

१ यत्तुयत्तु यत्तु यत्तुयत्तुयत्तु 10 यत्तुयत्तु यत्तुयत्तुयत्तु

6 १ यत्तुयत्तु यत्तुयत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु १ यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु
४ यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु १ यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु
यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु १ यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु
यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु १ यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु यत्तुयत्तु

घत्ता—सर पच वि घल्लिय चम्महेण धणु रइ विण्णि वि मुक्कं ॥

16

पडिवण्णं पंच महव्वयं पयजुयपाडियसक्कं ॥ ६ ॥

7

णत्थि उवाणहाउ सयणासणु
विसहइ वंसमसयसीउण्हं
चरिय णिसेज्ज सेज्ज रइ अरइ वि
सीह सरह तणु लग्ग ण वारइ
जल्लमलेहिं मि लित्तउ अच्छइ
असुहसुहेसु समत्तणु मण्णइ
लोयकपहिं ण मुज्जइ दोहिं मि
अइसैण अलाहु रिसिसारउ
वयसमिदिदियरंभणु लोउ वि
ण्हाणविवज्जणु महिसंसोवणु

मुक्कउं छत्तु असेसु विहसणु ।
सुहजणदुव्वयणां सयण्हं ।
वहवंधणु गयजण वणवसइ वि ।
मुणि जच्चिण्हि चित्तु ण पेरेइ ।
वउसक्कार किं पि ण समिच्छइ । 5
विविहातं रोय अवगण्णइ ।
सक्कारेहिं पुरक्कारेहिं मि ।
पण्णपरीसह सहइ भडारउ ।
अञ्चेलकावासयजोउ वि ।
दंतोघोवणु कयडिभोयणु । 10

घत्ता—वाणि णिवसइ दुक्खसयइ सहइ ण चवइ थोवउ जेवइ ॥

परमिस्ति करइ णिह वि जिणइ मणु वेरगं भावइ ॥ ७ ॥

8

एम चरंतु चरित्तु सुदुच्चर
तहिं थिय पल्लु वरिसु लंघियकर
जासु अंगि पयघट्टियसिगहं
जासु वच्छि फणिमणि पविराडउ

महि विहरंतु पल्लु वणतर ।
वेल्लीवलयहिं वेदिउं णं तर ।
कंडुविणोउ सरइ सारंगहं ।
वहुसो विसहरेहिं हाराइउ ।

7 १ MBP सतण्हइ, T सयण्हइ २ B जच्चि ३ MBP अइसणु ४ M अञ्चेलक आवासयजोइ वि, B अञ्चेलक पवासयजोउ वि ५ MP दताघोयणु, B दताभोयणु

8 १ BP सुदुच्चर २ MBP ण वेदिउ

7 1 a उवा ण हाउ उपाणहौ 2 b सयण्हइ सत्तुणानि 4 जच्चि णि हि याचनायाम् 5 b पउ-सक्कार शरीरसक्कार 8 b पण्ण° प्रज्ञा 9 a लोउ केशलोच, b °आ वा सय° आवदयकानि 10 a °ससो-वणु सत्त्वपन शयनम्

8. 4 b हाराइउ हार इवाचरितम्

10

इदचंदवंदारयवंदे
 पक्कहु जीवहु गुण मणि भाविय
 तिणिण वि सल्लइं हियउद्धरियइं
 तिणिण वि डंभै मुक्क सखेवें
 चउगइक्कम्मणिवंधणरमियेउ
 पंचमहव्वयाइं अविहंसइ
 पंचिदियइं कयाइं गिरत्थइं
 छावांसयउज्जमु सँविसेसिउ
 छह लेसहं परिणामु वंडहुइं
 सत्त भयाइं हयाइं गहीरे
 अट्ट वि मय णिट्ठविय अटुट्टे
 णवविहु वंभचेरु परिपालिउ

तहिं अवसरि बाहुवलिमुणिंदे ।
 रांय रोस दोणिण वि उड्ढाविय ।
 तिणिण वि रयणइं लहु सँभवियइं ।
 गारव तिणिण विवज्जिय देवें ।
 सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ । 5
 पंचासवदारइं णिच्छइं ।
 पंच वि णाणावरणइं गंथइं ।
 छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ ।
 छ वि दव्वइं पच्चक्खइं दिट्ठइं ।
 सत्त वि तच्चइं णायइं धीरे । 10
 अट्ट सिद्धगुण भरिय वरिट्टे ।
 णवपयत्थपरिमाणु णिहालिउ ।

यत्ता—दसँविहु जिणधम्मु वियींणियउ पयारह हयजडिमउ ॥

अँवियारह धीरहं सावयहं चारह भिक्खुहुं पडिमउ ॥ १० ॥

11

तेरह किरियाठाणइं मुणियइं
 चोइह गंथमला वि समुज्झिय
 पण्णारह पमाय मेळतें
 सोलहविह कसाय पसमतें

तेरहमेय चरित्तइ गणियइं ।
 चोइह भूयगाम सइं वुज्झिय ।
 पुण्णपावभूमिउ जाणंतें ।
 सोलहविहवयणेसु रमतें ।

- 10 १ BP राय दोस २ MBP समरियह, K समवियइ but corrects it to समरियह
 ३ MBP वेय ४ P रसियउ ५ BP णिच्छइइ ६ B छावासउ ७ PK सुविसेसिउ ८ B उक्कहुइ ९ MBP
 परिणामु १० MB दहविहु ११ MP वियारियउ १२ M अवि चारह, but records a p अवियारह
 11 १ B चउदह २ MBP ०वयणे सुमरतें

10 1 a ०वदे वन्थेन 7 b गयइ परिग्रहरूपाणि 9 a वइहुइ उपदिष्टानि सर्वज्ञेन

11 4 a सोलहविह कसाय कषाया क्रोधमानमायालोभा प्रत्येकमनन्तानुबन्धिषडप्रत्याख्यानप्रत्या
 ख्यानसज्वलनविकल्पा सन्त षोडशविधा भवन्ति

आसु पशु कयमपञ्चकण्डवपञ्च
 वरचंगुपुपकविक विहिङ्गा
 देहि वरंति आसु सुरमयिभिहि
 तजुकेतीर आसु हवधमा
 आसु रसकंदोसिह बहुर

आमक कयिहि करककंडुपवञ्च । 5
 सरहसु वयवरवरहि विसिङ्गा ।
 उकुरिय मय पवयरतविकहि ।
 हस वि हरिवरवञ्च संजावा ।
 पविय सुयत वोर्यर धरेर ।

वृत्ता—आसुपञ्च आसु मुनीसरहो तवपहावडवसेतई ॥

10

करि केसरि जडकई कविउठई सह हिंउंति रमतई ॥ ८ ॥

9

पञ्चहि विपहि पञ्चु सपतिह
 पुनर अराहिह पयपवियवत
 परं काम अकामु पारवत
 परं वारं अवालयर ओइय
 परं पियमुपवसेय हउं कोनिकव
 परं महु विष्णी कुह सैहल्ये
 परववयोरि वीग वमवता
 परं वेहा कगगुठवा वेहा
 अरिय रसवर्षसवरससमकस
 रासवत विपपर विवसेमर

तमसु मरहु पञ्च वंरंरहतिह ।
 परं मुपवि अगि को वि व महुव ।
 परं रायं अराठ कउ विवत ।
 परं अपरेव वि पैरि मर होइय ।
 परं कि पुपु वि कादव्ये टविकत । 5
 ठुई परमेसंर अगि परमल्ये ।
 महि मुपवि वियमेपुवसेता ।
 एसु वीष्मि अर विवववि वेहा ।
 अम्हारिउ धरि वरि कि कुमकुस ।
 पाववहुड परवस वप्यमर । 10

वृत्ता—हा मई वहुकम्मपरवसव विसयवमई व मरिचई ॥

पञ्चहो वियवोवहु काटविय वीवसवाई वि वरिचई ॥ ९ ॥

१ MHPK कयान्द ४ MB वीर्य २ वीविहि ५ B वर

9 १ BP "अभिह १ B कोर मर २ M कयान्द has records a २ वर्य ४ MB कयान्द
 ५ MBP "उपवत"

6 के सरहसु वरककसु वि वि विह वीववोवियते 9 के वरचंगुवतिहि वरककवका के ववि व वि वि;
 वीव व तुमपेव

9 १ सपतिह वरववतिग 2 "ववि वरव वरिह 3 अकामु वीववमु; के वराठ वीव-
 वरव विह व वीह पुवो वा 4 के अवालयर विह वीवोवियते 5 वरि वरि वीवववरी वरवववि 11
 म वि वरं मविउति.

को किर भण्णइ तुज्झ समाणउ
पम थुणतें बुद्धिसमिद्धें

तुहुं जि मुंडकेवलहिं पहाणट ।
इदें वेउव्वियउ सणद्धें ।

10

घत्ता—पेउमासणु चवलु चमरजुयलु एकु जि छत्तु मणोहरु ॥
दीसइ पण्णुल्लिउ पंहुवरउ णं तवसरि इंदीवरु ॥ १२ ॥

13

पयणियजणमरणविट्ठमरइ
देतु देसजइजइवरचरियइं
पायपोमपाडियसंकदंणु
गउ केलासहु पावपरंमुहु
आसीणउ पसण्णु पसमियकलि
भायरणाणेलंमसंतुट्टउ
उज्झाणयरिहि भरहु पइट्टउ
वज्जंतहिं जयवज्जाणिहायहिं
दरिसियमेइणिरिद्धिविहोयहिं
मंडलियहिं मंडिर्यणियवक्खहिं

संसमंतु भाउग्गयतिमिरइं ।
सवोहंतु भव्वपुंडरियइ ।
भूमि भमंतु सुणंदाणंदणु ।
समवसरणि णियतायहु संमुहु ।
देउ समाहि वोहि महु भुयवलि । 5
एत्तहि णरणीरीयणदिट्टउ ।
उरपमाणि हरिवीढि वइट्टउ ।
गाइयणारयतुंयुरुगेयहिं ।
उव्वसिरंमाणट्टविणोयहिं ।
आहिसिंचिउ मगलघडलन्त्रहिं । 10

घत्ता—चउसट्ठि सरीरइ लक्खणइं वहुवज्जणइं अणिंदहो ॥
जं णिहिलहं भारहणरंरइहिं तं वलु भरहणरिंदहो ॥ १३ ॥

14

वण्णु तत्ततवणीयपहायरु
वज्जरिसहणारायणिवधेउ

सासणु जासु चकलच्छीहर ।
समचउरंसु ठाणु वइरिद्धउ ।

८ K भण्णउ and gloss मणामि १ MBP हरियासणु धवलु

13 १ MBPT सकदणु २ MBP णाणलमि ३ MBP^०णारीयणि ४ MBP खाडियसविषक्खहिं

५ M बहुवेज्जणइ, BP बहुविज्जणइ ६ M^०णरवरहिं

14 १ MBP चकु २ MBP^०णिबद्धउ

13 1 a विट्ठम^० भयम्, b ससमंतु उपशमयन् 3 a सकदणु इन्द्र 8 a णिहायहिं समूहै.

9 a^०विहोयहिं विमोहे 11 लक्खणइ शखकुलिशादीनि

14 1 b चकलच्छीहर चक्रशोभाधरम्

अत्यदं मत्यदं मौण्यु दैतड

सध्वरयणणिदि सच्चर न्यणद

घत्ता—अमि चम्मु वंदं छत्तु वि धयत्तु पाहणसालदि जायद ॥

वागणि मणि चम्मु वि मिरिभैरणे मरं णरणाहत्तु आयद ॥ १५ ॥

16

रुण्ययमहिहदि सेहिययणद

पच्छइ पुणु संपत्तइ णरयद

चत्ताणि वि हयदं नाफयर

णव णिदि ते मि तदि जि मभूया

णिशमेव तणुरफलात्तुल्लदं

विविहदं घत्तइ णवधरणियलदं

विविहदं छत्तइ मुत्तादामद

विविहदं घत्तइ कयवडंसोफयद

को सो वंमु वासु मुकदत्तणु

णारी रयणत्तणयिक्कपायद

रुयं सोहग्गं लायणं

अब्भुयभूयद जणमणमहद

घत्ता—सिरिरेमणीवग्गणयणजुयलसिहग्गंयेहियउरयत्तु ॥

यिउ उज्जहि भरदणराहियद पुणैदत्ततेउज्जत्तु ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसद्विमदापुरिसगुणालंकारे महाकद्विपुण्यंतविराण

महाभच्चभरदाणुमणिण्य महाकद्वे भग्गविलासवण्णण णाम

अद्वारदमो परिच्छेद्यो समत्तो ॥ १८ ॥

॥ संधि ॥ १८ ॥

१२ MBP माणउ १३ M °भुयणे

16 १ MB पर पर २ MBP विविहदं परइ ३ P मोतिव°, ४ MP गकामद ५ MB कय-
उपसोक्कद ६ M राद ७ MBP रयणत्तणि ८ M समुद ९ MB °रवणी° १० M °जुयत्तु ११ MB
पुक्कयत्त°; P पुक्कयत्त

18 सिरिभवणे भाण्डागारे

16 २ ७ घरवद भाण्डागारिक ; धवद स्थपति ७ ७ सका मइ समीधिताणि वित्तानुरागजनकानि
वा B a कयवडंसोक्कद कृतवपु सोह्यानि.

पुष्पपहाये भानुसु यि कञ्जठ
 दोष्यि तौस राहसार् सुवेसई
 बपर यव जि बोषामुहसहसई
 येवई साहस ताह पडसई
 कञ्जकनिसमरमारियसीमई
 सत्तसबारं कुकुण्डिबिबासई
 भानुसीस वचनुमई रिजई
 सहस्रमूर मेचैप्येसई

छनैकंड यि महिमंडमु सिखड ।
 दोसत्तरि पुरवरई पयासई ।
 पईमई अहवाक सहसिरसई । 6
 बोहह संपादेपई बिडसई ।
 छन्यवह जि काडिड बरगामई ।
 रंकि तई यि धरिपपरिहासई ।
 छन्यनैतरलीमई सिखई ।
 बलीस जि मंडसिबमहीसई । 10

यसा—देवीहिं तुतीस बलीस पुषु मेचैकपाहिवरिमेवई ।

बलीससहस्र भैवेरियड बिह विहवमसावण्वई । १४ ।

13

परि भाषाप्रतिभाषपयासई
 बडपलीसन्नेई मावण्वई
 तरेकोडिड किंकण्णं भाईपई
 सुतिहिं कोडि रसायबपसियई
 करिसजि बंगरकोडि पबहह
 काळ्यामु यिहि देह विबिसई
 विबहु महाकाहु वि संतोपह
 सौंकिवीरिपमुहई बडुवण्वई
 बेसपु वि लयभासजमबण्वई

बडई बंडति तुतीससहसई ।
 तेलीयई जि रसाई सैर्यपई ।
 बडुवह मबिबाड तुरपई ।
 सैरुई विभि सपई मावसिबई । 6
 पञ्जमारेव सैरिपि विहसह ।
 बीबावेपुपडहवारसई ।
 रंई देह बाबाविहवण्वई ।
 अधिमसिबिसिडबवरसई होपह ।
 बल्लई पोमु विंगु बाहरसई ।

१ MBP अण्वई v MP वण्वई ३ ५ MBP अण्वई ६ MBP वण्वई ७ M वंड ८ P "जण्वई
 ९ M वंड १ MBP "कण्वई ११ MP वण्वडिपई.

15 १ M वण्विड B वण्विड २ MBP अण्वई ३ MBP तेरिपई v MBP वण्वई ५
 M लंमपेडिड ६ II वण्वई MBP अण्वई M वण्विड ९ MBP omit this foot. १ MBP
 omit this foot. ११ MBP add after this पण्वई वण्वई लण्वरीसई, रंई जि जिहिं जि देह बलिरेव.

8 ७ छुडु पिड जि वा पई रलीपसिल्लामाम्

15 ६ ६ बावसिबई रलीपसिल्लामाम् 5 ६ विहहह सुडसि 9 वेचपु मेचै विवि

चिंता मण्योसह महिषयोसह दधिर्ने किं चिर किञ्चा ।

एव विनामियाविच्छाई एवै सुपच्छाई विपदि विपदि बड निज्ज ॥ तथार्क ॥

1

एवमिदं विधि पर्येणावियञ्जितः

कि सुखर पिणु भर्षे गपय

किं एवम् बाध विद्यमानम्

किं चकार तत्रैषादितरि ह्यहम्

किं एवम् मीयति गच्छियते

पि एवम् भयम् भयम् भयम्

कि कबल रिमार्कमन्तव्य

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सर्वथादिभू विषयमपि चित्तवत् ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

पि कथा एव वैशिष्ट्यम् ।

पिं डकार पिंईरं कय्यपपल्ल ।

किं तुम्हास अहयथाव्यवस्थितं ।

किं उवाच श्रीविश्वामित्र उवाच ।

दि कञ्जः ईश्वरविपीड नञ् ।

किं कथा विद्वत्पथि । 10

प्रस्ता—हे विष्णु न प्रस्ता शुभयाजयेत्तां पार्थं कुरुवन्तु येन॥

मणुया मन्त्रायु तं संविदं यणु मैन्यो पद वि बर तण्डर ॥ १ ॥

2

ਭਰਤ ਚੰਦਰ ਸਿੰਘੇਧਰ ਪਾਇਲਟ

अथर्षेऽहं ब्रह्मिण्यां वरुणं

पैसीयसु दोमिन्नु कुसरायन्तर्ग

एतयसिद्ध न मासिड नमपनड ।

साईं चि श्रीसहस्रनामधर ।

अथवा अस्मिन् अर्थे अस्ति ।

MRP give at the commencement of this Samdhi, the following items:-

इत्यमरुषि भवन्तु जगत् कालव्ययान्तरात् ।

भरण्यः कर्मणि कर्मणि कर्मणि कर्मणि ॥ १ ॥

1 MBP "कामिनी" २ MBP बगुली ३ M सि न गान्ध्या ४ MBP विनिमय ५ MBP
एनर एडि ६ MBP बगुली निदल्लु MBP विनिमयकाय MBP लक्ष्मी एडि ७ MBPK
कोपि ८ D लक्ष्मीकाय ९ P सुबह पत्र सि न गान्ध्या

2. १ MBP निवर्तित २ MB कणनालना ३ M एलील. ४ MBP *कृ ५ MBP कृ

1 १ ६ अक्षय भूषण १३ अक्षय भूषण

2. 1 के तब सिध जीतवसु 3 के सीतक* एकां एतव, 3 एसीरह अमरीकैय

यद्यपि निमित्तं योनिः सा
योग्यतया च यथा हि सा
अविद्यानोपनि उद्भूता सा
आत्मनोपनि भट्ट सा
अनुसंगीयमुद्धर सा हि सा
उद्दिष्टापर्यायिणि विधिषु
तस्यैव ज्ञेयं योग्यं नि ज्ञेयं

यद्यपि निमित्तं योनिः सा
योग्यतया च यथा हि सा
अविद्यानोपनि उद्भूता सा
आत्मनोपनि भट्ट सा
अनुसंगीयमुद्धर सा हि सा
उद्दिष्टापर्यायिणि विधिषु
तस्यैव ज्ञेयं योग्यं नि ज्ञेयं

10

यत्ता—यिह सत्यं हि मानुषं पुनः कर्तव्यं विदितं सत्यं सत्यं ।
जिनपुत्रायान्न भवति विदितं सत्यं ।

6

यणि योनिज्ञातः ज्ञानिः
सो मोक्षितः ज्ञो जिनपुत्रः महः
सो मोक्षितः ज्ञो न पुनः भवः
सो मोक्षितः ज्ञो दिव्येण सुः
सो मोक्षितः ज्ञो न मातुः गमः
सो मोक्षितः ज्ञो जणुः पतिः भवः
सो मोक्षितः ज्ञो सत्यं पयः
सो मोक्षितः ज्ञो न मज्जुः पियः
सो मोक्षितः ज्ञो जिनोदमियः

यिह सत्यं विदितं सत्यं
सो मोक्षितः ज्ञो जिनपुत्रः महः
सो मोक्षितः ज्ञो न पुनः भवः
सो मोक्षितः ज्ञो दिव्येण सुः
सो मोक्षितः ज्ञो न मातुः गमः
सो मोक्षितः ज्ञो जणुः पतिः भवः
सो मोक्षितः ज्ञो सत्यं पयः
सो मोक्षितः ज्ञो न मज्जुः पियः
सो मोक्षितः ज्ञो जिनोदमियः

6

10

5 १ MB उद्भूतः २ P भवः पतिः ३ MBP महः पयः ४ MBP न पुनः भवः ५ MBP न मातुः गमः ६ MBP जणुः पतिः भवः ७ MBP सत्यं पयः ८ MBP न मज्जुः पियः ९ MBP जिनोदमियः
यत् ६ MBPK भवति विदितं सत्यं
6 १ M मुनयः २ P पयः पतिः ३ MBP दिव्येण सुः ४ M पयः पतिः ५ P पयः पतिः
मुनयः ५ B मातुः गमः

9 a तमुभं भ तपो ह्यदराधिं प्रयानुष्ठानं वा प्रयत्नं परमात्मनोपनि, योनिः प्रमाणद्वयं । यत्ता—यिह सत्यं सत्यं ।
6 9 b पण्या य नि कि रि य हि विपयादाता विद्याधि, तादा सामान्यवेदम्, एतद्भूतं यत्ता—यिह सत्यं सत्यं ।
प्रयत्नं प्राणि, शिक्षाप्रदानं चत्वारि, अनसमिन्-नायम-जिनपुत्रा-भ्यानि चत्वारि, यथा हि सत्यं सत्यं ।
प्राज्ञ तप, पर्यधि प्रायश्चित्तम्, चतुर्विधो विनय, नवविधं ध्यानाद्यम्, पञ्चविधं साधनाम्, इति त्रिपञ्चाशत् क्रिया

तं धनु बं भुक्तं विधि जि विधि बं पुष्पवि विष्णवं विहस्यति ।

यत्ता—सा सिरि जा पुष्पबन गुण ते के गय गुंभिहि विभु हनुपुरियत ॥

गुंभि ते हतं मन्ममि पुनु पुनु बन्ममि केहि वीणु तद्विरियत ॥ ३ ॥ 10

4

हव भित्तिवि रायं वधिवध

ते आहव धेविधधम्मव

तद्युपपरिक्कमुपवासिरत्तं

तदपुत्तवपिहिंयं रंथययं

वप्यंति व ते विरया पिहिणो

कप केहि तसंतुं तसंतुं वप

वाविष्णवं कहिं वि समिप्पियं

धरसंगमालु केहि गहिठ

विधिबिदिधाममेवमावहारु

विष्मनु मयत्तधंदासिचं

हकाराविय जाया विवह ।

के ओपकिरजगज्जुज्जम ।

सखीनवीयविस्तंजुत्तं ।

व ववसिरिदिध्याधिपयं ।

परिपाठियसावपवपविहिणो । 5

परंताविदि वक्किववायविरत्तं ।

वड मन्नु कडनु विवधिवं ।

रपणीमोपवविरत्तंविह ।

मोणीवमोयंसंवाधरु ।

माविचं केहि विचमासिचं । 10

यत्ता—सामाहवं पोसनु अतिविपरिमाहु कामकोहपविहरेवं ॥

किड जहि पसंत्ताहि पवरवरत्ताहि सहुं सव्वासज्जमरत्तं ॥ ४ ॥

5

ते मर्ये विप्य परिपुनिय

उववीवहु केरठ विधवध

कर मठविहि सई सिरेव वविय ।

वंसवहरि वसिठ वडु सब ।

१ MBP दुवहिं १ M हउ हउ ते मन्ममि B हउ हउ ते मन्ममि P हउ हउ ते मन्ममि

4 १ MB ते हउ १ MBP यत्तावि ५ "तामिरे but corrects it to तमिरे १ MP add after this वरन्नु वरन्नु दुनुत्तिय ४ MBP add after this विवधं विवधेनु (P "वीड") परिपुनियं कुम्भड विवधिड वक्किव ५ B "यमवहारु १ MBP "वीव" = MBP उमरत्तं

8 ३ विहव" दु विह 9 हववव हववव जा

4 ३ ३ "वीव" कम्पा. 8 ३ "विहव" विहव विहव 8 अतवतहु वरन्नाम् वरन्नु वरन्नाम्

5 ३ ३ वववीवहु कर्मात्तमवव ववववीववववव

तुहं कामधेणु अक्खीणणिहि
 तुहं सिद्धमंतु सिद्धोसहि वि
 तुह णामे णासइ मत्तकरि
 तुह णामे हुयवहु णउ ढहइ
 तुह णामे संतोसियखलउ
 तुह णामे सारियरि तरइ णर
 तुह णामे केवलकिरणरवि

तुहं पुरिसुत्तमु जणविण्णदिहि ।
 तुह णामे णउ भक्खइ अहि वि ।
 कउं देतु वि यक्खइ णरहु हरि ।
 परवलु गयपहरणु भउ वहइ ।
 तुट्टेवि जति पयसंखलउ ।
 ओसरइ कोहकंदप्पजइ ।
 णीरोय हौंति रोयाउर वि ।

10

घत्ता—ण फलइ दुस्सिविणउं जणि अवसवणउं तिहुवणभवणुकिट्ठइ ॥
 पूरति मणोरइ गइ साणुग्गइ हौंति देव पइ दिट्ठइ ॥ ८ ॥

9

इय वंदिवि पुंळइ भरहवइ
 होहिंति अहिसपंचित्तियर
 किं अक्खमि हउं तुह केवलिहि
 फलु काइ भडारा वजराहि
 परमेसर णाहिणरिंदसुउ
 पुण्णेण केण हउं चक्खइ
 कंपावियसिहरिणिययथलि
 उप्पण्णु पवट्टियदाणरहु
 पुण्णेण केण सोमप्पहो
 पुण्णेण केण पालियविणय

मइं दियवर णिमिय परमजइ ।
 फालेण किं णै भणु तित्थियर ।
 णिसि दिट्ठइ मइं सिविणावलिहिं ।
 सदेहु महारउ अवहरहि ।
 पुण्णेण केण तुंहुं अरहु हुउ ।
 जायउ भारहभूयलविजइ ।
 पुण्णेण केण वाहुवलि वलि ।
 पुण्णेण केण सेयंसैपहु ।
 हयउ सभउ सोमप्पहो ।
 सभूया सयल वि तुह तणयं ।

5

10

६ M कमु देतु, B कउ देतउ, P कमु देतउ ७ BP °सकलउ ८ P सायइ ९ MB तिहुयणु भुयणुकिट्ठइ
 9 १ P पुहइ २ MB °पवात्तियर° ३ MBP णु ४ P अरहउ हुउ ५ MB °भूयल°, P °भू
 अल°. ६ MBP केण हुउ वाहुवलि ७ MBP सेयसु. ८ MBP सभउ ९ MBPK add after the
 मइ पइ जेहा होहिंति कइ (P पइ मइ), कइ हलहर हरि पडिसत्तु (B पडिसत्तु) कइ, MBP add
 further तवभट्टकामिणिहिं यद्धमइ (P तवभट्ट य कामिणिवद्धइ), कइ होसहिं रुइ रुउइमइ, कमु वि च्चि
 होसइ कवण गइ, भो मयणकारिंदमयाहिइ, एउ (P इहु) सयलु वि अक्खइ परम जइ

8 10 a सतो सिय खलइ सतोपिता खला याभि, b °सखलउ शूखला 18 तिमुवणमइ
 णु किट्ठइ त्रिभुवनोल्लेटे.

9 4 b अवहरहि अपनय,

प्रता—ओ तिमकपासाइ बैबबिसेसइ हुमिदि देव यह पीणइ ॥

10

पसु जीव न मारइ मारइ बाणइ पद भणु बि समु बाणइ ॥ १ ॥

7

सो लोचिइ बाणसु पङ्क जिह

बन्नासमकोविबबाबिपई

बिन्नाई ताई सुहासपई

बिन्नाई ताई परतीरपई

बिन्नाई ताई मबिराहपई

बिन्नाई ताई मणमोहपई

बिन्नाई ताई वेसंतपई

बिन्नाई ताई विषससहपई

बिन्नाई ताई करमरपई

बापमगामसीमई सपई

कनकाई विपसई तेव विह ।

गुणपणनामई भाबिपई ।

भूसेपिलु बरकण्णासपई ।

सिपसुहुमई सिन्नापई बीरपई ।

कडिसुतककबमडहापई ।

पङ्कपूरबहुजई पोहपई ।

हृषगवरहकतई पंहरई ।

घनकजमगियई विविहई भई ।

सासपकिदियम्याहपुई ।

बिन्नाई ताई जयरपई ।

5

10

प्रता—महि कसवरवणी प्रेबकि बि बिन्नी बिपई बिचतपुजाई ॥

तिह जिह बड बिजइ बीजि बि विजइ बिहिई बिबरबिहाई ॥ ७ ॥

8

मन्नाहि बिपि हुँसै सपबहरे

बिहू हुजिप बिबिबाबकिप

सुपहायकाकि गैई सजिपड

संसुड परमसड पणपड

तुई सँखु रसायणु भमबमड

बरबाहै बिपि पच्छिमपहरे ।

आगामिदन्धुपि न मिथि ।

केजासु गैपि त्रिपु पुजिबड ।

त्रिप तुई बितामबि भमपड ।

तुई मवरकड रैबि कन्धड ।

5

१ MBP दम्भभित्त

7 १ B वीरिब १ MBPK कल वि १ MBP भम

8 १ MBP सुत १ MBP विहू १ MP वड ४ MBP हण १ MB रण

11 मारव बरकड

7 1 १ विरहई द्विकेयम् १ ४ "वीरि" पणकर्म १ ४ बिचहवई एवमिजि

10 १ "जावई" बाण 11 कसवरवणी कर्मि एवमी कन्ध एवमी ४ 12 "विहाई" कन्ध

यथा—ती नवग्रहहरणां कहर महासुनि सुर्गैः पुनर्त्तु पुनर्त्तु ॥

परं किं विपदासु नपेविजसु कांते होसह कुंभित ॥ ९ ॥

10

हा पुनर्त्तु कां किं पावमनु
रमिहिति जेभ्य कीलह सारं
केहिति सुवतिथि परवतिथि
वठ हृदिहिति पित्रां महु
कहिहिति धम्मु बो जं कए
सुजागाए वेसावसहं
महिहिति कुकजसु पुण्ये बहि
महिहिति गाह देवव कलसु
वक्कसह देवप कल देवयं
मासहं मज्जर परवाए वि
र्ययं ययं देविहिति कियं

मारेपिणु मय बहिहिति पम् ।
पिबिहिति सोमबावठं महुव ।
मज्जह देहिति वि विपतकमि ।
व वि हृदिहिति हृदि मीमिह ।
सो तेव वि कम्मं कएव । 5
मज्ज वि पारवयं पारवयं ।
किं मज्जमि पुकिं पुनर्त्तु तहि ।
महिहिति पुहह देवव पवसु ।
महिहिति जेभ्यमोववययं ।
मिहिति पुपवयं मज्जयं वि । 10
कह पारिहिति कल हृदिहिति ।

यथा—सर्गं सङ्कल्लु वेकिवि मज्ज वुग्गिहिति बयि बीवरिहितिपुनर्त्तु ॥

देहिति पङ्कसु पज्जतिहिति कयकवडामपुनर्त्तु ॥ १ ॥

11

पथा वंमव होहिति सुव
पुण्य मज्जर मज्जर वठ रमि
पंजावव जे तेवीस परं
वज्जियकुसमपकुसममज्जि

किं विपद वप परं पीवमुव ।
विबिधोकिपसु वि विमुवहि कम्मि ।
विह्वा ते विज्जवर मुविम मरं ।
सुपसाविपयमतिहितिपुकिं ।

१ PK ती ११ P मिनुमि १२ MB पुकिवड; P पुकिं १३ P मि १४ MB पुकिवड

10. १ MB वपु; P वपु २ MBP पुहह ३ MBP मि ४ MBP पविह. ५ PK पुण्य
६ MBP वपवव ७ M मि ८ MBP वयं वेवह.

11. १ MBP विविधवपु वठ विमुवहि

10 २ ४ व मि बो ७ सुवतिथि पुनर्त्तु ४ ५ व मि बो 10 वरवरर पवव.
11 वीवहि वरिपुनर्त्तु वीवहिपुनर्त्तु पवव वीवहिपुनर्त्तु पुनर्त्तु

XX

रिसहं भग्गहु भासियहं चिर एवहिं हउ गुञ्जु ण रक्खमि ॥
भासइ गोत्तमु सेणियहो सुणि तिसट्ठिपुराणइ अप्पमि ॥ धुवक ॥

I

तहिं तइया देवें धुत्तु पम
तेल्लोहं देसु पुरु रज्जु तित्तु
अट्ट वि पारभियपुण्णठाणि
लोलंति पलोइज्जति जेत्यु
सो केण वि किउं ण कया रि धरिउ
चल्लु णिच्चल्लु सो ससहावघडिउ
यालिस कहति जडयणहं हेउ
दब्बाइ लोयउप्पायणाइं
जइ णत्थि ताइं तो लहइ केत्थु
किं गयणि होइ पकयपवित्ति

णिसुणहि णट्ठण हो मणुयवेव ।
तंहु दाणु गईहल्लु सुहपसत्थु ।
साहेवा हॉति महापुराणि । 5
दब्बहं तं लोउ भणंति पत्थु ।
जीवाजीवह णिक्खुञ्जु भरिउ ।
आयासणिघात्तु वि णेय पडिउ ।
देवें सिट्ठारें कियंउ लोउ ।
महिमासुयवेसाणरवणाइ । 10
णीरूवहु होइ णिहं वि वत्थु ।
दीवाउ दीवि पज्जलइ वत्ति ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

फणिनि त्रिमुह्यतीव मेचकरुचि कचनिचयेपु गोविता-
मलकिपु मूर्च्छतीव एसतीव तमालतलेपु पुजितम् ।
मदमुचि माधतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले
दिशि दिशि लिम्पतीव पियतीव निमीलयतीव सङ्गणे ॥

P reads सङ्गणे for सङ्गणे GK do not give it

1 १ P भासिय २ MBP तेल्लो ३ MBP तवदानगईहल्लु ४ MP सह ५ MBP त लोउ
६ P तेत्थु ७ MBP किउ केण वि ण धरिउ ८ MB णिक्खुत्तु, P णिसुत्तु, T णिक्खुत्तुमा निरतरम् ९ K
कयउ १० MBP ण रुवि वत्थु, K ण णरु वि वत्थु and gloss नरोऽपि वत्तु पि न भवति.

1 1 चिर पूर्वम 8 a तहिं समवसरणे 5 a b त्रैलोक्यादयोऽष्टौ पदार्था महापुराणे साधयितव्या
भवन्ति 6 b तं तेन कारणेन 7 b णिक्खुञ्जु निरन्तरम् 8 a चल्लु णिच्चल्लु चल्लो जीव पुद्गलापेक्षया,
निश्चलो धर्माधर्माकाशकालापेक्षया 9 a यालिस अज्ञा, हेउ कर्ता, b सिट्ठारें विघात्रा 10 b वणाइ जलानि,
11 b णिरुवि अपि निश्चयेन

ओ दिङ्गुड मयसई तप्यत गणु
 संपादयन् ममिहिति जह
 ओ परं सिपिगुह्यत तक्षिपयं
 ओ मेहहि जगु अंधारियत
 ओ दिङ्गुड सुकपत डंकोतव
 पुसई जहपियपिडवपरं
 किड फाई यि जत सविहिति परे
 होहिंति मिश कंठियवहर
 होहिंति मिहंति मिष्यक विरस

तं करिदो अत यहु वि लवणु ।
 जावपिषु बुद्धसमकामगर ।
 ओ विषयमंडलु डंकिपयं ।
 तं केपयु पुरत विचारियत ।
 सो मरुचारिहि बुद्धरिसंमद ।
 होहिंति कळत्तई पररयई ।
 काजीव दीव जह मरि वि घरे ।
 पिष्यकवदुपारयेव जवर ।
 होहिंति मुनि वि बजामरित ।

मरुता—जिह जिह जिषु जंपर जजनु समप्यर मयहि मुवैवपंकवपयि ॥

तिह तिह तनु पहय रसविषु पसय कुंरपुण्यतच्छवि ॥ १६ ॥

इय महापुण्ये तिसिद्धिमहापुरिषगुणाकंकारे महाकरपुण्यपर्वतविरह
 महामज्जमरुहानुमन्विय महाकप्ये मरेहसिपिबवसंसपतच्छव्यं
 नाम वक्रुवजीसमो परिच्छेधो समतो ॥ १९ ॥

॥ संधि ॥ १९ ॥

13 १ MBP लयपु २ MHT जह ३ P पुनरितु ४ MBPT कटिह ५ MB "कप्य" ६ MBP तिर ७ MB मुनपु ८ P वनरिति MBP मरुतेकवतच्छवि

13 १ ६ व रिही करिपयि. ७ ॥ डंकोतव वजपुण्यमरुहो वक्रा ८ ॥ कटिपवहर वरुतेप
11 कुंरपुण्यतच्छवि वक्रुवजीसमो परिच्छेधो समतो

परियाणिउं हौतउ जइ हरेण
जइ वच्छलेण जि कियउ लोउ

तो दाणव णिम्मिय काइं तेण ।
तो किं ण कियउ सव्वहु विहोउ ।

घत्ता—जिणंणाहेण ण दिट्ठाइ मिच्छाविसविंदुयणीसंदइ ॥
किं वणिणयइ कुवाइयहं सिवगयणारचिंदमयरंदइ ॥ २ ॥

3

अण्णाणु ण याणइ सइं जि मग्गु
जइ जाइ जीउ सिवपेरणाइ
को जाणइ केही हरहु चेदु
कम्माणुय सा जइ भणसि एम
माहेसर किं गोवइ थवति
अणिबंदउं महु णरजम्मयारि
जिह सिवु तिह वसुं ण विण्हु अत्थि
विणु णरसंताणं मणुउ केम
सत्तेक्कपणेकसुरज्जुपिडुलि
वेत्तासणझल्लरिमुंर्यरूवि
तहु मज्झि परिट्ठिउ तिरियलोउ
एक्केण एक्कु वेदियंउ ताम

णिव णरयविवरु सग्गापवग्गु ।
तो किं कयायइ तवभावणाइ ।
होसइ भीसण णिट्ठवियइदु ।
ता पलइ सुयण संहरइ केम ।
जइ मत्त पिसल्लय किं चवंति । 5
पिउ वंभयारि जणणि वि कुमारि ।
विणु हत्थियउलेण ण होइ हत्थि ।
अणिहणु अणाइ जग्गु सिदु एम ।
अहमज्झउहुंमुंवणग्गकुयलि ।
चोईहकेयाउच्छेहभावि । 10
गयसंखदीवजलणिहिसमेउ ।
छेईल्लु सयंभूरमणु जाम ।

घत्ता—तहिं लवणणवमेहलइ मंदरमउडें मंडिउं भावइ ॥

जंवूदीउ पसिंदुं जणि सयलहु दीवहु राणउ णावइ ॥३॥

१० MBP जिणणाहेण वि ११ P दिट्ठियइ

3 १ MBP कयाइ २ MBP होही ३ MBPT कम्माणुवसा ४ MPK अणिवद्धइ ५ MBP वमणु विण्हु ७ MBP भुयणतकुयलि ७ M °मरवरुवि, BP मुरवरुवि ८ BP चउदह° ९ MB वि ठियउ १० MBP छेयल्लु ११ MBP लवणवुहि° १२ MP मंदिर° १३ P वेळिउ १४ MBP पसल्लु

12 b वि होउ विशिष्टो भोग 13 मिच्छेत्यादि—मिथ्यात्वजलविन्दुतां निष्यन्दो येषु गगनारविन्दमकरन्देषु

3 1 b णिव हे भरत, अयवा, हे श्रेणिक 2 b कयायइ कृतया 3 b णिट्ठ वियइदु निष्ठापित
ध्वस्त इष्ट प्राणिना वाञ्छित यया 4 a कम्माणुय कर्मानुसारिणी 5 a माहेसर शैवा, गोवइ शकर
9 a सत्तेकेत्यादि—यथासख्य सत्तेकपदैकशोभनरज्जुके विस्तीर्णे, b °कुयलि भूतले 10 b °केया° रज्जव,
°उच्छेहभावि दीर्घत्वम्

धम्मत्तकाम णव जणिय जामु
विजिरियह कहि किरिवाभिसेसु
विणु ठिह्मदत्तै नव कवन्ति
विणु छरै कि साधैह्म ज्ञाहि

कहि कम्पहि हृन्नापसव तामु ।
 थिक्कलुसह सोह न हरिसु रोसु ।
 कहि करणहरणमुखी होसि । 15
 सिधि सींगी कि कसारबाहि ।

ਬਚਾ—ਭੰਮੂ ਮਿਞਬਰ ਭੰਮਪਰ ਕਰਰ ਭੰਮੂ ਤੇ ਮਾਛ ਸਾਧਿ ਮਾਛਰ ॥

सिद्धिं वप्स्यसि जगु वप्स्यसि त्रि करिणि काई शुभचर्या साधर ॥ १ ॥

2

विष्णु सर्वकारेण सर्वत्र केन
 एो यद्वा कस्मिन् कलाद मन्त्रमि
 त्वा ईश्वर भुवन्मयसु विमिश्र
 त्वा विष्णु न तो परिणामपिदि
 निरूपयिष्यु मन्त्रं भुवन्मयसु
 सर्वे सपत्न वि पत्न विमिश्रित्य कदा
 पुन पत्न ताई संभोगमात्र
 त्वा विष्णु न त्रुपिन् विष्णु
 त्वा पमन्त्र न विष्णु सर्वसु बंध
 प्रसाद वारिवा वारिपात्र

मिथिहंद नर सारं कबहु होर ।
 न तो पुनु मेधविमिथु पबमि ।
 तो ताहु कबहु ठंगुपविमिथु ।
 क्षिप्परिणामहु करि कम्मसिदि ।
 जह परी दीसह कोब ताहु ।
 संसारसमर ससरीरि भय ।
 पावेन न क्षिप्पर किं भयाहु ।
 तो किं भविसिखुंनमि कबहु ।
 तो नारं होर किं हेमवंह ।
 नयेचह किं संसह विहाय ।

10

११ MBP विद्युतचुम्बकीय तरंगों का प्रसारण १२ MBP विद्युतचुम्बकीय तरंगों का प्रसारण १३ P विद्युतचुम्बकीय तरंगों का प्रसारण १४ MBP विद्युतचुम्बकीय तरंगों का प्रसारण १५ P विद्युतचुम्बकीय तरंगों का प्रसारण

2 1 K निव 1 MB बजावट 1 MBP कल 1 MBP सिमिड 1 MTG हनु निव
1 MBP बजावट 1 M कल कल 1 K कल कल 1 P बजावट कल 1 MBP सिम

१४ अ निमि रिबहु सिम्भारिक, निरिवा मिरेहु कर्मोपतिमिषि विबुध बहु कर्मोलिक १५ अ
सिद्धे लावि-दुणा करणहराभिमान तेन उग्र आरम्भीयव हि तेन निना कने करणारामपुरतो वसीत
उपा वैता कमलि १६ अ लीनक ह जयपी के काटारनाहि कर्तुलम्बाधि १७ म्भव चयो १८ खवर
का पदाणि

[illegible]

जो रुंदचंदकिरणाहिरामसामारमंतगोवालगोवियागीयगेयरसवसविसण-
सुण्हाणिहित्तीसासतावविहदंतगोद्विसोहंतगोद्वे^१ ॥ ५ ॥

5

जो वसहसिंगसखसोह्लमहियलुच्छलियसरसथलकमलमंदमंयरंदपुंजपिंजरिय-
तुंगणगोहरोहपारोहडालडो^२ल्लायमाणजक्कीविलुंपियासणपामरोहो ॥ ६ ॥

जो खयरचंचुहयपडियपिकमायंदगोच्छघावंतवाणरोमुक्कधीरवुक्कारतसिय-
णासंतरायरमणीपयग्गपविलुलियणेउरालगहेमरयणंसुफुरियवेल्लीहरंतो ॥ ७ ॥

जो रत्तचूलकीलावियंमण्डुणमेत्तणिवसंतगामपुरणयरखेडकच्चडमडंवसंवाह
णाइरमणीयभूपपसो ॥ ८ ॥

जो हीरणारसीहारणालसंभवकुवाइक^३यसमयविरहिओ वीयरायणयतोयधोय-
लोयंतरंगसुद्धो सहा^४वैसोम्मो ॥ ९ ॥

जो घोरवीरतवचरणकरणपरिणयमुणिंदपायारविंदवंदणपसत्तणरमिहुणगरअ-
चारित्तमत्तिविद्वियविसमपावाचलेवो^५ ॥ १० ॥

10

घत्ता—ज^६हिं वेयडूमहासिहरि मज्झि परिट्टिउ दीसइ केहउ ॥

रुप्पयदंडउ घल्लियउ पुहइ मवंतें विहिणा जेहउ ॥ ५ ॥

6

तहिं उंत्तरसेदिहि रमियखयरि
पण्फुल्लियसयदलपरिमलेण
पडिवक्खचित्तकयदूसणेण
आवडें रयणविचित्तण
णाणादुवारमणितोरणेहिं
दीसइ णंदणवणणीलकेस
चूलामणिचुंधियणहयलाई

अलयाउरि णामें अरिथ णयरि ।
परिवेढिय जा परिहाजलेण ।
जा सोहइ णाइ णियासणेण ।
पायारकणयकडिसुत्तण ।
णं छज्जइ कंठविहूसणेहिं ।
पुरि णं अवैयरिय अउव्व वेस ।
जहिं घरइं सत्तभूमीयलाई ।

6

१ M °गोहो १० MP °मयरंदपुंजरिय°, ११ MBP °होलायमाण° १२ M °कयमय° १३ M सहाव-
सोमो १४ All Mss add— इमी विसमसीसयछदजार्ह कहिया १५ MBPK तहिं

6 १ MB उत्तरे सेदिहि २ MBP पण्फुल्लिय ३ K अवयरियउव्व वेस

६ °साभा° राविः ७ हीर° बांकर, °णारसी° हरसिंह, आरणालसभव° प्रज्ञा. १० °परिणय° प्रवृत्त.

6 3 छ णियासणेण परिधानवलेण. 6 छ वेस वेद्या.

घत्ता—अइवलु णामें तेत्थु पहु सो जइ वि हु ण होई दोसायर ॥

तइ वि हु कुवलयतोसयर सोम्में वि चंडपर्याव पहायर ॥ ७ ॥

15

8

कुलणहसवियारु वि णिव्वियारु
इहलोयत्थु वि परलोयभत्तु
जयंगहियग्गुणु वि अक्खयग्गुणोहु
बलवंतु वि अवलासयहं गम्मु
णीसु वि लक्खणैलक्खियसरीरु
दूरत्थु वि णियँडत्थु वै हयारि
सुयभिण्णमणु वि द्ढचित्तवित्ति
अइसच्छु वि रँहियसमंतचारु
संगरु वि जिणइ संगरि दुजेय
सुपसुत्तु वि चलणयणेहिं णियइ

सुहसीलु वि धरियधरित्तिभारु ।

गोवालु वि जाणियरायवित्तु ।

णिच्चाहु वि करिकरदीहवाहु ।

अविडप्पु वि लंघियसूरहम्मु ।

ससहावें धीरु वि पावभीरु ।

6

रइवंतु वि परवहुवंभयारि ।

बहुपालारो वि दिसयित्तकित्ति ।

गुँरभो वि गुरुहुं लहु विणयसारु ।

लच्छीवासु वि खँरदढ णेय ।

ठाणत्थुं वि तच्चरणेहिं भमइ ।

10

घत्ता—जो महिमाहरु पुरिसहरि महिमावंतु भुवणि विक्खायउ ॥

जो अहिमाणवंतु सुयणु जो रिउमाणवंतु संजायउ ॥ ८ ॥

६ MB होय ७ MBP सोमु ८ MBP चढपयाव.

8 १ MBPK जगं २ P ० गुणि ३ K लक्खियलक्खणसरीरु ४ P णिवडत्थु ५ M वि ६ P रइयं ७ MB गरुवो, P गरुओ ८ M खरददु, BP खरवहु ९ MBP चरं, T चलं. १० M वाणत्थु, MP वाणत्थु ११ MBP तच्चरणेहिं भमइ

15 चढपयाव चण्डप्रताप, पहायर प्रभाकर.

8, 1 a कुलणहेत्वादि—यः कुलाकाशे सविकारः स कथं निर्विकार इति विरुद्धम्, अन्यत्र कुलाकाशे सवियारु सविता, b सुहसीलु सुखशील उत्तमशीलश्च 2 a परलोयभत्तु मोक्षप्रदालु गोवालु पशुपालः, अन्यत्र गौ पृथ्वी ज्ञानं च तत्पालयतीति गोपालो ज्ञातराजश्चेतिथ 3 b णिच्चाहु निर्बोधः प्रलम्बवाहुश्च 4 b अविडप्पु विद्वेषो राहुः स अमवक्ष्यपि विलंघितसूर्यतेजा, अन्यत्र विद्यात्मा न भवति 6 a णियडत्थु निकटस्थः, आसन्नधनश्च 7 b बहुपालारो बहुपुत्रधानं पाति पुण्यातीति बहुपा पुत्रशीलां आर्त्तिं स्वर्गां राति आदत्ते यः स कथं दिक्षु प्रवृत्तकीर्तिः, अन्यत्र बहुपालकः प्रख्यातकीर्तिश्च 9 a संगरु स्वाग्नेः खद्युरीरे कर्ग व्याधिर्यस्य स स्वाकर्गः 10 a सुपसुत्तु यः सुष्ठु प्रसुप्तः स कथं चलनयने पश्यति, अन्यत्र, सुष्ठु प्रकृष्टं सूत्रं नीतिर्यस्य स चारलोचनैश्च कृत्वा पश्यति; b वयइ भजति गच्छति 11 महिमाहरु पृथ्वीलक्ष्म्या गृहम्

लालाविट्ठलु	अंतहं पोट्टलु ।
पिउवणमौर्यणु	पन्निखहिं भोयणुं ।
सोलहकंदरु	णवदारंतरु ।
कामे जिप्पइ	लोहें धिप्पइ ।
कोहें तप्पइ	छम्मे लिप्पइ ।
कैम्मे वज्झइ	मोहें मुज्झइ ।
सत्ये भिज्झइ	रोएं झिज्झइ ।
जरइ कुठिज्झइ	काले खिज्झइ ।

15

घत्ता—भणिउ सणंदणु पत्थिवेण सति करेजसु णियसंताणहो ॥
तुहुं अणुहुंजहि रायसिरि मइ पुणु जाएवउ णिव्वाणहो ॥ १० ॥

20

II

चवलयर कुसासणवस चरति	महुं वाइ कुवाइहिं अणुहरंति ।
जरमरणहं किकर किं करंति	मायंग अंग किं मोक्खु दैति ।
णिम्मलमइ रायहु रह रहंति	ए अवर वि जगि असुवह हवति ।
अंतेउर अंते उर जि हणइ	रोवइ वइवसहु ण रक्ख कुणइ ।
भवपासबंधु सुहिवधुणियरु	खणधंसि णयर गंधव्वणयर ।
धणु इंधणु लोहहुयासणासु	घर विग्घर केवलदंसणासु ।
फणिमोउ व मोउ ण भुंजणिज्झु	आकोसु वि कोसु वि वज्जणिज्झु ।
हुकियणिहेसु व देसु भणमि	खयरवइपहुत्तणु तणु व गणमि ।
सीहासणु हासणु मेल्लमाणु	किं रक्खइ खइ गैच्छंतु प्राणु ।

5

५ M °भावणु ६ B reads this line as पिउवणभायणु, गुणगणमोयणु and adds further सोयकोयणु, पक्खिहिं भोयणु ७ MB add after this गुणगणमोयणु, सोयकोयणु ८ MBPT °कदर ९ MBP छिप्पइ १० B कामे ११ MBP खज्झइ

11 १ MBP वहति २ MB केवलु दसणासु ३ P खज्जंतु ४ MBP पाणु

18 a पिउवण° इमशानम् 16 b छम्मे मायया

11 1 a कुसासणवस कुशायास्तर्जनकस्य असनवशास्ताडनवशा, पक्षे कुशासनवशाध्यायिकादय, b वा इ वाजिनोऽश्वा, 2 b अंग सवोधनेऽव्ययम् 3 b असुवह प्राणघातका 4 a अते विनाशे, चर इदयम् 6 b विग्घर विघ्नकरम् 8 a °णिहेसु उपदेश 9 a हासणु हा इति स्वन शब्द.

13

जिह्वं पामा कर्माक्षरंमणेन
तिष्ठ निर्वै शामु मेविज्जमाणु
पट्टं मोक्षेण मोक्षेण मोक्षु
पट्टं मोक्षेण मोक्षेण मोक्षु
पट्टं मोक्षेण मोक्षेण मोक्षु
मदिणाहु मोक्षेण पुणु मोक्ष माणु
उप्यज्ज जा कर्मण्ययाति
मा वेण वि कर्मण्ययाति
मा पाणि महायदुग्गं नन्द
यत्ता—भुक्ता मर्गं वि समुत्तमं न जि शर्ह मा ज्ञानि पत्तिं ॥

मभासपयिपुमुदंमणेन ।
विलम्बं होर अक्षयमाणु ।
पट्टं मोक्षेण मोक्षेण मोक्षु ।
पर्यन्तेण मायाविज्ञाणु ।
इय जीउ कर्मणिषु धम्मदोह ।
संमग्नि कर्मणु ग्याहिमाणु ।
मकणं मण्ड ताह वेदि ।
पमसिज्ज जाह मुमाणिपाह ।
अण्णामसी घणमम्म कटिल ।

6

10

अथि न देति मोक्षि मर ताहि उपममयिहि पन्थम उक्ती ॥ १३ ॥

14

फासस्सवसंनय मदि भैमेवि ।
गायति के वि णयति के वि
सीयंति के वि तुण्णंति के वि
फरिस्सु फरति पहरणु धरति
आयंतु विमिट्टु ण संमहति
कम्महि धणाहं समज्जिऊण
दियमायमाणि सममंत हति
अह उट्टमगा यद्वियणिणाय

यायंति के वि घणंति के वि ।
धणकजि पट्टंति लिहंति के वि ।
महयस्माह पग्गियघट हति ।
धम्मह गुणयंता मरं कहति ।
आण्येयि पिहेल्लणि पुत्तिऊण ।
जिह्वाइयमुह माणय सुयंति ।
धापति मरुत्तह वे वि योय ।

6

13 १ P त्रिह २ P नि लु ३ MBP शर्ह ४ MBP नि लु ५ MBPK नियहोच ६ MP
० कर्मण्य मणि मायमाणु, B ० दवणेण मणि माह टाणु ७ MBP, अणुभेता ८ BP दहद. ९ M गच्छिह
१० MBP गुत्ता.

14 १ MB भमेमि. २ G पुत्तिऊण ३ B पाय.

13 6 a अणुभेण मंतत्या प्रार्थनेता 8 a क्षाणिपाह आनातया विद्या 11 गच्छिह गच्छेयिता, उह
समविहि परपम उक्ती उपपन्नविधिर्न दृष्टा नरि कि तु अन्तेन भोजनादिना हृत्वा साम्प्रति, तेन परपम एव
उपपन्नविधिर्न

14. 7 a सममंत श्रमथान्ता, b जिह्वाइयमुह प्रगारितमुत्ताः. 8 b वे वि पाय अपोयात ऊर्णयन्तय,

किं छत्तहिं छत्तापारमूमि
नामद मव देह न मरजहारि
परिपेक्षितपत्तिसु न सीसु होर

पाणिज्जर विज्जर बहिं न कामि । 10
न समंति केरु झसकेरुधारि ।
ओ मुनिहिं मृदु हो कुगर भार ।

प्रश्ना—यस परंपिणि राकयन नं मेहहिं धाराज्जरिछहिं ।

वज्जर पदु महाज्जरहो नहिंसिनिहिं सिरोहिं सिरिककसहिं । ११ ।

12

नं वज्जरपछे वज्जर पदु
मविमूखसु विवसज्जु परिउरेवि
ओ छिन्नर सिन्नर बंजनेव
ओ पुन्नर ओ वि हुन्नवसु देह
सामंतमंतिमज्जेसवपिज्जु
देहगहिं विविहहिं परिउरेहिं
कामिनिपवसिहउत्तिमयेहिं
तंतीपुनकवज्जहारहिं
वज्जज्जिपहवमहिपारवातु
पंडमित्तु महामर विहवमंति
विज्जर सवमर वहुपिउरिउरि

तं पुन मेहिवि जरवह पपदु ।
पिठ विज्जवि बणि विवमिन्नर केवि ।
विहउर सरेव मज्जह मज्जव ।
देहिं मि समाज्जु हुन पज्जमेह ।
पचहिं वि तातु हुन कउर उह ।
मोहरनं मविज्जवमयेहिं ।
वज्जज्जहिं वज्जहिं वाहमेहिं ।
त रि ग म प य ओ सरपारपहिं ।
मोवासज्जु तातु भार कसु ।
वीपव संमिज्जवमर ति मंति । 10
सरेपुज्जु वज्जज्ज वज्जपसिउ ।

प्रश्ना—तेव नंउरिउरि विज्जविउर हुनवह वज्जमेहिं किं धार्येह ।

सार्यव वहुसरिनीविपहिं विवमसुदेहिं मि जीउ वज्जय ॥१२॥

५ MBP छीरे

12 १ MBPK जारवहिं २ M पदमित्तु, ३ MBP वज्जहिं ४ MBP कि वज्जमेहिं, ५ P वज्जमेह-
६ M सवमर ७ MBP वज्जविहिं

10 छत्तापारमूमि मुनिविह, 11 नं वज्जकेरुधारि कामा 12 नं सीसु विह 14 सिरिह
वज्जमेह,

12, 8 नं वज्जह वज्जवि उरिहिं 10 नं विहवमंति मि जेह 12 वज्जव वज्ज.

13

जिहं पामा कररुहफंसणेण
 तिह णिच्च कामु सेविज्जमाणु
 वड्ढइ लोहेण मँहंतु लोहु
 वड्ढइ णँयहीणु णिप्पवि माणु
 वड्ढइ रइ अँणुअंधेण मोहु
 महिणाहु होवि पुणु होइ साणु
 उप्पज्जइ जा कंदप्पवाहि
 सा केण वि कत्थइ आणियाइ
 सा णारि सहावदुगध चडुल
 घत्ता—भुक्ख सरीरि समुब्भवइ तं जि दईइ सा झत्ति पलित्ती ॥

संभासणपियमुहदंसणेण ।
 वित्थरइ होइ अइअप्पमाणु ।
 वड्ढइ हंकारें तिच्च कोहु ।
 परवंचणेर्ण मायाविहाणु ।
 इय जीउ करेप्पिणु धम्मदोहु । 5
 संसारि कवणु रायाहिमाणु ।
 संकर्णं तप्पइ ताइ देहि ।
 पसमिज्जइ जाइ सुमाणियाइ ।
 अण्णासत्ती घणगम्म कुडिल ।
 अत्थि ण देहि गँविट्टु मइं तहि उवसमविहि परवस उँत्ती ॥ १३ ॥ 10

14

फासरसवसंगय महि मँमेवि ।
 गायंति के वि णच्चति के वि
 सीवति के वि तुण्णंति के वि
 करिसणु करंति पहरणु धरंति
 आवंतु विसिट्ठु ण संसहंति
 कम्महिं घणाइ समज्जिऊण
 दिवसावसाणि समसंत हँति
 अह उड्डमग्ग वड्डियणिणाय

वायंति के वि वण्णंति के वि ।
 घणकज्जि पढंति लिहंति के वि ।
 चड्डयम्महिं परहियवउ हरंति ।
 अम्मइं गुणवंता सइं कहंति । 5
 आणेवि णिहेलणि पुंजिऊण ।
 णिव्वाइयसुह माणव सुयंति ।
 घावंति सइच्छइ थे वि वीय ।

13 १ P जहिं २ P णिच्चु ३ MBP अणत्त ४ MBP तिच्चु ५ MBPK णियहीणु ६ MP
 °वचणेण मणि मायठाणु, B °वचणेण मणि माइ ठाणु ७ MBP अणुवधेण ८ BP वड्ढइ ९ M गँविट्टु
 १० MBP वुत्ती.

14 १ MB ममेमि २ G पुज्जिऊण ३ B पाय.

13 5 a अणुअंधेण सतत्या प्रवर्धनेन 8 a आणियाइ आनातया स्त्रिया 11 ग विट्ठु गवेपिता, उव-
 स मविहि परवस उत्ती उपशमविधिर्न दृष्टा शरीरे किं तु अन्येन भोजनादिना कृत्वा शाम्यति, तेन परवश एव
 उपशमविधिर्दृष्टा

14. 7 a समसत श्रमश्रान्ता, b णिव्वाइयसुह प्रसारितमुखा. 8 b थे वि घाय अधोवात ऊर्ध्ववातय,

निहर दीपस्तु अपहृत्त
बाह्यद भुक्त परिचयः जीवि
दृष्टिं योति पुत्रु भीषयत

कस्तु छिन्नत छिन्नत एतु वि वार ।
पञ्चक पितु हयसंभेदमि । 10
किह एतवई यनु पचरमि मचय ।

यथा—अपसज्यावत धरहरिं केति केर कास्तु वि वलवर्तहो ।

जीहामेदुवरसयसिप वंति जीव करपहृ सुपुरेयहो ॥ १४ ॥

15

यवविपयविहीनं किं कुलेय
वरसकिमविहीनं किं सरेय
सुविमहविहीनं किं पुरय
वारितविमुक्तं किं सुपय
किं वार्द मचसंभेदमि
किं करिमा अचगमिदकुसेय
किं पुरिसे पतरिपुत्रसेय
किं सुविमा पंविदिवचसेय
किं मर्ते अयेवहुवरपय
किं शुवमा मोईवारपय
किं सुवयमहुपछीविपय

विपयाहविहीनं किं वरेय ।
सुवयसविहीनं किं वरेय ।
परवहुपहविपे किं वरेय ।
पिउपवपडिहूँ किं सुपय ।
किं मर्ते विमसुहृद्विरेय । 8
किं हरिमा अचगमिदकुसेय ।
किं अविपय विपकिमपसेय ।
किं सुते वेम्मपरजसेय ।
किं पतिपयैय परवरपय ।
किं सुते अविपयगपय । 10
किं धर्मविहीनई जीविपेय ।

यथा—पुंगु सखुमु पलज्यमर अगवह एयह अम्यह मातर ।

यम्मह यतिउ सार विष अं पद अयसमावत वीतर ॥ १५ ॥

४ MBP वंमह, ५ MBP विम

15 १ MBP "वर्णय", MB "वर्णय" १ B वलिविही ४ MP वी, ११ वते ५ P वु-
अचगपय, १ MP वीहं वरपय MBP "वर्णय" MBP वलिविही, १ MP वीवर
१ MBP वयविहीनं वरिमा अचगपय एयह.

6 ६ कस्तु छिन्न त छिन्नत वलिविहीनः एतु एही वरव लपति एता मित्रता लयी वलिविही, 10 ६ हयसंभे-
दमि योमयने हो वीति मित्रतालये 11 योति अमते 12 केर कास्तु

15 4 ४ सुपय सुते ६ सुपय सुते, 6 ६ हरिमा लयी "कुलेय" "वर्णय" (वर्णय), 8 8
मर्ते मर्ते अयपेय, ६ वरवर" वरपय

16

सन्नेण दयादाणेण धम्म
तेणेत्थ कुणर पाणय निरिक्का
धम्मेण हौति कणामरिंद
अहमिंद कंदचंदाहजोण्ढ
मणिमउदमिदरसोदित्तसीम
पट्टियासुण्य कुसुमसर रुद्ध
फइगमययम्मिनाइत्तणाइं
सोहंग रुद्ध कुलु मीलु फंति
जं दीसइ चगउ गुणविसेसु
घत्ता—धयलीहयउ सिरकमलु भौउ देउ फेत्तिउ भुंजिजइ ॥

अलिण्ण जीयाहिंसइ अहम्सु ।
कुच्छिउय सुउ दौति तिमहतिक्का ।
अहंउ चक्कि चारण मुण्डि ।
धम्मेण हौति जग्गि गम कण्ढ ।
मदलियमहामहलवईस । 5
धम्मेण हौति पाणाणाइं ।
धम्मेण हवंति शुद्धत्तणाइं ।
पोरिसें जसु भुययत्तु विमल सति ।
तं धम्महु फेरउ फत्तु असेसु ।

धम्म जिणागमभासियउ मणवयकायनिमुसिइ फिज्जइ ॥ १६ ॥

10

17

पहु म्हादिजइ सम्गापवग्गु
अणिहणइं अणाइग्गेउयाइ
भूयइं चयारि जहिं जहिं मिलंति
गुलजलपिट्ठिहिं मयसत्ति जेम
ण सरीरिसरीरहुं भेउ अत्थि
जम्माउ ण घघइ अण्णु जम्मु
जो परहउ पुच्छिचि परहु पासि
विणु तेहिं केम सो सम्मो जाइ
जासुयदि मुर्वइ मलु जीचलोउ
जलबुध्दुय जइ कम्मेण हौति

ता दिनइ महामइ नहु फुमग्गु ।
महिमागययेन्नाणरउयाइं ।
तहिं तहिं चयणचिघइं चलति ।
भूएसु जीउं सभवइ तेम ।
फरु फण्णु इतु फो फवणु एत्थि । 5
जणु जेण जियइ त फरइ कम्मु ।
गच्छइ इदियउखीपयासि ।
पुज्जिउ पत्थरु किं पुण्णभाइ ।
परजम्मि तेण फहिं कियउ पाउ ।
तो जीव चि राय म फरदि भंति । 10

16. १ K अरिहत २ P तोहग्गु सीलु वल्लु रुउ. ३ MB रुउ ४ MBPK पोरिमु जसु

17. १ MBP °जलपाइहिं. २ M जीव ३ MBP कण दह. ४ MB अण्णजम्मु. ५ MB गग्गु,
P सग्गि, K सग्ग but corrects it to सग्गु. ६ K मुयइ.

16. 4 a °जोण्ढ °फान्ति 7 a फइगमय° सैद्धान्तिकः मिद्वान्तवेत्ता, °यम्मि° वामी,

17. 2 b °उ या इ उदकानि. 7 a परहउ परहइम्, b °पयासि °प्रकाशेन. 10 b राय हे राजन्,

यथा—कहिं किर सुखियवुक्कियां पियु भूय्यहिं जीउ कहिं विउउ ॥

ओ बाहिउ पारसिपहिं सो इउं मज्झमि कोरहिं सुउउ ॥ १७ ॥

18

तं विमुविधि कापिउं बउत्तपण

परिपाळियसमहिंसावण

अपि मरुहिं दीसह विण्णु राउ

हेहं मावेव हि मिण्णु ओउ

अरुउदाररुहिं वेसपणु

इण्णेहिं तेहिं तेहउ वि होह

सिहि उन्नेविज्जह पणिएव

अरुउदार पणु पिरउउ पणिएव

एणेहिं करिहिं अण्णिय वसि

विणु जीवै कहिं सुयं मिण्णु

अह परिउवैति मासहिं कुदेउ

अंतिहिं पणुपणविममपण

सुपवैति परिउवसावण

अउण्णपसुवहिं पणु साउ

किह अउह सुहाउ मूवओउ

संमेषु विविह कत्थर पणु

अरुविह काहिं संओपहार

पणिउ सासिज्जह अति ठेव

अउउवहिं कहिं मेअवउति

किं अउसि पउउरिय विणि

कावाकारेव व परिउवैति

ओ काउवपिउहिं सरीउ होउ

यथा—पंविहिपहिं विवज्जियउ मणविउहिउ विमोसुं अयावउ ॥

जीउ आह किह मयसि सुहं सम्यि होह किह सुउवरपणउ ॥ १८ ॥

19

दीसह पणु अपि सुहं सुवेव

अरुउदार अणु अणुएव

पणुवेव वि विवेववेव

विह विह ओ अणुवेववेव

* MBP सुहं * MBP वी

18. १ MB विणु एव M विमिण्णुओउ BP *विमिण्णुओउ १ MBP *उ, ४ MBP अणुति करि
अणुति विणु, ५ M अणुवेव, १ MB एणेहिं P एवे, * MBP सुयं वी, MBP अरुविहि
१ MBP अरुविहि १ M विमिणु B विमिणु

19 १ B अरुउदार P अणुएव

18. 1 a वउत्तपण अणुवेव ३ अंतिहिं यणिया 2 a *अउह सुहाउ मूवओउ अणुवेव-अरुविहि
अणुवेव अणुवेव अणुवेव ३ परिउवसावण परिउवसावण, ४ ३ अउह अणुवेव ५ a *अउह अणुवेव
६ ३ अउह अणुवेव ७ अउह अणुवेव ८ अउह अणुवेव ९ अउह अणुवेव १० अउह अणुवेव ११ अउह अणुवेव १२ अउह अणुवेव

19 1 a अणुवेव अणुवेव, 2 a अणुएव अणुवेव

जंपिउ पइ यहुपुज्जाहरेण
णउ त्मइ मो कयणिग्गहेण
णिज्जीउ ण याणइ सोफुनु दुप्पु
भो भूययाइ भूणहिं भुत्त
घइतंढिय पंढिय कय्यु कयहि
तहिं अचम्मरि सभिण्णे पउत्तु
हम्मियच्छियरम्मियकयासणाइ
जो दीम्मइ सो गर्णपट्टि लंघु
यत्ता—ता रिम्मिममयहु भत्तएण उत्तरं डिण्णु तेण गर्णयाइहि ॥

यत्तु णिरण्णउ णत्थि जग्गि तणजलरसु जि द्दुत्तु धुत्तुं गाईहि ॥ १९ ॥

20

ज णत्थि यण्ण त कुम्मरोसु
तं ण हवइ मणु को णणु वि याइ
को जानइ जिणयउ मुरवि सणु
जइ छिण्णउं मणु मणमाउ चेइ
जइ दव्वइ तुह राणभंगुराई
किं सा खघइ वाहिरिय दिट्ठ
ता सयमइ चवइ मईयिम्मालु
जिह पयहु केरी सव्व माय
गुरै सीसु धम्मु वयहाइ पणु

त यत्ताइधु नं गयणपोसु ।
अत्थिहउ किं पुणु गयहु जाइ ।
यत्तिथि धरुचि परिणामि तथु ।
तो अण्णे धवियउ अण्णु हेइ ।
तो णणधम्मिणि वान्ण ण काइ । ७
अण्णुहयु राणउ किं भंजिउं धिट्ठ ।
मायंण्हिय निधिणय इज्जालु ।
दीप्पनु धि तिह जग्गु णत्थि राय ।
परमत्तं णउ पय णउ सदेहु ।

१ MBP भवि मुद्धिउ २ MBP तह वुत्तु ४ MBP सयुद्धउ. ५ MBP राणि भगविसु ६ MBP राणपदि,
P खणि वदि ७ MBP तेण दिण्णु ८ MB राणवाइहो ९ B अत्थि १० MBP पुत्तु. ११ MB गाइहो.
20. १ MBP भगविसु २ MBP माइण्हिय. ३ P गुणमीतपम्मु

7 a कयहि काव्य करोपि, b अमद्भउ अधद्भ अग्रतीतिजनकम् 8 b राण भगविसु राणभिनयरो जीव,
७ b वासणाइ विससंस्कारेण. 10 a गधु रूपविज्ञानयेदनामज्ञासंस्कारा पय स्कन्धा, b वासयधु कर्म,
12 णिरण्णउ निरन्वयम्

20 2 b अत्थिहउ अस्तित्वयुक्तम् 3 b वज्जि वीत्यादि—भरुपि जीवादि वर्जयित्वा 4 b वेइ
जानाति 5 b अण्णुहयु अननुभूतम् 7 b मायण्हिय मृगतृणिका

णिहृद्दृष्टं हाग मलयग्रहपंकु
जलैजलितु जालजल्पु य जलद
उयसमद न केम वि अगडाह
तदि अयसरि पंकयवैसनेतु
सो भणिउ नेण हरययिगद
जहि मुरहिउ कंभिउ देयदाग
जहि वाइ घाउ णीघइ सरीर
आइसदि मविज्जदेययाउ
ता तेण भणियि पेसणपमाउ
घत्ता—मुपण मविज्ज पेसियउ ताउ तामु जयंति ण ममुहु ॥

मनु देउ ओमहु मयणु पुणिण परंमुदि होइ परंमुहु ॥ २२ ॥

23

पाविहृहु कए य ण जाइ प्राणु
लोपहि भणिजइ देय जौय
कदइ फरेहि ताहउ तौदु
जुज्जतहं कपिउ फायदंडु
णिघटिउ आमासिउ सो रविदु
त पेच्छिउ हरियदाणुयामु
जइ रत्तद्वदि जलफील फरमि

धगधगइ पलयसूग य ससंकु ।
आघइकालइ आउइ ण णिद । 5
थिउ कायरमुहुं परगयरणाहु ।
पिउणा फोफायिउ पदमंपुत्तु ।
जहि घणइं घणइं घेहहिंगाइ ।
मीयत्तु मंवारिणं हिमनुमाइ ।
तं नेयाघदि मीओयतीइ । 10
मइं णंतु नुरिउ मारुयरयाउ ।
आयाहिउ रागदेवीणिहाउ ।

आडत्तउ तेण रउहु झाणु ।
संपयमुदि मुहियह सेवणीय ।
हुहिदेमपण मंणिहु णरिंदु ।
पल्लीदेहतहु रुधिरविंदु ।
सीयत्तु घणरुहल्लुं ण कणिंदु । 5
आण्णु दिण्णु ताम् सुयात्तु ।
तो पुस णिरत्तउ णउं मरमि ।

22 MBPK णिहृद्दृष्टं ० MBP जलजलद जलितु जलणु १ MB °पत्त°. ४ MBP पयमु पुहु
५ P बाणीहराइ, ६ MBP संवारिउ ७ MBP मविज्जद.

23 १ MBP पाणु ० MBP हंडु, T तौदु उदरम्, K तौदु, but records तौदु in second
hand १ M reads this foot as 4 a. ४ P °देसिणदि ५ M reads this foot as 8 b ६ MBP
दियमविउ आमासिउ णरिंदु ७ MBP °लउ. ८ MBP रत्तद्वदि ९ MBP नेय

22 4 a मलयग्रह° चन्दनम्. 5 a जलद जलार्द्रं ययम् 11 b मारुयरयाउ पायुपेणा 12 b
आया हिउ आकारित, °णिहाउ गमुह.

23 1 b आडत्तउ प्रारब्धम् 2 b संपयमुदि लक्ष्मीसुत्तार्थम् 3 a तौदु उदरम्, b कायदहु शरीर-
द्वयम् 4 b पल्लीदेहतहु विष्णुदेहमप्यात् 5 b यणरुहं रुधिरम्, छणिंदु पूर्वमाचन्द्र. 6 a हरियदा-
णुयामु कुरुविन्दस्य, b सुयात्तु सुतम्

किंकरकरसिरपदवापिपण

ससमेसमहिंसमूर्मसोपिपण ।

वापि कोष्ठ वापेपिपु मरहि तेम

मुविहाजह इतं तहि न्हामि जेम ।

पचा—पिसुमिभि हिंसावपणविहि गठ कुवविहु पिउहि मउमिभि कर ॥ 10

कारिमकीकाउहु मरिहि विरचय वापि विहाजह कुसर ॥ ११ ॥

24

कूचेपिपु देलु पयु राउ

कूतय तय पुक्तिपय साउ ।

मउ कोहिउ ककलाउ मुविउ

मावाउ विहपमि पयु पुपु ।

मपि पसरिउ तहु पुकम्मरेणु

वापविप मीसपु कयपेपु ।

काउविउपु पपविउवापु

विउउ कुकविउ पकायमापु ।

कं कपिहि विद्वज्ज करकरेणु

करवह तहु पकक वावमापु । 5

पकममिभि पडिउ गिरिउवापु

विपकरउरिपाविपविपु ।

मुउ गउ करवहु मुविउपममि

हाहाउ वडिउ वंपुवमि ।

मउव वि विमुवहि तुह वंसकेउ

कयेव वाई सई मयउकेउ ।

विउ वीउउ करवह वंसवापि

ईउउ वमि ईउविवापि ।

तहु तयउ तयउ वजिपुवापि

ममिमापि सउकमपवंसुमापि । 10

तो देव वीहकायेव पयु

वजपविहि कयपि ॥ १२ ॥

पचा—पुपु ककलु विपि वरिपि पुंजिपविहिहवपममार ॥

काउवापे पिउ मरिपि वजवेव वृयव विपवमेवाउ ॥ १३ ॥

1 MBP "मिप" ११ GK मरिप वापि

24. १ MBP उहु विपुमि. २ P वावेव वि वंसिवापि. ३ MBP "पुवापि" ४ MBP व. ५ MBP वजप.

9 क वि कर्त. 11 क वि मकीकाउहु वृमिममिपि; विहाजह मवापे.

24. १ क काउवापे 9 क विपविपुविपविपि 10 "पुवापि" कयव, क वजपवमपु मापि वजपवमपु

25

माणुमु दादहिं ददहिं क्लरै
समिगणिजलरुयसिहरगणचणि
संभरियपुत्रजम्भनरेण
मैर्भासित भोयाहोयणेण
महु णहु को वि चिरर्जम्मयधु
पुणु गपि तेण पुच्छिउ मुणिहु
हयउ असमाहिइ मगिचि सणु
तं मुनिचि तेण निचणवणेण
पदिओवेप्पिणु घरं रात्रियकम्मु
बुज्जिवि फणिणा सणारु कयउ
देवेण तेण जाणियभरेण
आविवि मणिमालिदि दिणु हारु
इहु अज्ज वि अच्छइ तुज्ज कठि

जं घरि पदम्ह त त गिलइ ।
पुणु रैयणमालि पइसंतु भवणि ।
धोलफिउ गियसिमु विसहरेण ।
ता त्रिनिउ मगवाजायण ।
णं तो किं णउ भक्कइ मयधु । 5
भासियउ तेण वंढयणरिहु ।
किं ण यियाणहि अप्पणउ बप्पु ।
पिउणेइ करुणफरियमणेण ।
जिणणाहहु केरउ कइउ घम्मु ।
मुउ जायउ सुर उरयत्तु गयउ । 10
कय गुरुपुज्जा मुमहुच्छयेण ।
जाणइ पुर देसु कहोवयारु ।
ताराणियरु धं णं मेरुफठि ।

घत्ता—त णिसुणेवि महायलेण भरहमोसियाधलि जोणप्पिणु ॥

हयतमु पुष्पेदतसरिसु आलिंगियउ मति विहसेप्पिणु ॥ २५ ॥

16

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिमगुणालकारे महाकइपुण्यतविरह
महाभवभरहाणुमणिण महाकवे वितदापडियपडाविहण णाम
वीरमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २० ॥

॥ सधि ॥ २० ॥

25 १ MBP दलेइ २ MBP गिलेइ ३ MBP रयणिमालि ४ MBP म भागित. ५ MB भोया
भोयणेण, PT भोयाभोयण ६ B चिरधम्मयधु ७ MBP °करण° ८ M °कणिय° ९ T कवावयारु
कृतावतार १० MBP व मेरुफठि ११ MBP पुण्यत°

25 4 a मच्चीसिउ मा भोयीस्त्वम्, भो या हो यणेण फणामणउपाध छनेन फटाटोपेन 10 b गयउ
नष्टम् 12 b कहा वयारु कथावतार.

2

त सुणिधि पवुसुउ भवयणु
 संकाकंपाहिं विचजियउ
 अण्णहिं दिणि उहुगणमेदलहो
 फंचणधूलीरयपिंगलहो
 मणियरफधुरियणहतरहो
 आसीणसुरासुरसुदरहो
 सिरिभंहामालसुणदणं
 वजियफणिकामिणिणेउरं
 किंणरपारद्धयेत्तसयं
 अकयाइ विलवियतोरणइ
 मडिय सीहामणवेइयउ

अइयलमुउ हउ उवमंतमणु ।
 गुरु तेण सुवण्णहिं पुजियउ ।
 गलगलरलंतणिज्जरजलहो ।
 करिदतयिदिण्णमिलायलहो ।
 सिद्धरुणाइयसयमदघरहो । 6
 गउ घदणैदसिइ मंदरहो ।
 सउमणससगसपंदुयवणइ ।
 चालियचंदुजलचामरं ।
 विरुमियमाणवभवेमयरं ।
 पर्यसिधि जिणवियणिहेलणं । 10
 परियंचिवि अंचिवि घेइयउ ।

घत्ता—णरविहृणा चगचइगुरुणा करु णिउ सेसासयदलहो ॥

तं मणियहिं महुयरसुणियहिं भणइ घ र्तर दुक्कियजलहो ॥ २ ॥

3

ता तहिं ओलवियभुयजुयलु
 मलु जासु सरीरि ण ज्ञाणि मलु
 जसु भमइ जासु णउ भमइ मणु
 यंकत्तणु मउंहर आयरिउ
 रसु परमागमि णउ कामरसु
 सिरि केसजडत्तणु जासु गय

संपत्तउ चारणसुणिजुयलु ।
 णउ परतावाणि यलु सुतवि बलु ।
 णहु भजइ कहिं मि ण सीलगुणु ।
 णउ जासु मइइ किं पि वि धरिउ ।
 घसु जे ण समिल्लइ धम्मयसु । 6
 णउ सीस वियाणियसत्तणय ।

2 १ MB णिसुणिधि २ MB अडबलु मुउ ३ BP घदणभसिइ ४ P °भर° ५ MBP °भर
 सयइ ६ MBP पदसिवि ७ MBP सिहासण°, ८ MBPKT तद.

3 १ P मइ and gloss मत्तौ २ MBP जो

2 8 a व जि य° शब्दायमान 10 b पयसिवि प्रवेश फुत्ता 11 a °वेइयउ चउप्पिका, b
 वेइयउ प्रतिमा 12 °विहृणा °चन्द्रेण, सेसासयदलहो निर्मात्यस्यपद्यस्य फुत्ते. 18 म णिय हि मनोहे,
 तर दुक्कियजलहो बुष्कतजलात् तर, पाप मुक्त्ता सुखी भव

3. 3 b णहु णखम्

तुम्हा मय अहं वि आसु मय कय रंभिरियहं पं अय दय ।
 त रिचिमुपपुत्रुड वंरियत सरिपुत्रं अयत विरियत ।
 हं वंरि वि यम न करमि तत केचित किं योसमि असुरवत ।

यथा— सिरिगेहर पुष्पविरिहर देसु महाकण्ठ वसर ॥

10

तंजयण सुगिरिचिरिहरु आयत तं तह विरि विसर ॥ १ ॥

५

तं नरहर्षपथवित्तपथे ज्ञावत व नडह संशोरजरे ।
 तदि पणु साहू नारणगर अण्णेकु भरिजठ सुजमर ।
 ते पुष्पिय पुत्रं वे वि जंभ तुम्हां तिनालपावीपवर्ष ।
 महु सामि महापुत्र समर किं मयु अमयु प नरार ।
 आभिरतसपावरजीवय तं विमुनिवि जंभर जेहू जर । 6
 हर जंभुवीवि बाहिरमण्ये अण्णह पुणारपारमण्ये ।
 आसण्यमयु सो विजयवत पूर्वमर भवि होसर तित्तवत ।
 मोपासित जं तं नैत यमि कुम्भोपचयु तह तह कयमि ।
 पञ्चमविहृदि रंभिरविस्मय सीहवरि नरिनु विमुकमय । 10
 नाने सिरिसेयु सिरिभिजठ सुपरिदेविदि वरिचियपुत्र ।
 तह पर्वतु पुत्रु नयेवमु हुत बीयत सिरिबमु कीरिह पुत्र ।
 सो नरार जयपिजयमययो सो मावत सयजह परिपनहो ।

यथा— सुहवसयु बुधिवहसयु विरिदि पसेसु वि कलहिरजे ॥

किं गुणयु मण्णह सजयु नयेव पुण्यु वि मयुत मुयनपठे ॥ ४ ॥

१ BP न वी नोवर, ४ MBP नर

४ १ MBP 'नुवर्ण', २ MBP 'नरार', ३ MBP नना ४ MBP 'नना' ५ M वेहू नर
 ६ MBP दयनर, ७ B नरार वर, P नंर वर ८ MBP वरह पुत्र ९ MBP ननर, १ MBP
 नरिपुत्र ११ P विहृ १२ M ननर,

१ न नर वर, २ न नना, ३ विरि नर

४ १ न 'नर' नर २ न नरार वर नर नयेव विमयनपठे ननर,

5

मेहंतं सतं रज्जरइ
 णरणाहं अइअजुत्तु कियउ
 जेयवम्मं ता परिचिंतियउ
 णिहइवहु सव्वु वि चप्फलउ
 णिहइवु णवतु वि को गणइ
 णिहइवहु सुक्कइ भरिउ सरु
 णिहइवहु वंधु वि होइ परु
 ण हणइ भेसहु वि रुयापसरु
 णिहइवहु विहडइ घरिणि घरु
 उज्जमुं करोवि अप्पउ दमइ

वउ लेंतं जंतं परमगइ ।
 लहुतणयहु रज्जु समप्पियउ ।
 को केडइ दइवणियतियउ ।
 णिहइवकज्जि जगु सीयलउ ।
 णिहइवहु भासिउ को सुणइ । 5
 ण फलइ णिहइवं णिहिउ तरु ।
 णिहइवहु देव ण दंति वरु ।
 वियलइ सुवण्णु पत्तउ वि करु ।
 ण करइ सणेहुं मायापियरु ।
 णिहइवहु किं सिरि सकमइ । 10

घत्ता—णहु लंघउ गिरि आसघउ ज जि करइ तं णिप्फलउ ॥

हयकाण किं ववसापं सव्वहु दइवु जि अगालउ ॥ ५ ॥

6

इण चित्तमाणो
 अरायं वहंतो
 पिउस्सायहंतो
 रईसूहवेणं
 जसेणं सियं जं³

अहं णिंदमाणो ।
 अणग वहंतो ।
 रमासायहंतो ।
 सयासूहवेण ।
 मुहेणं जियं जं । 6

5 १ P णरणाहं अजुत्तु २ MBP अजवम्मं ३ P णिहइवहु ४ MBP णिहइव ५ MBP सुक्कइ ६ BP सिणेहु ७ MBP उज्जमुं

6 १ B णिदमाणो २ B °स्सायहंतो ३ MBPT सियज्ज ४ MBPT जियज्ज and gloss in T मुखेन कृत्वा जितान्ज यद्यौवनम्

5 4 a चप्फलउ चपलम्

6 1 a इण एतत्पापम् 2 a अराय वैराग्यम् 3 a पिउस्सायहंतो पितर कथयन्, b रमासाय-
 हंतो लक्ष्मीत्वादहन्ता 4 a रईसूहवेण कामदेवोद्धवेन, b सयासूहवेण सर्वदा सर्वेषामभिलषणीवेन,
 5 a जसेण सियज यशसा निर्मल यद्यौवनम्, b जिय जितम्

जसु सयणु घराणि अह कट्टु तिणु
उववासु जासु अह जिणकहिउ
तहु दुम्महवम्महणिम्महहो
सिरिसेणसुएण समिच्छियउ
लुहु केसभारु आलुचियउ
तामायउ णववहु परमजइ

जो तणुमलघरु मणमलेण विणु ।
परपिहु जेण सुद्धउ गहिउ
विवाउ करेवि सयपहहो ।
अणगारत्तणउ पडिच्छियउ ।
लुहु करणावियारु वि खंचियउ ।
महिहरु णामे खयरुहिवइ ।

5

घत्ता—जंपाणहिं विविहविमाणहिं णिहिलु णहंगणु छाइयउ ॥
वैमइएं णवपावइएं महुं णिन्वायवि जोइयउ ॥ ७ ॥

10

8

वद्धउ गियाणु परिसिय जहिं
जइ अत्थि किं पि रिसिधम्मफलु
ता तक्खणि णिगउ गिरिविवरे
रुहिरुल्लउ धारहिं परिगल्लिउ
गुरुणा भवपासणासरइ
असुथामु विसेणे झडत्ति हउ
अलयाउरि रायहु तणइ घरे
सो एहु महावलु भोयरसु

कुलि रिद्धि होउ महु जम्मु तहिं ।
तो होउ रज्जु विहवियखलु ।
कालउ विसहरु तहु लग्गु करे ।
घरणियलि कलेवरु रुल्लुल्लिउ ।
कहियाइं पचपरमक्खरइं ।
गउ जीउं ईसिउवसमियरउ ।
उप्पण्णु मणोहराहि उयरे ।
णउ मुयइ तेण सणियाणवसु ।

5

घत्ता—मिच्छत्ते मणकुटिलत्ते अवरु गियाणणिवधणेण ॥

जगु ताविउ आवइ पाविउ ण वणगयउल्लु वधणेण ॥ ८ ॥

10

६ MB कट्टुतिणु ७ MBP मलहरु वि मलेण ८ P ०भेण सुएण ९ MBP तावायउ १० MP सुहु
११ MBK णिन्वाइवि

8 १ MBP परियलिउ २ P झडत्ति विसेण ३ P जीविउ इसिउवसमियर

11 णवपावइए नवप्रमजितेन जयवर्ममुनिना

8 6 ७ ईसिउवसमियरउ ईपदुपशमितरजा

9

येतिष्ठसिवादिहं बुद्ध्यादि
 भुपर्दिदिहं वाणिषि पेक्षियत
 परं कट्टिषि सुविचारिदिहं प्दविड
 मिसि मिषिपेरं यक्षु विषयिष्ठयत
 सुपुष्टिड कां मि नठ कवर
 सिद्धु विमिषु तं वड कवर
 अचिरेण जादि र्गुर्मविष्टो
 जा न कवर सा पतिषु सुपुषु
 अणु वि कड बुद्धी पक्षविपर
 पडिबज्जर यम्मु म मंति कड
 संपाददि जादिषि सुतिं सुदुं
 तं विमुषिषि जादिषोपिष्ठयत
 साहादिषि सुमतिषि विषयवणु

संमिष्यमहामरसधमरहिं ।
 अण्पाकडं कडमि पक्षियत ।
 पद्यादिषि सीहासपि पविड ।
 तुड कां सुतिड दुगुष्ठियत ।
 मप्यर विताळरिड विवर । 5
 भागमणु तुहारत मपि महर ।
 ममद व मर्मनु र्हीवप्यो ।
 ता पडिष्ठड सिविबडं तुदुं मि पणु ।
 पद्यादि सो पणु मासु विवर ।
 विषयदि होसर तेकाळगुड । 10
 पावेसर मणु अणु सुदुं ।
 विपदिषवड बुद्ध्य सतिषवड ।
 आलोहवि परमविष्ठर मणु ।

पद्या—विषि संविषि वे वि अर्मविषि कडु संविष्ठर मंतिपड ।

पणु पविमसु तुड र्गुष्ठयतु लभर आपर बोमसत ॥ ९ ॥

10

संवेत्तदि अहवादि विम्वदिड
 विठर सा बर्हुविम विम्वमर
 किं पणु वं वं पडिपक्षियमड
 इय आम कर्मण विवेदयत

क्षेत्रद अणवदिदिदि विठर ।
 किं विरिपड वं वं क्षेत्रपड ।
 किं पविष व पणु परमकड ।
 ना बुद्धु सीमोणु पपरपड ।

9 १ MBP विम्वमरिगादि १ MBP तुष्टरिदि १ P विम्वड अम ४ MBP तुष्टरिप
५ MBP कपिपर १ MBP मपविष्ठर वमणु

10 १ MBP ता एणदि १ MB बुद्धि १ MB कवरण ४ MBP विवि विरिपड
५ MBP वीज

9 1 व विप विवादि विविविम्वदि 9 अविम्वर अविम्वरविम्वर 10 १ वमविष्ठर
वमविष्ठर

10 1 १ विम्वदिड अचरीण १ १ विम्वमर विम्वमरि १ १ वमविष्ठर अचरीण १ १
ववि विम्वर अचरीण

उद्विचि आलिङ्गित्वा निवचरेण
पुणु भणित्वा अउचु पसाउ किउ
ता भणइ राउ गिसि लक्खियउ
मत्तं पउचु भो णउ रहमि
चंपियउ जेहि ते जइ कुगुरु
जं जलु तं जिणवरिंदवयणु
हरिवीढारोहणु सुगइसुहुं

तेण वि णिर्वु पणविउ गियसिरेण । 5
किंकरु हउं परमुण्णइहि णिउ ।
पइं जीवियवु महु रक्खियउ ।
पइं दिट्ठउ दंसणु हउं कहमि ।
जो पंकु तं जि दुगाइविहुरु ।
धोयउ मइं तुहुं सुविसुद्धतणु । 10
पुणु कहइ संतु वियसंतमुहुं ।

घत्ता—मइ देसिउ चारणभासिउ देव कयाइ ण संचलइ ॥

सहु सासैं एकैं मासैं आउ तुहारउ परिगेलइ ॥ १० ॥

II

ता भणइ महाबलु रयविरमु
तुहुं वप्प मज्झु दाहिणउ करु
आसंणमरण किं तउ कैरमि
इय जंपिवि मउलियकरयलहो
परियणसयणाइं खमाइयइं
तणुमणवयसिरइं वि मुडियइं
मलभरियइं चरियइं छडियइं
णीसेसैं परिग्गहु परिहरिवि
पच्छा घुलंतसाहारवणि

कल्लणमिच्चु वंधउ परमु ।
आलग्गणखंमु सुसतियरु ।
हउं एवहिं सण्णोसिण मरमि ।
पुरि अप्पिवि पुत्तहु अइवलहो ।
मुंणिमावणसुत्तइं भावियइं । 5
इंदियइं खगिंदे दंडियइं ।
मायामिच्छत्तइं खडियइं ।
अरहतु भडारउ समरिवि ।
थिउ सहससिहरि जिणवरभवाणि ।

घत्ता—अहिसित्तइं सुद्धपचित्तइं जिणपडिंविंवइ पुज्जियइं ॥

10

इयममरहिं चालियचमरहिं खयरकुमारहिं विज्जियइं ॥ ११ ॥

६ MBP णिउ ७ P परमुण्णइ णिहिउ ८ B चपियउ ९ B परियलइ

11 १ MBP आसणु मरणु २ MBP चरमि ३ MBP सणासणु करमि ४ M गियमावण^०
५ MBP णीसेसु ६ MBP पुण्णपचित्तइ

6 ७ परमुण्णइहि णिउ परमोक्षतिं नीत 8 ७ दसणु स्वप्न

11 9 ७ सहससिहरि सहस्रशिखरे

12

कमकमकपडियमुक्कपपहो
 विपसिहविहविपपपहो
 ठविहस वडप पीपीये भूप
 हरियहका इव धेदामुहक
 कथविहिबेका इव सत्यविप
 ठवपाइ व विविहकुसुमपहव
 धर्मा इव विपपीयसहिय
 अह्महर् महिवि विजाविह
 पाठमातरविहि ठेव कप

उष्मासिबसियकतपपहो ।
 पाठय पुक्क परम्पपहो ।
 माया इव ठवार्थेय भूपे ।
 वरवरवसेवा इव सत्य ।
 वेसा इव हरिसिपवैप्यविप ।
 अह्मकपि व पठरेकठइव ।
 सुपसिहदि व वद्वमहमाहिय ।
 वावीय विवध संवासगह ।
 सुहमाचारमे मावे गम ।

यत्ता—ईसावह सौम्यविमावह सिरिपहि सिरिकमाठिबिममव ॥

विषयमे विड विवधमे कथमेतेव अत्र नमः ॥ १२ ॥

13

अभिमा सुमईतथविह
 वो मरिपि महावसु ठियसकुले
 इड वेड विष्णु कथियपपह
 वेडविपववसुहावविप
 विहि धविपहि रविप सुपविप

उक्तावसुपवि संपुडविह ।
 वं विहपुंठु वडपपठे ।
 सौम्येय वाम वं कुसुमपह ।
 तर्जनीपठेय मोहावविप ।
 विह तपु तिह जोअमेतिरि वविप ॥ १३ ॥

12. १ MBP वीविपमुक्को २ MBP वपावपमुक्को T वृत्तुजी मुक्क. १ MB 'वपव' व K omits this line ५ MBP वप ६ MBP कथि विमाव

13 १ MBPK 'वपव' २ P विजपु ३ MBP लविपवपाव व MBP लवोवपठि ५ P वीवपु

12 8 ३ वावाहव वपनीय वृत्तुजी मुक्क 6 'उड पठि' T व वपाव व वपवपठि
 लवपठि विहपठि 8 व अह्महह लव विपवि

13 1 व 'वेड विह' अन्तविपठि 4 ३ व वीवपठेय मोहावविप वृत्तुजी विहपठि
 6 व वृत्तु विह वृत्तुविप

लइ पुण्णविसेसैं सार्वडिउ
हत्थे सहुं कंकणु मणिजडिउ
मउडें सहुं कुसुममाल चडिये
वच्छे सहुं बंभसुत्तु विमलु
तहु जम्मविलासपयासणउ
णयणहिं सहु अणमिसपेच्छणउ

पापं सहुं णेउरु तहु घडिउ ।
सीसैं सहुं मउडु वि पाँयडिउ ।
कंठे सहुं सियहारावलय ।
सहु कडियलेण कडिसुत्तु चलु ।
सहजायउ णिवसणभूसणउं । 10
लायण्णु भणमि किं तहु तणउं ।

घत्ता—णउ रोमइ अट्ठियचम्मइं ण छिरँउ णउ मुहि मीसियउ
घणधँडिमहि कच्चणपडिमहि संणिहु देहुँ पयासियउ ॥ १३ ॥

14

छुह देउ णिसण्णउ गच्चहरे
ता तुंदुहि वज्जिय गहिरसर
वरिसिय कण्ययर कुसुमवरिसु
एए के को हं कवणु घर
सुत्तुट्ठिउ जिह जा संभरइ
वुज्झिउ सरंखुद्धु संचरिउ
उट्ठिउ सीहाँसणि संणिहिउ
जिणु कामकसायविवज्जियउ
उरैपेल्लियपीणपयोहरह
णक्खत्तकंतिसकासणह
चिरभवपरिपालियसुद्धवय
सो एयहिं सहु सुँहु तहिं वसइ

णियदिट्ठि देंतु णियवाहुसिरे ।
घाइय जयजय पमंणंत सुर ।
अमरगणगणु णच्चिउ सैरसु ।
अवलोयइ णियउरु प्राँउ कर ।
ताँ अवहि तासु मणि वित्थरइ । 5
संगासु वि जं णरभवि चरिउ ।
देवँहिं अहिसेउ तासु विहिउ ।
तेण वि परमेसर पुज्जियउ ।
चालीससयइं पवरच्छरहं ।
महपविसयंपहकणयपह । 10
कणयलय सुहासिणि विज्जुलय ।
एक्के पक्खेण समूससइ ।

घत्ता—सुहसाउ पई परमाउ जलहिमाणवित्थेरिण्ण ॥

सो जीवइ एक्कंसु जेमइ वरिससहासैं भरियण्ण ॥ १४ ॥

६ M सपण्ड, BP सपण्ड ७ B पायपड ८ MBP add after this कण्ये सहु कुल्लु विष्फुरिउ,
९ MBP चलय १० MBP अणमिसं ११ MBP सिरउ १२ T घणणिविड १३ MB देउ
14 १ P पमणति २ MP सरिसु ३ MRP पाय ४ MBP तो ५ P सिंहासणि ६ MB देविहि.
७ M घरि, BP उरि ८ P °हरिह ९ M विज्जुलय १० MBP सहु तहिं ११ MB थिर, P थियउ
१२ MBP °वित्थरियण १३ M एकसु

14 10 a सकासणह सदशनखा 14 एकसु एकवारसु

सो रपयिष्ठ सप्त समुष्मिन्वत्
 तद्दु प्लुप्तपुष्टावसि वधिय
 काष्ठेय विरहज बभूवुरिय
 तदि बहदुत्तर कामेय रक्षु
 तदि बाहिरेसि महिरस्यजठे
 तदि यवदुग्धस्य कविचस्यजठे
 मंदरकंदरि कीमियजठे
 तदि तनुपयिपारे यव दिवस

सुहकारि न केन विवेचिष्यत् ।
 मान्तरपीयूषीवरपयिष ।
 जपेज्ज सर्वपह भववरिय ।
 तदि विद्विसियस्यि मिययज्जु ।
 तदि मर्दहात्तु कुरिष्ठस्यजठे । 5
 तेन वि संविहिपदं मय्यजठे ।
 कुडकज्जयदिगुहाविषे ।
 तद्दु कविर्गङ्गा पद्मजवस ।

वक्ता—महाशिव विष्णुवि महाशिव तिसिंहं पुर्यर्धं वक्षोरिय ॥

गवकाष्ठर कश्मस्यजठर पुष्पार्जतपहसंमरिर् ॥ १५ ॥

10

इय महापुत्रमे विचक्षिमहापुरिसगुणांकारं महकहपुष्पार्जतविरह
 महाभक्तममहासुमन्त्रिय महाकथ्ये महावक्त्रसंजीवमरुते कश्चिर्गुप्यसी नाम
 यज्जवसमो परिच्छेदो समतो ॥ ११ ॥

॥ संधि ॥ ११ ॥

15. १ B ममिषिष्यत् २ MBP १पुष्टावस वधिय ३ T१ रिवत् ४ MB पुष्टा, P पुष्टी, ५ MBP वजरीय ॥ वजरीय ६ MBP १समरिय, T संवर, ७ MBPK कवचय.

15 1 ८ वसु निव वस समुष्मिन्वत् वक्ता २ ८ पल्लवपुष्टावसि वस्य इत्युत वसुर्वस्य व वि व कविता ९ 10 वरहादिदेवता वि—वैद्यमत्स्यो वैदिक कवयति । हे महाशिव वैदिक विद्वत्तु मत् । पूर्वोक्तो कथेय्यो वा वृत्ते वसिष्ठमेव वदुर्गते मरुते वा । तिस्रु वरमनामप्यस्य पुत्राणि वजरीय कवयति । इत्येव वज्जवसमो गवसुतां (१) पुनरप्यप्यसि वज्जवसि वरुति वज्जवसमि । वक्ता पुनरप्यप्यस्य मतिं वृत्तिं उत्तमवज्जवसं वा संवर वरुति पुष्पासी वा । विविदि वि वि वदे यद् वक्ता वरुत्तमवज्जवसं तद् तनुपयिपारे वरुति वरुति कश्चिन्मरुते इति मरुतविष विद्वत्तु । कवचो कथे पुष्टा वजरीय ममिषिर्वजरीयमिति पुत्रो वसिष्ठ उत्तमवज्जवसं पुनरप्यप्यसि । कवचय इति.

XXII

सज्जनमणसंताविरइ रइसुहचारणाइं दुप्पेच्छइं ॥

दिट्ठइं दुक्खियदुमहलइं ललियगेण मरणणेवच्छइं ॥ धुयकं ॥

1

दुद्धरखयकाले पडिपेह्लिउ
मउ देवगवत्थुं दरमईलिउ
परिवह्लिउ भोएसु विगयउ
परियणु सोयविरगु जपतउ
मोहियमणु माणिणिउ णिग्गइ
ता तियसगुरु को धि तांइ भासइ
भो ललियग पेमह्लिदि भयजर
सुर्यरहि जं सइयुद्धं सिट्ठउ
त जिणपायपोमु सव्भावे
हुल्लेसाइ णरत्तणहाणिहि
ससारंघिवमूलुमूलइं

दिट्ठउ कुमुमदांमु ओएह्लिउ ।
दिट्ठउ अगु फिं पि मल्लंजलिउ ।
आहरणोह्लि विट्ठु णित्तेयउ । 6
विट्ठउ सुग्गतउणु कपतउ ।
जा सो माणसमुक्कं सुक्कं ।
णियइणिओए सगु वि णामइ ।
तिट्ठयणि णंत्थि कां वि अजरामर ।
जमु मेवाहलु एणु जि विट्ठउ । 10
जेण विमुच्चदि भवकयपावे ।
मा पडिदीमि वप्प मृगंजोणिहि ।
मां होह्लिदि दूरि वरंसीलइं ।

भक्ता—जायइं पुणु धि पणट्ठाइं रंगणढा इउ भावविचित्तइ ॥

मेह्लिवि सासंयसिद्धिसिदि दुल्लपाइ णउ होति मुरत्तइ ॥ १ ॥

15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

मदकारिदलितकुम्भमुक्काफलकरभरभासुरानना
मृगपतिनादरेण यस्या भूतमनघमनर्पमातनम् ।
निर्मलतरपवित्रमृपणगणभूयितवपुरदारुणा
भारतमात्र सास्तु देवी तव बहुविधमश्रियका मुदे ॥

GK do not give it

1 १ MB °दाम २ MB °वथ ३ MBP दरमालियउ ४ MBP °कलियउ ५ ॐ परि-
याटिय, B परिवह्लिय ६ P दुक्खइ ७ MBP को धि णत्थि ८ M सुग्गरहि, BP सुग्गरहि ९ MBP जेण
जि मुच्चदि भवभयपावे १० MBPT विग° ११ MBP मा हो होति १२ MBP वयसीलइ; K मयसीलइ
१३ MB सासयसिद्धि

1 2 °जेवच्छइ विद्यानि 3 b ओह्लिउ म्लानम् 4 a दर° ईपत्त 8 b णियदणि नोत्तं
भवितव्यतासंसर्गेण.

करि कंकणु घंधणु पँइ णेउरु
 खलु तेळिर्यहरि णिरु णिण्णेहुउ
 वाहि लिहिय भित्तिहि चित्तयरे
 सरसंघाणु जेत्यु वायरणइ
 जहिं हयवरु हरि णउ णारीयणु
 कुणडि रसक्खउ णउ विवणीवहि
 अंजणु णयणि जेत्यु ण तवोहणि
 संकरु पहु ण वण्णविहिसंकरु
 जहिं कुंजरु भण्णइ मायंगउ

अण्णु ण जेत्यु अत्थि दुक्खाउरु ।
 अण्णु सव्वु जहिं सुयणु सणेहुउ । 6
 दीसइ तणुहि ण णरवैरणियरे ।
 णउ पर्यक्कमीमि रायरणइ ।
 वंसु जि छिइसहिउ णउ पुरयणु ।
 अंसिहि अपेउ वारि णउ सरिदहि ।
 णायमंगु गारुडि ण धणज्जणि । 10
 दोहुउ गोवालु जि णउ किंकरु ।
 णउ मीणवु कइ वि मायं गउ ।

घत्ता—जणु कलहं सहं सज्जणेण ण करइ को वि ण विप्पिउ भासइ ॥
 जहिं कलहंसहं गइपसरु पंगीणि पंगणि वावहि दीसइ ॥ ३ ॥

4

वज्जवाहु णामे तहिं णरवइ
 जासु कित्ति गय दसेहिं दियतहिं
 जासु खैगु वेरंतु वियंभिउ
 जासु कोसु चाएण पँवित्तिउ
 जेण गोसु घस्सेणुजोइउ
 पेम्मसासवासालवसुंधरि
 सग्गहु गम्भवासि अवयरियउ
 ताहि तेण जणियउ ललियगउ

रिद्धिइ जेण पँरिज्जिउ सुरुवइ ।
 आरुढी वरदिक्करिदंतहिं ।
 जासु रज्जु ण परेहिं णिसुंभिउ ।
 जेण तिजगु सुँकुहुँवु वि चित्तिउ ।
 जेण चित्तु जिणपयज्जुइ ढोइउ । 5
 तौसु देवि णामेण वसुंधरि ।
 णवमासहिं उयरहु णीसरियउ ।
 णंदणु णं णरवेसु अणगउ ।

४ M पठ, B पए ५ P अत्थि जेत्यु ६ MBP तेळियणिहि ७ B णरवहणियरे ८ MB परचक्कमीमराय-
 रणइ, P परयक्के भीम° ९ MB असि अपेउ १० MBP माणउ कया वि ११ MBP मदिरपगणवाविहि
 4 १ MBP परज्जिउ २ MBP दिसहिं ३ MB खणि घोरत्तु ४ MB पवत्तिउ ५ MBP
 सकुहुँवु व ६ MBP तहु वल्लह महएवि वसुधरि

7 a सरसधाणु स्वरसधि, पक्षे, शरसधानम्, वायरणइ व्याकरणे 8 h हयवरु अश्ववर, हतो वरो यस्य
 नारीगणस्य, b छिइ° छिद्र दोषश्च 9 a कुणडि कुत्तितनटे, विवणीवहि अट्टमार्गे 10 a अजणु अज्जनं
 पापश्च, b णायमंगु सर्पभक्षो न्यायमङ्गश्च 11 a सकरुपहु प्रभुरेव सुखकारी शकरो ननु वर्णसकर,
 b दोहुउ गोदोहक, द्विधव खामिद्वययुक्त 12 b मायगउ माया गत, 13 कलह सकण्टकम्,
 4 6 a पेम्मे त्यादि—शेहधान्यस्य वर्षयुक्ता भूमि

कुडिबहिं कसहिं उभेवगत
किसममम पाएमुपबुध
मसैं जाहि मर गंभीरे
कामदपयहिं बकोममहत्पहिं

पसहिं कसहिं दीहरयेतड ।
विचरैं कडियसेन बच्छबछैं । 10
छाडर सीसैं छापापरैं ।
अबरहिं मिं छैकपयहिं पसत्पहिं ।

पता—सकपयपुंनु ब पुंजियड पकहिं बिहिना सकपविहायड ॥

बछैंकियकरकरयपरु बज्जैयु बज्जोवमकायड ॥ ४ ॥

5

सो कुमाद ठहिं बहुर अरपहुं
प्यइ तस्यपइ रिपविरहाकस
हा हे समसोप विच्छयड
हा कप्यहुम किं किर कुसहि
हा तुंरदै गारवउं पडुबइ
हा छैकिपंगयेपु कहिं वेच्छमि
को धारइ मवियपु हंजोड
पय्य बवंति विमुकुच्छमहिप
सायसयपिणि ब मंदरवल्ली
गाय सउमनससुपसाजिनहरि
पुष्पबिरेहिं ठहिं जि सकमईसर

वयरीसावकपि ता तइपहुं ।
हा ब तुहासि मगु सर मावस ।
विपु बाहव निरम्यसु कावड ।
पइमरये वि कहु वो हुसहि ।
उमये विपु महु किं रि ब दइर । 5
हा हे सांविं कैंव कहिं मच्छमि ।
इइ देबहु वि कम्पु बसवंतड ।
इइपय्यै सुरेण संजोहिब ।
मंदरसेछहु मंदरवल्ली ।
सुरप सपपिबिनु पापिनि सिरि । 10
वयैरि पुंरटिपिनि पंरहर ।

पता—अहिं परमिहरि वंरंतएण मरसिहयेवरि जियेहिं चिन्तियड ॥

वयज्जककववकपंगएण तुमिनि मेहु मऊरें भुविड ॥ ५ ॥

५ MB वज्जुवपति P वज्जवपति ८ MBP दीहरयेतहिं ९ MBP तुलें १ MBP वयसयेहिं
5 १ P तुंरदै. २ MBP लविपुंनु हैर ३ MBT वणि and gloss in T ठहिं ४ MBP
मफेड ५ P इरि. ६ MB लरि. ७ M ववर. MB वरि. ८ P विरति

11 ८ नलें लरि 10 वकवसिहा वर वज्जुमिअण

5 1 ६ वयरीसावकपि हेवमईकावले 8 ६ वणि लविपु 9 ८ मंदरवल्ली मंदरवल्ली
६ मंदरवल्ली लोचरवल्ली 10 ८ "हउता" पूर्विका ३ वयरीविपु रगपिनिअण निअर
12 विसेविड म्लि

6

णिचेसेण रम्मा
मुणिदेहि सोम्मा
धणेणं समिद्धा
सुपणं पवुद्धा
घणारामवती
सुपायारदुग्गा
अणेत्यादुवारा
जणेणं महत्था
भरणं विमुक्का
इमीए पुरीए
महेणं महंतो
पह चक्रवट्टी
कयंतो व्व दढी

णहालग्गहम्मा ।
जिणुहिदुधम्मा ।
जसेणं पसिद्धा ।
वपणं विसुद्धा ।
विसाला वसंती^५ ।
कयाणयमग्गा ।
अणेत्यप्यारा ।
कपणं कयत्था ।
सया जा णिरिका ।
अंमेओ सिरिए ।
गुणी वज्जदतो
सुमग्गाणुवट्टी ।
सई तस्स चंडी ।

5

10

घत्ता—लच्छि व सोहइ लच्छिमइ तासु विजलि वच्छयलि विलग्गी ॥

झत्ति झसकें कुद्धपण मुक्की भल्लि व हियवइ लग्गी ॥ ६ ॥

15

7

अरिहरिणोहवियारणंवाहहु
सिरि व सिरिप्पहसुरहरवासिणि
सिरिमइ णामें तणुरह हई
पाय सक्कुम किं तहि वण्णमि

तहि सुंदरिहि तासु णरणाहहु ।
चचिवि सयंपहतियसविलासिणि ।
णाइ कुमारहं कामविसुइ ।
वम्महमुहावेसु व मण्णमि ।

6 १ P जिणोदिट्ठं २ B omits this foot ३ MP विवुद्धा ४ MBP add after this
गुणाण पवित्ती ५ MBP add after this महतेयवती ६ MBP सपायारं ७ MBP अणेत्यदुवारा
८ B रएण ९ P इमेया सिरिए
7 १ B °वावहु

6 1 a णिचेसेण रचनया 9 b णि रि का चोररहिता 11 a महेणप्र तापेन 12 b चंडी भार्या
7 2 a सिरिप्पहसुरहरं श्रीप्रभवमानम् 4 b °मुदावेसु °मुदावतार

तत्र योमरायकहोचकई
पेम्पिदि तद्विजानुसबावई
ऊरुवाहिपाकिमंतरे भुव
कासु व विष्णासिध कपेकिरनु
मवरतपहुववहूमावलि
वाहिकुव रवहरससासु
यवैयहुतै विवयहुतयु
बम्भहूमि कासु देरी कव

रतव कि रावति व ववपई । ६
मुपि वि करति मयवसंघावई ।
कासु व ववह वप मयवैपुव ।
सोमीगीवपचवि व गुर्वेचयु ।
रामावकि तववई विवपावकि ।
तिवकिमंगु वयमंमपवाचयु । १०
भवसै वासह विसेव विवचयु ।
रासु वि कामकुंड पिरे सुववव ।

वता—योमैसिकेचसमावहो केरु को व होह कंठिठ ।

सुवयु सुवदि विवयु सुवयुवपविचिपव परिठिठ । ७ ।

८

वैववप्यहि मयवहि कववयव
कासु व विरंठ किर सुवचयु
मंगोवंगवयवयुवंतई
वाहि कव सुवगुव व विववव
वा वामप्यह मंगविमयेरी
विमि सवहरकपहिमवव केरी
मवहरवयु वववव विनु वापव
वीवववसमवैविमहहि
वा ठवि कवययु ववववव

रतव वववयु वयु वावव ।
मववववववै ववचयु ।
कवैपासु पासु व ववववई ।
वा वववई वववव वि व ववव ।
विठिठि सवममूमिदि सुरी । ६
वावयु ववविकासु वईरी ।
कहि मि वे मावव ववविकावव ।
वावायोवविचयुवववई ।
विचकिव वववई विवववव ।

१ MK विमिचयु १ MBPK योमैवववै व ४ MK सुवचयु ५ M reads this line as—
मयवै वावह विवेव विवचयु, वववववै विवववयु ६ P विव MB ववववव;
P ववववव

८. १ MP विवववई वववई, II विवववई वववई १ M विव. १ MBK वववव.
४ MBP सुवयु वि व वववव ५ B वववव ६ P विवववई B सुववई

७ ६ वववववववववववववव १ ६ विवव वववव ८ ६ वववववववववववववव १० ६ रव
वववव वववव ११ ६ विववविचयु विववविचयु वववव

८. ८ ६ वववव ववव

घत्ता—सुर जोयंतिहि ताहि तर्हि जम्मावरणइ खणि ओसरियइं ॥ 10
सर्गभवंतरु संभरिवि थक्कइं मणि ललियंगहु चरियइं ॥ ८ ॥

9

हा ललियंग देव पमणंती	पंडिय स महियलि तणु विहुणंती ।
मुच्छिय सिंचिय सलिलणिवाणं	आसासिय चलचामरवाणं ।
उंदिय णीससंति अइरीणी	दइयविओर्गेवेयविहाणी ।
वम्महु अट्टं वि अंगइं तावइ	घित्त जलइ जलइ जणियावइ ।
मल्याणिलु पलयाणिलु भावइ	भूसणु सणु करि वद्धउ णावइ । 5
जहिं संजायउ चित्तु जि सयदलु	तर्हि किं किज्जइ सीयलु सयदलु ।
ण्हाणु सोयण्हाणु व णउ रुच्चइ	वसणु वसणसंणिहु सा सुच्चइ ।
असुहारु व आहारु ण गेण्हइ	णंदणवणु पिउवणसमु मण्हइ ।
फुल्लु णयणफुल्लु व असुहावउ	तंबोलु वि बोलु व कयतावउ ।
पुरु जमपुरु व घरु वि अरइयरउ	पैरहुयलविउ महुरु णं महुरउ । 10
गेयसरु वि णं रिउमुक्कउ सरु	सवलहणउं सवलहणु व दिहिहरु ।
चंदणु इंधणु विरहहुयासहु	ता संहिहिं विण्णविउ महीसहु ।

घत्ता—आवेण्णिणु लच्छीमइइ सह सपियाइ पईहरवाहें ॥
पियसुमरणदुहदुम्मणिय दुहिय णिहालिय णरवरणाहें ॥ ९ ॥

८ M पुव्वभवतरु.

9 १ MBP पडिय महीयलि २ MBP °णिहाए ३ MBP उट्टी. ४ MBPK °विओय°. ५ MBP अट्टइ अगइ ६ BP पलयाणिलु ७ MBP परहुय°. ८ MBP विरहु ९ M सहीइ.

9 2 a णिवाए °णिपातेन 3 b दइयेत्यादि- दयितेन त्रियेण सह वियोगस्सत्थ वेग आवेण्णः वेदोऽनुभवो वा, तेन विदीर्णा. 5 सणु शणवन्धनम् 6 a सयदलु शतखण्डम्, b सयदलु कमलम् 7 b वसणु वन्नम्, वसण° व्यसनं दुःखम्. 8 a असुहारु प्राणहारक 10 a अरइयरउ अरतिकरम् 11 b सवलहणउं समालम्भन चन्दनादि, सवलहणु खवलघातक मृतकस्नान वा 13 सपियाइ स्व त्रियया, पई-हरवाहें प्रदीर्घाव्योण.

10

सुपरीत मुखर पुष्पितत वर
इव परिकामपविति विपयिवि
यत परनीतु निरेकेषु कावहि
भौरव शोहि मि कदिव अवेपिषु
असहपसु अण्णवत केवसु
ता पयं सीताससु महिभि
मयिद अयहि अण्णतमडाप
अयहि सिद्धतवेतिविहुरण

किं जाणहुं सुव किंयत किं वर ।
पंडितवाहहि पुत्ति समप्यिभि ।
पहरणवधननार्थेन तावहि ।
देव वर विमुचहि मनु देपिषु ।
कावहाकाहि कहु विरमोसु । 5
सिद्धमहेन महीयतु पेक्षिभि ।
अव संसारमहणवताप ।
सविषयसुखममोखपूरण ।

मत्ता—तिमित इत्तु करंतु विदि अण्णममंतहु विपक्षिणमण्णहो ।

तौतुम्ममिपद दिवसवत पावविसेसु व सोहर मण्णहो ॥ १ ॥ 10

11

इतथापयिपिमिचिवियाववि
कुक्षिददसु अण्णममंतमविरससु
समवसरसु वत सेण्वं सहियत
विदु असेवहु मणि असेवत
विप्यवावि सुवि निष्ठावेसत
अण्णममंत निष्ठावेसवेत
हुंहुंहरिद हुंहुंहरिदविष्ठावेसु
अण्णममसिद अण्णममसिद

अण्णममसिदविष्ठावेसु अण्णममसिद ।
पाववेवि ससिदियसुअण्णममसु ।
अण्णमम वि सो पहर सो सविवत ।
कुक्षिममिद अण्णममसुअण्णममसु ।
अमंत मपारिणीदि संदिद वर । 5
मामंतवदममंतवदवद ।
अवेससाद संसारसाराणु ।
अतिपाकड संसुवतिपाकड ।

10 १ MBP पुष्पित २ MBP निरेकेषु ३ MBP "कावहि" ४ MBP ममिभि ५ MBP
विपयिवि ६ MBP ता अण्णममसु

11 १ P निष्ठावेस, २ P पुष्पित ३ MBP पुष्पित, T पुष्पित

11 1 १ "ताव" अण्णम 2 २ कुक्षिददसु अण्णममसु 3 ३ सहियत अण्णममसु 4 ४ सोसु
अण्णममसु 5 ५ अण्णममसु विष्ठावेसु 6 ६ "अण्णममसु अण्णममसु" 7 ७ पुष्पित पुष्पित
अण्णम 8 ८ अण्णममसु अण्णममसु 9 ९ अण्णममसु अण्णममसु अण्णममसु 10 10 "अण्णममसु
अण्णममसु"

कमलासणु केसउ जगि सो हर
देउ अणिदिउ वदिउ भावें
अवहिणाणु रापं उपाइउ

तित्यणाहु णामेण जसोहर ।
चहुंतेण विसुद्धे भावें ।
रुवि दवुं णीसेसु वि वेइउ ।

10

घत्ता—विद्धउ कणयरसेण जिह लोहु वि हेमत्तणु पडिवज्जइ ॥

तिह जिणभावें भावियहो भवियहु णाणभाउ सपज्जइ ॥ ११ ॥

12

पहु गुरु वदिवि आयउ गेहहु
आलिगिवि अके चइसारिय
चवइ णिवइ चिरु पइ जाणतउ
वीयइ कप्पि विमाणि णिवांसिणि
महुरालांविणि पाणपियारी
मा भिजहि सो तुज्जु मिलेसइ
बौलहि मइ धीलइ पच्छाइय
दुत्थिउ जडयणु कूरसरावहु
उल्लावियविभोयसंतावहु
विबुहहु बुहु गोवालु वि गोवहु
णिवेण कहिवि दिट्ठतकहाणउ

तिस्ति ण पुण्णी पुत्ति सणेहहु ।
सा तप्पंति तेण विणिवारिय ।
अचुइ सुरवरिंदु हउ होंतउ ।
तुहु ललियगहु तणिय विलासिणि ।
ण्वहिं हई धूच महारी ।
हार व उररुहजुयलि घुलेसइ ।
पुणु वि धाइ पहुणा सकेइय ।
गोगाइहि सरु खरहु सरावहु ।
णवजोव्वणु जणु कामालावहु ।
महिलहि महिल जाइ सग्भावहु ।
एणु दिव्विजयहु दिण्णु पयाणउ ।

5

10

घत्ता—आउंविउतणु थरहरिउ फणिवइ भीयउ किं पि ण जपइ ॥

एयगयरहणरपयदलिय जतें रापं मेइणि कपइ ॥ १० ॥

४ MBP उपायउ ५ MB दिवु,

12 १ MBP विलासिणि २ MBP ० लवाणि, ३ MB बाल एम बौलइ ४ MP जडयण
५ B उल्लाविय०,

18 म पि म हु भव्यस्य

12, 8 b मरापहु सानन्दल

13

तरुणमाद्यतासनाधीयणि
फटिहसिजायधम्मि आसीनी
सुरह महादहाय संवाधिवि
यद्यदि दिनि करणियकबोली
जबकयैदीकंदसोमासी
पुसि पुसि मोजण्ड छंडहि
पुसि पुसि किं अण्डा इंडहि
मायहि गुम्ह कारं किर रण्डहि

गद धरिदि यंयकंकेहीयणि ।
परमवपियसंभरयै ह्रीणी ।
कोमलकरकमळें तनु आधिवि ।
पैडपंडविमुधिविबिहुरासी ।
कंजुईर बीडपिण्ड वाडी ।
पुसि पुसि तनु तनुजय मंडहि ।
पण्णवीडि इंतप्पहि बंडहि ।
मज्झु वि किं विपमज्झु व समण्डहि ।

अथा—सं आपण्णिवि रापसुप जीससंति विपज्झु पवासह ॥

अयमि व वेडिहि मज्झु गुहं जण्यि माह गुह काई व सीसर ॥ १३ ॥ 10

14

धार्तरसंदि मेकपुण्ड्रिह
भूपगावं विह संयपसिद्ध
गोण्डु ओ लसि वसिष्ठु व
पविडककु वि य ओ लसंकुलु
ओ करि य्ज नरवरओहवक
कप्पुल्लु व गिहिययमार
जागपु यामे लहि वधिवध

पुष्पविदेहि देसि गंभिद्धर ।
पाडकिगाई अरिय अवरिद्ध ।
करिचलजावड ओ लुंकरिष्ठु व ।
ओ इल्लव वि मुवावि व मयिष्ठु व ।
बहुकंजु यं वरकामिबिद्ध ।
विपवरपिण्ड यं सेवार ।
सुत्तबहुविपादि वल्लु व ।

13 १ MP ठहि अवेओमि, B ठहि निवेओमि २ MBP "वक्कोतुईर" ३ MBP वज्जो.
४ MBP वडुवि

14. १ MB वाम्, E वारम् २ T भूवाम्. ३ MB लकरि

15 1 a तरुण" बीबी 5 b कजुईर वसिष्ठु वाया. ॥ a मायहि वाया

16 2 a वज्जुवडं भूमाया वरिम् 5 a वीरल्लु वीरल्लव" वडे वी वाये वड रिक्क-
वज्जो वाया, 6 b करिचल" करिच वडे हनिचल्ल; लुकरिष्ठु हनिचल्ल 4 a "वज्जु वाम्पमज्झमज्झु
5 b वल्लु वडु वल्लुवज्जु वडे वल्लुवज्जुवज्जु 6 b विपवड" विपवडि, वडे विपवडि, वल्लुवड
वड 7 b वल्लुवडु विपादि वल्लुवडु वल्लुवडु.

णंदुं णदिमित्तु वि सुउ जायउ

पुणु मायइ मणमोहणु लद्धउ

णंदिसेणु तहि गन्नि समायउ ।

धैरसेणु विजयसेणु थणद्धउ ।

घत्ता—सिरिवह सिरिहर वणितणय अवर वि हउ तिज्जी लहुयारी ॥

10

णामें णिण्णामिणि विसम दालिहिणि जणविप्पियगारी ॥ १४ ॥

15

अम्हारउ घरु मोक्खु विसेसइ

णिद्धणु ण घणणासि णहगणु

णीरसु कवु व कुकइहि केरउ

अट्टभाउ हंडइं दो पियरइ

कडियलवेडियवकलवासइ

अम्हइं दहजणाइं तहिं सयणइं

पंडुरपविरलदीहरदंतइं

चारणचरियहु तरुसंछणहु

तहिं अंवरतिलयमि महीहरि

सरलैहरियपत्तहु तविरयहु

अणु वि दावभाउ गरुयारउ

णिक्कलसउ णीरजणु दीसइ ।

णिक्कणु तोलीर व सारियरणु ।

तं^२ जिह तिह पुणु णिरलंकारउ ।

कयललचणयमुट्ठिआहारइं ।

हडहडफुट्ठफरुससिरकेसइ ।

5

कलहतइ भासियदुव्वयणइं ।

जावच्छहुं परकम्मु करतइं ।

तावेक्कहिं दिणि हउ गयै रणणहु ।

विहरंतियइ गहीरदरीहरि ।

मइं उच्चोलि भरियै माहुरयहु ।

10

सीसि णिहिउ णं दुँक्खइं भारउ ।

घत्ता—जा पल्लट्टमि णियघरहो ताम लोउ मइं एंतु पलोइउ ॥

रयणालंकारहिं विप्फुरिउ जिणु चंदहुं णं सुरयणु आइउ ॥ १५ ॥

16

ता कट्टभाउ

महियलि धिचेवि

णं दुक्खभाउ ।

णरु मइं णवेवि ।

४ M णदि णदिमित्तु वि सुउ जायउ, B णदिमित्तु णदि वि सुउ जायउ, P णदि णदिमित्तु वि सजायउ
५ MBPK वरसेणु ६ P जणविप्पिय° but adds °मण° in the margin between जण and विप्पिय

15 १ MBPK तोणीर २ M ज जिह ३ MK गउ ४ MBP तहिं पुणु अंवरतिलयमहीहरि
५ MB सरल ६ M भरय ७ MBPK दुक्किय° ८ MBP फुरिउ ९ M सुरयणु आइउ, P सुरयणु चड्डिउ

15. 1 ७ णिक्कलसउ घटरहितम्, अन्यत्र, निष्कलाना चरितमनुष्ठान प्रवृत्तिर्वा,

पुष्पसर्ग ह्य	कहि बहिउ सौठ ।	
वा वेण पुसु	सुतिगुतिगुसु ।	
सिद्धत्यन्नामु	आं शिचकामु ।	5
ओ मुकसासु	मैयभरियसासु ।	
ओ मुहाणिहानु	शुणमणि पिहानु ।	
पुपमाहवातु	तद्धर्मवचामु ।	
ओ पोठेसेसु	बम्महिसेसु ।	
मयसरिन्नासि	ओ सिसिरयासि ।	10
कहि सपयसां	ओ सुमयसां ।	
तिन्नुन्नेहि	बरासाहेहि ।	
रविपर विसहर	ओएव सहर ।	
ओ सुमिससंहु	दपपरमसंहु ।	
सहु येपि वासु	विहिवासवासु ।	15
एवमेति पाप	पुष्पेति पाव ।	
पण्डीबनमु	सम्पापबनु ।	
विच्छेदमवां	आणह मवां ।	
पिसि नाववादि	शिष्यवम्मवादि ।	
इह गिरिवरम्म	सा कंवरम्म ।	20
मिवसर कुडीमि	दोपवकीपि ।	

वचन—सा मां द्यौरधनमपि इति संज्ञा पक्षेऽपि तु वचिपद ॥

पयसिणि साहु महासिहहि काएवमुपकड मसिह वचिपद ॥ १६ ॥

16 १ P पुम्पिड १ G omits this foot; K however adds it the margin.
१ M वणि वरिव १ B "मूल P पयसेसु १ MB add after this वरिसेसि मेदि ३३ वरिव
मेदि ७ M वचन. MBP महासिहहि

16 5 a विद्धत्यन्नामु विद्याने मोक्षि कायोऽभिमन्यो वत्स १ ६ "मिहानु वचामु. 10 a वच-
व रिरवाणि मते मरिउ मेदि वचिपद वचो 11 ६ सुमयसां वचमवचमिनु ३३ उरपा. 12 a "मेदि
"मसि. 13 ६ सहर कीलो 14 ६ दपपरमसंहु दपपरमसंहु ३३ वरिह वहु वचमरे वरि विवि
वचमु

17

तवपहावचिंभावियचांसवु
 कचणें दइवें हउ दालिहिणि
 कहहि देव तुहु सच्चउ जाणहि
 ता पभैणइ समणगणपहाणउ
 णिसुणि पुत्ति अम्भमि जम्मतर
 गौमि पलासपुट्ठि तहिं गहवर
 गेहिणि ताहि धूय तुहु हई
 वीयरायसिद्धतु पढतहु
 एकहिं दिणि घणि खतिसणाहउ
 अण्णाणइ पइ उप्परि घत्तिउ
 किमिकुलपूयरुहिरदुग्गाधउ
 सुणहकलेवरु दियहि दुइजइ
 घत्ता—णउ तूसहिं रुसंति ण वि सुइ कदप्पदपखयगारा ॥

जो मंडइ जो खंडइ वि विहिं मि समाणा समणभडारा ॥ १७ ॥

18

पेच्छिवि मुणि परिहरियसकायउ
 भसणसरीर धित्तु अण्णेत्तहि
 पणउ करेप्पिणु जोइ खमाविउ
 ईसिं समेण मरेवि असुहाउलि
 धम्मं मुच्चहि दुक्कियदुक्खहु
 फणित्तरणइ जगि को अहिणाणइ

तुह अणुकंपमाउ सजायउ ।
 पइ णयणेहिं ण दीसइ जेत्तहि ।
 तेण जि खममाउ जि सभाविउ ।
 तुहु हईसि एत्थु दुग्गैयकुलि ।
 धम्मु णिसुणि सुइ कारणु सोक्खहु ।
 परमत्थेण धम्मु को जाणइ ।

17 १ MBP °वासउ २ MBP पुच्छिउ तें पुणु सो ३ MBP पमणइ मुणि समणपहाणउ,
 ४ MP पइ ज ५ MBP गाम ६ MB ललिय° ७ MBP तेम जि पुणु पइ दिट्ठु ८ MBP तूसति

18 १ MP परिहरियसकायउ, B परिहरिसकायउ २ B °भाव ३ MBP इति उवसगें मरिवि
 ४ M असुहाहलि ५ MB दुग्गम°

17 7 b हलि य कर्पकत्री

18 1 a परि हरिय सकायउ परित्यक्तस्वशरीर

होयधम्म होई अकल्लं
धम्म होय पुणु पुणु भववर्णे
धम्म होय धर विपमुहर्त्तणि
धम्म होय सिद्धपापसमापणि
धम्म होय गोमुत्त विपंतहु
धम्म होय पक्खेदु करंतहु

वीरपुरिसर्मदणवकयावे ।
पाहाणुपरि परपरठवने ।
धम्म होय सुखीतमुक्कसणि ।
धम्म होय नासरयाळिगणि । 10
धम्म होय महु महु रेतंतहु ।
छेन्नर कुकुड किडि मारंतहु ।

धत्ता—एहु कुडिगु कुधम्म सुप पक्क ववर कुमार कारअर ।

त्रिभवादेव पपासिपठ धम्म अहिसामकपठु किअर । १८ ।

19

मंदककनारवधम्मपणई
कि किंगेय किंगिलेयोह
अंतरेणु अत्त सुत्तु य हीसर
इअठ मयठ मुंयिबिहिपारठ
ववसमेपुप्पासुज्जवभापई
करपत्तठ परवणिणि म होवहि
सुपहि रंगु वहुओहुप्पासु
मवठ पक्कपासहु परिपाळहि
अहिंसिबिबि अंयिनि विपसत्तिर
सुत्तगासु वि ववमंतहु वेअसु

धरिबि काई अणु माय हरिवर ।
अर वठ सुवर निभु वि ओमहु ।
कापकिडेसे तहु कि होवई ।
तासु तईदिअ मवसंचारर ।
अडिअ म अंपदि जीई म मापहि । 8
परपुरिसु वि सत्तठ मा ओवहि ।
एवहीमीयसु पुक्कई मावहु ।
त्रिभपडिबिबर विअ मिहाअहि ।
ताई अवेअसु गदवर मसि ।
विअमयण विपमसु विअमेअसु । 10

धत्ता—एप्पामहुत्तठ सठ वि विपपेअमिहि वाकि अर उअवहि ।

सुवहरि मनिवरि अे विपठ तो तुंहु वे विरपुरिअ पवासहि । १९ ।

१ M होय MBP उहु अकल्लं MBP उणु पुणु कल्लि १ P सिअई.

19 १ B हि विरिअ अहिंसिपारठ २ MBP धीअ BPT मुनिविहवठ P वरिदिअ
५ P ववसु १ MBP अंय MBP व वहु

8 अ ववधे नापमेअ 0 एहु वृते ३ अरहीवत्तु नीवरीअ

19 1 अ देअक कनारव* देअका कल्लामिअ अरिवरिअमंय एअववधु रनेत्तुअणि 11 ववठ-
वहुत्तठ सठ वि विपसत्तिहि अउअममीअमववाअरविअअरिअमोअणी 19 सुवहरि उअवरी.

20

मुनिहिं सरीरि परमु समु णिवसइ
चूडामणि किं चरणि णिहिज्जइ
दुच्चितियउ दुवोल्लिउ दुक्किउ
ता सा खविय तविय गयगावें
महु पौवोहे कहिं पावणियत्तणु
मायामोहु मुइवि मणुं रोहिंवि
गय रिसिवइ वदिवि णियँवासहु
काइं वि दविणु ण विज्जइ जइयहुं
खलु वि सुपत्तहु अणुदिणु दिण्णउं
पुज्जिउ जिणवरु दोणयहुल्लें

ते णिदतह दुम्मइ विलसइ ।
चंदणिज्जु मणु किह णिदिज्जइ ।
आसि जम्मि एवहिं करि सक्किउ ।
अतोअतो पच्छुत्तावें ।
जाइ कयउ गुरुहुं मि पिसुणत्तणु । 5
एमप्पाणउ णिदिवि गरहिवि ।
हउ लग्गी सहि सुयउववासहु ।
मइ दालिदिणीइ तहिं तइयहु ।
छड्डिउ सब्बजीवपेसुण्णउं ।
वोहिउ दीवउ दुल्लहतेल्लें । 10

घत्ता—पुज्जउ इहु णराहिवइ अवरु वि णिज्जणु सिरिमइ भासइ ॥

एकु जि फलु मइं अक्खियउ जइ मणि णिम्मलमत्ति ण णासइ ॥ २० ॥

21

एम तेत्थु हउं चिरु जीवेप्पिणु -
पुणु आहारु सरीरु मुपप्पिणु
मुइय गपि ईसाणविमाणइ
ललियगहु महपवि सयपह
मुइ पिययमि छम्मास जिपप्पिणु

गुरुउवंपसलेसु पाँलेप्पिणु ।
परैमक्खरइ पच सुमरेप्पिणु ।
सिरिपहणामि रमियगिब्बाणइ ।
हइं जुइणिज्जियचंदप्पह ।
इह हइं सग्गाउ चपप्पिणु । 5

20 १ MBP किह मणु २ BP पच्छत्तावें ३ BP पावहि ४ MBPK मणु ण रहिवि, ५ MBP सणिवासहु ६ P दालिदिणि एत्तहिं ७ MBP भोगणु.

21 १ P उवएसु, २ MB पावेप्पिणु ३ B omits this foot.

20 5 a मणु रोहि वि मनो निरुध्य 10 a दोणय हुल्लें दमणत्तेन १. --- १. ---
धाचितेन तैलेन.

पित्रं सुपरेतिहि बंधुं वि तावह
 भद्रं वि बंगारं ह्यारं यक्षैर्ग
 यम बंधयिषु पशुं धामाविह
 विपविरक्तं तदि वि आदिहिपय
 मन्वन्वह कीर्त्तार्त्ततावह
 मन्वहं तदि रौरहसंवरिपहं
 यत्तु बसंती यत्तु रमेती
 यम मैजियिषु गुम्तु ब रविपय
 बंधुं देहि ब क्षमात मावह ।
 त्वां किं ब मुचसि रंगिबेकिमं ।
 पाह किहेपिषु वारहि बाविह ।
 फुरह ब वेईचकि सेमिहिपय ।
 किहिबर् नैरिखरिगिरिपयर्त्तवर् । 10
 पुत्तहं भरेवर् गृहर् वरिपहं ।
 को यत्तु हर् यही हौती ।
 सुवर्त्तह विपविरक्तं मन्विपय ।

वृत्ता—आजहि पंडित मीवपुत्र केवहि बम्भहवाहि महापि ॥

मरह पुण्यैर्गुम्तुविप बन्धु व तियमैह मरगदवापी ॥ २१ ॥

16

हय महापुराणे तिसहिमहापुरिषगुणात्कंधारं महाकरपुण्यैर्गविरचय
 महामन्वमरगुमन्विप महाकष्ये निष्कामिवाचम्यमर्त्तमो जम
 वावीसमो परिष्येमो समसो ॥ २२ ॥
 ॥ संधि ॥ २२ ॥

४ MBP निव मुवमिदि ५ B इविपिदि MB तावहि MBP "यवर्" MBP रौरहसंवरिपहं
 १ P वरर add २१००० मनेव १ MBP बंधयिषु ११ MBP तावमिह १२ MBP पुण्यैर्ग
 ११ MBP निवमर

XXIII

तं णिसुणिवि पडु करयलि करिवि गय पंडिय जिणगेहहो ॥
अइकुडिल सुतेय मणोहरिय चंदलेह णं मेहहो ॥ धुवकं ॥

I

दुवई—एत्तहिं सा णरिंदसुय विसहइ पिययमविरहवेयणं ।
एत्तहिं पडियाइ पविलोइउ परमप्पयणिहेलणं ॥ १ ॥

पवणुदुयधयमालाचवल	हिमकुंदसमाणसुहाधवलं ।	5
गायणगणगाइयजिणधवल	सिद्धतपढणकलयलमुहलं ।	
गायणगणलगमहासिहर	अइरुंदचंदकररासिहरं ।	
जंक्खिजक्खपडिमाणिलय	विहुमतलैउमयतलसिलयं ।	
मरगायमयखंमंसमुद्धरियं	मणिमत्तवारणालंकरिय ।	
आयासफलिहमयभित्तयलं	हरिणीलणियद्धघरित्तियल ।	10
उव्वाइयधूवगारवर	गुमुगुमुगुमंतमत्तालिसर ।	
घल्लियपप्फुल्लियफुल्लचय	ओलवियमोत्तियदामसयं ।	
पइसेप्पिणु तं मुणिणाहघरं	णविऊण जिण जियजम्मजरं ।	
पडु विउसिइ पसरिवि दावियउ	णायरणरेहिं परिभाविउ ।	

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

अङ्गुलिदलकलापमसमश्रुति नखनिकुरुम्यकर्णिक
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुव्रतचक्रचुम्बिनम् ।
विलसदणुप्रतापनिर्मलजलजम्भविलासि कोमल
धैर्यतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जितपादपङ्कजम् ॥

GK do not give it

1 १ P सतेय. २ MBPK पवणुदुय ° ३ M गायणगइ°, ४ M आरुंद° ५ M जंक्खिजक्ख°
६ MBP तलउमय° ७ M °खघ° ८ P मयमत्त° ९ MBP °भित्तियल १० MBP उव्वाइयधूमगार°

1 5 b °सुहा° सुधाचूर्णम् 8 b विहुमेत्यादि-विद्रुमघटिता तले कुम्भिका तलशिला यत्र 14 a
विउसिइ विद्रुप्या धाम्या

यथा—इय वसवितु वस समुच्छमित्य आ पदमइयव जायह ॥

16

धरणीसरत्तमेयहि विरिमहर्हि सो यजकुयसं मायह ॥ १ ॥

2

दुर्ग—विधिहार्हरपाकेरकथिफरयोहामिपप्रविसुरसय ।

ता मायेगुगुगुपासक अक्षिप करवरेसय ॥ १ ॥

सेपत्ते विधिवसियमरय विधियविरयं कारियवरय ।

यथा यथा मे विधिरयं बुद्धियहरय सुयवियवरय ।

विद्वे विद्विधो तेहि पडो हंसर्धनडो मयि अविधयो ।

5

सं पेम्बिधि अविधिसिपमिवा मयु को अ विधो येमविधयो ।

केव वि मयिया—पुसविधा लयेकामविधा वजुअविधा ।

यथा वाता सामविधा यामे अविधा अविधोतविधा ।

विरमवि हौती मयु विधा पककपविधा विद्विकत्यविधा ।

केव वि मयिये—मैरं सुविधा सुवरणविधा मयुअविधा ।

10

हौती केरं मयु तविधा वीरवविधा पीयत्यविधा ।

कव वि मयिये—विष्मसिदि ११ मेरुपिदि इह सा तववि ।

इह मई देवे हौतरय मायतरय मोदिय हरिधि ।

हु वि मयह—मासाह विजु शुभ यज यजु किह विजु गवमि ।

हु वि मयह—हा कि करमि विष्मअ मरमि अह वज यमि ।

15

११ P तप्यहु, E तप्ये १२ MBP वजवज

2. १ M "हरमविधिरपिपुसवोहामि"; B "हरमविधिरपिपुसवोहामि"; P "हरमविधिरपिपुसवोहामि"; १ P दृष्टात्वा. ३ B विद्विधो तेहि तेहि, P विद्विधो तेहि तेहि. ४ MBP अविधयो ५ MBP विद्विधो ६ P पेम्बिधु MBP मयियं MBP वजवज. ७ MPB अह ८ M अह बुद्धि-सुविधा P मयि सुविधा. ११ MBP विधो १२ MBP अह. १३ MBP वजवजविधि. १४ MBP add after this मयु वि मयि १५ MBP को वि मय मय

15 वजवजव विष्मअमि

2 5 विमवरय सुववरय सुवमेव 4 अमविमवरय सुव मय्यां वरम् 7 अमविमविधा अमविमविधा. 9 विधा अमवि विविधाविधा विविधा अमवि विधा विविधविमवि

को वि सँदीहउ णीससइ तावँ सुसइ उरयलु हणइ ।
 अप्पउ घल्लइ धराणियले आणेहि हले तँ^{१०} मुहु भणइ ।
 को वि मुच्छावसु णिवडियउ रइविणडियउ णिज्जीर्वं थिउ ।
 उच्चापप्पिणु परियणिण दूमियमणिण णियघरहु णिउ ।
 धाँइ जिणेप्पिणु उँत्तरहिं पञ्चुत्तरहिं कु वि चवइ घर ।
 हउं घरइँसु भँवतरिउ इह अवयरिउ तहि धँरिवि कर ।
 घत्ता—विहसेवि पवोल्लिउ पडियइ जो गुञ्जइं महु अक्खइ ॥
 सो सुँअवेल्लीरइसुहलहो रसु परमत्थे चक्खइ ॥ २ ॥

3

दुवई—अह वररमणिरूवरंजियमणु जो णर अलिउं भासए ।
 सो सरसरविहिणु सा ण लहइ पँइसइ णरँयवासंए ॥ १ ॥

ता तँत्थतरि	विरहमहाभरि ।	
कुँमरिहि घणथाणि	जायइ जोव्वणिँ	
छक्खंढावणि	जिणिवि महाफणि ।	5
देव वि खयर वि	णित्तेयइ रवि ।	
चोर्यँवि गयवइ	आयउ महिवइ ।	
पुरिहि पइट्टउ	सघरि णिविट्टउ ।	
महुरालावँ	सपणयमावँ ।	
सुय वोल्लाविय	णिरु संताविय ।	10
पियपरिणामँ	णिहयकामँ ।	
पुत्ति म झिज्जहि	लइ पडिज्जहि ।	
ण्हाणु विलेवणु	कक्कणु परिहणु ।	

१६ MB सुदीहउ १७ MBP तम्महु १८ MBP णिज्जीव, १९ MBP घाइउ. २० MBP दुत्तरहि.

२१ P वरयणु २२ M भवतर २३ MBP घरमि २४ M सुह^०

3 १ P अलियउ भासइ २ MBP णिवइइ ३ P णरइ^० ४ MBP एत्थतरि ५ MBP read this line as पसरियरायइ, कुवरिहि (P कुवरहि) जायइ ६ MBP add after this उत्तुंगेत्याणि, घणि घणि जोव्वाणि ७ P चोइयगयवइ ८ M ककणु पहिरणु, B ककणु परिहरणु, P कचणु पहिरणु ।

17 तं तां तरणीम्, मुहु वारवारम् 28 ० सु अं सुता

3. 2 सरसरविहिणु स्मरवाणविभिन्न

शुद्धमनु रंजहि	मोयणु मुंजहि ।	
वज्रत वावहि	वज्रहि वावहि ।	16
अपमोद मापहि	पभिय पहावहि ।	
शुग्ग सुग्गुत्त	तिग्गुपणमात्त ।	
ईदं पाळोवमि	तो पत्त जीवमि ।	
तावहु अंपिउ	तं मुज्जर किउ ।	
पुणु मावेप्पिणु	पवत्त करप्पिणु ।	20
मिपदि भिसज्जी	विरेहविज्जी ।	
माविणेप्पिणु	सिरि बुवेप्पिणु ।	
अज्जाअरं	मयिअ जरिउ ।	
आह विराअरं	अहमि अहाअरं ।	
मयत्तअसिरि	मिच्छुमि किमोपरि ।	26

पटा—विह पणु पुंउरिपिणिपुटिहि इमहु मज्जु पंअममवि ।
इदं मज्जवज्जविहि तवत्त होतत्त कुटि मित्तुअवि ॥ १ ॥

५

दुअरं—वामे अंवाकिणि अंवाकिणि ह्यमित्तवेरेअ सुत्तिमो ।

सुर अज्जे अहं पि अज्जमिह महीर विरं समासिजो ॥ १ ॥

भिरुअमसुइअयइउसिअमवेहि	विह शुत्त एत्तु होहि मि अवेहि ।	
अवसावि विहि वि सिरि पछिउरेवि	पीरवज्जि अवि परउरेवि ।	
पपसेविअअरंअवेअगुअहि	किउ तंहु विअज्जि अज्जाअरुअहि ।	5
होहि वि विमिआरिय पावमह	सह जेय विहि वि अज्ज अज्जगर ।	
विमि वि आवा माहिअसुर	सत्तपुहिआअपमाअवर ।	
विह अवेप्पिणु तंहि विअसमुअ	पुष्पकअर तंवरि तहि वि मुअ ।	

१P अज्जगर. १ MBP अह अंवाअर ११ MB इअ अज्जोअवि P इअ अज्जोअवि. १२ G occats विह
मिअज्जी १३ MB अज्जगर अहि.

4. १ MBP अंवाकिणि २ M "वीअ ३ MBP एअ ४ MBK विहमिअपणुअ

पुष्करवरि पुण्वमेरुसिहरे तद्दु पुण्वविदेहि रसतकरे ।
 धणधणरिद्धि जायाइसउ णामेण मंगलावइ विसउ । 10
 जहिं दहिउ दुध्दु जलु जिह सुलहु जहिं णाति योसु गुणगणु जि बहु ।

घत्ता—जहिं घणछेत्तावलिपालियहि सुउ हँलिणिहि कह भासइ ॥

आरत्तचच्चु चवेलमुहु जंपमाणु मँणु तोसइ ॥ ४ ॥

5

दुवई—मत्तमहंतधवलगलगजियवहिरियविउलगोउले ।

विसरिसविसमभिडियघरसेरिहकयकाहलियकलयले ॥ १ ॥

तहिं किडिदाढाहयथलकमले	कमलदलच्छाइयविमलजले ।	
जलजंतसित्तकेलीतरुणे	तरुणतरकुसुमरयछरुणे ।	
छच्चरणालकियदियपवरे	दियपवरकलरुद्रुंतसरे ।	5
सरसीमारापणसमुहे	सुहयरनुहपंडेरि रायगिहे ।	
गिहसिहरालिगियघणणियरे ।		
णिर्यरायणायणिच्चित्तपण	पयपाडियपरणरवीरसप ।	
सयवत्तर्पसाहियजलपरिहे	परिहरियपावि मंदिरि ^१ सिरिहे ।	
सिरिहरु पुरि रयणसंचि णिवइ	णिवइच्छियवित्ति सुधम्मरइ ।	10
रइ धिव कामहु कंत सइ	सइ ण देविदहु हंसगइ ।	

घत्ता—सा णामें देवि मणोहरिय जिह तिह सँच्चसउच्चें ॥

अँम्हइ विणिण वि सग्गहु ल्हसिय हययगकालदइच्चें ॥ ५ ॥

५ P हल्लिणिहि ६ M जणु

5 १ M °धवलगजियरवयहिरिय° २ MB °तरुणी ३ MB तरुणतर° ४ MB छच्चरणि
 ५ MBP °पहुर् ६ B दियराय° ७ MBP णिच्चत् ८ MBP पयासिय° ९ P मंदरीसिरिहे १० MBP
 कामहु तद्दु कंत ११ MB सिरिमइ सच्चें १२ P अण्ण वि सिरिमइ सग्गहु ल्हसिय अम्हइ हयणियमिच्चें

4 10 a जा याइसउ जातातिसाय 12 सुउ शुरु, हल्लिणिहि कर्पकस्त्रिय 13 चंचेलमुहु
 वक्रमुख

5 a जलजत° जलयन्त्राणि, b °छच्चरणे भ्रमरा पढावरणका पठनपाठनयजनयाजनइलप्रतिमहाः
 6 b दिय° द्विजा पक्षिण

तं पुसमि हसमि हउ तेण सहुं
 मईमूढु ण काइ मि सभरमि
 तहिं अवसरि आयउ जणणिचरु
 पहि थिउ चोयंतुं वसह सभय
 मइ भणिउं म णियवलु णिट्ठवहि
 किं णेहु होइ दासीसुयहे
 तं णिसुणिवि देवें भाणियउ
 घत्ता—तो एउ वियाणहि किं ण तुहु कीस विसूरहि हलहर ॥
 जे सुयं ते पुणरावि दिट्ठ पइ कहि जीवता णरवर ॥ ७ ॥

8

दुघई—हाहाकार पुंत्त किं मेल्लहि धीरिवि जाहि अप्पयं ।
 धीराधार वीरं विउल भुयण पि गणति गोप्पयं ॥ १ ॥

किं भायँर भायर पुक्करहि
 तुह मंदिरि णिवसिवि फियँउ तउ
 गउ एम भणिवि सुव णियघरहो
 सच्चउ णिच्चैयणु जाणियउ
 लहु वासुएउ सक्कारियउ
 वयसजमभारधुरधरहो
 पंचिदियगयउलु पीडियेउ
 पुंणु सव्वभहु उच्चाइयउ

हँउं माय तुहारी संभरहि ।
 संपत्ती तेण सुहासिभवु ।
 मइ मुहुं जोईउ चक्केसरहो ।
 सलु रँइउ हुयासणु आणियउ ।
 तणुरुहु सरजि वइसारियउ ।
 दिम्वक्किउ पासि जुयधरहो ।
 तँउ फियउ सीहणिकीडियउ ।
 मिच्छत्तजडत्तु णिवाइयउ ।

१ MBP जपमि ४ मइमूढ ५ P चोवहु ६ P लोणउ ७ B मय

8 MBP पुत्त म मेल्लहि २ MBP धीर ३ P विउण ४ भायर भायर, ५ MK कयउ ६ P जोयउ ७ P सलु रयउ ८ MBP सकारियउ ९ P पीलियउ. १० B omits this foot ११ B omits this line १२ K मिच्छत्त जडत्तु

10 a जणणिचरु पूर्वभवस्था जननी 11 b सियय सिकता वालुका 15 कीस किमर्थम्.

8 ३ धीराधार धैर्याभाराः 4 b सुहासिभवु देवभव 6 b सलु शवशयन चिता 7 b सरजि स्वराज्ये

धैर्यस्यविहाभि चं सादियत
इदं वदन् मरेव धीरधि मुद

तं यदधिह मरं आरादियत ।
अकुर आर्द्धसु मयः ह्रुत ।

पद्या—सा रपयविमाआरादियत मरं अमुवर्त्तय्यहो भियत ॥

छत्रियंगदेव सो भियवगुद वैरयः मतिर पुत्रियत ॥ ८ ॥

9

दुर्धर्—मुद कसिपंगदेव अंशुवर्धेभि दीभि सुहवर् ॥

सुपगिरि सुपविहार सुविदेह जयमहि मयम्भर् ॥ १ ॥

आगसंसाहियविज्ञावमिहे
गंधम्वजपरि तहि विमळजसु
पायवपवात वरवर् वसा
तहि वैमिहि वररि पहावहहि
नामेव महीयक धीरमुनि
मुद एभि धीरधियु सेवियत
सुप्तावकितवरावै तविज
संतै ईति कलाधवेव
अं ससविभिसाहि पहावहहि
तउ विम्वरं कयजयसंतिवह
सीसिबिह पुण्णु समजियत
एवभावादि नामे औभियविहि

कयवयिर्पुर्धररयमिहे ।
वासैव नामे वासवसरिह ।
जसु विद्रिहि कसिकर्धंतु तसह । 8
वप्यजय कळमरजगहहि ।
सायव अरिजय विम्वरुभि ।
भिर्यधमाव संमावियत ।
इहकम्माजालु परिकवमिह ।
अप्यत विज भोक्ताहु वासवेव । 10
पयवतिहि ताहि पहावहहि ।
सुहव पोमावहकतिवह ।
सावेसपकसावकनु विजियत ।
कयदेहसोसउवसासविहि ।

पद्या—अ वि मय तहि विज विरसजु कटिभि आठकवह कि विर्देर ॥ 15

खोळमर सग्गि पडिहु हुंय मणु विह जम्मु व विज्जर ॥ ९ ॥

११ B omits this foot. १४ P "कपहि १५ P मुदम

9 १ MBP छत्रियंगदेव ११ "कळमरीभि MBP दुर्धर्देह MBP "पुष्पवमिहे ५ P कल
६ P विम्वरुभि MBP परिकवम ८ MBP कयकवर्त्तियत ९ MBP धयविहि १ MBP विम्वर
११ MBP ह्रु

११ ६ यदधिह मरं आरादियत १२ मरेव मरेभि अमर्ध रयुता

9 १ ह्रुवर्देह कलकी २ ययविहि कलपवा ८ ६ कळि" कळह पारं वा ९ ६ कम्मा कजु कर्मे-
कलपम् ११ ६ यदधि विहा वि कलजुवाया उगी. १२ विम्वर धीरधे

10

दुवई—अह णल्लिणंकि दीवि पच्छिमदिसमंदरपुव्वि रिद्धिया ।

पुव्वविदेहि छोगि वच्छावइ पुरि पहरि पसिद्धिया ॥ १ ॥

तिजगवइधरियल्लत्तयहो

जइणिहेसियरयणत्तयहो ।

परिगणियमुणियकालत्तयहो

हयजाइजरामरणत्तयहो ।

थिरैचरियधरियगुत्तित्तयहो

सुईसवोहियभुवणत्तयहो ।

चिद्धंसियेणियसल्लत्तयहो

परियाणियजीवगइत्तयहो ।

वियलियरसाइगव्वत्तयहो

गईकम्माइयदेहत्तयहो ।

घज्जियहेट्ठिमज्जाणत्तयहो

कयकिरियाछेयपयत्तयहो ।

केवलचेयणगुणइत्तयहो

सीदीभूयहु ण णियत्तयहो ।

णिव्वाणपुज्जविणयधरहो

हउ करिवि कुहरककरवरहो ।

फणिमणिभामासियअहिहरहो

गउ पढमदीवसुरमहिहरहो ।

तहिं णदणि सुपसिद्धमि वणे

इंदासासठियजिणभवणे ।

विज्जउ पुज्जतउ दिट्ठु सइ

महिहर वोलाविउ मुद्धि मइ ।

घत्ता—किं ण मुणहि तुहु खयरहिवइ हउ णदणु तुह हौतउ ॥

सिरिवम्मु सीरीभायरमरणे जइयहु कल्लणु रयतउ ॥ १० ॥

11

दुवई—तइयहु तइं सुरेण सधोहिउ एवहिं किं ण याणसे ।

सिरिहररायधरिणिमणहरिभंखु किं णेउ सरसि माणसे ॥ १ ॥

अज्ज वि किं भुंजैहि विसयविसु

चिसु मारइ मित्त एकु णिमिसु ।

भवि भवि सघारइ विसयविसु

ता तेण जि लद्धउ त जि मिसु ।

10 १ MBP पच्छिमदिसि मदरि पुव्व° २ MBP सयलत्तयहो ३ MBP थियचरिय° ४ B omits this foot ५ B omits this line ६ MBP गयकम्मा°

11 १ MBP °भउ २ MBP ण सीरसि ३ MBP भुंजसि

10 1 णल्लिणं कदीवि पुक्करद्वीपे 5 b सुइ° आगम 6 b °गइत्तय° पाणिमुक्ता लाहली गोमूत्रिका च 7 b देहत्तय° कार्मिकमौदारिक तैजस च 8 b °वयत्तय° प्रयत्न 9 a °इत्तयहो युक्कस, 15 सीरि° बलभद्र

अहिर्बुधिनो सुहृत्परायणाय
 भद्रमभिवादिष्यामि वाचं ब्राह्मणम्
 ब्राह्मणे चोदयन् मुनिगुरुब्रह्मिणं
 सत्त्वं भद्रवद्बुधेति विज्ञाहर्षिणं
 तर्जुं विष्णुं तेन कथयामासिव
 काशेन मेघं तै महीदृष्टो
 सो मीमांसापरिरक्तवचः

संप्रोक्तं सद्ब्रह्म विप्रवचनम् ।
 महिर्बुधेः पुत्रस्य मेरुनिधेः ।
 वैष्णवमभि उवाच बभूवुः सहितः ।
 तद्वचोऽप्यगिनिर्बिरतर्जुनि ।
 विरसं विप्रपुत्रिणा ब्रह्मिण्यभि ।
 पुत्रो भवत्यासु संप्रेम्सु ततो ।
 मीमांसापरिरक्तवचः ।

प्रस्ता—श्रीविषयः श्रीसत्तापरसमम् पुण्यं कार्यं संकीर्तितम् ॥

भाष्यसंज्ञक पुण्यार्थस्य चो सुप्रगणितकर्मोक्तिः ॥ ११ ॥

12

बुधै—तस्मात्परिहरेति यथैकविंशत्यभि विमुक्तविष्णवा ।

उवाच भगवन् तदा कथयन् भगवन् पुण्यं विप्रः ॥ १ ॥

एहि बभूवुः सुहृत्परायणाय
 विप्रवद्वि कारुणि भोक्तव्यमय
 तं विष्णुं तं च मेहमयम्
 मयविज्जियसीहे वाहं मया
 भावयितुं तं बुधं कथयि
 होम्य सिद्धी गतं निर्बन्धवहो
 सतिहि भवसिद्ध्याकाशवहो

अहिर्बुधेः कार्यं सद्ब्रह्म ।
 कथयन् अहिर्बुधेः मयावच ।
 सुहृत् तं च सत्त्वं वि मयम् ।
 इहपरलोकासं वि कथयन् मया ।
 कर्मवृत्तमहिर्बुधेः जीहेति ।
 सिद्धं सुहृत् कामं विद्वन्भीरवहो ।
 भद्रं कथयन् तं कथावचनम् ।

४ MBPK सुहृत् वा ५ MBP सुहृत् ६ MBP कथय ७ MP सुहृत् विप्रः B कथय
 कथयितुं सत्त्वं वि ८ MBP सुहृत् ९ MBP तं १ MBP मयम् ११ MBP सुहृत् १२
 वाचयितुं B मयावच १३ MBP कथय १४ MBP मयावच १५ MBP मयावच

12 १ B om to this line २ MBP मयावच ३ MBP तं सुहृत् कथयि ४ B कथय
 ५ MBP मयावच ६ MBP सुहृत् ७ MBP सुहृत् कथय

11 १ ४ अहिर्बुधेः कथय 12 सुहृत् पुत्रि

12. ४ ५ मयावच तं विप्रवच ७ पुत्रि वि सुहृत्

सुहकामकोहविद्धंसणहे
जं वउ परिपालिउ सुप्पहइ
सुइचक्खुसोक्खणिण्णासियइ
रंण्णावलिकयरणासियइ

गणिणिहि पासम्मि सुदंसणहे । 10
तं किं वणिज्जइ कहकहइ ।
संरुद्धपासरसणासियइ ।
पच्छाविरइयसंणासियइ ।

घत्ता—मेलेप्पिणु माणवकुणिमतणु देवणिकायहुं वल्लु ॥

अञ्चइ अणुदिसदेवत्तु खणे पत्तउ ताइ सुडुल्लइ ॥ १२ ॥

15

13

दुवई—चोईहरयणपहरणुत्तासियणासियरिउभडत्तणं ।

कयमजियंजण वरिसहरण्यावहि महिपहुत्तण ॥ १ ॥

धम्मघोसउड्डिडिमपहयउ
थिउ अग्गइ मउलियउहयकर
मेव व समैणु णिच्चलु थविउ
सुविमुद्धाविच्चु रिसि विव गणिउ
मायासुयवइयर साहियउ
मुणिधम्मसवणसामियमइहिं
गुरुमंदरथविरु समासियउ
आलिंणित चारणरिद्धियए
वणिं पुत्तिइ पावयत्तामियए
अहिहरिणमिल्लमिल्लीणिलए
पइं तासु पासि सुउ धम्म चिरु
दिवि जीविउ हउ माणियरमइं

एक्कहिं ठिणि समवसरणु गयउ ।
वदिउ अहिणंदणु तित्थयर ।
पंचासवदारणिरोहु किउ । 5
पिहियासउ सो सुरेहिं भणिउ ।
तहिं अवसरि मइं सवोदियउ ।
वीसहिं सहसहिं सहुं णरवइहिं ।
हुउ जइवर मोहु विणासियउ ।
संबोदियाणससिद्धियए । 10
होइवि णामे णिण्णामियए ।
दिट्ठउ गिरिवरि अंवरतिलए ।
किं यहुएं मज्झु वि सो जि गुरु ।
वह दह जि दोणिण सायरसमइं ।

घत्ता—जणणी ललियंगु आइ करिवि सुंदरि कैलिमलवजिय ॥

बावीस देव ललियंग मइं गुरु मण्णेप्पणु पुजिय ॥ १३ ॥

15

८ MBP गणियहि ९ MBP त वणिज्जइ कह १० MP रयणावलि°

13 १ P चउदह° २ MBP धम्मघोसउ डिडिमु हयउ ३ MBP समणु ४ MBP °धम्म
समण° ५ MBP संबोहियाणसमिद्धियए ६ MP कलमल°

10 b गणि नि हि पासि आचार्यानीसमीपम्, गणिनीसमीपम् 13 a रण्णावलि° रत्नावली नाम तप ,
°रण्णा सियइ रत्नत्रययुक्तया

13 २ वरि सहरण्यावहि क्षेत्रविभागकरपर्वतावधि 10 b संबोहिय° सर्वाविश्रान्तम्, 14 a
माणियरमइ अनुभूतरुद्धमीकाणि

पुष्कर—अथकतदवहारिण्योयपुष्कर छणससिबिचकपये ।

अथद वि कह वि तुम्ह पिय विर्यमहाणकमुसिवचपये ॥ १ ॥

अम्मंतति विर्यं संमरमि
हउं पुंछिउ विरिछपुम्हवा
सिकाइयवियवसुभयो
वीर्यमि अंभुदन्तविपय
सीपासरिविज्जवयदि पवद
आमण सुभीमा वर यपदि
अमयमार मंति सहरत्तमण
तदि सुउ पवसिउ पवसिपवयपु
सह ते विज्जि वि कवरेव विज्जु
ते वे वि विउस विच्छिन्नमय
एकहि विवि यपे नहि सुहय
सो पवुया पुंछिउ जीवगह
संतेय जेव अणु परिचमर

अहिणायु विरुपि तुह वज्रपमि ।
वैर्यं संतवसुरवहणा ।
मर अरिणं वरिउं वृयंवरु । 5
मेवहि विरिदि पुम्हासिपय ।
वप्यावारेसु वंछपउव ।
तहि पवु अजिपवउ पुरिसहदि ।
तवु सवहाम अमेव यव ।
तवु सवहव विपसिउ सिपवपयु । 10
विज्जुवति पवति नमति विज्जु ।
एकआहेउकुविवावरव ।
महासावरिसिसौमीउ पव ।
आहासर वंछउ तासु वर ।
ते कारणु कासु महापियर । 15

पटा—अहि अथक त मुं पयवयपु गहदि अम्मु सहकारिउ ॥

ऊह होर अहम्मु विरत्तपहो पजेसहि वैर्यदिउ ॥ १४ ॥

पुष्कर—पोमाकदपु होर विजोयपु अं अ विज सुंवेपयं ।

तहि तहि कहमि तुम्ह पयत्ये जीव जि व्यावकार्ये ॥ १ ॥

14. १ BP विरयव २ MBP विरय P पुंछिउ ४ MP पवसिउ; ॥ पुंछिउवर.
MBP वामीउ १ P पुंछिउ MBPK तवउ ६ MBP वरिणर १ MBP पु. १ MB
एउ ईरिउ; P इउ ईरिउ

15. १ MBP ववेव.

14 15 ६ "आहं" विजोयपु 17 ववईरिउ वरिणरपिय

विणु जीवें पोग्गलु किं तसइ
 विणु जीवें पोग्गलु किं रमइ
 विणु जीवें पोग्गलु किं जियइ
 विणु जीवें किं पोग्गलु सुणइ
 ता वुत्तउ पहसियवियसियहिं
 जइ जीउ जि पेच्छइ कहहि कह
 जो एतु ण दीसइ जंतु ण वि
 जइ चितियमेत्तं तहु कुगइ
 दालिहिउ भुक्खइ किं मरइ
 को जाणइ भासिउ केण किह
 सिद्धतंतहु किं जणु गुरु णवइ
 किं वीहिउ वट्ठा णउ हँवइ

विणु जीवें पोग्गलु किं हसइ ।
 विणु जीवें पोग्गलु किं भमइ ।
 विणु जीवें पोग्गलु किं णियइ । 5
 किं विद्धंउ वेयणाइ कणइ ।
 अणुहुत्तपुहइ पत्थिवसियहिं ।
 तो विणु णंयणहिं ण णियइ कह ।
 तहु कँवणु भाउ किर कवण छवि ।
 तो चित्तंइ पूरइ किं ण रइ । 10
 भोग्गणु चित्तविउ किं ण करइ ।
 आगमु णवकवलु पुरिसु जिह ।
 तवतावें किं अप्पउ खवइ ।
 त णिसुणिवि मुणिवरिंदु चवइ ।

घत्ता—चित्तयरहु लेहणिवज्जियहो चित्तीलिहणु ण संतउ ॥

15

इह वत्थिवियभाविदियह जाणइ जीउ णिरुत्तउ ॥ १४ ॥

16

दुवई—जो जो पेच्छसे ण नेत्तेहिं ण सो सो जइ पयट्ठओ ।

ता सपियामहस्स सपियामहु पुत्तंय पइं ण विट्ठओ ॥ १ ॥

जइ सो जि णत्थि तो तुहु ण पुणु

ससहाउ भाउ परिमाँउ ण वि

जइ चित्तं वित्तिउं णउ हवइ

चिम्मेत्तहु कहिं वण्णाइगुणु ।

ज णहु त णहु जि ण चंदु रवि ।

ता ज्ञाहय देवय किहँ चवइ । 5

२ MBP किह ३ B किम ४ P किह ५ MBP पोग्गलु ६ MB वद्धउ ७ B पत्थिवसियहिं
 ८ MBPK णयणेण ९ B चित्ति १० MBT सिद्धत्यहु, and gloss in T सिद्धत्वस्वरूपप्राप्त्यर्थम्,
 P सिद्धतउ and gloss आगमनिमित्तम् ११ MBP बहइ १२ M चित्तलिहणु

16 १ M पयट्ठओ, P पइत्यओ २ M पुत्त ३ BPT परिभावि ४ MBP चित्तिउ ५ MBP किं

15 9 b भाउ परिणति, छवि आकारो वर्णो वा 12 b णवेत्ता दि—यथा नवकम्बल पुरप इति
 वाच्य नव वा कम्बला अस्येति सशयहेतुत्वाद्रमाणा तथा आगमेऽपि 13 a सिद्धतहु आगमनिमित्तम् 14 a
 षड् मार्ग 16 ण संतउ अवियमानम्

16 1 पयट्ठओ पदार्थ 4 a ससहाउ भाउ स्वस्वभावो भाव

पवित्रवसुधासुहृदपदार्थं
 तो कंचुपसुलभासु तिपदि
 जह सनु जि य यदह परं मण्ड
 मन्मथोसु य वसहि बुद्धि जगह
 मन्मु जि कयमोकनन वयसप्यो
 करमासु कन्मु किह पदं यदह
 प्रता—जह सं जहह सं तेहह जि पदह परं संमथिपदह ॥

जह जीह ज मेधह पाम्मह ।
 किहं तुहह मिहं पम्भतिपदि ।
 तो पदसु केव जापिहं गमिहं ।
 हय बासु जि मोषालु जि मुषह ।
 पंदिहं पुपु जावह मयसप्यो । 10
 जिह वनपहु वप्यदि सिहं यदह ।

तो किरियावापे किह कनेव जोहि सुवर्णं वापियव ॥ १५ ॥

17

मुनरं—हो हो जाहरेडकनवयवविरहसु मुपधि कण्ठह ।

हुव हुव परमयम्मु जिमयासिह कहसि संमिथिपदं कर्ह ॥ १ ॥

सं विमुचैवि हूरं सम्महव
 गुवमपि करिपि पनविप गुदरे
 जिह नड यदह तिह मन्मथने
 कन्मायमित ते के जि जल
 तामु जि तेकेकविवावप्यो
 भावविपु कनुमासु किपड
 होहि मि पुकम्मु निरोहिपड
 सिनुसममृदिहूरं मुप

बाईसर जिप्येयं कस्य ।
 पवित्रपह कडसनु कंचुदरे ।
 भावविपयमणिपमुथिपवये । 5
 संसापविवापविपमव ।
 वावहप यासि मन्सापप्यो ।
 तड मीसु सुवर्णसंमिथव ।
 उव वेमिन् जि मिहंमपि मिहदिपड ।
 सुकामर हं पदिह हुप । 10

१ P ररवह MBP सि MBP सिउ १ MBPT न वतिव कनर वधवट्टे.
 १ MB सि वव P सि वहु ११ MBPET सिहि T सिहि वसुतः कनेमियव कनरव पुनजिहि.
 ११ M पर वमसिपड B वर जह माविपड ११ M हुवपड वापिउ B हुवप वापिव
 17 १ MB लपेविप P सनाहिव १ MBP सिमुविपि १ BP हुवपु वविपड. ४ MBP
 विरमिपि

6 अ रवहकई कपिपि 8 सनु जलम 9 अ ववपौसु वरवव वसहि गुदरे. 10 अ-६ वम्मु
 बीकावि-ववसरहो नकयमक कुवे वम्मु जि वारिवमेव हुवयोसु वविह केमिपड जावह जोवपनी
 कनुरेव कनवाकल कनमोसु 11 ६ तिह पडी.

17 १ वाहं जिप्योसरनु. 8 ६ हुवप नडं विपड येवकविह, येवकविहिपिपिपि 10 सिह
 सनहु विहूरं हुव जिह जाकये म्मिपिपिपि वहुमिवा जावपकल वा वरवमवपि वहुमिवावपकलवा कपी.

ओसारियकायकतिसिह
घादइसडइ थिय सिसुससिहि
पच्छिमधिवेहि णरदिणसुह
घत्ता—तहिं अरिथ पुढेरिकिणि णयरि राउ धणंजउ णिवसइ ॥

णिवसिवि सोलहजलणिहिणिहइ ।
पच्छिममंदरपच्छिमदिसिहि ।
णामेण पुफ्फलावइ वसुह ।

जयसेण सेण ण वम्महो अवर वि भज जसंस्सइ ॥ १७ ॥

15

18

दुवई—सत्तिमिय भमरणील णलपाउसणासपवेसकुसवहा ।

इद पडिंद वे वि आवेप्पिणु जाया ताह तणुरुहा ॥ १ ॥

जयसेणहि णंदणु सीरधरु पहसियउ इदु दणुयारिवरु ।
वियसिउ पडिंदु सणियाणवसु तवरयणं किणियणिकामतुसु ।
णारायणु जायउ जसेसइहि भूरवियारि वेउ व णइहि । 5
णामेण महावलअइवलहं तहि ताह जगत्तयमगलहं ।
सिरि भुंजतहु गउ मरिवि हरि अइवलु वि ण रायकालहु उवरि ।
अवलोयवि णियवधघपलउ मणु मुकु ण वीरं मोकलउ ।
वणु पइसिवि सरु णिसुणिवि मयहं पणवेवि समाहिगुत्तपयहं ।
तउ लेवि महावलु तहिं मरिवि प्रौणयतियसेसरतु करिवि । 10
वीसद्धिसमाणाहिं पुणु पडिउ अंतयराएण ण को णडिउ ।
पुव्वुत्तदीवमायतरण पुव्वुत्तसुरहिदियंतरण ।
पुव्वुत्तविदेहि तवियतरणि णामेण वच्छयावइ धरणि ।
पुरि तम्मि पहायरि जणभरिय मईसेणहु देवि वसुंधरिय ।

घत्ता—तहि देविहि मयणंमयालसहि गव्वमासु सेवेप्पिणु ॥

15

चउदहमयंकप्पसुराहिघइ थिउ माणुसु होएप्पिणु ॥ १८ ॥

५ MBP पुरुरिणिणि ६ MBP धणजउ ७ Mp जसमइ

18 १ MBP ण पाउसणासपवेसि २ MBP जसमइहि ३ MBP पाणइ ४ P मरुसेणहु

५ MBP महालसिहि ६ P चउदहमइ

11 α ओ सा रि थे त्या दि—उत्सारिता स्फोटिता अवसाने कायकान्ति शिराज्योतिर्यै, ७ °जल नि हि नि हइ सामरोपमाणे

18 1 स मि सिय चन्द्रवत्पाण्डुर, कुसवहा मेघा 3 α सीरधरु हलधर, ७ दणुयारि° वामुदेव
4 ७ °णि का महुसु उपवत्तुच्छा मानुष्यकभोगा 5 ७ वेउ व वेग प्रवाह इव 11 α वी सदि समा ण हि
विंशतिसागरोपमे.

19

दुबर्—दुर्गे जयसेवकादि को पारर होती पुष्पसतिवा ।

तत्पु वि तेन मीमकरबाळें महि छनकंड भुषिया ॥ १ ॥

पुणु केवळजाणसिरीहरछो
बोहहरपयर्गे निहि परिहरेवि
मजपावको ध्व विहावण्ड
फधियरसुरवरकयकितावर्ग
मठ प्राण पिर्लंजिनि पुठियधप
सोसंपुहिसंयिहारं विहवि
पुष्पदीनहु पुष्पिगु गिरि
तहि पुष्पपिरेहर विष्णुसुह
तहि रमजसंवि अजिर्गवयो
बोहपसुहसिनिजसंठारे

पार्यतिपमि सीमंघरछो ।
दुयद बारितमाकडेतेवि ।
मायेपिणु सोळह माधवड ।
अजेपिणु तिलपारतजई ।
उहरिगमेवजहि मज्जेमय ।
अहमिदु दंड ठेपणु अहवि ।
आमेव मेकसरि वृहसिदि ।
बटजोनि मंगळमर वसुह ।
पाणु पासिमसाधनयहो ।
हुड हुड वेविदि तसु वसुमारे ।

पता—सो वेड कुसंधक पयमजिणु वम्माहवम्माविपारण ॥

कण्णु वि सयछहि सुरवरहि मेरहि अविज मडारड ॥ १९ ॥

20

दुबर्—पुणु वरमपरपयपयणु मेहिनि मठ बर्चतरं ।

बेमिनि अंतरेणु पविर्गविजकड पित सो विरंतरं ॥ १ ॥

मयबंतहु विहुवैतहु सुरिड
कण्णवर्ग अगसंकोहजर्ग
आंरछड तितु पवसिपड

पारंतहु सुचणु वरिड ।
केवणु किड लवविदवर्ग ।
तिहुवणु दुचहण विपसिपड ।

19 १ ॥ हुप कण्णेणु १ P वरवह* १ MBP पाण, ४ P निपजिनि, ५ MB मज्जेमय P मज्जेमय, ६ MBP पुष्पपरदीनर पुष्पमिनि, ७ MBP मेकसरि.

20 १ MBP read this line as तिहुवणु दुचहण विपसिपड आण्डर तितु पवसिपड

19 ४ ६ पावसि वमि पयवमिदि, ४ अहुविधविहारं सान्तेपमावि.

20 ४ ६ हुतावणु आण्डीकड, ४ ७ आहव व जयमणु

गड मोम्वहु अक्खरु अक्खरहो
 अग्गिदहिं णियमउडाणल्लिण
 इय कहपवाचि मँइं सक्खहिण
 हे हे मह कुलकमलेकसिण
 हियउल्लउ णिदिंयइदियउ
 सभरसु पुत्ति रमियामरहो
 अम्हइ तुम्हइ मि महासरहो
 सभरसु पुत्ति पविउलकमले
 किय जाणप्पिणु रद्धासवहो

तणु सक्कारिउ परमेसरहो ।
 मणुं किं ण होइ सुधियफल्लिण ।
 सम्मत्तु लइउ देवहिं सहिए ।
 ललियगहु तुह ललियगपिए ।
 नइयहुं जिणधम्माणांदियउ ।
 अजणणामयहु धराधरहो ।
 दीवहु गयाइ णदीसरहो ।
 फीलियइ सइभूरमणजले ।
 णिव्वाणपुज्ज पिहियामवहो ।

10

घत्ता—सभरसि पुत्ति मह भासियइ पयइ वहुअहिण्णाणइं ॥

15

तुम्हइ दर्पइहिं रईयरइ सुरवरकीलत्ताणइ ॥ २० ॥

21

दुवई—तहिं णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु अल्लइ विहिं वि जइयहु ।

हउ कालेण कह व णिल्लोट्टिउ इदवयाउ तइयहु ॥ १ ॥

हमच्चुया चुओ सुंए
 वसुंघरावहूये
 णिवद्धपेम्मराइणा
 सुओ हुओ हियतओ
 कुवाइणहिं मोहिओ
 कयगयारिण्हाणओ
 सुधम्मभावणामलो
 दुइज्जसग्गठाणए

कुले सुदिंदसथुए ।
 महत्तपुण्णगोयेरे ।
 जसोहरेण राइणा ।
 इहेव वज्जदत्तओ ।
 सुमतिणा पवोहिओ ।
 मरेवि दिण्णदाणओ ।
 खगाहिवो महावलो ।
 सिरिण्णहे चिमाणए ।

5

10

२B अक्खर अक्खरहो ३ MBP मणु होइ किं ण ४ M मइ सह रइए, B सह मइ रइए ५ P सयभू°
 ६ B दपइरईयरइ

21. १ MP सए

6 a अक्ख व लब्धानन्तवतुट्टयरूपतयाविनधरम्

21 1 णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु नियुत लक्ष तस्यार्थं पञ्चाशत्सहस्राणि तत्प्रमाणानि पूर्वानि चाशुभम्

8 a ह अहम्, सु ए हे पुत्रि 4 a °वहूये वधूदरे 8 a °अगयारि° मदनान्तको जिन

मवारपुष्पकामभा	सरुवमिश्रकामभा ।
हृभा सुता सुधीमभा	मई शुक्र स पच्छिमौ ।
विषयका मवायिषा	गयादका लीयं विषा ।
तुमं पि तपिरहसिया	पईय मेतिमिहिया ।
विषावरस्त अ पहा	सलेकका सयंगहा ।
कईयतभडिमाहभो	तुई पिभो तहिं मभो ।
वरुण्यकार पडय	पुर विभिसलीडय ।
पडयपोरपाहुभो	विषस्त कडवाहुभो ।
सुवण्यवण्यकायभा	कुष्मापाह जायभो ।
रवि प्प सो शुक्रयभा	मयकि कडवयभो ।
विभोमुभा सुईकर	मई सुदीय ते पय ।
संमीड् दुमिमंठके	वसति ते सुईयंठके ।
सुपुष्पाड आहया	रमावईर आहया ।
तुम सयां पहायरी	मह सुया कितोपरी ।
वरं वरं विहाविही	विषकका विहीविही ।
विषामम पयासिही	विनेहिं तीहिं मासिही ।
सिरीमईर मासियं	तय मई पयासियं ।
मैयमि ई पैरे मयं	विरे वि याव यं यवं ।

15

20

25

30

पता—सुनि सेविय आसि समासियव मण्डु रित्तहकिविरे ॥

वचनैरेपुण्यवर्तहिं हसिदि पुण्ड सुव मभिय जसिरे ॥ २१ ॥

इय महापुण्यमे तिसहिमहापुरिसगुणांकारे महाकरुण्यवर्तविरचय

महामय्यमहापुण्यमभिय महाकले विरिचरमचरमचरमं नाम

सवीसमो परिच्छेभो समसो ॥ २३ ॥

॥ संधि ॥ २३ ॥

१ MBK पयवर्तिका २ BP सुवे ति ४ MBP वहु वरं ति विरिचर ५ MBP पुष्पकका ६ MP कयति
७ MBP लयवर्त ८ MBP सुईयमे ९ BP लयवर्त १० M हसिदि ११ MBP वरुण्य १२ P
वरं १३ MBP "कुष्मापाह"

11 = कमारपुष्पकायभो कलिमाह 16 = "वर्तिका" रीत्यम् 20 = मयकि हे ययादि 21 =
विभोमुभा विहायरी 22 = रमावईर कयवर्तयम् 25 = विहाविही कयति ३ विषकका कयति,
यया विहाविही वि+ह+ आसिदि अलविपयति 26 = आसिदि कयिपयति विहायरी

XXIV

सहु पंदणेण णियपरियणेण महु लोयणसुहु देसइ ॥
सुणि राउलउ तुह माउलउ अज्ज पुत्ति आवेसइ ॥ ध्रुवक ॥

I

म करहि घयणकमलु तुहुं दीणउ
आयहु वज्जवाहुपाहुणयहु
सोयकिलेसपकु पक्खालहि
आया माणणिज्ज ते माणमि
जांमि भणिवि गउ णरवइ जावैहि
मुणिहि वि मयणुक्कोवजणेरी
णं गंगाणईहि जउंणाणइ
णियडि णिसण्णां सा तरलच्छिहि
करिणिइ करणिजेम करु मगिय
मत्थइ सुविवि पुरउ णिवेसिय
मुहरापण जि सिहुं णियच्छिउ

अज्ज पुत्ति जायउ सुविहाणउ ।
अज्ज करमि करणिज्जु सँविणयहु ।
अज्ज पुत्ति तुहु णाहु णिहालहि । 5
लहु अद्धवहि गंपि घरु आणमि ।
पंडियभवणु पराइय तर्वाहि ।
दिट्ठी सुय णरणाहु केरी ।
णं कइमइहि मिलिय सुयसंतइ ।
पुरिसुज्जमलीला इव लच्छिहि । 10
वेल्लिइ णवेल्लि व आलिंगिय ।
हंसिइ फलहसि ध संभासिय ।
कज्जु तो वि णिवकणइ पुच्छिँउ ।

घत्ता—विउसिइ कहिउ ढक्किवि लिहिउ पइ ज तर्हि मइं ढोइय ॥

णरवइ दमिय ओसरिवि थिय वासवदुइताइय ॥ १ ॥

15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डल
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसुमसकरे ।
विकसितफणिफणासु स्रसरितो मणिरुचिगतमघ. क्षिते-
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावक यश ॥

GK do not give it

1 १B लोयणु सुहु २ P रावउ ३ MBP अज्जु-and throughout this Kadavaka ४ P
सुविणयहु ५ B अद्धवहु ६ M एम ७ MB जावेहिं, P जाविहिं ८ MB तावेहिं, P ताविहिं ९ MBP
मयणुक्कोय° १० MB सुहु, P सिहु ११ P पुच्छिउ

1 6 b अद्धवहि अर्धपये 8 a मयणुक्कोय° मदनप्रसर

2

पच्छर मयमर्ध भायउ आ यव
 सो ऋ वम्महेण पच्छर सव
 सो ऋ वरमसंकिण्डु सायव
 सो ऋ वरविक्कासु पसारिउ
 सो ऋ विक्काविहि विथारिउ
 सो ऋ वरसु महु मणि भायव
 पुत्ति यदासिहरउ वुहसासु
 केजहिमईहाससंकासु
 हियवउ रंथविपसिउ मउकेपियु
 वंदिउ विणु सुवर्धविपसिउ
 वंदिउ विणु वगंवेविपसिउ
 वम्मसासु वेपडु यव वुहसा
 वकिरिउ विहसु गायवसरिच्छउ

सां ऋ वीहसासु केरउ यव ।
 सां ऋ वुहसासु वीविहउ ।
 सो ऋ वुह मुहकमसविपाव ।
 सां ऋ वंतिहोसु वगारिउ ।
 सो ऋ वुष्णपुंनु ववपारिउ । ६
 सो वुह महु वि वंगरं ताव ।
 वेवि पपाहिण विववरासु ।
 वां पुरंदरेण वकासंहु ।
 मव व वि विपवर मउकेपियु ।
 वंदिउ विणु सुवुजियपुजिउ । 10
 वंदिउ विणु वुहविहिपसिउ ।
 पिणु वपवेण सतु किह वज्जर ।
 वंयव वउयपु वुहिर वुष्णउ ।

पत्ता—गहयउ वउहो सीयसु विमहो विव वुह रंथ वुह केरउ ।

वउयपुयवो वंसासुयवो वउसुयसेव वउह ॥ १ ॥

15

3

विणु वरोपियु वविप मुविवर
 वंगवहरवरंथियवसेविउ
 वसु व वउंउ गोवि वउ हियवर

मुविवर ते सुववर ऋ वववर ।
 वसविमियवउमविपविमउवेउ ।
 वंयवाविमि मर वसु विव विववर ।

2 १ MBP "विहसु १ MP विमो" १ P वउवगसु ४ MBP रं" १ MP वेजोपु
 १ BPT वउवविप" M ववविपविप, BP ववविपविप MBP वउव

3 १ MBP "वउविप १ MBP "वसु १ MP ववविपविप

2 ७ १६ विव विह वीजोपियु 10 ४ वउवविप" वउवविपविप 12 ४ ४ वमोत्ता वि-
 ववववो वमोत्ता वेव व वउवो ववोविपवववव ववोवववववव — वि वउव वि-वउवविप-
 ववोविपविप वउ वउवे ववि वउव वउव विववववववव विवव वव वव वउ वउव 15 ४ १६
 वउ वउ वविपववव

णयसिरं पट्टसाल स पट्टउ
दिट्टउ पट्ट सहुं सुलिहियचित्तं
सतं इट्टविओयकंतं
कंतं जयलच्छिहि विकंतं
कंतं चदेण व सपुण्णं
रुण्णं पर सरीरु णिव्वट्टइ
वट्टइ जाणित्ता कहिं दीसइ सा
जा सा सा भणत्ता सो मुच्छित्त
अच्छित्त विमणु पपुच्छित्त धाइइ
माइइ भणइ रमणु तुह अक्खमि

सपट्टउ मइ संमुहुं दिट्टउ ।
चित्तं चित्तिउ तेण ससंतं । 5
कं तं धुणियउं भवसंकंतं ।
कंतं सुमरियपेम्मुकंतं ।
पुण्णं पियसंजोउ ण रुण्णं ।
णिव्वट्टित्ता देउ वि ण पवट्टइ ।
सा मणणल्लिणोयरवासिणि जा । 10
सोमुच्छित्त चट्टु व्व णियच्छित्त ।
धाइइ परियणि कहिं मि ण माइइ ।
अक्खमियं ज तं किह रक्खमि ।

यत्ता—भवंसचरित्ता पड्डित्ता वट्टपयार पँरट्टकिउ ॥

णरवइसुयइ सुल्लियभुयइ कीस सहियवउ वंकिउ ॥ ३ ॥

15

4

एहु ईसाणकणु विविहामर
पट्ट दिव्वतरवर णंदणवणु
पट्ट ललियगु देउ हउ हौतउ
थणयल्लुलियहारमणहारी
अच्चुयणाहु एहु तियसेसर

लिहियउ एहु सिरिमहु सुरहर ।
पलवमाणु चलकलकोइलगणु ।
एत्थु वसंतउ एत्थु रमतउ ।
एह सयंपह देवि महारी ।
कुलिसपाणि लिहियउ परमेसर । 5

४ B °सिरपट्ट° ५ M omits this foot ६ BPK पेम्मुकंतं सुयरियकंतं ७ MBPT णीवट्टइ
८ MBP णीवट्टित्ता देहु ९ B अक्खमियर १० MBP भवि ११ MBP °ढकियउ १२ MBP
वाकियउ

4 १ P इह and throughout this Kadavak २ MB सुण्हसपयसुर°

3 4 a पट्टसाल स पट्टउ स पट्टशाला प्रविष्ट, b सपट्टउ सप्रतिष्ठ 5 b ससतं निव्वसता
6 a सतं उत्तमपुरपेण, °विओयकंतं वियोगपीडित्तेन, b क तं धुणियउ तेन मस्तक कम्पितम् 7 b °पेम्मुकंतं
झेहयुकेन 8 a कंतं चदेण व कमनीयेन चन्द्रेणेव, b पुण्णं पुण्येन 9 a णिव्वट्टइ विनश्यति 10 a वट्टइ
जाणित्ता ज्ञान वर्तते 11 a जा सा से त्यादि-या जगत्प्रसिद्धा लक्ष्मी 'सेयम्, सेयम्' इति मूर्च्छित, b सो मुच्छित्त सोम्य उच्छ्रित्त 12 a धाइइ आत्मा, b धाइइ धाविते 13 a माइइ हे पुत्रि, b अक्ख-
मि य इन्द्रियैर्ज्ञातम्

कहर धुर्यधरदेषकहाण्यं
एयं बम्हर् वे पि बहुरै
एय मेवहि गयारे जगर्णमहु
एहु संजपमहिहक महु कयार
इह सहु धुर्यार्हि मुदसकियर्
कयरतिहक एहु गिरिसारु
एहु तमु कयकमसु जमर्तर्

कतयर्षमसर मर् जीवर्त ।
कह भिसुभिवि विर्यमभि धगुर्त ।
इह सगर्हि भिषगुहाचारमहु ।
एहु बीरु बर्षीसक सुयार ।
धर्षगहतिर भिषि वि कडिभर् । 10
इहु पिहियासक डिहित मडारु ।
यिपार् वे वि भिषधमसु सुवेर्तर् ।

यत्ता—एहु मलरहित इर्त पाकहित एह सर्वपह कयार ।

तियसिद्धियके भिषधरमकवे महि पयपोमहि कयार । ४ ।

5

अन्वेत्तहि पि एहु धो किहियत
एवेररसर्है रोर्मभित
अम्हर् तपुपरिमकपरिममियर्
एरेषु क किहियत कञ्जावेसित
सकनमरु इह ककिणु क किहियत
एहु क किहियत पडिगुभिकसित
इह कबोळपत्ताकसिमोडयु
एहु क किहियत विरहीरुड मुर्ह
एहु क किहियत भूसुणु पेसित
एहु डि किहियत अणुनयमारु

ओ मर् कीम्हारंमु पविहियत ।
एहु क किहियत मोर्ष पकयित ।
एहु क किहियत अकिणुमुगुमियर् ।
हुंय गुर्षयकमायमहुम्मासिब ।
अ कहुनयपार्है सोहर महियत । 5
एहु क किहियत पकपापेसित ।
एहु क किहियत किछकनताडयु ।
एहु क किहियत मिर्ह विभर्तुहु ।
एहु क किहियत हुपयमासित ।
हेहु महु विज्वर पापयहारु । 10

१ MB कहि ४ MB विरमन ५ MB एतर्ह

5 १ MBP ककिहियत २ B येव ३ MBP हुर ४ MB हुपययु ५ MBP read the
line as. एहु क किहियत पकपापेसित एहु क किहियत पडिगुभिकसित ६ MBP विरहीरुड MBP
सिड MB हुपय, १ M एहु क B एत महु

4. 18 पाकहित नाज्जापार्है, 18 भिषधरि" येव

5 4 8 हुन कय, 10 क अणुनय" अणुनय

पयवडिण सारभु मुयाविउ
अण्णहि णेही रुवविह्व
अण्णहि पसइणिह्णइं णेत्तइं

पत्थु ताइ हउं आसि स्रमाविउ ।
देवि सयपह माणवि ह्वइ ।
अण्णु लिहइ किं महु चारित्तइं ।

घत्ता—भणु किं कहमि ण विरहु सहमि दुइइ पिय महु आणहि ॥

सा तेत्थु पुरे थिय जम्मि धैरे तहिं जायवि समाणहि ॥ ५ ॥ 15

6

ता दुइइ उंत्तु अम्हारी
वज्जदतु पहु तहु सुहगारी
धीय ताहि सिरिमइ उप्पणी
एहु ताइ लिहियउ कहवइयर
एम भणेप्पिणु हउ एत्थाइय
तावेत्तहि कुमार गउ तेत्तहि
पियविओयसिहिजालात्तउ
तरुणीवग्गुरवडिउ पलोइउ

णयरि पुंढरिंकिणि पुरिसारी ।
लच्छीमइ महपवि भडारी ।
पिउ झुमरिवि जीवियणिव्विणी ।
पइं जाणियउं णिरुत्तउ तुहुं वरु ।
पढसंवंधिणि वत्त णिवेइय । 6
उप्पलखेडउ पुरवरु जेत्तहि ।
घरि तलिमयलइ देहु णिहित्तउ ।
णं वणवाहं मृंगु सभाविउ ।

घत्ता—रइरिद्धण मयरद्धण विद्धउ पचहिं वाणहिं ॥

विवरीउ हुउ सो रायसुउ कह व ण मुक्कउ प्राणहिं ॥ ६ ॥ 10

7

दुप्परिणामे कामे तप्पइ
रसइ हसइ णीससइ विरज्जइ
कर मोडइ धम्मेल्लय मेल्लइ
धेवंइ वलइ चिलासहिं गच्छइ
एकहिं णिलइ ण णिविमुं वि अच्छइ

सीयलमलयजपंकं लिप्पइ ।
उट्टउ वइसइ मोहं मुज्जइ ।
अहर ढसइ अणिवद्धु पवोल्लइ ।
परु पच्छण्णु पउत्तिहिं पुच्छइ । 6
दिसि लिहिय पिव पियमुहु पेच्छइ । 6

१० MBP °णिहाइं ण. ११ MB अण्ण १२ MBP जेत्य १३ MBP हरे

6 १ MPB कुत्तु ° MBP ताहि ६ M °वग्गुर पडिउ विलोइउ; P वग्गुर वडिउ विलोइउ.

४ MBP मियु ५ M रइविद्धण, P रइरिद्धिण ६ MBP पाणहिं

7 १ MBP अणिवद्धउ योल्लइ ° MB पच्छण्ण°, ३ P णिविमु

11 ८ सारभु कोप 15 समा णहि मदीयकुशलवार्तया सतोपय

6 10 विवरीउ कामजनितोन्मादादसयद्धप्रलापी.

9

सालउ सस विणिण वि जोएपिणु
 राएँ अवलोइयउ सँस्सीयउ
 पुरेणारीयणु कहि मि ण माइउ
 णिवइहि केरउ सहि धरणीवइ
 जसहरणामहु धीय जिणिंदहु
 एयहु उप्पलजेडणरेसहु
 जो सग्गाउ देउ अवयरियउ
 इहु सो वज्जजयु हलि णरवर
 सो वि ण पावइ चित्तु जि पावइ
 पुरिसु होइ जइ एहउ वम्महु
 का वि भणइ उच्चायहि मइ पिय
 ताइ णियतिय रुवु कुमारहु

णयणहु केरउ फलु पावेपिणु ।
 अच्छिउटेहिं रुवरसु पीयउ ।
 अवरुप्पर चूरुतु पय्यैइउ ।
 वज्जवाहु पँहु सो वहिणीवइ ।
 एह वसुधरिं वहिणि णरिंदहु । 5
 दिण्णी सुदरि णिरुवमवेसहु ।
 जो सिरिमइवर जम्मतरियउ ।
 एयहु समुहु मइ पँसरिय कर ।
 तं पाँवतु वि तणु सतावइ ।
 ण णं सो अणगु मुणिमणमहु । 10
 लघवि कोट्ट पलोयमि वरसूय ।
 पेम्मजलोल्लिय तणु भत्तारहु ।

घत्ता—रहपेल्लियउं उव्वेल्लियउ णिच्छुट्टु णिरुभइ ॥

कविणिम्मलए चुयं मेहलए ददु परिहँणु णिच्चंधइ ॥ ९ ॥

10

का वि भणइ णगयग्गदुवारें
 उग्गिउ कर करयलइ ण णयणइ
 का वि भणइ भासिय दुव्वयणइ
 एयहु धरि दासित्तु समिच्छमि
 का वि भणइ णिवसुय सक्कयत्थी

अंतरियउ सूहउ पायारें ।
 किह पेच्छमि अगाइ समयणइं ।
 अज्ज परइ मेहँमि पँइसयणइ ।
 जीवमि छुहँ सुहकमलु णियच्छमि ।
 ण वियाणहु चिरें काइ वउत्थी । 6

9 १ MBPT ससीयउ २ MBP पुरि ३ K पराइउ ४ MBP एहु, K एहु but corrects it to पहु ५ MBPK वहिण ६ MBP पसरिउ ७ MBP पावतु जि ८ MBP वरसिय ९ MP धुउ मेहलए दद^०, B चुए मेहलए दद^० १० MBP परिहाणु णिवधइ

10 १ B मेल्लिवि २ MBP पिउसयणइ ३ MBP फुडु ४ P सकियत्थी ५ B चिर

9 2 a स स्ती यउ भागिनेय 11 b कोट्ट भित्ति, वरसुय वरथी 13 उव्वेल्लियउ उच्छासितम्

10 1 a-b ण गे त्या दि-नगश्च प्राङ्गणवृक्ष, अग्रद्वार प्रतोली, ताभ्यामन्तरित प्राकारेण च, अथवा, न गता अहमप्रद्वारेण प्रतोल्या निखल त द्रष्टुम् 5 b वउत्थी तत्स्था

12

पियराहिरामाह	संपुण्णकामाह ।	
मुकाह घायाह	तुट्टाह मायाह ।	
परिखवियकम्माह	कहयाह रम्माह ।	
जिणणाहपूयाह	दिण्णाह धूवाह ।	
सुइसायकुमेहिं	घण्णघडियखमेहिं ।	5
रुप्पभैयकुडेहि	आलिहियभदेहिं ।	
विण्फुरियरयणेहिं	वरहीरगहणेहिं ।	
आसणघिराहयहिं	भाणिकवेइयहिं ।	
पडिणेत्तपच्छइउ	कंतीइ चैवेइउ ।	
रुद्धतमोत्तियहिं	ण दत्तपतियहिं ।	10
विहसतु पडिहाह	दिट्ठीसुह देह ।	
णाणापयारेहिं	णाणादुवारेहिं ।	
कउ मंडओ ताम	संमाह जणु जाम ।	
मिलिपहिं सुहियैणहिं	भरिपहिं तोरणहिं ।	
घणरवगहीरहिं	पहपहिं तूरेहिं ।	15
णच्चंततरुणीहिं	मडलियघरणीहिं ।	
खयरीहिं जप्फिखणिहिं	णायरणियंघिणिहिं ।	
हिमहारसेरिसेहिं	सजलेहिं कलसेहिं ।	
पइपुत्तवंतीहिं	महिणाहपत्तीहिं ।	
सोहगगसुदरइ	णहविथाइं वहुवरइ ।	20
पुणु पुणु पसाहियइं	णवरहरसाहियइं ।	
सुइवयणकलयलहिं	घचलेहिं भंगलहिं ।	
पुणु पुणु जि गाइयइ	आसण्णढोइयइं ।	

घत्ता—पसरियकरहे मयणिम्मरहे मणु मयणें सुंवियारिउ ॥

सुहवडु पियहे ण गयघडहे वरसुहडें ओसारिउ ॥ १२ ॥

25

— 12 १ P सदिण्णधूवाह २ MBP घर घडिउ खमेहि ३ MBP °कुडेहिं. ४ MB °भडेहिं ५ MBP चिचइउ ६ MBP सुल्लत° ७ P सुइयणहिं ८ BP घरिणीहिं ९ M °सरसेहिं १० MB सवियारिउ

13

मोहये वासरे वादसमुपगतो
पाणिना पाणि तीक्ष्ण निजा वारिभ्यो
रायरायण मिगोरणपाणिने
अप्यव्यमागपा तुम्ह सीमेतिणी
बाह्यो बाह्येया पमत्ता मथा
आज अंपाज छत्त सिने वामरं
उज्ज्वलं हर्मद्वयसेवायलं
हस्तिरीरोहणा हृषिक्यं मंडलं
पाह्या पुष्टिसंतोषव्याप्यलं
पर्यपुष्टि करेणुं व जीजापयो
मंडले बेरयापहि आसीयभो
अप्यव्या धृष्टद्वयसमीमिया
जाव गंगाजर्ज जाव मेक गिरौ
हंतु पुता महता पहामीसुप
अप्यव्याजह अप्यव्यविसादा अहि

तमदोहपातुपजावजीविम्यमे ।
अंगडाहो परं वृक्षहो हारिमो ।
मार्यवेपथुस्य सिने करे पाणिने ।
तुम्ह मे विभिन्ना पैसदास्यविनी ।
पंथव्या पविता विविता भया । 5
वृक्ष गामं पुर सत्तम्यं धरं ।
दीपयो मंथयो दासदासीउठं ।
कंचिदामं धरं कंचकं कुंडलं ।
वत्सुधरं अयेयं पि विष्णं धरं ।
व करे वेष्टितं वरौ विष्णयो । 10
वज्रबाहु समानंविभो रावयो ।
वत्सुकोप्य विता सिरे सेविता ।
ताम्र मुंजरे तुम्हे वि विचं सिरी ।
संतु अष्टिपुष्पवेदेय वो वासीप ।
सो वरौ सा वरं वा वि वारं धरि । 15

वृत्ता—अभिनि धरयो तनु वाधरयो 'पेरिवादिह सुहवासीदि ।

अहिसिचिपरे पुणु अंविपरे विचदि पुनीससदासदि । ११ ।

14

वःकमुवाडधरछकोममयद
वद वक्रसु कारे वि अंपावर
वद वत्सुपरीहोमो आसिगर

विचदहि अंतदि कौडर वदुवद ।
वदु अंजति सं वि सेमावर ।
वदु सुवी सं पुणु मयि मयार ।

13 १ P मगरं १ MBP वाहयेनस MBP "तुम्ह"; K "तुम्ह but corrects to to
"तुम्ह" and gloss वर्कसिनु वर्कसु व M हारं १ MB पविता १ MBP रत्नपुनी P करेणु
व MBP वृष्टद्वयसीमिया १ M मुंजरे १ MBP मालु. ११ MBP वामर ११ MP पवितादि-
14 १ P वत्सु MBP वरवनीपु

13 १ निजा तेज राहा १ तुम्ह वर्कसिपुरंरुम्ह ॥ हारिरी रोह को मनेवरवीररुम्ह
14 १ पुरं पविता 16 तुम्ह वासदि तुम्हवा
14 १ अवावर अनुमयको १ वत्सुपवद्वीपु अटीरकरपवीमन्

वरु केसगहेण ओणामइ
 वरु मउअउ जि करइ अहरग्गइ
 वरु यणसिहरइं छिवइ सहत्थे
 चीर पसारिउ सणियउं पुंजइ
 वरु फेढवि घल्लइ पल्लंकरइ
 वरु सोणीयलहुत्तउ जोयइ
 अलियणहेहिं णाहु सघट्टइ
 चवइ रमणु रइहरि सिज्जंतइं

वहु हेट्ठामुहं मुहं लिहँकावइ ।
 हुं हुं मेळि दर भासइ णववहु । 5
 वहु वीलावस ढंकरइ वत्थे ।
 वरु करँ ऊरुजुर्यलि णिउजइ ।
 पाणि देइ वहु वयणससंकरइ ।
 वहु तहु दिट्ठि^{११} करहिं पच्छायइ ।
 वहु उग्गयपुलणण विसट्टइ । 10
 आसि वे वि भणु किं लज्जंतइं ।

घत्ता—कीलिवि पवरे हिमगिरिसिहरे चलियइं उट्ठायासहो ॥

तुह सिरिहरहो भरहेसरहो पुप्फयतर्कइवासहो ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकरपुप्फयतविरइय
 महाभवभरद्वाणुमणिय महाकवे वज्जजघसिरिमइसमागमो णाम
 चउवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २४ ॥

॥ संधि ॥ २४ ॥

३ P केसगाहेण ४ BP णिकावइ ५ P मउ जि ६ M महु मेळहि दर, BP लहु मेळहि दर ७ B कर
 ८ P °जुयल्लु ९ MBP णियवयण° १० M सोणीयल्लु हुत्तउ, P सोणीयल्लुहुत्तइ ११ MBP करहिं दिट्ठि
 १२ MP °कयवासहो, T records a p पुप्फयतरुइवासहो इति पाठे चन्द्रादित्यदीप्तिस्थानकात्.

XXV

मणुनिबु ईसयेन संमासयेन क्षणसंगीताये ॥
 पूंउमाठमामये एमपीएमये एमर बिसेसविहाले ॥ तुषके ॥

1

पञ्जसपोमपहसिपमुहाई
 मठमधियमम्ममुहाविपाई
 मबईहचपमरिपमुेयबकाई
 रइअउयेतिपसपपीपपाई
 कयपययकोईसंमाविपाई
 पविईपसिपीमइवमुवपाई
 हवै सोहमो महुईय
 सिरिमइईमहुईसउ मईविअ
 पामेजानुंमरि सोकअहेउ
 मईमईमईवीगममकाउ

कसापअमानपुआमहाई ।
 ईउउरउहपुपकाभियकपाई ।
 मुहकईमुकि मुंयवरपीई । 5
 यियकेसई महुपीवाहपाई ।
 बीकाकउकविक्केविपाई ।
 पीसंउई गवपमुवाउपाई ।
 विमकिरवईसि कुंकिउवरपीव ।
 वी विईमअकर सयनेव अविअ । 10
 यियजंयपु वं सो कममउ ।
 परिवीमिउ पाई अमिबउउ ।

धरा—उपय वलुंमरहि धरमरमरहि छज्जर तहु करि खनी ॥
 कुकठसहु हिरि व कज्जहु सिरि व विहि व रिसिहि बावनी ॥

MBP give, 1 the commencement of the Bandhi, the following stanza—
 कसापअमानपुआमहाई ।
 कसापअमानपुआमहाई ।
 GE do not give 1.
 1 1 MBP बीमासहि 2 MBP सिव 3 MBP निममहि 4 MBP यरि वरवई;
 5 MBP मुवकमाइ 6 MB "मु" = B "त" MBP कोमउमरिउ 7 MBP
 महुपीव 8 B कुमिउमरिउ 9 MBPK "व" 10 MB सिमिअ 11 MP सिवकमय; 12 सिम-
 मक 13 MBP कमीमइमिहि वामि पाउ. 14 MBP वरिवाविउ

1. 6 अ वदवीवउह अमरिउपा अममममुहमाहु; 7 महुपीवाहपाई महुपीमविउ: पीउउ
 वरि वनी; 8 अ पविमव वदव 9 अ महुईव अहिरीमा 10 कुमिउमरिउ व वदवमहुपी. 11 अ
 अमिबउउ अमिनेअ वाम वीमाता मउ. 12 बावनी अमिपिउ.

2

अण्णहिं दिणि दिण्ण पयाणभेरि
णरणाहें करिकरदीहवाहु
सहुं सुण्हइ सहुं णियतणुरुहेण
आउच्छिवि इहु विसिद्ध वधु
उप्पलखेढाहिउ चमुसमेउ
हरिखुरधूलधूसरिउ सग्गु
पहरणचिप्फुरणहिं जिगिजिगतु
गयमयजलथौराहि भरइ तलु
गुरुयणाविओयतावें चुयाइ
सह कामिणीहिं पकयमुहीइ
आसण्णपायि सुदरपणसि
पेच्छिवि परिपुच्छिवि सयणविंदु
घत्ता—इयर वि जतु पदे भल्लइ दियहे उप्पलखेहु पइहुउ ॥

पुरयणपरियणाहिं कयतोरणहिं भगलसेसहिं दिहुउ ॥ २ ॥

3

पिउघरि णं रइरजियउ मारु
लक्खणचजणैहिं पसाहियाइ
घरतणयहिं जणियइ सिरिमईइ
एकहिं दिणि राणउ वज्जवाहु
सँउहइ सेहीरासणणिसण्णु
णहयालि अवलोइउ सरयमेहु

सहुं बहुयइ सुहुं अच्छइ कुमार ।
जमलइ पण्णासेकाहियाइ ।
सुललियकव्वाइं व कइमईइ ।
जावच्छइ सुइलीलंघुवाहु ।
तां कालीयरवरकिरणवण्णु ।
णं विहिणा णिम्मिउं दिव्वुं गेहु ।

- 2 १ MBPK °धूलिइ धूसरिउ २ MBP दिसिविदिसि° ३ M °भारहिं ४ MBP चिक्खिहु
५ K °णिवेसि ६ MBP पइहुउ ७ MBP उप्पलखेहि
3 १ MB °रजियकुमार २ MBP °वैजणहिं ३ K सुइलीलधु° ४ MBP सउहयलइ
५ MBT सीहासण°, P सीहासणि ६ MBP ता तें कालीयरकिरण° ७ MBP दिव्वगेहु.

- 2 ७ b अम्मणु इत्यादि—कियन्मात्रमार्गबोलापन कहुं नि सत्ता. 7 b महीदियतु पृथिव्या
दिगन्त 8 a तलु कुदसर
3 1 b कुमार पृथिव्या काम ७ a सेहीरासण° सिंहासनम्, कालीयर° चन्द्र

दधुगसिंहसुखरसमायु
 बितर पद गड बाधिह्र जेम
 बनिबि मयु पुण कसलु बासु
 दय मनिबि तेन पण्यरुसुसु
 मर सुयसुपदि सुयबहुसुपदि
 त्रियविपन्न कधि कड कम्ममोक्कतु
 रण्यमहिबियसुसुपदि
 यत्ता—ओ सो बरवर सुववरर अण्णर महुकिरमाणिउ ॥

पुर्बंरषि सो विदु विजीममायु ।
 आपसमि पयमहु हई मि तेय ।
 होसई पिड वणत्तंकासु कसु ।
 कुलसिदिहि समप्यिउ वज्रमंयु । 10
 मयोर्दि मि रावदि धिरमुपदि ।
 तज्जाभाह्र तं परमसोक्कतु ।
 एत्तहि वि पुंरैरिदिबिपुपेहि ।

ता भित्ति भित्तिपत्तु सुवदिनं कम्मसु वचनवाक्यं आविठं ॥ ३ ॥ 15

५

जोरु बरवाहं डेवि बंछिपु
 वज्राह्र तं सो एवपय
 तं बारवार कपिबि करेव
 पुण पुण कीकर कीकंरपव
 एत्तिउ रापं कपंरवासा
 वचनमकरवचनंरपाणि
 सरवहकरंदि विमुंरजीउ
 मासा हे मामि सिद्धीमुदेव
 रायुहि कवाहि पुंरंरपव

को किर व विपद गोमिबिहि मयु ।
 कच्छीसुहंरंसेमि कसु बार ।
 विहडिपड कम्मसु सुरेव तज ।
 एत्तेक पत्तु वचनंरपव ।
 वरंरवासा तहु गुणविसेसु । 5
 वचनोउड अदि केसररपणि ।
 वं हंरजीकंमवि विपदि राउ ।
 करिक्कवहहप्यसु एदिउ पव ।
 सेपसंड पुक्कतु रउरपव ।

यत्ता—विमहि उमुहंर डोकर वरर डरर करि पसरर कड ॥ 10

भित्ति तमविधिपमुदे एत्तंनुवरे वीचकत्तु मरि महुपड ॥ ४ ॥

- ४ MBP "विह्र" १ MBP ही पुनरि, १ MBP होह्र ११ MBP पुनरिपे ११ MBP को
 ४, १ M वरिपु १ MBP "वचनकासु" १ MBP विमहु वीउ ४ MBP एत्तंनु मरि
 ५ MBP उमुहंर १ M वरपु पुक्कतु कररपव १ MBP वरपु पुक्कतु कररपव १ MBP उमुहंर
 ४ MBP डड

11 ४ सुवह्र एहि पुतावां पुदे" सुवह्र एहि पुतावां पुदे" सुवह्र एहि पुतावां पुदे"

४ १ वरवाह विचपवति एवमवाह वीचकत्तु ४ १ वरवाह विचपवति एवमवाह ५ ४ वर
 वरवाह कम्मसु ५ ४ वरवाह वीचकत्तु एवमवाह वीचकत्तु ८ वामि हे एहि ।

आरोहणवर्धणताडणाइं
गणियारिफासधसमागएण
रसलालसु मासकणावलुद्ध
सरिविउलविमलजलि कीलमाणु
संगीयगोरिगयचित्तसोचु
णउ पेक्खइ विसयासाइ दमिउं
प्रांयं सप्राविउ प्राणणिहणु
पवसियमहिलसुयहंतसिहेण
वेच्छिळकुसुमसमवणएण
रूवरयपयगह कयखएण
एमेव कयताणणि पडति
एक्केकिंदियवसमुवगयाह
असरियपचक्खरसामिसाह
कपावियदसदिसिवहरसाह

अकुसखयाइं कइवेयणाइ ।
भणु किं ण विदुरु विसहिउं गएण ।
परिधावमाणु संसुहउ मुद्ध ।
धीवरगलेण गलि मिण्णु मीणु ।
णउ पेक्खइ समुद्धं सरु सरंतु । 5
चउदिसैहिं वि वग्गुरवेदु भमिउं ।
वणि चाहै विद्धं हरिणमिहणु ।
तिडितिडियतिडिक्कारवणिहेण ।
दीवुच्छवि देहलिदिणएण ।
ण भासिउ भावइ दीवएण । 10
मोहध सयल सहि खयहु जति ।
एवहु दुक्खु तहं जतुयाह ।
चक्खियपचक्खरसामिसाहं ।
अक्खेवि तं किं अम्हारिसाहं ।

धत्ता—इय सभरिवि मणे आहुउ खणे अमियतेउ मुँवससिउ ॥ 15
तेण समायएण जुवरायएण जणणु सिरेण णमसिउ ॥ ५ ॥

5 १ MBP °ताडणवर्धणाइं २ MBP कय° ३ B सुद्ध ४ MBP °दिसहिं वग्गुरावेदु
५ MBP पावें सपाइउ पाण°, ६ MBPK हय° ७ MBP ककेल्लिकुसुम°, T विच्छिळ कोरण्टक ८ M
रूवरयपरगह, BP रूवरयपयगह ९ MBP जहिं १० M असरिसपच°, T असरिय° ११ MBK दस-
दिस°, T दसदिसि° १२ MBP अक्खमि १३ MBP णिव°

5 1 b °खयाइं क्षतानि 2 a गणियारि° हस्तिनी 3 a मासकण° मांसखण्डम् 4 a प्राएं
प्राय, णिहणु विनाश 8 b °रवणिहेण °शब्दव्याजेन 9 a वेच्छिळकुसुमसमवणएण कोरण्टक-
पुष्पवत्पीतवर्णेन, 10 b भावइ प्रतिभासते 13 a असरियपचक्खरसामिसाह न स्मृता पद्माक्षरखामिनां
पद्मपरमेष्ठिनां सा लक्ष्मीर्यैस्तेषाम्, b चक्खियपचक्खरसामिसाह आस्वादित पद्मानामक्षानामिन्द्रियाणां रसो
रतिमुखं तदेवामिष यै 14 a कपावियदसदिसिवहरसाह कम्पिता भयंता दशदिक्पथा मार्गा रसा च
भूमिर्यैस्तेषाम्.

6

रायण मण्डिं मो मो कुमार
 ककिक्कुसपङ्क तवहृपचरोच
 तुहं रेदि कुचमममरु वंशु
 मं पहेवेव परमायण
 कामिभि मेरिभि मि अणेअणव
 तुह पपपकपरयचंवीर
 मिह कच्छीहक तिह पुवरीर
 महु तवड तवड सो पुवरीर
 हं तुहं मि मे वि छाहं परतु
 यत्ता—तां सितु ससिसरितु अयकपरहसितु महिनाहं सोमाकड ॥

धरि धरणिमाह मंडेयधीर ।
 हं सोसंमि कंयिसममहेव ।
 ता कवर तवड सो मयरिचिपु ।
 तमणियड व बाळरिचापरेव ।
 पं मुर्छा मुंजमि केम ताव । 5
 कुरारिसुअमयपुंडरीर ।
 भासणु कंक्षिचहि सपुवरीर ।
 हह करड रहु मुवपुंडरीर ।
 ठं सिद्धुमि वि रापं ठं वि वधु ।

एहि परिहृविड अरवरणविड पुशु पुशु पय पाकड ॥ ६ ॥

7

परिसेसिबमसत्रहागण
 परिसेसिपकंयचसंयवेव
 परिसेसिपकंयवेसंठरेव
 परिसेसिपसयकवसुंयरेव
 असहरसीरु यकहरु पावि
 दिखंति व इच्छिय पुहर कं
 उकारिचिजिनकरसुमहाई
 पण्डिता मुमिमयजाविधाई

परिसेसिपकंयचसिबहएव ।
 परिसेसिपकंयचसंयवेव ।
 परिसेसिपकंयवेसंठरेव ।
 जायवि देवं अजेसरव ।
 पण्डित अय विरिहुरवसि । 6
 सह अमिपठेवणामव ठेव ।
 सहसु वि अममासिड तपुवहाई ।
 सह सधिसहस रावविधाई ।

6. १ MBPK कोर २ K कोर ३ M केरि वि विरु; BP केरि व कोर
 MBPT कलवि. ५ MBP वि ६ MBP वि.

7 १ K adds this foot in the margin, २ K omits this foot, ३ M कोर
 P "वहवेव but records ४ वहवेव ५ M केरि, ५ MBP कलवि

6 1 ६ वडरे वं पुदि कापु ४ ६ वडरेव वरिवाजम् ८ ६ लुकाव वं महिप; "पुवरीर
 मत्र 7 ६ अविचि देवि वपुवरीर गच्छय 10 तीमाकड वीमव, 11 वव वाकड मत्रा वलव.
 7 7 ६ वमलीड वं वरिवाज.

दिक्प्रक्रियाइ लुचेवि केस
इय राण किउ णिक्खवणु जाम

णाणाणिवाहं सहसाइ वीस ।
सपत्त विलासिणि तहिं जि ताम । 10

घत्ता—पडिय तवचरणु दुक्कियहरणु लेवि थक्क णियजोग्गउ ॥
किउ मणु अप्पवसु कदर्पवसु होतउ खतिइ भग्गउ ॥ ७ ॥

8

णिरुद्धय णिराइणा
विमर्कओ सवासओ
समसिओ तवासओ
णिवारिओ कसायओ
मईहरो पिसायओ
चलेहिं जा ण साहिया
दढ दिही^१ हणति सा
सरतु सो वसी अय
विइण्णवाणरोडरं
णियाहिदेहकंचुयं
महीहरे भयालए
रविस्स संमुहो ठिओ
अहिण्णभूतणगयं
महाखले वि सामिणं

समाणसं विराइणा ।
सभूसणो सवासओ ।
लुओ कयंतवासओ ।
समीहिओ कसायओ ।
जिओ पँहुल्लसायओ । 5
थिरेहिं जाण साहिया ।
परजिया छुहा तिसा ।
सहेइ माहसीययं ।
भरंतरुक्खकोडरं ।
घणागमे वि कं चुयं । 10
हुयमि गिण्हयालए ।
तवेइ मोक्खपथिओ ।
सयाहिरतणगयं ।
णमसिऊण सामिणं ।

६ P कदप्पु वसु

8 १ T विमुक्कणग्गवासओ and adds सवासउ इति पाठे निजगृहमित्यर्थ २ MBP समाहिओ.
३ P कसाईओ ४ MT पिहुल्लं ५ MB दिहिं, P दिह ६ GK यय but gloss अजम् ७ MBPK गिम-
यालए ८ M समुहे ९ MBP यिओ १० MBP अभिण्णं

8 1 a णिराइणा चूराजेन चक्रवर्तिना, b विराइणा वीतरागेण 2 a सवासओ खगृहम्, b
सवासओ सवलम् 3 a तवासओ तपआश्रवम्, b कयंतवासओ कृतान्तपाश 4 b कसायओ क पर-
मात्मा तस्य स्वादोऽनुभव 5 b पँहुल्लसायओ पुष्पवाण काम 6 a चलेहिं चखलचित्तै, b थिरेहिं
जाण साहिया स्थिरचित्तै परीपहेभ्योऽक्षुभितचित्तै जानीहि साधिता निर्जिता 8 a अय अज जिनम्, b माह-
सीयय माघमासे वीतम् 10 a णियाहिदेहकंचुय प्रवाहितसर्पकम्, b क चुय पतित जलम् 18 a
अहिण्णभूतणगय अखण्डितभूमितृणाग्रम् 14 a महाखले वि सामिण महाखलानामप्युपशामकम्

तमो वसुधैवकुतुम्भे	वसुधैव कुटुम्भकम् ।	16
धरेषु पुण्डरीकम्	सिरि"ष्व पुण्डरीकम् ।	
पर्विभोयकाक्षिया	वर्षादिमं यत्र काक्षिया ।	
समिधिरं समारम्भा	वसुधैव कुटुम्भकम् ।	

पञ्चा—सुप्रसिद्धि विषयवत् सा इंसगर विषाद सरीर मर्हिष्ये ॥

जयवन्तजयमास्तु कुङ्कुमकणितु वसुधैव कुटुम्भकम् ॥ ८ ॥ 20

9

पुष्प सौन्दर्यं सुप्रसिद्धि	सौन्दर्यं सुप्रसिद्धि ।	
परमंतिमंतिमिष्यमर्हा	संतिमिष्यं मणि उच्छ्वासात् ।	
विजय इक्ष्मिणी वणि माकप्य	विजय इक्ष्मिणी वणि माकप्य ।	
मसहास्यं कास्तु वि वणि सिद्धि	सिद्धिं वि पश्य सहास्यं ।	
को धरिष्य माव जाहं विमान्तु	तं वदत केम वसुधैव कुटुम्भकम् ।	5
व वसुधैव कुटुम्भकम्	वदत मरिष्य व वसुधैव कुटुम्भकम् ।	
गोपवन्तजयमास्तु सुप्रसिद्धि	गोपवन्तजयमास्तु सुप्रसिद्धि ।	
विजय इक्ष्मिणी वणि माकप्य	विजय इक्ष्मिणी वणि माकप्य ।	
वदत मरिष्य माव जाहं विमान्तु	वदत मरिष्य माव जाहं विमान्तु ।	10
विजय इक्ष्मिणी वणि माकप्य	विजय इक्ष्मिणी वणि माकप्य ।	
मसहास्यं कास्तु वि वणि सिद्धि	मसहास्यं कास्तु वि वणि सिद्धि ।	
को धरिष्य माव जाहं विमान्तु	को धरिष्य माव जाहं विमान्तु ।	
व वसुधैव कुटुम्भकम्	व वसुधैव कुटुम्भकम् ।	

पञ्चा—वणि मरिष्यमास्तु वसुधैव कुटुम्भकम् ॥

वसुधैव कुटुम्भकम् इक्ष्मिणी वणि माकप्य ॥ ९ ॥

11 K वसुधैव कुटुम्भकम् 12 K वसुधैव कुटुम्भकम् 13 K वसुधैव कुटुम्भकम् 14 K वसुधैव कुटुम्भकम् 15 K वसुधैव कुटुम्भकम्

16 K वसुधैव कुटुम्भकम् 17 K वसुधैव कुटुम्भकम् 18 K वसुधैव कुटुम्भकम् 19 K वसुधैव कुटुम्भकम् 20 K वसुधैव कुटुम्भकम्

9 1 MBP "वसुधैव कुटुम्भकम्" 2 K वसुधैव कुटुम्भकम् 3 MBPT वसुधैव कुटुम्भकम् 4 B वसुधैव कुटुम्भकम् 5 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 6 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 7 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 8 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 9 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 10 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 11 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 12 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 13 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 14 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 15 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 16 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 17 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 18 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 19 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 20 MBP वसुधैव कुटुम्भकम्

16 K वसुधैव कुटुम्भकम् 17 K वसुधैव कुटुम्भकम् 18 K वसुधैव कुटुम्भकम् 19 K वसुधैव कुटुम्भकम् 20 K वसुधैव कुटुम्भकम्

9 1 MBP "वसुधैव कुटुम्भकम्" 2 K वसुधैव कुटुम्भकम् 3 MBPT वसुधैव कुटुम्भकम् 4 B वसुधैव कुटुम्भकम् 5 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 6 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 7 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 8 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 9 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 10 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 11 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 12 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 13 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 14 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 15 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 16 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 17 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 18 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 19 MBP वसुधैव कुटुम्भकम् 20 MBP वसुधैव कुटुम्भकम्

10

तहु तेहिं समप्पिउ मणिकरंड
 उव्वेढिवि वाइउ झैत्ति लेहु
 जिह दिज्जते वि परिहरिवि भूमि
 जिह पुंडरीयसिरि धट्टुं पट्टु
 जिह लइय दिक्ख नृवकामिणीहिं
 जिह तणुरुहेहिं जिह पडियाइ
 गउ पट्टु जिह अवरु वि अमियतेउ
 ज जिह तं तिह लेहेण कहिउ
 चंगउ किउ देवें मयणजूर
 चंगउ किउ तासु तणुव्वमेण

उग्घाद्धिउ तेणुर्वरिल्लखहु ।
 जिह जाउँ जोइ महिणाहणाहु ।
 हुउ अमिर्यतेउ तस्साणुगामि ।
 मेल्लेप्पिणु णियजोवणमरट्टु ।
 जिह मडलियहिं मुक्कावणीहिं । 5
 हयकामकोहविच्छट्टियाइ ।
 तुहु पालहि तेरउ भाइणेउ ।
 ता सुहिणा सुहिहि चरित्तु महिउ ।
 जं लइयउ तँवु भवतिमिरसूरु ।
 जं व्रँउ संगहियउ णववण्ण । 10

घत्ता—घण्णउ सो णिवइ परिहरिवि रह अरिहु जेण मणि भाविउ ॥
 णिहिघडदरिसियइ घड्दंसियइ महियइ को ण विहाविउ ॥ १० ॥

11

इय मणिवि तुरिउ संचलिउ राउ
 सव्वत्य रहेहिं ण जाहुं जाइ
 संचारु ण लब्भइ हयवरेहिं
 छत्तइं ण कुसुमइं वियसियाइ
 चमरइं चलति कामिणिकरेसु
 दीसति सुवंसारुढकेउ

दिसिगयजत्तामेरीणिणाउ ।
 जपाणु खलइ मायंगु थाइ ।
 जलु थलु संदाणिउ किकरेहिं ।
 सिरिमइमुहससहरपहसियाइं ।
 णं हसइं रसिदीवरेसु । 5
 णावइ सुपुत्तकुलकित्तिहेउ ।

10 १ MBP °णुवरिल्ल १ MBPT उव्वेढिवि, K उव्वेढवि, ३ K तेण लेहु ५ MBP जोइ
 जाउ ५ MBP दिज्जती ६ M मियउ तेउ ७ B वट्ट पट्टु ८ MBP आमेल्लेप्पिणु जोवण मरट्टु ९ MBP
 णवकामिणीहिं १० MP तउ, B तव ११ MBP वर, K वर but corrects it to वउ १२ MBP
 घरदासियइ महिए

11 १ MBP कुमुयइ

10 2 a उ व्वे ढि वि प्रसार्य, b म हिणाहणाहु चकी 6 b °विच्छट्टिया समूह 10 b णव-
 वण्ण सौवनस्येन 12 विहा विउ विखण्डीकृतो वसित

11 4 b °पहसियाइ प्रमाशुप्राणि

बीडाह मिथिय मंडलिय बंति
 बाजंतु पुणेहिद दिव्यविद्धि
 बलबह वि बलपशु कपिबारी
 बिषसंतयामपुरपुणेहि

महबठ सुरगुहसारिण्यु मंति ।
 भनबहसमायु भनमिपु सेद्धि ।
 संभेक्षियत बलकरबाळभारि ।
 वजु सर्गाह्य कश्चपदिजेहि । 10

पता—बलबठरोहिण्यु पुणेहिदमस्तु तहि सरवर भनबठोह ।

ये रायडु महिय भायडु सहिय भनबठु उवाह । ११ ।

12

करिकरगक्षियमपर्वितुमक्षियु
 मयछछजेपरकरक्षियमक्षियु
 मयरोपक्षबहिमक्षिपिपिजेड
 ठडु तीरि विमुळड छिमिई काम
 बिठंतु मोळभायजपरिफल
 हमबंन जामें पुहंरसपसु
 बाबंत जियेवि मउक्षियकरेव
 कामभिय वे वि उवसमबसेव

मयमिडुबजिसेविवविठडुक्षियु ।
 मयमेसममराहृदयक्षियु ।
 मयबहमुहबीहाविमिहिपाठ ।
 छट्ट सावरसज छुरि वाम ।
 पिसि परिर्ममनु कंठापमिन्व । 5
 छपसड हूमाबाहु वस्तु ।
 छिरिमरपविर्ममबाहुवरेव ।
 थिय बोरिजमुविविजबंनुसेव ।

पता—सुपसिरडुसुमरपरवमुळपरमहृदपरविहि काठिई ।

कंदपडळळव पायुवळळव पयहुपडं पयवाठिई । १२ ।

१ MB वनवत १ K वनविड ४ MBP वनवत ५ M वीजु वजु, B^१ रक्षिण्यु, P रक्षिण्यु

12 १ MBP "कडबगर" १ MBP वनवत १ K वनवत ४ MBP छिपि ५ MBP
 छेवभाळव १ BP परिमपड. B वनवर BP जामेंड. १ MBP विरि १ MP वनवत

11 रद्वि बहर्न कजेवा 12 बहिह कजेवा

12 2 मयबळळव बरेत्यावि—पुनकाळन बर्न करोलीमि पुनकाळनवर बासिल ; उतरीरेमि
 बासिल वन 3 ४ "बलबहविड" पूर्वम् मिदिमिदेव पयम् 5 ६ पनाकाडु वनवहर्न विविह. 9 पु
 त्यावि—पुण्य संविच्छेद विर कुपुनरमि रता पुण्येया मिथिया ये मयुवपुणेया पविधि

13

वन्देष्णिणु भावै चरणकमलु
तं दीसइ भोयणु भुजमाणु
हत्यु वि उड्डुतुं ण होइ दीणु
णिक्खु वि कूरहु दिट्ठि देइ
तिम्मणु गेणहतु वि वभयारि
णित्थं^१ देहं लइयउ यद्धुं दहिउ
मणसच्छहु ढोइउ सँच्छ वारि
उच्चाइयथिरदीहरमुण
उवविट्ठु णिहित्तइ आसणाइ
पुणु दीहु वेलु जिणधम्म सुणिवि
घत्ता—रूवइं मुणिवरह सजमधरह आसि कहिं मि मइ दिट्ठइ ॥

णवर ण सभरामि हा किं करामि विहिं^{१३} लोयणह सुइट्ठइ ॥ १३ ॥

14

तां भासितं विहसिवि मइवरेण
जमलहं पण्णासह पच्छिमिलु
पत्थिव जइवर जाणति सव्वु
गुणकारणु किं थेरत्तु होइ
महु महु^१ जि दीसइ सयलुं कालु
आयरियउ किं परिणयवपण
महु दमवर दमियाणगलील
अणु वि एयहि तुह माउयाहि

तुह तणुरुह दमवर जलहिसेण ।
सुयजुयलु ण याणहि किं गहिह्लु ।
ता चवइ णिवइ परिगलियगव्वु ।
जरैणिवु ण महुरत्तणहु जाइ ।
तथुं तणुरुहेहिं मई मोहजालु । 5
कम्मु जि वलवतउ किं वपण ।
गयमवइ समासहि सामिसाल ।
जइपुगव चक्काहिवसुयाहि ।

13 १ MBP सरसेसु णीरसेसु वि. २ P उड्डु ३ P णउ ४ M दिण ५ K सिणेहु.
६ MBP णिरु णिविवारि ७ MBP णित्थं ८ MBP थहु. ९ MBP जगि महिए १० MBP सय.
११ MBP सच्छ १२ MBP मुत्तभोजु १३ MBP विहिलोयणह

14 १ MBP तो २ B जइ णिवु, P जरु णिवु ३ P महुर ४ M सयल ५ MBP तउ.
६ MBP महु ७ MBP किह परिणयवसेण, T परिणतवयसा ८ MP भवहिं

13 ६ तिम्मणु व्यञ्जनविशेष स्त्रीचित्त च 7 b महिउ तक्कम्

14 1 b जल हि सेण सागरसेन 5 b मइ मयि 6 a परिणयवपण परिणतवयसा

आयेद्युपेदियमहचराई
विरजम्मु कइत्तु माई गइउ भैह
रिसिया पइत्तु पेरिचसचायु
आयो सि वप्प तुई अयरआहु

अयमिसाकंपजकिंकराई ।
किं कारणु ता अजय साहु । 10
अयेईम्मु आम भंधिभि^{११} विपायु ।
आमेण महाबलु बळसचाहु ।

पत्ता—विह अण्यगिरिहि अळयाउरिहि सारुवुई संवाहिउ ॥

मुउ अयरहिचर सुबिसुअमर सीअणुअहि पसाहिउ ॥ १४ ॥

15

आयो सि रेह अहिउंसिउ कोउ
उहि मरिभि मरैतरि पँहु आउ
पुणु कइह साहु मयमावमुई
यहवरसुप अणसिरिसुवइपसु
॥॥ हौंकिरिभि अविचयीय
सा मय सावयवउं किं सि केवि
आमेअ सर्यपह अविभि तेसु
सिउमर सर सुवरि मअहु माय
अइवीआमपगिरिचिचहि
अळमवइदेसि ईसा समिअ
गउ अरपहु असावसरसमाउ
विपअयउविपहि विपअसुविवासि

ईसाअअधि अविउंगु कोउ ।
तुई अळअंगु मेई तवउ ताउ ।
सुभि सिउमरअळमरअअंगु ।
अळसअु केरेपिअु मुविअयसु ।
रिहिवासयेअ अळसअु बीअ । 8
इई देवअधि तुअ देवि ।
॥॥ अरपाअहु पूअ पअु ।
आअअहि मिअपअंगु ताउ ।
पुउमिअिअ अयअविउंविमेहि ।
हौतउ अरअर आमेअ गिअु । 10
अणुअुविभि पंकपहि अउउ ।
हुअ अणु विसाअअुअमअसि ।

पत्ता—ता उहि मरिअरअ अळवीअरअ पीरवईअु भासिअ ॥

अण्परि मायअो समयअो अंगु उउ आवासिअ ॥ १५ ॥

१ M अरपिअयसु १ MBP अळमअु, K अळमअु but gloss अळमअु लं ११ E अरपि
15 १ MBPK अहिअसिअ १ P अणु, १ P अणु ४ MBP अळ अउ, ५ MBP अ
१ MBP "मुउ ४ MBP "अउ ४ MB अउअणु १ MB अरपिअु १ P अविभि ११ P अउ
११ BP अउअमिअु GK note this as p in the margin १ अउअमिअु ही अउ अउअमिअु
T अउअमिअु अविअोपी अउअमिअु वा अउअमिअु ११ M पीरवईअु; BP पीरवईअु

11 अ अरि अउअणु अरिअयसु

११ I अ अरं अळ १० अ अउ अउअ अविअु अविअु 11 अ अउअ अउअ, 12 अ
अउअिअ सि अउअअयसु ११ अ अउअअरही अउअअरअ

16

तंहि णिवसइ पहयरिणयरिणाहु
 चारणमुणि णहयलि ओयरंतु
 गिरिवरविवरंतरसठिण
 दिट्ठउ पुंलि पिहियासवक्खु
 संभरियजम्मु हउं मदभाउ
 गउ सव्भहु पुणु अलियलि जाउ
 मणु जाणिविमुणि वि समीउ आउ
 थिउ सणासणि मूंगु णिक्कसाउ
 तो^१ थाहि भणिवि महुरे सरेण
 पक्खालिउ जमिकमजुगु जलेण
 गुणवतहु सतहु कयउ माणु
 तं पुच्छिउ ईच्छिउ णियहिपहिं
 सो ताह तेण दरिसियउ पुंलि
 ईसाणि दिवायर णाम तियसु
 गउ महिवइ मोक्खहु खविवि कम्मु
 घत्ता—मुणिपयपोमरय कालेण मय चमुवह मति पुरोहिय ॥

कुरुभूमिहि मणुय हुय पीणभुय णाणाहरणहिं सोहिय ॥ १६ ॥

17

मउ मति कुरुहि गइ आउमाणि
 उप्पणणउ सुरु ईसाणसणि

कणयाहु णाम कंचणविमाणि ।
 विण्णुरियविविहमाणिक्कमग्नि ।

16 १ K तिहिं २ G तारोलियं ३ P णिम्मल, ४ MBP सभरिउ जम्मु ५ MBP सुब्भहु,
 T सम्भहु नरके ६ MBP भिगु, ७ M तो ठाहु भणिवि, BP तो थाह भणेवि, K भो थाहि भणिवि ८ M
 पुणु कमजुउ जलेण, BP कमजुयलु णरेसरेण, T कमजुगु सरेण ९ MBP इच्छिय १० MBPT इति
 ११ BPK सुरवरं १२ BP तहिं

17 १ MBP मुउ,

16 1 a पहयरिणयरिणाहु प्रभंकरिनाथः प्रीतिवर्धनः 4 a पुंलि व्याघ्रेण, पिहिया सवक्खु
 पिहिताभवाख्यः 6 a सव्भहु श्वन्न नरकम् 7 b धम्मणाउ धर्मोपदेश 10 a सरेण जलेन 13 b
 सुदि लि मुखपरपरा 15 b तिणि सेनापत्यादय

देसियह वारमवधि पदवर्षकु
 नेजाणि पहायक पदवर्षति
 वत्तारि वि विष्णु मि विहिषमेव
 परं चुर पुणु इवा जत्तु जेम
 सहस्त्रेव विविमहहि जयति
 महवद महवद तुह मति राय
 ह ताय पहायक मरिचि वद
 सजावद तरह तिष्णतेउ
 कजपाहु निवत्तु चुर करीं मजिउ
 वा ण्डु वाप लो विष्णुमुदि
 जायद पुरोहवद गळियसकु ।
 हुउ विष्णुदिति दीविचदियंति ।
 वैर्षति तुम्मु परिवारदेव ।
 भाहासमि विमुचहि तेत्तु तेम ।
 सारिरसजो हुउ पुणवपचि ।
 को पावद वयदु तकिव जव ।
 मज्जवहि मर्कपत्तु पुत्तु जाउ ।
 पणवदु सुमुमाउ वमवद । 10
 सुपकितिमज्जतमर्हं जविउ ।
 मार्कपु पुरोहिद विमममुदि ।

पता—भमर पदवर्षक रंजियवद कसियवमावदु जायउ ।

वलयवविग्रहणा विग्रहपरणा वलयवदहि सुउ जायउ । १७ ।

18

घजमित्तु मडिक्कमज्जिममित्तु
 एयह छह वज्जिमिहयां
 पणवद वद किक्क समरमीम
 विमुचवि मवावमि विमिहयां
 पुणु मज्ज गउ मयवत्त विमम
 वत्तारि वि जवद व मावमरंति
 वउ मज्जु केति जउ जमु पिंनि
 कि कारणु कहहि मुविमवत्त
 किक्कद मववा तुह परममित्तु ।
 तुम्हं सप्पाउ समापपारं ।
 मिरिह गणी साहम्मसीम ।
 छ वि विज्जितविमुच विमिह विवार् ।
 मज्जु कोम गानुत्त वउम । 5
 मज्जति विज्जव व वजि वरति ।
 जवियाजव तुह मासिउं मुज्जि ।
 ता मज्ज सूरि तुंवि मो वरिह ।

१ MBP मज्जिक्क २ P वत्तारि वि विज्ज वि ४ B वेवम ५ MB मावमिहयां व पुणु P मावमिहयां
 ६ K मावमिहयां हुउ १ MBP कहहि

→ 18 १ MBP विमिहयां २ MBP विमम ३ PT वीत्तु MBP जो तुवि

१७ ४ वदवदति मज्जिमिहयां ९ केव जवहि मावमिहयां १० केवमिहयां वद

१८ ६ केवपुणु मज्जि ७ केवविज्जव व मज्जिमिहयां

इह देसि हँरियणायउरि रम्मि
तहु धण धणवह सुउ उग्गसेणु
पहु कोट्ठागारि अइक्कमेवि
उर्वणेतु पणयसीमनिणीहिं
मुउ कोहँ जायउ एत्थु वग्घु

वणि सायरवत्तु विविच्चहम्मि ।
सो कामुउ कामिणिपायरेणु । 10
भर्त्तइ भरणइ वँलि मट्ट लेवि ।
वधाविउ राए णिययणीहिं ।
ओहँच्छइ मइ मणिणवि सलग्घु ।

यत्ता—होंतउ सूरउ चिर माणरउ विजयणयरि बुँदिए किसु ॥

महँणँ जणिउ जणँवइमुणिउ णिव वसंतसेणाहिं सिसु ॥ २८ ॥ 15

19

हरिवाहणु णामँ बूढमाणु
णरणाहँ णदणु भणिउ एव
त णिसुणिवि धाँइउ चवलु डिंभु
मुउ एत्थु पहु हयउ वराहु
उद्धयधयमालापचवणिण
वणिवरिण कुवेरँ जणिउ पुत्तु
वहिणिहिं विवाहु किज्जइ धणेण
वच्चिवि चामीयरु णियउ सल्लु
सुउँ मायारउ हुउ एत्थु पहु
णायारि णिसुणि णिव पुव्वयालि
होंतउ कटुवि लोँलुयउ णाम
पारमिउ जिणहरु पत्थिवेण

टप्पधु समट्ठिरि कीलमाणु ।
माणेण परमुहु होंति देव ।
सिरि लग्गु सिलामउ भवणसभु ।
पुणु कहइ साहु अँच्चतसाहु ।
कइ आसि जम्मि णयरम्मि वणिण । 5
पणइणिहिं सुवत्तहिं णागदत्तु ।
भासिउ मायइ ता सा अणेण ।
ता तहिं वि ताइ तहुँ गहिउ दव्वु ।
वणि मँकँहु माणुसमेत्तदेहु । 10
सुपइट्ठियपट्ठणि तोरणालि ।
दियहेहिं णवर रामाहिराम ।
कारवहु पण कारावणण ।

यत्ता—जुणउ रायहरु तम्हाँउ तर लेवि वइइ पुर परियणु ॥

इट्ट विसट्ठं जहिं सहस सिं तहिं कट्टेइ पेच्छइ कव्वणु ॥ १० ॥

५ MBP हरियणाउरि पुरम्मि ६ BP वत्थाभरणइ ७ MBP वलिमट्ट ८ MBP उवयट्टु, T उवणेतु
९ MB तुह अच्छइ, P हुउ अच्छइ १० MBP तुदीह ११ MBP मह णदँ १२ MBP जणव्वणं
19 १ MBP वाविउ चवल २ B अवट्ठत्तसाहु ३ MBP त गहिउ ४ MBP कट्टु, मुट्टु
५ MBP मक्कहु माणुसु ६ MBP लोँलुउ ७ M तुग्हाउ मरु ८ B विमिट्ट ९ MB कट्टु, P कट्टु

12 b णिययणीहिं वरजाभि 13 b ओहँच्छइ कर्म्म स्थित

19 ५ b कइ वानर 9 a मायारउ मायावी 10 a णायार नुल 11 a कट्टु वि काद-
विक, b रामाहिराम हे रामाधिराम वज्जव 12 b णण अनेन कादविकेन 13 तर शीघ्रम,
14 विसट्ट स्फुटिता

निमुनेषिणु महुमहुमगा
उपमत्त पदनि न भउ न रोमु
पद डिणु वाणु मरि नउ इमेरि
पहुमेणमापसदईहर्णि
अट्टमइ अमि मुदु डिणवरिदु
मिगिमइ होमइ मयमगाउ
मुरणमसुहाइ मवापिहनि
ममवारिमुदुमजयेडण
वमकेम उअमलउ इयमिरेण
घरिय मरिणि म्वापयमलेण
मपत्ता दुमिणं घणयरकु
पत्ता—मृगैर भे दुमिणि नरि निमि पमेयि मरुभमि पदु निमाउ ॥

वरियट्टावरिणि पसरियवरिणि भयंनमविपदिभउ ॥ २१ ॥

मुयंरेषिणु मय जम्मंतराइ ।
मृदमाले अज्ज वपति दोमु ।
पईरंउयगविमददमेहि ।
पग्माउ वयु कुरमंइणीहि ।
होमरि पयजुयणांमियमुदि ।
पहिलउ जि दाणनिगयग्गेउ ।
प तुदु मुदि होदपि मिदिमिहि ॥ 10
जिणणाइभम्मअणुगाइएण ।
न निमुनिवि पणयिय पदुयरेण ।
मय रिमि पदयर पदपंमणेण ।
मममिनिवि वत्ताणि वि निरकु ।

15

22

छलपदु व नणुकातिइ पमणु
माणुधनि पदयणिन्यदुहिणि
पणमिय माणुय जामाउण
आलिगिउ राण मार्यणिउ
मिलियउ लल्लिमइमिमिहउ
णियरभुणि मन्निनियमिरेण
मामिचणणुणि मणिहिउ मारि

श्रियहदि पुटमिनिणि पचणु ।
आलोइय नेण जयंति वदिणि ।
मविरयमणेहपमरियभुएण ।
अयिउत्तु पात्तु पदमियमुदुत्तु ।
न मगानइजउणाणइउ ।
नहि नेण वज्जजंघं णियेण ।
मरि वि फिउ विउदणयाणुगामि ।

6

१ MBP °दाणल डि व सवदि २ B ककट्टकम्प°, P कन्तोल्कप° ५ M पदुमेण° ६ MBP °दाणादि ७ MBP °णावियपि° ८ M गानु डि° ९ PK पदवमल° १० M मगदयं कम्पि
कहि निमि निवेयि ११ मगदये पमरि मरि वणि निवेयि, P मगदये पंमिनि मदि निव मंदिनि

22 १ M गगदयं MBP अवलोइय २ MBP पविप ४ MBP जामाइएण
५ MBP °मिमे° ६ MBP °नाट्टादु ७ MBP अविउत्तु वि T अविउ इमि पाउउपयमेवार्प-
८ MBP ना निवभुदि विविप° ९ MB विपु°, P विपुदु

6 ६ °कट° मुदु

22 ६ ६ मुदुत्तु मुपाउम ७ ६ विउदणयाणुगामि विदणयणुगामि

निदबद्ध विषसाधिवरु वेतु मुदि संमाणिय संधिपद कस्तु ।
 विचार बसाह विधेतिथिहार ओगाई तुमारे परिधिठिवार ।
 पवित्रकस्तु असस्तु वि धवहु बीड धिद रजि यवधिणि पुंडरीड ।
 धर्मणि पुणु धर्मसाह माहउ सहुं कतह उर्येकियु माहउ ।
 सेहुं मिथवउठे ससिमुहव धिद रजु करंतु सुदी सुहव ।
 का एम मसयवहुं वृह गिदि यवहु कामु सामान्यसिद्धि ।

यत्ता—विर पञ्चकृत्य निधर्वसधय सुपुदिम का पार्सधर ॥

अथनममरहरण वितीर्थे रणे पुष्कयन का कपह ॥ २२ ॥

इय महापुष्कयन तिसद्धिमहापुदिमगुणार्मकार महाकहपुष्कयनविरहप
 महामन्यमर्यादुमांभय महाकह वज्रबाहुवज्रवर्ततववरनकरम
 नाम पंचशीसमा परिच्छभा समजा ॥ २३ ॥

॥ सधि ॥ २५ ॥

१ MP अलिवाह ११ MBP समधिधि १२ BP कपुल १३ MBP कपुल वेतु १ B omits this foot १५ MBP महापुदिम १६ P वितीर्थे

11 & कपह कपुल 12 कपह कपुल कपुल 13 कपह कपुल कपुल

XXVI

कामभोयसुहृत्सवमहो तद् वसुमद्वहि काह वणिज्जड ॥

ज जं चिनइ किं पि मणे ते न मयलु वि जणि मपज्जड ॥ ध्रुवक ॥

I

जकम्बपको दद बलहालिगण
उच्चओ मंचओ चारुमेज्जायल
उण्हय भोयण तुप्पघागहर
पुव्वपुण्णेण सच्चं पि संजुत्तय
चंदण चंदपाया पिया गेहली
दाहिणो मथरो मारुओ मीयलो
बल्लरीमंडवो पेमैजुत्तो सरो
थड्ढंथड्ढं दहिं सीयं पाणिय
फुल्लियामाकयं वोहधूलोरओ
णीरवारामुयतवुवाहज्जुणी
णिगालं मट्ठिणिक्खियं मूयलं
इट्ठगोटीविसिट्ठेहि विण्णाययं
विज्जुमालाफुरंणं णह टिप्पह
दीहरे कालओ जाव वोच्छिण्णओ

मालइमालिया कुकुमालवणं ।
आवरोहारि सोरुहं यणाणं थलं ।
गच्छओ कंचलो लण्णरथं धरं । 5
मीययालमि तेणेग्गिं मुत्तय ।
मल्लियादामयं तारहागवली ।
रुक्मकीलाणिओ पल्लवो कोमलो ।
मीयणंदोलणालीणओ मीयरो ।
उण्हयालमि तेणेग्गिं माणियं । 10
मत्तमाऊरवंदस्स केयारओ ।
मगया सुहवा पासि सीमंतिणी ।
धावमाणं रयाल पणालीजलं ।
टिप्पगंधवय कच्चयं पाययं ।
नस्स मेहागमे त पि सोमवावह । 15
गेहण ध्रुवओ नाम से टिण्णओ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

धेनववल्ताश्रयागामचलस्वितिकारिणा मुहुर्ब्रमताम् ।

गणनैव नामि लोके भरतयुगानामरणा च ॥ १ ॥

GK do not give it

1 MBP उच्चओ = M उच्चओ, P उच्चओ = MBP उच्चओ & GK नारओ but glossed
कायु : MBP पोमपुण्णो & MB यदयदु, P यदयदु = MBP सीयल & M रयाण & MBP
वोरीणओ, T वोच्छिण्णओ

1 4 b आवरो हारि स्थूलोन्न मनोज्ञ च, मोह उप्पयहितु 9 b मीयरो धीकरो जल्लवा,
11 b माऊरवंदस्स केयारओ मयूरचन्द्रस्य केकारव 12 b रयाल मवेगम

सोचसंचारि धूमेन तावत् हर्षो
कारणं मय्येषो किं जया कंसस्य

संपर्कं सज्जनं जीभो यमो ।
 दोह मैत्र्ये सिरीसं पि भावकव्य ।

मत्ता—अङ्गुलीवसुरास्यहो उत्तएकुरहि एमममर्हति ॥

मरिचि बहुषद मधपरिड डयरि मणिदु मज्जवर्णारिडे ॥ १ ॥

10

2

अथवास्तुविदो गच्छन्तु जीवन्तिषां
 वृत्ताभिर्यमुद्वाहं विप्रसंतं
 सप्त सप्त दिक् गव ईशंतं
 सप्त वक्रिय पर्यवर्त्तय ईशं
 पुष्टु सप्तं विप्रां संजायं
 अथर्वं सप्तं अक्षिषिहविष्टु
 अश्वं सप्तं विप्रं पोषं
 तां विवाहयन्तुं गच्छन्तु
 सो वि गच्छन्ति विप्रोसति

गाढं विद्धि वि मेधियौतुहचरिणम् ।
 कनकमलगुणियात्र पिबेत्तम् ।
 पुण्ड्रं वि पुण्ड्रं वि उतुतपतेतम् ।
 अचरोप्यह वरकेभि करेत्तम् ।
 गर्ग्यकुसुमाई परिण्डुतुतवाव ।
 निदिहकककककककककककक ।
 ककककककककककककककक ।
 ककककककककककककककक ।
 इय भूमिर्त्तं रिखीर्त्तं इयहरिणम् ।

मत्ता—अहिं बामोयएधउभियल्ल पाणिं मिदुं जारं रसपुत्तु ॥

मन्त्रिमयकप्यमहीकहर्हि चिठं रवि मन्त्रादीर्म ओषधु ॥ ९ ॥

10

3

अहिं अभिबन्धोक्त
अभयानु हर्षति

ब्रह्मेय ब्रह्म ।
चिद्विषय इति ।

1 MBP કલેક્શન 11 B કલેક્શન વિવાદોચ્ચ P કલેક્શન નિર્દોષ વચાનો ધર. 1 MBP "દાખલો
12 MBP "વારિયો

2. १ B अभिनवप्रवृत्तपरिचय १ MBP विषय T का कथावि १ MBP का १ MPB का
कथोपदेश; T का कथा कथो ५ B अभिनवप्रवृत्त १ MBP भाषाविषय विविध MP विषय १ विषय
T विषय भाषाविषय

111 ७ निरीक्षक कीपुत्र पुत्र या 18 "हृत्पुत्रवही भेटे।

३. कं अ पवपवमई वरामि नकयामि च; के वरयेति जीनकोमा ठ के "कुवली" मयी ११ पिठ
मन्त्रादिभ्यः

महसहिउ पेज्जु

तूरंगतरु

केऊरु दोरु

गेहंगुं गेहु

दोयति तुंग

भायणविहसि

जे भोयणक्क

भोयणसयाइ

उचणंति ताइ

पुण्णाय णाय

णवमालियाउ

मालगफुरुह

हयतिमिरभाउ

मज्जगु मज्जु ।

भूयंगु हारु ।

वच्चगु चीरु ।

ण सरयमेहु ।

तरुभायणंग ।

दित्तगदिसि ।

ते विविहभयग ।

रत्नसगयाइ ।

जणु महइ जाइ ।

वर पारियाय ।

अलियालियाउ ।

दोयति निर्ह ।

दीवंगुं दीवु ।

5

10

15

घत्ता—णिञ्जु जि उच्छेवु णिञ्जं दिदि णिञ्जु जि तगुतरुण्णु णवल्लउ ॥

भोयभूमिरहमाणुसह ज ज दीसइ तं त भल्लउ ॥ ३ ॥

4

ण दुज्जणु दुसियसज्जणवासु

ण छिक्क ण जिमणु णालेसु दिट्ठु

ण रत्ति ण वासरु यंतु ण धम्म

अयालि ण मरुच्चु ण चित्त ण दीणु

पुंरीसविसग्गु ण मुत्तपवाहु

ण खासु ण सोसु ण रोसु ण दोसु ।

ण णिह ण णेत्तणिमीलणु सुट्ठु ।

ण इट्ठविश्रोउ ण कुच्छिय कम्म ।

कयाइ कहिं पि सरीरु ण झीणु ।

ण लाल ण सेंभु ण पिंत्तु वि डाहु । 5

3 १ MBPKT मयसहिउ २ MBP भूसंगु ३ MBP केऊरु ४ M वच्चग ५ MBP गेहंग ६ MBP °विहसि ७ MP भोयणेक्क ८ P निरह ९ MBP °भाउ १० MBP दीवगदीउ ११ MBP उच्छउ १२ MBP णिञ्जु

4 १ MB दुज्जण २ MBP ण रोसु ण सोसु ३ MBP णालस ४ M णित्त ५ MBP वण्ण, T'धण्ण ६ MB भिञ्जु ७ MBP पुरीसुसग्गु ८ MBP सिंभ ९ MBP पित्त ण डाहु

3 8 a महसहिउ हर्षसहितम्, पेज्जु पातयम् 8 a °वि हति विभक्ति भेद 9 a भोयणक्क भोजनाख्या 14 b निरह निर्दोषा

4 3 a र्वंत्तु भ्रान्तमन्धकारं पार्ष च

न रोड सँ सोड न सेड बिसाड
 छैरुन सबकपण माचन विण
 मुहाड बिपीसिड सासु सुयंभु
 तिपल्लपमानु थिरागनिबंभु
 न बाड न मारि न थोडबसम्भु

घटा—बिहि मि ताहँ तहि संडियहँ पळमेकरणमासुहँ ॥

मुँजंतहँ बाजासुहँ आहँ कालु बिहँजेहनिबंभं ॥ ४ ॥

5

तहि जि परहरपोरकर
 पतमोबमूमीमथेन
 समहिजेन मध्यंतपन
 कासु बि मासिबसम्मपहो
 देबहु दीविबविप्यहो
 पुष्पमवतड संमरिड
 थिड थियमनि का बिमह
 ता पण्ड कालवहुपसु
 पंतु तेन हकारियड
 सीसे सीसेन जि मेविड
 के तुम्हँ कि भागमसु
 महु बहर मेहुतिपड

घटा—करणहुँ तुहुँ अकपाडरिहि होतड नासि महाबसु पण्ड ॥

तहणहुँ हतँ सईपुहुँ तुहँ मंति मंतमप्यावविधाण्ड ॥ ५ ॥

किमेसु न बासु न को बि बि पडे ।
 भगण सुमण समाच जि सण ।
 कलेबरि बळसमट्टिपंभु ।
 करीसँर केसरि से बि हु बंभु ।
 अहो कुबमूमि बिसेसर सणु । 10

सहँकाए बाय नर ।
 बळबंभपणबळवेन ।
 हुरैतकसिरि देव्यंतपन ।
 कळेवेरै समापबहो ।
 थियनि बिमासु पविप्यहो ।
 सँ अकिर्यमेरैचरिड ।
 मचबिधेयमावकड ।
 लोपरिड बहभिहु थिमसु ।
 कडपसनि बरसारियड ।
 साबिबपचाय विन्मविड ।
 किहँ कि तुम्हँ बचरि मसु ।
 ता शुक्मुनिजा बोदियड ।

10

१ MBP न रोड न सेड ११ MBP कोह ११ MBP add after this सुत्रि (B नुत्रि)
 P मुहये) न थिलिब मासिब (B नमसु न) रोम हुरैतु हुमि सिसेविबकम (B "कम) १२ MBP
 करन १४ M कोरि १५ MBPE मुकसह १६ MB बहमेहलेपकड

5 १ MBP बहणह नि १ MBP हुरैतविहि १ MBP नमँ देन P "देव ५ P नि
 १ MBP कि नमर हनर

9 = हुरैतु हुण्ड 11 = विसेसर कलिसे

5 10 = सीसेन विन्मवेन 12 = मेहुनिबन रोडबंभु

णिदाइ भुत्तो मि	विद्यन्तधिसो मि ।	
जइया पुयईहि	सिनिणंतरे तीहि ।	
होयप्प दुग्गेज्ज	तइया मण तुज्ज ।	
संसारहागइ	जिणयणसागइ ।	
सिद्धा रिस्सी जेहि	दिण्णाइ त तेहि ।	5
होऊण ललियगु	मोत्तूण दिव्वगु ।	
भीमारिणिण्णासि	भूमीसु णो सि ।	
मुणिदाणनुत्तीइ	घट्टपुण्णमिन्नीइ ।	
तुत्तु एत्थु जाओ मि	णाणेण णाओ सि ।	
संयधिओ होमि	किं नेय जाणामि ।	10
रगवइविओण्ण	मइ मुक्कभोएण ।	
किउ घोक्क तवयरणु	इदियच्छिंहाएरणु ।	
सोहम्मि सोहालु	हुउ ठेउ मणिचूलु ।	
सइपहविमाणम्मि	हुक्कवावसाणम्मि ।	
इइ जंउदीवम्मि	पुव्वे विंदहम्मि ।	15
पुत्तपल्लहि मेइणिहि	पुरिपुडरिंकिणिहि ।	
पियसेणरायस्स	पसरनरायस्स ।	
कयणाहणेहम्मि	सुदरिहि देहम्मि ।	
जाओ मि इ भइ	आलौविणीसइ ।	
पीडकरो णाम	सुणि रंमिणीकाम ।	20
अलिमलयणिहक्केस	पीडसरो पस्स ।	
मज्झाणुओ होइ	दिव्वो महाजोइ ।	

6. १ MBP विहरति २ MBP हा यण ३ MP add after this णयणेहि दिट्ठो सि, नेह गओ तो सि ४ B °पुहा°, T °छिहा° ५ MBP आलावणा° ६ MBP पीडकरो, ७ MBP कामिणी°, T रामिणी° ८ P ईस

6. 12 b °छिहा° स्पृहा वाप्या 19 b आलाविणीस इ वीणासदृशशब्द 20 रामिणी° श्री,

घटा—विषय विषय जहाउद्धो विगय विविज वि विषयवरासहा ॥

जाया सीम सयपहो अरहंतहो संतारिधिनामहा ॥ १ ॥

7

अयहिजावि वारण संजाया
मर सम्मनु असेहि पमाथे
अरिप अरिप कि संरु न किज्जर
गुणवंतहु सोरु वि वंकिज्जर
असुरेकचबद जनु न विपप्यर
वेजावधु मयउ वप्यहं
मिप्पु गुप्पु जो धनु कहिज्जर
बहुइ बहिपुत्रिपमेयर
समयपेयकोरपमृवत्तनु
अप्यउ पुइयपगर्थविपवउ
घटा—वेरं किज्जर जीपरेय मप्यउ पद सवगु वि जाविज्जर ॥

हुम्मर जेय विरंतु पनु ठं करवामु न देउ मविज्जर ॥ ७ ॥

8

सवा वारिरसा
मवा विस्तुखो
समाहो समामो
न सो होइ देवो
पडे जस्त पञ्च

मवा मंजमरी ।
सवा सपुहुहो ।
सदातो सदाभी ।
नं रो सुखमाथो ।
महु जस्त पेञ्च ।

7 १ M अलवि MBP नि रोनु. १ P कनुइ ५ M देनु गुडउय P देनु गुडउय ५ B
ठंविबहो. १ MBPT "पु ५ MP गुमिज्जर ५ MBP "वपहि वउउ T वपविरउउ १ MBP
वोपववा

8 १ P मवि मरी १ P मरकुहो १ MBP छव गुण"; T छव व मय देव

१ ६ घटा वि वि ना गहो वउरुतउमक कर्मविगकउउ न

7 ७ अवा हि मरिदेवेउमवमु ७ ७ "वि व ७ विगलेन 7 ७ अयविद्रि वहु मिप्पमरेववि
मरं 10 ७ गुइयवव व वि वउउ पविउरी आने वणि ७ वि व इति—वि व कने इति वउउ अरि
७ ७ ७ व व व व व देव

चङ्ग जस्स गेहे
गुरु सो वि हा हे
सपावं सपावा
ण गच्छति सग्ग
पउत्ता महता
विसस्सैसावि हारे
पमोत्तूण वेयं
जिणिंद अणिंद
विदु धीयरोसं
धिहाऊण एक
परो को हयारी
तिणा जो पउत्तो
अहिंसापयासो

रई जस्स वेहे ।
जगे मदमेहे ।
णवता विगावा ।
ण वा तेऽपवग्ग ।
ण कायस्स चिंता ।
ग्वमा होइ भारे ।
रग चइणतेयं ।
सुरिंदोहवद ।
अहिंसाणिघोस ।
णयाणीयस्सकं ।
जगे मोहहारी ।
असद्येण चत्तो ।
वियाणागमो सो ।

10

15

घत्ता—पँतीय धम्मु दयार्षस्सु रिसि गुरु देउ जिणिंदु भडारउ ॥
लइ लइ तुहुं सम्मत्तगुणु मइं अक्खिउं संसारहु सारउ ॥ ८ ॥

20

9

भो ललियगत्त
सइहसु मित्त
छइव्वभेय
पंचत्थिकाय
णाणाइं पच
रिसिवयइ पच

भो धवलणेत्त ।
तच्चाइ सत्त ।
छज्जीविकाय ।
चउं सुरणिकाय ।
गैइभेय पच ।
गिहिवयइं पंच ।

5

४ MBP तस्स ५ MBK विसस्सावहारे, P विसस्साहारे ६ MBP मोहयारी, T मोहयारी मोहदारक

७ MB एत्तीय, P पत्तिय and gloss प्रतीत्या ८ MB °पवह, P °पह

9 १ K adds this line in the margin but scores it out २ MBP सुरचउणिकाय
३ M गयभेय

7 a हा हे हा कष्टम् 8 b विगावा विगतगर्वा 9 b अपवग्ग मोक्षम् 11 b ख मा समर्था. 12 b
वइणतेय गरुडम् 15 b ण याणीय° नमनार्यमानीत 16 a ह यारी विनाशितकर्मासाति . 18 b वि या-
णा ग मो सो विजानीहि स आगम 19 पत्तीय प्रतीत्य , अथवा प्रतीतिं कुरु

छत्तैसमाध	सुनि तिष्ठि गाव ।	
तेरु चरित	सुनि वि तिष्ठुत ।	
जबविह पपत्त	वह धम्मपप ।	
सत्त मव सिद्ध	मप वद्ध बुद्ध ।	10
अप्पागुवाड	अप्पागुवाड ।	
अरपाभिघोड	अरपाभिघोड ।	
सं कहिउ तेण	सुनिपुंगवेणे ।	
भित्तुपिणि कमेण	तं गहिई तेण ।	
अजेण जेम	अज्जाह तेम ।	15

यत्ता—विह सद्धंअवचरेण कोउचरेण वि तिह पडिबन्धनं ।

वायववरकणिरिउचरेणं सम्महंसु सुनिपा विष्णुहं । ९ ।

10

असिप बविप मविपवरबन्धे	गव पिसि पंत्तयेणि बहमन्धे ।	
कुञ्जिचवाहुतवत्तु ते किंकर	महवरार वत्तारि सुत्तर ।	
तउ करेवि जाया विरवज्जहि	अहविमाणि हेत्तिमगेवज्जहि ।	
छेयसाव अहमिंसुरत्तणु	यत्ता पुण्यपहावपुत्तणु ।	
वज्जैरंणु सह सिरिमह अज्जाह	हे वि मप्याहं समंविपपुत्ताहं ।	5
हुवे ईसावकपि बव सुरवव	सिरिपहमंविदि वामे सिरिहव ।	
तहि मि कपि कुवेहुसमप्यहि	समंविधि सुरोहि सयंपहि ।	
विजवववार्तिवववविसे	वापिदिगु विदेवि रमंते ।	
हरे अमव सयंपह वामे	लो कवेण व विजिह वामे ।	

४ MP एवमं सिद्ध ५ K "पुन्ये ६ B सिद्धमि P सिद्धमि ७ MBP मविह MP एवमं
अवचरेण B वद्धवचरेण ९ MP "विष्णुहं

10 १ P वद्धये २ MBP अहमिंसु ३ MBP वज्जैरंणु सिरिमह तह अज्जाह ४ P वद्ध
५ P वद्ध ६ MBPK वज्जैरंणु

9 7 ३ सुनि वामेहि 11 ४ अप्पागुवाड कोउविज्जणु, ६ अप्पागुवाड कर्मपुण्य 12 ४
अरपाभिघोड अरपाभिघोड 17 अवि ति हं वज्ज

वर्ग्यचरु वि णरु मुउ ललियंगउ णिलइ मणोहरि हुउ चित्तंगउ । 11
 देउ वराहचरु वि सजायउ णामे कुडलिल्लु सुच्छायउ ।
 णंदविमाणि सरयकदाहइ यणि सोदामणिपुजु व मेहइ ।
 घत्ता—कुरुभूमिहि माणेवु मरिवि कतिइ णाइ मियकु दुइज्जउ ॥
 णियसुहकम्मं पेरियउ पहयरि मंणरहु हुउ णउलज्जउ ॥ १० ॥

11

हौतउ आसि जम्मि जो चाणरु सुहु भुंजेप्पिणु कुरुधरणीणरु ।
 णदावत्तविमाणइ हूयउ णाम मणोहैरु देउ सँरूयउ ।
 जो सइयुउ बुहोहँ भाविउ जेण महावल्लु धम्महु लाविउ ।
 पीयकैरु तिलोयपीईकरु सो सजायउ केवल्लिज्जिणवरु ।
 णाणे परियाणिवि सूरसहयरु गउ वदणँहत्तिइ तहु सिरिहरु । 5
 अमरसहंतरालि पइसेप्पिणु थुउ णियगुरु गुरुभत्ति करेप्पिणु ।
 णिवडतहु भवविचरि मुणीसर पइ महु विण्णु हत्थु परमेसर ।
 पइ सइयुउ दुदँ जगु बुद्धउ पइ हियउल्लउ कयउ विसुद्धउ ।
 पइ जोइयउं तच्चु णीसेसु वि तुहुं समु सहणेसु वि णीसेसु वि ।
 तुहुं महु लग्गणखभुं भैभगउ हउ तुह चरणजुयल्लु सरणं गउ । 10

घत्ता—मिच्छादिद्वि सुँदुद्वमण पावयम्म णिद्धम्म वराथा ॥

कहहि मयणमयणिम्महण कहि ते मंति महारा जाया ॥ ११ ॥

12

कहइ भदारउ विणिण कुधामहु

गय सभिणसहसमइ भीमहु ।

७ K विग्घचरु. ८ MP कुडलिल्लु ९ MBP माणउ . १० MBP मणहर, K मणहर but corrects it to मणरहु

11 K सो. २ MBP °विमाणे पदूयउ. ३ M मणोहर. ४ MBP सुरूयउ. ५ M पीइकर, P पीईकर ६ MP पीइकर, B पीयकर ७ MB °भत्तिहि, P °भत्तिइ. ८ B करेविणु ९ MP सुहु. १० MBP जाणियउं ११ MBP अभगउ १२ MB सुदिद्विमण, P सुदुद्विमण

10 12 a कदाहइ मेघाभे

11 6 a °सहतरालि समान्तरे 9 b सहणेसु सधनेपु, णीसेसु नि स्वेपु दरिद्रेपु

असहविदुर संतह संजोयहु
 सुख्यबापविचरणवृत्तियमा
 तं निमुचिपि सिद्धिद गठ तेचहि
 परसेपिनु तं सतिमिद कुविच
 अहो अहो सपमा सुभेहि महाबलु
 भुत्ती सुदेव जेय जसयागहि
 सुखुहुद्धियंमीरणिमायं
 सुखबा विजययजमि विजयत
 जीवदबदेमेज परिकयत
 सुख्यपदि ना विजयहि अय्य

विद्यतमंयहु विद्यविगोयहु ।
 विद्यदित जगद कुराद सपमा ।
 जगद जगद विद्यमयद केचहि ।
 मजद विमाणाकड सुखद । 5
 इदं सो ययराद जसविमसु ।
 सामिसासु सुहु रिजकरिकेचरि ।
 तुम्हदं तिष्ठि वि विमिपि विचार ।
 सोक्यपरंरराद इदं पचद ।
 सुहु पुनु पावै ययु विदितद । 10
 बीयराद विहु ययु परमय्यद ।

पद्या—धम्मु अहिचत सहादि मोक्यमय्यु विम्यंयु विद्यायहि ।

बीहोवापयिद्धादिद मुचि विमुक्तमोहु समायहि ॥ ११ ॥

13

पहाजिततरणी
 पद तेज मुचिमो
 इदं ईति धहिमो
 विविदस्स सममो
 समुप्पुवपुरियं
 पेओल्ल महुदं
 सुये सोम्मवयमो
 समो विदुरद्विजो
 रिज विदियसमय

विहियेज कर्हणी ।
 केवाविद मविमो ।
 सया दोसपदिमो ।
 अमोदेव वि ममो ।
 महापुक्कमरिष ।
 गमो सम्मसिहर ।
 सिपावैवयमो ।
 सक्कादेव वविमो ।
 महापैरपविचय ।

12 १ P सो ओयहु १ MBP मुचि १ P पुवक. १ MBP "परल्ल" १ MBP "इवा-
 न्नी" १ MBP मयु विमु १ MB विमुजवीहु; P विमुजवीहु.

13 १ B करणी १ MBP विविदेव मविमो १ MBP मति १ M समुप्पुव १ MBP
 पयोपुव १ MBP दोमि १ MB "जगर"

12. 18 बीहोवापयिद्धादिद विद्विदस्समुक्तमोहयहि.

13 5 ॥ धम्मुवपुरियं कर्हणमय्यं

मणीणल्लिणल्लए

वरे दीववलए ।

10

सिरारूढहरिणो

महामेरुगिरिणो ।

सुरासाइ सहले

विवेहम्मि धिउले ।

जल्लऊरिया णई

मही भगलावई ।

घत्ता—पट्टणु रयणसंखु सधणु तेत्थु जि णरिंदु मंहीधर णामे ॥

सुइवसुब्बेभु गुणसहिउ चावद्ध ण दाविउ कामे ॥ १३ ॥

15

14

तहु गेहिणि^१ सोहग्गे सुरि

किं वणिज्जइ णामे सुदरि ।

पाउ असेसु वि अणुहु जेप्पिणु

जिणमयंसह्वाणु पावेप्पिणु ।

सयमइ सुहहलेण तहि तणुरुहु

हुउ छणयदविचसणिहमुहु ।

सो जयसेणु भाणुसणिहयुरु

जाम विवाहि वरइ कण्णाकरु ।

ता सिरिहरसुंरु तहिं जि पडुक्कउ

वाउ धूलिउवल्लोहुवि मुक्कउ ।

5

तेण विग्घु भीसणु पारद्धउ

उच्छवि केण वि सोक्खु ण लद्धउ ।

तं पेच्छवि वरइत्ते भाविउ

एहंउ चिरु मइ कैह व णिसेविउ ।

एम कहिं मि पाहाणिहिं ताडिउ

एम्ब कहिं वि खरपवणे मोडिउ ।

एम कहिं मि रयपुंजे क्षपिउ

एम्ब कहिं मि हुउ दुक्खे कपिउ ।

एम सरिवि सुमरिउ णारयंभउ

जमहररिसिहि पासि लइयउ वंउ ।

10

तउ करेवि वभिंदु पट्टयउ

धम्मु जि जीवहु अंगइ हयउ ।

घत्ता—अइगरुआ वि णवति गुरु चदसूरवदारयवदे ॥

सामण्णु वि गुरु धम्मगुरु सिरिहरु पुज्जिउ वभसुरिदे ॥ १४ ॥

८ MBP °करिय, K °करिय but corrects it to °करिया in second hand ९ MBPK तेत्थु णरिंदु १० MBP महीधर ११ MBP °वसुब्बव

14 १ P गेहिणि २ MBP जिणमइ ३ K पालेप्पिणु ४ MBP °सणिय ५ MBP सिरिहरु ६ K omits this foot ७ MB कहिं मि ८ BK पाहाणिहिं ९ MBP णायर १० MBP तउ, K वउ ११ MBP सगगु, K सगगु, but corrects it to अगगु

10 a मणीणल्लिणल्लए मणिमयपद्मत्थाने, b वरे दीववलए पुष्कार्धदीपे

15

शुठ मुरवि भियच्छा	चिरिच्छब्द वि सम्पाद ।
ससिच्छरदीयमि	एव मनुषीयमि ।
हरिचिपेगिरीयसस	मंदरगिरीयसस ।
वर्णुगोदेहमि	शुठविचिचिदिहमि ।
वित्तिवणसीमाहि	वपरिहि सुमीमाहि ।
सुहमिदि वरणाडु	एवि कसस व रणाडु ।
का पोसु संवत्त	को चिरिच्छब्द वत्त ।
ओ कामु परिच्छ	परवत्तच्छब्द हर ।
ओ माणु विमाहर	मउपसु संगहर ।
के कपिउ ओवि हरिउ	के के किउ महरिउ ।
के छोडु विम्माहिउ	पुरिससु के मदिउ ।
मउ केव विह्विउ	मणु केव विह्विउ ।

8

10

धत्ता—इहै सोहमै गुणेय भावर उप्पसि के ईदीयी ।

किं पुब्बा अम्हादिचिहि सुहंरि वेव नाम तहु र्दयी ॥ १५ ॥

16

सुरेयव सधु सुपविणु मावव	वाहि गमि ओ मंदपु जयव ।
तेन सुविदिममिण पुबावै	के पक्कटै वम्मइवावै ।
सुविदि वि मणुम्मापज्जयेटी	जमपपोसवववहि केटी ।
सुव छीकाविजियत्तेरेम	परिचिप ववहमि नाम मनोरम ।
ओ चिरिमहहि ओउ स ववपहु	सुरमंविच्छब्द वहुपुब्बावहु ।

8

15 १ M हरिमि २ M उप्पुगोहमि ३ MBP चिरिच्छब्द वत्त. ४ MBP वपरिहि. ५ P वि व वत्त ६ MBP एवपवि K हर. B एववि.

16 १ MBP चिरिच्छब्द २ MB पुब्बावहु

15 8 ४ हरिमिचिचिरीयला हरिणा इमेव नीती गितं वामागीकल्लोर्निकी वत्त 8 ४ एवउ
एवव वममरोव

16. ४ उवेरम इहो 8 ४ वहु पुब्बा वहु वहुपुब्बा वत्तः

पुत्तु मणोरमाइ सजणियउ	केसउ णामें जणवइ भाणियउ ।	
जो सइलजीउ चित्तगउ	सग्गहु णिवडिउ कालवस गउ ।	
सो वि विहीसणेण सियणेत्तहि	हुउ सुउ वरयत्तउ पृथँदत्तहि ।	
जो चिरु कोलजीउ कुडैलसुर	सो संप्राईउ पुणु जम्मतरु ।	
णंदिसेणराए अणुरुवउ	तणउ अणतमईहि पहयउ ।	10
मयणहिं वरसेणु जि जणि कोक्किउ	जो वाणरह जीउ मइ तक्किउ ।	
सो जि मणोहरु माणव सुगइहि	रइसेणें हयउ चंदमइहि ।	

घत्ता—तहु चित्तंगउ णाउ किउ णउल्लें मणोहरु सुर सग्गायउ ॥

जो सो णिघिण पहंजणेण पुत्तु चित्तमालिणियहि जायउ ॥ १६ ॥

17

सतमयणु जाणिजइ णामें	ए णरवइसुय सुहपरिणामें ।	
कय रिसि सुविहिहि सुविहिहि सहयर	अभयघोसराए सहु किंकर ।	
विमलवाह जिणवदर्णहत्तिइ	गय विविहच्चणवण्णविहत्तिइ ।	
अभयघोसु जिणघोसु सुणेप्पिणु	चक्के णिहाणइं वसुह मुप्पिणु ।	
कामकसायविसायविहंजणु	हुउ मुणिवरु णिग्गंथु णिरंजणु ।	5
पंचसयाइं सुयाहं अणिंदहं	अट्टारहसहसाइं णरिंदह ।	
तेण समउ दिक्खिय हयराया	वरदत्ताइ चि तहिं रिसि जाया ।	
सुविहिणिहालियकेसवदेहें	घरवइ सठिउ णदर्णणेहें ।	
पंचाणुव्वय तिण्णि गुणव्वय	चउ सिक्कप्रावय कय वज्जिय मय ।	

घत्ता—जेण सच्चित्तु णिरोहियउ इदियें विसयरसेसु ण यक्कइ ॥

तहु माणवियहु घरि जि तउ जो अप्पाणउ दढेंहुं सकइ ॥ १७ ॥

३ MBP वरदत्तउ ४ MBP पियदत्तहि ५ MBP कुडलिसुर ६ MBP सपाइउ ७ MBP णउल

17 १ MBP ०वदणमत्तिइ २ MB चक् ३ MBP णियसुवणेहें ४ P इदिउ ५ MBP दडिनि

10 a अणुरुवउ आत्मसदश

17 1 a सतमयणु प्रशान्तमदन B b विविहच्चणवण्णविहत्तिइ अर्चन पूजा, वर्णविभक्तयो गयपयादिपु विविधभागा, विविधा अर्चनवर्णविभक्तयो यत्र

रंसेय बह धामाहूय पोसतु
 वासति पारिसगपरिव्रजतु
 बुद्धि वि संगमाह अपगमिह
 भिरिहूय न लेय पविष्यन्त
 अंतर संपाद्यससेजसु
 तापदिभोयं मेरुणि मेरुणि
 त्रिपुण्ड्र सिन्धु वरिष्णिणु कसह
 वा वि बुधसिन्धुसिन्धुसिन्धु
 वरुणस वरुणस त्रिपुण्ड्र
 ए वसति वि वासविमाह

सविद्यविरहसु अर्धसु ।
 धर्मसु अर्धसु ।
 पाठं न काहं वि मणि मणिमणि ।
 सुतं परकिट केन वि विपुण्ड्र ।
 कविनि पणु मर्त्य इवसु ।
 सीमावात्माह वसतिवि ।
 तर्हि वि तासु अर्धं पविष्यन्त ।
 ईशानसु अ वसपाठसु ।
 सतमवसु मुनिवर विपुण्ड्र ।
 तसु वि वाया मणि समाह । 10

यथा—किं नानि अरुणायकं यं पृथक्किति विविचिर्त्य कागवि ।
 मनुवह गुणगुण गुणह पुष्पयंतु मुरगुह बुद्धिसिन्धुवि । १८ ।

इय महापुण्ड्र तिस्रिमाहपुण्ड्रगुणाहंकार महाकरपुष्पकपतविरह
 महामयभ्रष्टाणुमणिप महाकमे मोत्यभूमीसिन्धुसिन्धुसिन्धुसिन्धु
 केसपईपविहमवावण्यं नाम
 छप्पीममो परिच्छमो समसो । १९ ।

॥ संधि ॥ १९ ॥

18 १ MBP वल्लु २ P लामावु, ३ M विष ४ P वाड वि वाह न ५ MBP वल्लु
 ६ MBP लवणसु ७ P वरिष्णिण MB वरिष्णिण, P वरिष्णिण MBP "उरुगुणं (P नड)
 पाठ १ M लवणसिन्धु २ MBP विपुण्ड्र, ३ MB बुद्धिसिन्धु ४ MBP "मुनिवि"

18 ॥ ॥ ईशानसु वल्लु ० ॥ विपुण्ड्र वि- वाया ममो वा १० १० ममाह ममा
 विपुण्ड्र वल्लु

XXVII

सजायइ विच्छायइ तेओहामियचवहो ॥
णिययंगइ गयलिगइ अञ्जुयकप्पसुरिदहो ॥ धुवरु ॥

1

अइलोमसहाव महारउइ
मिह वचविं कालरहट्टचारु
अप्पउ जाणेप्पिणु वियलियाउ
मिगिणिहिउं गिरहु तहु चरणजमलु
चुउ काले अञ्जुयसग्गणाहु
इह जर्बुदीवि मुग्गिरिहि पुव्वु
रमणीयउववणावलिणिवेसु
वहुवण्णमणिसिलाउद्धभूमि
हग्गिमउडपडिच्छियपायरेणु
मुहससिजोण्हाधवलियदियत
सो तियसराउ हयदुरियवाहि

सचल्लिय चल ससिरवि बलइ ।
घडिमालइ लघिउं^३ आउणीरु ।
छम्माम समच्चिवि वीयरउ । 5
भवियहु भवणांसे वि विचु विमलु ।
कहु काले किर कवलिउ ण देहु ।
फि भणमि विदेहु विलासदिव्वु ।
तहिं वर पुक्खलवइ णाम देसु ।
पुरु पुडरिंकिणी तेत्थु सामि । 10
णरणाहु जिणेषरु वज्जसेणु ।
सिरिंता णामे तासु कंत ।
तहि हुउ णामे वज्जणाहि ।

घत्ता—सग्गायउ सभयउ वरयतु वि तहि वालउ ॥

विजयकउ हरिणकउ ण उग्गमिउ सुहालउ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

गुरुधर्माद्भवपायनमभिनन्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।

भीमपराक्रमसार भारतामेव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it

1 १ MBP किं वण्णमि २ MBP पित्तउ ३ M रिभिं ४ MBP चलणजुयलु ५ MBP भवणास विचित्तु विमलु ६ P जवुदीर ७ MBP उववणावणिं ८ MBP तहिं पुक्खलवइ णामेण देसु ९ MBP पुरि

1 ३ षलइ वलिवदी 11 a हरिं इन्द्र 15 विजयकउ विजयनामा, हरिणकउ चन्द्र
सुहालउ सुहालय, सुघालयोऽमृतालयध

2

वर्ततेषु वि ह्यतः वदन्त्यु
सुरलोयन् वैधिवि पतंतमयणु
ए सद्गोत्रय वद सहाय
इतिमगवद्विमाजयातु
आपद भवतः आपद सुबातु
महंमिदु वदन्त्यु ह्यतः पीतु
ये वदन्त्युमवि विषय तातु
होता विद वयदि विविषयेज
ते वैविदि वयि महासर्हि
सुसंनेहा वैदुसंनेहायतु
पदेयितु मर्कवकम्महंनु
वचिदते सुरवागममहि

विशंतः वामे पुनः अयंतु ।
भवराजः इतः पदुतवयणु ।
आया वृषरायणु इतः भाव ।
मेलेपिणु अम्मः मावयातु ।
वार्ण्यु वि नाम महंतवातु । 5
घनेमिणु वि तेसु वि गदमपीतु ।
रायणु वयसनेहादिवातु ।
ह्या वत्तारि वि सतुं जलेष ।
तादि वि सुरसिपुत्तरापरि ।
को होर वेतु विवमायणु । 10
तेसु वि पुरि केसुं सा वरिंतु ।
सिस्तु जविद कुबरे वंतमहि ।

यथा—ह्यतः पदे विमयीरि वंनुवन्त्यु वार्ण्यु ॥

संमाने वचनाने वचनेत वि सा सहित ॥ २ ॥

3

पद्वि विवि ह्यति समागपदि
कि विचनुति तुह दिव ह्यदि
तुह देवदेव वेदवज्जनातु
ह्य संवोदिह सार्वतिपदि
सिगाएमारवेहवमए
मवयववि वयि विवज्जनातु विवद
वप्यज्जवतः तावतु वयसज्ज

मासिद कि तुहं मोहिदे वयदि ।
अदि रंजिपो वि वारीरपदि ।
तदि वज्जवि की विर बोदिवातु ।
सो वज्जसणु वचसंतिपदि । 5
पयिवाहिदि वयि वि वयपणु ।
विस्वकरोव विवहिपद विवद ।
पुत्तः वसिसावद वयवज्ज ।

2 १ MBP वयि वि २ MBP मावयातु वि ३ G वयणु. ४ MBP महंमिद ५ M वयसंनेहा
BP वयसंनेहा ६ MBP वदन्त्यु. G सुदीवयणु M वयसंनेहा, BP वदन्त्यु वयसंनेहा ७ MBP वयसंनेहा
3 १ M वीरिद २ M विह ३ K वरि विर

2. ४ ५ वयसंनेहा वयसंनेहा 11 ८ वयसंनेहा

3 १ ८ वयसंनेहा वयसंनेहा

ताएण परज्जिउ मोहचकु
तायहु सठियँ णिहि समवसरणि
तायहु इदा वि करति सेव
हुउ ताउ धम्मवरचक्कवट्ठि

पुत्तेण वि णिज्जिउ वहरिचकु ।
पुत्तहु वि णव वि सभूय सरणि ।
पुत्तहु वि भिच्च गणवद्ध देव । 10
सुउ छप्पटावणिचक्कवट्ठि ।

घत्ता—सिरि^५ मेइणि सुहदाइणि जुण्णउ तणु व वियप्पिवि ॥

पविदतहो णियपुत्तहो पच्छइ रज्जु समप्पिवि ॥ ३ ॥

4

अंगुलिदल्लु णहपहकेसरालु
मुणिभमरपीयमयरदविंदु
पव्वज्ज लइय धरणीसरेण
सवेउ विवेउ पराइएहिं
तउ लइउ सुवाहु पत्थिवेण
णीसेसजीवविरइयकिवेण
धणदेवँ णिवइघराहिवेण^५ ।

सुरवरहसावालिरवमालु ।
आसवितु पिउचरणारविंदु ।
विजएण वइजयतेण तेण ।
धीरेहिं जयतवराइएहिं ।
सतेण महावाहुं णिवेण । 5
पीढेण महापीढाहिवेण ।

सज्जीवँ पट्टुरयणुल्लएण
दस रायहं सुयह वि दससयाइ
एकु जि विहरइ रिसि वज्जणाहि

णिम्मुक्कविविहरयणुल्लएण ।
जइभावहु तेण समउ गयाइं ।
परिगणइ सदेहि घुलत णाहि । 10

घत्ता—महि हिंडइ तणु दढइ णिवसइ कहिं मि णिरासइ ॥

भीसाँवणि ठिउ पिउवाणि सुण्णावासपएसइ ॥ ४ ॥

5

दसणविसुद्धि गुरुविणयसारु
णेरंतरु थिरु णाँणोववाउ
किउ वज्जन्मतरगयचाउ

सीलन्वणसु अईअणइयारु ।
सत्तिइ तउ णिरु सवेयभाउँ ।
मुणिसंघहु वेज्जावच्चजोउ ।

४ MBP णिहि सठिय. ५ B मिरिमेइणिहि सुहदाइणिहि ६ M रज

4 १ MBP °दल २ P सुवाहुहु ३ MB add after this line धणय व्व विविहदन्वाहिवेण

४ M भीसावणि पिउउववाणि, BP भीसावणि षाणि पिउवाणि

5 १P अइसणइयारु. २MBP णाणोवओउ ३ MBP सवेयचाउ ४MB वेज्जावज्ज°, Pविज्जावज्ज°, ४ b सरणि गृहे.

४ b सरणि गृहे.

4 10 b णा हि न 4 अहि, अहीन् सपान् न गणयति 11 णिरासइ आभयशून्यप्रदेशे अभ्रावकाशे.

त्रिषमसिपडरसुपसाभुमसि
छासोसपसु भावर हासि
मन्मसु करर कक्षिमक्षिमसमसु
मीपय सङ्गु रयहारभाई
दयई अयदेभापेहभाई
भावेज लेज संभाविपारं

सं विरहपद्यकवि पद्यमसि ।
अरहंममगु पायडर भावि ।
वदउसु पयोहनु घम्मडपसु ।
अईहलहु सामरकारभाई ।
तेमोअईकर्मराहभाई ।
भावरं सुगियरं उडुविपारं ।

पद्या—छं पुष्पकर्म वर विष्णुवं कासकमेव वि सङ्गं ॥

अगपियरहो तित्यपरहो भाई गोनु ई वरं ॥ ५ ॥

6

को यम वेड रावेज पुष्पु
वमातड तनु भातड तनु
आमोसहीदि येमोसहीदि
समोसहीदि भावर सहीदि
तहु कोडुवुकि वरवीपडुकि
पावानुसारिणी अवर बुदि
अभिमानहिमाअहिमाइ सिदि
सो सुहुमसंपयवतकरणु
बीसेसमाहसंरोहसमसु
माहारमपीरई भाड करिदि
सम्पत्पसिदि सुपरि सुपडु

का सवर किर वरु पुष्पु ।
विततड तनु संजीवपसु ।
अमोसहीदि विष्णोमहीदि ।
सो सहर साहु रंजिमहीदि ।
संमिम्बसोस नामेव बुदि ।
वप्यन्वी तनुविमिरिपयिदि ।
सुरसंदि अहीवमहासंदि ।
अविपड गुणमेसु अरव्यकरणु ।
निरिपहमहिहमेहअदि समसु ।
पांडवगमवमरवेज मयिपि ।
अहमिपु पुषड पिसि वरवभाहु ।

पद्या—वेडिअविपदि विदिअविपदि विरु सटीक अयप्यिपु ॥

सुकरंयड अहंमगड अय्यावड अयप्यिपु ॥ ५ ॥

५ P अमरवद, १ MBP भावरिनि छोवह G अमरवद रोह ५ MBP तेमो

6 १ MBP आमोसहीदि आमोसहीदि येमोसहीदि मित्रोसहीदि (P मित्रोसहीदि) २ MBP सुपरिदि,
T सुपरिदि, ३ MBP महामसिदि, ४ MBP सुहुह, ५ MBP पुष्पकर्म ६ M निरिपहमहिहमेहअदि,
B निरिपहमहिहअदि, P निरिपहमहिहमेहअदि, MBP पांडवगमवमरवेज M सुपरि वरु, BP
सुपरि वरु, K सुपरि वरु T सुपरि १ BP निरिपहमहिह

5 6 ५ कक्षिमक्षिमसमसु कक्षि पय रोहो भा वेव मक्षिम मक्षिमता दस कर्म वरवभा

6, 7 ६ सुपरिदि कोयमसिदि, 8 सुहुमसंपयवतकरणु सुहुमसंपयवतकरणु वरं नया-
दपरंनया, 9 ६ वमसु रमि 11 ५ सुपरि सुपरि

7

अवहीइ तेण जाणियउं जम्मु
घणमणिमऊहपिंजरियमणि
सिवपयणिवासु सिरिसोहमाणि
पिहुजवूदीवपरिपमाणि
पविणाहभाउ कयधम्मसेव
णव ते परमेसर सुकयपुण्ण
तणुमाणं जाणिय रयणिमेत्त
ते सुकलेस मज्झत्यभाव
मउडग्गघुलियमदारदाम
खेत्ताउ ण खेत्तरहु जति
वरिसहु तितीसंसहसहि असंति
तेत्तीससमुदोवमु जियति

पणविउ जिणु जिणवरकहिउ धम्मु ।
तेसट्टिपडलसिरिचूलयणि ।
वारहजोयणहि आपाचिमाणि ।
हिमसखससिपहि तहि विमाणि । 5
अट्ट वि जाया अहमिददेव ।
सुविसुद्धफलिहमाणिक्कवण्ण ।
अहिणवसयदलदलसरलणेत्त ।
अपिसुणसहाव परिहरियगाव ।
परियाररहिय सपण्णकाम ।
उत्तरवेउविय तणु ण लेत्ति । 10
तेत्तिरियहि जि पक्खहि णीससति ।
जगणाडि असेस वि ते णियंति ।

घत्ता—णाइदहो खयरिंदहो तं णैउ क्षसधयमदहो ॥

पुईईसहो ण सुरेसहो ज सुहु जगि अहमिदहो ॥ ७ ॥

8

गयगव्व भव्वत्तणारुद्ध धरणीस
जर्यवम्मु होउण सैणियाणदोसेण
होउं महावल्लिण संणासु मइ कियउ
तहि मरिवि ईसाणि ललियगु सुरु जाउ

पुणु भणइ रिसहेसरो णिसुणि भरहेस ।
जाओ मि खयरिंद कयधम्मलेसेण ।
सइवुद्धवुद्धीइ बहुपुण्ण सचियउ ।
तेत्याउ अवयारिव पविजघु हुउ राउ ।

7. १ MBP °कहिय २ MBP °सिरिचूलिय° ३ MP अपावमाणि, B आयावमाण ४ K पवि-
णाहि° ५ MBP add after this दहमउ घणदेउ उप्पणु तेत्थु, आहिलच्छि गिरतर सोक्खु जेत्यु
६ MBP °सरिसणेत ७ MBP परिगलिय° ८ MBP पवियार° ९ MBP सुरुण° १० BP तेत्तीस°
११ P तेत्तिरियहि पक्खहि १२ MB तण्णजसदयविधहो, P तं णउ सुहु जयमदहो, T क्षसदयमद
१३ MBP पुईईसहो ण सुरेसहो.

8 १ MBP अजवम्मु २ MBP सुणियाण° MP जाओ सि ४ P सइवुद्ध

7 9 ७ परियाररहिय प्रतीचारहित. 13 क्षसधयमदहो क्षपञ्चजेन कामेन मन्दस्य विषय
ध्यावृत्त्यनुयतस्य

जो^{११} होतउ सुइरु महीसमति
जो पुणु जायउ कणयाहु तियसु
हुउ पढमहिं पँहु चविवि साहु

कुरुकुवल्यमाणउ अमियकंति ।
आणहु णाम होएवि सबसु । 10
पुणु सैं महावाहु धरित्तिणाहु ।

घत्ता—गउ इहुहो सव्वट्ठहो णट्ठमिंदसरीरउ ॥

हुउ भुयवल पसमियकलि केवल भाइ तुहारउ ॥ ९ ॥

10

जो रायपुरोहिउ समियडमरु
धणमिच्छु पुणु वि हँउ सुहपहाणि
पुणु हविवि महापाण्डु वि सँमेउ
सो मरिवि महारउ णतविजउ
जो आसि मरेप्पिणु उग्गसेणु
कुरुमाणुसु सो चित्तगयफखु
अच्छुइ समसुरु हुउ विजयराउ
सव्वट्ठइहु ववगयसरीर
पहिलारउ हरिवाहणकुमार
सुर्क कुडलिल्लु वरसेणु संतु
अहअमरणाहु सजणियविणउ
वणि णागदत्तु वाणर पैलासि

कुरुमणुयपहजणु पवरु अमरु ।
ओइल्लु अहविहु परमठाणि ।
सव्वत्थसिद्धि सम्भूउ देउ ।
उप्पणणु पुत्तु जीवेसु सदउ ।
होएवि वग्घु मुणिचलणलीणु । 5
वरदत्तु णराहिउ कमलवक्खु ।
तवर्चरणे खीणु करेवि काउ ।
जसवइसुउ पँहु सोणंतवीर ।
पुणु सूरु पुणु कुरु अजसार ।
समविवुहु पुणु वि जो वइजयतु । 10
तहिं चुउ अच्छुउ हुउ मज्झु तणउ ।
अजउ हयउ कुरुभूमिवासि ।

घत्ता—सुंमणोरहु सुर हयदुहु पुणु चित्तगउ पत्थियुं ॥

संचियसमु सुरवइसमु पुणु जयतु णामे णिउं ॥ १० ॥

११ B सो हुउ १२ M एहु चएवि, B एहु त चएवि, P पहु चएवि, T पहु अहमिन्द, १३ MBP सुमहा° १४ P धरति°

10 १ MBP हुउ २ MBP ओविह्ल ३ MBP पढम° ४ PK सहेउ ५ K सुर चित्त° ६ P तवयरणे ७ P एहु अणतवीर ८ MBP सुर ९ P फलासि १० MBP समणोरहु ११ MBP पत्थिय १२ MBP णिउ

10 2 b अहविहु अहमिन्द 7 a समसुरु समारिकदेव 10 b समविवुहु सामानिकदेव,
11 a अहअमरणाहु अहमिन्द 14 सुरवइसमु सामानिकदेव

पुष्करपि अहमीसक मार्चमजिबहि
 आ सो पुईस्येचपुरियमीर
 घातुड कंदुर छोदय मुपड
 पुनु अछ मणोहर ममयमोह
 पुनु हरिसमायु गिष्वायु बाह
 पुनु अंतिमिह सुखासबासु
 आबेपियु हुड तुह माडबहि
 आ यज्जंममहि मज्जु बहिनि
 इरं अंरहि अं यम्मबीक
 आ सिरिर्ममहि पंहीप घाय
 बमी बि तुम्ह आनहि महीस
 परिममिपसपकमुषकायमीड
 | रंगं यंड नड नमुकबधारि
 सा नतिय वसि जीहि जिड न जाड

पञ्चा—कर हकर कर सिरिहर कर पडिसु बरेसर ॥

मई केहा पई तेहो कर दोहिनि जिबसर ॥ ११ ॥

12

तं निसुमिनि देवै पुनु यम्
 हादिति मुबनि तपीस यलु
 आमामिपारै केहा इमाह
 कदिबारै जिबहं बीमैतपारै
 सुहर्षोदामिवससिमपीर

मई केहा जिबसर नईबिडेव ।
 कैपिहिति पवड सिरिबम्मठितु ।
 बाबीसहं तई तेहो तई ।
 लंगोदियविमुज्जकमेवतई ।
 महु अतिड तुह तयुडहु मपीर । 5

- 11 १ MBP लेखक २ MBP पुरकनु ३ MBP कनुड ४ MBP बरबाड ५ MP गिष्वाय.
 १ MBP सिरिह-विड MBP लेखक नमु न नहु ६ जिड बहि ७ P पुडेड १ MBPK केहा
 12, १ P मियनले २ M कदिबि ३ MBP केहाइ काई ४ यम्मपराइ ५ MBP तपदिनि

- 11 2 ३ पुइस्येच" गिष्वायकंयु "पुरिय" यम् 5 हरिसमायु यमामिड 6 ७ नईवर
 नहमिह 11 ७ तम्ह जिबने 12 पडिसु मुषिकायमीड
 12, 8 ७ तेहाइ गारकमि. 5 "वलि यपीइ यन्नकिरय

होमइ चउवीसमु तिजगणाह
दिय कविलेसीम गुरुभरहत्तणुउ
जाही मिच्छत्तहु मूढु होधि

सिरिर्वड्ढमाणु णामेण णट्ट ।
त णिसुणिवि णच्चिउ मुद्देयमणउ ।
मरिही महु केरउ मउ मुणवि ।

घत्ता—होही सुरु कविलहु गुरु सयसुत्तपवियारउ ॥

णियतणयहु कयविणयहु पुणु पुणु कहइ भडाणउ ॥ १२ ॥

10

13

सिनिवाला फीलाविउलसेल
पइ जेहा णिव णायाणुवट्ठि
णव उल णारयण णव णं भति
अउर चि तेवीम जि कामदेव
मंडलिय मउद्धउद्ध वि अणेय
तुहु सत्तयम्मु महु पग्गमम्मु
सउद्धिं जुयति दिणि णासिंहिति
उम्मुलियतिट्ठाकर्यलिकदु

घलवतसधरधरधग्गलील ।
णयागह महियलि चक्कवट्ठि ।
पडिसत्तु णव जि महिं भुजिंहिति ।
णयागह रुइ रुइभावं ।
होंहिति यंहुत्त वि णामधेय ।
अवरु वि ज किं पि विसिट्ठकम्मु ।
सिहिमय विसमय वण वरिसिंहिति ।
ता णरणाह सयउ जिणिहु ।

5

घत्ता—जिणन्तइ भयवत्तइ पइ दिट्ठइ मलु सिज्जइ ॥

सयलामलु त केवलु णाणु णरहु उप्पज्जइ ॥ १३ ॥

10

14

णमो वीयगया महादेवदेवा
सररिे ण भूता समीचे ण णारी
ण चाव ण चक्का ण रग्ग ण सूल
तुम देव णूण रिउण णं गम्मो
ण डिम ण डमो ण ए वित्तलोहो

कयाणेयगिवाणणिव्वाणसेवा ।
तुम देव सच्च अणगावहारी ।
ण इडो ण हत्थे किवाण कराल ।
अहिंसाणिवासो सहावेण सोम्मो ।
ण मित्तो ण सत्तु ण कामो ण कोहो ।

5

६ MBP रिसिर्वड्ढमाणु ७ P कविलेकेर ८ P तणउ ९ G महुउ मणुउ but gloss छट्ठचित्त

13 १ P भणति २ MBP कामएव ३ MBP add after this होसहिं णारय णव कलहसील,
वयवभचेरददधरणसील (P धरणलील) ४ MBP पुत्त बहुणाम° ५ P सव्वइ ६ P केलिकदु

14 १ P ०णिषाण २ K कराल कवाल ३ MB अगम्मो

7 ८ मुद्देयमणउ प्रहट्ठचित्त 9 ० पवियारउ प्रवीण

13 7 ८ सिहिमय अभिवर्षा

14 5 ८ णए न ते तव

XXVIII

पुरु पइसिवि तेण णराहिवेण बहुदाणेहिं सँमिद्धं ॥
दुस्सिविणयदसणहलहरणु संतिकम्मु पारद्धं ॥ धुवकं ॥

1

जाउडजडिलरसेणायवइ	अहिसित्ताइं जिणेसरविवइं ।	
हिमकणकणयकैणोलिवियारहिं	घडपह्दत्थियपयघयधारहिं ।	
मुणि अणिट्टुट्टासयहोरिहिं	चंदणँतँतडिल्लवरँवारिहिं ।	5
पुजियाइ छप्पयउलधामहिं	कुवलयवउलमहुप्पलदामहिं ।	
सथुयाइ बहुथोत्तालाविहिं	भावियाइं सुविसुद्धहिं भाँविहिं ।	
कंचणणिम्मियमुँणिपडिमालउ	णाणामणिमऊहाणिँरालउ ।	
दसादिसि गयटकारविसट्टउ	लवियाउ चउवीस जि घंटउ ।	
पहि पहि रइयउ तोरणमालउ	एतजतणिवणयणसुहालउ ।	10
दिण्णइं दिण्णसोक्खसत्ताणइं	अमयाहारोसहसुयदाणइ ।	
भूमिदोहकयगोदुहसत्थहिं	अच्चिउ घरि घरि अरुहु घरत्थहिं ।	
दिण्णइं कारुणेण वि अण्णइ	दीणाणाहह चीरहिरण्णइं ।	
पोसहु सीलु दाणु देवच्चणु	रीप सचोइउ पालइ जणु ।	

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza —

मुखनलिनोदरमघनि गुणहतहृदया सदैव यद्वसति ।
चोजमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥ १ ॥

M reads गुणधृत° for गुणहत°. GK do not give it

1 १ MBPT सुणियद्ध २ MBP हिमकण कणय° ३ BP °कणालि° ४ P °घयपय°. ५ MB °हारहिं; P °दारहिं ६ M चदनतोयतडिल्ल° ७ MBP °वरधारहिं ८ MB भाविहिं ९ M °मणि°. १० MB °णियरालिउ ११ MB राइ

1 3 a जाउ ड ज डिल° जाउरुदेशोत्पन्न कुट्टमम् 4 a हि मे त्यादि-हिमकणाथ कनककणाथ तेषामोलय व्यूहस्तैस्तुल्यो विकार परिणामो यासाम् 5 a अणि ट्टे त्यादि-न इष्टे विषये दुष्टा आर्तरौद्रोपहता अनिष्टदुष्टाथ ते आशयाथ मुनीनामनिष्ठाशया निर्मलाभिप्रायास्ताननुहरन्ति अनुकुर्वन्ति तै, मुन्यनभीष्टदुष्टाभिप्रायनाशकैर्वा, 6 °तँत-डिल्ल° मिश्रिता 9 a °विसट्टउ प्रसर 12 a °गोदुह° गोदोहका

3

रायणाणु किं तासु कहिज्जइ
जासु खग्गु रणि को वि णं कहुइ
जो पहाइ परमप्पउ पुज्जिवि
णयसासणि हियँउल्लं घत्तइ
अहियारिय णिउप्पसु णिउंजइ
के वि सणेहालोयणहँसियहिं
दविणोवाइ पुरिसँ संभावइ
सयलकलाकुसल वि समानइ
पुणु अत्थाणविसग्गु समिच्छइ
मज्झणइ मज्जणउ पईसिवि
वालाचालियचारमालइ
पुणु भुत्तुत्तरि पँहु णिवगोट्टिइ
घत्ता—संपण्णइ खणि तिज्जइ पहेरे जाणिय घडियाघापं ॥

पहु अच्छइ वारविलासिणिहिं सह कीलाइ विणोए ॥ ३ ॥

4

महिवइ गयलीलइ पर्यं ढोयैइ
खणि ससहावै मतु पमतइ
जाणइ अण्णउ वण्णपवित्ति वि
पुणु अवलोयइ विविहपयारइ
पुणु गुरुयणसहमडवि पइसइ
कामसत्थु अवलोयइ जावहिं

पुणु अतेउरु भमिवि पलोयँइ ।
वज्झु णत्थि किं छग्गुण चितइ ।
वत्तायरणु णैयाणयजुत्ति वि ।
पहरणभवणइ भंडागारइ ।
धम्मसँत्थसदेहु वि णासइ ।
कामु वि तँहु आसंकइ तावहिं ।

3 १ M म कट्टइ २ MBP पयाउ ३ G पवट्टइ ४ MBP हियउल्लउ ५ M पयवित्तउ ६ P
°सहियहिं ७ MBP पुरिष्ठ ८ Our manuscript P ends with चामर° ९ MB-काइ व १० MB
• सुहणिवगोट्टिइ

4 १ MB पउ २ B ढोइउ ३ B पलोइउ ४ B वत्तारयणु ५ MB ण याणइ जुत्ति वि
६ MB °सत्थु सदेहु ७ MB तहि

3 1 a रायणाणु राजनीतिशास्त्रम् 8 b °पसडी° सुवर्णम्

4 2 b छग्गुण संधिविग्रहयानासनशयनद्वैधीभावा 3 b वत्तायरणु कृपिपशुपाल्यादि

हरियसत्वि हरिसत्वि न सुख

ओहमस्यस्यसमूहमिमित्तं

तनु मनु तेन वि संजोह

आनन्देन धनुषेन विजयत ।

नरपाटीयकननं विविचर ।

मर्ये सरं वि मरु उपायत ।

मत्ता—असु आसु विर्यतेहि परिमम ससिद्धमिपरत योसह ।

10

तनु मरुतु सरितु महाविषर अगि नर इयत न होसह ॥ ५ ॥

5

सो यपाहिपत सामतहं

एकहि विमि धीयं विरबायहं

कुम्भारमप्यवपपरिपासु

मित्तपह भुयवकुट्टिपकरिहं

तेन वपिषि तत विरिवरकंरि

एतु ओर के धमि पवसि

कुत्तु नरबाहं ययु विसेसे

संजमबाजवैरिचम्मासे

कुत्तु कविपजह सुखायै

सार अयाह वि वीसह आवत

मरदेयवपहि कुत्तु विजह

मंडविपहं महिमार मंडतहं ।

अननह असेविनु वहुपवहं ।

अनन सयससतु मन्नाकपु ।

पंचमेन वारिसं वरिहं ।

अखिड सित्यपरतु मन्तरि ।

परितोह नपाव सो वपि ।

कुत्तु कविजह नुसहवसे ।

कुत्तु वपिजह नुनयपासे ।

वैर्यमेन अयुजवमार ।

वीर्येकुरमेन कुत्तु बापत ।

कावि कावि विजवाहि विजह ।

मत्ता—पवविषसिद मंडविमकरकमलु जाहं कप हारि किरतु ।

ते पत्तिव कुकसंतामपर ताहं महादेवतनु ॥ ५ ॥

4 ॥ सुख १ M विरगाहि १ MB वरि मम

5 १ B मियाहं T विरगाह १ MB कविपि १ B "विरि" ४ MBK वरि ५ M वरि
किर T वरिगाह १ MB वरि क" MB "विरिगाह" M वरिगाह T वरिगाह १ M वरिगाह

9 १ मरुतु लपिग

5 १ विरगाहं वरिगाहिकमलु 6 १ वरिगाहिकमलु वरिगाहिकमलु 7 १ वरिगाहिकमलु 8 १ वरिगाहिकमलु 9 १ वरिगाहिकमलु 10 १ वरिगाहिकमलु 11 १ वरिगाहिकमलु 12 १ वरिगाहिकमलु

6

अवरु वि मइ रापं रफ्फेवी
णासइ णिवमइ मिच्छारगं
णासइ मइ चामीयरलोहं
णासइ मइ हरिसं चवेलत्तं
णासइ मइ मएण माणेण वि
णासइ मइ वेसायणगमणं
णासइ मइ जूयमि णिउत्ती
मइ ण जासु कलिकलुसं छिती
णिवविज्जारिसिविजागामिणि

अरहतहु जि सिक्खं सिक्खेवी ।
कुगुरुकुदेवकुलिंणिपसगं ।
णासइ मइ णिरु कामं कोहं ।
णासइ मइ जिणपडिक्कलत्तं ।
णासइ मइ मइरापाणेण वि ।
णासइ मइ कुरगवहरमणं ।
णासइ मइ पररमणिहि रत्ती ।
जिणवरचरणभोरुहधित्ती ।
तहु होसइ इहपरमवि गोमिणि ।

यत्ता—मइसुद्धिइ वहुइ धम्ममइ धम्म वि मइ सो घोसिउ ॥

जो खीणकसायहिं केवलहिं जीवलोइ उवएसिउ ॥ ६ ॥

7

धम्म यमाइ होइ गरुयारउ
अज्जउ धम्म पावु मायारउ
धम्म सउच्च धम्म तवतप्पणु
धम्म वंमचेरं परिचाण
पुण्णाउसु सो णिद्धाडेवउ
इय मइसुद्धि कहिय णउ रक्खमि
हुयवहपविसणु हुयललियगउ
सत्यग्गहणु महाजलवोलणु
पयइ कुच्छियमरणइ दुहमि

धम्महु मइवगुणु पहिलारउ ।
धम्म सच्चवयणोहु वियारउ ।
धम्म असेसवत्थुपवियप्पणु ।
जेण ण कियउ वियाणवि रापं ।
रज्जं पुणु वि णरइ पाडेवउ ।
तणुपरिरक्ख णरिंदहु अक्खमि ।
विसकणकवलणु मरणु ण चंगउ ।
गिरिणिचडणु अतावलघोलणु ।
णरु भामेवि धिवति भवकइमि ।

6 १ MB °कुदेउ २ M चवलितें ३ MB read this line and the following as
णासइ मइ जूयमि णिउत्ती, जिणवरचरणभोरुहधित्ती, मइ ण जासु कलिकलुसं छिती, णासइ मइ पररमणिहि रत्ती
४ G मइसुद्धि ५ MB धम्म सद ६ MB सो मइ

7 १ B गरुयारउ २ MB मइउ गुणु ३ MB पाउ ४ MB °वयणोइ ५ MBK सउच्चु
६ MB धम्म जि वंमचेरपरिचाए ७ MB हुयनहु पविसणु हुउ ललियगउ

7 2 a पावु पापम् 3 b °पवियप्पणु त्यागो विचारण वा 4 a परिचाए आर्किचन्नेन, b विया-
णवि ज्ञात्वापि 7 a हुयललियगउ दग्धशरीरम् 8 a सत्यग्गहणु आत्मघात

धृता—मुनिविरहकामसि उषसस्तु करिषि सो न मुपय संजासे ॥

10

वदरासीकणजोषिमुहर्षि सो परिममर किछेसे ॥ ७ ॥

8

अवद वि रावत करत विरिचकणु

हुम्मार हरे जाणिवि पावड

सिह पोवड पोळर गोमंडलु

विजारायमारलु जो रावत

मिह मंजिवि हकरसंजापई

हुण्णारिहिसयसंतावणु

अजबोसाससिहिहि सो वज्जार

कमार न जियार पुर्वकहुवासर

पहु अजुरेचपवई जो तासर

रसंड ससंड मिह भरिज्जार

गुणिसयकजावावरवायं

गुणवरजारीविह सेवेवड

ऐसें नड विचिहु पहरवड

पर्यहि धम्मजायं परिचकणु ।

तिथीं ईंई गाह न ताडह ।

सिह पासंड पोवह गोमंडलु ।

सो रकपसु अमरुपसमावड ।

जिहोसह विह बजिहि वपवई । 5

जो वज्जारलु करत मीसावणु ।

अण्यु वि बुद्धियकर्म वज्जार ।

न वसह ईसु विसह पळेसर ।

कहहि वि विपहहि सो सार वासर ।

तमिवरीपड अजोरिज्जार । 10

वज्जारहेन विहाजिबवायं ।

अवड सर्मजसणु मीवेवड ।

हुण्णनलु न कपावि भरेवड ।

धृता—इय पंचपवारपवासियत विचिचरित्तु जो पावड ॥

कमकसण कमका कमकमुहि तहु मुहकमसु विहावर ॥ ८ ॥

15

9

तहिं अण्णह मयेसड अहवई

हुर्कईयकजवयगपडरवा

सोमप्यहमहिवाडहु मंजणु

गणि वमवह सुनि सेविन तहपई ।

जिणकमकमकहुवडसेवाए ।

कण्णवहमावदि सोधिपमडु ।

MB *वरासुहि

8 1 G वरहि 2 M पणह 3 MB *बीजासपवई 4 MB पुण्ण 5 M अणुणु वर
1 MB *मिह 6 B अण्णह 7 G विचिचरित्तु

9 1 MB *कमसु

11 *मुहहि हरी.

8. 8 न बीवड गोवा बीवडलु वरा संवड, 9 बीवड रावा बीवडलु भूकवम् 8 न मिह
मिहसि

सुंदर चोहैहमौहिं जेट्टु
 कुरुवसाहिवेण पणवेप्पिणु
 तापं रायपट्टि महु चद्धइ
 तम्मि हुयइ णिक्कलि कलुसच्चुइ
 जाणियएयाणेयवियप्पइ
 घोरवीरतवचरणच्चब्बुइ
 ससहोयरु दिम्मुहइ णियतउ
 मारुयच्चालियचलसाहाधणु
 धम्माणे मणु आणदिउ
 दिट्टउ कैणिवरु समउ भुयगिइ
 गयसंवच्छरि पुणरवि आप

घत्ता—दीवंडु काओयरु णाहणि वि विणिण वि धम्मु सुणंतइ ॥

मइ लीलाकमलें ताडियइ तँहि वि जाइरइरत्तइ ॥ ९ ॥

जउ णामें अत्थाणि पँइट्टउ ।
 पमणिउ तेण राउ विहसेप्पिणु । 5
 रिसिरयणत्तइ सह उवलद्धइ ।
 दाणपवत्तणि सुरवरसथुइ ।
 रिसहसामिपयपकयच्छप्पइ ।
 पित्तिहँ सेयंसाहिवि णिवुइ ।
 हउ णियपुरवरति विहरंतउ । 10
 एक्कहिं चासरि गउ गंदणवणु ।
 दिट्टउ सीलगुत्तु मुणि वदिउ ।
 धम्मु सुणतु सरलललियंगिण ।
 सा दिट्ठी मुक्किय णियंणाए ।

15

10

कसणारुणविंदुयतंणुराहहि
 इय गरहिवि परिवारेणाहय
 कासपुप्फकतिसकासउ
 णिसि णियकतहि मइ आहासिउ
 कुमहिलखलचरियाइ पयासमि
 विविहाहरणकिरणरजियघरु
 पुच्छिउ सो मइ किं अवलोयहि
 तेण पउत्तउं किं ण वियाणहि

कहिं णाहणि कहिं लग्गवि जाइहि ।
 सहु जारेण तेण सा णिगय ।
 हउं पडिआगउ णियआचासउ ।
 सयणालइ तं णाहणिविलसिउ ।
 जाम किं पि किर पिय संभासमि । 5
 ताव तँहि जि अवयरिउ वरामरु ।
 दिट्ठि वियारमरिय किं ढोयहि ।
 लोयह तुहु वि धम्मु चक्खणाहि ।

२ MB चउदह^१ ३ M भावहिं ४ B वट्टउ ५ MB पित्तइ ६ MB चलियचलसाहा^२ ७ MB फणिवइ ८ M सरलललियगइ, B सरललियगिइ ९ MB मुक्की णियणाए १० G णियणाए ११ MB काओयरु विसहरु णाहणि वि १२ M तँहि जइपरइरत्तइ

10 १ MB तंणुरायहि २ MBK कासससकति^३

9 7 a तम्मि ताते, णिक्कलि शरीरनिस्पृहे 9 b णिवुइ सुखीभूते 15 दीवंडु^४ सर्पजातिविशेष, णाहणि नागो,

शोचन्नाहं न कासु वि विहार
परं वि बौद्धं महु कुच्छती

पंगुसु पंगुसु केम मविहार ।
पाथिपोर्मोर्मो न छिती ।

10

प्रता—तं पौडिब सयके परिपयेन उबछहिं ईदसहासे ॥
कंपतेहह कारेय सहुं सा मुनी बीतासे ॥ १० ॥

11

पुष्पमेव मुन पवि वसपारव
सुप्पिधि हरे समपरिचामे
विभिन्न वि मिच्छिन्ने विवहार परिपडं
आयड पय्य काम छिद माउमि
ता मई काथिनें तुहुं पुष्पाहित
एम भवेप्पियु तेण कवीसे
विप्पई महु विप्पई परिहावई
अवसरि सएहु मविधि गठ तेसहि
विमुनि देव सासपसेपवव

हरे हरे भावसु वायकुमारड ।
सुरसरि देवय काळी कामे ।
तं तुहु पुष्पवसिड संमरिचडं ।
आइसिधि वप्पयसु विहारमि ।
करेमेहह सीकेय वसाहिड ।
समेदछसिधिपटैसहुपासें ।
विप्पई मूसवाई अउमावई ।
अहिचराविचरि बिहेडसु केसहि ।
अवि बीवहु बम्मु वि उम्पवतड ।

5

प्रता—विहसिधि कुदवाहै बोछिचड मरुपसाहिबमैहियड ॥
देव वि तुहु पावहि पठहिं पुड कासु अम्ममर विवड ॥ ११ ॥

10

12

इय करेय कह साहिय कावहि
गौबालविबमोचियहारे
तेन वडसु विमुनि विववैरपिधि

अवस वि मंति पण्डड तावहि ।
सो वीचिड यमहु पडिहारे ।
कापीविचर अवरि बाजारपि ।

१ MB अरार ४ MB वीमलर, ५ MBK उरिचि

11. १ M पुष्पमेव १ MB अरार, १ MB अरारु विविध ४ M अरार ५ MB
“महिक

12 १ B अरार २ K वीमलवि १ MB अरारु विविध ४ MB “अरारि.

10 10 ४ काइरर अरारु अरारि अरारार.

11. १ ४ अरारार अरारिअरारि

राउ अकंपणु राणी सुप्पह
 फुलकुसेसयसंणिहसेमुहह
 सस मृगलोयण ताह सुलोयण
 जेट्टहि रुउ फाहं किर सीसइ
 पायहुं फाह कमलु ससु भणियउं
 रिक्कइं वासरि कहिं मि ण दिट्ठइ

सालंकारी णं वरकइकह ।
 सहसु सुयहं हेमंगयपमुहहं । 5
 लहुई लच्छीवइ सुहभायण ।
 उचमाणु जि जहिं किं पि ण वीसइ
 त खेणभंगुर कहिं ण मुणियउं ।
 कण्णाणहपहाहि णं णट्ठइ ।

घत्ता—कुंरुविंदु तणु वि जघाजुयहो णासवतु कर दतिहि ॥ 10
 ऊरुजुयलहि जो समुं भणइ सो कइ पडियउ भतिहि ॥ १२ ॥

13

वण्णमि फाहं णियवगुरुत्तणु
 भमउ भमउ सो भूए भुत्तउ
 कहिं थणजुयलु चित्तगइरंभणु
 दड्ढा ताह दासिमिरमंडणु
 किं तरुणीवयणहु उवमिजइ
 जेवं कुमरिहियवउं सदाणइ
 किं सारंगणैयणि सा उत्ती
 णक्खइं लग्गिवि जा केसग्गइ
 लीलदोलणकीर्लाजुत्तइ

जहिं पत्तउ तिहुयणु जिं लहुत्तणु ।
 णाहिहि सरिखु ण सलिलावत्तउ ।
 भासइ कणयकलस कहिं कइयणु ।
 चंगउ ससहर समलु सखंडणु । 5
 तासु सरिच्छउ त जि भणिजइ ।
 मृगुं ण तें अवलोयहु जाणइ ।
 केत्तिउ किजइ उत्तैपउत्ती ।
 ताम ताहि णिरुवमइ वरगइं ।
 लुहु जि वसतमासि सपत्तइं ।

घत्ता—अकुरियउ कुसुमिउ पल्लविउ महुसमयागमु विलसइ ॥ 10
 वियसति अचेयण तरु वि जहिं तहिं णरु किं णउ वियसइ ॥ १३ ॥

५ B° समुहह ६ मिगलोयण ७ MB तक्खणि भंगइ ८ B कुरुविंदत्तणु. ९ MB जघाजुयलहो
 १० K सम

13 १ MB वि २ जिम कुमरिहि हियवउ ३ MB मिगु ण तेम. ४ MB °णयण ५ MB उत्त-
 पडुत्ती ६ MB °कीलणजुत्तइ

12 5 a °कुसेसय° रकोत्पलम् 10 कुरुविंदु शंखधर्पणम्, तणु फाहं लघुय.

13 2 a भुत्तउ युको गृहीत 4 a दड्ढा अभिना सतप्ताः.

14

सुह मावर्तदण्डसु कंदरुपय
 सुह वंपयतव अंशुरेभिः
 सुह कंचलि कि पि कोरुपय
 सुह मंवारसाहि पक्षविपय
 सुह जापय वैमेव कक्षियाखंड
 सुह काजपि पर्युक्तु पक्षासत
 सुह कुलित मक्षिमकुलोदर
 सुह अन्वेकविहठसि मंड वज्रि
 कुंडे कुसुमर्गहि वं हसिपय
 वयवयकषकुडुवयपयसार्

महुकपिडर काक्षिसिधि छदयः ।
 वं कामुठ हरिसे रोर्मभिः ।
 वं नम्राहविचारै रौपय ।
 वक्ष्यन्तु वं महुका वक्षविपय ।
 मत्तवमोरकीरपासतः । 5
 पहिपुं लम्माव विरुहुपासतः ।
 रमणीयापि पसरिद ररुहोदः ।
 वक्षिहुसुमरसु वुंविधि कज्जि ।
 कोरुं कामपयहु वं रसिपय ।
 वंयकहमरिदेभिःसिधैः । 10

वचन—सुह केवौहररे विविमिन्नरे पुष्पेप्युरवर्ग विपयः ।

सुह कम्पारं मिहुवर्गं सररुसर्गं वयवोपय ररौसर्गः । १४ ।

15

पिप्पिरुमहुकवयहि मरिमुक्षियरि
 वयवपुष्पकक्षियासीवहि
 पयककुसुममंजरिवयमाक्षरि
 रायईसकामिणिकयरेमवहि
 कुररकीरकैरंजविभाषहि
 सिपयवककवतंनुकसोहाक्षरि
 मयकमसयवक्ष्यवक्षरुपिडर

सुमजसुपिहिरपरंवावक्षियरि ।
 वंयकवयववक्ष्यवमाक्षरि ।
 सुमुगुमंतमहुक्षियरोवाक्षरि ।
 पिड वसंतपहु वंयवमववहि । 5
 वक्ष्यन्तु व योतभिर्हामहि ।
 मिसिभिपयवयमरापवाक्षरि ।
 पिपय सेस वं तनु वयवपिडर ।

14. १ MB मावर्तु वण्ड २ B पण्ड, K रव ३ M वं वेद B वयव. ४ MBK वयव. ५ B विवयविरादि ६ MB कुड ७ MB कोदव MB "कवसेतुनवयव" ८ MBK "विपयिपय" ९ MB पुष्पयवयव ११ MB ररुसर्ग

15 १ MB "रमिधि" २ MB वहुपयमविहि ३ MB कयव M "विपयवि" B विपय-
 विहि, K "विहामहि"

14. 8 कीरवयव वीरविता 8 १ "कुसुमरसु मयवयव" 19 सररुसर्गं सररुसर्गं वयवयव.

15 1 १ सुमजसुपिहिरव" पुष्पयुगवयवयव 7 १ वयवयव" विपयिपय

फगुणपइसारइ णंदीसरि
पोसइपरिसमखामसररइ
पुत्तिइ पइसंतं मुहकमलं

छुह सुरणविइ दीवि णंदीसरि ।
थणजुंयलतविलवियहारइ ।
पहु दिट्ठउ जिणसेसाकमलं ।

10

घत्ता—तेलोक्कपियामहु णंववि जिणु णवमयरंदकरयिउ ॥

त णालिणु णरिंदं णिहिउ सिरे महुयरउलमुहचुविउ ॥ १५ ॥

16

तेण धूय पियवयणहिं पुजिय
गय सुंदरि णियगेहु पराइय
भडयणु सव्वु दूरि ओसारिउ
तणयहि उडुंदिणि गलियइ रत्तइ
ण दुपुत्तरइयइं दुचरित्तइ
घरि कुमारि केत्तिउ रक्खिज्जइ
सायरमति चवइ सररहमुहु
दोयहि तासु कण्ण किं अण्णं
सिद्धत्थेण भणिउ मणरंजणु
ण पच्चक्खीहयउ सइं सैंक
सव्वत्थेण लविउ मुइ महिहइं
होति^१ ण अण्णहु तं लायणणउ
अविरोहणउ सयंवरमडणु

करि पारणउं भणेवि विसज्जिय ।
तायहु चित्ते चित्तं सभुइय ।
रायण मंतिहि मतु समीरिउ ।
महु दुंहाति भो अट्ठ वि गँत्तइ ।
अवलोयहु लहु णववरइत्तइ ।
कासु वि कुलगुणवत्तहु दिज्जइ ।
अक्कफित्ति चक्कवइहि तणुरुहु ।
समंतेण लोयसामण्णं ।
अच्छइ राणउ णासु पैहुंजणु ।
रहवरु वलि वजाउंहु घणसरु ।
तुह पुत्तिहि वरु जइ विज्जाहर ।
सुमइ कहइ मइ पहु पडिचण्णउं ।
होउ ण कासु वि णेहहु खडणु ।

b

10

घत्ता—ज वहुसुपण परिणयमइण सुमइवुहेणव्मत्थियउ ॥

परियाणिवि होती कज्जगइ त सयलहिं मिं समत्थियउ ॥ १६ ॥

16

५ MB °जुयलति विल°. ६ MBK णविवि.

16 १ MB राए मतिहु २ MB उडुदिण° ३ MB इहाति ४ MB अण्ड ५ M ण दुपुत्तु रइयइ,
B ण पुत्तरइयइ ६ MB किं मंतेण ७ MB पइजणु ८ MB सुह ९ K वजाउह, T घणमरु मेधेश्वर
१० MB महियरु, T महिहर राजान. ११ MB विज्जाहर १२ MB होइ ण

16 4 a उडु दिणि कट्ठदिवसे 8 b °सामण्णे अनुत्तुष्टेन 10 a सरु स्मर कदर्प, b घणसरु
मेघस्वनः

विमाचगोमिनीधरो	कुमारिपुष्करधरो ।	
सुरो विविचभंगभो	तभो तर्हि समामभो ।	
तिवा सुमंडभो कमा	विविचमिसिरीईभो ।	
छर्मतोरप्राहभो	मुर्मंतपुष्कमाहभो ।	
सर्मतर्मतमिगभो	बहुभ्यलप्यसिमभो ।	5
सुभीछपञ्चभूषभो	तमेच बाह सामभो ।	
कहि पि हेमपिञ्चरो	सरो व्य कंजकेसरो ।	
कहि पि इप्यबामभो	विकिसैर्बर्मंडभो ।	
कहि पि बल्लुछन्मभो	सुपैसपिछन्मभो ।	
बर्मंतप्यल्लोसभो	मर्मंतपुष्कर्मभो ।	10
मणीहि पञ्चप्राभो	रर्म बाह छाहभो ।	
कहि पि दैसि रसभो	बहुर बाह रसभो ।	
पिमो बभो व्य मितभो	सिरीविकिसमितभो ।	
विविचमोतिबभभो	सचंबकुर्मैर्यभो ।	
असेसमंगाकासभो	पणीचमेर्मैरोसभो ।	15
विचाकमचचारभो	विचावरसुचारभो ।	

पटा—मंडकु कि बन्वमि देव इठं बहुमाभिकहिं जडियठ ।

अहि दीसह तर्हि नि सुहावण्ड सर्मै मरिहिं वं पडियठ ॥ १७ ॥

17 १ MB add after this समुद्रपञ्चभो (B "बचसंभो). १ MB "बोमिभो. १ MB add after this बरवाभिरौहिभो v B मयतमभ १ MB विविचल्लमभो; K विविचर १ MB बल्लुछन्मभो and gloss कल्लेभ्यल्ल १ GK सुवसुपिछन्मभो but gloss छुवेरमिच्छन्म; T छरु छुवचन्म; M कल्लेभ्यल्लभो; H कल्लेभ्यल्लभो १ MB दैस १ G मिरि" but corrected to रिठ" in the margin ११ MB "बुर" १२ MB "पेव" १३ MBK छरु

17 1 a विवाचगोमिनीधरो विमाचगोमिनी कर्मवीरवाचन वच कामी वैमर्षिभ्येव सुवर्ण 9 b सुवर्णमिच्छन्मभो छुवेरमिच्छन्म 10 a बर्मंतव" कर्मिच्छन्म, 14 b "कुर्म" बहुभ्यल्लभो. 15 a "माचभो आचभो

18

जहि कुमारी अहिलसइ सईं वर
पइं विणु तेण वि काइं णवहैं
अविणउ एत्थु मै होउ मलासिउ
तं णिसुणिवि हूयउ कोऊहलु
मेरुधीरु जगणलिणदिणेसर
चल्लिउ पडिभडगयघडमदणु
चल्लिउ बलि रहँवरु वज्जाउहु
भूगोयरविज्जाहरराणा
पहुहु अकंपणु पणविउ जावहिं
सहुं धाइ भूसणहिं सहती
चोइय हय महिंदरहिं तहिं
जोयइ सुंदरि कसुइ दावइ

घत्ता—तहि अक्ककित्ति पलयकणिहु बलि भूययलि वि समाणउ ॥

वज्जाउहु वल्लु व आवडिउ रुषइ को वि ण राणउ ॥ १८ ॥

19

जिह जिह सुंदरि अप्पउ दावइ
को णीससइ ससइ दिहि छडेइ
कठाहरणु को वि संजोयइ
को वि णियइ णियणहइ अमंगइ
चिरमवि मइं ण कियउ मणणिग्गहु
को वि समिच्छइ तहि अहरग्गहु
कासु वि आयउ विरहमहाजरु
मुच्छिउ पडिउ को वि विहलघलु

तिह तिह णिवतणयहुं तणु तावइ ।
अपैउ पुण वि पुणु वि कु वि मंडइ ।
अप्पउ दप्पणि को वि पलोयइ ।
एयइं एयहिं थणहिं ण लग्गइं ।
किह विरयमि एयहिं कंठग्गहु । 5
कासु वि लग्गउ काममैहग्गहु ।
कासु वि उरि खुत्तउ वम्महसर ।
केण वि णियलज्जहि दिण्णउं जलु ।

18 १ MB सयवर २ M ण होइ ३ MB तुम्ह पेसिउ ४ MB रहवर ५ MB भाड°
६ MB जेतहिं

19 १ MB सुसइ २ MB छडुइ ३ MB अगउ को वि पुणु वि पुणु मडइ ४ MB अहगइ
५ MB °महागहु

18 ३ a मला सिउ दोषाश्रित पापाश्रितो वा 11 a म हिं दर हि ए महेन्द्रसारथिना,
19 ४ a वि ह ल घ लु विहलाइ

यथा—कर मादर कंदर सिंरिचिदुर वामंतसिगार्ति ॥

महिमसह इत्यह मादर महुद मज्जर कामविपार्ति ॥ १९ ॥

20

मदयिकपणु आयपि ओसाह
पुणु रहयद संचारैर तेसाहि
पुच्छर देव्यंभी गयवत्सर
रह्य केरकरा एहु मियसवर
एहु वप्परवर एहु गुज्जरवर
एहु कंयोपकौगवगाई
एहु कस्सीरवाहु उमेसह
सामप्यहसुत रहु मेवावर
कंदरवहतरापरित्तापति

1) विह विमिज्जर अर्थेय परजिय
मज्जर लवयपद्योचविपार्ति
इय मापण्णिवि पियसहिचयपई

यथा—तिह जीरुव तार सुखीवलय अर मियवर जपगारु ॥

जिह रोमि रोमि तहि विष्फुरित वग्गाहु वग्गविपारु ॥ २ ॥

21

जिह जिह कप्पर पर आमारु
मरवतिह बीसेस पमाहवि
सद्यसकंपाविमयगुणर

जिह जिह रंदिपं संरुपु होरु ।
महेविमेहसंयंयं आरवि ।
बीस्रवसपरिमैरुद्विमेसाहि ।

१ B सिरे सिदुर.

20 १ MB उमेदर १ B वप्परवर. १ GR वप्पर b t gloss वप्परवरी; K scrooles
म् ३० वर MB read lines 4 5 and 6 as एहु केरकरा एर ओमेकर, एहु मियवर एहु
मज्जर, एहु कंदरववापुज्जर, एहु कालंयोरु वज्जर; एहु कंयोपकौगवगाई, एर एहु कल्प मि कलि
म् १ MB उमेदर १ MB एहु ० MB "वज्जरपति" MB अनेप १ MB तिह करिउ

21 १ MB एहि १ MB वप्परवर १ MB "पामिल"

20 1 ओ साहं करविवा

21. 2 ० ५ माह मि परियम

जयहु लच्छिक्रीलाभूमित्यलि
कुसुमसरेण ण कुसुमसरावलि
गउ लहु सरहु भरहु साकेयहु
ता दुहंसणु दुद्धरु दुज्जणु
रविकित्तिहि सुहिबदाकरिसणु
मच्छरवत्ते तेण पउत्तउ
जहिं अरहन्तेउ तहिं सयमहु ।
जहिं महिवइ तहिं रयणह संगहु ।
ण करहेण खरेण वा णरचंदहु
हरिहरिथीआईयइ णियंदहु

धिस सयचरमाल उरत्थलि ।
गहिय कुमारि तेण कैयपजलि । 5
दुम्मइ परिवड्डिय जुयरायहु ।
दुट्टु दुरासउ दूसियसजणु ।
अस्थि मंति णामे दुम्मरिसणु ।
जहिं अहिंस तहिं धम्मु णिरुत्तउ ।
जहिं मुणिवरु तहिं इंदियणिग्गहु । 10
घटालवणु सहइ करिंदहु ।
सयलइ रयणह होंति णरिंदहु ।

घत्ता—सकेइय पुत्ति अकपणेण एहु णिहालिउ वालए ॥

अवमाणिधि तुम्हइ पिउंतेणय घणरु पुज्जिउ मालए ॥ २१ ॥

15

22

रोसविमीसहं
इच्छियवसणहं
समरि भिडेप्पिणु
धिप्पइ सुंदरि
विउसदुगुछिउ
कलहुदेसिउ
त णिसुणेप्पिणुं
दरविहसेप्पिणुं
णिहुक्कियमइ
भुक्खइ झीणी

जयकासीसह ।
दोहं मि पिसुणह ।
सिरइं खुडेप्पिणु ।
णं धम्महपुणि ।
पहुणा इच्छिउ ।
त तहु भासिउ
णिचहु णवेप्पिणु ।
फज्जु मुएप्पिणु ।
चवइ महामइ ।
कोचविलीणी ।

5

10

८ MB सकुसुम ण कुसुमसरसरावलि ५ MB किय° ६ MB अरहतु देउ ७ MB add after this:
जहिं सुत्रणु तहिं विसयपरिग्गहु ८ M °थीअइआइ णियदहु, B °थीआइअइ णिअदहु ९ MB पहुतणय

22 १ MB कलहुदेसउ २ MB add after this कर मउलेप्पिणु ३ MB add after
this बहु ससेप्पिणु

6 a सर हु सरय 8 a सुहिं बंदा करि सणु मित्रवृन्दकृशताकारकम् 13 a णियदहु वृचन्द्रस्य

मातृसाणी	मयविहाणी ।
आपर्वविनी	मुष्पे तनी ।
मिहरे भूनी	मममासनी ।
सर्ग नि विरनी	मर्णह रनी ।
पयसीवेस वि	अपर्वकयपि ।
सा करिकरमुख	मण्डेसर सुय ।
आर्धगिज्जर	अप रमिज्जर ।
एह पदनी	पैरकुळनी ।
कहालंताई	अनु माहलंताई ।
जाठ मुपंतई	उपहि कंतई ।
मो सुवयिबहर	इहपरमवगर ।
अवसें व्यासा	तुह कि सीसर ।

15

20

पद्या—सति विपयक कसहर कसनु कनु मयपु महीपु बाउ वि ।
कर्मजीवियकारेणु पुनु मुवदि सुंवर तुहुं तुह ताउ वि । २२ ।

23

अवसेंतेज माहव बीजेव वि	मंकुलीजेव वि लकुलीजेव वि ।
अरप सयंवरि कुवरि न विप्यर	विपयउ मर्यं पावै विप्यर ।
एहु पिपामहेव तुह तायं	मम्यु पवासिउ मयुसंवायं ।
एहु कंमिदि ओ मृपई तावर	सो नउ तुळसु तुल्यार पावर ।
एम कहांताई नउ पविमुनउ	अं मयन सितउ मूमनउ ।
कळकिसि पडिअवर विठ्ठल	अरपहु बीरेवहु तहु वनउ ।
अरपहुं फमिवर मरण अवकिउ	अवसें कसहरसउ अउ कोमिउ ।
तइवहुं महुं रोसापलु हुपउ	विपमिउ रंतु कसई अमहूवर ।

6

v MB अ मयपिनी ५ MB road the in as मयपावती विवर (B नवर) मुनी १ MB मयपु
G omits the line. B कनु ५ MB कारण पुनु

23 १ MB लकुलीजेव वि मंकुलीजेव वि. १ MBK बीरेवहु

22. 19 अ माहव वि नी पा मयपिता अमवता

23 ४ अ मयव मयि ६ अ मयव अ मयि ७ अ मय मय इति मयता

धारिउ छण्णपउत्तिहिं वप्पे
सो दूसहु पज्जलियउ धैट्ठ

अज्जु सयंवरमालातुप्पे ।
रिउल्लोहियसिउत्तउ ओहट्ठ । 10

घत्ता—भो ओसरु कण्णइ फाइ महु एउ किं मग्गु ण धुंज्जवि ॥
जउ अप्पु वि भडलीहदि गणइ तेण समउ राणि जुज्झवि ॥ २३ ॥

24

ताडिय समरमेरि कउं कलयलु
रक्खिय सिन्निगय घइरिवियारण
मेट्टेपयंगुट्ठहिं संचोइय
हैरिपररुररयप्पोणीमडल
रहरंछोलमाणधयदंवर
चक्कचारचूरियविसहरसिर
सुणामि सुविणामि महापट्टु णहयर
जुयराएण रणंगणि मुक्का
विजयघोसि करिवरि आरुढउ
चक्कवृहमज्झत्थु विहावर
एत्तहि कण्ण पइट्ट जिणालउ
रक्खिज्जती किंकरवग्गे
भ्रायइ हो विवाहवित्थारं
एत्तहि दूए कज्जु समीरिउ

राणि उज्जाइउ चउरगु वि षलु ।
सुरारुढ सुर वरचारण ।
गज्जमाण मेहा इय धाइय ।
वाहिय घरकामिणिमणचंचल ।
दित्तविचित्तछत्तछण्णंवर । 5
असिअसमुसललउडिलगलकर ।
अट्ट चद णामं विज्जाहर ।
गरुडवृहु णहि विरइवि थक्का ।
वालु महाहवसंधणिग्घुट्टउ ।
रवि परिवेसें वेढिउ णावइ । 10
णिअमणोहरु णाम विसालउ ।
थिअ णिअलमण फाओसग्गे ।
णाणाजीवरसिसघारं ।
त चक्कवइसुएणवेहरिउ ।

घत्ता—एत्तहि जामाए पुलइएण भणिउ अकंपणु धणुहु धरि ॥ 16
रिउ जिणिवि जाम पडिचलमि हउ ता तरुणिहि रक्खणु करि ॥ २४ ॥

१ M वट्टइ ४ MBK भुज्जमि ५ MBK भडलीहदि ६ MBK जुज्जमि
24 १ MB किउ २ K भेठ° ३ MB हयसुरेहिं सय ४ MB चक्कचार° ५ MB अद्वंद.
६ MB °सयणिव्यूढउ ७ MB थिय तायाणढ फाओसग्गे ८ MB झाइय

25

तेन समस्त बरणीत एतुम्यह
 ज्ञानपाणि मीसन्तु परसिद्धिद
 एव वि ससिद्धिजायकुमुद्वय
 एव वि न आसीदिसिद्धिसह
 एव वि होमनाह न दादय
 सेरितम्पकंतापविपासय
 मेहप्यह ज्ञानवर तर्हि ज्ञान
 जह वि कीद तर्हि बसित ज्ञान
 विरहपमपरद्वयमर्पति
 हीनर लोमप्यहसुद केह
 मोहमायेहि परिपरिपद

बकिड सुकेड नृपमिषु वि मह ।
 दबकिडि अर्चयन्तु ससिद्धिद ।
 एव वि कयसंयाममहुप्यह ।
 एव वि मन्त्रबन्ध रचसहचर ।
 एव वि एव वार् एवावय । 5
 एव वि ई नर एव गुपासय ।
 करबहचपरि वार् मनु विदुद ।
 तर्हि न धर रिद कम्मविहाय ।
 विद वेपान्महाकरिकंभरि ।
 बभगिदिस्यह केसि जेह । 10
 एवि न सकिरनकमाहि कुरियद ।

पद्या—उपकथयकरनाहमर्पकरा जाहवि कोषीदम्यह ।

ज्ञानम्यह कन्माकापविज मन्त्रकिटिदपसेनार । २५ ।

26

परिद्विपकंजयकंभुहकनार
 मन्त्रमुहमुहकनकनार
 हसिचोतासपिचोतापार
 मुकपिसकनकनयगवयकनार
 कंकुसकसपिसंतमापयार

खामरिसार संवरिपावयार ।
 मामियकनार मेसिपयकनार ।
 हंसपुनंतयपुगुपयकनार ।
 दहिरवारिरेतिवयपयिबनार ।
 संदयसंकनयपिपुनार । 5

25. १ MB बरणीत २ MB मितसुह. ३ II कययन्तु. ४ MB रयमयद. 5 MB रयमयद. ६ MB बरणीत but gloss नरि. ७ MB नार ८ MB कोषीदम्यह MB रयमयद.

26. १ MB बरणीत २ MB "कययन्तु" ३ MB कययन्तुमि ४ MB कययन्तु

25. 6 = नरिद्वयवकंभुहकनार नरय एव तारकनम्यह कययन्तुमयद. 8 = नरिद्वि कययन्तुमयद नरय ७ नरिद्वि रिद कययन्तुमयद विरुचोतीति गुणोपदेष्टव्यमिदम्यह कययन्तुमयद नरिद्वि नरिद्विद्वि.

26. 2 = "कययन्तु" ३ "मियक" नरय

असिणिहसनसिहिसिहपिंगलियं
मिलियकरालकालवेयालइ
रुहराडभाविमभेरुइ

लुयकरसिग्उगाइ महिघुलियं ।
हणैहणरावसमुगयरोलइ ।
मडियधवलछत्तधयदइइ ।

घन्ता—जुझतइ दिट्टइ विसरिम्इ पयलियवणरहिरइइ ॥

येणि वि सेणणइ ण रंणसिग्गि चउइ केसुअफुलइं ॥ २६ ॥

10

27

रत्तमत्तरयणियरवंभले
पहयहरियमन्थिकपंकप
उदयद्धन्धिधेइलूणे
उयरऊरउग्यलधियारणे
भीरुवयणणीसरियहारणे
ता जणण मपेसिया सरा
आहया हया विद्धया धया
ते ण किंकरा जे ण मारिया
त ण छत्तैय ज ण छिण्णय
सो ण ररुवरो जो ण भग्गओ
ताम पक्खिपक्खेहिं विज्जिय
फुट्टकचुय फुट्टमइल
घायघुम्मिर चत्तगौदल
समरकोच्छरो हंसियअच्छणे
झत्ति घाहुवल्लिवेतणुइहो
भुयवलीविलग्गो महाभुवो
दिव्वलक्खणफियसरीरह

घाण्णीयलुलियतचोंभले ।
रसैवसाणईजणियमफण ।
नियसमुदरानेसपूरणे ।
चइरिघग्गिणिमणिहारहारणे ।
मरणदारुणे तहिं महारणे ।
पुगलग्गहुकारग्गसग्ग ।
णिग्गया गया णिम्मया मया ।
ते ण राइणो जे ण दारिया ।
त ण वाहण ज ण भिण्णय ।
सो ण सेयरो जो ण खं गओ ।
मग्गणेहिं किंवेण व ताजिय ।
तुट्टपक्खर मुक्ककुतल ।
चक्खिण्णो णिग्गय वल ।
वधुपरिहवे वद्धमच्छरो ।
सोमवसतिलयस्स ममुहे ।
पट्ट अणतसेणो वि साणुओ ।
सयइ पच भिडियइ कुमारह ।

5

10

15

५ MB हणहणकार° ६ M वणासिरिण, B णवसिरिण

27 १ MB °विंभले २ MB रसवस णइ ३ G छित्तय; K छत्तय, corrects it to छित्तय
but scores out the correction and restores it to छत्तय ४ MB धिजिय, ५ MBK
किविण ६ MB फइ° ७ M चित्तगौदल ८ MBK हरिसियच्छरो

27 1 a °वें भले विहले; b °चों भले समूहे बीभत्ते या 2 b रसवसा णइ° रसस्य वसायाथ नदी
7 b मया मृता 14 a °कोच्छरो दक्ष 16 b साणुओ साणुज लघुप्रातृभिः पश्यते सहित इत्यर्थ

इत्था—पुनरेवतवपतवपरि सिद्धिनि बर माहसत आचरि ॥

हेमगठ मापरवहसपरि छह अंतरी पित ताचरि ॥ १७ ॥

28

बर तासिबह छिबह मिबह
कुनमचमि नं विह्विबसत्परि
बरमेह न मरति महाबहि
मेहेसत्तरबाहु अरुणत
बसुसमससिबिबहि पबिबिबिब
परवतरी असहापसहापहु
मचरि कुमाद बचतु मुहू न कसद
सुपमि निबिबहि बर महु बेरिद
कतामोहमहम्मबहुद
कि कटिउ असिबह पदुतवबहु
संमुहू पारि बाहि मा वासहि
ता सो बयवरबाहे हसियव

पके पदु नं तहि मरिबह ।
सत्परि आबिबि बंति मिरपरि ।
किर बाहिनि महामुनि बाबि ।
कुमरतु वपरि सिद्धि व परंतत ।
छहसु सपुण्डर पितु व इक्षियव । 8
मुहू बबछोदुनि येवरपबहु ।
बहु माय मुहारेत बबसद ।
ता वन वि रिउ रमि पबारिउ ।
र जीमूवबाह मुहू मूद ।
दोहप विबिबिबो सि मुवविबबहु । 10
येकमुहू विपव सिद्धिमुह पेसहि ।
इय बरंतु कि बहहु व असिबह ।

इत्था—मुहू कीरत परमापु वमुहू बबबिबिबि सरी कसद ॥

इहं नावविर्बह बरविपके निवपपुपायहं मसत ॥ १८ ॥

29

पम बचरि बर अण्यत्रिउ
बार कसंतहु पबो रसियतं
मेसियसुरवरफबिर्बबायव
विबबविबुदविबाससमाये

नं बाववि हरिवा भोरविउ ।
अगु सिद्धिनि वं काळ हसिबह ।
जीवारत एवहु संजायव ।
बहु कटिउ वं सरी हत्ये ।

१ G पुनरेवतवपरि

28 १ MB रमि न. १ M परमेहे १ B विर ४ MB कुमरतु ५ M बह MB १ नं
पले मूद १ M कसद

28 8 नं बाहि प्रमुने, 8 नं बहसमचयिनि जहि बहकलींविबारीविबारी हत्ता, 8 नं बीहुक
बाह हे देवत्ता, 10 नं दोहप हे दोहिय, 18 मुहू कारक लं हेड बरी परवारतुवमुहू परप
भबन प्रमुच, प्रपव, सरीकसत एकाज कर्मा, 14 नावविर्बह नावविर्बह

29 1 नं हरिवा सिद्धि.

लोहवंत किर के णउ मग्गण
 गुणवज्जिय किर के णउ णिट्ठर
 चित्तविचित्त के ण किर चलयर
 सुद्धिवंत णियदित्तिह दित्ता
 वहरिहि देहावयवि पइट्ठा
 कोडीसरु जि जाहं पवरासणु

धम्मज्जिय किर के णउ भीसण । 5
 पिच्छंवि किर के णउ णहयर ।
 वम्मण्णोसिय के णउ ताविर ।
 उज्जुय के ण मोक्खु संपत्ता ।
 एक्क ण जयसर अण्ण वि दिट्ठा ।
 ताहं ण दुग्गमु लक्खु विणासणु । 10

घत्ता—अइदीहहिं विसविसमाणणहिं णिहिलु णहंगणु रुद्धउ ॥

णारायहिं णायहिं णं मिलिवि सुणमिहि वलु खाणि खद्धउ ॥ २९ ॥

30

कुजर जूरभावेण व भग्गा
 सदन संदाणिय वावल्लहिं
 तिक्खखुरूपहिं छिण्णं छत्तइ
 चउदिसु पच्छाइयसरजाले
 एम दिसावलि संदिज्जंतउ
 सुणमिं सुकु थाणु सघोरउ
 कोइ ण काइं वि तेत्थु णिहालइ
 एत्थु तेत्थु मग्गियअवठंभणु
 वल्लु णीलीरसि घोलिउ णावइ
 दिणयरसरदीवियदहदिप्पहु

तुरय तुरंतंतयपहि लग्गा ।
 भणु कहिं किर णिज्जंति रहिल्लहिं ।
 चिंधं चामराइं वाइत्तइं ।
 विज्जाहर हरेवि णियकाले ।
 पेच्छिवि णिययसेणु भजंतउ । 5
 ठंकिउ तेण वहरिपरिवारउ ।
 वाहणु पहरणु को वि ण चालइ ।
 सालसणयणु पमेह्लियजिभैणु ।
 जाम अहइ णिह संप्रावइ ।
 तावंतरि संठिउ मेहप्पहु । 10

घत्ता—त धत्तु महंतु विणासियउ उज्जोइउ णियंसुहिमुहु ॥

जगि सज्जणसंगे जायएण कासु ण संपण्णउं सुहुं ॥ ३० ॥

29 १ M मम्मं णिसिय, B धम्मं णिसिय २ MB ण सताविर

30 १ MB जरतावेण जि भग्गा २ MB ठुरत तहे पहि ३ MB किर कहिं ४ MB छिण्णहिं
 ५ MBK अघारउ ६ M परहणु ७ MB जेभणु, ८ MB सपावइ ९ B णियसहिमुहु

7 ८ धम्मणोसिय ममान्वेषिण 9 ८ जयसर जयस्य थाणा जितस्मराय

30 1 a जरं प्वर, ८ ठुरततयपहि ठुरत त्वरमाणा + अतयपहि अन्तकमार्गे 2 a वावल्लहिं
 सेल्ले, ८ रहिल्लहिं सारथिभिः 9 ८ अहइ अभद्रा 10 ८ मेहप्पहु मेघेश्वरमित्र,

31

यं अक्षरं जलद्वयं गच्छेत्सिद्धिं
 सुखं मुक्तं मीनं पञ्चाक्षरं
 सुखं मुक्तं अक्षरं द्वापञ्च
 सुखं मुक्तं संक्षरं मेघं
 सुखं मुक्तं विष्णुं महाकविं
 सुखं मुक्तं मन्त्रं मन्त्रिणं
 सुखं मुक्तं मन्त्रसाक्षात्
 यं यं सुखं मन्त्राद्युपेक्ष

प्राप्तं तातुं सुखं भावसिद्धिं ।
 मेघमन्त्रेण सप्तं पुरिषाण्यु ।
 मेघमन्त्रेण मेघं अक्षरसिद्धिं ।
 मेघमन्त्रेण सप्तं पुरिषं ।
 मेघमन्त्रेण सप्तं पञ्चाक्षरं । 8
 मेघमन्त्रेण सप्तं पञ्चाक्षरं ।
 मेघमन्त्रेण सप्तं पञ्चाक्षरं ।
 यं यं मेघमन्त्रं विष्णुं ।

यथा— यत् सच्चिदं विष्णुं रिजिह सत् कस्य च मुक्तं वंकेपिपुं ।

ओसारिह सुखं जलद्वयं सगरमाध सुपिपुं । 10

32

मन्त्रं सुखमीसिद्धिं सौख्यं
 मेघमन्त्रं पद्वेदिं पञ्चाक्षरं
 राजाचारिणीभियमद्वयं
 कविचक्रपञ्चकविचक्रोद्यमं
 भावसप्तकपञ्चकविचक्रं
 पञ्चाक्षरं अक्षरं यत् अक्षरं
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं
 पञ्चाक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं

मेघमन्त्रं विष्णुं रिजिह ।
 यो भावसु वं सुखं वि अक्षरं ।
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं ।
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं ।
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं । 8
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं ।
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं ।
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं ।
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं ।
 यत् अक्षरं यत् अक्षरं यत् अक्षरं । 10

31 १ MB अक्षरं २ MB सुखं ३ K सुखं तात. ४ MBK मेघ. M इष्टं.
 १ MB अक्षरं M अक्षरं B अक्षरं ८ MB अक्षरं तात. ९ MB अक्षरं

32 १ MB सुखं तात. २ MB अक्षरं ३ M रि ४ G अक्षरं ५ MB रि ६ MB
 रि ७ MB रि ८ MB रि ९ MB रि १० MB रि

31 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

32. १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

यत्ता—मरु मणिहि आउ मुलोयण अत्थि भवणि घटदासिउ ॥
एउ लग्गउ तुह भुयउलमयहो पुव्वमेव आसासिउ ॥ ३२ ॥

33

जेण धलेण जिउ घणमडलु
त यलु पेक्कवह दावहि अम्हह
घेहाविउ आवत्तचिलायहि
तहि अवसरि सेंदूरकणारुण
अट्ट अट्टेचदेहि आचारिय
एकु दत्ति जुयराण ढोइउ
हयअरि करिवरेण ते दत्तहि
सरससमुच्छलतपलपडहि

तोसिउ ससुरु सग्गि आहडलु ।
अजु पक्किय करेवी तुम्हह ।
तुहु पि यण जुज्झहि सहु रायहि ।
जयवारणहु विलग्गा वारण ।
कम्भारिक्कगेज्जावलिसोहिय ।
ण इदं अइरावउ चोइउ ।
णिवडियणवविललतहि अंतहि ।
देखडीहवतददम्माडहि ।

यत्ता—गय पाडिय सडिय ण सिहरि धरणिवीडु आकपिउ ॥

देवसुरहि णहि सटियहि जय जय जयणिव जपिउ ॥ ३३ ॥

34

एत्तहि रणु कयसूरत्थवणउ
एत्तहि धीरह वियलिउ लोहिउ
एत्तहि कालउ गयमयविधुमु
एत्तहि करिमोत्तियइ विहत्तइ
एत्तहि जयणरवइजमु धवलउ
एत्तहि जोहविमुक्कइ चक्कइ
क्कवणु णिसागमु किं किर तहि रणु
ता चण्णिवि मत्तिहि ओसारिउ
तुमुलरगे णिरु रोसाउण्णइ

एत्तहि जायउ सूरत्थवणउ ।
एत्तहि जगु सअरुइसोहिउ ।
एत्तहि पसरइ मडु तमीतमु ।
एत्तहि उग्गमियइ णक्खत्तइ ।
एत्तहि धावइ ससियरमेलउ ।
एत्तहि विरहं रडियइ चक्कइ ।
एउ ण जुज्झइ जुज्झइ भडयणु ।
रयणिहि जुज्झमाणु विणिवारिउ ।
तेत्थु जि वसियइ वेणिण वि सेण्णइ ।

७ MBK आरोसिउ

33 १ MB सिंदूर° २ MB अट्टचदेहि ३ MB अवराइउ ४ MB देवासुर

34 १ MB सप्पारुणु मोहिउ २ MB रोसाइण्णइ

33 ५ ८ °गेज्जावलि° वरगामि ७ ८ अत हि अन्ये

34 ३ ८ त मीतमु राक्खा अन्धकार

यथा—रुतिर्हि एष्यणि भवतिष्य परवहकलि समस्तः ॥

10

मरिचिह पिठ सद्यिर्हि शविषठ सरसपञ्चपलि पञ्चस्तः ॥ ३४ ॥

35

का वि मयह ईसावस्तुही
महपरस्तु हर्त किह् इयमि
का वि मयह जं मीह पञ्चिपञ्च
जं मरं विठ र्त्याहि पञ्चिह
का वि मयह पिय कव मा होयहि
पञ्चमकिपसास्तु कञ्चस्तु
जो मरं अपिठ आसि धवर्तहि
पञ्चमपिञ्च पञ्चमिञ्चिञ्च
का वि मयह ज्ञापिठ तपुपापुहि
जाह् ईसाविञ्चस्तु विञ्चर्त
को वि पुञ्चमस्तुसरिञ्चस्तु
केय वि र्त्यावि विचरिञ्चस्तु
छाप मिञ्चिपु होहि विह्यहि

जम्माचार पियहिपर पाहुी ।
हयविहि मीचहि कारं य मुचमि ।
पिय र्तं हिपठ सिचहि किं विञ्चर्त ।
महरेविहु र्तं पञ्चिपञ्चिञ्च ।
मोसव कावाचिह किं ज्ञापिहि । 5
ये छुह छुह विचिञ्च मुचिपञ्चस्तु ।
मा ईसाव उव करिचर्यर्तहि ।
का वि सप्याह् जंजं बीचर्त ।
आचिप पासि पेटि विह्वाहि ।
आचिपेपुपर साह् कर विञ्चर्त । 10
उप्यरि र्तु महारु वञ्च ।
रयचकीहि मारंगह् केटी ।
मनु किं अ कियठ पञ्च समस्तहि ।

यथा—रिठ माचिपि पञ्च उवसमिचि मेहिहि ससव सपस्तु ॥

मयवरसंवार को वि छुह करिचि बीरिञ्चस्तु ॥ ३५ ॥

16

35 १ MB वि इयमि. २ MB वाचिहि ३ M छुह, B नह् ४ K बीह ५ MB मरुर्त
पञ्चिपञ्चिहि विह्वाहि ६ MBK बीचहि ७ K विचि ८ MB उव उव करिचर्यर्तहि ९ MB र्त्याहि
१ MB र्त्याहि ११ T विमानुहि १२ MB मय विचिपु १३ MB लोह कर विञ्चर्त १४ MB मी-
चपञ्च

10 उवसव जम्माहो ११ विच विच

35 2. ८ उववरस्तु मयवरस्तु 9 ८ उववापुहि मरिचामस्तु ३ विमानुहि
गुण्यतवस्तु 10 ३ वाह वि वाह

36

पुणु जामिणीगमणि	दिणमणिसमुग्गमणि ।	
भेरीणिणहाइ	कयजयधिमहाइ ।	
जममुहरउहाइ	हरियदणहाइ ।	
गलियमैयगाइ	हिसियतुग्गाइ ।	
चाहियरहोहाइ	सणद्धजोहाइ ।	5
चलवलिचिंधाइ	धूलीरयधाइ ।	
किंलिगिलियणिमियग्ग	जिगिजिगियअमियग्ग ।	
कपियधंरग्गाइ	सेण्णाइ लग्गाइ ।	
ता संटणत्थस्स	आहवसमतथस्स ।	
णरमिर लुणंतस्स	फरि हरि हणंतस्स ।	10
विहवियदणुयस्स	लच्छिमइतणुयस्स ।	
पैरिचत्तसकेहिं	यसुसममसकेहिं ।	
उम्भूयगावेण	विजापहावेण ।	
परपाणपहरणइ	छिण्णाइ पहरणइ ।	
कौताइ कर्पणइ	मुसलाइ घणघणइ ।	15
चायाइ चक्राइ	चूरेवि मुक्काइ ।	
ता गलियसत्थेण	चित्ते महत्थेण ।	
जयणामगाएण	इच्छियसहाएण ।	
जियसरयमेहम्मि	जो आसि मेहम्मि ।	
सिद्धो सउण्णेण	धरेण्णेण वीरेण ।	20
अहिराउ नभरिउ	सो द्रप्ति अचयरिउ ।	
फणिवासु रणि तिव्वु	अद्धेदुसर दिव्वु ।	
होणचि राणि तामु	गउ णाइणीतामु ।	

36, १ M हरियव° २ MB °महंगाह ३ MB किलिकिलिय° ४ MB °धयग्गाइ ५ MBK परियत्त° ६ B omits this foot ७ MB कप्पणइ ८ MB चितियमहत्थेण ९ MB धीरेण धण्णेण, G धम्मेण धीरेण

36 8 b हरियदणहाइ हरिचन्दनाद्वाणि 11 b लच्छिमइतणुयस्स जयस्यत्ये , 12 व सुसम ससकेहिं अष्टभिर्विद्यापरे 20 a सउण्णेण खपुण्येन 22 फणिवासु नागपादा

ता विजयवर्धनेन
जासा मुपतंज
हृष्यवहसमाभेन
कृत्वापुत्रसहिम
हरमक्षिपयेयसंदि
परिममिपमिन्द्रबलि
अह वि विहृ तेन
कृत्वातिशयेन
धरियो दसावचत

ससिमासपुणेन ।
याक्षिपयिर्वतेन ।
हेहिपिन्धवाभेन ।
यिहहिभि रैवि रयिप ।
बभविपारिर्देहि ।
पहसरिपि मयत्तुमुसि ।
यया तुरतेन ।
वृद्धर्षिवासेन ।
बभ्रवहृपिर्देहवत ।

25

30

यत्ता—अपु तापताह पिठ रैयवह तो वि निर्बधनु पतत ॥

वै माह कुर्माव अयहिनेन पुक्षिपफलु किह मुपत ॥ ३६ ॥

37

१) एवम् अर्चति हि सुरपरमभियहि
मक्षिउ कुसुमपयव सुरजियरे
अपविष्ठासु अपरायवु केरत
रहनिहियत कुमाव विष्ण्वयव
अहहरतत पशु ससुरययति
तकमनि क्षयव वि परमवततिह
अम्मावासपासविर्वामुह
मिक्खिजरीरिहहि मठक्षिपपाणिहि
बहुमिष्ण्वतवीधउप्यव्यव
अवगार्हपु सुग्रासासाहव

अभियत अपसाहसु अपयविपहि ।
गार्ह वं ह्युदमिर्ग ममरे ।
वहवह तपय वाव विबोरेव ।
करकक्षिर्वकुसबोरवर्वावत ।
विजपावपु येवहिउ पुरवति ।
यय विजमववह परमइ मतिह ।
वैदिह अहवु सिजयपुजावह ।
मुहकुहदपावमुकक्षिबवाभिहि ।
मोहविस्वामर्लु विपिन्धवत ।
पुतककतमुक्षिपपातेहव ।

6

10

१ B अहविन् ११ MB एहविन् १२ वरवति १३ M रिगवति १४ MB अयवतेन १५ MB
मिह १६ M अहवह १ H एमवह १ K कुमाव

37 १ MB अहवह २ MB एहविह ३ K मूक

24 ॥ व वि जा व रैयवव 27 ॥ अहवह रयमुचमु ३ रविह नापिम् 30 ॥ अहवि निह अहवि
अह विवकलाविप 36 अह वाह पयव वाहा

37 ३ ३ वाह वैहा ४ ३ वावव अह

गहियमुक्तामृशितनपुत्तउ
सोफपदुक्तामृशितनपुत्तउ

पुण्णपावकुसुमेहिं णित्तउ ।
इदियपक्किमउलहिं पडिक्कणउ ।

घत्ता—इय भयतरु शाणहुयाम्भेण प६ द्दुउ परमेसर ॥

जिण जम्मि जम्मि महु तुहुं मग्गु अय जय जियवर्म्मसिर ॥ ३७ ॥

38

अक्कफित्तिदुजयजयरायह
पयहुं मग्ग मज्जि जइ ण्णु वि
तो वि णिप्रित्ति मज्जु आदाग्गु
इय चिन्तति पुत्ति सभाधिय
तुह मद् न्नामरथे अममजस
हृद् भेति होउ किं लायहि
जणणवयणु णिसुणेनि कुमारि
सिरिणाहहु मिरि व्वाचग्गो
जाइवि पासि कुमारु णेहं
जउ सौफ पुणु पायहि पडियउ
अग्गह णर तुहु णरपरमेसर
अग्गह णलिणायर तुहु विणयर
अणुपालियह काह नुसिज्जइ

महु कारणि उच्चाइयवायह ।
पच्छइ इच्छइ जइ मद् न्णु वि ।
लच्छिहि कुत्तिउयकुणिमसगीरहु ।
लधियक्क ताए घोह्वाविय ।
ग्गणि उच्चरिय महीन महाजस । ६
मुदरि करपहउ उच्चायहि ।
णियमु प्रिसज्जिउ कामकिसोरिह ।
जयरायहु कर्पकइ लगी ।
महिणिहिच्छदडासणदेहं ।
भाँनइ सामिभेत्तिभरणमियउ । 10
अग्गह पक्कि देव तुहु सुरतर ।
अग्गह कुवल्लयसर तुहु ससहर ।
अभयपदाणु सभिच्चह विज्जइ ।

घत्ता—इय वयणहिं सो भरहगरुहु मच्छरु माणु मुयाविउ ॥

लच्छीमडरहिणिसुलोयणहे पुप्फयंतु परिणाविउ ॥ ३८ ॥

15

इय महापुग्गणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाफइपुप्फयतविरइण
महाभच्चभरहाणुमणिण महाकच्चे सुलोयणासयवरविवाहो णाम
अट्टावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २८ ॥

॥ सधि ॥ २८ ॥

५ MB जय णिज्जियवर्म्मसर

38 १ MB जइ मद् इच्छइ २ MB सधि ३ MB सारुणु, K सांफणु? ४ MB भावइ ५ M
भसिभरणडियउ, B °तसिभरणडियउ ५ MB वयणे

12 b पडिक्कणउ आश्रित

38 5 a असमजस कोपाविठा 8 a सिरिणा हहु विण्णो

2

लज्जंतु वि तापं सो पञ्चु
 घसणेसु रमइ खलवयेणु सुणइ
 जो पइउ सो चरै कहिं वि जाउ
 महु चरपुरिसहिं दुइंतदुरिउ
 होऐण सुदुण्णयगारण
 गुरुकोवें सिसु जाणंति मग्गु
 गुरुकोवें को वि ण रयहु जाइ
 गुरुवयणइ कडुयइ जाइ जाइ
 लग्गाइ ण सुइसुमिरंति जाहं
 लइ दिज्जमि हउ दिट्ठु पत्थु

चरै गलउ गच्छु मा होउ पुत्तु ।
 अविद्येयभाउ सयणाइं हणइ ।
 मा करउ पयहि परिंणहु ताउ ।
 पयहु केरउ घज्जरिउं चरिउ ।
 ता चित्तिउ तेण कुमारण । 5
 गुरुकोवें जैंगि सिज्जइ तिवग्गु ।
 गुरुकोवें सपय घरहु पइ ।
 परिणामि सुपत्थइं ताइ ताइ ।
 जिम परिहउ तिम धुउ मरणु ताह ।
 लंघियउ जेण गुरुसुयपयत्थु । 10

घत्ता—जययतें सुण्णहकतें तो पेसिउ गुणवंतउ ॥

आवेप्पिणु पहु पणवेप्पिणु पभणइ सुमइमहतउ ॥ २ ॥

3

भो देव कसणसियतंविराहं
 किं तुह णवणिहिवइ पाहुडेण
 लइ भक्तितो वि णियकिंकराहं
 जयविजयाकपणपत्थिवाहं
 पहिलउ जि दोसु दीहरमुयासु
 धीयउ जं कोक्किउ घरणिहाउ
 तइयउ जं जइ णिक्खित्त माल
 परघरिणि हरतहु रोसणदिय

लइ रयणइं लइ पवरंवराइं ।
 किं फिर जलहिहि पाणियघडेण ।
 तुह पायपोमलालियसिराहं ।
 विण्णाविउं णिसुणि णिच अवणिवाहं ।
 ज दिण्णी सुय णउ तुह सुयासु । 5
 दावियउ सयंवरविहिणिभोउ ।
 रइलालस लग्गी तासु बाल ।
 चोत्थउ तुह तणयहु समरि भिडिय ।

2 १ MB वर २ MB °वयण ३ M फिर ४ G परिणयहु ५ B जाएण ६ K सदुण्णय°
 ७ धुधु सिज्जइ

3 १ MB °णिहाउ.

2 6 b तिवग्गु धर्मार्थकामा 8 b सुपत्थइ सुपय्यानि 9 a सुइसु सिर ति भोग्रविवरमये
 3 2 a णवहि वइ हे नवनिधिपते 3 a असि तो वि भक्तितो 3 4 b अवणि वाइ अवनिपानां
 राज्ञाम् 6 b °णि ओउ नियोग

पंचमठ बाहु बखत कुमार
 रप दोहा दोसपरंपरा
 तं देव परहु तुम्ह सारु
 किं मारु किं मणु किं किमेसु
 हा हरे पदिकजमि कामिपठ
 अई पुणें महु बाहिनु बाहुई
 ईकपरर वप्य संगामकाकि

थिउ थियणवरु एजेरमबीद ।
 अं न वि मुघाई मज वि घराई । 10
 किं ईह एथु सप्यसमहारु ।
 मं भितुमिनि अपर मेरबीसु ।
 पचसियर तार महु सा अि ताउ ।
 अ सा तं लकु न बर्मु ईह ।
 उहसिपगिहारमंठमाकि । 15

बसा—बसगम्ये रोसें तिथ्ये का अचबठ संपहर ॥

सुत ईहवि मो मरं लंडवि जो उपहिन पहर ॥ १ ॥

४

रप काहिनि ठल पडुविउ मंनि
 बरबर मज्जर पर पिउसमाणु
 महु मगर बिभि मुबरीउ मज्जर
 कसर सरोसि शुक्कवि मरेर
 बंमठ किं पुसहु वप्यसाह
 तं मज्जु निपारिउ बहर मंजु
 ता अपकपय इतिपवसुमान
 बरविदिपमंतिअप्यादिपय
 मज्जरपयविपजिबवरपय
 मज्जहि विनि आरंविपजय

गह सा घोमर बिबपडुहि छंति ।
 अप बिजय व निरितिमिरमाणु ।
 तुम्हारउ माणुसं सुहु पगर ।
 को मरहु करी कीक बरै ।
 अं कण देवि विरारउ बाह । 5
 बर किहार पाकि संमावसंगु ।
 कुबबनबाह ईसादिपम ।
 पुआवकिआवसप्यादिपय ।
 मणुहुविपवररसंपय ।
 बाउथिउ विपससुरउ अपय । 10

बसा—तुह गोत्रिहि शिखेरदिहिदि माम विरर किं किज्जर ॥

अविचम्ये सो वि सचम्ये जीउ निपट्टिनि विज्जर ॥ ४ ॥

१ K एरंमर्द १ MB लुकिने ४ B मय ५ MB महु पुण ६ MBK बजरु ७ M बरउ
 ४ १ G बाहु सुहु १ MB एम १ MB मर MB पुता सु ५ M *रपिहरे

10 a दोहा दोहिन 15 b शिखरकतमाकि पुत्रैमंतिना अम्रभेय बरिपय. 16 तं बहर पीवनी

४ ६ वप्यसाह मज्जर ६ देवि वप 12 अविचम्ये विपुल

5

को विसहइ सुहिचिञ्चोयताउ
उम्मुकु सुयावर ससुरएण
णहु पिहिउ गिल्ल महि करिमएण
कय जलहिचलय चलवलियणीर
उट्टिय गहीर भेरीणिणाय
गच्छंतु सतु सो समियसत्तु
णियणियदूसावासहिं सउण्ण
पडकुडिदि महामहु सुरसमाणु

परियाणवि कज्जवियप्पभाउ ।
तं जंतं हरिखुरखयरएण ।
चलवलित खलित धयवहु धएण ।
यिय विमहर भरंभयदलिय धीरं ।
आकापिय कर्कुहणिवास णाय । 5
दियहहिं गगाणइतीरं पत्तु ।
हेमगयाइ सयल वि णिसण्ण ।
थिउ राणउ गग पलोयमाणु ।

घत्ता—सविहगहि दिट्ठइ गंगहि छणससिरविपडिवियइ ॥

ण वेल्लिहि अमरसुहेल्लिहि कुसुमइ पडुरतवइ ॥ ५ ॥

10

6

आमेल्लिवि खंधावार तेत्थु
साकेयहु जाइवि भुवणसारि
पडिहारं पइसारिउ दवट्टि
विसहरणरखेयरविहियसेव
ता दिण्ण दिट्ठि णाहें विसाल
पसरतपणयरससायरेण
ण कलियइ नेहमहीरहासु
उवविट्ठु तुट्ठु समाणु कियउ

कइवयभडेहिं सह महिमहत्यु ।
थिउ पजलियरु णरवइदुवारि ।
विण्णविउ णवेप्पिणु चक्कवट्टि ।
जउ पणवइ एत्तहि पेक्खु देव ।
ससिवियसिय ण कदोदुमाल । 5
मुहुं जोइवि सह परमेसरेण ।
अगुलियइ दाविउ पीडु तासु ।
पोरिसु परमुण्णइ सैहहि णियउ ।

5 १ B कज्ज २ MB add after this पडिबोहिउ बुहमणं वरेण ३ MB add after this पडिपेडिउ सदणु सदणेण ४ M भयमरं, B पयमरं ५ MB धीर ६ MBK ककुहणिवासि ७ MB तीर

6 १ MB सुट्ठु २ MB सयहि

5 8 b गिल्ल आद्री 6 b ककुहणिवासणा य दिग्गजा 9 a महामहु महातेजा
6 1 b महिमहत्यु मया महार्यो महान् महान्तो वा अर्थधर्मादयो यस्य 8 a दवट्टि शीघ्रम्, 5, b क दोष्टं नीलोत्पलम् 7 a नेहमहीरहासु स्वहस्तसवार्धितवृक्षस्य कलिकया इव अकुल्या 8 b सह हि सभा-
याम्

यत्तु ब्रह्मण्यु पाठितु ब्रह्मण्यु
 गवर्धनपाठु ब्रह्मण्यु गवर्धन
 विष्णु मेष्ठिनि को तेष्टोक्तसामि

परमात्मपाठु ब्रह्मण्यु सगुह ।
 कामादराटु ब्रह्मण्यु सगुह । 10
 परं मेष्ठिनि को सुहृदम्यपामि ।

घटा—ओ पुष्किण्ड सो परिधिपण्ड अं सुहृदं सं कुरुते ॥
 परं हृते एव पहरति अथ मर्त्ये कारुण्यं च चित्तम् ॥ १ ॥

7

एव मयिनि विरहितं ब्रह्मण्यु
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं

एव गवर्धन विरहितं ब्रह्मण्यु
 वेदमहाभारतं ब्रह्मण्यु
 पञ्च सुहृदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं
 ब्रह्मण्यु वेदमहाभारतं 10

घटा—विष्णोहिनि ब्रह्मण्युहिनि वेदि सुहृदमहाभारतं ॥
 मंदारहिनि ब्रह्मण्युहिनि वेदि सुहृदमहाभारतं ॥ ७ ॥

१ M पुष्किण्ड MB गवर्धनपाठु ५ M सुहृदं B सुहृदं

7 १ MB वेदिपाठु २ MB वेदिपाठु पुष्किण्ड ३ MB वेदिपाठु MB वेदिपाठु ५ MB
 वेदिपाठु वेदिपाठु ११ वेदिपाठु

10 ६ वेदिपाठु

7 11 वेदिपाठु हिनि कामादराटु 12 वेदिपाठु वेदिपाठु

8

आहंडलमयगलसरिसलीलु
सहु बहुवरेण पर्यलतदाणु
दैहि पियदुहकयअवलोयणाइ
आलग्गपुच्छकच्छंतरालि
अवलोईवि रुइओहामियक
एत्थंतरि थरहरियासणाइ
घणदेविइ चारियवइरिणीइ
णं घणसंपत्तिइ कामभोउ
णि,विसेंइं णिउ सुरसरिहि वूहु
रणि वणि जलि जलणि समाइएण

तहि अवसरि मयहें धरिउ पीलु ।
घहुजलविलंति वोलिजमाणु ।
घप्पाणं घिनु सुलोयणाइ । 5
हाहारववाडियगरुयरोलि ।
हेमंगयपमुह कुमार दुक्क ।
देवंगवत्थसुइणिवसैणाइ ।
करि कड्डिउ सुरसरितीरणीइ ।
उद्धरिउ अहंसइ ण तिलोउ ।
हरिसैं णच्चिउ किंकरसमूहु ।
रक्खिजइ पुरिमु पुराइएण । 10

वत्ता—वेउच्चिउ घर मणिणिम्मिउ चारुतीणि सुयसेविण ॥

हरिऊढइ थविवि सुपीढइ ण्हविय सुलोयण देविण ॥ ८ ॥

9

दिण्णइ सुरजोग्गइ णिवसणाइं
दिण्णी वियसिय मदारमाल
पमणइ का तुहुं करि केण धरिउ
भणु मणु सुरसुंदरि सुयणवदि
विंझउरिक्कइ विंझहरि अत्थि
महएवि पियगुसिरी सुरुय
परियाणवि ताए तुह पहाउ

दिण्णइ अण्णण्णइं मूसणाइं ।
सहं णरवरेण विंभइय चाल ।
किं तारियै सरि सो कवणु तरिउ ।
ता भणइ सा वि हिंडियपुलिंदि ।
पइ विंझकेउ वलकलियहत्यि । 6
इउं विंझसिरी णामेण धूय ।
सिक्खहु णीसेसु कलाकलाउ ।

8 १ MB हारें २ M पलयत° ३ MB read this line as 6 ४ MB read this line as 8 ५ MB ०णियसणाइ ६ MB तीरिणीइ ७ GK णिवसइं but gloss निवेपार्थ ८ MB सुयसेविण.

9 १ B अण्णइ २ MB सहु ३ MB तारिउ ४ MB विंझहरि°

8 8 a दहि हदे 9 a तूहु रोधस्तटम्. 10 b पुराइएण पूर्वार्जितेन कर्मणा 11 सुयसेविण
धसिखिते

9. 8 b तारिउ तारक

इहं तुम्ह समर्पित हे ब्रह्मसि
 यं ब्रह्मसि भिडकि बसंततिसर
 धसि भावसां ब्रह्मसि सिद्ध

संयोरुषि न कीदृशं जं मयासि ।
हर्षं हृष्टिं सख्यं मेहिषिण्यह ।
पां पश्य मृतं माह पंथ सिद्ध । 10

मत्ता—ते तिसुत्रिणि सुखित तिसुत्रिणि यथा कञ्च तिसुत्रं ॥
सुरजीवः गंगाकञ्च गंगाविषय इति ॥ ९ ॥

10

श्रीकृष्णाय नमः
 आ पश्य सारङ्गकोमलमेव
 आ नासती नवपरी नयेति
 सा ह्रीं निजुजहि हसि शिवाकि
 मोहन्यति नन्द नारायणेषु
 मयरीह हरेष्वपि कुरिमाह
 मई जाविर्त आसन्नकल्पमेव
 सा किं इहमाह पञ्चकालिदाह
 इयं विदिति हर्त भयवर्षिण आम
 मई नृपतिरिह सिद्ध हरेण

सह धरसें जाई विमारेव ।
 तुद कंड करारपुणेव ।
 मुसुमुरिय रंडहि पत्तयेहि ।
 जळीवप जामें वस्तु जाळि ।
 पबलदोखचपोळंतहिनु ।
 कुंजव कण्ठि कुंजोत वार ।
 जा जविय मकळि नकंपणेव ।
 मुष्मिह किं छिप्पर काळिबार ।
 बाहिरि गप जासिनि करि वि वाम ।
 तुद हचड तुद मुक्षिबलमेव ।

यथा--मनु शूद्र इति पण्डित विदुः क्षत्रपार्थिव इति ॥
 रिज जासह विधि धरि पण्डित धर्मो काहं न कम्मा ॥ १ ॥

11

इयं शुभिवि सुखोपय नंदहास
पुष्प बीरवि वारण नं गिरिह

अथ श्रृंगारैष्य विपनिषात् ।
अथ श्रृंगारैष्य विपनिषात् ।

4 MB ફાઇલો

10 १. MB सिग्रेट्स पर १ MB चीन्हा.

10 अंशवर्गमिच्छुः स्वस्वायामि ज्ञायायामि निश्चितायामि मेतु, ३ परमार्थं पञ्च परमेष्ठिनम्

10 ॐ ह्रस्ववर्णस्य स्यात् ६ अ सिद्धिं विवक्षति, ॐ वाक्विवाह कथेन अनुमेय

बहुकालपरिट्टिउ सुहिण जाव
बहुपेम्मसोष्मसंजोयणाइ
अच्छइ अत्याणि णिसण्णु जाम
हा देवि पहावइ कहिं भणंतु
हा णाह णाह विलवंतियाहिं
सिंचिउ चंदणमीसियजलेण
पारावयमिहुणालोयणेण
हा रइवर हा रइवर रसति
पारावइ हउ रँविसेण आसि
तुहुं रइवर पारावउ ण भंति

सत्तंगु रज्जु पालंतु ताव ।
एकहिं दिणि समउ सुलोयणाइ ।
णहि खयरमिहुणु तँ दिट्ठु ताम । 5
मुच्छिउ पहु जम्मतर सरंतु ।
कुलउत्तियपणिआइयतियाहिं ।
आसासिउ चलचमराणिलेण ।
मुच्छिय पिय पणयासायणेण ।
उट्ठिय पुणरवि सा णीससंति । 10
चिरभवकुलउत्ती तुज्जु दासि ।
लग्गी पियगीयहि इय भणंति ।

घत्ता--कहिं णिववर कहिं सो रइवर कवडें वल्लहु किज्जइ ॥

जयपत्तिहि भणिउ सवत्तिहि कइयवेण जणु खज्जइ ॥ ११ ॥

12

सोमप्पहपुत्तं णायरेण
जाणंतेण वि सुहभायणेण
पुच्छंतहु कंतहु सुइरु विचु
इह जंबुदीवि सुरदिसिविदेहि
वेयड्ढमहीहरणियडवेसि
सोहापुरवरि वयंपालु राउ
तहु वदियपयपकरुहरेणु
अँडइसिरिवरिणिआलिगियंगु
हिंदंतु कहिं मि लक्खणपसत्थु

जणमणसंसयहरणायरेण ।
पुच्छिय पिय अवहिविलोयणेण ।
वज्जरइ सुलोयण णियचरिचु ।
पुक्खलवइविसइ विलासगेहि ।
तहिं धणयमालवणंतवासि । 5
देवसिरिदेविसजणियराउ ।
सामतु पसिद्धउ सत्तिसेणु ।
रेहइ ण रइभूसिउ अणगु ।
णधरेकु वालु सपचु तेत्थु ।

11 १ MB omit this line २ MBK जम्मतर ३ MT पणियगण°, B पणयगण° ४ B मुच्छाविय पणया°. ५ MB रइसेण ६ MB पियगीवहि

12 १ MK °भायरेण २ MB विसालगेहि ३ MB णयपालु ४ MB अडयसि

11 7b पणि आइय ति या हिं अवरुद्धादिपण्यल्लीभि 9 b पणयासायणेण अँहानुमवेन 12 b पियगीयहि त्रियस्य श्रीवायाम् 14 कइयवेण कपटेन वैशिकेन

12, 1 a णायरेण चतुरेण 2 b अवहिविलोयणेण जातिस्मरणादुत्पन्नावधिचक्षुषा 8 a अडइ-सि रि° अठवीथी:

14

विमलसिरिभाउ वणि विहयसोउ
जिणयत्त धरिणि णंदणु सुकतु
ता ससुराणिवासु दुवारु धरिवि
जइ हउं णावेसमि तावरासु
णिद्विणु ण गिण्हमि अज्जु माम
चक्कवइसंख वच्छर पउण्ण
पच्चारिय सँक्सि णिवधु मुक्कु
णित्तिंसु तिप्पन्नणित्तिसवतु
मंडेवि णिरुद्धु थेरीयडेण
गलगज्जिवि तज्जिवि कच्चुइउ *

अण्णेकु वि अत्थि असोयदेउ ।
सूहउ सँ सोमु सोमु व सुकंतु ।
धारहवारिसइं मजाय करिवि ।
ता तेरी तँणुरुह देज्जसु वरासु ।
गउ वणिज्जहि सो जाम ताम । 5
कण्णहि थणयल समएण पुण्ण ।
सुय दिण्ण सुकतहु वइरि दुक्कु ।
मरु दारविं मारविं वरु भणंति ।
वहुवर वि पणहु पँरोहडेण ।
अवलोयवि दंपइ पर्यंपइउ । 10

घत्ता—कुटि लगाउ पिसुणु अमगउ ईसावसु हेवाइउ ॥

सहुं धरिणिइ हरिणु व हरिणिइ वणु वरइत्तु पराइउ ॥ १४ ॥

15

दोह वि पयरत्तइं पयलियाइ
तँ रिउणा कह व ण मारियाइं
चिम्मक्किवि रयणिहि रीणयाइ
पासेयघोयतणुमंडणाइ
सूरगमि पत्तइ वे'वि तेत्थु
दुज्जणु अणुलग्गु जि दुक्कु केम

दोहं वि मुहकमलइं मउलियाइं ।
अंगइं तरुकंटयसीरियाइं ।
दुमलग्गफट्टपरिहाणयाइ ।
अवलोइयमयउलमंडणाइ ।
आवासिउ वणसिरिणाहु जेत्थु । 5
चलपावइयह कुसुमसरु जेम ।

14 १ MB विहियसेउ २ MB सुसोम्मु ३ M सायरासु ४ M णियतणुरुह ५ MB परासु
६ MB वाणिज्जे ७ B सखिणिन्वधमुक्कु ८ MB मारवि दारवि ९ MB मडव १० MB परोवडेण
११ MBK पयगईउ

15 १ MB दो वि २ B omits this line

14 4 a तावरासु ता + अवरासु अपरस्य 6 a चक्कवइसंख द्वादश, b समएण कालेन 8 a
णित्तिंसु निर्देय, णित्तिसवतु सहगयुक्क 9 a थेरीयडेण वृद्धासमूहेन, b परोहडेण पश्चाद्द्वारेण, कुल्ये
छिद्र कृत्वा गृहपश्चाद्द्वारेण 11 कुटि पृष्ठे, हेवाइउ कुपित

15 2 b °सीरियाइ विदारितानि 3 a चिम्मक्किवि भ्रान्त्वा.

दिद्वेह रोहि वि तहिं सत्तिसेणु
 दहिं भासहं भासहं मत्तु मत्तु
 धिद्विधिवि बहवद कर्मबलम्
 गद वीधिवि सहसा मत्तिममाणु

भासेतिह केसमहिं नं करेणु ।
 बह दृग्गु पेशुने वे वि सरणु ।
 दधनादिह तेन किरणु मत्तु ।
 किं करह विमिह दहिं कुरह मत्तु । 10

पद्या—नं दधेविहद बहवद पविमद किं पविममत्तु मत्तु ।

पद्यवरिहं नयि सपुनरिहं वीणुमरु वि मत्तु । १५ ।

16

विसकरिहकरहदुर्गवाह
 धारिविकेतामुहयपरु
 संविठ समीवि विरपवि ठाणु
 कंठात्मनि कारण पाह
 वेम्वि वि ठामविह महामसेव
 मुनिवसहहं नवविह केपि पुण्य
 नहपलि दुरां विवसहिं हवार्

धंरपीह पनेसह सत्तवाह ।
 वा तहिं वि समापह मेववत्तु ।
 करिहदिववहिरिमासिहदिसाह ।
 सरवागप पविपंजरेव तिह ।
 विसिगववर विव विम्वंजरेव । 8
 जोनाह मीमत्तु मासेव विम्व ।
 नवविहदं नं समुन्मपार् ।

पद्या—मवि होवाह पुण्य पनेवाह पंसारिवमुहसिपयह ।

तह केरह पवमजरेव मेववत्तु पव भासह । १५ ।

17

तहि ठेन ताह ओपवि बाणु
 मीयामि जमिम मत्तु होव पुणु
 मवि रंममाणु वे विमि विमिह

धारिविह तह वद विमवत्तु ।
 पवह दुतिपवकमममिह ।
 ता तहि पत्त पंजरेव वद ।

1 B omits the foot. v MB कम्पहि ५ MB ताह वे वि १ MB विहमेने वर ५ MB
 मविमि MB नव वेम्विह

16. १ MB वरपी २ MB add after this. एवमहि तह पुणं पविमारे, पवमं पनेमं
 वीमिवार्. २ MB पवविम्व

17 १ MB भासवि २ B विरव

७ ० नहवद पविमरः.

16 १ ० वरपीह पनेवमारे

17 ० ० विरव वर

पुच्छिउ वणिणा णियमतिवग्गु
सँउणिं जंपिउ अवँसउण जाय
भेसइणा भासिउ सुहमहेहिं
धण्णंतरि जपइ पयइदोसु
पवणें भजइ माणवहु गच्छु

भणु एयहु किं गइपसर भग्गु ।
एयहु भवि तेण पणट्ट पाय ।
उदिट्ठु एहु कूरग्गहेहिं ।
सँमैं जैडच्चु पित्तेण सोसु ।
भूयत्थे मंतिं पुणु पुउच्चु ।

घत्ता—सउणत्तइं गहणक्खत्तइं सहुं पयईहिं पउत्तइं ॥

चिन्नावहं सयलहं जीवह होंति सकम्मायत्तइं ॥ १७ ॥

10

18

इय सँणिउ सणिउं पमणेवि तेहिं
किं सउणु किं व दुग्गहवियारु
किं कारणु पगुत्तहु मुणिंद
वहिरंध कुट्ठि वाहिल्ल भिल्ल
अविसिद्ध दुट्ठ दँप्पिट्ठ कट्ठ
छिण्णोट्ठ कण्णणासाविहीण
णिल्लज्ज खुज्ज वामण कुसील
जरवीवरधर फरुसुद्धकेस
जूयार णिसेवियर्णयरट्टिट्ठ
पगुल पँरघररपिंडावलुद्ध
णउ देव दँति णउ ते हरति

पुणु पुच्छिउ गुरु मउलियकरेहिं ।
किं पयइदोसु किं कम्मचार ।
ता भणइ सूरि सुँणि भो वणिंद ।
दालिदिय दूहव मूय लल्ल ।
दँट्ठोट्ठ रुट्ठ दुहघट्ठ वंठें ।
दुग्गंधदेह काणीण दीण ।
पलखंड सौंड चंडाल कील ।
छोहाणलहय कंकालवेस ।
पावेण होंति णर कुंड मंड ।
विवरीय होंति धम्मैं विसुद्ध ।
देविंद वि पुण्णक्खइ मरंति ।

5

10

घत्ता—रिसिपिसुणिउं भवियहिं णिसुणिउ णियमैं चित्तु णियत्तिउं ॥

परदविणइ परवधुरमणइ लोयणजुयलु ण र्घत्तिउं ॥ १८ ॥

३ MB सउणें ४ M अवसवण ५ MB सिमैं ६ MB मत्तें

18 १ M सणउं सणउ २ MB भो मुणि ३ M दुप्पिट्ठ ४ M दुट्ठोट्ठ ५ B वट्ठ ६ MB
°णयरट्टिट्ठ ७ MB परहर° ८ M वित्तउ, B विसित्त

5 a सउ णि शकुनसेन 6 a भेसइणा ज्योतिर्विदा, सुहमहेहिं शुभप्रयोजनविनाशके 7 a धण्णंत रि
वेद्य 10 चिन्नावह चैतन्यरूपाणाम्

18 8 b छोहाणल° क्रोधानल 12 °पिसुणिउं प्रतिपादितम्

19

ता तदिं भोसपिगड तरजितड
ए एहि पुच ६ इहि खरं
सुप सुह सुहयेगई कोमलार्
होतार् आसि महु सुहपरार
सुप सुह सुहसाकाबिनुपार्
सिक्काविमो मि सितुगहवार्
बीमरियड सुप त्रु कि मताड
इय पतिपमो मि सा संवेहु
पिठणा तिमुंडपविपारएय
छिप्पिनु इहयड मोहवासु
सुरगुडका ईदिउ पिसिनु जम्ब

भूयार्थे काकिउ सधरेड ।
किं यीसरियड महु तवउ जाउ ।
सर्गतई बूझीपूसपार् ।
मिहोहिबपियकंताकरार् ।
इठं सुयर्थे मिपडरपमि बुपार् । ६
मिहोणमार् अकररवपार् ।
किं बहुए महु घड जाहु बाड ।
पविपागड णड मिपडरवमेहु ।
तवधरनु कइउ मिहोएय ।
महु गुरहि पासु नहवात्तासु । 10
सोइजी अर्धतरिवा मि तेम्ब ।

अन्ता—तं बहुवड अर्धतरिवा सेडिहि तय समथिउ ।

महु सामिहि मयवरसामिहि पेदि धवेजसु अंविउ । ११ ।

20

गड बंविबह सोहाउड तुरंतु
सो तेज मिरोबिडे तासु जाम
माउहरि ववेपिनु मिपयवपिभि
बंदिभि मुवाकवह जिबहपार्
मुदहार जादि पेसइहसरीए

एववेपिनु पडुहि सक्नु कंनु ।
एसहि मि सविसेमकनु ताम ।
वे विहसवाहरि पवरकटिभि ।
अवकापवि सतुरय सिधिरपार् । ६
सातुरपहु जड सखर सखर ।

19 १ MB सुपमि २ MB सिक्काव ३ MB किं सुह सुह. ४ MB तदिं ५ MB अर्ध

20 १ MB अविबह २ MB मिहविउ ३ MB "पविपि"

19 २ = पेउ काकिउयम् ३ = सुवरणि जारामि ४ = "ववाई" पारामि. ५ = मि मुं के कामि—
अथमहाप्रभुभोग्यामर्शसंविपिब.

20. ६ = एववडक" अविपिबिम्, ७ = उदहार जावदिता.

सासुरयहु णिग्गउ भञ्जवरिदु
घरि दिदु राउ इच्छियसिवेण
णिउ णिययणिवासहु दिण्ण धामु
आसणु भूसणु णिवसणु समग्गु
मँउ मेरुयत्तु पीयडियसिरिहि
पयपालणरिदणित्तच्चिचु

आवेण्णिणु सोहाँपुरि पइदु ।
वहुवरु मग्गिउ पसरियक्खिवेण ।
गोउल्लु माहिसु फल्लेत्तु गाँसु ।
तवु करिवि मंति गय कं पि सग्गु ।
तहिं देसि पुढरिक्किणिपुरिहि । 10
वणि हूयउ णाम कुवेरमिच्चु ।

यत्ता—तुहु धारिणि मरिवि सुकारिणि जइ वि ण सम्माइट्ठिणि ॥
मँउ पालिवि दुक्किउ खालिवि हूइ धणवइसेट्ठिणि ॥ २० ॥

21

पुत्तत्थिणि भवमावियणियाण
गम्मेसरि सयलकलापवीण
भवदेवें पावें पसुवहेण
घरि अट्टमणें मरिवि तेत्थु
पारावयजुयल्लु मणोहिरामु
तं धेप्पइ खुज्जयवावणेहिं
णञ्चइ हक्कारिउ सहु देइ
पुच्छिउ पड्डणा कहिं पाव जति
तं दावइ चंडुइ णरयमग्गु
तहिं पक्खिणि हउ रइसेण णाम
अच्छहुं कीलतैइ ये वि जाम

सा एकतीसघरिणिहिं पहाण ।
धयरट्टगमण सहेण वीण ।
तं बहुवरु दड्डुउ हूयवहेण ।
जायउ पुर्रसेट्ठिणिवासि पत्थु ।
गुजारुणञ्छु वण्णेण सामु । 5
तं संमासिज्जइ परियणेहिं ।
पट्टवियउ पुणु रगंतु जाइ ।
धम्मेण जीव किर कहिं वसति ।
उद्धाइ ताइ सम्मापवग्गु ।
तुहुं रइवरु पक्खि सँणेहकाम । 10
सो सत्तिसेणु तहिं मरिवि ताम ।

यत्ता—तँ^१ वणिणा वणिसिरँमणिणा धणवइयहिं सुउ जायउ ॥
सोहग्गे जणमणलग्गे रूवे णं सुररायउ ॥ २१ ॥

४ M सोहारि; B साहारि ५ MB दिण्णु घाउ ६ MB गाउ ७ MB सुउ ८ MB पयडिय^७
९ MB वउ

21 १ MB पुत्तत्थि वि २ MB पुरि सेट्ठि^० ३ MB संमासिज्जइ परियणजणैहिं ४ MB सिणैह^७.
५ MB कीलत ये वि ६ M त ७ MB ^०सिरिमणिणा

21 2 b धयरट्टगमण हंसगमना

22

नं धिबहुलहरकमलसिरिकं
 सुमरेपिणु बम्माबंदजोड
 बार्पंगु तियसतव भूसर्पंगु
 पवहर पुडप्पुरसप्यबाहु
 विन्दे विप पिबह सासिछेनु
 सवमेव एवह बीणा सवेणु
 हप सिब्बमोवमुंजवकवातु
 पिबसेणु तेज सहवत पडनु
 हप्पह भणु तेरत परम्भितु
 प्पहहि सिमि गय वज्जाममाहि
 दंड सहवत नार्मे प्पहपति

नार्मे सो मभित कुबेरकंतु ।
 ते मंसिदेव तडु वैति' मोठ ।
 महरंगु तुरिय वम्भोपर्पंगु ।
 मज्जवार् पवहिसर पारिबाहु ।
 भवव वि सुहसुतिर सुपेठिमेनु । 5
 धरि भित्तिर दुप्पह कामपेणु ।
 पयवोण्यपु पिठवा दिनु वाहु ।
 किं वहुपं किं वहु जि कडनु ।
 भाहासह सो नववज्जिमेनु ।
 विट्ठु मुपि बोहि वि वज्जिमुज्जि । 10
 को पावह गुर सुप सीडसति ।

पद्या—तेषु जि पुरि सुहर्षकिपधरि वणि बरैछमवसमावड ।

वज्जवहपहि वंजनु वयहि सापरवतु कुडीवत ॥ २२ ॥

23

तडु केटी नं नमिपव सिध
 तदि परजंमंतरि वज्जपवप
 नं सुहयसोफनमाविहप्यावि
 पीडाडिबडपसंकासकेस
 नार्मे विपदस पसज्जविट्ठि
 वज्जवहि सिमि कितिमकुसुममाड

वेदिमि नार्मेव कुबेरमित ।
 हूरं वज्जवित मयिमे ववप ।
 कर्कशसयमव ककर्मठिवावि ।
 नं काममहि पच्छज्जवेस ।
 शुभेव नं वम्महवारकडि । 5
 कव तार वार् मरेवसापसास ।

22 १ MB वैह. १ MB उठवत भोववह. १ MB रोहि जि पुमि. ४ MB वड ५ MBK प्पवप

23. १ MB वज्जवहपह १ MB वज्जवितमव १ MB वज्जवहपह. ४ MB वज्जवहपह; E वज्जवहपह and gloss वज्ज; G in gloss वज्जवहपह.

22. ४ ५ वम्भोव नं ह उरुवयोव्याह G न वजेणु वंजपतेव वहिता. 10 ५ वज्जिमुज्जि वज्जवहपह, 12 वज्जवह' कुबेरा.

23. ४ ५ वज्जवह पुष्कला

गय लेप्पिणु ससुरयघर वयसि
तं पेच्छिवि विभिउ इवमतणैउ
तं वयणु मुणिवि सच्छइ सर्इइ

पियकारिणि गइजियरायहसि ।
एउ^६ विण्णाणु ण मुणइ मणुउ ।
णियसुण्ह पससिय धणवईइ ।

घत्ता—पियँवत्तइ सुइसुहमेत्तइ मयणजलणु सधुक्किउ ॥

10

मणु लेंतें तेणे जलतें भ्रसि कुमार झल्लुक्किउ ॥ २३ ॥

24

जाणिवि तणयहु कण्णाहिलासु
णदणवणि पट्टण जणमणोज्ञ
भायणइ दुत्तीस समीरियाइ
तहिं एकु पचमाणिक्कवतु
घणित्तियाउ सप्रँइयाउ
सव्वह वणिणाहँ भूसणाइं
गेणँहह पभणिवि पैरिभावियाइ
ता कणयवत्त बहुभोजु यइउ
सरयणु पूयँदत्तहिं करि विलग्गु
पयपालसुयाहिं सुहालियाहिं
आलद्धउ णँउ तहिं चरुयवत्तु

वणिणा पारद्ध विवाहु तासु ।
णिव्वत्तिवि णियकुलजक्खपुज्ज ।
णिर चोक्कपभक्खपँडिऊरियाइ ।
जा गेण्हइ तहिं सो होइ कतु ।
वत्तीस जि पियदत्ताइयाउ ।
दिण्णाइ विलेवणणिवसणाइ ।
चरुमरियइं थालइ दावियाइ ।
एक्केक्कइ एक्केक्कउ जि लइउ ।
को लघइ किर भविँयव्वमग्गु ।
गुणवइजसवइणामालियाहिं ।
हियवउ ससारहु रणि विरत्तु ।

6

10

घत्ता—सुगँरोलइ गिरिक्कुहरालइ धैर पइसिवि तँवुं किज्जइ ॥

णउ दाणहु सुहिसंमाणहु कारणि हल्लि कलहिज्जइ ॥ १४ ॥

५ MB °तणुउ ६ MB एयहु ७MB पियदत्तइ ८ MB सधुक्किउ ९ MB जेण १०MBT झुलुक्किउ

24 १ B समारियाइ २ MB परिपूरियाइ ३ MB सपाइयाउ ४ B गेह पभणिवि ५ K पभा-
वियाइ ६ MB एक्केक्कउ एक्केक्कहिं, ७ MB पियदत्तहिं, ८ MB भवियव्वु मग्गु ९ MB णे वि १० MB
मिग° ११ MB वणि १२ MB तउ

10 पियवत्तइ प्रियावार्तया 11 झल्लुक्किउ सतापित

24 8 a समीरियाइ प्रसारितानि 10 a सुहालियाहिं सुखवतोभि, 11 a चरुयवत्तु
चरुक्कपात्रम्

25

रोयहपविषादि विषयवर्णनासि
 तनुं कश्यप ताहि सीमेतिपीहि
 वनितवपुः सुवपुःपञ्चाहपाह
 वर्यवातु मरेण्यु ओपवातु
 देवसिपिषे वि मरुणपरीहि
 गयवममपिषि सा विष्णु साह
 संतापि यवेण्यु सो वि पुषु
 ईवीत कवयमासाहपात
 अ परिषत ते पञ्चाह सय
 पञ्च वि सुहृद स कुचेपमिषु

वमिषमहमर्मतमईहि पासि ।
 एतहि वि पञ्चमंगलमुच्यते ।
 मियईतह सनुं विरह विषाह ।
 पयपाकह सनुं इपत गुणाह ।
 वसुमह सुय इरं यववाहि ।
 पुषु वमगद दोहि मि येमपह ।
 परणाहै कश्यप मुनिवरिषु ।
 पञ्चक कपयिषु संनिवात ।
 कामसमह विष ईरि परि समल ।
 सो भावर तदवहै पारं सनु । 10

यथा—कवयैमां मासिह कुर्मई हसहं य वेकेहं कम्म ।
 अपसत्पत मेकेवत्पत मापुस पम वि सुप्प । २५ ।

26

ओ विष तुह ताहं विदित मंति
 कि विहविषयवपु विमंति कञ्च
 माचर वमई मिउहेतु विहि
 पात वि कुमाह मंति वि कुमाह
 छविपिपुमरंयव वहु सुपु
 वमिपिपुमि कौशलसहात

तनु वंसेवेव वमई य संति ।
 हो येरई वमसु व कि पि विषु ।
 वचक विमंतिरि तान सेडि ।
 दीयै वि होति ओवमि विवात ।
 वारिह पञ्चाह वर देह शु ।
 सिपुमंतिहि सनुं पञ्चाहपत ।

25 १ MB एवहरे विषाह १ MB तह कश्यपे हि १ MB विमरुण १ MB वमपु
 ५ MB विषु, १ MB विरहवि, MB वमवपुहि MB इपतहि १ MB वेग १ MB
 देवसिपि

26 १ MB ईरवि वमह पाहि सति, १ MB विरहय १ MBK वीवह.

25 १ कवयमासु मरुणक १ कवयवमईहि वमपमवासा १० वेववत्पत वरिहपमला-
 26, १ वेववत्पत वमिषय १ कवयिषि वमपमवासा

अण्णहिं दिणि णंदणवणि पइदु
 पुच्छिउ विहसिवि चवलमइ तेण
 घुहसिद्विसिद्वगईचुपण
 वावीयलि अच्छइ मणि णिहिचु
 ता तेहिं मिलिवि अंससएहिं
 चिक्खल्लंतल्लोलणविलोल
 माणिक्कु ण दिदुउ तेहिं केम
 अण्णाणकिलेसं णत्थि सिद्धि

अरुणच्छवि घाविजलोहु दिदु ।
 इह लोहिउ जलु किं कारणेण ।
 पडिजंपिउं विउलमईसुपण ।
 तहु छायेइ दीसइ सलिलु रत्तु । 10
 पाणिउं यहि घल्लिउं घडसएहिं ।
 थिय सयल णाईं कर्यकील कोल ।
 चहुमोहघाहिं जिणवयणु जेम ।
 गय घरहु परिक्खिय मंतिवुद्धि ।

घत्ता—गर्हगावइ सपणयकोवइ पयहिं पढंतु वि कयरइ ॥

15

चसुमइयइ रयणिहि दइयइ चरणे सिरि हउ णरवइ ॥ २६ ॥

27

मंडलियमउडरुइरइयराइ
 जो मह सिरु पहणइ णियपपण
 ते तरुणमंति पुच्छिय णिवेण
 तुह जेण दिण्णु सिरि चरणघाउ
 तं वयणु सुणेप्पिणु विमलवंसु
 महु सिरचूडामणि मयणसरणु
 आविवेउ महंतउ जासु गेहि
 संसिद्धसमग्गतिवग्गलिगु
 इय चित्तिवि णियकुलकमलमिचु
 आउच्छिउ तं णीरारुणचु
 तं णिसुणिवि मामे वुचु एम

अत्थाणि णिसण्णे सुप्पहाइ ।
 तहु किं वुत्तउं णरवइणपण ।
 तेहिं वि पउत्तु सफरसरवेण ।
 खंडिजइ णिव तहु तणउ पाउ ।
 मंठिउ हेट्टामुह रायइंसु । 5
 खंडिजइ किह सुंदरिहि चरणु ।
 दुक्कर सिरि णिवसइ तासु देहि ।
 भल्लारउ भुवणि वियडुसंगु ।
 कोक्काविउ तेण कुवेरमिचु ।
 अवैर वि जं सीसि पयगु धिचु । 10
 पाणियरत्तत्तणु णिसुणि देव ।

४ MB किं ५ MB वावीजलि ७ B असेसएहिं ७ MB चिक्खल्लं ८ MB कयलील ९ MB गुरु

27 १ MB omits this line २ MB फरसें मणेण ३ MB दिण्णु जेण ४ B गेहि ५ MB
 अवर वि सीसें पयलगु धिचु

9 a घुहे ला दि—घुयेर्या शिष्टा उपदिष्टा विशिष्टगतिर्व्युत्पत्तिस्तया च्युतो रहित 10 a वावीय लि वापीतले,
 11 a अ स स ए हिं सशयरहितै

27, 2 ठ णरवइण एण नीतिशास्त्रे 13 वणु जलम्

यथा—रसगिरे रसिष्ठ गिरे तीरवनिष्ठ मणि अय्यह ॥

तद्वा ज्ञाप्य पसरिपययह कणु वणु कोदित येय्यह ॥ २७ ॥

28

गुवचाटीर्द्धिमपययणु पणुहि
गुह पुणु आचनि रोसेकिपाह
ते पुञ्जिर्द्धि वरनेउरेण
यचवहह पयहि कुलम्भोकिनीकि
साहसु व विजयम्भोवपसु
ते येय्यिभि मणु कुवेरमिच
सुप्यहिहह गेपि सुचम्मज्जहि
आपा मरेपि मेहोप्यासि
विहम्भेह वाम बारणमुर्जितु
सिद्ध विविति पुञ्जिष्ठ तर्हि पुगेम्भु
वाहिचपंचगुणियह कयमि
गह मुनिवह काळे पंच पुच
ओ सचवेह मुहै सो वि यव

सिरिद्धगाह मण्य व सउवविहुरि ।
सिणि यक्षिष्ठ होही पउ पिपाह ।
ता संपुउ सेद्धि महीसरेण ।
विपुउ पक्षिपुउ कम्ममुद्धि ।
अरयासिह वृष्टिह वारवकेसु । 5
अवह वि पय्यहउ समुहहउ ।
इया सुवीरि सुविमुहमहि ।
कोरवतिर्य सुह वमववासि ।
विहवसह मुञ्जाविह नयिपु ।
करयह होसह मुनिपाह मणु । 10
वामह वनिह वविधि ववामि ।
अहुर्य कुवेरपयण वउ ।
संमूह पुणु वि पिउ वरनेह ।

यथा—अह विप्यह रोसिचमय्यह अयह सुखोवच मासह ॥

सोहंती पयि कुंरती कुंवपुष्करेती छह ॥ २८ ॥

15

इय महापुण्ये विसद्धिमहापुरिसगुणाङ्कार महाकरपुष्करविरचय

महामन्त्रमहाशुभाभिय महाकण्ठे अयमहापयसुखमयमय-

संमरणं वाम पङ्कजतीक्ष्णो परिष्क्रेमो समतो ॥ २९ ॥

॥ संधि ॥ २९ ॥

१ MB वित्त

28. १ B पुञ्ज १ MB कुंरती निहुर १ MB विमहाह्वानि ५ MB कोवरीय दे. ५ MB विमन्त्र. १ MB उह ५ MB वउ MB अह

28. 1 १ "विहुरि" "पय्यह" ४ "कुवकीवि" पुन्यवनेनी 8 ५ वैहारहापि येवया मदरी
15 ५ ५ ५ मन्त्रा; ५ ५ ली.

XXX

अभियमदअणतमईसईहिं सीलगुणेहिं पसाहिउ ॥

जिणवइगुणचइवरजसवइहिं वधुवग्गु सरोहिउ ॥ धुवक ॥

I

लोयवालु सा घसुमइ राणी
घारहविहदिक्काइ समग्गइ
खंतिहिं कहियउं धम्मु णिरत्तैरु
णिक्कुच्छवमगलणिग्घोसहु
चरियासग्गे णिग्गयरायउ
पूयदत्तावरइत्तं णवियउ
तां तहिं पक्खिजुयलु सपत्तउ
दोहिं विमुणिहिं गुणिहिं जोयतह
रिसि पेच्छिवि भउ सुमरिवि मुच्छिउ
सलिलं सिंचिउ थियउ सइत्तउ
भरई पक्खि किं कीरइ पक्खिणि
सरइ सैकोति पुण्णससिकत्तं

पउरदुरियहिं ह्यहिं समोणी ।
विण्णि वि सावयवइ दिहु लग्गइ ।
अरुहमग्गि लग्गउ अत्तेउरु । 5
ताम कुवेरकतवणिवासहु ।
जघाचारणजुयलउं आयउं ।
छुहु जि तेण पंगणि पउ थवियउ ।
पक्खहिं पहणइ पयरउ भत्तउ ।
धम्मवुद्धि होउ स्ति भणतहं । 10
महिहिं पडंतु णरेहिं णियच्छिउ ।
अवरोप्परहुं जि णवर विरत्तउ ।
कहिं रइवेय महारी पणहणि ।
किह जीवमि णिम्मुक सुकत्तं ।

घत्ता—सोहापुरि वहुवरु पउ चिर एवहिं दपइ णहयर ॥

15

लोलेत पलोयवि धरणियले कउ अलाहु गय मुणिवर ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza—

णाहन्दणरिन्दसुरिन्दयन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।

सिरिक्कुसुमदसणकइसुहणिवासिणी जयइ वार्द्धी ॥ १ ॥

GK give this stanza as well as तन्त्रीवाचयैरनिन्यै etc here for which see note on Samdhi XXIX

1 १ MB तियहिं २ M सवाणी ३ MBT °सिक्खाइ ४ MB कहिउ ५ MB णेरतरु
६ MB पियदत्ता° ७ MB ता स पक्खिमिहुण ८ MB भणइ ९ MB सुकंति, T सुकंति

1 4 a घारह विह दिक्काइ अणुघतगुणव्रताशिक्षाव्रतरूपया दीक्षया 9 b पयरउ पदरज 12 a
सइत्तउ मूर्च्छारहिततया सचेतनम् 18 a भरइ स्मरति 14 सकोति पक्षिणी 16 अलाहु अलाभोऽन्तराय

२

बसुमर्हः अक्षर्यक्रमयेत्तह
 बसुहः पट्टिमिमः वणिदिपार्
 बहुरिपदि सङ्गः आवाविड
 मा विहवेषि बरहः म विरपह
 बयर्नः लेपः सार्ः पुंशुः रत्तर्
 बय्यगिरिभमीति सुत्तपयिदि
 ते तर्हि बंभाकार्यः अहपर
 मय्यमर्हःि अक्षर्यमर्हःि वि
 पुष्पिभ्यः तः कुम्भमसत्तुविवात्

विष्णुः वि पुष्पिभ्यः मियेत्तह ।
 बार्हिः मि मय्यमय्यमार्हः सिदिपार् ।
 रत्तयेपागमुः अपरः वाविड ।
 विष्णुः वि सुत्तः मुम्भः कय्यह ।
 कशुः पुंशुः लेपः पत्तर्हः । 5
 करिर्हः सय्यविदेवर्हः विपहः ।
 आवाविः धमः तिवावविवापर ।
 आवाविः सय्यर्हःि विदिः तर्हिः वि ।
 पायवय्यर्हः कुम्भः मयाय ।

अर्था—आवाविमिहः सुत्तः तः मयि वि मय्यमय्यमर्हः सिदिपार् ॥
 मुनिः मय्यहः रत्तहः वि पि य वि विहः आवावि विपार्हिः ॥ २ ॥

३

विहः बहुरिपदि सङ्गः वाविड
 विहः वापरः विवात् विहः बहुरि
 विहः पशुः मय्यहः विष्णुः विष्णुः
 पाविडः अर्हः विहः सङ्गः सय्यर्हः
 विहः धरिः रिडवाः कय्यः पय्यिपशुः
 इयः विहः विहः आविडः पुष्पिभ्यः
 विहः विहः कय्यिवादिः आवेपिपशुः
 सुत्तर्हः अहः सिदिविपय्योपहः

यय्येपागमुः कय्यमय्यहः ।
 विहः सय्यर्हः सुत्तः पशुः ।
 कय्यहः पय्यिपशुः पुंशुः ।
 विहः मय्यः कय्यः सुत्तमय्यर्हः ।
 विहः बहुरिपदि सङ्गः पय्यिपशुः । 5
 मय्यहः रिडवाः विपार्हिः सय्यर्हः ।
 कय्यिपशुः सुत्तर्हः पय्यिपशुः ।
 आविडः सय्यहः कय्यमय्यहः ।

अर्था—इह विष्णुविधिः अय्यहः मय्यहः इहः विदिपय्यहः ॥

पुण्यसंग्रहः सय्यर्हः सङ्गः कय्यः मय्यः सुत्तहः ॥ २ ॥

2 1 MB विष्णुः २ MB सय्यर्हः ३ MB पय्यिपशुः ४ MB पशुः ५ MB "विष्णुः विष्णुः"
 3 1 MB विहः २ MB विहः ३ MB विहः ४ MB विहः ५ MB विहः

2 6 १ पय्यिपशुः कय्यिपशुः

3 1 २ पय्यिपशुः विष्णुः 6 ३ "आविडः" "आवेपिपशुः" ७ विष्णुविधिः विदिपय्यहः

4

अज्जिय हूई सम्माइट्टिणि
अवर कुवेरसेण रायाणी
किंकरेण केण वि ण पलोइउ
गयउ कवोयजुयलु सारामहु
कणु चंचुइ कट्टइ णयगीवइ
सरहुंदुरसेढामिसभोयणु
असुहरतिक्खकुडिलणहपंजरु
वइविवराउ झत्ति णीसैरियउ
पक्खिणि पासिहिं भमिवि झडप्पइ
चिरभववहरै वसणकराले

घरु मेहेपिणु घणवइसेट्ठिणि ।
दिक्ख लेवि थिय सुट्ठु अदीणी ।
तं विहिविहियविहाणे चोइउ ।
कहिं मि भैमतु पुरातिमगामहु ।
जाम चरइ किर वइसामीवइ । 5
णवमहुविंदु व पिंगललोयणु ।
उट्टेइउ तहिं जायउ मंजर ।
तेण कंठि पारावउ लइयउ ।
णियपियपरिहवि णौरि वि कुप्पइ ।
कसमसत्ति खगु खड्डु विराले । 10

घत्ता—मुइ चल्लहि दुहविहाणियण विहि बलवतु पउत्तउ ॥

अप्पउ तणु मण्णिवि रिंछियेण विसदंसहु मुहि चित्तउ ॥ ४ ॥

5

पक्खिहिं पसुहुं वि पेम्मु पयट्टइ
पुणु तहिं पुक्खलवइदेसंतरि
रययसेलि खगदाहिणसेढिहि
दिणयरगइ णिवसइ खयरेसरु
तहु ससिपहदेविहि हुउ रइवर
तेत्थु जि गिरिवरि उत्तरसेढिहि
चडिंयउ तहिं राणउ विज्जाहरु
सा रइसेण मरिवि तहिं पक्खिणि

णरहु ण किं विरहं मणु फुट्टइ ।
जीवदयाहलेण सुहसुंदरि ।
उंसिरिहि णयरिहि मोक्खणिसेणिहि ।
तेणं पञ्चक्खु दिणेसरु ।
तणउ हिरणवम्मु ण रइवर । 5
गउरीविसयभोयपुररुढिहि ।
मरुहु माहवियहि देविहि वरु ।
ताहं विहिं मि हूई णं जक्खिणि ।

4 १ K मवहु २ MB परतिम° ३ MB णीहरियउ ४ K घरियउ ५ K णारी कुप्पइ ६ M कसमसंतु, B कसमसत्तु ७ T रिंछियए

5 १ MB उंसिरिहि २ MBK सोक्ख° ३ K चडिउ.

4 5 a णयगीवइ नतप्रीवया, b वइ° वृत्ति. 10 b कसमसत्ति भक्षणप्रकारानुकरणे 12 रिंछि-
यए पक्खिण्या

5 5 a रइवर काम.

पूय पसिख पहापर जामे
गयउ कहि वि जेइववकमीमर
तेज हिरण्यवम्भणामाई
पदि अं विराउ जम्मकहाअं

कने ससहिजिह मा कामे ।
दिहु कपोपमिहुणु तहि कोठर । 10
परमउ तुमपिनि सिद्धिपउ बाले ।
पविपकपविहपसंभाअं ।

अथा—कई पिउया पवरसयंवरप ताह मयधिह कविपउ ।

पारावपनुपमउ विपविपउ संवरहु सुविदिपिपउ ॥ ५ ॥

6

विपमउ बुतिसि विचविप महियलि
रहसेबाअरि मगळे कामिब
कंजुरमा नरवर विपविपउ
होउ सर्वचरेज कि किअर
इहपर विपपहु पडुविउ
मरेरि आपवि गरणु मंडिउ
सुपमिदि परिपविनि बन्धारप
कहपउ सं जाव सुह न पावर
काम जवणु हरिसे कइहपउ
खेवपविपउ जाव सुह विराउ

सिधिय पाविपउ मिरि डरबकि ।
सा रहवरविपउ आपमिय ।
बुदिपहि हेहु पुणेप कविपउ ।
आउ आउ पगवर जाइअर ।
सो वि ताह विपविपवर माविउ । 5
कुछहामु के सां तेवि छविउ ।
अपहुं बन्धार कुंवरि पवरप ।
पुतिहि केरी मर को पावर ।
मतिबयणु बवकोपवि मुरपउ ।
ताव हिरण्यवम्भु तहि पउउ । 10

अथा—पुणु माऊ पयलिप मंदरुओ विपिज वि सह भावंतर ।

विहुं कविकिजरमसिपविहिं तुतिउ पयाहिज बैतर ॥ ६ ॥

7

एवरवरउ एवरहसे कोरउ
तेज पविधिपउ महिहि पर्वती
विही कुमुमापवि जकिआपिनि

सुकर माऊ अहि तहि संमारउ ।
अहपकि अयकोमिनि न नवंती ।
नं कामे संविप सरयोपि ।

v MB न ५ MB पविपविपमसिपविहपसंभाअं, H पविपपनु मिरप १ MB क

6. १ MB मंदर १ MB न तहि कई अविउ १ MB कुमति, v MB को नं

7 १ MB संपमिउ. १ MB अयकोमिनि विपवेरी.

6. 8 ३ पुणेपं पुणेपिय.

7 8 ३ पुणु मा पति पुष्करमा

दोहिं वि धरियइ चणिवि चित्तइ
 दोहिं मि दिण्णउ दलियफणिंदहु
 गँउ घर तहिं जोयवि मणहारिणि
 पट्टउ ताइ तासु दँफ्खालिउ
 जोइवि धुज्जिय पक्खिक्कहाणी
 ससयण पिउहर पत्त पहावइ
 कउ विवाहु बहुत्तरणिणायहिं
 दोहिं वि कताकतहु एयहु

घोलतइ विवलतइ नेत्तइ ।
 दढलजंकुसु मयणगइत्तहु । 5
 तावतरि संठिय पियकारिणि ।
 तेण वि तरलच्छीहिं णिहालिउ ।
 एत्तहि सा खगतुरुणि पहाणी ।
 जो णाइदहु वण्णहु णावइ ।
 रविगँइमारुयरहखगरायहिं । 10
 पयलियपेववधंपासेयहु ।

अन्ता—परियइ कालु कुलमंडणह पसरियदिट्ठिवियागह ॥

दसणसभासणगुणविणयदाणदिण्णसिंमारह ॥ ७ ॥

8

अण्णहिं वासरि वे वि रमतइ
 हट्ठियघंटाटकारालउ
 मोहँजालतरुजालहुयासह
 सुणि वम्महवम्मोहवियारणु
 पुच्छिउ णियय तेहिं जम्मतरु
 वणिभवि मायापियरइ तुम्हह
 पुणु सजायइ केत्तिउ सीसह
 जो भवदेवक्षप्पु चिर वणिवरु
 पुव्वणामु सिरिवम्मु पयासिउ
 गयणगमणु तवतावे सिद्धउ
 पणविवि पयजुयलउ रइसेणहु

पत्तइ गयणुच्छणि चंडंतइ ।
 सिद्धसिहरु णामेण जिणालउ ।
 तहिं पुज्जिवि पडिमाउ जिणेसह ।
 पुणु वंदिधि सव्वोसहिचारणु ।
 रिसिणा कहियउ गयउ कहतरु । 5
 जाइ ताइ एवह सुहँकम्मह ।
 भवससारहु छेउ ण दीसइ ।
 इह उप्पण्णउ सो हउं णहयरु ।
 रिसि सव्वोसहिचारणु भासिउ ।
 तइयउ णाणु विसेसँ लद्धउ । 10
 मुकउ दुक्कियदुक्खविहाणहु ।

३ G विघइ ४ MB गउ वर जोइवि बहु मणहारिणि ५ MB दिक्खालिउ ६ MB रविगय ७ MBK
 ०पेम्मवध ०

8 १ MB चरतइ २ MB मोहमहातरुजाल ३ MB तेहिं णियय ४ K सुक्कम्मह.

11 b पय लियपेववध पा सेयहुं प्रगलित प्रेमबन्धेन प्रखेद यथोः

8 1 b गयणुच्छणि आक्राशमध्ये 10 b तइयउ णाणु अवधिज्ञानम् 11 a रइसेणहु रति-
 पेणस्य भट्टारकस्य

पद्या—गुह्यवयवकुंडार तिष्ठत्यस्य मयतद्वचनं मां विष्णुम् ।

विधेयतः पंचहि मगाजहि मयसु विभावति विष्णुम् ॥ ८ ॥

9

सुहृदः बहिः रजसि रजसु
मेहदुःखं जहति विविष्णुम्
पुनः मयोरु रजि परिद्विज
यिज विष्णुं सत्तनपधारा
पिपसुष रजसु तं सुहृदियह
अजसि विधि गयजंयति रमिषां
संयसयेपयिषु विपयिषु
आयं विधुपुरवः इहारीतः ।
परं हृदयं विधुपुरवः इहारीतः ।
सहः विरज्यवसु वारयमुनि
गुणवरावः पहावः विनिजय
सम्यं मज्जं कमुविष्णुम्

तं भावयिषि गयं सप्तमवः ।
भादयारु पञ्चज यवज्यतः ।
विजयारु वि अरुति संद्विज ।
रजि विरज्यवसु उरु केर ।
मज्जहसुयह विष्णु विचरुतः । 5
यज्ययमाकयंयति ममिषां ।
विधि वि पुवसुम् ज्ञेयिषु ।
रजि सुवज्यवसु वारयारु ।
वारयमुनि विरिषांमुनिषु ।
वज्यं पावः पुवसुम्यु वि 10
वरज्यवसुवारयारु विनिजय ।
तारं पुवसुविधि वारयारु ।

पद्या—विधि विधु पुरवः विधि पुरवः विधि वारयारु विधि पुरवः ।

पुण्यमेव विधि विधु पुरवः विधि पुरवः विधि पुरवः ॥ ९ ॥

10

बहिः विधु पुरवः विधि
पुनः मयोरु मयुः विधि
विधि विधि विधि पुरवः
विधि पुरवः विधि पुरवः

तं पुनः विधि मयुः विधि
तार पहावः मयुः विधि
विधि तारवः संसेवि विधि
तं विधुपुः विधि मयुः विधि

५ MBK *पुनः

9 १ MB विधि २ MB पुरवः विधि, T मयुः and glow मयुः विधि पूर्वमयुः विधि पुनः
विधि पुरवः मयुः १ MB पुरवः विधि ४ B मयुः MB मयुः विधि १ MB पुरवः MB
विधि पुरवः

10 १ MB मयुः विधि २ MB पुरवः

9 7 x पुरवः विधि पुनः मयुः विधि पूर्वमयुः विधि पुरवः विधि पुरवः

10 8 x पुरवः विधि पुरवः विधि पुरवः

पत्यु जि सज्जनणयणादिनि
अण्णहिं भवि हौताइं कवोयइं
रइसेणाचररइवरणामइ
प्राणिदयाहलेण मणुयत्तणु
अक्खु कुघेरकतु घरु तेरउ
सेट्ठिणि भणइ गिम्भुणि सज्जमधरि

अम्हइ माइ तुहारइ मंदिरि । 5
किं ण वियाणहिं विहियविणोयइ ।
कउसइउक्कोइयकामइ ।
पत्तउ दोहिं मि ते गियमिउ मणु ।
कहिं सो अच्छइ सुहइं जणेउ ।
पियकइ जिणपयपकयमहुयरि । 10

घत्ता—एकहिं दिणि भवणु पराइयहो जिणवरवइणिहिं केरउ ॥

मइं भोयणु देवि णमसियउ पयजुयलउं सुहगारउ ॥ १० ॥

II

जिह पइ तिह महु ताइ पयासिउ
इह रइसेणु णाम आयउ चिरु
णट्ठणवणि चलंतहिंतालइ
वेल्लीहरि पसुत्तु चिज्जाहरु
णाहु वि तहिं जि भंमतु पराइउ
कोए वझ हंस ईरिउ
हयउ गाहु विहिं वि मिच्चत्तणु
आयउ खेयरु पुणरवि त वणु
उत्तउ कतइ पत्यु जि अच्छहुं
ता रइसेणहु तणियइ णारिइ

णियतवकारणु णिहिलु समासिउ ।
भूमिविहारयिउ सुदरगिरु ।
तालितालतालूरपियारइ ।
पायगुट्ठइ लग्गउ विसहरु ।
घाडिवि फणिवइ वणु अवलोइउ । 5
गरु गरुलेण व तेणुत्तारिउ ।
गउ खगु सणयरु वणिवइ सभवणु ।
अवल्लोयंतिइ वहुणायरजणु ।
कोड्डुं लोउ रमतु णियच्छहु ।
महु पिययमु जोइउ गधारिइ । 10

घत्ता—हियउल्लउ कामे णिहण तहिं केरउ णिहिलियउ ॥

वरकुजरचरणं चण्णियं दिसिहिं जलु बुच्छलियउ ॥ ११ ॥

३ MB पाणि°

11 १ K भवह २ M चण्णिय ३ MB जलु व उच्छलियउ

11 °वइ णि हिं व्रतिन्या

11 8 ७ °तालूर° कपित्तम् 12 जलु बुच्छ लियउ जलमिव उच्छलितम्

जइ मम्मणमते तणु अंचहि
तो हउं मुच्चमि विरहविसोहें
पीयलु हरिवारुणिफलु जेहउ
धम्मइसरह कैयाइ ण भिज्जमि
परकुलउत्ती जणणिसमाणी

जई रइरसजलधारइ सिंचहि ।
ता पडिजंपिउ पसमियमोहें ।
अगु वियाणहि मेरउ तेहउं ।
सहु पुरंधिहि हउं ण रमिज्जमि ।
तहु पुणु जाँय विहिणि भित्ताणी । 10

घत्ता—रइसेणु वि आयउ मवरहो वणि पुच्छिवि सकलत्तउ ॥

गधारणयरु सो अप्पणउं णहि विहरतउ पत्तउ ॥ १३ ॥

14

तहु पुणु संहु महिलइ वियरंतहु
खलिउ विमाणु दिहु मुणि उववणि
पुच्छिउ धम्मु रिसिदै भासिउ
गुणवंतेण सुणिम्मलवइणा
परयारिउ लोपं णिदिज्जइ
तित्ति ण पूरइ जूरइ सज्जणु
लोयणजुयलु वलइ कयणेहउ
जइ वि लोउ णियकल्लु पँवुक्खइ
मत्थयमुंडणु विल्लिणिवधणु
जारु होइ तिहुयणि अपससउ

उप्पलखेडहु वहि णहि जंतहु ।
वदिउ भावें दोहिं वि तक्खणि ।
सारवयमग्गु विसेसैं देसिउं ।
तहिं परयारु णिवारिउ जइणा ।
असिधारारकरवत्तहिं छिज्जइ । 5
वड्डइ कामडाहु पसरइ मणु ।
परयारियहु सोक्खु कहिं केहउ ।
संकालुहि तं ताँसु जि दुक्खइ ।
कुखरारोहणु णासाखडणु ।
मुउ पुणु दूँहउ दुहु णउसउ । 10

घत्ता—इय रिसिवयणाइ सुणतियए गधारिहि मँणु तप्पइ ॥

हा हा मइ दुट्ठइ दुट्ठु किउ इय णियहियइ वियप्पइ ॥ १४ ॥

६ MB जइ रसजलधारहिं मइ सिंचहि ७ MB ण काइ वि ८ MB माय बहिणि

14 १ MB महिलहि सहु २ MB सावयधम्मु ३ MB दसिउ ४ MB पवुक्खइ, T बुक्खइ
मवीति ५ MB तासु खुडुक्खइ ६ M दूसउ ७ MB तणु

13 8 a हरिवारुणि° इन्द्रवारुणीफलम् 10 b भित्ताणी भित्रमार्या

14 1 b वहि वाखे 8 a पवुक्खइ पर्यालोचयति 10 b णउसउ नपुसक

15

मणिपि मुनिवद न वि पवद
 कंठर गुणरयंतारिखय
 कंठरु सार अहिमार्जविणास
 हठ पाविर्द गुहाटी बाही
 मुर मुर आमि पैव पौनजहि
 मनु के रई पररुमसमाहि
 पवर्हि गुई महुं सुई महासर
 जीवपामपयापामिसे

पौनजसमिहिपपापकंदोदर ।
 मौरपविबरवदव सिकंठर ।
 कहिउ कुवरकंठमहिमास ।
 मा शोखउ तिपमइ मई मेही ।
 वसत वृहर् विष्णु समझर ।
 तं आम्बोवज्जकएकसाहि ।
 भाउ बाई ठा वहु पडिमासर ।
 सुहपरिपामसमीरपकिसे ।

5

पता—पतामोदवहमपुमिपय जह लपजकमे जगमि ॥

तां तत्तमुवन्नसकाप जिह दई मसार वितुजमि ॥ १५ ॥

10

16

केम वि आहुवमपहि न पत्री
 बेणि वि ताई तेनु पावइयई
 पिउ मुनि बाहिरुपेति वज्जमइ
 जिह जिह सा महु कहिय कदापी
 तिह तिह पिपयमेव आपेनिव
 मचिह तहि पनांमु विरसि
 लज्जहि आयवि इवसंसार
 लज्जकमु गुणमाकहु विष्णव

ता जाहव विवंपिनि मुनी ।
 वई वयव विहरीई अइयई ।
 मइ आहव मजार पत्तमइ ।
 गुमैरुपेति बाह विरपी ।
 विमाधिपि सा लज्ज कमीव ।
 कुप संचारि पीरपी कंठ ।
 वंदिउ सो एरुपेति मइसर ।
 जोपवातु पम्भ पम्भ ।

5

15 १ MB लज्जवि विवि १ वावमिपयवज २ MB विवारी ४ MB पविर्द विदु प
 पीटी. ५ MB पविर्द ६ MB गुण ७ M पारीविर्द M ती B जी

16 १ MB एव तेनु वि २ MB एव जिह जिह महु ३ M गुणरयंतारिखय B गुणरयंतारिखय
 ४ MB विरपी. ५ M आम्बोवज्ज ६ M पमावि ७ MB पमावि

15. ६ मुर मुर मुर मुर

16. ४ ६ विरपी विरपी

पुत्तचउळो सहु भत्तारें
लइय दिक्क वाळियवयभारें
हउ कुवेरदइणं तेणच्छमि

णिप्पिहेण तोडियमयमारें ।
मोहिय लहुययेरेण कुमारें । 10
पुत्तहि मुह पंहपहसिउ पेच्छमि ।

घत्ता—गुणवालहु कयमगलसयहिं घल्लिय कामिणि सेसहो ॥
पुणु दिण्णी ताइ कुवेरमिरि णियकुमारि धग्णीसहो ॥ १६ ॥

17

सा कुवेरं पृथ तणुसहु पुंच्छिवि
पत्तइ पारावयइ णरत्तणु
कयलीकदलकोमलगत्तइ
सतहि दतहि वहुगुणगणणिहि
कयजयवयणावगालोयण
तहिं पुरि वहि मसाणि सो जइवर
णरवइ पुर परियणु सयोहिउ
सत्तमि दियहि पवणिण पहावइ
यिय णिसिं णयरपओलिसमीवइ
पत्तहि जो रिउ वणि पुणु मजर
णिसिहि समागय गयंवरगामिणि
सा कुदलय तेण परिपुच्छिय

इदियसुहसरधु दुगुच्छिवि ।
पेच्छिवि अरुहधम्मं चागत्तणु ।
फिउ णिक्कवणु तुरिउ पृथदत्तइ ।
चरणमूलि तहि गुणवइगणणिहि ।
पुणु धि क्हाणउ कहइ सुलोयण । 5
धक्कु हिरणवस्सु लत्रियकर ।
मुणि पडिमाजोप संधोहिउ ।
मुणिचरियाणुय गिरिणिच्चलमइ ।
जिणु थुंवति णियमणराईवइ ।
सो णर हयउ तलवरकिंकर । 10
तासु पासि पुरंवेणिचइकामिणि ।
अजु सुइर सुदरि कहि अच्छिय ।

घत्ता—मुणि पडिमाजोप सठियउ तहु चलणाइ णरिंदें ॥
वदियइ अैसेसें पट्टणेण अम्हारपण वणिंदें ॥ १७ ॥

८ MB चालिय° ९ MB लहुयेरेण इह कुमारें १० M मुह भहु पहसितं; B मुहु पहपहसिउ

17 १ MB कुवेरपिउ २ MB पेच्छिवि ३ MB मणुयत्तणु ४ MB °धम्मु चारुत्तणु ५ MB कयलीकोमलकदलगत्तइ ६ MB पियदत्तइ ७ MB पडिमोहिउ ८ MB णिसियर° ९ MB थवंति १० MB एत्तहि वइरिउ ११ MB वरगय° १२ M पासि वणिवर पुरि कामिणि, B पासि पुरवणिवरकामिणि, १३ MB असेसइ

10 a वा लिय° पालित 11 b पहपहसिउ प्रभया प्रहसितम्

17 5 a °अवग अपाङ्ग 9 b °राईवइ पट्टजे

सावकवयो वज्रवर्धनो
 अन्वर्हि संयुव वावरापावर्
 विव मुनिवाह्य केरी मेदिनि
 ववधारिणि अत्यविश्व सूर्य
 दुम्माहवम्माहसरसंवापी
 ताई वे वि पापेवपहुम्मा
 वनि अन्वर्हि वावरा मैज्जारे
 वे वि विरसर्हि वरियविरसर्हि
 ताई वाहु गवे वंयवहसिह
 ता विद्युपिवविस्सर्हिचपवर्हि
 ताई वे वि ज्ञानवि महु वविचह

गुणवहवसवहगणधीसंघे ।
 वं पिउवणु मेहेपियु वापर् ।
 वुद्धिविमुत्तसीअन्ववादिनि ।
 पंति पंति विव वपरवुवाव ।
 वयुविद्युगु विरप्यि म्मारी ।
 सेद्धिमेहि ज्ञानिवज्रवधम्मा ।
 वापर्हि मणुपर्हि सुहसंवारे ।
 ववतत्ताई वय्य संपत्तर्हि ।
 वेव समापय गक्कहि पटिहि ।
 महु संमरियड वववटिधे ।
 मई जि पुण्यवर्मन्तरी वविवर्हि ।

पत्ता—मिच्छुत्तव वेसहि वज्रारिणि पड कोवमिपकिउड ।

अहि अन्वर्हि संजमधारिणिध वरिं वुरि वाहिरि पत्तड । १८ ।

सा कोरवि पुणु मुनि अर्हकोरव
 पडियायय वेव पवारिध
 सुई महु पुण्यमवमि पक्काणी
 सो वररत्तु काई पर्हि मुक्कव
 भाव दुग्गु मेळवर्हि समापमि
 एम मयेविणु वंधि वडाविध
 वाकिगह मयेवि वरसुवर्हि
 मीमे मीसवेण वयपत्तिहि

विहि मत्तापक्कहि संजोव ।
 पाविजेव वे वि मिज्जारिध ।
 वेव समव अन्विय सुहसीणी ।
 अन्वर्हि सुह वरेमवहु दुक्कव ।
 वरहि वं विवाहु ववपायमि ।
 विरपहु विपहि विरेय संपाविध ।
 विणिध वि पक्कावटिध विववर्हि ।
 पिउर्हि विवहि अर्हवज्रवेहि ।

18 १ MB पुत्र मित्र १ MB वावर् १ MB ववर्हि ४ MB वावर् वगुर, ५ MB वव
 वर वरि, ६ MB वर ७ MB वरवर्हि.

19 १ MB ववर्हि १ MB वरवर्हि १ MB विर ववर्हि ४ B वरवर्हि

19 १ ४ ववर्हि ववर्हि १ ४ विर ववर्हि १ ४ विर ववर्हि विरवर्हि

बहुद्वि त्रिणि वि मिमिसिमियग
रसवसवीर्मद गयालिन्न
निहधेयउ जपध धेरिउ
त निस्तुनिवि वेमद उन्नफिन्न
पेयालइ द्वेयवेहण पनीविउ

निमिन्निणु निहणेनिणु णीस्मगदं ।
आवेणिणु णियभवाणि पसुत्तउ । 10
चगउ सधु महिलइ मइ मारिउ ।
गविउग्गामि जइजुयलु निरिक्खिउ ।
राण पउग्गणे सिम् चालिउ ।

प्रस्ता—मणि चित्तिउ ताइ विलासिणिण दुष्णिउ कामु कलिज्जइ ॥

इह जस्मि अहय पग्गस्मि सव पाव पाउ गिलिज्जइ ॥ १० ॥ 16

20

हाहासहै रण्णु णगहै
वहकानिहि लेणनि गविट्टउ
यल्लु णाउ वि रुउ वि पल्लट्टिवि
पक्कमेक गय कहेण लइयइ
उप्पण्णइ सग्गि सोहम्मइ
सुम् मणिमालि देवि चूडामणि
आउ ताह मुणि गण्णोसुद्धइ
उन्निराणयनिहि कयपयणायहु
केण वि पालियस्सजमणियग्ग

अप्पाणउ णिदिउ णग्गणहै ।
पायमग्गु पुंनि गवि पट्टउ ।
णट्टउ भयभवेण धिस्सट्टिवि ।
वेणिण वि मग्गिनि ताइ पावइयइ ।
मणिक्कडइ विमार्णि रुईग्गम्मइ । 15
ण मेहदु सोहइ सोढामिणि ।
पल्लइ पव पमाणिपडइ ।
कहिउ सुवण्णवम्मग्गयरायहु ।
मारियाइ त्रिणि वि तुह पियग्ग ।

प्रस्ता—सा देव पुडगिक्किणि णयनि द्वेयवहजालहिं उउग्गइ ॥

10

गिस्सिमाग्ग्य भगहयानि खल्लु गुणवाल्लु वि गणि उउग्गइ ॥ २० ॥

५ M जलतजलतिदि, B omit व जलतजलतिदि - M वागद ७ M निहधउ दय जप ८ MB वहरिउ
९ MB द्वेयवहै पउलिउ

20 १ B गरिट्टउ २ MB पुर ३ M णाउ रुउ वि, B णाउ वि रुव ४ M राण, B वरण

५ MB पवइयइ ६ MB रहरम्मइ ७ MB गणिणा ८ M °णामहु

18 a पेयालइ इमशाने

20 B b विसट्टिवि प्रकम्प्य 7 a आउ आयु, मुणि जानीहि 8 a °पयणायहु प्रजाया
न्यायस्य

21

तं विसुचिवि सङ्गं सेव्यहि विनाय
साहसु सिद्धकृद् संमोहय
देवै देविहि कहिउ कहाजउ
अम्हारे मरैणु मुखि विसुजेपिणु
पुरवव कहुं पडु संपदियउ
एवम अजेपिणु विभिज वि जायई
मासीजरे बसेहिहि पडिबैं
कंचर्पबम्मै विभिज वि भावै
किं कुइओ सि पुन कवसंतई
सौवउ विरयजुयमु किं मारइ

सो गळगळिवि भावइ दिग्यउ ।
तं सुरमिहूणु वि तहिं वि परावउ ।
तुइ सजपण विहणु पवाजउ ।
गुणबाळहु वपारि कसेपिणु ।
अम्हारे वरववसेज त्रिं मिळिबउ । 8
संजमघर संजमभरकावई ।
बंदिपारि कुलकुलुपामिबैं ।
करीउं मावामुपिबरवैं ।
अम्हारे वचकुं वे वि विरठई ।
अज वि सो पडु विरइ विसुए । 10

प्रस्ता—अचम्हारे पावई मारिवई सो सजपण गवेसिउ ।

तजुइ गुणबाळणराहियेण अण्यउ दुक्कें सोसिउ । १ ।

22

बार वि सुवई सो वि किर न सुपइ
जायई वेवइ विज्जसरीरई
बार बार मजसुकिउ पसेसिउ
कज्जबम्मु काममावै लइपउ
गउ विपवातहु सो कथरेसउ
तं वंरहुं संपत्तु सुरेसउ
अवउ वि सा अण्णर सो सुरवउ
त्रिंविज्जमहुमिउविपकळ्हाई
वा तहिं पच्छइ सयमहुरामउ
विजु कवेसि पुच्छउ पापहु

अम्हारे वेविज वि मुंजिपममवई ।
अविमामहिमार्हि गहीयं ।
सुरमिहूणें विपउउ पसिउ ।
देवैविज्जभूचववैवइवउ ।
अण्णरेसि सिवमोसु विवेसउ । 8
अवइवत्तु जामें ववेसउ ।
संपुउ संसमेवै वित्यंउ ।
तुइ तुइ सज्जरे काम विसज्जरे ।
अवइव्यउ सई मीवइव्यमउ ।
किं वरपम्मविहणै वावइ । 10

21. १ MB तार् विपणउ २ MB सजपण ३ MB सुवि वरपु ४ M वि ५ B कहुं ६ MB
कंचर्पबम्मै ७ M उरपु ८ मीउ

22 १ MB तुवाइ २ MB विज्ज ३ GKT ४ संभवेण इति वाटे आखेण ५ M विज्जविज्ज
५ MB ठी

21. 9 = कुइओ कुपि 10 तजुइ इ पुन

22 7 = वंरवैव कमीपमीवयेव 10 = वावपु व्यापणय.

समउ पुरदरेण किं नय्यउ
केवलणाणपईवें दिट्ठउ

देविजुंयलु वरिसियमुहरायउ ।
चक्कीसहु जिणणाहें सिट्ठउ ।

घत्ता—विहिं मालायारिहिं दिट्ठु वणे वदिउ मुणि ह्यकम्मउ ॥
फर मउलिकरिवि आयणियउ भावें सावयधम्मउ ॥ २२ ॥

23

लइउ वउं घरविहि परिचट्ठइ
उत्तमगु भत्तिइ णावेण्णिणु
वे वि धिवति चदरविणयणइं
एण णिओए गलियइ कालइ
एक्कहि पाणिपोमि फणि लग्गउ
सहि णियसहियहि पासु पधाइय
विसमविसाणलेण जलजलियइ
दोहिं वि दैरवेयणइ सैरतिहिं
मोर्याकसइ करिवि णियाणउ
धराणिणाह छुड छुड उप्पणउ
एयउ विणिण वि णियवइपच्छइ
अज्जि वि णिवडिउ तणुजुयलुल्लउ

जौहु जिणिंदमवणु ण पयट्ठइ ।
देव णमोरहत पमणेण्णिणु ।
पढमं चिय कुसुमंजलियणइ ।
एक्कहिं वासरि लवलिलयालइ ।
हाहारउ वयणाउ विणिग्गउ । 5
सा वि भुयग्गेण आसाइय ।
विहिं वि सरीरइ महियलि छुलियइ ।
दिट्ठउ इदागमणु मरंतिहिं ।
लद्धउं सुरवइदेवीठाणउं ।
तेण समागयाउ सुरकण्णउ । 10
एयहु केरउ अच्छइ कच्छइ ।
लोएं जौइउ गयजीउल्लउ ।

घत्ता—कह कहइ सुलोयण तहु जयहो भरहचरणणवियगहो ॥
कंतीइ पयावें दुज्जयहो पुप्फयंतगुणतुंगहो ॥ २३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाकइपुप्फयतविरइए
महामन्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे जिणधित्तपुप्फजलिकलं णाम
तौसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३० ॥

॥ संधि ॥ ३० ॥

१ M विण्णायउ ७ MB णारिजुयलु

23 १ MB लइयउं २ B वर घर° ३ MB जाह ४ MB गर° ५ MK सहतिहिं, T सरंतिहिं.

६ MB भोर्याकस करेवि ७ M गुणचगहो

23 1 a घर वि हि पुणत्रोटनप्रथनविक्रयादिगृहव्यापार 8 a सरति हिं स्मरन्तीमि 11 a
णिय व इ प च्छइ निजपतिपथात्, b क च्छइ अरण्ये 18 पुप्फयतगुण त्वगहो पुष्पदन्तौ चन्द्रादित्यौ तमोर्गुणौ
कान्ति प्रतापश्च तौ दुस्त्रौ महान्तौ यस्य

त्रिजयजयं भाषणिपि
माकरमामामादि

त्रिजयजयं भाषणिपि ।
मधुं कतं मणिमामि । सुवर्ण ।

।

गठ निरिमाषणु
जहि विहरंत
उज्जवताळ
जार् पसिळ
होमहि वचमि
वचमिहति
मधममामा
पताहि नीमि
विजु ममह
मभि विजुपिय
करीसिसे

जयं कतमामा
कौषणु पल
वचमपमा
महिहति
वचमि मुहमि
कममहि फुमि
केमरपिण
ममरहि कापि
सर्वसरोव
मने संमरि
मामिह दे

८

१०

पता—मामि जमि मचिषणु
मुहुं नैवगपिपारी

हं सुवर्ण वचिषणु ।
होमी परिमि मारी । १ ।

१६

२

बीस पुरि पद मुजाम्बर
जं परिबरं कह व बीरं वच
रह मावैरणमवविहतिपार

जहि हं विहि मि विचमर ।
वचम कमाव पचमर ।
धामतं विणि वि विचमिपार ।

१ १ B व कमा १ MB कमा १ M केतार MB कमा १ MB व १ B क
मिहिमि MBK रवैमिपार

२ १ MB व वरि १ MB पल

१ ॥ १ वि विवा व मु कपीमोष

इह तुह पयलोहिउ पयलियउ
इह कटइ लगाउ कचुयउ
एहु सो सरघरु खगभूसियउ
एत्येत्थु जाम सो धरइ खलु
सो सत्तिसेणु राणउ सुयणु
पुव्विल्लउ जम्मु णिहालियउ
इय वयँणु वियारिउ जाम जँहि
अमरँ विहुणेप्पिणु सिरकर्मलु

घत्ता—वेणि वि रमणरसङ्गइ
पारावयमँवु पत्तइ

इह महु उप्परियणु वियलियउ ।
इह दोह मि देहकपु हुयउ । 5
जसु जलेण देहु आसासियउ ।
तावेत्थु जि दिट्ठउ पवँलु वलु ।
समरहि ण किं तुहु हलि सुयणु ।
ता देविइ सिरु सचालियउ ।
रिसि एक्कु णिरिक्खिउ ताम तहिं । 10
पुणु जपिउ वण्णपतिसरलु ।

जेण णिहेलणि वड्ढइ ॥
सद्धइ णिग्गयरत्तइ ॥ २ ॥

3

पुणु उप्पण्णइ विज्जाहरइ
भवदेवँ विडालउ तलवरउ
सो एवहिं जायउ एहु जइ
परिभावहु एयहु तणिय मइ
इय जपिवि हयवम्महसरहु
कय वदण पुच्छिय धम्मविहि
नत्थँ सहु लेसासख मुणि
हुउ किं पि ण यौणउ णवसँवणु
कर्यँगाहहु तियसहु णउ रहिउ
जिह जीवाजीवपुण्णगइउ
जिह आसवसवरणिज्जरइ

हुणियाइ मन्नाणइ मुणिवरइ ।
जो हँतउ चिरु दुक्कियणिरउ ।
इज्झहु ससार विचित्तगइ ।
किं रुसइ किं अम्हह खमइ ।
आसण्णु णिसण्णउ जइवरहु । 5
रिसि भासइ सुय सुयणाणाणिहि ।
ए एति पपुच्छहि तच्च गुँणि ।
किं देवहु करमि धम्मसवणु ।
पुणु तेण तासु तिजगु वि कहिउ ।
जिह वड्ढियाउ पावयमइउ । 10
जिह वधमोक्खभावतरइ ।

MB पवर ४ वण्णु ५ M तहिं ६ M °कवलु ७ MB °भत्त

3 १ MB भवदेव २ MB मुणि ३ K याणमि ४ B समणु ५ MB किय°

2 8 a सुयणु सुजन, b सुयणु हे सुतनु

3 7 a ले सा संख पद्

सिंह मुनिजा सबसु पयासिवड
पई छरड सिमुत्तभि तर्पपरणु

बला—सं भिमुनिभि इयरापड
केवळिकहिपड बरपड

4

बरासिहराकडरमियपपरि
सहि कुंभोपक विषमर बनिव
अभिलपड सिमुत्तभि सिमुत्तभि
अर बरिभि सावर्भमर गहिर्
परबहियमेत्तुंभिरिपहो
अं विष्णवं अण्णि तासु सुय
ताएक सव्वत्थे पत्तिपड
परमारड परवीवम्भइक
पुण्डु वि परि वडु विपधिपड
तेहि वि अण्णिपड विपधिपड
बला—अण्णि जीवकुसु विरिड
अण्णि परम्भसु विरिड

5

ओ ओहकसार भाविपड
मई मणिड तापे पयई मयई

सं भिमुनिभि तियसे मासिपड ।
मणु वहरावडु ब्याणु कवणु ।

मउगंभीरर पायर ॥
इवडु अकसार मुनिवड ॥ ३ ॥

16

अरपीह पुंठरिंकिभि बपरि ।
बामेक मीसु मंडसु अविड ।
इठं बीसर वड पंथववडु ।
अर भावडु बयें वड सारिं ।
मई कि सुंरव बाधिरिपहो ।
बावेहि आहुं वडु बीहमुव ।
मुनिबामडु इठं पुणु बधिपड ।
परमम्मविहडु अकिसर ।
अण्णे प्पेक्कड पुच्छिपड ।
हिसाकिबवपजहि परिपडि ।
अण्णि अण्णसड मासिड ।
अणु मणु परबहुररड ॥ ४ ॥

8

10

सो कवणु व विहुरें तविपड ।
मई गहिबई वंविधि रिसिपयई ।

1 MB लपरावु.

4 1 MB "वड अरड 1 MB "मुनिवडो; 1 MB "मुनिवडो and glow निरहितस; K मुनिवडो but corrects to "मुनिवडो; T लपिरिडो 1 MB वड v MB पुण्डु इठं 1 MB read in place of this line. अण्णर अकिसरामिरिड वेणु अण्णिकार अण्णमणेणु; T अण्णमणेणु अण्णि अण्णं वडं वेणु अण्णमणेणु अण्णमणेणु एव 1 MBK वरसु मिहिरड and glow in ME as मिहिरड मिहिरड इठम; T वरसु मि वरसुमणि.

5 1 M read this line as मई गहिबई वंविधि रिसिपयई मई मणिड तापे पयई मयई 1 ME वर 1 MB वर

4 5 a वरव विव मो व अण्णमणेणु; क विव विव हो विवमणिग.

एपे वयविवरमुह घद जिह
त गिसुणिधि पिउणा इच्छियउ
गय विणिण वि णयरुज्जाणवरु
तहु वयणे वणिवरु उवसमिउ
दोर्गधे किं वर करमि तहु
मइ एमै णणण समुल्लविउ
तसथावरजीवहु कयदयइ

हउं रौप वज्झमि जणण तिह ।
मइ देसचरिउ पडिच्छियउ ।
पणविउ मुणि भुवणाणदयरु ।
घरघम्मि जिणिंदसेट्ठि रमिउ ।
किं नासमि लद्धउ मणुयमभु ।
पिउहत्यहु अप्पउ मेल्लविउ ।
उद्धरियइ पंचमहव्वयइ ।

5

घत्ता—कयफणिसुरणरसेवहु
दूसईदुक्खणिगतक

पायमूलि जिणदेवहु ॥
गिसुणिउ गियजम्मंतक ॥ ५ ॥

10

6

महु तिहुयणणाहे ईरियउ
गिसिं चिरु भवदेवे विप्पिण
पुणु त^३ चि वि जुयलउ लक्खियउ
जइयहु ताइ जि तवतत्ताइ
तइयहु होतो सि तलारु तुहु
गुणवालें तुहु अणोसियउ
जाइवि अणेत्य वासु रइउ
पइ पुणरवि णयरि पवेसु कँउ
लोयहु केरउ धणु चोरियउ
तें आरक्खियउलु गरहियउ
तुहुं विज्जुचोर दिट्ठउ धरिउ

पइं वणि मिहुणुल्लउ मारियउ ।
होतेण कालकंदलपिण ।
मज्जारें होइवि भक्खियउं ।
पइं धरिधि हुयांसणि हिताइं ।
ओसहिगुणेण णट्ठो सि लहुं ।
फह फह व ण जमउरिं पेसियउ ।
सो णरवइ हुँउ जं पावइउ ।
अजणगुणेण दिच्चारु हउँ ।
पउरें रायहु पुक्कारियउ ।
तेण वि पडियजणु साहियउ ।
पइ चित्तणिवासु वि वज्जरिउ ।

5

10

४ MB ए ५ MB पावे ६ MB दोगतें विकर ७ T एण णण ८ MB दूसहु

6 MBKT गिसे and gloos in T गिसे हे भीममुने २ M °कदले°. ३ MBT त चिय
जुवल्लउं खियउ ४ K हुयासें गिहिताइ ५ MB अणत्थ ६ MB हूयउ पव्वइउ ७ MB कयउ
८ MB हुउ; T हउ

5 7 a दो गधें दरिद्रेण

6 2 b °कदल° कलह

8 a त चि वि जुयलउ तदेव पक्षियुगलम् 8 b दिचारु इउ इष्टिचारो

इतः, अदश्यो जातः

बन्ता—अथरमणीयपक्षीकृति
परं विद्विषाई शिष्यकर्म

केशवयारविहोकावि ।
हरिणि सप्त मासिकार् ॥ १ ॥

7

तं मेदिह हावित विषयार्णुं
सोन्दाह वि मई हकारिय
पहुचा सो पुंछिह मोपय
आपाविप मेणि गेहे विद्विष
जिम्ब ग्राहि छागु जिम बेहु वसु
हप जिमहहि बंध विपारिय
मोमठ वि न मस्केहूं सकिप
पकिवाविह लो निम्बि वि करि
हुं पुणु कंडाह डोहव
कुडव रोहि मि पडु वणतिमि
पैर मचिह पाव मानह हरणु

करवासकोतकपयकरेहुं ।
मगिह न बेह विद्विषारिय ।
तं वरविहि मासिणि मंडव ।
वचिमाह वासविहवि गहिप ।
जिम्ब विमहहि मई मुदिहवसु । 5
मई वापहि औसारिय ।
वसु डोपह विपि कंभकिय ।
कुम्भर पुमाह पत्त मरिपि ।
मई लाहव लव न बाहव ।
रोम्बि वि बंधिनि बसिप विवरि । 10
हई लोमोविह कि वर मणु ।

बन्ता—ता कंडाह मासिह
अं सोसार पत्त

विषुवाहि कम्पु पुचिहसिह ।
मई विवदेह मुचर ॥ ७ ॥

8

हह होतह गुणवाह विवह
पुहई वसु पाई भीरम
गंडयल सारिस मेकमिह
वण्डर ताई ठेगु सपरि

पाजी कुवेरमिह सवव ।
सवविपहि मापर विविह व ।
पणु कि वंडर कुवेरविह ।
विषकरिहतिह कोरंगु सारि ।

7 १ M 'वण्ड' B वण्ड २ M 'वण्ड' B वण्ड ३ M 'लोकाह' B 'हुण्ड' ४ MBK
पुचिह ५ MBK मवि वचिमवि विविह ६ M मवि MB मचवि MB कविह ७ MB वर,
K वर but म in second hand १ MB वचिह वचिनि ११ M वर वचिह मणु पावरणु ।
B मर वचिह मणु पावरणु १२ MB कण्ड १३ MB मासिह १४ MB पुचिहमिह
8 १ MB हुसल

12 ३ केशवयार' सुपर्वकार-

7 ३ ३ केशवयार' अविहाम

8. 2 न पुहई हृदयी

वाणि समवसरणि जिणदेवश्रुणि
 अवलविउ हिंसविरत्तियउ
 अविस्सुद्धउ रासु ण अहिलसइ
 रुरि कवलु ण गिण्हइ प्रॉणपूउ
 तें पलपिंडउ दरिसावियउ
 पुणु अण्णु वि सुँहु पयच्छियउ

आयण्णवि जायउ अत्ति गुणि । 5
 जिउँ जोयवि सणियउ दिण्णु पउ ।
 गयवालउ महिवालहु दिसइ ।
 ता राए पहिउ कुवेरपिउ ।
 त ण णियइ कैरि वरभाविउ ।
 तो हत्थिदेण पडिच्छियउ । 10

वत्ता—वारणु दुण्णयवारउ

हुयउ अणुव्वयवारउ ॥

इय मइवतु वियाणिउ

वणि पाणहु समाणिउ ॥ ८ ॥

9

अण्णहिं दिणि णरणाहुहु तणउ
 घरु आयउ णच्चाविय दुहिय
 पुच्छिय राए विरइयतिलय
 मयणाहिंविसेणुव्वमतियए
 मुद्धइ णीराउ पजपियउ
 णियघरु जाएवि वणीसरहु
 सा सुहए पडिवयणेण हय
 सवोहिय सहियइ हसगइ
 दुम्महवम्महमगैणवहिय
 सहि वट्टइ चिचु दुसयवउ
 हलि पचमु सरँसु समालवहि
 तो मँरउ णिरुत्तउ कहिउ मइ

णहु णट्टमालि णवतोरणउ ।
 रसविन्ममहावभावसहिय ।
 णामेणुपलमाला विलय ।
 वणिवइसरुउ चित्ततियए । 5
 राए णियहियइ वियप्पियउ ।
 वेसाइ णिउजिय दूइ तहु ।
 पैणयगणरयहु णिवित्ति कय ।
 दुल्लहलभेसु म करहि रइ ।
 ता जपइ पवगविल्लाम्मिणिय । 10
 सभूयउ वल्लहु णवणवउ ।
 जइ सुँहुवु कइ व ण मेलवहि ।
 असमन्निख रुवेवउ माइ पइ ।

० MB हिंसविरत्ति जिउ १ MB जोयवि सणियउ पहि दिण्णु पउ ४ MB पाणपिउ ५ MB रुरिवर
 भावियउ ६ MBK सुहु ७ MB अइमइ

9 १ MB add before this the following lines पुणु णिवएँ तूसिवि दिण्णु वरु, सेट्टि
 पउसु आणदयर, अच्छउ (M अच्छ) वरु थवणीराय महु, जइया मग्गेसमि देसि पहु २ MB पणियगण
 ३ MB मग्गणवणिग्या, K °वणिग्य° ४ MB °विलासिणिग्या ५ MB सरु सुसमा° ६ MB सूहउ णउ महु
 मेलवहि ७ MB मरमि

8 b पहिउ प्रेक्षित

9 4 a मयणा हि° कामसर्प 5 b राए रागेण 12 b असमन्निख परोक्षे

यथा—सहि पश्यन् अद्रुमदिभि
हियन् अद्रु घनेष्विषु

10

तद्वदु त्वं सेवियमाणस्तु
इय तेहि विहि वि आलोहव
पिई ओहविषयत्त धीरं अहि
उवाहवि आपि वि आत्मिह
मुखाइ सुरपविहि मयसु कउ
हे बीरस्तु दुष्प्रेतियउ
ते एवम वि जीवन्निपयं
उवाहसिय वेस वा परिहवि

यथा—कृपास्तु वक्राह
वेमहि अत्रयसु निवडह

11

तत्त्वस्तु अत्र वि मैतिसु
तहि अत्रमहेमपयगामिहि
एकसु वि एक वक्राहियउ
परिवाहिर दिव्यवज्रविषय
पिहिई वि लहि विटिवा आभियउ
आ दिव्यत सुविषयसाम एसहि
सा वाजप्यसु महु वेमि अह
मंजुल सन्निवय मत्र अह

यथाह विषयवर्णनाभि ।
कौपविमसु करेप्यि १ १

उवाहवि आपि सा अत्रसु ।
तौ अद्रुमिषु पयस्यउ ।
आहिर आयेप्यि तुरिउ तहि ।
पिउ अपिई उव्यवमाहिये ।
वद यत्तु वाह कद्रुमउ ।
अहि अत्रिउ तहि पुषु अत्रियउ ।
वाजिवाहुरि यिरसु मन्निपयं ।
यि यत्तु वंमवेद यरिपि ।

मत्तउ व हरिप विदेअह ।
विउसहु तहि मनु विहव १ १ 10

ओवाहउ विह्वोरविहि तुउ ।
एव वद आपा कामिहि ।
मयमार्थे मसु लंवाहियउ ।
मंजुलहि पद्मारिय सयक ।
नैमधिक तद्विह माहियउ ।
महु लयव हाव वं विपसत्तहि ।
तो वमि हरे वि तुह एवमर ।
वीथह विहि उव्यमि विववउ ।

MB वाजप्यसु.

- 10 १ MB तदु लयि २ MB तद्रुमि ३ MB विव ४ MB वद M अत्रेप्यि
१ MB अत्र २ MB हो बीरसु लि MB वाजिपयं M विवव
11 १ MB विपवीपिहि २ MB "वहम्य" ३ MB विविपि ४ MB एव वमिह वरिपि
५ MB वेमि, १ K वमि

10 १ ६ "वसु एभिः ० ६ आहिर एवमः ० कृपा" कोल्लि

11 १ ६ विव वीह विह वद वरिपुम ० ६ विविह वसुपीमाता वक्राहियता

जिह हारु नेण उच्छवि गहिउ
सुरयाकखइ पडिवणु जिह
माणिणिह मति ओहामियउ

जिह लोहिट्टे पुणरवि रहिउ ।
गायहु चित्ततु पउचु तिह ।
णिज्जीवसम्मिन्न आणावियउ ।

10

घत्ता—गहियगारयहत्यहिं दासिहिं भणिउ समत्यहिं ॥
कुड भजैसि समासहि मा हुयवहमुहि पैइसहि ॥ ११ ॥

12

तामायसवल्यविहसियण
पडिवणु हारु गयैदियहि प
दे देहि विहसणु सुदरिहे
उप्पणु चोळु णियसिरु भुणिउ
परधणहरगारउ साडियउ
ते तिणिण वि तहिं णिगय कुविड
णरणाहे पुच्छिय सच्चवइ
पिहिविहि अलद्धकचणधवहु

घत्ता—खलु दुव्वयणिहिं दोच्छिवि
महिबैइणा आणाविउ

सहसा घोसिउ मजूसियण ।
तुहुं कट्टु कट्टु किं भणहि मइं ।
मा पडहि मति णारयदरिहे ।
कहिं तरु चवति पडुणा भणिउ ।
मजूसहि मुहु उग्घाडियउ ।
णारिहि के के णउ मलिय जड ।
सा भणइ भडारी सुद्धमइ ।
मइं हारु समप्पिउ बंधवहु ।
ता समंति णिब्भच्छिवि ॥
तहि भूसैण देवाविउ ॥ १२ ॥

5

10

13

आणहु पवडिउ माणिणिहे
ते^१ दडणु अणु पवियप्पियउ
मोइणि तलवर मतिहि तणय
सिरफमलु लुणह पुहइहि तणउ
जइयहु परिणामु विहावियउ
तइयहु जो^२ पइ सइ विणु तरु

मणि रोसु रायचूडामणिहे ।
असहंते एम पयपियउ ।
तिणिण वि घाडह इसियविणय ।
ता वणिवरु चवइ सुहावणउं ।
जइयहु कुजरु भुजावियउ ।
सो अज्जु देहि णिव सतियरु ।

5

७ MB पडिदिणु ८ M मणि णियए, B माणिणियए, ९ MB मजूस १० M पयसहि

12 १ MB ता आयस^० २ MBK गड दिवहि ३ MB महिवइ ५ MBK भूसणु

13 १ MB ते दडणुणु परियप्पियउ, (B पवि^०) २ MB पइ जो महु दिणु ३ MBT पडुवहि

य परेभ्यः मा पिबेदहि
ता तदि घर्षणीसै किञ्च करुण
बभिवपुण्णं यन्त्रं अं विपठ
उपवाट रासुः सोस सगिः
संविता सा मारमि मरमि

एहं वि मा यमो बंधवहि ।
यारिह विदेसविपरेषु मरु ।
त पिबिषिषिषु लेभेकिपठ ।
कविषिषिषु इहं वि होर विषु । 10
सहिहि विमाह भपसे करमि ।

यथा—पुण्णं गार्ग्यं अरुतोरप
विज्ञाहृकरविमहिष

तत्र तुष्टारमसीत्य
भंगुरपठिष विहासिष ॥ १३ ॥

॥

अगुमिषः कप सुहवःपिष
कि जावहि मेते पुष्पिषः
महु कामकवधिर मुखविष
ये पिपयम वाहासिनपविष
पुण्णं ममिषं कवरे विपठ तदा
महुषः मायः कवः मिषकविः
यज्ञासपि कविषः गविषः
सो वेन्त्रः विपयसहावरः
पिपुषः यवोसहु विप्याविः

ता ययः पलोयः मरुमिष ।
मणुसः इह हर्षं कविषः ।
पल्पोषु मित कवः पविष ।
सो तहु सा विहमिषि कवःपिष ।
सतुष्टुः गद विपमिषिषो । 5
मुखः कुवःपिष मा वि किञ्च ।
सहवःपिष यममिषाविषो ।
अपु वेन्त्रः रवि कवःपिषः ।
ययःपिष गद कवःपिष ॥ 10

यथा—अथर्ववेदमयममं
मा पठं कवः संजायहि

पुनः पर्यवस्यहि पुनः ॥
आरवि मापुण्णं जोषति ॥ १४ ॥

१ MB *निरय ५ MB निता सो तामि पुण्णं यमि ६ MB मरुमि

14 १ MB कविषःपिषा हाते पविष २ B ममिषि ३ M ली MB कवि विपयमरः ५ h
कवःपिष ६ M विपयःपिष ११ वर क.

१३ १ a विहवहि देव 18 अगुमिषःपिष पुमिषा

१४ १ वाहासिपविष मरु कविषिणा २ कवःपिषःपिषः अथर्ववेदः ११ ययःपिष
मयःपिषः

15

मायावद्दसत्तविलयियउ
 दुप्पिच्छमच्छरुकोर्येणहिं
 ण वियाणिउ कवडरूवरयणु
 ग्रह जाइवि रायदु पेसणिण
 पिहिं^१ वी चारित्तमहिद्धियउ
 वणिघइ मारदु णेवावियउ
 जूरड सच्चवइ कुवेरसिरि
 उण्हउ ससहर रवि सीयलउ
 अहवा लइ एउं होइ जइ वि
 तहि अवसरि सो चढालयदु

यत्ता—पाणं ब्रह्मि विमुक्ती
 रग्गलट्टि जमदुई

मुद्धइ डिंभउ सिरि चुवियउ ।
 दिट्ठउ राण सइं लोयणहिं ।
 किउ भिउडिभगभगुरवयणु ।
 जमदण्ण व जमसासणिण ।
 पडिमाइ परिट्ठिउ कड्डियउ ।
 उप्फालें जणु मेलावियउ ।
 हा किं चलु हयउ मेरुगिरि ।
 हा किं जायउ यम्महु पलउ ।
 तहु भव्वट्ट सीलु सुट्ट तइ वि ।
 अप्पिउ तेलियकरवाल्लयदु ।

पणिगलकडलि डुक्की ॥
 सियहारावलि हई ॥ १५ ॥

16

साहु ति भणिवि पणवियपयए
 सोवण्णभूमि भणिमडविय
 णिक्करुणु साहु जो णिम्महइ
 अवरेक्कहिं मच्छरणिच्चरहिं
 अण्णेक्कैइ वेउद्धाइयइ

पउमासणु किउ पुरदेवयए ।
 तहु पाडिहेरसिरि णिम्मविय ।
 भूएहिं णिवद्धउ सो पुहइ ।
 णिदिवि सिंरि चूरिउ टक्करहिं ।
 जहिं णरवड तहिं संप्रौइयइ ।

15 १ MB °वहसत्तु २ MB °कोवणहिं ३ MB पिहिविवि चरित्त° K पिहिं चारित्त° ४ MB
 add after this the following lines —

पुणु इट्ठु मज्जे चालियउ
 णिजतउ पेक्खिस्सि जणु रुवइ
 कु वि सवइ राउ कु वि पुहइअउ
 ओ दुरएहिं तुरएहिं जउ विरु
 उहइणु जेम वट्ठिउ जणण
 सो एवहिं चरणहिं चरड विह

सव्वेहिं जणेहिं णिहालियउ ।
 कु वि यामि यामि धाहुउ मुयड ।
 सुदर सुसीलु दुहु पावियउ ।
 जाणहिं जपाणहिं गुणपवर ।
 रोवतें सयलं परियणेण ।
 दुक्कम्महिं पायउ पुरिउ जिह ।

16 १ M णिक्करणु २ MB मिरु ३ MB अण्णेक्कै ४ MB सपाइयइ

15 1 a मायावद्दसत्त मायावणिकत्वम् 3 a °रयणु रचनम् 4 b जमसासणेण यमाज्ञया
 6 b उप्फालें पट्टह्वनिना

बहु विष्णु अमरितु बह्विध
 सो मकर काह मर बोसु किउ
 मुहापबन्धु परककगार
 गुमिबन्धु रायहु मिष्णमर
 परकय कुकसन्धि कुबेरसिरि
 गउ लहि अहि अण्डर बहसवर

घटा—पिण्डककह अ विपद्भिः
 अमहि वप्य के हुमिउ

17

बनि मकर पुरावर कम्पु महु
 ठं नासमि एवहि ठउ करमि
 पिउ मनिवि समककहु भाविउ
 बंडाक महुमिउबनिहि
 पुनरमि पावै बोरहु कडिउ
 त बहस वारिसेजबुहिय
 विष्णो कुबेरसिरि बंधवहु
 तहु अयमे मनिउ कुबेरपिउ
 ठेक वि पडैतु वम्पु वि मजमि
 निब कामि होमि हई अहवरिउ
 सुपरककपु को वि विरिउनिवयउ
 पहु पण्डहु बनिउ परावयउ
 घटा—कहि सिनिमनु कहि मन्त्रिय
 जीवहु कम्पु लहेकव

पहु पायहि धरिबि विपद्भिः ।
 मासह पितापगायु धमेहिउ ।
 मुहिवयणु परककगार ।
 तैं तोसिब पबविबि सववर ।
 उबसामिबि गरिबि विपबसिरि । 10
 मरकियकउ सा पतिउ बवर ।
 मई पावै किउं पुकिउं ।
 कयताउवहि किछामिउ ॥ १९ ॥

बिचारवि अं कुहमा ति हई ।
 पउ तुम्पुपरि मकक बरमि ।
 बाहेज इहु बहु भाविउ ।
 पाकिप बहिंस विष्णो पिसिहि ।
 मिह गुणबाकें बंड संयवि । 5
 बिष्णोवकककपुवमरिय ।
 बसुपाकहु गुणबाकेवहु ।
 कि मोककहु कालु कहमि पिउ ।
 निवककपु मन्पु व पैरिगवमि ।
 सा तिन्नि विपह पडुवा बरिउ । 10
 विवि सिहह पैतु व कन्तिपउ ।
 मन्त्रियवि विनमर बावउ ।
 कजाविप कि मन्त्रिय ।
 अण्यु व कि पि पुराउ ॥ १७ ॥

५ MB दम्पहिउ

17 १ MB read the last and नउ तुम्पुपरि मकक बरमि त नासमि एवहि ठउ करमि
 १ MB नउ १ MB निवककपु ५ MBK कहहि ५ B पिउतु १ K पर वयमि MB नउ.

16 7 १ दम्प हिउ बर्महिउ 9 १ मिष्णमर उबसामिबि विपबसिरि 10 हुमिउ उबसामिबि विपबसिरि ।
 ५ वि विवि विपह पडुवा बरिउ ५ वि विवि विपह पडुवा बरिउ ५ वि विवि विपह पडुवा बरिउ

17 11 १ वि विवि विपह पडुवा बरिउ 18 वि विवि विपह पडुवा बरिउ 14 उबसामि विपबसिरि

18

दिमहु सुहु दइवु जि करइ
सिरिपालु सच्चवइदेहरहु
दइवण्णुएहि आपसु कउ
कह गिसुणिचि कुसुमालें दमिय
णरयाउसु तेणोसाँरियउ
ज सायरसखहिं भेलविउ
सिरिपालविवाहि सवंतवण
सो चोरु मरिचि णिवडिउ णरइ
वहुदियहहिं तेत्यहु णीसरिउ
इहु अच्छवि हउ सजमु वहमि

किं मार्यवण्णु चितिवि मरइ ।
होसइ चक्कवइ पडुलमुहु ।
गुणवाहु सवणि मुणि होवि गउ ।
मइ खतिइ सतिइ ससमिय । 5
तइयाउ पढमि सचारियउ ।
त वरिसलक्खकोडिहिं थविउ ।
वसुपालें मुक्का वे वि जण ।
पहिलारइ भीमैदुक्खणिहइ ।
वणि कुभोयरघरि अवयरिउ ।
जिणएवे भासिउं सहहमि । 10

घत्ता—ता देवेण समीरिउ
त जइमिहुणु णियच्छहि

ज जम्मतरि मारिउ ॥
ता किं रोसें पेच्छहि ॥ १८ ॥

19

किं खमहि भडारा फुह कहहि
त गिसुणिचि रिसिणा बोहियउ
त एवहिं गिस्सलु जि करमि
ता तियसें जपिउ गिसुणि गिनि
पइ पहयइ देवइ जायाइ
तुम्हह पयजुयलउ वदियउ

किं अज्ज वि वइरु चित्ति वहहि ।
पाविट्ठे ज मइ सल्लियउ ।
तहु हियमियवयणइ वज्जरमि ।
अम्हइं जि ताइं विणिण वि सवसि । 5
इय कहिं मि भयतइ आयाइ ।
ता मुणिणा अप्पउ णिंदियउ ।

- 18 १ MB सुहु दुहु दइउ २ K माइयण्णु ३ T सवाणि श्रेष्ठिना सह ४ MB तेणोहारियउ.
५ MB दुक्खभीमाणिए ६ MB जिणदेवे
19 १ MB अज्जे वि २ K णीसल्लु

- 18 ४ a दइवण्णुएहिं देवसै, b सवणि सवणिक् 4 a कुसुमालें चोरेण, b सतिइ विद्यमानया
7 a सवतवण सवन्ति वणानि क्षतानि ययो
19 4 b सवसि स्ववशिन

21

लजियउ चयारि वि कयवयउ
तहिं चित्तवेय जंफोमरिय
अञ्जु जि उप्पण्णउ टिच्चकुले
सुरदेवें दाणु ण मणियउ
मुउ हयैउ गइहु दुइतु सदु
पुणु दाढाभासुर घोणसउ
मइ समउ आसि सो धिचु थिले
जिणधम्मु तितुळिइ भावियउ
तेण वि तहु आउ पयामियउ
ओसारियदूसहभवणिइ
उप्पण्णउ पवहिं फुहु जि दिधि
सो पइ तुम्हारउ णवियसुरु

मंभूइयाउ वणदेवयउ ।
वैणवइ वणदेवी वणसिरिय ।
इह पयउ पेच्छहु गयणयले ।
गिसिदिज्जतउ अवगणियउ ।
पुणु वायमु पुणु उटुरु सरहु । 5
पुणु हुउ चडालु कुमाणुमउ ।
हुउ मरिवि पइयउ णरयविले ।
वउले चिरु जइवइ सेवियउ ।
सत्त जि अहरत्तइ भावियउ ।
संणासु करिवि रिसिसमट्ठिणइ । 10
को पुमइ णं विहिणा विहिय लिवि ।
लइ सो जि महारउ धम्मगुरु ।

घत्ता—सुरदेवहु जा मायरि मा मरेवि तुच्छोयरि ॥
एत्थु जि देसि चिरतणे उप्पलखेइ पट्टणे ॥ २१ ॥

22

सिरिधम्मपालणिचणदियहे
मुणिदाणहलेण सुसीलिणिय
तहिं तहिं विवाहि कयणिग्गहो
रइसभवसोप्पवाकखिणिहिं
भणु भणु भुवि को अम्हइ रमणु

उप्पणी पुत्ति अणिदियहे ।
जगसुदरि मन्दरमालिणिय ।
अम्हइ मुक्को वदिग्गहो ।
गुरु पुच्छिउ चउहु मि जम्मिणहिं ।
ता कहइ काममयविइवणु । 5

21 १ MB चकेसरिय २ MB धणवइ धणदेवी ३ MB गरहु हुउ ४ M दाढोभीसणु, B दाढा
भीसणु ५ MB वि

22 १ MB °धम्मवालसिरिणदियहे २ MB मुक्कइ ३ MB °विइमणु

21 1 a लजियउ दाय्य 8 b वउले वकुलनात्रा चाण्डालेन 10 b रिसियमदिणइ
सप्त दिनानि

22 2 b मन्दरमालिणिय मन्दरमालिनीनाम्नी

अं पात्रे क्वय मन्त्रागार
इतिमात्रिपग्रीहयगमुह
या दामर तुम्हरे द्विपयह

मह नमउ पुन भजुषु सुमर ।
भजगनि पित मित्रममगुह ।
यम रहउ जायइ पुसुममर ।

यत्ना—मात्रपददु मुपयिषु
गाद्यामिगणु रमर

अकमु गुरिन् द्विपयिषु ॥
तुम्हरे पुमउ अमलर ॥ २२ ॥

10

23

अथयगहिदु मितागध
ने यदित विवगुण गदयगुण
जकिरहि आपयि असेअपहो
आगामिउ पुणु गमेमिचउ
तहि अचमरि बयिचगुण अद
जायाउ ताउ सिद्धिमचउ
अमहने विगृह्यगतिपय
मुउ ओगदुनबलिपरउ तुउ

दुपउ जायउ न्ना वरुमचउ ।
महिपउ बकिहि गउ मधु पुणु ।
गजामु करुतु भजुमहा ।
मह विवमहिमलणु भामियउ ।
ममाउ बकिहि गमेमचउ ।
पिहि गुणउ वममममचउ ।
तययउ ककुरि जयिपउ ।
महमलि विमरुहउ हुउ ।

5

यत्ना—गन्तु त्रि गदयगुण
गहिनि तागु वरुमचरि

पुनि मुचउ वयिचगुण ॥
वाहर ओदु वरुमचरि ॥ २३ ॥

10

24

भजुषु वि पविहणु जांमु बमर
बेजिउले मापकिट्टिमचणु
पुग्वाडिरि पर किमि करर अहि
बहिभाडिउ अउयमीमचउ

मह कंज गुपय सुवतमर ।
कागयिउ तय जायमचणु ।
अकमहि विवि बल्लिय जयिनि तहि ।
माचणु गणदवि सुवामिचउ ।

४ MBH २

23 १ B वरुमचउ २ MB जगजगहो ३ B अमहने ४ MB विवेमिचउ, T विवेम

५ MB गदयगुण ६ MB विवगुण ७ B वाह

24 १ MB वयिउ २ M वयिचगुण ३ MB ओगदु

23 1 B वरुमचउ वरुमचमा वायाज B अ जग जगहो वल्लिया वल्लिय १ B विवेमिचउ वरुमि
६ कवुरि वरुमिचगुण ७ B विवगुण विवगुण

24 २ ओगदु विवगुण ओगदु वरुमचगुण ३ अ अमहने वरुमचगुण ४ B वरुमचगुण ५ B वरुमचगुण वरुमचगुण

पहे जंतिइ साहु पलोइयउ
ससिचयणइ पडिचणि णायहरे
दाणेण तेण जणसंयुयइ
गिन्वाणहिं रयणइ धित्ताइ

आहारु ताँसु तहि ढोइयउ । 5
भुत्तउ मुणिणा मंणिहिउ करे ।
जायइं पच वि अच्चभुयइ ।
करकञ्जुरियाइ विचित्ताइं ।

घत्ता—जोइवि मँणिगणवुद्धी पणइणि तसिय पणट्ठी ॥

गय घर्णकणिसहु छेत्तहु अक्खइ सा णियकतहु ॥ ४ ॥ 10

25

तुह कूरकरवउ आणियउ
केण वि तहिं फुल्लइ मुक्काइ
अण्णेत्तहि रुइरकिरणजडिय
अण्णेत्तहि काइं वि गज्जियउ
अण्णेत्तहि साहु साहु भणियउ
तं णिँसुणिवि हउं णट्ठी सभय
तुहुं महु केरी घरकमलसिरि
तुहु गुणमाणिक्हं तणिय यणि
पत्थर ण हौंति ते दिव्वमणि
घरियउ विवक्खवइसेण धणु

जो तेण साहु मइ पीणियउ ।
पिययम महु मत्थइ थक्काइ ।
गयणगणाउ पत्थर पडिय ।
णउ जाणउ वज्जउ वज्जियउ । 5
अण्णेत्तहि वरिसिरघणझुणियउ ।
ता भणइ णाहु हँलि तुहु सव्य ।
पइ हौंतिइ होसइ मज्झु सिरि ।
पइं कियउ धम्मु भुजविउ मुणि ।
इय भणिवि अहीहरु दुक्कु वाणि ।
उत्तउ सुकेउ मा किं पि भणु । 10

घत्ता—हिमगोपीराभासइ

महु केरइ फणिवासइ ॥

पडियइं रुइरहियक्काइ

महु जि हौंति माणिक्हं ॥ २५ ॥

26

इयरें पवुत्तु तुहु खुहु खलु
मा हरहि चोर रुसइ णिवइ
गउ तहिं जहिं अच्छइ धरणिवइ

महु धरिणिहि केरउ दाणहलु ।
ता दव्वु लपप्पिणु सो कुमइ ।
फो पावइ धम्महु तणिय गइ ।

४ MB ताइ तहु ५ B मणगणवुद्धी ६ MB घणकसणहु

25 १ MB ण २ M वज्जुउ ३ MB पेच्छिवि ४ MB तुहु हाले

25 5 b वरिसि र^० गन्धोदकवर्षणशील 9 b अहीहरु नागभवनम् 10 a विवक्खवइसेण नागदत्तेन

सो राजठ मयन वि मो वणिउ
 तिह तिह मणि स सीकरह वणु
 पुंरेविममुदहि दीहरहि
 वरणाहु वि विपवर संकिपड
 विणजठ रपगोहु वणु गसिउ

पता—मयनहि विनि पण्यपगवि
 वामाहुवपविसे

विमूहगुह मोहो वणिउ ।
 तिह तिह वि होह रगावमणु ।
 मेमाविम किंकर हंहरहि ।
 संठिउ सुकेउ पुमवकिवड ।
 मणु तवपेठण का व मसिउ ।

विह्वं मणि तवकोडरि ।
 एणु कहि वि अहिसे ॥ १३ ॥ 10

27

मं कहुउ कह व कह व वरिपि
 महु करि व वरहि कि वरिपि
 पहरंतहु उच्छरिपि वरिपि
 ठमोमगंडेण विवागियठ
 वयसवह वयसवरेण विठ
 वणु वणिमु जायठ वरिपि वि
 कपुरिउ वसुगणो वणिपव
 ठेमुउठं म वरहि मिठविउं
 पुणु ठेण फवीसठ पुठिपव
 ममाठहु कि पि व विणु वड

पता—वामि पमवह मुपमूउ
 मो मो विसहसाप

पुणु पोसहुवासं विणुरिपि ।
 मुहवं पाहाव हुंकरिपि ।
 धिहुउ तहु मयन मावपि ।
 वणिवागएउ वरिपि ।
 वहरतु वसुपरिवहि विठ ।
 वरिउ ठहि विणु वं ठेविउ वि ।
 स वणु सुकेउ मविपव ।
 वेषाव पहाव वेमि हुं ।
 वडं वं कि वेष गवविपव ।
 ता मयह मणु मणु वं वि वड । 10

वणु सुकेउविउंसणु ।
 विह्वं मणु मवाप ॥ १४ ॥

26 १ MB विमूह गुह K विमूह गुह २ MB पुंरेविममुदहि; A पुंरेविम मुदहि १ M वि
 विर MB विणज १ M वरिपिसे

27 १ M वयस B वयस २ MB वयसवरेण ३ M अहरति ४ MBK वेतां MBK
 वेतां ५ MB वणिपव T वणिपव ६ MB वणिपव MB मयवण.

26 ६ ॥ सीकरह सीकरेणि. D ६ वहरहि वरिपि ७ पण्यपगवि वामावणे

27 ६ ६ वहरतु वयसवण 7 ६ वणिपव वरिपि पता ८ ६ वेषाव वेषाव

28

पडिजयइ फणि गभीरसन
 प्राणाचहारु तहु को करइ
 मइ तो वि तासु तुहु अलिबैहि
 भणु फणिवइ कम्मभारु वहइ
 ता जायवि चितियविणियउ
 किउं णियमतु विहावियउ
 णीसेसइं कम्मइं णट्ठियइ
 मग्गइ पेसणु उरजगमउ
 आणिवि भयणगणि लहु ठवहि
 तहिं वधिवि यमि सुवणघणइ
 तुहु तेत्थु वप्प सट्ठेण विणु
 इय णिम्मइ भणियउ जइयहु जि

घत्ता—ता विसइरु विहसेप्पिणु
 मकडवेसु धरेप्पिणु

द्विणेण ण जिप्पइ दिव्वधणु ।
 जसु पुण्णु सहेजउ संचरइ ।
 मज्जायवयणु णहु लवहि ।
 जइ णरिथ कम्मु तो पइं वहइ ।
 फणि तेण सुकेउहि अप्पियउ । 5
 अहि हियइच्छिउ कारावियउ ।
 ससिद्धं कज्जं सठियइं ।
 वणि भणइ खंभु पाहाणमउ ।
 गरुआरउ वाणरु तुहु हवहि ।
 गलि सखल लाइवि अप्पणइ । 10
 आरुहणुत्तरणहिं यवहि दिणु ।
 तुहु अवरु देमि हुउ तइयहु जि ।
 तुरिउ यभु आणेप्पिणु ॥
 थिउ अप्पउ वंधेप्पिणु ॥ २८ ॥

29

खभगसिहरि उट्ठिवि चडइ
 अहि दिट्ठउ अहिदत्तेण किह
 णेरंतरु णिसिदियैहइ गमइ
 विसि भणइ मित्त मइ मेल्लवहि
 ता तेण माणु अवहत्थियउ

उत्तरइ सरइ धरणिहि पडइ ।
 सज्जायहु लग्गेउ साहु जिह ।
 लइ विहिविहाणु सव्वहु भमइ ।
 पडिवक्खे सहु णिम्मउ चवहि ।
 ययणामु णवेप्पिणु पत्थियउ । 5

- 28 १ MB पाणाव° २ MBT अल्लवहि ३ MB केउ ४ B विसहेप्पिणु ५ MB मकड°
 29 १ M अहिदित्तेण २ MB लगइ ३ MB °दिवसइ

28 2 b सहेजउ सहायम् 3 a अलिबहि समर्पय 8 a उरजगमउ भुजग, 11 a सट्ठेण
 विणु शाब्देन विना

29 4 a वि सि नाग

परं मनुये नार्हं वि वसु कर्हि
 पुत्रीर धयेन वि हृष्टं किं शुभ
 तं विस्तुभिषि मन्त्रिषि धक्षियत
 अथवापि विवस्वरमत्पयवु
 संसेवित्र गुणहरगुणवत्तु
 निर्ममच्छन्ति विव विष्मन्ति
 दिक्कन्ति वरिषि वस्तुधरिष
 मुनिषव सुकव मुत्र विद्वरारे
 यीकिंगु हवेपियु विवममिष
 सम्मत्तार्किय मन्त्रवर

यन्निवह छाहसु नार्हं तदि ।
 मा वचरै मन्त्रिषि वामसु ।
 कथिषव वंषिणा मोक्षक्षिबत ।
 विवसुपुत्र समपिषि विवमवसु ।
 विवर्कै छहवत तववत्तु । 10
 मन्त्रिषिषि पयवपियु मुन्त्रपि ।
 परिपाक्षिषि वामासवकिरिप ।
 वयव्वत समि सवावरे ।
 तेत्यु किं सुर्वं इर्वं तासु पिय ।
 रामसु विवर्कैपवामपय । 15

मन्त्रा—मन्त्रहृत्तमन्त्रिषिष्यह
 होति न वज्रमवचन्ति
 अर्पेहमह वरवचिकयह ।
 पुष्करतवाचन्ति ॥ २९ ॥

इय महापुत्रो विवस्वित्पुत्रिषुगुणार्ककार महाकरपुष्करतविग्रह
 महामन्त्रमन्त्राजुमन्त्रिष महाकन्त्रै विवियागवत्तुकेवकहासर्वयो नाम
 पञ्चतीक्ष्णो परिष्केषो समस्तो ॥ ३१ ॥

॥ संधि ॥ ३१ ॥

v MBK देव ५ MB कि ६ MB येकहि वच ७ MB वनिष, T वनिषा M पुष्कर पुत्र
 १ MB पुनविष्मरहि १ MB वनिषि ११ M वर वृष १२ B विवम १३ M मन्त्रवर K
 वरवत् वर १४ MB वनि

४ ३ वरवाह पुत्रेष्ट ४ ३ वनिषा पुत्रेष्ट १४ ३ एवापु निर्ममच्छन्ति, विवमवचव
 वीरवामवामव १४ वरववववववववववव वरवववविषु १७ पुष्करतवाचन्ति वनिषिष्ये

XXXII

णिशुरासुरविज्जाहरसरणे आसीणे आसि समवसरणे ॥
गुणपालजिणिंदें ज भणिउ ज मइ वि पइ वि सुदरि सुणिउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

देवि सुलोयणि विंचु कहाणउ
इय जएण पुच्छिय भासइ नइ
तेत्थु जि चारु पुडरिंकिणिपुरि
ससिरिपाँलु वसुपालु णरेसर
ता चिंतिउ कुवेरसिरिमायइ
दीसइ सब्बु लोउ सवियारउ
अण्णु वि सो कुवेरपिउ भायर
गँय वेणिण वि ते पुणरधि जाया
एम भणतिहि वामउ लोयणु
हियवइ परमुच्छाहु ण माइउ

तं वज्जरहि मज्झु अहिणाणउं ।
सिरिपाँलहु केरी गुणसंतइ । 5
घरसोहाणिजियसुरवरघरि ।
सहु णिवसइ णं ससुर सुरेसर ।
जपिउ मुहकुँहरुगयवायइ ।
एकु ण दीसइ णाहु महारउ ।
तेए णिजिय चंदु दिवायर ।
किं जाणहुं विहाय सिविजाया । 10
फदइ सुहिदसणसपायणु ।
ताम सँमुह वणवालु पराइउ ।

घत्ता—सो पमणइ मयणवियारहरु
गुणवालु देउ सुरपरियरिउ

सुणि सामिणि केवलणाणधरु ॥
उज्जाणि महारिसि अवयरिउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

वम्भण्डाहण्डलखोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।
खण्डेण सम समसीसियाइ कइणो ण लज्जन्ति ॥ १ ॥

GK do not give it

1 १ MBK आसीणेणासि २ MB कुँ ३ MB सिरिवालु ४ M सिरिपाँल वसु°, B सो सिरि-
पालु वसु° ५ G °कुहरगय°, K °कुहरगय° but corrects it to °कुहरगय°. ६ K गय ते विणि वि.
७ M समुहु, B सुमुहु ८ M गुणवाल

1 10 b सि वि जा या शिवीभूता मोक्ष गताः

2

अन्नेह वि विहि गुप्तिहि गुप्त
ओ कुपेरपिड जावत मुनिवद
सं भित्तयेवि देवि' रोमभिय
बंदपहतिह गय पर्येसरि
बहिय सुंवर बोहय संवय
दिह सेहि उवववि विहपोवडु
पावरवडित अडित बहुरपवहि
तडु तडि अकहु आम अंगपासत

मत्ता—अंगपासपरिहडु तववरये
तडु अगाह अडित करमिहडु

हावयसय विमीक्षियवेत्तड ।
सो भायड तुम्हारड भायड ।
बहि न अमयरसार्हे सिंभिय ।
ईह हयगवत्तमामयभरि ।
अन्ने पये विभिय वि अंन । 5
सवडु सवडु ओमडु बडपावडु ।
संवडु भाय बुहयववववि ।
अवड विहासित करपरमवड ।

सुंद सोय तहि संविदिह वने ।
वत्तुपाडु मयह सिरिपाव सुडु ॥ 10

3

विभिय वि वारित विभिय वि वरवर
सं भित्तयेवि कुमारे वीरड
वरवेसेन सरखसोमाडी
तहि ववसरि कीमे सड बोहड
दिहीहवड जीवीवडु
फुरर अहड पासेड पविबडह
सुखर वयडु अडिवरवड भासह
गुणवडवहविमवमि सुहम्मड
तहि सिरिसेरि अण्णवीहड वरवह

वह वीरति होति ता मवह ।
वेष वेष मई मुविडं विदवडं ।
पह बुहवी वडर मोहवी ।
मापापुगिसे रमडु पकोरड ।
परिममति वयवई कंयर मडु । 5
केसमाड वडवेडु वि विवडर ।
ता कंयुरर सुवडु सीसर ।
रमड वडु अवाहे रमड ।
तडु सुहकापि विवि विववह ।

2. 1 B omits from वेहि down to वडिय in 5 a १ MB दिविवावड T विवववड
१ MB 'पावड' v B गुणवड ५ MB सुखीर

8 १ MB अकहु १ MB गुप्त १ MB वड कीमे v MB अडिव गु ५ MB वडवडु वि
विमल १ B सुविमलडु MB कंयुरर MB वडवड MB विविदिह

2 8 विवववडु विवववड

3. 8 a वडवड वडवड.

जसमइ दुहिय महिय निर्वचदै
खयकदप्पदप्पदुमकदै
पुरिसवेस णच्चती जाणइ
त णिसुणिवि महु गायणवायण
दिट्ठउ मंतिहिं ज जिह जेहउ
घत्ता—परियचिवि पुरइं सधयवडइ
णच्चावहि दावहि तणय तिह

पुच्छिउ जइवइ णविवि णरिं । 10
अक्खिउ इंदभूइसवणिं ।
जो सो पुत्तिदि जोव्वणु माणइ ।
दिण्णा राणं भाउप्पायण ।
कज्जु पयासिउ तं तिह तेहउ ।
णयराइ सखेइइ कयइइ ॥ 15
वरइत्तु णिहालहि तुनिउ जिह ॥ ३ ॥

4

पेक्खु पेक्खु पच्चप्प गिरावय
सुय णयराउ णयरि णच्चती
एवहिं णउ समागय पुरवर
णच्चइ मुच्चहि सच्छ सहेजी
ताहं जुवेसं दिण्णइ वत्थइं
एत्थंतरी सुंहिसुहइ जणेउ
तहु वयणं चल्लिय विणिण वि जण
ताम णियच्छिउ तेहिं अरूढउ
आसु पमग्गिउ मो सिरिपालें

ता मइ आणिय ण वणदेवय ।
जणु णवरसम्मलिलें सिंचती ।
तुहं दिट्ठो सि होसि पयहि वर ।
णहं परमेसरपुत्ति दुइजी ।
आहरणइ मंदिरइं पसत्थइ । 6
जणणियाइ पेसिउ हक्खारउ ।
अग्गइ अणुसरति जा सज्जण ।
णवरव चचलतुरयारूढउ ।
दिण्णउं धणु लेप्पिणु हर्यवालें ।

घत्ता—सो तहि कयपरिणामें णडिउ
आसणु जि सेण्णमज्झि चलिउ

सहसा कुमारु हयवरि चडिउ ॥ 10
हरि दूर गपि दूरल्लिउ ॥ ४ ॥

5

वाहपवाहजलोल्लियणयणह
तुरिउ तुरगु अदसणु जायउ

हाहारउ मेळतह सयणह ।
महिवइ माउसमीउ समायउ ।

१० MB निववदै

4 १ MB णउ परमेसर° २ B सुइइ जणियारउ ३ MB अणुसरत ४ MB धणवालें

15 प रि यं चि वि परिभम्भ

4 1 a गिरावय आपद्रहित 4 a सहेजी महाया 6 a जुवेसं सुवराजेन श्रीपालेन 8 a अरू-
ढउ अप्रसिद्ध 10 कय परिणामें कर्मपरिणत्ता

इदुषिभोवसोपतपरिचयः
अथपि यि मात करंति पिचारिण
गयं तेषु जहिं अियवमीसद
बंदिउ बहारयसयपैदिउ
भाविउ कुचपीछरीह पुणसे
तह मपबंत समामनु करयहुं
तरयहुं धार्यं वकप्रहि बाळउ
सुपपितितमि संकिबं सुतरां

यथा—वेपथुमहामहिहरमिपदि
रिउमा सुवचणु परिहरिउ

बे पकसुमिह पडिउ विहीनः ।
मंतिहि कह व कह व सा हरिउ ।
केवलभाषापरि बोहंउद ।
मसिह मप्यकाउ भाबंदिउ ।
पुण महारउ मिउ मापासे ।
पमथह अिणु मत्तनु दिउ जयहुं ।
ना पचपंणिणु मुधि गुबकाउ ।
सिबिह मुपंयिणु मापपुतरां । 10

काणवि कुसुमिबलकवरि विचडि ॥
मीयह रंभीवीवरकपु धरिउ ॥ ५ ॥

5 १ MB add after this the following lines—

केपथेनि वरुणु बोववंतः
अपमोर्द्ध अमह धदि संतः (B omits it)
हाहाहा करणउ देमिह
कहनु वहु किं तुपिउ करणु
केम मि कश्चि वता परमैकति
वं मिमकमि वरुण वलमंती
अनु कमेवह पुणसे उणी (B टीकी)
हा हा पुण वरुणु मिमोर्द्ध
किं वरुणु वरुणु उणी वरुणु
हा किं वरुणु वरुणु वरुणु
हा विदि वरुणु केम हरि वरुणु
पुहणह पुणमिपरवणव
जेम अणमह हव वरुणु
कपु वरुणुमि को भावंपमि

मनसु मि वरिणु विनु वरुणु ।
पुमिह वरुणु वरुणु देमिह ।
वी वरुणु (B वरुणु) देम वरुणु ।
हरिरेण विउ वरुणुदेमिह ।
वरुणुमि मिमिह देमि वरुणु ।
कपि व वरुणु विरुणु ।
केम पुणसे वरुणु वरुणु ।
वमिहमिहरिमिपरवणु पुण ।
विनुवणवपुणवणवणवणु ।
बे महु पुणपुणु मिमोर्द्ध ।
हा कह वरुणु (Bमहु वरुणु) वरुणु वरुणु ।
ती वरुणु पुण व वरुणु केमिह ।
हा हा वरुणु वरुणु विदि वरुणु ।

१ MB वरुणु २ MB वरुणु MB वरुणु

5 1 न वाह अणमि ६ ६ हरि व भावमिहा ६ भावमि भावमि, ११ वरुणु वरुणु
वरुणु वरुणु

6

उरयलविलुलियविसहरहरो
पंडुरपधिरलदीहरदसणो
मंदरकंदरसंणिहैतौढो
सिसुससहरसमदाढाभीसो
णवघणसामलकुषलयकालो
भासइ हिप्ता घरिणि महारी
कुखो तुज्हु दुर्तंकयंतो
भैरइ कुवेरसिरीप पुत्तो
एणिह भवजलसायरतरणं
मौमणिओ तुरपण कुमारो
ता विहगाजाणियसुहियुक्खो

फडियलवैलइयघोणसघोरो ।
घग्घचम्मवरविरइयवसणो ।
मणुयवसाचणिकियगडो ।
जलियजलणजालाणिहकेसो ।
खयरो होऊण वेयालो ।
पइं गयजम्मि सुचपयगोरी ।
जासि इदाणी कह जीयतो ।
अहमिह णियकम्मेण णिहित्तो ।
जिणवरकमकमलं मह सरण ।
इय जणवत्तावुज्जियवारो ।
पत्तो तहिं जयपालो जफ्खो ।

5

10

घप्ता—रणभैरधुरधारियकंधरहो
जुवरायहु कारणि कुद्धरहो

चंडासिदढमडियकरहो ॥
अच्चिमिट्टु जफ्खु रयणीयरहो ॥ ६ ॥

7

भणइ जफ्खु खल रोसपरब्धस
मा णिवडहि जलति कालाणलि
मा ओहट्टउ आउ तुहारउ
भमरिसरसवसु कहिं मि ण माइउ
सो रफ्खे खग्गेण दुहाइउ

जाहि जाहि विजाहररफ्फस ।
घइयसवयणविचरि जगघंघलि ।
मा तासहि कुमार महु केरउ ।
एम भणतु महंतु महाइउ ।
घणसुरवर विहिं रुविहिं धाइउ ।

5

6 १ MB °विरइय° २ MB °सणिहट्टुढो ३ MB गयजम्मे चपयगोरी ४ MB दुर्तंक यंतो
५ MB एवहिं कहिं दुहु जासि जियतो ६ MB भणइ ७ MB जाम णिहित्त, B सामणिओ, K माणिणिओ
८ MB °सुहदुक्खो ९ MB जगपालो १० M रणभरधरधारिय°, G रणभरधारिय°

6 10 a मामणिओ मामक मदीय

7 2 b वइवस° यम, °घंघलि णापदि 4 b महाइउ महाइत 5 b घणसुरवर व्यन्तरदेवो

यस

इय विभिन्न वि बत्तारि समुभाय
 पदय बयारि महु पडिभाया
 हय माछइ बत्तीस भवैकर
 बउमडिहि बेउभित कउउ
 नं पि हुँबहुइ पवगपमकहि

पता—एयविपरहु मुयबहु बउ कछिउं
 कि होही कम्मे विपंठिपउं

गलगाअँठ दिर्भं थं दिगाव ।
 महु पि हय सासह संभावा ।
 बत्तीसहं बउमडि मउसुर ।
 महुबीसई सउं सैमूवउ ।
 कउउ थउउ पदयउ पिहियउ कपकहि ।
 पवहु विपउउउं नं कछिउं ॥
 मयिपयु कुमारु विठिबउं ॥ ७ ॥

8

न तहु होँतउ सुईं पडिबण्णउं
 कण्णसंछहु कण्णरि घाहवि
 गिठवा भित्तउ पवकापरियउ
 सभितं सपिउं सिठिसिहउउ ठवियउ
 पडिहसिर्वापउ उँकिय सरवउ
 गोपाकंकर बबकि पैवित्थरि
 बित्तइ बाकउ विमिउं विपमह
 ना तहि मवसरि कामकिसारी
 कछविबंरतरि छा पडंती
 तेज वि मय्ये जायवि कोमलु
 पता—पडंछहि कमेतिहि छोबनिहि
 कछसंछियकहि पिपपिउयउ

छिउ विरपयि महु पण्णण्णउं ।
 जोबकसउ वववमयि जाहवि ।
 बविरे^१ महु विखइ धरियउ ।
 विवण्णउउ तहि तवइ बवियउ ।
 विहउ अउ जोबवि मउ तवइ । 8
 पसरियकरपउं लम्मा कववि ।
 देससहायें सछिउ वि विहउ ।
 बउकडिपउ संमोप गोपी ।
 विहूी तवयें जीव मरंती ।
 पसिउ तव सुहुमुँरपपजिमु । 10
 छा मविबर मय्येपुछोबनिहि ॥
 पडिहोहपाइ जाउंछियउ ॥ ८ ॥

7 १ M मउ १ MB पडिभाया १ M महुबीस कउ १ MB व बहिउ १ MB कण्णविमिउ
 8 १ MB मुइ १ MB कउ १ MB देउं वउ महु, T एवम पवउयु १ MB "विमिउ
 १ MB मय्येपु मउ १ MB सविमरि, १ MB "करउयु MB मव" १ MB "संकर" १ MB "एवमियु १ MB कण्णकगहि जीववि, K कववि ११ MB मय्येपुमय्ये ११ MB
 बरिहउव नावाहविमउ T पडिहउव

8 १ मउ कउ मउकउ

8 १ मउ कउ मउकउ 10 म जीवयु मय्येपु 12 पडिहोहपाइ मय्येपुमय्ये

9

सरसमणुअचपणयसैणिद्धइ
हरि जइ तो तहु चहु ण लछणु
ससि जइ तो तहु णत्थि कुरगउ
सुरचइ तो जइ कुलिसु ण तहु करि
मइ अवलोइउ पणु जुयाणउ
किं जाणहु ज जणचउ घोसइ
लइ आयउ पिययसु तुम्हारउ
ता मन्त्रलियउ पच कुमारिउ
ण कदणै भल्लिउ मुकाउ
भासिउ भई धवैलियगयणहिं
किं महु आसण्णउ णिविट्ठउ
त णिसुणेण्णिणु विट्ठसिचि धिट्ठइ
घत्ता—पुक्कपलवइमहिहि सुगोहणइ
सीहउरि सहइ णरवालणिधुं

आइय भवणहु भासिउ मुद्धइ ।
वम्महु जइ तो तहु ण कोसुमधणु ।
रवि जइ तो सो ण चि अत्थ गउ ।
तोयहु जतिइ माइ महासरि ।
किं जाणहु तेलोकहु राणउ । 5
सो सिरिवालु णराहिउ होसइ ।
घोलउ धणयलि ण मणिहारउ ।
गयहु पासि णावइ गणिगारिउ ।
ताउ तासु आसण्णउ दुक्कउ ।
किं जोयहु अँडुडुहिं णयणहिं । 10
आसि कालि किं कत्थइ दिट्ठउ ।
दिण्णु पट्ठरु जेट्ठकणिट्ठइ ।
पर्यट्ठमि देसि दुजोहणइ ॥
लच्छीकतइ ण लच्छिधुं ॥ ९ ॥

10

हउं सस रइकतहि लहुयारी
मयणकत मयणवइ कुमारिहि
अवर चि विमल वयसिय छट्ठी
अम्हाहिं सह उवयणि कीलती
मग्गिउ तै ताएण ण दिण्णउ
भणिउ जणणु रिसिणा पिहुबोहं

जयदत्ता पयहु गरुयारी ।
जयचइ जेट्ठहु जणमणहारिहि ।
असणिवेयययिंदे दिट्ठी ।
कामुयमइणेहेणुभ्मती ।
पुच्छिउ जइ को परिणइ कण्णउ । 5
पवहिं णरवइ काइ चिवाहं ।

9 १ MB °समिद्ध २ MB कुसुमधणु ३ MB गणियारउ ४ MB धवलियवयणहिं ५ MB
अदद्धहिं ६ MB पायउवि ७ MB °णिउ ८ MB लच्छिधउ

10 १ MB मयणकति २ MB तेण ताउ णउ दिण्णउ ३ M पडुबोहं

9 8 a गणिगारिउ हस्तिन्य 14 लच्छिधउ विण्णु

10 4 a कामुयेत्यादि—विद्युद्देगविद्याधरस्य मति कामासक्त्या विहर्लाभूता 6 b पिहुबोहं पृथुशानेन.

नेहिणीय होसंति पिरकिहु
पुण्य अगई मगार लकिपेय
बारिनि भाणिपाय बिद्वदने
लेय दुरामयय दुरी

पता—पिबमहु कामनि पिपययि जमिउ
अण्डर हियवर सोपतिपय

तुह पुनिउ गिरिवाकहु बकिहु ।
पिरेवपयण पिदेसद जायउ ।
अमपमिगरीवायपयारे ।
पिदिपय पिज्जनि रागु यरि । 10
मार्गदुपसर्गमिहयमिउ ।
रिगिरिवाकपयु आयतिमउ ॥ १ ॥

11

तुहु नि बाहु पई तपियई अगई
कर सर रीरिनि कंत रिउपेइहि
मासर छारेउ जर वि रक्कजउ
अप्येइ पि कुमाणि सेमारेय
पियइहि होति अनेसे मेन्ही
मगई इय सारंगि य मोमर
तहि अचसरि मयउ उ वि तदमिउ
इयर पुण्य पासाउ बिरमउ
सरसाबाय ताहु सुर पायिब
अं यत्तु मगई अयईइउ
ले होसेय पिज्ज गय आसिनि
इहि कामगई विचरेरी

अण्यु पि बाहु मयार हियई ।
अपयईहि रीहहि मुवरईहि ।
कज्जायणु होर बादिअउ ।
रक्कजिइहं बहि वि न मारय ।
पेवहि मरिहि उरपयि बिडी । 6
तुहयहु करउ वयणु बिहाकर ।
बगियहि गये बावर हरिभउ ।
मययमणु सोहर अरसरउ ।
अपयइइइ अनी इय मयिय ।
अं कज्जायउ कज्जर बहिउ । 10
पिय रीसिमुहि अण्णमउ इचिनि ।
पुण्यर सारउ तुहु कहु केरी ।

पता—अचकरि मिजियमहिइरहु ता कर अचरपद अचरहु ।
सिदिपिइरहु कज्जायअसयहि रक्कजउ अति मीउ अयहि ॥ ११ ॥

४ B विद्वदनेय ५ M विद्वद ६ MB मगार

11. १ MB अरिनि १ MB तुह कइ वि उरपयउ १ MB सेमारेय ४ MB रक्कजनेयि
कर नि ५ MB तुही ६ MB अचरेइ M अचरपयण नीनी इय B अचरपय नीनी ॥ ६ MB
मगइ १ MB लकिपेय

7 ॥ पिदिपिहु दामपुण्य 8 ॥ अचरपयि विद्वदपय, 11 ताकर विद्वदपय

11. 1 ॥ पि दिप, ६ अचरपयणु अरिह, 9 ताहु नीनीअय तुह करी 12 ॥ विचरेरी
पिदिपा 18 अचरपय लयसिकपय,

12

थणियवेउ तहि अत्थि णरेसक
असणिवेउ तहु पुचु पमत्तउ
हुउं तहु तणिय बहिणि पिय तद्धिरय
किं जीवहि किं मुउ सिंचियसिलि
दूरहु जोइओ सि मइ रोसैं
णवर हउ जि हय वम्महकडैं
वे^१ सोहग्गभिक्ख मइ मग्गिउ
एक्कवार जइ कँरि करु ढोयहि
तो जीवियफलु मइ जगि लद्धउं
महुँ विणए पारद्ध महुच्छव
तो गिण्हमि ण तो धुउ घज्जमि
ता सा गय जवेण रयणउरहु
मुउ सो णरु मग्गियपलसयलइ

घत्ता—णीसासजलणजालियदिसइ
जहिं णिवसइ थिरु वरु जित्तंमहि

जोइवेयदेविहि वल्लहु वरु ।
तेणाणेप्पिणु इह तुहुं घित्तउ ।
तैं पेसिय पइं णियहु समागय ।
णिवडेप्पिणु खयलि गिरिवरयालि ।
किर पइं हणमि णिसौयरिवेसैं । 5
इदच्चदणाइदविहडैं ।
मच्छरु भेल्लिवि तुहुं ओलग्गिउ ।
एक्कवार जइ मुहुं अवलोयहि ।
त तहि भासिउ तेण णिसिद्धउ ।
जइ पइ वैति मिलेविणुं वंधव । 10
कण्णासाहसेण हउ लज्जमि ।
भासइ भाइहि मारियवइरहु ।
मइ दिट्ठइ भमियइं गिद्धउलइं ॥
असहतिइ असणिवेयससइ ॥
तहिं पेसिय मयणवडाय सहि ॥ १२ ॥

13

ताइ गंपि स्रहउ अब्भत्थियउ
विज्जाहररायहिं रइधुत्तिउ
सो परिणेसइ रुइहयरविहउ
रुउं तुहारउ हियवइ भावइ
भणइ कुमारु काइं भासिज्जइ

जो रक्खेसइ जणवउ दुत्थियउ ।
थणियवेयमरुवेयहं पुत्तिउ ।
चक्कवट्ठि सिरिपालु महापहु ।
विज्जुवेय पिय तुक्करु जीवइ ।
होंतउ केण कम्म लंघिज्जइ । 5

12 १ B जाइवेय° २ MB उहु इह ३ MB णिसायरवेसैं ४ M दिहि ५ MB करु करि
६ MB बहुविणए ७ K मिलेप्पिणु ८ MB मारीय°

13 १ MB सिरिपालु २ MB रुठ ३ MBK विज्जवेय

12 B a तद्धिरय विधुवेगा 13 a पलसयलइ मांसखण्डानि 11 मयणवडाय सदनपताकानाम्नी

आदि पूर हरे पियवमु होममि
तं पितृपिबि गप मेहदु पूरे
आरप पुणु पिरदाडर तेरादि
कुमरिउ रमणमाबरमगित्तु

वामदि श्रीलादिगणु इममि ।
मामोहप कुमारि किम इर ।
मच्छर करमपादउ जसदि ।
मैमानंतु ताउ पुमिउउ ।

पता—अवमाहवि सुदैरि सुदैरिउ
अं मुबियगमिदिदि कुमरउ

वमि धदुउ नमि छे वि कुपदिउ ॥ 19
अं सुकहमदि अहकरमाउ ॥ १३ ॥

14

आय भित्तली विरदि ययउदि
वपद सपयणु पिरपिणु इरते
मो मभसियकपाहविग्याप
हरे पि छपेदि अंयिय पेक्कमि
हो वि देव बीमासु अ किआ
यम अंयिपिणु मरगयतोरणु
छदि कुवेयमिरित्तुदु विहियउ
अणुविणु पंठिदि यरमगुरिदि
मिह तदि कुदरि यमणु यवपिणु
अदवावरवच्छणु यरमोहे
विउ विवर्णु ईगययवसदु

आरं ममुदासण्य महासरि ।
पंणु वि पारतवह मामये ।
मणु अ कासु पि हाह मडाप ।
तं परं पुण्यवंधु हिर एकमि ।
वयवरकुमउ मवणु ररआह । 8
अंमह उणरि कपउ मिहसणु ।
रते अंययय संयिहियउ ।
त्रिह अउ पिण्यह धूगोपरिबदि ।
यय एवहपि वेसणु मीसेपिणु ।
मणिवि मासरिउ मेदेउ । 10
अणुत्यविणु मुसिय करकमउह ।

पता—आयसपुरिमयामेकजरि
तां एकलममिदि विरमउदु

हूलदविमोपसिहिलावहिर ।
येह आमिदि अयिय वयिउदु ॥ १४ ॥

v B इर ५ MBT उउवोवदिउ and glass in T अमोवउ.

14 १ M अणु अ मोर २ MB अंयिपिणु. ३ MB अंयिपिणु ४ MB अ ५ MB अरि.

14 8 a "अ मोर" वाणीव- 18 वयिउदु कपकावतीवेसियमाये देवपुरे वमणपउउ, एको मिम-
मिनी, एको वयिउदु वरणा यय अ सुमिउ.

15

णाणारयणफुरतपरिवह
जाव पक्खि घरणियलि परिट्टिउ
तसिउ खयर उट्टिउ णहि चचलु
पटिउ घरहि किंकरहि णियच्छिउ
पत्तहि एण वि दिट्ठउ जिणहरु
धुइ विरयंतहु दुण्णयसाउइ
जें दिट्ठे णट्ठइ सच्चिउ मलु
जें दिट्ठे कुदिट्ठि ओहट्ठइ
जें दिट्ठे उवसमु सपजइ
जें दिट्ठे दुग्गइगइ णासइ
सो दिट्ठउ दुक्कम्मणिवोरउ
थोत्तविन्तु कइमग्गपसिद्धउ

घत्ता--तुहुं माययप्पु तुहु सतियरु
जिण णिम्मय तेरी जेहिं तणु

मिद्धकूडजिणैणिलयममीयइ ।
ता पट्ठ अंगु धंलेणिणु उट्ठिउ ।
तट्ठ पयणहल्लगाउ गउ कंयलु ।
जाणवि मयणवईहि पयच्छिउ ।
दुक्कियदुक्कयल्लमग्गणिक्कयकरु । 6
विहडियाइं वट्ठकुलिसकयादइं ।
जें दिट्ठे उप्पज्जइ केउलु ।
जें दिट्ठे सम्मइ पगिवट्ठइ ।
जें दिट्ठे अप्पउ पय णजइ ।
जें दिट्ठे जगु मयलु वि दीसइ । 1)
देवदेउ अरहतु मडारउ ।
गुणवालगरहें पारद्धउ ।

तुहु णिरलंकारु वि हिययहरु ॥
इह तिहुयणि तेत्तिय जि अणु ॥१५॥

16

इय वदिवि जिणु गुणहिं विसिद्धउ
तां तहिं संपत्तउ खयरणरु
इह भोगउरि समुण्णयमाणउ
पिय कतवइ णाम तट्ठु मेहिणि
को होहि त्ति पणयतणयहि वरु

मुहंमडवि कुमारु उवविट्ठउ ।
आहासइ सिरसजोइयकरु ।
अणिलवेउ णामें रागराणउ ।
सुय भोयवइ भोयजलवाहिणि ।
पुच्छिउ तेण को वि जोईसरु । 6

15 १ MB °जिणमवण ° २ M लेविणुउ दिट्ठउ, B वलेविणु तुहिउ, ३ MB एतएण ते दिट्ठः
४ MB णिट्ठइ सच्चिय मलु ५ M °णिवारिउ ६ MB तिहुयणि कुड्ठु तेत्तिय

16 १ MB मुहमडवि २ MB उवविट्ठउ ३ MB तो

15 10 a दुग्गइगइ दुर्गतिगमनम्

16 1 a मुहमडवि रहमण्डपे 5 a पणय° प्रणता जेदयुक्ता वा

उत्तउं उच्चापयिणु णिज्जाणि
थेरीरुवुं रपवि दइव्वे
घत्ता—लुह लुह जि णिहिउत्तउ वालु तँहिं
झायंतु मंतु वलणिज्जियउ

एहु गहिह्लउ घल्लउ पिउवाणि ।
घत्तिउ सो तँहिं तेण जि भिच्चें । 10
हँरिकेउ पवणजवपुत्तु जहिं ॥
सव्वोसहिविज्जइ तज्जियउ ॥१७॥

18

तंथिरणेत्तइ पिंगलकेसइ
विज्जइ घंतउं ज जं जेहउं
पिव पिव ताहि भणंतिहि पीयउ
पुच्छइ पहु तुहुं हिरि सिरि दिहि महि
सिद्धी तुज्जु वीर परमत्थें
लद्धदिव्वविज्जासामत्थें
सो जायउ पुणरवि णवजोव्वणु
पभणइ सीहकेउ तुहुं सामिउ
जो कहिओ सि आसि रिसिवयणहिं
सुहु दुसज्जइ णिई णिरवज्जइ
घत्ता—धारह संवच्छर इह वसिउ
दइवेण लच्छि तुम्हारिसहं

दाढाभीसणरक्कसवेसँइ ।
उड्ढिवि अंजलि तं तं तेहउं ।
सुहडविच्चु ण वि किं पि वि भीयउ ।
कहइ देवि हउ सा सव्वोसहि ।
तौ पविलोइय तुड्ढावत्थें । 5
णियतणु पुसिय तेण णियहत्थें ।
ता पत्तउ खयरहिणवणंदणु ।
हउ तुह किंकर पेसणगामिउ ।
सो दिट्ठो सि देव णियँणयणहिं ।
जाणिओ सि मैँ सिद्धइ विज्जइ । 10

फलकालि अज्ज विज्जहि तसिउ ॥
उज्जसु णिरत्थु अम्हारिसहं ॥ १८ ॥

19

एम भणिवि गउ णहयर जावहिं
गालिय रयणि उग्गमिउ दिवायर
रणिण भवंतें तेण णिविट्ठी
उग्गामिवि करु भिउँहुवि णयणइं
चित्तइ णरवइ वैर होज्जउ तणु

पहर चयारि वि णिट्ठिय-तावहिं ।
संचल्लिउ वसुवालसहोयर ।
जरसीमंतिणि तरुतलि दिट्ठी ।
देइ ताहि जणवउ दुव्वयणइ ।
णउ माणुसु विणिवधु विणिद्धणु । 5

५MB °रुउ घरेवि ६ MB जहिं ७ MB ता हरिपवणजवपुत्तु तहिं

18 १ MB दाढी° २ MB °भीसइ MB वमियउ ४ MB ताए विलोइय ५ MB विहिं णय-
णहिं ६ MB णिव ७ M ससिद्धइ

19 १ MB भवती २ B जरु ३ MB भिउँदिवि ४ MB वरि होज्जइ ५ MB णिव्वंघउ णिद्धणु;
T विणिवधउ

19 4 a भिउँदु वि भुक्कुटीकृत्य 5 a तणु तृणम्; 6 विणिवधु विनिर्गतवन्धु, वन्धुरहित

हाँ किं जायेदि कसहिज्ज
 वा विरचादि विद्यमानु जेही
 ते हस्ये विरंगु पैरिमज्ज
 पुम्महिज्ज रायहु विज्जविद्य
 जे जिह हेदि हेव विज्जविद्य
 वाहु गवेसा येसिय चार्
 सीहचररररररररररररर
 विज्ज सोहा सुहा महाब

येरि भवेप्यिषु यह इतिहार ।
 विहिप कुमाण्ड लक्ष्मि ठेदी ।
 तिह पुष्पिह्वर तिह पुण्ड्र विह्वर ।
 माई बाललक्ष्मि लक्ष्मि ।
 तं तिह बरसिह्वर परिबलित ।
 बलि बलि कुबेरलक्ष्मि ।
 लक्ष्मि बलिह्वर मिह्वर बलिह्वर ।
 सोलह पल्लव बलिह्वर ।

मन्त्र—सो तेहि^१ मन्त्रि सुमहुरगिणिहि^२
 सो सो कुमार कि^३ विष्णुमहि

अप्यह यादवि रंजस्त्रिपिहि ।
गोस्त्रह वदरि गोस्त्रह वदरि ॥ १९ ॥ १९

20

एषां पथि जातुं न समार
 एष विदोष्येषु पथि जुषे
 कामि बन्ध किं एष पक्वै
 एष भवतु वि धरि विधमि
 बहुविधि वि एष कृतं
 कव्यु देव को नरवर भुज
 मिष कृति मयोतिहकत
 पक्वैव कामि नरवरि

राधाकर मोर्तिगु नं कुम्हार ।
 बहू क्यरि बहु य पकर ।
 राधबिजोर्द मिच्छमार्त ।
 हेबौरर्द सतिह संमिनि ।
 पुच्छिय किंकर बुद्धिमिर्दि ।
 बहूदि बहूदणु किं कुजर ।
 बसरसहिपादि केबहु ।
 पाप मर्दिकर बसखपदि ।

१ MB हा सिव्. ४ MB पर गडुड M करकम्प; B करकपड ५ MB वासिदि १ B सेव. ११ G के.
20 १ MB रि. १ BK बुक १ MBT वेहाई GE record १ वेहाई इति वायेवक-
वेवार्क; T वेहाई इति वायेवकवेवार्क ५ MBK वेवार्क ५ MB वाहाईवाहु G वावार्कवाहु

7 = विरवारिह इत्यस्मिन् ७ = पुष्यनक्षत्रे अतिशयम् ।। ६ चतुर्थवर्गस्य नक्षत्रेष्वपि इत्या-

20 ଓ ଏ ସବୁଟିମିଡ଼ି ବ୍ୟାପୀ (୧), କହଣେ ମୂଲ୍ୟ. ଡି ୫ ଅବକଳବାୟିକ ନାହାନ୍ତନାହିଁ.

जो आवइ णरु घट्टपरिक्खहि
उज्जलवण्णउ णवलायण्णउ
गयं अणुयर णियणियरायंतिउ
मेहविमाणसिहंरि जोएप्पिणु
थक्कु महाणयरहु वहि जाम्बहि
घत्ता—जरफसरसिरइ लंविथणिइ
हउं रीणी माइ किं पि चविउ

21

पंसिढिलचम्मछिरौलविचण्णी
णिववालहु केरउ सिरिमाणु
छुहत्तण्हापहखेए खीणउं
तिण्णि तिसाछुहपहसमणासइं
प्रॉसियाइं सुहपं रसैणिद्धइं
वसुवालहु जाइवि दरिसेसंमि
इय चिंतंतु जाम सो अच्छइ
ता बुद्धइ कुंडुज्जलदंतिइ
महु फलाइं किं मुहियइ भक्खहि
चवइ णरिंदु असच्चु ण जंपमि
जइ आवहि तुहु णयर महारउ
कवणु णयर को तुहु कें जायउ

घत्ता—त णिसुणिवि भासइ चक्कवइ
गुणपॉलु राउ तहु तणउ सुउ

सोलहखयरणरेसरसिक्खहि ।
सो परिणैसइ सोलह कण्णउ । 10
कुवरें अग्गइ गमणु जि चिंतिउ ।
भूयरमणु काणणु मेहेप्पिणु ।
अवर वि बुद्ध पराइय ताम्बहि ।
आवेप्पिणु थेरणियंविणिइ ॥
कुवलीहलपिडउल्लउ थविउ ॥ २० ॥ 15

तरुतलि तासु जि णियहि णिसण्णी ।
दिट्ठउ ओहंल्लिउं कमलाणु ।
अगु णिहालवि णिरु विद्धानं ।
दिण्णइं वोरइं अमयाभासइं । 5
वीयइं चीरंचलइं णिवद्धइं ।
णियपुरणंदणवणि पइरेसमि ।
णियबंधवसंजोउ णियच्छइ ।
देहि मोल्ल भासिउ पइसंतिइ ।
वयणु केम णिल्लज्ज णारिक्खहि ।
जं मग्गहि तं सयलु समप्पमि । 10
तो णिहणमि दालिहु तुहारउ ।
भणइ थेरि भो इहं किं आयउ ।

पुरि पुंडरिंकिणि दिण्णैरइ ॥
वसुपॉलहु भायरु हउं लहुउ ॥ २१ ॥

६ MB परिणइ सोलह णिवकण्णउ ७ MB गय णर णियणियरायह मतिउ, T अणुयर ८ MB °सिहइ
९ MB तेण चविउ

21 १ MB पसिढिल° २ MB °विराल° ३ MB ओहलउ, K ओहुल्लिउ ४ MB पासियाइ
५ MB रसविद्धइ ६ MB दसेसमि ७ MB किं इह ८ MB सक्कवइ ९ MB दिण्णइ १० MB गुणवालु
११ MB वसुवालहु

11 a °राय तिउ राजसमीपे 14 °कसर° पाण्डुरा

21 1 a °विचण्णी विरूपा, 6 b पइरेसमि वप्प्यामि

22

अग्नि विरिपैस्तु वामु आण्डिमि
मापाहरिबरेण परथाविड
शुद्धविधोपसंतापे पिण्डिड
अह भापरतु मिडमि ता जीवमि
मय्यर पुडुं मो तुडुं वर दीवड
वाट्टिमियड बंधिधि सरवड
परमाणेषु तुडुं वि कि वासहि
तेरड पुड महिवरुड अयोपड
पत्तिव दधिषु अक्षियड मि म भासहि
बाप छड सा मणिय महीसे
यत्ता—जवरतुकिभि पराविपपुडर
आणिय तेज वि मापाविधिप

सुरबीणाततिहि गारुडमि ।
ओरसिपहि असेमहि आण्डि ।
अण्डमि तुडुं तुडुं अण्डिड ।
ये सो पिण्डुड अमडरि पावमि ।
एव सहावे होसि अ रावड । ६
कवये वरवे तुडुं पुडुं रावड ।
अप्यावड वरणाड पवासहि ।
कहि तुडुं कहि सो तुगु सहावड ।
महु बाहिरुहि बाहि विभासहि ।
वासिड रोड पाविसंक्रुसि । 10

भासमी तडु गलकंदकड ।
अह पर पापरि मयवे वजिय ॥ २२ ॥

23

कहर कुमाड म मंडहड आमहि
करपवय कि पूडे आहपर
ता अरहड विमुडड कण्णर
मो मो विसुभि अरेसर पिण्डक
तत्तु पायकडहायमहीहड
एड अरुपणु विजाहरवर
जामे हड भुपवयकि पसिडी
वाहरणाहहि मिडिभि मण्डिड

हा हो कसिड मई करिपावहि ।
सम्पावय मुडि डुडुं पिण्डर ।
अचरं कोमकसामकवण्णर ।
पुण्यविदेहर वसुमर पुण्डक ।
तहि एयेंडरि वसु करिकरकड । ॥
समियह गेहिपि पूव तुहावर ।
सा अ विज्ज का महु वड सिडी ।
महु विजाडवपु विवडड ।

22 १ MB विरिपैस्तु २ MB अण्डिमि ३ MB पुडुं पुडुं वरवर दीवड ४ MB वि ५ MB
*दीवडु. ६ B वासहि. ७ MB *एण्डि

23 १ MB कसिपावहि; T करिपावहि २ MB करपवय ३ MB वि ४ MB पुड ५ MB
मयडरि पिण्डर ६ K मिडि.

22 10 अ बाप छड लवीमयण्डक ॥ ११ वजिय मण्डिड.

23 1 ६ करिपावहि करपवयि २ अ कहरवयव केतवेव करपेव

को वर ताण पुच्छिउ जइवर
अवर वि णिसुणि देव तुहु सुहहलु
तहि मेहउरइ मयगलगामिणि
ताहं पुत्ति वप्पिल महु पियसहि

तेण वि कहिउ तासुं चकेसर ।
कच्छावइवसुहहि रर्ययायलु । 10
कंपणु रगवइ घरिणि चिमाणिणि ।
णं गोमिणिंरमणिहि वल्लइ महि ।

घत्ता—अवलोयवि तुज्जंगुत्यलिय
दज्जइ विरहें वेहहलु किह

सा तोपं तिम्मइ कंचुलिय ॥
दवदहणं अहिणववेहि जिह ॥ २३ ॥

24

घरं गइयहि मुहणिगयवायइ
को वि आपसपुरिसु तहु मुदिय
वालवयसियाइ ण विकप्पिउ
मइ घीरिय सा ससिरैयरहिं
चामीयरपुरवरि हरिदमणहु
तहिं जि देसि अण्णेक वि सुंदरि
जणणहु पुच्छंतहु रयणुज्जलु
आणिउं पेच्छवि तेरउ कंबलु
सुहव तुज्जु विओएं पीडिय
कंदइ कणइ विमुकुत्तंसी

महुं अक्खिउ तहि तणियइ मायइ ।
पेच्छवि सुय मयणेण विमदिय ।
मज्जु वि ताइ संहियउं समप्पिउ ।
मेलावकु करमि सहु णाहिं ।
मयणवेयसीमतिणिंरमणहु । 5
मयणवइ सि दुहिय विज्जाहरि ।
जो जोइहिं मासिउ हयहिमदलु ।
वियलिउ तहि तरणिहिं मैणि दिहिवलु ।
चिंताचक्खें सा वि भमाडिय ।
दुकर जीवइ मज्जु वयंसी । 10

घत्ता—तं तेरउ पेम्मपरव्वसइ
सहिइत्यहु दीणइ मग्गियउ

उहामकामकीलणरसइ ॥
पगुरणु मइं वि आलिंगियउ ॥ २४ ॥

७ MB सुहु जि ८ MB रयणायलु ९ B गोमिणिहि णवल्लवइ महि

24 १ MB घर २ MB अमु. ३ MB विगप्पिउ ४ MB सहिउ ५ MB सिसिरयरहिं ६ M
तेरउ पेच्छवि, B तेरउ पुच्छवि ७ MB मण ८ MBT विमुक्कवयसी, Gp विमुक्का तेसीति पाठेऽप्ययमेवार्थ ,
Kp विमुक्कतसीति पाठेऽप्ययमेवार्थ , T विमुक्कतसीति पाठेऽप्ययमेवार्थ

12 ७ गो मि णि र म णि हि लक्ष्मीस्त्रिय 18 तोए प्रस्तेदेन.

24 3 ७ सहियउं स्वहृदयम् 4 a ससिरयरहिं चन्द्रसदृशेन, ७ मेलावकु मेलावकु 10 a
विमुक्कतसी विमुक्कतसा

25

तुम्हें पर्यायित तद्विषयकपरे
हरे अत्र पतिर्येति गय तेतहि
पर्यकुचकयसीपोहणबहु
सम्यजनयकाकेवृक्षयेर
तेज पञ्चसह सिमुमुमीसह
विज्ञाबाहे साहू मरि परसाह
विद्वज्जुहे भावत अविभुतक
सुप्यरिहरसमीवि विपसेतई
कंदरई विमुक्तसिरेसेई
पञ्चै परसिदिदि पुरि पश्यतुं
पत्ता—अरतइ गये गय जि मयापयत
मो बाहू परं पञ्चै विपु

26

गिरिसिरेदियकसयई विर्येतिह
विद्वी मउविषयि अकेली
विश्वेषेप तुह विर्ये सोसिय
अह तुह विर्येजोड व संभवि
विपमासपसि किसेपरि जावहि
मोयवहि केरी विपविमय
वचरं तार वर्येतिह विद्वज्जु
विमाड पुणु जाविडे मुमिसविचरं
सतिमसु सयछहि सुमरेप्यत

एव पर्येति करेवहपियरे ।
तेरी जयति अराहिव जेतहि ।
पर्येति पदिय गुणपौष्टिबिबिह ।
पुष्पिह सो भागमसु तुहारत ।
सत्तमि विधि बाहू मामासुह ।
पुरयसु सयसु जिंयत जि भाग ।
विद्वी मायति सोयविचंद्रक ।
हा सिरिपाके देव मनेतई ।
विद्वज्जु परियजसयजहासई ।
तुम्हें मिथिहीसि अराहिव अहवई ।
गजिपाड बाई वयदेववड ॥
अवचंद्रसु पदसु बाई वसु ॥ २५ ॥

अयपवासहि परं जोर्येतिह ।
पदपदसुमियासयवई ।
मरजमसोपु मई मनेमीसिय ।
तो विज्ञाहरपदु व संभवि ।
अप्यत मा अविमंमि विमावहि ।
रहयापिदि सति तहि जि समयव ।
असु वीसु विमि मयवि पश्यतु ।
जिअपुसुप्यत परं सयवमडे ।
सिअकुवविमविह करेवड ।

25 १ BK वरस १ MB विम १ MB तुम्यज ४ MB वि. ५ MB अमर हर १ MB
“विद्वज्जु” ५ MB विरिपाके देव पञ्चैतई MB विरि. १ MBK वरस १ M अयविमयवड; B
अव वय जि मयापयती

26. १ MB “विपमासपसि अयतिह १ MB मनेमीसिय.

25 B ४ वयपुवयव मया वय तुम्यजवि.

26. B ४ मनेमीसिय अयतिह B ४ विपापवि विमय. B ४ वरस अमर

घत्ता—अवरहुं कण्णहु अवरउ सहिउ अवरहु वि लेहु मुहइ सहिउ ॥ 10
भोयवइहि तुहु सहि गउरविय हक्कारी तुँह हउं पट्टविय ॥ १६ ॥

27

एम कहेप्पिणु गय सा सुदरि	हउ आरुढी सिरिसिहरुप्पणि ।	
मणिमयकुडलमडियकण्णउ	दिट्ठउ तहिं काणाणि छक्कण्णउ ।	
सत्तावीस जोयणवत्तउ	भूगोयरियउ पिय तुह रत्तउ ।	
असणिवेयस्त्रयरें वणि धित्तउ	मइ कारुण्णपण मृगणेत्तउ ।	
उच्चाइवि णियपुरवरु णीयउ	अप्पियाउ णरवाल्हु धीयउ ।	5
हउं पइं दोदियहइं जोयती	अच्छमि खगणयरेसु चरंती ।	
जाम ताम तेरी वित्थारें	कहिय वत्त हरिकेउकुमारें ।	
एत्थायइ तुहु मइ अवलोइउ	मयणें पच्चमु सरु मणि ढोइउ ।	
कच्चुइरुउ देव मइ धरियउ	पिडउल्लउ कुवलीहलमरियउ ।	
जाणिओ सिं ^१ नेमिसिक्खिबधें	कहिय पुंडरिंकिणि ^५ पुरच्चिधें ।	10

घत्ता—इय भरहणरेसरकिंकरहो जयरायहु तिजगमयंकरहो ॥
कह कइइ पुरधि सुलोयणिय वरकुदपुप्फद्रंताणिय ॥ २७ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाकइपुप्फयतविरइए
महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे विजाहरकुमारीधिरहोवणण
णाम यत्तीसमो परिच्छेओ मनत्तो ॥ ३२ ॥

॥ संधि ॥ ३२ ॥

१ MB हउ तुह

27 १ MB भिगणेतउ २ MB पंचमसरु ३ MB^१ नेमिसिणिवधें ४ MB^५ पुरि^० ५ MB^० विरहवणण

27 10 a नेमि सि कि ब धें नैमित्तिकानामादेशेन

XXXIII

सम्प्रोमदिसामासु तरुणे तेन पवासिर् ॥

कवर्त्त सुहावरपाह्णिपुत्रुत्तु विवासिर् ॥ भुवर्त्त ॥

।

संसाहिपविद्यासासमेन
वहामकामकामकामरहि
वेजिन् वि साहज्यालंकिपारि
गुह वेद महारत प्राप्येत्तु
विद्याहर पितुष्व हर्षति जेम
महु कंचुहवेत्तुकारिणीहि
परि वेरकड सुविचिचकुतु
तहि बोर्देहीत पीवरयणीत
कंचेतिवामयत्तुवमुयात
सा कंचायेहणु कियत्त तेन
वर्त्तपिहि तुरित्त्त जहंमर्त्तु

कोमलकरवत्तत्तपुत्रसम्भ ।
विदुविपर्त्त करत्त सुहावर्त्त ।
पराकरवत्त वपवर्त्त जेपिपारि । ४
गुह कंचपाणि सपयेव विदु ।
व करवत्त परं वि व मर्त्त वि तेम ।
वह कंचर वे सुहावर्त्तविहि ।
जावहि जाहुं तं सिद्धकुतु ।
मिळिहिहि विदु गुह पवरवीत । 10
कचलोपहि वेपवत्तमुयात ।
सा विदुवचक अतिव जहेव ।
वपवर्त्त विदुवत्तपंगवत्त ।

यथा—कंचित्त्त विदुवत्तपाहुं योवत्तपरं वपुत्तुर्त्त ॥

विजिन् वि वुत्तर्त्त तं सुहावर्त्तवि कचविदुर्त्त ॥ १ ॥

15

MB gave, at the commencement of this Samdhi the following stanza—

विदुवत्तुकरवत्तपाहुं कचवे विदुवत्तु विदुव ।

यथा एव योवत्तपरावत्तुपराही कचवि वत्तत्त (पवर) एव ॥ १ ॥

GK do not give it.

1 १ MB कचवेव, २ MB पवरवत्तु, ३ MB कचवर्त्तविहि व MBT वेरवत्त ५ MB

करवत्त

1. 4 व वृत्तविहि—वृत्तवत्तव योवत्त तरुव कचवे वेने मर्त्तवत्त सा एवत्त. ४ ५ विदु

विदु ४ ५ वदु वरवत्त 10 ५ योवत्तव एवत्त

2

भोयवइ भदारी विज्जुवेय
 मयणवइ समागय मयणलील
 अण्णाउ मणोहरवणियाउ
 जरसरिधुयसिरकेसासियाइ
 अवलोयवि तरुणिहिं तणिय रिद्धि
 छंडिविं जरत्तु जाणियमईइ
 थिय पुणु पच्छण्णी सा कुमारि
 वरइत्तु ताइ दंसणरयाहि
 ताइ वि वोह्लोविउ पिउ अणंगु
 भोयवइइ तर्हि पारन्दु हासु
 हलि असणिवेय ससि काइ कराहि

तर्हि दुक्की वप्पिल णिरुवमेय ।
 रइरमणिहि केरी गाइं कील ।
 कण्णाउ अट्ट अवइणियाउ ।
 कुंयिरिहिं थेरइं संभासियाइं । 5
 पुणु कंचुइ थिय विच्चंतवुंदि ।
 णियसिरि दक्खाविय सुहवईइ ।
 दुल्लक्खवारु होएवि थेरि ।
 भूमगें दरिसिउ तडिरयाहि ।
 मायाजराइ पच्छाइयगु ।
 उड्डुहु उप्परि पेम्माहिलासु । 10
 लहु णवजुवाणु घरु को वि वरहि ।

घत्ता—ता खयैरायसुर्याहि वंभु महेसरु अञ्चुउ ॥

णिरलंकारु जिणिंदु सालंकारहिं संथुउ ॥ २ ॥

3

रत्ताहराहिं भवसयविरत्तु
 विरहें तत्तहिं तवचरणतत्तु
 मज्झें खीणाहिं संखीणपाउ
 कुडिलालयाहिं अकुडिलमइल्लु
 णहचारकमियमदरदरीहिं
 अहिसेउ कयउ पुजापयारु

चंचलचित्तहिं गिरिधविरचित्तु ।
 मृगणेत्तहिं ध्वाणणिलीणेत्तु ।
 थद्धैयणीहिं णित्थिच्चभाउ ।
 जणमणसल्लिहिं णिम्मूकसल्ल । 5
 वंदिवि परमेसरु सुंदरीहिं ।
 ता वर्कगीउ णामें कुमारु ।

2 १ MB मणोरम° ६ MB कुमरिहिं ३ MB विसमतवुद्धि ४ MB छड्डिवि ५ MB सो जोइउ ६ B सस, K ससे ७ K खगराय° ८ B °धुयहिं

3 १ B omits from गिरि° down to मृगणेत्तहिं inclusive २ M मिग° ३ MB थद्ध° ४ MB णित्यद्ध° ५ MBK णिम्मूकु ६ MB धर्कगीउ

2 11 a ससि हे भगिनि

3 1 b गिरि य विर° अतिशयेन स्थिरम्

संपत्तयः सङ्गं विवर्णपरिणमज
 बाहरनपिसेसहि विष्णुरं
 ता इतिपि पत्तयः कंशूरैर
 रय मोपर्वति पुरि तिसिरिपत्तय
 सुय तासु पहावर जेहू पुत्र
 एवहि रवभिहि संजंतमाभि
 विरहय विवर्ण कोट्यमार्ग

येरेन येरि पुष्किय नयेन ।
 कि बावैर परमेवय गुरेण ।
 के के य वि हय विजावैर ।
 विवसय एवैहकंतासहाय ।
 सिद्धि नामे शुचमंजर्मे विवसु ।
 वहुवृषिणि सारंणु मसायि ।
 अरपदं कंपाविमर्मे संगु ।

10

प्रस्ता—मावेपिषु पवपव मिषर्मे मेसहू विष्णवर्मे ॥

वर्तुत कपडिगु पवकुमारहू विष्णवर्मे ॥ ३ ॥

15

५

पव फिहू केरहू बंजनाय
 किह होसह सिसुयकंनवुवगु
 सज्जीसहि सिक्काय सुपमि आसु
 करकंसे तहू बजेसपसु
 भावेसर सो विवनाइनीह
 तहू विवसहू कृमिगि मजसमेव
 सो बासह बंजमंजुरसु
 मज्जेसु धर मंजसु हकारि
 कि कण्णह कि वेसेन मज्ज
 ता वेज्ज वेज्ज पोसिठ विवेके
 नजिनीहकरणे छिगु जाम

मावविहू वज्जे वीपपय ।
 तं सिसुयमि कइवइता पवसु ।
 गुर पुमि पहावर विवमसु ।
 होसह सुपगीवर्ममवसु ।
 मज्जेस वसिदक सिद्धिहू ।
 मज्जवर एह सपरिउमिकेव ।
 सो कुंवर कववि ठवर्मे वसु ।
 ता पमज्ज वीर्मे पटोवयमि ।
 मज्जेस कपडि सामेव सज्ज ।
 जारा सव हो मज्जिठ विवेक ।
 मज्जेमोडि पवट्टी तासु ताम ।

5

10

* M कपय MBK सिविह एव १ MB एविपह १ MB सिह ११ MB वेरहू.

4. १ M सिष्णुगु वज्जुगु १ MBK वीणा १ MB पववहू ४ MB वीव. ५ MB वज्जुगु वज्जु १ M सिष्णु सिष्णु, G वेरहू वेरहू but gloom वेर वेर * MB सिविह ४ MB कपय. ५ MB मज्जेमोडि सिद्धि.

७ ६ वरहू वज्जिमेव. १४ मिषर्मे वेकेन १५ वहुपव कपडिगु वज्जुमय ज्जरा सिह.

4 ७ ६ वरहू वज्जिमेव कपडिगुमिज्जरा वज्जु. ७ ६ वज्जु वज्जु. १० ६ वज्जु वज्जु वज्जु. ११ ६ वज्जु वज्जु वज्जु.

गड मंदिरं तणुरुहु सरलगीउ

परमेष्टिघरंगणसठिण

केण वि कच्छुण्णा घाहि महिय

अवल्लोयवि सुट्टु पँहट्टु ताउ ।

परकज्जारभुक्कठिण ।

इय मतिहि वत्त पवित्त कहिय ।

घत्ता--विरइयकवडजराण ढकियणवचयकायहो ॥

15

चल्लिउ तुरिउ णरिंदु पासु तासु जावैयहो ॥ ४ ॥

5

छुड छुड करि चोइउ दाणवासु

अचइण्णउ जाम खगिंदु तिसिर

ता मायाविइ वचणमईइ

पियजीवधण्णरफण्णमईइ

पल्लट्टउ तिसिर अपेच्छमाणु

एत्तहि मुद्धइ अहिणवचरासु

करसाहाणिहियइ सुदियाइ

गय पत्त सुहावइ अवर फा वि

जिणहर छजीवदयाणिवासु ।

सुँहिसुहदसणु पाणीयतिसिर ।

णिउ सुंदरु णावइ मउ मईइ ।

मणिवाविहि णिहिउ सुहावईइ ।

जलहरचहजववाहियविमाणु ।

5

तडिवेयायारु णरेसरासु ।

कउ माणवणयणविमईहियाइ ।

णामेण सुहोदय जेत्यु वावि ।

घत्ता--णवइदीवरणेत्त रायहंससहवासिणि ॥

पाणियवत्यभियत्य सोहइ वाविचिलासिणि ॥ ५ ॥

10

6

कण्णउ हक्कारइ जाम तेत्थु

तामेक्क वि तरुणि ण दिट्ठु ताइ

एत्तहि रायं उद्दामतेय

जलकीलहि देंतिउ कमलहत्यु ।

गइयउ सरु परियाणिउं इमाइ ।

अप्पाणउं दिट्ठउ विज्जुवेय ।

१० MB मदिर तणुरुहु ११ MB पँहिट्टु १२ MB जामायहो

5 १ MB °दयाववासु, T ° दयाणुवासु ३ B अइवण्णउ ३ M सुहसुहदसणपीणीय°, B सुहिमुह-
पाणीय° ४ MB °धम्म° ५ MB° विमुहियाइ

10 जांवायहो जामासु .

5 1 a दाणवासु मदवर्ष, b छजीवदयाणिवासु पत्तीयनिकायेपु दयाया निवास 2 b °तिसिर सत्तुण्ण 3 b मउ मृग, मईइ मृगया 5 b जलहरचह° आकाशम् 6 b तडिवेयायारु विमुद्देगरुपम् 7 a करसाहा° अणुली

अवशिष्टं समाह्वयं गुणीतं
 तौ तदि अवमरि तदि अवशिष्टं
 धरमुसिद्धिर्धर्मगामिणी
 जलरमणकजसंकेतपात्र
 मसिद्धिर्धर्मगामिणी
 तदि गय इति विदितं समीपितुम्
 कल्याणपति मण्डलं धर्मि
 पदं जातिवि महु राशिपार

विष्णुवर्णनं विदितं मनु गीत ।
 किं मुद्रा इत्यत्र केचित्पात्र । ६
 सुमुद्रावर्णं मह सामिनी ।
 इह जगदधीयत पारपात्र ।
 अन्तर्द्वि कल्प्य जहि गपात्र ।
 अवद वि वरिष्ठ वज्रपति गुम्भ ।
 असमजस्तु मनु परं ते वरिष्ठि । १०
 वज्रपतिमाह्वयसमाधिपार ।

पद्या—अथ वि वरिष्ठ वरिष्ठं तदि मनु वरिष्ठि ।

मंगुरावशिष्टं जाह तुह वरिष्ठ पदादि । १ ।

७

ओ आ जाह तुह तुह मसाहि
 विदितस्तु मनु महागुमात्र
 सविमात्रविदितविदितविदित
 ससहोपरिष्ठ विदितमात्र
 वेपर तदि पठर वि वरिष्ठ मनु
 अन्तर्द्वि मनुविदितविदित
 सुपरिद्वि विदितविदितविदित
 वज्रपतिविदितविदितविदित
 विदित मुद्रा कल्प वि पुरिसरवतु
 जं वज्रपति गुणवत्त साह

विष्णुवर्णनं विदितं मनु गीत ।
 वेदविदितं विदितं वरिष्ठपत्र ।
 पदं तदि पठर अवशिष्टे ।
 पदं ओ वरिष्ठ वरिष्ठमात्र ।
 मनु मनु वि वरिष्ठि सवत् वि वरिष्ठि । ६
 तावन्विदितं तदि वज्रपतिविदित ।
 गय वरिष्ठ वरिष्ठपत्र ।
 मनु विदितं अन्तर्द्वि वेपरिष्ठि ।
 सवत् वरिष्ठ मासमि वरिष्ठपत्र ।
 गमीह वीर रिष्ठ सवत्पात्र । १०

६ १ MB तौ २ MB "विदितं" ३ M तुहवर्णं ४ MB "अन्तर्द्वि" ५ MB तुह
 १ MB मनु ६ M वरिष्ठ, B वरिष्ठ

७ १ M वज्रपति B वज्रपति T वज्रपति २ MB मुद्रा

६ ४ अ अवशिष्टं समाह्वयं गुणीतं, समाह्वयं गुणीतं समाह्वयं गुणीतं तदि ० = "वि-
 वरिष्ठं" वा

७ १ २ वरिष्ठपत्रं वरिष्ठपत्रं ४ ६ वरिष्ठपत्रं मनु तदि विदितं विदितं, ० ६ वरिष्ठपत्रं
 वरिष्ठपत्रं ७ ० वरिष्ठपत्रं वरिष्ठपत्रं वरिष्ठपत्रं वरिष्ठपत्रं वरिष्ठपत्रं वरिष्ठपत्रं वरिष्ठपत्रं
 वरिष्ठपत्रं

जो अगाइ होसैइ चक्रणाहु

णिच्छउ सो पट्टु सिरिपाँलु पट्टु ।

घत्ता—धम्मोरुठगुणगि जो आरुढउ भावइ ॥

इहु सो घम्महवाणु णारिसरीरइं तावइ ॥ ७ ॥

8

ता धाइय भइ आहवसमत्थ
लद्धउ वइरिउ कहिं जाइ अल्लु
इय भणिवि पवेठिउ खेयरेहिं
ण सिहरि पँलविरजलहरेहिं
ण चंदणतरुवर विसहरेहिं
जोएप्पिणु सरवर सारणालु
कण्णउ गयाउ कीलवि समत्त
अवलोयवि रिउसेणावियारु
णउ दिट्ठु तेहि सो तेत्थु केम

हणु हणु भणंत हलमुसलहत्य ।
कहिं होइ राउ कहिं करइ रज्जु ।
ण पिउ पुण्णालिहि उत्तरेहिं ।
ण दिवसु दिवसणाहाकरेहिं ।
हम्मइ ण जाम फुरियाहरेहिं ।
हंसीमुहचुंभिय सिसु मरालु ।
सा पियचयंसि भणिवावि पत्त ।
यालइ अहसणु फिउ कुमार ।
अण्णणिपहिं सव्वणहु जेम ।

5

घत्ता—उच्चाइवि परिहत्य अहिणवकंचणवण्णइ ॥

10

पुव्वुत्तइ जिणगेहि वरु सणिहियउ कण्णइ ॥ ८ ॥

9

करिणि व्व कहिं वि कीलीवणासु ।
णियमुहुओहामियचदकति
घरणीसु ताइ मुदाइ रहिउ

गय सुंदरि णिययणिहेलणासु ।
पेच्छतउ फलिहसिलायलंति ।
ण कामु कामकामिणिहि माहिउ ।

३ MB होइइ ४ MB सिरिवालु ५ M धम्मोरुठ गुणगे,

8 १ MB आहवि समत्थ २ MB पलविय° ३ MBK दिवसणाहइ ४ B अण्णणिइ हिंस व
एहु जाम ५ B पुव्वत्तइ

9 १ MB णियमुणिहेलणासु, २ MB णियुसुहु ओह°

12 धम्मा रुठ गुण गि घनुप्यारुढस्य चडितस्य गुणस्य धोरस्य अग्नेतनभागे

8 10 परिहत्यु क्षीघ्रम्

अवच्छेदाय वयिष्ठ साकण्य
 इह सा वर्तिरु गुणैवाकृतवत्
 ओ गिह्वर देवेहि धरिणि देणु
 न पठर समुत्पन्न धूमकेत
 त्रिवरंगबोध रापराहिपत्र
 त्रिदश रिदश उदिरावहकमीणि
 काकनचगुहहि काकाहिवाहि

परिवापिर्न उज्ज्वलमाकण्य ।
 ओ पण्यपीहि संजयिपण्य । 6
 ओ पुत्तिपसंज्ञककामधेयु ।
 इय विमिहि धारुत धूमकेत ।
 उनिवर्त्तत गहर्न नारं वात ।
 काकाहृदि वधियपीकमीणि ।
 धिस्त इरिवाहिधिसेद्धेहि । 10

यथा—वाहिर्नदरवारुमि कवकाकेव विरिञ्चिड ॥

सेतहि वाहु विसण्णु काममुपेग पुत्तिड ॥ ९ ॥

10

वसिरावपुरवरि हेमवम्भु
 त्रिह वरिड सेलि त्रिह वरिड वात
 त्रिह विर वरवह कण्वत्त ह ति
 त्रिह धिमुनिवि उदिरावपुरेसु
 नरं उनिवत्त कि आपसपुरिडु
 तावेत्तहि रासुवर्द्धकण्य
 वरुडरि विमिहि तमजाकमीणि
 ताडिड कामे पुणु मोप्पारेव
 नर मिह्वर सुर्धे सज्जकेण

तहु मिहहि भासिड तासु वम्भु ।
 त्रिह विम्वर पत्तड धूमकेत ।
 त्रिह केव वि व मुनिव पुव वि वरि ।
 किंकरुं कुरत किं विपत्त रासु ।
 कि नारंविड महु हासु हरिडु । 6
 वयिष्ठमेवपणं कृत्तव्य ।
 वेपान्तर पहु विमिहत्त सुकि ।
 पुण्यवाहिड वर धिप्पर वरेव ।
 नर वरवह नर रक्कसकुम्भ ।

यथा—धिस्तड ककाणि उरुति तदि वि परिहित वरिचत्तु ॥

त्रिवपयपोमरवाहु जणि वि आपत्त सीपत्तु ॥ १० ॥

10

१ MB पुनर्यत २ B "पण्य" ३ B वरवाहि ४ B उनिवत्त ५ MB वाहिनि MB विमिहि
 10. १ B वि वरिचत्त २ MB "कण्वत्त".

७ ४ ५ कावद न एवमेव ७ ६ "पीकमीणि" मन्त्रे. 11 वाहि न" कानुरवत्

10 10 नर वि वरवह नरी

11

जिणु सुमरतह सीहु वि ण खाइ
 असिघट्टणहुयवहुगमियजालि
 जिणु सुमरतह रिउ थरहरति
 करइयलगलियमयजलपवाहु
 घावंतु एतु गिरिवरसमाणु
 रयपिंजरु कुंजरघरु वि खलइ
 घणालियरुहिर् करसडियणास
 खँयखासजलोयरजणियसोय
 णित्याहसँलिलि सरहयदियति
 माणिक्ककिरणमालाविचिसि
 जिणु सुमरतह जलयररउहि
 जिणु सुमरतह भगलइ हँति

विसदुम्महु फणि संमुहु ण थाइ ।
 ओवडियसुहडसगामकालि ।
 धीरं वि पच्छाउहु ओसरति ।
 गुमुगुमुगुमतचल्लमहुयरोहु ।
 उरि दंतु वेहु वद्धयविसाणु । 5
 जिणसुमरणंकुसंकुसिउ वलइ ।
 अविणट्टकट्टकुट्टाविसेस ।
 जिणु सुमरतहु णासति रोय ।
 करिमयरमच्छपुच्छुच्छलति ।
 फल्लोलंदोलियजाणवत्ति । 10
 बुद्धिजइ ण कयाइ वि समुहि ।
 पर्यसंखलवलयइ परियँलंति ।

घत्ता--सच्चु वि मिच्च हवंति विट्ठि वि भल्लउ वासरु ॥

जिणु सुमरतह होइ खगु वि कमलु सकेसरु ॥ ११ ॥

12

णीसरिउ हुयासहु अहयपिंहु
 आसीणु सिलायलि रायहसु
 अइवल्लु णामे पुरि वसइ तेत्थु
 णं वम्महरायहु तणिय सेण
 मुहकुहरुगायफरुसक्खरेण
 आगय पिउवणहु तहि णिभाणु
 चित्तिउ अणाइ जयलच्छिगेहु

सोहइ णिउ णं सोवण्णपिंहु ।
 णं भिसिणीदलयलि रायहसु ।
 विज्जाहरु विज्जावलसमत्थु ।
 तहु घरिणि कुसीलिणि चित्तसेण ।
 सा सइरिणि णिसि गरहिय वरेण । 5
 दिट्ठउ सिहि मुहणिग्गच्छमाणु ।
 ण पलित्तउ पयहु तणउ देहु ।

11 १ M सुमरतहु, B सुमिरतहु २ MB वीर ३ MB पच्छामुहु ४ MB °वरमहु° ५ MB लोहयदउ ६ MB रुहि ७ MB खरखास°, G खरखाय° ८ MB °सलिलसरसय° ९ MB परिसखल° १० MB परिगलति

11 2 a असीति—असीनां खड्गानां घटनात्परस्परसघटनात् उद्गमिता निर्गता ज्वाला यत्र 8 a अयं क्षयरोगः 9 a "सरहयं" जलेन हता 12 b पयसंखलं पदे शुखला

ये तं होयवर्त कारयेज
 इय मयिभि महिष कोऊहयेज
 बर वृद्धी आवाचारिण्य
 भीसरिभि निरुण्णीभिबहुपासि
 बरवत्तु मेहिभिचरणयसबडित
 यावेति कंति बयार्तु निवेज

काई वे संवंधविपारयेज ।
 ठहि सा पबिदु बरवणयेज ।
 सज्जोसहिरसहयवीरियेज ।
 बरवण्यत ता पिउवणमिवासि ।
 इहं मेवुसि पिमुयेहि बडित ।
 ता बरव भुसि संभरिभि हेरे ।

10

घटा—हडाएहि विपर्वणु बीहुं घरेपियु मच्छमि ॥

असंहसजमलेयेज मयिभ्य केसिउ मच्छमि ॥ ११ ॥

15

13

ता महिसाररुसंवेमलेज
 वरविदु सहरिभि अमयर्गति
 मा तेज न वृद्धी कैर वि केम
 बरिप छोयण महासरुहि
 हुयारिभिबरित विपच्छमायु
 मिमोभ्यसीनु को संपवार
 मयु वीसिउ रावर्वसार कासु
 बसनेज न किउ को जगि निरत्यु

येकाविप रंधव बरवयेज ।
 हुयर्वदि हुसहि विदत्यर्गति ।
 मयाविभि वेस जंटेज केम ।
 इयउ सिहि मीपयु सुहमरुहि ।
 पविपय्यह रिउमहिकहकिसानु ।
 पारडित को सेविउ इपार ।
 सयरायु वि कं र्थ उहह हुपासु ।
 असर्वयं वेविउ को न यत्यु ।

8

घटा—अविर्वणित जाटीहि महिपसि को वि न बरव ॥

अरुपुण्णर्गनेहि वेकैउ जणु मिह बरव ॥ १२ ॥

10

इय महापुराजे तिमडिमहायु रसगुणासंकार महाकरपुण्णवंतविरहय
 महामध्यमहायुमाभिय महाकण्य विजाहरीमायावर्धनौ
 नाम तेसीसमा परिच्छेर्मा समसो ॥ १३ ॥
 ॥ संधि ॥ १३ ॥

12. १ MB सि १ T वेज १ MB वीउ ५ MB अरुपुण्णवर्धन

13. १ MB १ र्गनेहि, १ MB हुयर्वदि विदत्यर्गति, १ MB वदि, ५ MB सिने
 ५ MB विमोभ्यसीनु, १ MB कासु ५ M वनाय MB सि १ MB वसि को, १ MB अविर्वणित
 ११ MB वेरिउ

12. 1 न बरव वि हुयुवण्यसि, 7 न न 1१ अवा 10 अवापारिदय अवा

१३ १ न विजाहरीमा विमलान्मते १ न वेव वेव, 7 नासिउ कावना, 10 बरव
 मयवण्यवर्धनौ.

XXXIV

सा कवडपईवइय आलुचियवय गियपियभवणि पइट्टी ॥
कामिणिमणहारें तहिं जि कुमारें कण्णपिसल्लिय दिट्टी ॥ धुवकं ॥

1

जियसत्तु विमलमइ देविसुय
विज्जासंसाहणि गहगहिय
जियरिउणा सुदरु पत्थियउ
तहु तहु तहु यधुं देहि सूर्य
ता तरुणें मतवसिल्लियहि
अवरोप्परु हियवउं दोइयउं
ईसावसेण रुसिवि वरहो
बुज्झिउ णरणाहें चक्कवइ

कमलवइ णाम सोहग्गजुय ।
आणिय पिउवणु ससयणि महिय ।
इह तिहुयणि जो जो दुत्थियउ । 5
महु तणयहि करहि सणाहकिय ।
पिसउल्लउ पुसिउ पिसल्लियहि ।
दोहिं वि अहिलासैं जोइयउं ।
गय झ त्ति सुहावइ गियघरहो ।
आणिउ गियमैवणहु भुवणवइ ।

घच्चा—पुज्झिवि मणिहारहिं जणियवियारहिं कण्णंतेउरि णिहियउ ॥
तेहिं वि पूर्य मुद्धहिं ऊँवालुद्धहिं गियगियमणि संणिहियउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza.—

तीव्राणद्विसेपु वन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना
सतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभो सेवया ।
यस्याचारपद वदन्ति कवय सौजन्यसरयास्पद
सौज्य श्रीभरतो जयत्यनुपम काले कलौ साप्रतम् ॥

GK do not give it

1 १ MB °पइवइय २ MB यधउ ३ MB सिय ४ MB किय ५ MB °भुवणहु ६ MB
पिय ७ MB सुद्धु विमुद्धहिं, B सुद्धुविमुद्धहिं

1 1 °पइवइय पतिव्रता, आलुचियवय त्यक्कवता 0 a सुय श्री 7 ७ पिसल्लियहि
पिशाचगृहीताया

2

समुत्तमं यथितं मा चंद्रमुह
 तप वि तद् वपुः पद्मवत्
 हे माम ताम मां मेदि तदि
 तद् मिथिविधत्ति क्वत्तुंरिधि
 त विमुक्तिं सत्त्वमगु मुक्तिं
 त्त्वर क्वत्ति बहुमाप्तरि
 ता सुद क्वत्तिगु भविष्येह
 भित्ति विवर वितर सोसियवपु
 जगु आपद् क्वत्ति नगाविर
 ता सुद विविधपय तव किह

कीर विपादकत्ता तुह ।
 द्विपत्तां वंभुविमार्गः ।
 वसुधां तु सहायक वमर अर्हि ।
 सुत्तरवपुर्वत्तरंगविधि ।
 त्रिपत्तुं लैक्षिकमगु भविः । 5
 क्वत्तु जाहि पुंरुक्तिविधयः ।
 यत्त वारितेगु वारित्वरवे ।
 यत्त विमलकवत्तुमत्तु ।
 जा विद्वि कमलवाविहि विवर ।
 विष्णवे विद्याविधिर्विद्वि । 10

पत्ता—हर्मिषेहृद्गुह्यं सरयः नगाव पापहृत्कार दीवतः ।

यवसत्तुवत्तुवि पगकोटादिति अर्हि भवत्तु वार्त्तावत्तु । २ ।

3

विद्यावरेण आसासिवत्
 वार्त्तावित्ति वेव भवेत्तु वपु
 इय मणिवि वेववाविहि सरिषा
 नरमविहृद्विर्त्तुवत्तुविहि
 पपाविहृद्वि इक्षिवावर्त्तु
 पिद जावि माळः ताविपत्तु
 वक्त्तुंरिधितु विद्वेत्तुवत्तु

तदि आपवि पद्म संमाविपत्तु ।
 मा वीहृदि भवेति विविध वपु ।
 गत्त विद्वि वेव पाविपमर्त्तु ।
 अनुवृत्ति ता वि आपविहृदि । 5
 लौमिय क्वत्ता सुदावर्त्तु ।
 तत्ताविहृद्वि विद्वत्तुविपत्तु ।
 आपत्त सत्तु सत्तुवत्तु ।

2. 1 B वपुः २ MB विवत्तु ३ M वक्त्तुवत्तु ४ MB वृत्तु ५ MB वक्त्ति वे ६ M
 इवि

3 १ MB आपत्त २ MB वीहृदि ३ वीहृदि ४ MB इवि व वक्त्ति ५ MB विवत्तुवत्तु
 T विद्वत्तुवत्तु

2. 11 वाचसपत्तु वीहृद्वि वीहृद्वि वीहृद्वि वीहृद्वि

3 4 व वीहृद्वि—वक्त्ति वेव विद्वत्तु वीहृद्वि वीहृद्वि वीहृद्वि

7 विद्वत्तुवत्तु विद्वत्तु वीहृद्वि वीहृद्वि वीहृद्वि वीहृद्वि

छण्णइ कण्णइ बोह्णवियउ
किं पाविज्जइ घर रमणुं पइं
एयहु रिउ दुज्जय अत्थि जइ
त णिसुणिवि सो पल्लु णरु
सयणह सवंधु समासियउ
सइ पुहइणरिंदु परिग्गहिउ

तुहु केण वप्प वेहावियई ।
जजाहि तुरिउ भणियो सि मइं ।
मा करहि चिचु अहिमाणमइ । 10
णिविसेण पराइउ णिययघरु ।
णैइवाविजलोहउ सोसियउ ।
हउं पत्थु कुमारिइ संपंहिई ।

घत्ता—तहि तणियइ मौलिइ चलभसलौलिइ पट्टु छुह तणह ण पावइ ॥

जसु घरिणि सुहावइ हियवउ रावइ तासु दुक्खु कैहि आवइ ॥ ३ ॥ 15

4

तं णिसुणिवि सयणहिं बोह्लियउ
सिरिपाल कण्णतरुवरइहि
एत्तहि णदणवणि सडियउ
सुमरंतु सहायहु दुज्जियइ
चित्तइ कुमार सुणिमणमहहु
पैइरत्तइ पुच्चवहुल्लियइ
लक्खणपमाणमाणे मवियउ

कण्णइ तिजगु वि उच्छल्लियउ ।
सामत्थ पयुट्टु सुहावइहि ।
णरणाहु णरहु उक्कंटियउ ।
हउ कुसुमहिं मायाखुज्जियइ ।
मग्गण पढंति किं वम्महहु । 5
णिहंसणरुखु समुल्लियइ ।
कण्णासरूउ तहु णिम्मवियउ ।

६ MB add after this the घत्ता couplet —

घत्ता—सरतावयिमीसें गिमाविसें कच्छवमच्छवहइ ॥

असिलट्टि व दीसइ किं किर सीसइ णिणाणिय णइ हई ॥ ३ ॥

and number the कडवक as 8 and subsequent कडवक as 4 etc, upto 13 ७ MB रमण
८ M णिवसेण, B णिमिमेण ९ MB णयवावि° १० MB सपिहिउ ११ MB add after this the
following three lines इणिणुलउ वइइ ससकु जलु, सज्जणइ मथिबहु तेण मलु, सुहससहर मिगणयणइ
वइइ, अघत्त जगहि पोढिम वइइ; कय उत्तिम जासु वियक्खणिय, जहिं दीसइ तहिं जि सलक्खणिय १२ MB
मालइ, K मालिइ but corrects it to मालइ १३ MBK °भसलालइ १४ M किं

4 १ MB सिरिवाल २ MB पइरत्तइ कामगहिल्लियइ, ता पइसिवि पुच्चवहुल्लियइ

4 8 ७ णरहु वारियेणस्य 4 a दुज्जियइ केनाप्यपराजित 0 a पुच्चवहुल्लियइ सुखावत्ता,
७ णिइ स ण रुखु निदर्शनरूपम्; ससु लियइ समायुक्कया

बितर बिताइलु भुवचकार
महु केप कुमारिदुनु डबिउ

संविपसंसपसंमूहमर ।
विणु मुहर पुणु किह संमविउ ।

यत्ता—तै महुं पिपपिणु मरिम मन्पिणु मूमहमवणै भग्मा ॥
पिपगोतविवापर विणि वि भापर विओहर तहु सग्मा ॥ ५ ॥

10

5

एकहि मिमिभिदि वा हंसवर
अर होनि होनु न चहर मचर
एकहि लरपिदि कि बिभिज जण
इय बिमिदि एणु पारमियउ
सिरिभूमवपहरिवाहवई
अंतरि गदपारउ मार यिउ
मिउतणु पिहउर बंधवई
इय ममिदि मिचारिप के बि वर
कप्यपउरपहु लवई यउ
रौय ठहि बाढ विपपियउ

एकहि किलकडिपदि हो ममर ।
मर लवउ बिउउ कुसुममर ।
मउकरवमहि मारनि यव ।
सुपचउणु बिहि वि मिउंमियउ ।
अंधरणउ कडिपपहरवई ।
बिहि पममिदिनु रउहु किउ ।
कि पुम इह मचउई मरिमवई ।
उरुपपकरवाउकउकउर ।
विपमापाहुपरिउगुंगसिउ ।
लवयाहरि सिदिदे समपियउ ।

5

10

यत्ता—सुवचममयकोपिदि मजिउं कुमापिदि एर काहु कि मारप ॥
ता पीवरचपियर अरुवागमियर बिहसिदि वल विवेरव ॥ ५ ॥

6

एर मार लामिनी महुंमुवेदि कुसिपा
एय कयमईपउणु अंधरण मारिपा
हारवारमूसिपोगि हारउंमुवेदिपा

पुंरुंयिपिनीपुटीचउहिबस्त पुसिपा ।
मूपसिउ मुउ मूमिगेवरी विवाविपा ।
अपय न भाउमाउअविमोपउतिपा ।

१ M "विमिन्पव", B "विमिन्पव", T "विमिन्प" v MB "कउ ५ B रिमाहरी

5 १ MB "एरुम कयमिन्पव" २ MB "कयमिन्पव" ३ M "कुपिउ हुंमिदि
B "कुपिउ हुंमिदि" v B "उपहु तहु वाह कयमिन्प" ५ B "वर ५ MB कयमिन्पव

6 १ MB "पुहसिपिनी" २ MB "मुपिपव

5, 6 के एउहु कयमिन्पव, 10 के सिमि व मारवा ॥ कयमिन्पव व मारवा मारि वरु कयमिन्पव विवाविपा.

ताम जक्खदेवण वड्ढिमा वियारिया लच्छिवाल चक्खवट्ठि एस णो कुमारिया ।
 खुज्जिया वि खेयरी सुहावई सुहंकारी ता रइप्पहाइ भासिया इणं मणोहरी । 5
 दक्खवेहि वल्लह चिल्लासभासियाण संगह सुहवं समौणिणी अदीणमाणणिग्गहं ।
 तं मुणेवि सुंदरीइ एणलच्छणाणणो रूवि वम्महो गहीररायरिद्धिमाणणो ।
 मंतिऊण चित्तिऊण दिव्वमतसगम दूसिऊण णासिऊण णारिरूचविज्जमं ।
 दसिथो बहुल्लियाण पुडरिक्किणीवई त पलोइऊण ताण वट्ठिया मणे रई ।
 का वि कामसल्लिया महीयले णिवाइया का वि णीससंतिया वयसियाहिं जोइया ।
 पैङ्गुरतसोणिया सहीयणस्स लज्जिया का वि मुच्छिया चलतचामरेहिं विज्जिया ।

वत्ता—इय कण्णतेउरु पेच्छंतउ वरु मयणें उप्पहि थवियउ ॥

भिच्चहि जाएप्पिणु पणउ करेप्पिणु पुररायहु विण्णावियउ ॥ ६ ॥

7

जा तरुणी वाला लइ थविय सा अम्हह खुज्जई दक्खविय ।
 सा कण्ण ण होइ मरालगइ सिरिवालु णाम रायाहिवइ ।
 ता खयरकुमार वीरपवर धाइय अणंत इच्छियंसवर ।
 असिकणयकौतविष्णुरियदिस वग्गिय मग्गियसंगाममिस ।
 सुंदरु पेक्खिवि उवसंत किह जिणणाहु णिहालवि भव्व जिह । 5
 तहिं समइ खरिगिदु पराइयउ जामाउ सिणेहें^x जोइयउ ।
 जाणिउ परमेसर चक्खवइ संतोसिउ विज्जाहरणिवइ ।
 समाणिउ ककणकुडलेहिं घरहारदोरमणिउज्जलेहिं ।
 तियसाहवजयसिरिलंपडेहिं हरिवाहणधूमवेयभडेहिं ।
 चित्तिउ दोहिं पि समेहलहिं अम्हहिं किं कियउ समेहलहिं । 10

३ MB विलासहासगह ४ M समाणमाणिणीए माणणिग्गह, T अदीण ५ MBK मुणेवि ६ MB रूव°
 ७ MBK add का वि before this

7 १ MB जक्खइ २ MB इच्छियसमर ३ MB समाइयउ. ४ M सणेहें जोइयउ; B सणेहें
 पुज्जियउ ५ MB तियसाहिव°

6 ७ b अदीण° प्रचुर 7 a एणलच्छणाणणो चन्द्रमुख ।

7 9 a तियसाहिव° त्रिदशसग्राम 10 a समेहलहिं उपशमवाष्ठास्वीकारेण युष्माभ्याम्;
 b समेहलहिं मेखलासहिताभ्याम्

यथा—यिउ कल्याणं मायायां मिउ रीव यउ संघारिउ ॥

रौव विउ यथागिणि गुणगणु कृमिणि जगउ पर वघारिउ ॥ ७ ॥

8

गयदिनि अं भयदिं कमरियउ

कायादिं लोचनं पुच्छियउ

पुच्छयि पंजायउ पुच्छिं विह

मं विपुच्छिं तेज ममायियउ

गउ विजायउ विजयविहउ

सुरसुतु विजयविहं हउवि निउ

गुणगणु रमायणु जतिउ

किं पणमि निहउपमउदिउ

सुद्धं तामागु व जाणममि

जगगणु गयणु विहउयउ

तं केव वि कहि मि व मंजहिउ ।

गुहं मदिमाया विपच्छियउ ।

विहउ वमसु वि वंजहि निह ।

वामायायउ विजयियउ ।

विहमि रमिप नउ सुहउ ।

मयु कायु व कयउ मीमिउ ।

भूयउ सुहउयउ ममिउ ।

विहउगु लोचुमिहियउ ।

हीमर विपच्छिउ वयंजुहउ ।

जगउ व तेज वयउयउ ।

यथा—पुणु विपय्यायिणि नमिणि ममिणि विविध तेज सुहाय ॥

पौ विणु मयहायि वि मयहायि का रकयउ महु जायउ ॥ ८ ॥

9

हउं विजयिउ जगउ कय कहि

रमिपयउजायिपमउजममि

वमयउ किं जयिउ विहउयउ

अं मययि न वि हयउ करमि

किं जीवमि किं पुणु ममि जयि ।

नौ पयउ विहउयउ मययि ।

जगयमि हउं गुह विहउयउ ।

पययउ वि वययि मय ममि ।

६ MB वय रमि कहिउ

७ ५ MB मययिउ, B मययिउ १ MB कयउ १ B विहउ ५ MB वयउ ५ MB मययिउ
वमिउयउ ६ B हयउयउ वि ५ MB वययिउ, K मययिउ B वय १ MBT वय विहउयउ.

१ B हयउयउ ११ MB विहउयउ ११ MB विहउयउ, T मययि

९ १ MB विहउयउ, १ MB वय १ MB वी.

८. ८ ६ विहउयउ विहउयउ, ९ ८ मययिउयउ, ११ मययिउ मययिउयउयउ
६ विहउ मययिउयउयउयउयउ.

९ २ ६ मययिउयउ विहउयउ, ८ ६ मययिउयउ विहउयउयउ.

कमलवद्दहि दिण्णी दिट्ठि जहिं ईसाइ ईस मुक्को सि तहिं । 5
 कण्णाकारुण्णो पुण वि मइं विरहें जलियउ जोयतु पइं ।
 उच्चाइवि णंतु णिहेलणउ हरिसेण करंतु व मेलणउ ।
 हउ णिविसु वि पिययम जइ मुवमि तो किं णिसि णिइइ सुहु सुअमि ।

यत्ता—इह जणवइ खलसकुलि कयरणकलयलि अण्णु ण णयणहिं पेक्खमि ॥

दिट्ठादिट्ठसरीरी होइवि धीरी पैइं वि भडारा रक्खमि ॥ ९ ॥ 10

10

वल्लहंतंरंगंकपण एम जाम जाय पयपण ।
 माणिमाणवित्थारमंथण सित्थपयसाणिहियमगण ।
 जाणिऊण मयण खलं घण सुदरीहिं विहिय खलघणं ।
 णहघरित्तिदिट्ठिमत्तिलग्गओ ताम भीमसदो समुग्गओ ।
 सिहरिक्कुहरहरिणा वि णिग्गया भयवसेण दूर गया गया । 5
 द्वाणमेव महमुणिहिं जुंजियं सकलुसं मइंदोहिं रुजियं ।
 पडिय विडवि फुडियं रसायल घुलिय महियलं भीरुंभंभलं ।
 रूवरिद्धिणिजियसईरई सकिया मणे सा सुहावई ।
 तुट्ठिपुट्ठिकल्लाणदाइणा गयणपगणत्थेण राइणा ।
 सइ णिरिक्खिओ सुरहिपरिमलो करडगलियओहंलियमयजलो । 10
 लुलियवैलियपडिवलियअलिउलो चरणचप्पणो णवियमहियलो ।
 णिययधवलिमाघोयणहयलो बलविरुद्धजभारिमयगलो ।
 सीयरभसिच्चियदिसाणणो चउविसाणणिइलियकाणणो ।
 पंचदंडउच्छेहदेहओ ताण दूण पैरिहाणसोहओ ।

ट्टादिट्ठिसरीरी ५ MB पइ जि

10 १ MBT सिंयपय°, K सिंछपय २ MB महिउल ३ MB भीरु वैमले ४ MB °अविहलिय°
 ५ MB वलियपयपडिय° ६ MBKT परिणाह°

10 2 b सि त्थ° प्रत्यक्षाग्रभाग 3 b खल घणं आकाशोर्ध्वघनम् 7 b भीरु भेंभलं कातराणं
 भयानकम्, 8 a स ईरई शचीपतिरिन्द्र

कंसमाजकककककककको
 तं तु तातु मायकमुहकको
 कम्पिस्तरमेतु मिरिपातु भारको

वीरताककको महारको ।
 विरिक्तककककककको ।
 महत्ति मीहके पकोरको ।

18

प्रता—पडिक्कमिपातु पेविपावि वारणु रायहु हरितु न मारु ।
 न विरुक्कमिपातु हरिक्क सक्क गकमकतु पपाव । १ ॥

11

हापंतु वंत कद करि विवर
 मंतु रक्कय मेवेपिपु हमार
 सक्कय वडुरयमविहसकहु
 वतु वडुवरकंतरे पसरर
 रंय र मासप रंयवतु
 ईसविसिदि वि विवर कंजवतु
 विम्मह र वहीरसरेय सक्क
 मारुविपठतु नक्कयकुसतु
 वडिवा वकेय विम्महवतु

मामिपर मर्यमरं विवर ।
 पुतु वडुवर वडुपासदि ममार ।
 मनुवरर इति क्कमिपिपुवतु ।
 हक्क वडुवर वीसरर ।
 पावर पुष्कयपु वडुपुतु ।
 पंतु विडुपुतु न वडुवरर ।
 रंयतु वरेय करेय कद ।
 मक्कमिपि कमेय वसपमुसतु ।
 वुग्गेपिपु वुरर मईवतु ।

8

प्रता—तो कजिक्कमिपु वीकमरंय वरवार ई संमार ।

न पविक्ककंय मरंयमहिक्क भुवईवदि ववार । ११ ॥

10

12

मपरंहामाहापरिवरि
 तं गयवतु कुसमविपक सुमि
 मावपिपु पुष्कयपुरिपु पक्क

न सुमिपि वंति तेव वरि ।
 वपुरवतु वंतमवुविक्कवति ।
 परिवरिपि भुवमपीय सक्क ।

* MB वडुवतु वरंय MB विडुवतु. १ MB वरिक्कमिपि विहिरिक्क वारको. १ MB वरंय.

11 १ MB वतु १ MB वुरर १ B वरमिदि १ MB वतु १ M "वतु वरवडुवतु"
 B वतुवरवरवतु १ M वरंय.

18 १ ता वरंय पुष्कम् 17 १ वरंय को 10 हरिक्क वरंय

11 १ वरंय वतु वरंय वरंय १ १ वरंय पुष्कम्.

करिणा सुंदरु कंधरि यविउ	विज्जाहरकिंकरेहिं णविउ ।	
णिउ तहिं जहिं अच्छइ सयरवइ	सो पमणइ पुत्तयपसण्णमइ ।	5
कंतावडप्रिय सुक्कतरमणा	रउकंता सिरिकंता मयणा ।	
वणवाला वालहुं तुहु जि वर	जामाडउ महु जियकुसुमसरै ।	

घत्ता—करि खंमि णिवद्धउ कतिंसणिद्धउ भरहसयणमुविणीयउ ॥
सिंदूरं पिंजरु आसाहुंजरु पुष्पकयंतु णं वीयउ ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुत्तयंतविरइण
महामव्वमरहाणुमणिणए महाकव्वे महाकरिरयणैलंमं णाम
चउत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३२ ॥
॥ सधि ॥ ३३ ॥

12 १ MB मिय २ MB add after this इय पमणिमि वरि पइसारियड, पुत्तयपसणि
कारियड ३ K °सिणिद्धउ ४ MB पुष्पकदत्त ५ MB रयणात्म

12 8 भरहसयण° भगवस्व स्वजना मृत्या 9 पुत्तयंतु पुष्पदन्तनामा दिग्गज

2

धाइउ दुक्क	गररु ^१ रुमयधर ।
मरगयणिहतणु	कंपात्रिय ^२ जेणु ।
तथिरणयणउ	भगुरचयणउ ।
दसणभयकर	अरिअमरिसहर ।
भुवणयिमहं	लिलिलिलिसहं ।
रहितियदमदिगु	मगियरणमिसु ।
णघर णरिं	चवलु मठं ।
ण सारगउ	धरिउ तुरंगउ ।
कुकुमपिंजर	चलु पंसरवि कर ।
भुयवलपोहं	पुणु आरुहं ।
गयह पीलिउ	यगइ चालिउ ।
अवलोल्लवि कंसु	हरि हयउ वसु ।
पुलहयकाप	गगमवाण ।
पयडियमंगलु	घुट्टउ फलयलु ।

यत्ता—तां बुज्झिचि महियइ अतुलवलु अहियलेण सुग्घण्णां ॥

15

वरचंदणपरिमलचदमुहि चंदलेह तट्ट दिण्णां ॥ २ ॥

3

चदलेह आउच्छिवि णिग्गउ	णियउ सुहावई ^१ णिचिसं गउ ।
तेत्तहि जेत्तिहि सीमामहिहर	विउलणियं ^२ वुग्गयणवसुरतर ।
वे वि चारुचामियरवण्णइ	तेत्थु लयाहति जाम णिसण्णइ ।
ता सखग्ग खग वेणिण समागय	ण णहि णिसियर णिसिहर उग्गय ।
मट्टरगिराइ पठंजियविणण	पुच्छिय ते ^३ यणितणयातणणं ।

5

2 १ MB °गुरमयधर २ M कपात्रियतणु ३ MB दसणभयकर ४ MBK हिलिलिलिसहं
५ MB पसरियकर, K पसरवि कर ६ B किमु ७ MB तो

3 १ MB णिवसं २ MB °ग्गयसुरतरवर ३ B तेण तेणयातणणं

2 2 a °णिहं सहशी

3 4 b णिसियर णिसिहर चन्द्रादित्यो 5 b यणितणयातणणं कुवेरग्रीपुत्रेण श्रीपालेन

दीपह वे वि सुहु सुष्ठाया
 ठेहि पयस्य विपयुषं छेदिवि
 भग्नेर माया पयं मि गयमहुं
 केर नर महु विपिसु पयंरहि
 ता सुहुं हासिं वयं वदेसद

कहह काम किं कारु माया ।
 गययु पायपुंरुहिवि मंदिवि ।
 वरु वुमि पोरिसु विष्णासहुं ।
 एहु पदीपमंसु वर किंरहि ।
 विष्णाहृमृगापरमंमद ।

10

यथा—तं विष्णुमि विमिषद करि करिवि वंसु कुमारे पारु ।
 मसिजसधार सो विदुः वि पयस्य ठर वि पुर्वाविद ॥ १ ॥

४

मुहुं सो वज्रवहि अयसिरिह
 सुवर्धर मने मोपविहि
 तदवतरपिबिहु तदवहुं हाह
 बहुविष्णासार्धमत्यममभार
 पुगु पदु वयपयन विद महियसु
 वरवपदि वं वसि कुसीह
 हुद मुककंभुद वं वयरयु
 वुरससु छिद्वेयमि वं वसु
 परतीव व वारंविपयस
 मभ्यु वि वं वं वं वगसार्धमभ्यु

हव वद्विपेदिपि पय ठे वंरपर ।
 वं वंरवासु वरयु पसाविहि ।
 वीदिवि सुद्वि ठेव पसोर ।
 मुवह मुवपयमोहवार ।
 विद्वह मभ्यपयसु वमविपयसु । ६
 वयवपदि वार वपेवासु ।
 वसवपिसु वं वयवमहामभ्यु ।
 वुरवपसु वं विरपयमंभ्यु ।
 वारं वारंवासु वं विसु ।
 विदु मभोर वगसार्धमभ्यु । 10

यथा—विदुं पुं वि वीरि वि वुरवसरिण वीर वरु पयस्य ॥
 सो विसह मावि विपयवकि महियकि वसि विरिह ॥ ४ ॥

v MB read for this heer वर विपिसु रेव वरु वं वरवमभ्यपयस्य वरु, and add the following एहु पयस्यसु वर विरहि, वयु वं वरव वरु वरवहि (B वरवहि) ५ MB वर वीरि ६ K वीरि

४ १ K वरव, २ MB वीरिपि ३ MB वरव वरव ४ MB वरवमभ्यपय ५ MB वरव ६ MB वरव ७ M वरु MB वीरि ८ M वीरि ९ M वीरि १० B वीरि ११ MB वरव.

८ ६ विष्णावहु वरविपय

४ ३ ६ वरव वरव ६ ६ वरव वीरिपि ६ ८ वरव वीरिपि ७ ६ वीरि वरव वीरि ८ ८ वरव वीरि ९ ६ वरव वीरि १० ६ वरव वीरि ११ ६ वरव वीरि

प्रश्ना—परिमार्गिणि मुत्तमाय परिमिण्णं वृत्तिमपि वृत्तमप्युप
विमिण्णं मय विमिउत्तमाय वीरमोय विमिण्णं मय ॥ ५ ॥

10

[illegible]

विनिर्देशः परमार्थविज्ञानम् ।
 विमलमेव चोदय भक्तुमाय ।
 सप्तमेष्टिः विमलपद्मविज्ञानम् ।
 भूतोऽयं मयजति विज्ञानम् ।
 योऽयं विज्ञानं तं योऽयं विज्ञानम् ।
 विज्ञानविज्ञानमयमयमयम् ।
 विज्ञानविज्ञानं मयुः मयजति ।
 विज्ञानं विज्ञानं विज्ञानम् ।
 मयजति विज्ञानं मयजति ।

मन्त्राः—अमुं विष्णुं मया तस्मात् पवित्रं कृत्वा तस्मात् तस्मात् विष्णुं न

30

गविगज्ज पार वि मोहेनियह मो विह मंदु रमिज्जह । ६ ॥

[illegible][illegible]

5 ॥ न दानि भुजा

6. મેં મજાદર નહીં જોયામિ.

7

बभूव किंसायि एतं यं कुतश्च
सप्यमन्तु जह सप्यु मि कुतश्च
एह सप्यमन्तु गृह्यमाणम्
जह तुह एह किं पि जासेकह
जह तुह यं मरहि पयह्मु मुपयकि
सह हर्षमहिमि हरिसें बभूवमि
जाह जाह विपयह्मु यं मेह्ममि
यम बभूवमि तेन सी प्राहय

रे रे भूमयेय परं कुतश्च ।
सपरं सहुं जह बभूव मि कुतश्च ।
बभूवमि विस्मय पत्तहि विर्यवद ।
विस्मयीपयण्यु पाठ वि बभूव ।
तो हर्ष परमर्ष अक्षिमहाबलमि ।
बहुरिमारि हर्ष मारि यं कुतश्चमि ।
विस्मयसिद्धे परं उरि सहुमि ।
कल्याणम् कुतश्च मुह्यहम् ।

मत्ता—ता जायत विष्णि तुहावदह हर्षमपयमविह्वयत ।

हयु हयु पमर्षमिह कुतश्चि पत्तह कुतश्चमपयत ॥ ७ ॥

10

8

महु वि सहु वि विमि बभूव
हृष हृष बभूव सेजायत
बभूव भूमयेय बभूवसहि
विष्णुर्णु जयसिद्धिर्बभूव
ता कुतश्च विमेल मा प्राहमि
मन्तु वि मुर मर्ष कहि मि बभूवमि
पत्तहिमय होयपिण्यु मर्षमि
ता मुतश्च पिह मत्तिह मर्षमि
हृष विस्मयर्षमिहिवि
विष्णु विस्मयहृषि बभूव

सुहृ हर्षत य विमिह वि मर ।
कल्याण कल्याणसें जायत ।
माह्व विमिहर्षत विमिहर्षि ।
तो वि जाय विमिह कर्षि संमि ।
बहुय होति रिह कर्षि विमिहर्षि ।
जायेकह पुषु विमिह संयदि ।
मरिहिविष्मयहर्षि बभूव बभूव ।
विह बभूवपयण्यु कल्याणवदि ।
माह्वि संयमाण्यु तर्षि पयवि ।
वे गुणि संमिह मयह्वमय ।

10

7 १ MB महुतर्ष २ MB मयवेय ३ MB विमय ४ MB विमिहयण्यु ५ MBK मर
६ MB मरमि ७ MB कल्याणमि MB मरमि ८ MB मरमि ९ MB मयवेय १० MB मरमि
११ MB मरमि

8 १ MB मयवेय २ MBT विमिहर्षमि ३ MBK मय MB मर ४ MB मरमि

8, 9 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

यत्ता—त पेक्किवि यम्महवाणहय सीमतिणि तहिं दुक्की ॥

जपइ पयडइ विडचाडुयइ कुलमजायइ मुक्की ॥ ८ ॥

9

भो भो पुरिस्सीह दुहम्मल्लिउ
सुहव कह च जइ सुयहि महीरुहु
हइइ कसमसति भजतइ
मा उपेक्खहि छणचदाणण
इच्छ इच्छ मइ पइ ण पयारमि
भणइ कुमारवीर किं गिज्जहि
वरं एत्थु जि तरुसाहहि सुक्खमि
घर णक्खइ निलायलि भग्गइ
दत्तपति वर जाउ दिसनरि
केसमारु वर वोंपं गिज्जउ
वच्छत्थलु वर पक्खिहि खज्जउ

एत्थु केण तुहु आणिवि ग्रह्णिउ ।

तो णिवडहि गिरुत्तु हेट्टामुहु ।

अट्ट वि अगइ पलयहु जंतइ ।

भो पत्थिवपउमाणण माणण ।

पोरहु कतारहु उत्तारमि ।

पग्गुस्सिहु मणु दैनि ण लज्जहि ।

णउ परवरेणिहि वयणु गिरिक्खमि ।

णउ परणारीउरयलि लग्गइ ।

मा खुपउ परवहुविवाहरि ।

मा परपणयणीहि कट्ठिज्जउ ।

मा परत्तयथेणहि पेह्णिज्जउ ।

6

10

यत्ता—णयणइ धौलति णिवारियाइं हियवउ जाइ विचारहु ॥

संताउ पघडइ रयणिदिणु तित्ति ण पूरइ जारहु ॥ ९ ॥

10

गेहहुवारि णिरोहु करेसइ
लहु आलिगिवि मुक्कणिबधणु
आसकियमणु किं किर कीलइ
अणु अणु जइ काइ वि मतइ

पिसुणु को वि सगहणु धरेसइ ।

लहु उट्टइ सर्वरइ पइधणु ।

दुज्जंसु धूमं अप्पउ णीलइ ।

तो परयारिउ णियमणि चित्तइ ।

१ MB °मजायपमुक्की

9 १ M कसमसति २ B omits this line ३ B omits this foot ४ M अक्खमि
५ MB वायइ ६ MB परतिय ७ MB धौलति, T धौलति

10. १ MB गेहि दुवारि २ MB लइ ३ MB मुक्क ४ M सवरियउ, B सवरिउ ५ MB दुज्ज

9 ४ पत्थिवपउमाणण राजलक्ष्म्या आणण उपार्जक, माणण उपभोजक ५ न पयारमि
प्रतारयामि

10 १ b सगहणु पुबल्लयुगलम् २ n मुक्कणिबधणु मुक्ककण्ठाश्लेष, b पइधणु परिधानम्

एषहि सविशेषहि हर्षं जायिउ
इहमवपरसप्तपुण्यवगारउ
कैहि ज इच्छामि परधरसामिनि
एवमीयर परमप्राप्तुइह
करषाहि पिबसाहि बनि मेहिप

एषहि कहि बधमि संसाभिउ ।
परिदयएउ सुदु बिबवारउ ।
कषाहि जई वि रम सुरकामिनि
तं भिसुभिनि पहापारि कुइह ।
साहिभाह सा किंदिनि यक्षिप ।

प्रस्ता—एउहरिपपापिपयधिरकमस्तु बिहुरपाकि सुइहजबनिवार ॥

विचरैतठ चरिउ सैरं मुपहि बनिवार विरमबजबनिवार ॥ १ ॥

11

बहसारीक सोबन्धसिकापकि
हर्षं तुह माये पुत्त पोमावार
एउक बयेपिउ जेहपयामे
मुकर्मतन्त्रबिहासु बहउ
फुरिपविबिहमबिबिरवनिरति
मं भिसुभिनि सा तेसु पहाउ
ईमवेह माजिबसज्जाअहि
पुत्त उण्यणु विपणु विधीसठ
गय विपधामहु बीबाकापिनि

भाकिउं भिसुभि हर्षं बकवहुं छुकि ।
पुण्यजमि होटी पाउकपर ।
बस्तु एसाहिउ करसंझतै ।
तबठ एउत्तु वार संझइह ।
एहसहि विरिगुहविबरधंवरि ।
वावेसहि संयामि पबईह ।
बिजाछेउ करसिदि बाअहि ।
किह वेविर उकरिउ बिहीसठ ।
एसहि पाउ एवबुडामनि ।

प्रस्ता—एहसंतु विचंडुकि विवरवदि भकिबमेहाअहि पविपउ ॥

तहि संतु ईरंतु सिधामयहु रंमहु कपदि बनिबठ ॥ ११ ॥

(MB एउठिउ * MB कहि MB एल वर नि १ M सईमुपहि B वरमुपहि

11 १ MB पुत्त माय २ B तिण् ३ B पहाउ ४ B बयपेउ ५ MB भवसहि ६ M
हउ. T विवरवदि

6 "पुण्य" दोन अक्षरौ वा

11 ३ बीबावद ५पावली वाय ककिनीयाति ६ पुण्यम मिम अक्षरौअवनि, B ६ नि दोन
दोनी वाणी. 10 विचंडुकि विधीसठौ.

12

तापत्यहरि सूरु सपत्तउ
सहृदु जनु चरुणासालाणिहि
कुंकुमकुसुमामेलु घ रत्तउ
णं णवदलु णहरुफ्फरु ल्हसियउ
भाणुयिनु किरणाचलिजडियउ
मदतमालणीले पसरियतमि
णक्कचक्कभयपसरविसण्णउं
सिरिअरुहत्तसिद्धमायारियु
पचहु सचियसम्मयदिट्ठिहिं

ण दिणराणं भँदुउ धित्तउ ।
मणि व पढंनु महण्णवग्गाणिहि ।
ण चउपहर रुहिरग्गलित्तउ ।
रत्तलु घ दिमत्तरुणिहि डमियउ ।
उग्गत्तेण अहोमईवडियउ । 5
तहिं विवरंत्तं रयणिसमागमि ।
णीलसिल्लायलपंभि णिसण्णउ ।
उज्जायहु साहुहु कयकिणियहु ।
सुयरइ पडुचरणइ परमेट्ठिहिं ।

घत्ता—अस्मियाउन्माइ पचक्करइ प्रायतहु साणदं ॥

10

चोगरिमारिसिहिपाणियइ उवसमति मृगवंदइ ॥ १२ ॥

13

ताम पद्दाइ कालि रवि उग्गाउ
णीरु तरेप्पिणु तेण तुरत्तं
राप्प णयणाणंदजणेरी
णिव्वियार णिग्गय मणोहर
लक्खणलक्खुवलक्खियदेही
हउं सा भणमि कुहिणि अपवग्गहु
सा णाहि सरसलिल्लहिं सिचियै
पुणुं जिणतणुसिरि सथुय भत्तिइ
भैहपसत्थहत्थगुणगइय

ण महिउयर वियारिवि णिग्गाउ ।
तीरि परिट्ठिय तहिं जि भमतं ।
दिट्ठी पडिम जिणंदहु केरी ।
पहरणवज्जिय ओलनियकर ।
हउं सा भणमि अहिंसा जेही । 5
कट्ठिणभुयग्गल णारयमग्गहु ।
वियलियघचल्लहिं कमलहिं अंचिय ।
सव्वभूयगणविरइयमत्तिइ ।
ताम तहिं जि जन्निव्वणि सप्रइय ।

घत्ता—समासिवि णिहिलिणीहीसरिइ हरिसुप्फुल्लियणेत्तउ ॥

10

वैइसारिवि पट्ठि पयाहिंवइ मगलकलसिंहिं सित्तउ ॥ १३ ॥

12 १ MB दिसतरुणिद २ MB गडुपडियउ ३ MB ०सिलायलि ४ MB भिग°,

13 १ MBK पद्दायकालि २ MB अववग्गहु ३ MB सचिय ४ B omits this line

५ B omits this foot ६ MB नपाइय ७ T अहिसारिवि

12 8 a कुकुमकुसुमामेलु व कुकुमकेसरसघात इव 7 a णक्कचक्क° जलचरसघात

13 11 वइसारिवि प्रतिष्ठाप्य

१४

भूमयपेरिहाणां रयण्यह
 गययययय पाठययययय
 ताम तहि कि परिममिभि नमायह
 र्भरिह सहरिपीह यय ओरह
 भा पठतु सययु पि मिहमियह
 पुष्करतिलकजिपुत्राणिमरि
 एम मजिपि ताए पिरियन्वी
 भवर कड्डे सा पडिय

उभर्भरययय तनु दिण्यह ।
 दिण्यह यण्यु पि कं कं मायह ।
 रयण्यरज्यभूमययसायह ।
 पाहायातु कडाह मिहोरह ।
 दिण्यउत्तरयय पडिहमियह ।
 मरे य र्भयतु मायह विर्यतरि ।
 सययुहायुवाणि मिम दिण्यी ।
 कुभययययय कनु कनु कडिह ।

मला—उभर्भरिह शक गगतिह पाठययययय यण्यह ॥

पडि कनु पुष्करतिलकजिपिपि पुष्करतिलहरण पुष्कर ॥ १४ ॥

१०

१५

पण्यह रययायय विमुकत
 माह तुहारत कड्ड पाययय
 तिजयययय यय कंभय ओरह
 ययुवायेम मजिह कि ससायह
 कि दीमरे कययययययय
 सायमिभि कं कं कडासायि
 एम विपणिपि रायं कुसह
 इय पडयययय तहि मि पयाह
 मुहिरिययय हरिमे योतीयिह

मलमु विवसु कड्ड सा कुकत ।
 मलुयययु मायह मयययह ।
 एम मजिपि कड्डययय ओरह ।
 कं कं कनु यय कं मिहियह ।
 ययिह को पि कं कं मिहियह कड्ड ।
 सायययि कं कं कडासायि ।
 एम सडोयय यय मिहियह ।
 पिहिया योययययय कं ओरह ।
 तं यय माययु कं कड्ड मजिह ।

१४ १ M "परिहाण" कड्डयय, B "परिहाण" यययय १ MB ययय १ MB यययय
 ४ MB यययय ययययय, ५ MB यययय

१५ १ MB ययययय, ५ MB ययय १ MB ययय ४ MBK यय यययय ५ MBK
 ययय, ५ MB यययय

१४. १ कडा कड्ड ययययय, ५ ययययय "ययययय" B "ययय यय

१५ १ कडा कड्ड ययय

पणविउ पहु णिलयणु णिय तायहु
तेहिं विहिं वि तेणं जिणु पेच्छिवि

जगतायहु पञ्चक्खविहायहु । 10
भवससरणावत्थ दुगुंछिवि ।

यत्ता—सिरिवालें गुरुगुणबालु तहिं मउडचढावियहत्थें ॥

वदिउ परमेसरु परममुणि परमप्पउ परमत्थें ॥ १५ ॥

16

जेण विणासिवि घल्लिउ ईसरु
पुत्तु महारउ केण विहसिउ
पमणइ जिणुगयजम्मि किसोयारि
हुई काणाणि जक्खसुरेसरि
जाणवि णदणु अप्पणु देहें
आय सुहावरु कहिउ कुमारें
विज्जाहरु पयासियवसणह
एह मज्झु हुई विहडंतहु
एह मज्झु हुई वितामणि
एह मज्झु संजीवणि ओसहि

पुच्छिउ देविइ सो जोईसरु ।
चहु व पवरपहाइ पयासिउ ।
एयहु हुयमेत्तहु मुय मायारि ।
वहुविग्गमविलास ण सुरसरि ।
ताइ एहु पुज्जिउ बंहुणेहें । 5
एयइ रक्खिउ हउ बलसारें ।
मायावियह अणेयहं पिसुणहं ।
लग्गणवल्लरि अवडि पडतहु ।
कामधेणु कप्पहुमगोमणि ।
विहुरसमुदणाव णिरु पियसहि । 10

यत्ता—हउ एयइ रक्खिउ सुंदरिइ एयहि जीउ वि दिज्जइ ॥

जसु पुत्तु कलत्तु ण मित्तु सुहि सो दुहंसलिले मज्जइ ॥ १६ ॥

17

पइ संहं महु उगयमुहरायउ
जं तं एयहि तणउ विजमैउ
त णिसुणिवि विणए पणयगिय

माइ माइ मेलावउ जायउ ।
एयहि परवैलु बलिण णिसुमिउ ।
सासुयाइ कुलवहु आलिंगिय ।

७ MB णिउ णिलयणु ८ MB तेण वि ९ MB °ससारावत्थ

16 १ MB चिरु णेहें २ MB दुहंसलिले णिमज्जइ

17 १ G सुहु २ MB वियमिउ ३ B पबलबलेण

10 a णिल य णु समवसरणम्, b °वि हा य हु विधातु प्राणिनां आच्छितफलप्रदस्य 11 a वि हिं वि कुबेरश्री-
वसुपालाभ्याम्, तेण श्रीपालेन

16 1 a ईसरु अस्य विष्णोरपत्य ई कामस्तस्य सरु बाण 3 b हु यमेत्तहु जातमात्रस्य 8 b
अवडि कूये

17 2 a विजमउ विजृम्भित चेष्टितम्

पुनि पुनि परं कार्यं पन्नेसमि
 ब्रह्मपद्विद्वत्पद्मनेपुण्यव
 मुहु जि पद्म महु आमाऊरी
 भुवर्गमद्वद्व हसि कहि तेगद्व
 तुह करउ जियकरिहुंमायमु
 महु तज्यपहु ब्रह्महृपाणा इव
 पमजर कण्व पुण्यसामर्थ्ये
 सेव मिथ्यु अ मित्रार रंगउ
 पुण्य कुवेरकठिउर पतिपुठिउर

मिहिमिह हिं रविपद्विमहि ईसमि ।
 पुण्य महागद्व परं महु विजयउ । 6
 मुहुं सेवति सूर्यं नि सूरि ।
 कहि पारितु परबीरविपारउ ।
 धनुगुणधियवउ अथउ धनपणु ।
 तुह भुप रिउहुं कामपाणा इव ।
 गिरि बुउ धरिउ धर्ममहिज्ये । 10
 अहि तुह मुह नहि मयसु वि बंगउ ।
 कहिउ मविमुप ठहि कर्म विपयिउउ ।

पद्या—ता बहर महासुपि मविबह धारिबीउ तहु तउउ ॥

विरमवि धहि वि तुह मनुद्वहि अजमनु किउ विजयउउ ॥ १७ ॥

18

मम्ममिहहि मुक्कपसिहि मुञ्जिहि
 रिसें रेहु मल्लेपियु भावा
 बसुबासहु सिरिवाकहि कटी
 मुनि बंदिहि लयसरां संगुहुर
 पुञ्जिहि पद्याकविमिथ्यासहि
 मळ सुहावर पिययम मावर
 मय सुंदरि जियमंविम आमहि
 कपलपि अमाउ रउतुसिहि

जियपद्विबिबहु पुञ्ज परंजिहि ।
 ए विभि वि तुह सुव संजावा ।
 पुण्यपविहि गत्यसुहागटी ।
 अछयन विपययउ पउरुं ।
 केहिपरवपाहरवविमसहि । 6
 बसुमारिणि सम पाउमळपद्व ।
 बसुबासहु विवाहु कउ तामहि ।
 लउतउउ नउ करवरपुठिहि ।

पद्या—पुण्य कहि सुमोयन विपयारिउ सर परिपुठिपरंमुह ॥

महाद्विबमिबहु धवरबहु पुण्यवर्तसोदियेवह ॥ १८ ॥

10

इव महापुठप तिलडिमहापुठिसगुवाकंकारे महाकरपुण्यवर्तपरिरच
 महामध्वमरहाधुमभिप महाकण्व लघुमिरिपार्जनयमा आम
 एवलीमयो परिष्कर्मो अमयो ॥ १९ ॥

॥ लैपि ॥ १९ ॥

MB वैश्वि ५ M "लण्व" ५ MB अर पद्व ७ B मुर MB लैपि १ B मुक्क १ MB

5. ११ M बीव बीर ल B बीपरि ल

18 १ MB रिपरेहु, २ M कउर, B कउरही ३ M "इर B "अरही ४ MB "मिरिपञ्च"

18. ॥ ७ वैश्वि व काजी (१).

XXXVI

छ वि लेणिणु कण्णउ वरत्तणुण्णउ गगणु अकपणु सा सुय ॥
सत्तमदिणि सुदमद पत्त सुदोवइ णविय ताइ सइ ग्गामुय ॥ भुवक ॥

1

भासिउ भइइ गुणउत्तियउ	पर्यँउ तुइ सुय कुलउत्तियउ ।	
होहिति भणिमि मृगणेत्तियउ	तदिवेए गहणि णिहत्तियउ ।	
समाणहि मइ समाणियउ	ण्यदि तुइ मदिइ आणियउ ।	5
ता लच्छिइ ताउ पसादियउ	णयमालइमालावाहियउ ।	
पुच्च चिय तेत्थु पँरिट्ठियहिं	भूगोयरेहिं उँकठियहिं ।	
हयदइयँ कहिं वि विओइयउ	मायापियँरेहिं धि जोइयउ ।	
पहिलारउ परिणिय सेट्ठिसुय	जसवइ णामँ जसकत्तिजुय ।	
अणु अवगउ धोरयँइयणियउ	रइकताइयउ सुहासिणियउ ।	10
विरहगितावणीवाचणउं	अट्ठहिं तरुणिहिं सहु मेलणउं ।	
दिट्ठउ करतु सो पँउ ललिय	मुँत्तिहिं समिइहिं ण जिणु मिलिय ।	

वत्ता—जोएवि सवत्तिहिं मुँट्टु यणियत्तिहिं णीसँसेमि दुइइणणहु ॥

ईसावसकुद्धइ नप्पणि मुद्धइ आसयिय घर जणणहु ॥ १ ॥

M has, at the commencement of this Samdhu, the following couplet in the margin.—

पुण्यतरिण्णउ धणुहु सह दिण्णउ सह सति ।

मारिय मिच्छमयादिइइ गुणु पुणु तिहुयणाकेत्ति ॥ १ ॥

BGK do not give it

1 १ K सत्तमे दिणे. २ B मुहामइ ३ M एयहि ४ MB मिग° ५ MB परिट्ठियउ ६ MB उकठियउ ७ MB पियरहिं विच्छोइयउ ८ MBK पुणु ९ MB °धट्ठ° १० MB विउ. ११ MB गुत्ती-समिइहिं १२ B महु १३ M णीमेसवि

1 1 छ पट्कन्या, सा सुय सा प्रसिद्धा पुत्री 6 a लच्छिइ कुबेरत्रिया 8 a विओइयउ वियोग प्राप्तिता 10 b मुहासिणिउ बोधनवचना 11 a °णीवाचणउं विध्यापनम्

सुहृदपरपहि तापहु बखगिउ
मण्यनि ज मण्यई केपरई
मेरउ मल्लिहि रिउ औबहल
अविससविबाहै कि करमि
सउ अण्यपरिरथपंथिपहु
पहिकपर अण्य सुह कलमकउ
अण्यअण्यहि कुसुमहि दिनु गमह
एत्यंनरि चिरिवाहै जपरि
वाक्यमन पुणु जाविबहै
सैह कल्लिहि विवमवचहु गपउ
इय चित्तिवि वाहपउ पउ भउ
संपउह गेहु अकंपउहु

मृगोपरमृगावैरवरिउ ।
अणुरत्तह मृगविहिपापरई ।
पहिकउ जि किराहिहि धरिउ कर ।
वर विवसु कण्ठावउ धरमि ।
आलिपणु वैवि तासु मिर्बहु । 6
विई हार सहावै वंचउउ ।
कि पऊहि वेतिहि कलि रमर ।
ममिअ सुगमममम धरि जि धरि ।
हा पुपमाणुनु अकमाविबहै ।
कि जीहुं कंनु वि विरुई मपउ । 10
पठिउ छहु वैविउ मेरपउ ।
विजवरजमपिमविर्दमउहु ।

पता—केहै सहु पाहुह दोहवि कपमह पविउ कविपहु पावहि ॥

हुहुं मण्यउ सऊणु विविहपउकणु वसुधिरिवाहहि रावहि ॥ २ ॥

मेव वि विमहन्ति विवहपउ
तं सोहैर अण्यई पतिपहि
कंजुरवैरवार सुपेवि सर
तं पाविप कुकपरिहां सऊकि

आलिहिपउ पउ पधोरपउ ।
अकबंनहि वि पछवैनिपहि ।
अ परिपिय अविवरउअय मर ।
मणु पुणु सुह पुतिहि सुहअजि ।

2. 1 E "पुनर" 2 MB "मृगोपर" GK add second "पुनर" in the margin.
T मृगोपरवरिउ 1 M वर. 4 G वर 1 MB वैवि व तासु. 1 MB विवसु; B वर. M वि
MB विवसुवि. 1 MB विव 1 MBK वर 11 वणु वहु वि. 11 M अलिप. 11 MB वैव.
11 B "अविपयपु

3. 1 MB तासु 2 MB कण्ठाव. 3 MB तल. 4 MB हारमह.

2 1 1 मृगोपर" वसुधिरिवाहहि मृगोपरवरिउ मृगोपरिउ अकमाविपु विवसु वैवि तासु
अण्यउ. 6 सुह सुह; कलमकउ हारमहवरिउ 11 1 कलिउ औबहल

3 2 1 अकवैतिहि वि वचवैतिहि वरजमममविहि कल्लिहिममममम पुपमाणि 4 4
हुहुं पठिउ कुकपरिवा कुकपरिवा; कऊकि सऊकि

चंपयकुसुमावलिगोरियहि
जिह कदिणं थणत्थलु तिह पहरं
कण्णंतु समागय णयण जिह
जिह मज्झु खीणु तिह विरदियणु
जणणंकासणइ णिसणियइ
तं णिसुणिवि णिम्मरु चित्तियउ
तहि पिउणा तं जि पवोल्लियउं
ताएण समउ गयं कुमरि तहिं

समरौमि सुयाहि तुहारियहि । 5
जिह रत्तं रत्तरणु तिह अहरु ।
परमारणसीला वाण तिह ।
जिह धणु गुणमडिउ तिह जि तणु ।
कणियइ कुसुमसंरच्छणियइ ।
महु णाहें माणु णियत्तियउ । 10
हयगमणभेरिवलु चल्लियउं ।
णिवसइ सूहउ वरइत्तु जहिं ।

धत्ता—सपत्तु अकपणु सकरि ससदणु पेच्छिवि छणु णहगणु ॥
गय धिणिण वि सायर समुह भायर मग्गमाण आल्लिगैणु ॥ 3 ॥

4

धरि आसीणाइं सणेहवय
हेट्टामुह वहु वरेण भणिय
घणु सोहइ एकइ विज्जुलइ
इह सोहमि हउ एकाइ पइं
मा रुसहि सज्जनवच्छलिइ
तें वयणें रोसणियत्तणउं
वप्पिल सप्रोहय रमणवसा
चलणयणजुयलणिजियहारिणि
एवंटुसहासइं राणियइं
पुणु पर्छइ णिरुवमभोयवइ

लहु अग्गमागयपडिवत्ति कय ।
किं इइं तुहुं मलिणाणणिय ।
वणु सोहइ एकइ कोइलइ ।
गुरुवयणु करेवउ तो वि मइ ।
अलिणीलकुडिलमउकौतलिइ । 5
जायउ तहि रम्मु पेम्मु धणउ ।
तडिरयतडिधेयहु तणिय ससौं ।
रइकंता मयणवइ तरुणि ।
परिणियइ तेण खयरणिण्यैहं ।
खगवइसुय णामें भोयवइ । 10

५ MB read for this foot लउहगहि मुणिमणचोरियहि ६ M कदिणु ७ B adds after this
महु आवइसयइ णिवारियइ, समरमि सुयाहि तुहारियाइ ८ B रत्तु रत्तरणु ९ M °सीहा १० M °सरस-
णियइ, B °सरकणियइ, T °कणियइ ११ B adds after this णियपुत्तिहि मणु णीसद्वियउ
१२ MB add after this तहु सइं तिहुयणु हल्लियउ १३ MK आल्लिगिणु
४ १ G रोउ २ MB सपाइउ ३ MB °वस ४ MB सस ५ MB चउवट्टु ६ MB राणि-
गइ ७ MB °राणियाइ ८ B पुच्छइ

१० ८ णियइ कन्यकया, °छणियइ अल्लिविधोपेण

मत्ता—सेवावर्गार्हेकहपगपतिपमहपवहपुपेदिहपुवर्गः ॥

सञ्जीवर्ग रपवर्ग रंजिपवपवर्ग सस तासु संपर्गवर्गः ॥ ४ ॥

5

येसेव सुहावर्ग ईकर
सुरमन्त्रियवर्गमधवमसिरिहि
परदाभिरि अचर्गहवु किउ
परमेसर वविमप परिहपिप
तं विमुक्ति विगवर्ग संचलित
परमंरहि अति मदासहि
मिर्दवपवर्ग तिह तिह कंरिपव
ईसासुव पव्वा कवसमिप
विज्ञाहृति विज्ञमहृतिहृतिहि
पहरवसमहि सुहविमपवु
ववविहिवा आपड वववव

ईसाह ज विमपुति परसर ।
विम मवपु रपपिपु सुपमिपिहि ।
अप्येकार रापवु विमपिपिहि ।
परकंजिपवर्ग परि यविप ।
हरिसुरमूर्धारव ववि मिहिउ । 8
संपपु मिवासु सुहावर्गहि ।
विह विह मपु सुहवि कंरिपव ।
वाहवि वविमपव ताह वविप ।
पिप ता वि पुंरुर्गिपिपुपिहि ।
उप्येकार कवु वरमिहवु । 10
कि ववव अम्यासि कुकर ।

मत्ता—सकिमपकि रवपव ससहरववव परिवर्गवि पव्वासु ॥

अचर्गहवर्ग गवर्ग सवु कपमार्ग किउ सुहवृहसंमासु ॥ १ ॥

6

अरि असपिपेउ विउ मपुकरिउ
मकिउ रंहि रपपागकि विउकि
गवर्गविमपहपवर्गवववर्ग

वापाहपव हव अचर्गहव ।
विहिउ रंहि कावमि पिरिपुपिहि ।
विहृई कववर्ग विज्ञाहृति ।

१ MB मिह १ MB कंरिप

5 १ MB रउ MB परमपिहि १ MB मिह १ B ईसासुव १ MB ववव वविप
१ MB परमव सववपु

6 १ MB रवमन्त्रि पवि १ MB मधवपव

8. 11 "विमम" मपवव.

5 9 विममहृति हरिहि रवव वावर्गवर्गहि 10 ४ सुहविमपवु वृषपेवर्गहि
ववववविह रंहि वव

6 १ १ विहृहि विहृति विहृतिपुवर्गहि विहृति

महं रइयइ पसरियअमरिसइ
चलकरयल्लुल्लियैसूलमुगल
उहहणपयदपल्लयपिहिर
दूसासण दुम्मेह कालमुह
ए पिसुणियपिगुण मयच्छि माहु
कीरइ रिउवलमयणिम्महणु
उवसमइ रामाह ण मलहियउं

अवल्लोइत्रि णाणासाहसरं ।
आरुट्ट दुट्ट ढप्पिट्ट पाल । 5
रिउ चिञ्जुमालि हरियर खयर ।
हरिवाहणधूमवेयपमुह ।
ता चवइ कत कंतेण महुं ।
तुपेण समइ किं दवदहणु ।
असिचावहिं जाम ण कलहियउं । 10

घत्ता—पुरिसेण महंते एरु जियते जेण टीणु ण भरिजइ ॥
णदति ण मज्जण जति ण दुज्जण गयहु तेण किं किजइ ॥ ६ ॥

7

महएविइ कञ्जु णियच्छियउं
मोययइहि यधधुं कुलधवल्लु
अहिंमिचिवि पट्टणिषधु कउ
रणि जिणिवि णियंघिवि सत्तु तिणा
सो तुरयारुडउ दढकर
ग्रहलंमुजलोहियणेत्तियहिं
णियणाहहु दीणवयणु लपिउ
सयल वि ते पग्गिद्वियकिवहु
रापं कारुण्णु ताहं करिवि

इय णहुउ गण इच्छियउ ।
णामे हरिकेउ विसालवल्लु ।
सेणापइ रगवच होत्रि^३ गउ ।
आणिय णं विसहर पवरविणा ।
पणवंतु पलोइउ णिवेण णरु । 5
विलवतिहिं खेयरपुत्तियहिं ।
ग्रहिणिहिं धंधवउल्लु मेह्विउ ।
चरणारविंद णिवडिय णिवहु ।
पेसिय देसहु अन्मुद्धरिवि ।

घत्ता—महियल्लु पालिजइ मणिगउ दिजइ पणविजइ जिणयंदहु ॥ 10
पयवडिउ ण हम्मइ मग्गे गम्मइ एउ चरित्तु णरिंदहु ॥ ७ ॥

३ MBK °तुलिय° ४ MK पलयमिहिर, B मलयमिहर, G पलयमिहिर but originally पलयमिहिर
which is corrected to पिहिर by yellow pigment ५ MB दग्गह ६ MB तिम्महणु

7 १ B पुच्छियउ २ MB मधउ ३ MB होह ४ MB मेलाविउ ५ MB चरणारविंदु ६ B
पाविजइ ७ MB जिणइंदहु

7 4 5 पवरविणा प्रवरथासो विध गउस्तेन

8

पठरासीकनकां कुञ्जराहं
छन्नपद्मं सहस्रं रात्रिपद्मं
मोक्षद्वेषद्वेषं सिद्धं सुखं
परि बोद्धुं यत्नं यत्नं विधि
सिरिवाक्यं पुष्पं पवित्रपरि
सं जलपत्रपत्रपत्रं यत्न
ता सप्तपत्रं पवित्रं सुहाय्य
यत्नं यत्नं विधि यत्नं मरणविधि
मरणविधिं संहं विधिं कल्पविधि

पेक्षितं सहस्रं रत्नं रात्रं ।
वसीस विधिं संतापिवत् ।
मायापराहं पञ्चविधं ।
महि यत्नं यत्नं यत्नं ।
यत्नं यत्नं पुष्पमवायति ।
सं जलपत्रं पत्रपत्रं मयत्नं ।
यत्नं संविद्यं यत्नं यत्नं ।
यत्नं विधिं मीसमि यत्नं ।
किं पुत्रकलत्रं विधिं ।

5

पञ्चा—ता मीसं मासिं पुष्पं पञ्चासिं यत्नं मा मासि ।

10

यत्नं यत्नं केरी विधिं यत्नं सीकविधिं मा यत्नं । < ।

9

यत्नं यत्नं विधिं विधिं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं विधिं यत्नं यत्नं यत्नं
परिवापि विधिं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं

यत्नं यत्नं विधिं विधिं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं विधिं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं विधिं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं विधिं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं विधिं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं विधिं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं विधिं यत्नं यत्नं यत्नं
यत्नं यत्नं विधिं यत्नं यत्नं यत्नं

5

- 8 १ M विधिं विधिं यत्नं यत्नं, B omits this foot K विधिं यत्नं यत्नं
१ MB add after than यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं १ B यत्नं MB यत्नं यत्नं यत्नं १ B
यत्नं १ MB यत्नं MB यत्नं यत्नं, K यत्नं but correct ११ विधि MB यत्नं
१ MBK यत्नं १ MBK यत्नं ११ MB यत्नं
9 १ MB यत्नं विधिं १ MB यत्नं विधिं १ MBT यत्नं MB यत्नं यत्नं
१ MBK यत्नं १ MB यत्नं यत्नं MB यत्नं यत्नं

8 १ १ यत्नं यत्नं विधिं यत्नं यत्नं यत्नं

9 १ १ यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं

तहिं अवसरि माणभरट्टु चुउ
 आचेप्पिणु णिम्मच्छरमइइ
 दिस्स कवण सुरासहि अणुहरइ
 का पुज्ज णारि पइ माइं विणु

मणि धम्माणंदु अणंतु हुउ ।
 जसवइ सइं णविय सुहावइइ । 10
 किं अवरहि रवि उग्गउं करइ ।
 अण्णाइ उयरि किं धरिउ जिणु ।

घत्ता—अमुणियसंवधइ चिरु रोसधइ फरुसक्खर ज जपियेउ ॥

त अमरिपियारिइ खमहि भट्टारिइ मइ चालइ दुक्किउ कियेउ ॥ ९ ॥

10

णामेण विलासिणि रंगसिरि
 गच्छति पलोइय वणिवइणा
 मुहयंदुज्जोइयसयलदेस
 ता कहिउ ताइ वणिणाइ लहु
 वारहवारिसियउ खासु किह
 पुट्टउ णं अमिण सिंघियउ
 जसवइपयगलियजलेण जरु
 सा धूमवेय वइरिणि खगइ
 जुवैराय हवेसइ पोट्टि तहि
 तो जणणिइ जणियउ तित्थयर
 उत्तारिउ धणु बिहक्कविय सरै
 णिउ मेरुहि तियसहिं जिणधवलु

अकमलकरि ण सयमेव सिरि ।
 पहि जति भणिय वड्डियरइणा ।
 किं णवइहि वच्चहि पुलववस ।
 देवीपयफासै णट्टु महु ।
 जिणदसणेण जणदुरिउ जिह । 5
 तेणगु मज्झु रोमवियउ ।
 णासइ गहभूयपिसायडर ।
 अवर वि गुरुहार जाय जुवइ ।
 जुयरायपट्टै वच्चउ अणहि ।
 भइयइ थरहरियउ पंचसरु । 10
 जिणजम्माणि कम्महु णत्थि घर ।
 जाणमि सिवसिरिकण्णहि धवलु ।

घत्ता—सइं णवइ पुरदरु आसणु मदरु कायिकौडु रयणायरु ॥

जहिं ण्हाइ जिणेसरु त णवणउं णरु कहइ को वि जइणायरु ॥ १० ॥

८ MB दिसि कम्बण ९ MB मुएवि अणु १० MB जपिउ ११ MB अरुहं १२ MR किउ

10 १ M महि इदुज्जोइय°, BK मुहइदुज्जोइय° २ MB वचहि णवहि ३ MB पयफसै ४ MB वारहवरिसियउ वि ५ MBK जुवराउ ६ MB °पट्टु ७ K ता ८ M सिर ९ MBK कामदु १० MB कायकुडु

2

10 11 b घर रक्षा 12 b सिवसिरि° मोक्षश्री, धवलु भर्ता 14 जइणायरु गणघरदेव,
 अथवा बृहस्पत्यादिकषट्पुत्र

II

भाबबर्धैतरकप्पाहिबर्हि
 गुणबाम्पु जातं किठ जिबबर्हि
 जबमासर्हि भबब महासर्हि
 ससरोपब मोबबर्हि सहु
 पड वरवर्हि सजब सकरि सरहु
 बेपहुमहीहरि संबर
 साहिप कधि ककक बि किंवर बि
 पठमप्यर हुबठ जासु धरि
 मुंजठहु काममोबसेपई
 पळहि विभि जिणु निप्यइवड

वेबर्हि शबिप्यसासंबसुहर्हि ।
 भाबिबि अथिप्यर जसोबर्हि ।
 संमूयड पुणु सुहाबर्हि ।
 सयरहुं जिबकेर समुहिसहुं ।
 जरिबबर्हिपुहुं बं सरहु । 5
 बिजाहरपयई महि इय ।
 ठहु मईयर कंफर किं वरि ।
 बिबसर सिरि भबर्हि तसु करि ।
 कककाई तीस पुळहुं गयई ।
 कोर्येतिपई संबोहिबड । 10

धत्ता—तें होइबि बीसई धनु बीसई पुण्यपापमिपकायई ॥

पळहुं पडिबळठ गुणसंपुण्यकं सुवरिई जीवकसायई ॥ ११ ॥

12

बडतीपासिसयबिसेसयड
 गुणबासु मडारठ गुणमहिड
 संबोहिबबहुमबिबहुबहु
 गुबडीकककाई पुळई सयर
 पळुहिपकाककममसुहहु
 पंरिबिसिबि काममपमपणु
 सोळइसहासधरबीसायई
 संसारबोत्तमारे सडठ

संजाबड केबडि तिप्यपड ।
 बिहरर महिपडि वेबर्हि सडिड ।
 जिबसुड देड महु मार्केसु सहु ।
 सिरिबामु बि मुंजिबि सपड वर ।
 सिरि पडे बिबंथिबि ठनुबहु । 5
 बिपसजयबिबिबहु गड सहु ।
 तें सहुं पळइय महासयई ।
 बसुबासु बरिडु बि पांवर ।

11. १ MB "मिह" १ MB कावमिपहि १ MB भरव सकरि सरि सरु B भर
 १ M "हरि, B वर
 12; १ M हुण्य १ GK "बुणु" but gloss वमय १ MB बीव १ M लेट
 १ MBK व, १ B वर बिबिबि १ MB बहीसर MB वमय

11. ४ ३ बिबकेर ठहुहिसहुं मिताई कनुरिय, 11 बीबड मि लपय
 12 ४ ३ वर सपका ७ ३ वडा वरई वमरिजबोपाय

सहुं पुत्तसहासैं सो सहइ
देविहिं परमत्थवियाणियह
वुज्झियधम्मइ उज्झियरइए

तं संजमु तं वरुं को वहर ।
पण्णाससैंहासइ राणियह ।
तवि संठिउं समउं सुहावइए ।

10

घत्ता—सा चरिउ चगेण्णि तेत्थु मरेप्पिणु सइं अमरौहिउ हई ॥
णासियदुक्कम्मैं जिणवरधम्मैं धावइ पुरउ विहई ॥ १२ ॥

13

जहिं भुक्ख ण तण्ह ण णिहडिय
जहिं सच्चु ण मित्तु ण घरिणे घर
णउ माणु ण माय ण मोहु मउ
मणु इंदिय पव वि णत्थि जहिं
वसुवाळु वि गुणवाळु वि परमु
इय सुणिवि कहंतरु अप्पणउ
तूसेप्पिणु ताहि सुलोयणहि
पुणु भणिउं देवि हियवइ धैरवि
तहिं अवसरि हरिसुद्धाइयउ
गंधारिगोरिपण्णत्तियउ
णियसोहाणिज्जियकमलसिरि

णउ देह सत्तघाउहुं घडिय ।
जहिं लोहु ण कोउ ण कामजर ।
जहिं केवलु जीउ जि णाणमउ ।
सिरिपालु वि गउ कालेण तहिं ।
अरहुंतु करउ महु रइविरमु ।
घणरवेण दिण्णु आलिंगणउं ।
रायवसविरोल्लियलोयणहि ।
हउं खगजम्मंतरु समरमि ।
जम्मंतरविज्जउ आइयउ ।
गयणयलविहारपवित्तियउ ।
त पेक्खिवि भणइ पियंगुसिरि ।

6

10

घत्ता—हउ जाणँउं भाविणि अइमायाविणि कंतहु चाडुयकारिणि ॥

अलियउ जि कहतरु भवणेरतरु कहइ दुट्ट दुधारिणि ॥ १३ ॥

१ MB वउ १० MB देविहिं परमत्थु वियाणियहं ११ MB °सहम रायाणियहं १२ MB संठिय १३ MB अमराहिउ

13; १ MB सिरिवाळु गयउ २ MB °विरोल्लिय° ३ MB धरमि ४ B वज्जित ५ MB जाणमि
६ MB भवणे णिरतरु

18 वि हई विभूति

13 18 °णे रतरु आवेच्छिजम्

14

तुं देवि मुञ्जोयणि मयपरिय
परं कश्चिद् कर्तुं न सार्हं वि
रमणीयमसिरेवामभिहि
सङ्गमाह्नि रज्जु समप्यिषत्
हत् पच्छमि गयणे अज्जु तहि
रत्ताळंकारहि विष्णुति
कं होत्तव मासि पद्मावहि
यिय पासि मुञ्जोयण अक्षयवहि
अज्जु जोपर उज्ज्विहि मुपर
अंतोत्तर पयिणु जीसत्तर

हत् पांसवसि आरत्तं मयि ।
अर विद्मत् एवहि किं रत्तं वि ।
जीसत्तु कयत्तु होहि वि अविहि ।
अक्षयसे सत्तरिणु अपिषत् ।
अज्जु अंमु र्ध्वंमु सत्तं वत्तर अहि । ॥
विज्जाहरेणु तव धरि ।
तं कर्तुं अवेपिणु विषयवहि ।
विष्णु वि अक्षयिषत्तं अहि मयि ।
अक्षयं विमोत्तं कत्तुणु वत्तर ।
अक्षयपणु अंमत्तं मुत्तर । 10

अन्ता—उत्तमियज्ज्वहि सुरवत्तमहिहि महासाळवत्तं ।

तं परत्तर वहुत्तर अक्षयिषत्तं विषयवत्तं । १४ ॥

15

विष्णु वि अवेपिणु विषयवत्तु
परिपिहि तारं उप्परि मयत्तं
तहि अक्षयि पुञ्जिहि अक्षयत्तं
पुण्यवि तिष्ठिषत्तं अक्षयत्तं
अज्जु विद्मत् अंमत्तं सत्तमत्तु
पेयवेवि तहि मि अक्षयिषत्तं
पुण्य अक्षयिषत्तं अक्षयत्तं

तं महासाळ अक्षयत्तं ।
तेत्तात्तं अक्षयिषत्तं ।
अक्षयि अक्षयिषत्तं अक्षयिषत्तं ।
अक्षयिषत्तं अक्षयिषत्तं अक्षयिषत्तं ।
अक्षयिषत्तं अक्षयिषत्तं अक्षयिषत्तं ।
अक्षयिषत्तं अक्षयिषत्तं अक्षयिषत्तं ।
अक्षयिषत्तं अक्षयिषत्तं अक्षयिषत्तं ।

5

14. १ MB वत्तं १ T अक्षय १ MB अक्षयि MB अक्षयि ५ MB अक्षयि १ MB
अक्षयि MB अक्षयि

15 १ B अक्षयि अक्षय १ MB अक्षयि पुञ्जि १ MB अक्षयि ५ MB अक्षयि ५ MB
अक्षयि तहि मि अक्षयिषत्तं B अक्षयि तहि मि अक्षयिषत्तं १ B अक्षयि

14 १ = अक्षयि अक्षयिषत्तं १ = अक्षयि अक्षयि १ = अक्षयि अक्षयि

15 १ = अक्षयि अक्षयिषत्तं अक्षयिषत्तं १ = अक्षयि अक्षयिषत्तं

लघिवि पंडुयवणि पद्मसरिवि
जोश्वि चूलिय मेरुहि तणिय
जोश्व उत्तरकुरु देवकुरु
छ वि कुलपव्वय चोदह णइउ

अहिसेउ अरुहयिचहं करिवि ।
चालीस जि जोयण परिगाहिय ।
अवलोइय दहविह कप्पतरु । 10
विट्ठउ वहुभूमिभेयगइउ ।

घत्ता—जहिं वसइ सगुणगणु णिरु णिरुवमतणु जंबुदेउ रंजियजणु ॥
जंबूतरु जोइउ रयणुजोइउ जंबूदीवहु लंछणु ॥ १५ ॥

16

तं जोयवि आयइ तुहिणइरि
तणुवलइय मणिमयभूसाणिय
जहिं जोयणमेत्तु अत्थि कमलु
जहिं सुरहं वि चोच्चुप्पायणहं
तवणीयविणिम्मिय ण णविय
जहिं कोसपमाणु विमाणु तहे
तं पेच्छिवि णहयलि चल्लियइ
गंगासिंधूसिहरहं णिइवि
सर्वरउलणिसेवियमेहलहो
जयरुवणालिणलंपैडि भमरि
सा भणइ वसइ इह तुलियजणु

जहिं इहं सहि सिरिविन्नसिरि ।
सोहम्मसुरिंदविलासिणिय ।
जंबुण्णयणिम्मियविमलदलु ।
णालु वि हंवेइ दहजोयणहं ।
कणिय गव्वूइपरिडुविय । 5
लच्छीदेविहि अरविंददहे ।
यिणिण वि णियमणि गंजोद्धियहं ।
तैहि तणउ सलिलु परिमलु पिइवि ।
पुणु आयइ वेयट्ठायलहो ।
यिथं पशु णिरोहिवि तहिं खयरि । 10
गंधारिपिणु णामेण खगु ।

घत्ता—हउं तहु केरी सुय णवकुवलयमुय पइ णियति जणरामे ॥

गुणि मगणु साधिवि ठाणु णिवाधिवि विज्जी हियवइ कामे ॥ १६ ॥

७ MBK परिगणिय, ८ MB °भूमिमोय° ९ MB जहि णिवसइ गुणमणु

16 १ MB जंबुणय°, २ MB वि पविमल ३ M तहि तणउ सुपविमलु जलु पिइवि, B तह तणउ जि पविमलु जलु पिइवि ४ M सुरवरउलसेविय°, B सुरणरउलसेविय° ५ MB °रूपइ ६ B पियपशु, ७ MB गंधारिपिणु ८ MB गुणमगणु

16 8 b जंबुणय° सुवर्णम् 5 b गव्वूइ° क्रोशद्वयम् 12 °रामे रमणीयेन

17

अमिवापरवाहदु गेहिमिध
 विज्ञामहाससपमभर्त
 मर् इच्छहि स्रष्टव अमु अह
 त विस्तुमिध मरहसेवाहिभर
 जोसद स्रष्ट पयदु स्रष्टरिपिप
 महु अणमिसमाभी परमरिभि
 सा पं गेर्षैठ भिद विमिधयद
 ता कसिभि पिगकसेसियद
 सिमुसमिसविहदाहाकियद
 ककडीहापदककयभियद
 केभियमोवसपमिमहकद

इदं अपि पसिद तदिमाकिमिध ।
 एभि दुजंय इदं विज्ञाहर्त ।
 इदं इहदु कारं वि मरिध तद ।
 माधर इदं स्रष्टरि मृदमद ।
 किं केपहि बोमविहारीमिध ।
 जो पंरसिभि स्रष्टर वरुमिभि ।
 इदं पुणु इह होमि माह तयद ।
 अंसरह एवमियरिध पसियद ।
 ककयकवीधंजककाकियद ।
 गुजापुंजाकयकयभियद ।
 किमिकिसिदं कयककयमद ।

धत्ता—सुगुण्यगुणिष्ठासहि विभुषिकासहि धिरसत्पापमेहहि ।

जादपु अवेयहि पहरकमेयहि मिष्ठासहामदेहहि । १७ ।

18

अपमीअविसुमि न तहि हया
 यिप विममियविप सुजायन वि
 मो तं हेतुमियह बुमियद
 अह मरद यियठाकदु कसह
 मं कसेअसु अं मर् बुमियद
 राव यम मनेयिणु मयकयरि

दियपं अपन गुणकसि कया ।
 जावति तो वि कककोय अ वि ।
 हा किं मर् विपमनु बुमियद ।
 जो गुमनु वि विपमिधि यकद ।
 विज्ञाव येमिभि जावामियद ।
 अमरहि बुमिद मरिहिरिहहि ।

17 १ M बुमिय २ MB वरुण ३ MB केवद ४ M ककयद एवमि रिठ येमिद ।
 B ककद एवमिभरु पसियद ५ K सिमुसमिध

18 १ MB हय २ MB विमयद ३ MB यम

17 5 अ औपय कक वी कदु ककय मय मर्याद, U क वरुणि वि औपय 18 "वरुण" ककयद.

तुंदुहिसरु महरु समुच्छलिउ
तेणुत्तउ इदं पेसियउ
जा पइ रोहिदि" थिय घणथणिय
तुह सीलु णिहालहुं पट्टविय

रइपहु णामें सुरवरु मिलिउ ।
मइ तुह सुईभाउ गवेसियउ ।
सा ण हवइ खेयदि सुरगणिय ।
पइ णियजणणी विव चित्तविय । 10

घत्ता—कुरुकुलणहयलससि णाणुब्भववसि कंपावियदसंदिव्वइ ॥

चारिन्नु तुहारउ भवभयहारउ भणु किर केण ण युव्वइ ॥ १८ ॥

19

जो रुच्चइ सो तुहु मग्गि वरु
वरु मग्गामि णाणपवित्तियरु
अवरें वरेण महु कल्लु ण वि
जहिं सोअणु कैयाइ ण सचलइ
सो मोअणु णिहेलणु जिणवरहो
ता वंदिवि जयरायहु चरिउ
तं देवपससइ राइयउ
रीणउ गइ विरइवि णहयलइ
कणयमयकोणताडणखमहं
सहेण तेण आयडियइ
सुरसरितरंगससियरसियइ

त णिसुणिवि पभणइ णरु पवरु ।
वरु मग्गामि हउं ससारहरु ।
पुणु णिवडइ सुरवइ चहु रवि ।
जहिं कामहुयंतु ण पजलइ ।
हउ तत्ति करंमि सुग तहु वरहो । 5
गउ अमरु अमरलोयहु तुरिउ ।
वहुवरु केलासु पराइयउ ।
आसीणउ रयणसिलायलइ ।
ता णिसुंउ सहु सुरडिडिमहं ।
विण्णिं वि गयाइं महियडियइ । 10
जहिं भरहणराहिवणिम्मियइ ।

घत्ता—चामीयरघडियइ मणिगणजडियइं दिट्ठइ घरइं जिणेसरह ॥

पयपर्णवियसीसहं तहिं चउवीसह दिक्खादमियदुरासह ॥ १९ ॥

४ MB जयभाउ ५ B रोहिय ६ MB चित्तविय ७ MB दह°

19 १ MB पवरणरु २ M सहु ३ MB ण काइ वि ४ MB हुयासणु पजलइ ५ B करउ
६ MB सुणित ७ MB विण्णि वि विगयाइ महडियइ ८ M जिणेसह ९ MB °पणमिय°

18 11 णाणुब्भववसि ज्ञानोद्भवानि इन्द्रियाणि तेषा वशी; °दि व्वइ दिक्खतीन्

19 9 b णिसुउ नि सुत 18 °सी सइ श्रीशानामिन्द्रादीनाम्, दिक्खादमियदुरासह दीक्षया
दमिता उपशमिता दुराशा भोगायाकाक्षा यैस्तेषाम्

पास पासासिकेराण हिय
घंदे वयचहुमाणियम

सत्तण वि दसिमियेधम्मसुय ।
मिस्सियहुमाणियं ईरम ।

यत्ता—जिह भरहणरिंहे कुचलयचंदे घदिय सयल जिणेसर ॥

तिह तें जयरण समियकमाण पुष्कयन जोईसर ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिमट्टिमहापुरिमगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतधिइण
महाभञ्जमरजाणुमणिण महाकये जयसुलोयणानित्यघदण
णाम छत्तीसमो परिच्छेओ समत्ता ॥ ३६ ॥
॥ सधि ॥ ३६ ॥

१४ B °करण° १५ MB दसिमियधम्मसिय १६ MB चरिमं

१६ b सत्तणे स्यादि - शत्रूणामपि दर्शना धर्माधर्मप्रतिपादनात् श्री विभूतिविशेषो येन
माण नियम मतेरुपलक्षिना वर्धमाना उत्तरोत्तरा नियमा नियतकालप्रतानि यस्य यस्माद्वा ॥
१७ पुष्कय त जो ई सर पुष्पदन्ताश्च योगीश्वराश्च

अपरापं रूपविशिष्टमिदं पसरिष्यकरणिर्दंष्ट्रं ॥
तन्नीसदं त्रिषदं अर्धेणपदं त्रिषयां पद्विषयं ॥ ५४४ ॥

1

धनुर् सुदीर्घा चरया आम
 ते त्रियसहि गय सङ्ग समसत्तरु
 बहुवर्यं यथेप्पिचु गुरुरपाई
 पत्तेहि तेहि बोहिं वि ज्ञाहि
 वरथिअयवअयनाइपाई
 वीरपाई माजमंशरजिभुम
 सरररपविमङ्गलमगाइपाव
 पापाव अहिइणिइइपाई
 जार्पत्तहि ओयपत्तेलु विडु
 वलीस सुत्तं वरिडु पङ्क
 ओरमवड माथिब वंघसूर
 किबरवा बोणिय महार्त्तस

तर्हि अपिप्य मुनिवर विष्णि ताम् ।
 अर्हि पिसवर रिसु तिष्ठावसरम् ।
 मग्नेय तव तर्हि वि मयारं ।
 विषयमणवंधवकपमजेहि ।
 शौरं वसति पमोहवारं ।
 माधिककर तर्हिमायकर्म ।
 पपुमिपयतिष्ठ वेरपाठ ।
 मुनिप्यावचरं सुजदवचरं । 10
 मयिमंडड अर्हि अपजडु विदि ।
 मयेसक बीपड वार सङ्क ।
 सपुसिसमहापुरिसपरिद्वार ।
 ते कपमहाकारकमीड ।

सत्ता—किपुरिमाहं पया विणिज्ज जण कहिअ पुरिस किपुरिसं वि ।

अपि विहिः सोमप्याहृतपुद्गेन अथकोपनि जर्षेण विहितिः ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following names-

[illegible]

मीमांसासूत्रादिसिद्धांतानुसारेण तद्विषयं प्रतीयते ।
मीमांसासूत्रादिसिद्धांतानुसारेण तद्विषयं प्रतीयते ॥ १ ॥

GK d not give t

1 १ MB *विशुद्ध १ MB डीपी १ M नयापरा B शुद्ध १ B omits the foot
१ G कदम्ब १ MB *वेग MB भरि १ MB सिपुलि १ M नयापरा B नयापरा

1 19 नवरीस मुरिह सवादि मज्झिमसिमा हावक रत्नाः, मज्झिमसिमा रत्न मज्झिमसिमा
मज्झिमसिमा वेदि.

2

गंधव्यहं पटु समधिसमणाम
जम्बिखद पुण्ण मणिभद भणिय
तर्हि काल महाकाल वि पिसाय
वल चइरोयण दणुइद कदिय
पइ वेणुणालि पुणु वेणुदेउ
दीवर्हि दीवगउ दीवचक्खु
अमियगइ अमियवाहण दिसेस
गज्जत पत्ति अलिणीलदेह
अग्गिंघ अग्गि हुयवहसिहाह
इय पेक्खिधि वीस वि भाचणिद

रत्नखसहं भीम अचंतभीम ।
भूयाहिव रूच विरूच भणिय ।
दाधिय मेहिणिहि पिसायराय ।
णौहंद धरण फणिवइ ण रहिय ।
सोवण्णकुमारहं सोक्खहेउ ।
उयहिर्हि जलकतु जल्लप्पदक्खु ।
हरि हरिकंत वि सोदामणीस ।
थणियाहिव मेह महंतमेह ।
वेलव पहंजण पवणणाह ।
धम्माहिणंद वदिय मुणिद ।

5

10

यत्ता—विभयपूरियहियउल्लण हरिसुप्फुल्लियवयणं ॥

जय जय पमणत्ते जयणिवेण चउदिसु पेसियणयणं ॥ २ ॥

3

णाहेयपायणियडइ चईट्टु
पुणु वीयउ गणहरु जईवरिंदु
दढरट्टु दिहिपरियरु सत्तुदमणु
धम्माणंदणु इस्सिणदणक्खु
गुंणि वाउसम्मु झाणोवविट्टु
रिसिं अग्गिगुत्तु अण्णेकु गोत्तु
हलहरु माहिहरु माहिंदु धीरु
विण्णाणवतु विण्णायणेउ

पुणु वसहसेणु गणणाट्टु दिट्टु ।
अवलोयउ कुंभु महारिसिंदु ।
गणि देवसम्मु धणदेउ समणु ।
जइ सोमयत्तु चुरदत्तु भिक्खु ।
देवग्गि अग्गिदेउ वि चरिट्टु ।
तेयसिउ सत्तुदयासगुत्तु ।
वसुणउ वसुंधरु अचलु मेरु ।
मुणि मयरकेउ हयमयरकेउ ।

5

2 १ MB मुणिय २ MB णाणिद ६ B हुलपहक्खु ४ MB एत ५ MB अग्गिपइ
3 १ MB णिविट्टु २ MB जसयरिंदु ३ MB सोमयत्त ४ M मुणि वाउसम्मु; B मुणि वाउ
समुज्जाणो ५ MB सिरि अग्गिगोत्तु ६ MB सत्त ७ MB अचल ८ M मय°, B सय°.

2 7 a दि सेस दिक्कुमारा , b सो दा म णी स विधुत्कुमारा

पितृभिरु पवित्रु धर्षितुगुह
 पुत्रु अन्धगुह पुत्रु सन्धगुह
 पुत्रु विजयमन्त्रात् विजयमन्त्रु
 मन्त्र वि पत्येमात् पत्येमात्

खपडोसदिगुनु वि विजयगुनु ।
 पुनु सैज्जसि धायमि पडनु । 10
 विज्जह सिदिज्जपण्ड म्भडनु ।
 म्भडरासी म्भडह पम्भार ।

वस्तु—विदिता निदिपौ इव प्रितियसे शायदीय मयधौत ।

ओहय अण्ये विपन्नमहर्षे सत्रं वि साह यदाय ॥ १ ॥

1

इमातवमहातवततवतवई
 तवसिखपुत्रविद्याहपई
 आहारवतपुत्रव्याख्याई
 अविपकसुखसापरपारपाई
 पयपीपकापुत्रोत्तराई
 पंचविह्याजगैपापपाई
 छम्मासवरिसइववासपाई
 केवप्यइवपिजिवाप्याई
 सममकुमिचकेवगतपाह
 दुखपपरवाहगिराहपाई
 अविपकपुत्रमिषकारपाई

विष्णुतनय सर्वतर्ह्यं पौरुषवर्ह्यं ।
 अविमर्शाद्युक्तद्वन्द्वं शुभ्राक्षरवर्ह्यं ।
 मधुपह्रियर्ह्यं माक्षपासात्पादवर्ह्यं ।
 बभ्रुवर्ह्यं क्षीरसंगवर्ह्यं क्षीरपादवर्ह्यं ।
 वैश्वदेवपितृविसिद्धिमाप्नुवर्ह्यं ।
 पुष्टिपथपथपञ्चापपथवर्ह्यं ।
 तर्ह्यं कौटर्ह्यं वरुणाक्षिपवर्ह्यं ।
 बभ्रुवर्ह्यं वैश्वदेवपुत्रवर्ह्यं ।
 पासात्पादवर्ह्यं क्षीरपादवर्ह्यं ।
 पृथिव्यवर्ह्यं क्षीरपादवर्ह्यं ।
 बभ्रुवर्ह्यं क्षीरपादवर्ह्यं ।

पता—इह सो सोमश्वरु विष्णु मुनि इह मेरुपारु बि समिपमडु ।

[illegible]

१ MB नवदत्त १ MB भवदत्त काव्य ११ MB विविधा मि १३ MB कल्प ११ B *कल्प

4. १ BHB कलियुग १ MB के अरु १ MB अणुपात्र १ M पदार्थ १ M अणु-
 ६० १ M reads this foot as 11 a. १ M read this foot as 10 b १ B कलियुग
 १ M अणु १ MB के अरु

4. 9 ६ पादावेत्यादि—अष्टादशवर्गविध्यां तस्य विधयः 10 ६ पदवाहयि उहयई नववि
धयस्यिउहयत्वात् 11 ६ अविमनयवयम्” विविधविधाः

5

इहु जोयहि भाँयसहासु तुज्हु
 जेणासि सयंवरि सूरदित्ति
 इहु सो दुम्मरिसणु णरवरिहु
 सम्मत्तसुद्धिसोहियमईहिं
 ऐकंवरलइययणत्थलीहिं
 जल्लमलविचिसंगोयरीहिं
 सुइसीलसलिलसगहसरीहिं
 आसंधियवंभीसुदरीहिं
 अज्जियसंखहि कहियाइ जाइ
 तेत्तियइ जि लक्खइं सावयाहं
 जीवइ अदिण्णहिंसावईहिं

थिउ जाणिवि धम्महु तणउं गुज्हु ।
 रुसाविउ महरणि अक्ककित्ति ।
 समभावि परिट्ठिउ हुउ मुणिहु ।
 णाणुग्गमणिहूरियरईहिं ।
 दलवट्ठियकल्लिमलकंदलीहिं । 5
 विज्जाहरीहिं भूगोयरीहिं ।
 सेवियकाणणमहिहरदरीहिं ।
 लक्खइं तिण्णि संजमधरीहिं ।
 पण्णाससहसअहियाइं ताइं ।
 परिपालियवारहविहवयाहं । 10
 तहिं पंचेव य लक्खइं सावईहिं ।

घत्ता—कागणिकेरु सुरगुरु फणिवइ वि परिगणन्तु मणि मुज्झइ ॥
 पणवंतहं देवहं दाणवहं मृगहं संख को बुज्झइ ॥ ५ ॥

6

अध्वंततत्ततवणीयवणु
 पेच्छिवि सहमढवि जगजणेरु
 इच्छियमवममणविणिग्गमेण
 इह चक्कवट्ठिसेणाहिवेण
 जय देव दिण्णपविमलमणीस
 जय जीवलोयवंधव दयाल

कंकेल्लिकुरुहछाहीणिसण्णु ।
 णं जवूदीवहु मज्झि मेरु ।
 सकलत्तै विलसियउवसमेण ।
 पारन्दु धुणहु जयपत्थिवेण ।
 जय जिण तिष्ठुर्येणचूडामणीस । 6
 जय पुरतित्थकर सामिसाल ।

5 १ MB भाइसहासु; K भायसहासु but corrects it to भायरसहासु २ MB एकंवर°
 ३ MB °विलित्ति ° ४ MB पंच जि लक्खइ, K चउपण्ण जि लक्खइ ५ MB °कर ६ MB मिगह.
 6. १ MB मवमवण° २ T तिहुवण°

5 11 a °हिं सावईहिं हिंसा आपदश्च याभि

6 1 b °कुरुह° इक्ष 2 a जगजणेरु अपमनाथ 5 b तिहुयणचूडामणीस त्रिभुवनचूडा-
 मणिमौक्तस्त्य ईश स्वामिन् 0 b पुरु° प्रथम 7 b मयतरुकरेण मृत्युतरुमज्जहस्तिव (?)

8

जिण्णद्धघणघारिधुयमद्धरेण
 मेह्णिहि भरुद्धादिव जाउ पट्टु
 तियसिद्धु त पडियण्णु तेण
 जं चिरु पिउणिलयद्धु णिग्गयाहं
 जं सत्तिसेणपरिपालियाह
 ज भग्गुरणहरहिं दारियाह
 मुणिघरह गलेण णिहालियाह
 वेउभियतणुसोहाहराह
 जं घणि पच्चारिउ भीमसाहु
 त सुयराभि सुदरि जामि अज्ज

ता विहमिधि चयिउ पुरंदरेण ।
 होसह गणहरु तवलच्छिउगेदु ।
 णियपणरुणि भाउच्छिउ जपण ।
 ज णासिवि सरंदासहु गयाह ।
 अरिणा घरि सिद्धिणा जालियाहं । 5
 विण्णि धि मज्जारें मारियाहं ।
 ज पिउचणजलणें पडलियाहं ।
 जायाह सग्गि जं घट्टुवराहं ।
 ज ह्यउ सो तेलोफणाहु ।
 साहेयउ मंहं परलोयफज्ज । 10

घच्चा - आयणिवि चल ससारगाह विह्णिणियसव्वसरिणरप ॥

आमेह्णिउ पिययमु पणरुणिण रुच्चन्तु वि गिरिधीरप ॥ ८ ॥

9

लहुयहिं विजयाहहिं भायरेहिं
 अवगण्णिउं तंणु जिह पुह्हरज्जु
 ह्यकारिउ पुत्तु अणंतवीरु
 तद्ध पट्टु णिवधिवि जैयरवेण
 भाउच्छिवि जीवाजीवभेय
 अरिमित्ति पउजिवि सरिस्स दिट्ठि
 देव्यं भावेण वि मुक्कगंयु
 जउ दिक्खकिउ पणविउ जहंहि

दिज्जंतु धि घम्मकयायरेहिं ।
 मयभावजणणु णं पीयमज्जु ।
 गुरुविणयचंतु परलोयभीरु ।
 जिणघरु जर्यकारिवि घणरवेण ।
 परियाणिवि णाणाणाणजेय । 5
 सिरि लोउ विह्णणउ पचमुट्ठि ।
 णिग्गयु णियच्छिउयमोफत्तपंतु ।
 अट्ठहिं सपहिं सह णरवरंहि ।

8 १ G मदरेण २ MB मेह्णिहि ३ MB पिय° ४ MK सरताहदु

9 MB तिणु २ MB ह्यकारिवि पुणु ३ MB जयवरेण ४ MB जयकारेण ५ M दिव्यं

9 5 b णा णा ण जे य चेतनरूपं ज्ञेय परिच्छेद्य, अथवा, नाना अनेकप्रकारा गुणपर्यायापेक्षया, अनाना एकप्रकारं द्रव्यापेक्षया, तच्च तद् ज्ञेय च

गंधारिगोन्विषणसियाउ
 विच्छद्वियघरवावारतति
 ता पियधिओयनिदितवियकाय
 हा पुत्त पडिच्छिउ काह पट्टु
 इंदियइ पंच णउ पीलियाइ
 मइ पायइ काइ जियतियाइ
 इय सा जपंति मुयति रिद्धि
 मंतिदि विणिवारिय दिण्णकामि
 घणरवधरिणिउ धयपयणइउ
 पयारसंगसुयधारिणीइ
 देवीइ अकपणु तणुगदाइ

विग्भवधिल्लउ पैरिवासियाउ ।
 अपरिग्गइ थिय जयरायपत्ति ।
 जूरइ अणंतवरवीरमाय ।
 विणु पिडणा रज्जे को मरट्टु ।
 प्राणेण ण णयणइ मील्लियाइ । 5
 पइविच्छोएं तप्पतियाइ ।
 णियसुयट्टु देंति परलोयसुद्धि ।
 थिय रायसासणाणंदधामि ।
 अवरेउ संजायउ सजईउ ।
 णाणापुरगामविद्धरिणिइ । 10
 रयणहि मकइंतव कइउ ताइ ।

घत्ता—सुय पुच्छिउ वभीसुंदरिदि देव तिलोयालोयण ॥

अग्गइ कहिं समउ जयरिसिदि होसर केत्थु सुलोयण ॥ ११ ॥

12

भुवणत्तयलोयसुहकरेण
 उप्पाइवि केवलु विमलु णाणु
 होइवि अहमिंदु सुलोयणा वि
 माणियगिच्चाणरईरमाइ
 होही कर्णयद्धउ णाम राउ
 लहिदी सुइदु अमरणु अकरणाळु

ता भणिउ पढमतित्यंकरेण ।
 जाणसइ जउ णिव्वाणठाणु ।
 सुइभावें भावाभावभावि ।
 सुइं भुजिधि वट्टसायगसमाइ ।
 तउ चरियि पणासिवि रोहू राउ । 5
 जेवहु मल्लिउ तेवहु णालु ।

11 १ MB पत्तसियाउ, २ MB ण णिल्लियाइ ३ MB अवर वि ४ MB रयणिहि

12 १ B कणयट्टुउ २ MB सो सुराउ ३ MB सुदु अमणु अकरणाळु

11 8 b आण द धा मि हस्तिनागपुरे. 9 a वयपयणइउ वतजलनध 11 b रयण हि रत्ता-
 आविकाया

12. B a अहमिंदु अच्युतेन्द्र

14

सुव्वइ दुंदुहि णहि वज्जमाणु ।
 देसाहि व उच्चायति चरुंउ
 भामंदलु णवरविमडलाह
 पुव्वंगघारि तवतणुसरीरं
 देसावहिपरमावहिसमेयं
 णवदिक्खिय सिकखुंयं संत दंतं
 णिहंयक्खयअक्खयपयसमीह
 जहिं गच्छइ तहिं गच्छति भैव
 माणव तिरिक्ख सुरवर असक्ख
 झं झं करति झुणि झल्लरीउ
 तुंवरु णारय गायति मिट्ठु

पणवइ जणवउ पुलइजमाणु ।
 वट्टुकुसुमगंधपरिमलित मरुउ ।
 गच्छंति समउं घट्टुमेय साहु ।
 मणपज्जवर्णाणि सैहावधीरं ।
 केवलिकेवलणणेकतेयं । 6
 वेउव्वियाइ वट्टुरिद्धिवंत ।
 कइगमयवाइ चारुहं सीह ।
 जहिं अच्छइ तहिं अच्छति सव्व ।
 इ इ हुयति चउदिसिहिं संख ।
 णच्चति णरामरसुदरीउ । 10
 भरहं दिट्ठउ पिउं सुंहु णिविट्ठु ।

यत्ता—आउच्छिउ धम्म महीसरेण जं जिह जेहउ पेक्खइ ॥

केवलि परमपउ णिकलुसु तं तिह तेहउ अक्खइ ॥ १४ ॥

15

गुणु मोक्खु तउ वि पोगलु वि दुविह
 भुवणाइं तिण्णि रयणाइं तिण्णि

णिज्जरं वि दुविह वज्जरइ अरुहु ।
 सल्लाइ तिण्णि गुत्तीउ तिण्णि ।

14 १ M सुम्मइ, B सव्वइ २ B दोसाहि व ३ B चार. ४ M °मलियगरुउ, B °मलित गार
 M adds after this in second hand and in the margin चउसहसदलभयसयविहीर ६ B
 °णाण ७ M दुइवहसहास ८ M adds after this in second hand and in the margin रिखि
 सयपण्णास विमुक्खु वास ९ M adds after this in second hand and in the margin तेरघ-
 सहस पयडियविवेय, B adds सुणिघसहस पयडियविवेय १० M °केवलणाणक°, B °केवलणाणक°.
 ११ M adds after this in second hand and in the margin णयणगई वउसुण्हिं समेय,
 B adds णयणगई चउसुण्णसमेय १२ MB °सिक्खिय° १३ M adds after this in second
 hand and in the margin दहविउणसहसरिउसयमहत, B adds दहविउणसहस रिउसयसहत, ण
 हु वयभयदोएकु वि णिरीह १४ B णिहिअक्खयसुअक्खय°. १५ MB सव्व १६ MB जिणु १७ B सुहणिविट्ठु

15 १ MB पोगलु दुविहु २ MB णिज्जर

14 २ a चरुउ अर्घपात्रम् 4 a ° सणु सरीर °कृषाक्षरीरः

15 9b °जलजायकेउ मकरध्वज काम.

जीवहं गार्ह कथियौह तिष्ठि
 गुणवयहं तिष्ठि जगि ज्योय तिष्ठि
 कथयिह कथयह संसारसैरगु
 कथयिह प्रमाजु कथयिह जि हायु
 कथ हायह कथ देवहं विद्याय
 कथयिह जि वंजु कथयिह जि ज्ञासु
 कथयिह जि वंजयिहाछेह

जगदेहजमद धारय वि तिष्ठि ।
 हयपाठे भासिष काय तिष्ठि ।
 वाकाय्य बरविष्टु भविर् मरु । ४
 बरविष्टु ब्रह्माय दीप्तमायु ।
 बौद्धिभ्या लक्षविष्टु बरुचसाय ।
 विष्टु वि बरविष्टु शुभगणविष्टु ।
 मायविष्टु विष्टुयव्यवसाय ।

सप्त—सुखाय पंच व्यापारिणि व्यापारं पंच वीरिणः ।

10

विष्णवेयं पञ्च गौरैः सङ्गृह्यै पञ्चैरिवै वि सिद्धै ॥ १५ ॥

16

मममात्तर्गोरिषयार् पंच
मात्तर्गोरिषयार् पंच
संसारस्यैवार् ह्येति पंच
कर्मकर्म कर्मकर्म समस्त
पदार्थार् पदार्थस्यैवार्
पदार्थार् पदार्थस्यैवार्
मम मात्तर्गोरिषयार्
मममात्तर्गोरिषयार्
मम मात्तर्गोरिषयार्
मममात्तर्गोरिषयार्
मम मात्तर्गोरिषयार्
मममात्तर्गोरिषयार्
मम मात्तर्गोरिषयार्
मममात्तर्गोरिषयार्
मम मात्तर्गोरिषयार्
मममात्तर्गोरिषयार्

पंचतियकाव सन्निहीत पंच ।
 कबीर महाभरपा बि पंच ।
 गुन पंच मेव गिरिबर बि पंच ।
 छोटोसामाव बि समय बि मय ।
 सत बि मय सत्ताहेमाहीत ।
 बन्धेव जीवगुण ते बि मनु ।
 पबिसतु बि जय विहि दुनकाहरी ।
 बेजावतु बि बहविहु दुखम्मु ।
 फबिससिसह रह विधिबन सुहासि ।
 समारविह सायब किम्ब ।
 बारह विनयपबविबिभादरी ।
 बारह तह बारहविह सुयम ।

धरा—तेरु बरियंगई मँनिबनई तेरु बिरियाछनई ।

अथर्वह शुभदापायोहनाई अथर्वह मध्याह्नकायाई ॥ १५ ॥

1 MB इतिहास ४ MB संसाधन ५ MB प्रदर्शकाला प्रदर्शक प्रदान ६ MB निष्कर्ष
७ MB प्रयोग

16. १ MB प्याल्फवार्ड २ MB वरनेम ३ B कजुकिहागवार्ड, ४ MB वासुद एम वासुदेविक हावर्ड.
५ MB एमिनावा

17

अरहंतं सिद्धतासियाइ
 चउदह मल चउदह चित्तगय
 चउदह रयणइ गुणिगंहियणाम
 पण्णारह कम्मधराविहाय
 सोलह वयणइ दुहदारणाइ
 सजम दहसत्त दहट्ट दोस
 असमाहिणिलय वज्जरिय धीस
 वावीस परीसह कुमुणिभीस
 तित्थयर भणिय चउवीस ईस
 छव्वीस समासिय चसुहभेय
 आयारकप्प पवरट्टवीसं
 भणियाइ मोहमंदिरइ तीस ।

चउदह पुव्वाइ पयासियाइ ।
 चउदह कुलयर कयमणुयसथ ।
 चउदह दफ्फालिय भूयगाम ।
 पण्णारह उवपासिय पमाय ।
 सोलह जिणजम्महु कारणाइ । 5
 णाहज्जाणइ पक्कणवीस ।
 कयमणमल सयल वि पक्कवीस ।
 सुहयडुज्जयणाइ वि तिथीस ।
 मुणिवयमायउ पुणु पंचवीस ।
 गुण सत्तवीस जइवरविहेय । 10
 अघमुत्ताइ वि एज्जणीस ।

घत्ता—एयाहिय तीस विवायरस कम्मह कहिय जिणेसै ॥

वत्तीसुवएस मुणीसरहं कुडिलाउचियकेसै ॥ १७ ॥

18

ज जलि यलि णहि पायालमूलि
 त पुच्छंतहु पणवियसिरासु
 गुरु वंदिवि णिंदिवि दुरिउ डुट्ट
 णरणाहें रयणिहि सुत्तएण
 सूयरदाढाखडियकसेर
 अफिजउ पहाइ सुयणहु हिणण
 फिउ णयणगलियजलविंदुएहि

ज थुल्लु सुहुमु तिजगंतरालि ।
 भासिउ जिणेण भरहेसरासु ।
 गउ णिउ णियपुरु णिलयणि पइहु ।
 सिविणंतरी गुरुपयभत्तएण ।
 इललुलिउ णिहालिउ तेण मेरु । 5
 सिविणयविवरणउ पुरोहिणण ।
 वच्छत्थलैहारोवरि चुएहि ।

17 १ MB सिद्धताइयाइ २ MB मुणिगणियणाम ३ MB णाहासाणइ ४ MBK सबल
 ५ MB सुहयज्जयणाइ ६ B तिणिग धीम ७ M adds after this वयममिदिपमुह जपइ जईस
 ८ MB एयाहितीस

18 १ MB सुविणय° २ MB वच्छत्थलु

17 1 a सिद्धतासियाइ सिद्धान्ताश्रितानि 2 b °संघ सस्या मर्यादा

तिष्ठारयविपरिविस्तुक्तमायु
उद्धरिषि कोठ मज्जापुं दीपु
महि विहंपिषि पुण्यं पङ्क सफ्यु
पावचवचकुमुमामोयमहुत

काष्ठादिमहामुहि निवडभापु ।
चउयह विषि वरिससहासरीनु ।
केसासु पपाहउ बाजचफयु । 10
भाहविषि पसियउ सिहसिहह ।

पद्या—सुसमहसहि समत महापिसिहि कामकोहमिज्जासपु ॥

यित पुनितमविषि जिवाहिवर वंधिषि पञ्चियंकासपु ॥ १८ ॥

19

आविषि' अमज्जु अणजचवपु
सुविस्तुयपुहिर्मासावपासु
गिरि सोहर सुपमहुमासवेहि
गिरि सोहर विपमिपविस्तोपेहि
गिरि सोहर बाजविहमपहि
गिरि सोहर कविपमोरपहि
गिरि सोहर धम्मवपय केम
गिरि परिबंधिउ सवराहिमेव

कटुपेउ मोहसिउ कपिषि ववपु ।
बावउ मरहु वि वपुवपासु ।
त्रिपु मोहर उद्धहि कामवेहि ।
त्रिपु साहर कम्महुं निजोपेहि ।
त्रिपु सोहर पिसिहि सुविमपहि । 5
त्रिपु सोहर सुपसरमोरपहि ।
त्रिपु सोहर धम्मवपय केम ।
त्रिपु पववर्ते मज्जाहिमेव ।

पद्या—ठा बाहु समुग्धावंतपेहि वीरसमपसंतावर् ॥

वेयविपकामगोसेहि करउ निम्बि वि आउपमावर् ॥ १९ ॥

10

20

मुनिपवर्णे कित किरियाविहापु
जीमार्तिइ ईडावाउ जीउ

ईदुपवेव ससरीरमापु ।
तिज्जममावरमवरवहुं जीउ ।

1 MB 'पानु' ४ MB निविडवापु MB मज्जाप १ MB 'त्रिपु' ७ G निविषि ८ MB निविहिवर.
५ R 'व' १ MB पानिषि कवचवपयु १ M कटुपेउ १ MB वीरसिउ ४ Tp सवरोरपेहि इति को
उपमपुच्छाव ते उरगाव ५ B वीतपु

19 1 अमज्जु अणजचवपु अमज्जवपु उपापचवपु १ ॥ सुपमहुमासवेहि समु-
मज्जपेहि ६ ॥ उरपोरपेहि मरणा कम्मवीडा करणा ते 7 ॥ धम्मवपय कमेवता उरविमेव.
६ धम्मवपय वर्यमावेव. ७ अतुगवावंतपेहि समुग्धावतिवेहि एवमपापजाउकोकपुवपेहि.
20 1 किरियाविहापु कटीपरापमवेवता वहिमि उरगाव १ 'वरमवरवउ उरगावपरा'
मवे निरविमोववरउ उरविहावा वेवपराव परवतपु

अङ्गुपसारिउ पुणु सुरीह
अप्पाणउ देवें देवणविउ
णीसेसलोयपूरणु करेवि
तेजइयकम्मओरालियाइ
मुणि मेळिवि तिजउ सुहुमकिरिउ
तहिं सुकझाणि आयउ अजोइ
थिउ देहवमंतरि सामिसालु
अच्छनु वि अगु ण छिवइ देउ

ण तिहुयणवरि दिण्णउं कयाहु ।
रुंआयारें सहस ति थविउ ।
विर्वरीण चारें सवरेंवि । 5
तिण्णि वि अगइ णिआलियाइ ।
सपत्तु चउत्तु छिण्णैकिरिउ ।
मणवयणकायमुकउ विहाइ ।
क य ग व ड समक्खरमणणकालु ।
फलछलि व जरेदेण्डीउ । 10

घत्ता—उसणणाणाईहिं वसुसमहिं सिद्धगुणहिं सपण्णउ ॥

ससहावें जांइवि परमपण परमेसर सपण्णउ ॥ २० ॥

21

ता सकें कय माणवमणोज
सियसिबियहिं णिहियउ णाहदेहु
भभाभेरीझलरिसयाइ
गायंतिहिं किंणरकामिणीहिं
धिप्पतिहिं णवकुसुमजलीहिं
सहलक्खवधुंवाधिलेवणेहिं
भाढत्तचित्तधुइकलयलेहिं
कप्पूरवंदणागुरुतैरुक्ख
अचेण्णिणु रिसिपरमेसरालु
पय पणवतहिं तबिरतिडिक्कु

अरुहहु पवमकल्लाणपुज ।
कइलाससिहरि ण अरुणमेहु ।
सुरैत्तरिणहिं तूरइ हयाइ ।
णञ्चतिहिं फणिसीमतिणीहिं ।
उब्भियउल्लोवधयावलीहिं । 5
भिगारहिं कलसहिं दप्पणेहिं ।
अवरेहिं वि णाणांमंगलेहिं ।
सल्ल विरइय सडिवि विविह रुक्ख ।
तहिं णिहियउ अंगु अणगणासु ।
अग्गिण्हिं मड्ढाणालु विमुक्कु । 10

20 १ G सरीहु २ M फयरायारें, B कयआयारें, T पयरायारें ३ MB विवरीरें, T विवरीए
४ MBT णिव्वालियाइ, ५ B छण्ण ६ MB मरण ७ MB जररेड ८ MB वसुसमहिं ९ MB
आइवि चङ्गइ तिहुयणसिहरि णिसण्णउ

21 १ MB सुरत्तरणहिं २ MB धूम ३ B पुरुक्ख ४ M सयल विइय खंडिवि, B सल विय
रयवि आडिवि

8 a सुरीहु देवस्तवतु देवसुत वा 4 b रुआयारें प्रतराकरण 5 b विवरीएवारें सवरेंवि प्रथम लोक-
पूरणसवरण कृत्वा ततो रुजवारसवरण ततो दण्डाकारसवरणमिति 6 b णिआलियाइ नि परिस्पन्दीकृतानि

21 10 a ० ति डिक्कु स्फुलिङ्ग

यत्ता—महार्जुन परतनु परतारिउ मयपरिमयणहु ममाउ ॥

मिहि रं संसारें तौमियउ शिबकमकममहुं कमाउ ॥ २१ ॥

22

तल्लखिउ धुनु यण्डेणियसंहु
पुनु मिमिउ गयवि आकाककाउ
तहु कुबहु गणहरजमहिमाइ
सिधिय बि सिहि पुणिय सोसियहि
ते मयिबि पुण्यजनु पयितु
मार्जयवि कंठि मुजहुयकसिहरि
महु मुर्जयसि मउरम्यमाइ

ये सिहिना मुकउ मयककंहु ।
तणु पनु कयडें मय्यमारु ।
मुयिबर लकारिय पयिमाइ ।
यय केव तिह मयिबि सयिपहि ।
अण्येकहि कयउ धमिहोसु ।
हिप्यकह किरियउ वाहिबिबि ।
असमंहुं शिह तं उहह कय ।

यत्ता—के तुम्हारे आत्मन मान्ते तुम्हें ॥ महु होउ विपारउ ॥

इय मयिबि विपारउ सुविपउ रई रिखहु केरउ ॥ २२ ॥

23

केही तुह तही होउ बोहि
इय सोसतहि कय्यामेपेहि
बितरयेतहि जोइसगमेहि
संधारैवीह महासईह
मउरेण कुकळुमियमयेव
केसयिबिखोरसि रिखरिवासि

अम्हई बि मयाप मैमि समाहि ।
बंदिपउ विपारउ केयरेपेहि ।
बंदिपउ विपारउ आकयेहि ।
बंदिपउ विपारउ अकयईह ।
बंदिपउ विपारउ परिपयेव ।
यणतुहियककाउमि माइमाहि ।

१ MB गयिब

22 १ B कयिब २ K मय ३ MB यय निव कय ४ G मयवि ५ MBK मुयमुक

१ MB मुययय MB मयकक

23 १ MB मयकमाहि

22. ॥ १ विहङ्गविरहपद्यवर्णन १ मुहङ्गविरहपद्यवर्णन १ विहङ्गविरहपद्यवर्णन

23 ० १ विहङ्गविरहपद्यवर्णन

सूरैगमि कैसणचउहसीहि
रोचइ सोयाउरु सयणविंदु
तेलोक्कमंदिवाधारवंसु

णिव्वुइ तित्थकरि पुरिससीहि ।
सइं सोयइ भरहु महाणरिंदु ।
कहिं पेच्छमि देउ जुगाइवंसु ।

घत्ता—पइं विणु जिण अधइ लोयणइ दिसउ असेसउ सुंणिणयउ ॥

10

उन्निमि हत्थ ओम्माहियउ पयउ वरायउ रूणिणयउ ॥ २३ ॥

24

तुहु मज्झ वण्णु जगहिंभवण्णु
पइं विणु को पालइ इट्ट सिद्ध
पइ विणु को जाणइ तच्चमेउ
पइ विणु अणाहु सामिय तिलोउ
इह सो मुउ जो मुउ गब्धि वसइ
तुह ताउ देउ तित्थयरु पवर
सक्केण जि त जि पउचु तासु
सो तुहुं किं सोयहि जणणु भणिवि
अरहंतु सरंतहं होइ धम्म
तं णिसुणिवि राणं दुण्णिरिक्खु

पइ विणु को कहइ कलावियण्णु ।
को विसहइ गुरुतवचरणणिट्ट ।
को होइ देव देवहिं वि देउ ।
ता गणहरु भणइ म करहि सोउ ।
छिज्जइ भिज्जइ दुहदलिउ रसइ । 5
परमण्णउ ह्वयउ अजरु अमरु ।
जो सुयरतहं णासइ किलेसु ।
जो जायहु सिद्ध तमोहु धुणिवि ।
मा मोहें तुहु संचहि दुक्कम्मु ।
मइइ साहारिउ तायिदुक्कलु । 10

घत्ता—गउ सुरवइ सग्गहु ससुरयणु वदिवि परमजिणेसर ॥

मडलियमहामंडलियवइ साकेयइ भरहेसर ॥ २४ ॥

25

सोमण्णु हयसुहदुक्खहेउ
गय णिव्वाणहु तिजगुत्तमंगि

सेयसराउ बाहुबलि देउ ।
यिय तिण्णि वि अट्टमघराणिरागि ।

० MB सूरैगमि ३ B किसण° ४ B सुण्णउ ५ MB ओमाहियउ ६ MB रुद्धियउ

24 १ M दुहमलिउ २ MB मरइ ३ MB हिययदुक्खु

25 १ MB तिजगुत्तमंगि

11 लो म्मा हि यउ उत्कण्ठित्त

24 2 a इट्ट सिद्ध इष्टा मोक्षयोग्यतया ये शिष्टा भव्या

25 1a हय सुहदुक्खहेउ त्यक्केष्टानिष्टविषय

सङ्गं गजपादं हि केवलायुषं हि
विज्ञादियं तादियं कर्मारेणु
महं मोक्षकं च सर्वव्यापिपणयि
कुङ्कुमविद्येन रोपेत्तपत्र
मन्त्रोदयि पंडुद एव केतु
मपत्तमरपुरवरपदरेवेत्त
मृत्तु मृत्पिस्तारिपिदिनेन
परिचरत्त न विद्वत्प्याह काम
हृदय पद्मेदि पद्मप्यताशु
केदिवि मन्त्रं च मन्त्रमोहपाश

आश्रितमपमोहमहाकर्षादि ।
 कालेन मेरुति वसहस्रसु ।
 यत्तदि वि तस्य साक्षेयवयदि । 8
 ह्यप्यप्यकि मुद्गु बोधतपन ।
 विविदि नरकम्पु सुविजिसेसु ।
 विषयस्य सप्तमिनि मदि मसेस ।
 तवचरसु कहर मप्यादिनेन ।
 तप्यज्जडं केचसु तासु ताम । 10
 वडयेवयिछापदि बुधमासु ।
 मदिमंजडि विहरति दीहकसु ।

ब्रह्मा—गड मरु वि मोक्ष विद्वत्तम विविहर्म्मसंयजतु ।

पैणिनिसाहचर्येण एव न लुप्तं वाक्यसंग्रहः । १५ ।

इय महापुराणे विष्णुमहापुरिषगुणार्जुनसारे महाकाण्डपुण्यवर्तविषयम्
महामन्त्रमहागुणमन्त्रिणम् महाकण्ठे सप्तहस्तरिसहस्रहमस्र
विम्बाधराज्यं नाम सप्ततीसस्रो परिधेःस्यो समस्रो ॥ ३० ॥

॥ अंघ्रि ॥ ३० ॥

॥ समाप्तमार्गिपुष्पम् ॥

१ MB ब्रह्मावर्त १ MB गङ्गावर्त ५ MB ललित, T ललित. ५ MB ब्रह्म, ५ MB ब्रह्म
५ B इति देव. M ब्रह्म तन्म B ब्रह्म १ M ब्रह्मदेवि पुत्र, B ब्रह्मदेवि पुत्र १ MB
ब्रह्मदेवि

8 अ ह्या इति कथं १ निवातिव्याप्तिकारोऽनु निर्वर्तिता पूर्वादि विधिना
वर्तिताः अह्नी मन्त्राणां निर्वर्तिताः कथं १० वतिवत्त निर्वर्तिता ११ अ वरमप्यनु
वत्तवत्त १४ "विद्वद्" वृत्तान् मन्त्रानाम्

NOTES

NOTES

[The references in these Notes are to Samdhis in Roman figures and Kadavakas and lines in Arabic figures. A brief summary of the contents of a samdhi is given at the beginning to enable the reader to follow the Text. The Notes that follow supplement those given at the foot of the page. T Stands for Tippana of Prabhācandra.]

I

[The Poet offers homage to Rsabhanātha, the first of the Tirthamkaras, and to the goddess of learning, and declares his intention to compose a Mahāpurāṇa. By way of introduction the poet says that once in the Siddhārtha year (881 of the Śaka era, i e, 959 A D) he arrived at the outskirts of the town of Mepādi (Mānyakheta, modern Malkhed) and being fatigued with a long journey rested there in the grove. Two men of the town, Annaīya and Indarāya, approached him and requested him to visit the minister Bharata who would give him a good reception. The poet was at first unwilling to do so because of his bitter experiences at the court of king Bhairava alias Virarāja, but these men assured him that Bharata was quite a different person and would receive him well. Accordingly the poet saw Bharata, was well-received, and rested there for a few days. Bharata then requested the poet to compose a Mahāpurāṇa so that he would make the right use of his poetic gifts, and offered him all help. The poet was at first unwilling, because he was afraid of the wicked who criticised even good works. Bharata asked him not to mind them. The poet then modestly said that he was not competent to undertake the task as he was ignorant of the great philosophical systems, works of the poets of the past, works on grammar, rhetoric and metrics, still he would undertake the task out of devotion to the personages figuring in the Mahāpurāṇa. The poet thereupon invoked the aid of Gomukha Yakṣa of Rsabhadeva and of Padmāvatī Yakṣiṇī, the goddess of learning.]

The poet proceeds: There is in the Jambūdvīpa a country called Magadha with its capital Rājagṛha. King Śrenika was one day seated

in his court with Odlandādevī, when a messenger brought to him the report that Mahāvīra had arrived at the garden outside the city. The king immediately rose from his seat to pay homage to him and recited a prayer glorifying him.]

1 The poet pays homage to Rishabha, the first Tīrthamkara.

1 *ॐ गुणविभक्तं सर्वम् इदम्*, T., having understood well the animate and inanimate divisions of the world. 35 *विश्वं विभक्तं विदुः शिवादिभिरपि*, T the Jina possesses a body which is divine, i. e., it possesses ten excellences such as absence of perspiration. The number of attainments which a Jina possesses is 31. See *Abhidhāna Cintāmaṇi* I. 57-61. Of these ten are peculiar to the body of the Jina. See IV 2. 42 *वसतिगन्धवस्त्रवर्णं, वसतिं धनसत्त्वमयं मोक्षम् कथं वाचं तद्वचने वेदम्*, T., one who preached the path leading to the city of eternal abode, i. e. emancipation or *Siddhi*. 36 *गुणविभक्तं विदुः शिवं, इदम् सर्वम् नै र्द्विगुणं वेदानां हस्तस्य विदुः शिवम्* T the bones of a large number of auspicious qualities. 10a *विमलिवर्णं वसुधामातुम्*, T The sky was rendered variegated by flowers which Indra dropped down from heaven. 15b *महावचं*, the poet wants to suggest incidentally the name of the metre which is *महावचः*. 17 *जगु निरीष, सर्व नीरीषे*, in whose preachings-

2 The poet pays homage to the five dignitaries of the Faith, usually called *वचसपति* 32, viz., *विश्व, विदु, वचस, वसुधाम* and *सत्य*, and also invokes the aid of the goddess of learning.

2. 36 *कोमलवर्णं कोमलानि वसुधामित्रवर्णं मोक्षमलमवर्णं च, सर्वं वसुधामित्रवचसम्*, T The poet describes the goddess of learning under the image of a fair woman: all the epithets used are therefore applicable to *सरणी* as well as *श्री*. 5a *उदये नमि*, going at will (applicable to a lady); moving in a metrical form (applicable to poetry). 6a *चोदयुषिणं चतुर्वर्णं पुष्पा मलनी, श्री तु चतुर्वर्णः (?) ह्रीं चतुर्वर्णं मलनी* 7 *ह्रीं तु पुष्पा मलनी (?) विमलये च श्री* T The goddess possesses fourteen *Purāṇa* books, ancient texts of the Jainas, now lost; the woman possesses partly of seven ancestors on the mother's side and seven on the father side. *पुष्पा मलनी, मलनीं हस्तमित्रं पुष्पं, श्री तु—*

मलना यजु न मल मित्रे च (मित्रे ?) ग्रीं वरो च श्रीं च ।

उदये तु महावचं नैव मलना तु दोषम् ॥

सर्वतो, चतुर्वर्णमलनीमलना ह्रीं हस्तमित्रं पुष्पं, T. The twelve *śūtras* are the

famous books of the Jam Canon such as आचाराङ्ग etc. The woman's body also is fancifully divided into twelve parts, two legs, two arms, the hips, back, chest, head, ears, nose, eyes and lips. 6b सत्तमगि, सरस्वती सप्तमङ्गोपेता स्त्री तु सत्तमगि धैर्यरक्षिता प्राणिषु कौटिल्ययुक्ता च, T It would be better to interpret सत्तमगि applicable to a woman as सत्त्वमाङ्गिनी पुरुषाणां धैर्यनाशिका

3 3a-b भुवणक्षेत्रासु तुङ्गि, रुद्रराज तस्येदं विरुद्धम् T We know that the Rāstrakūta kings had a number of *Brūdas*, we have in Puspadanta's works a few others such as Subhatunga (see I 5 21 and note thereon) and Vallabhadeva तुङ्गि seems to be of Kannada origin 7b मायद-गौडगौडलियकरीरि, आम्बलुम्बिमिलितयुक्ते, (garden) where parrots have gathered on the blossom of mango trees गौडलिय comes from गौडल, a Deśī word, which means a gathering Compare गोंधळ, गोंधळी in Marathi 9b सड means पुण्डन, so also अहिमाणवेरु in 12a below 14 वर or वरि, an expletive of frequent occurrence, means 'it is better,' 'I would rather prefer' 15 म गिहालउ सूरुगमे, let him not see in the morning the face of a king who is under the influence of the wicked

4 Drawbacks of royalty condemned

4 3a सत्तगराज, kingdom with its seven constituents, viz., स्वामी, अमात्य, सुदूत, कोश, राट्ट, दुर्ग and चल 4a विसहजम्पद, fortune born along with हलालु poison at the time of the churning of the ocean

5 Bharata glorified

5 3a पाययकडक्खरसावडु, connoisseur of the flavour of the poems of Prakrit poets. This epithet has a special significance, probably because Prakrit poetry was not much admired or understood and even ignored altogether at this time

6 The poet's reception at the house of Bharata, and his proposal to him to compose a Mahāpurāṇa

6 9a देवीसुरण, by the son of Devī, 1 e, by Bharata.

7 The poet shows his timidity to undertake the task because of the wicked who censure even good works like the Setubandha of Pravarasena

7 3a गोषज्जिर्ह etc This series of epithets have double meaning one applicable to षगदिण etc. and the other applicable to the wicked

MAHAPURANA

8 Bharata assures Puspadanta that wicked people are always like that and that the wise should pay no heed to them.

8 १६ पुष्प उवाच सतमे, let the dog bark at the full moon.
१६ वन्दितवन्तः, another epithet of Puspadanta; compare वन्दितवान् वन्दनवत्

9 The poet, by way of modesty shows that he is not qualified to undertake the Mahapurana, and yet he does so out of devotion to the adorable persons.

9 १० अरक्त etc. For these writers see notes at the bottom of the page, and also Introduction to Nāyakaśāstracūḍa page XXIII.
१६ कुरुते नद्यो यो मन्त्रिणः who can measure the waters of the ocean by means of a Kudava, a small measure? १७ विदुषो हि मया, why should I say all the back? i. e., I say it openly I challenge the people to point out drawbacks in my work if they notice any

10. The poet invokes the aid of Gomukha Yakṣa and Cakroṃśa Yakṣin who are the guardian deities of वन्य, and of the goddess of learning

10 १४ यो न नद्यं विवन्दे, he who barks at my work.

11 The location of the Magadha country

12. Description of Rajagṛha, its capital.

12. १६ मधुरास्वरास्वरादिभिः, मधुरास्वरास्वरादिभिः मधुरास्वरास्वरादिभिः मधुरास्वरास्वरादिभिः मधुरास्वरास्वरादिभिः
T where there are sweet songs of churning women when they are engaged in the act of churning. It is the practice of cowherd women to sing sweet songs at the time of churning.

13. Description of the outskirts of Rajagṛha.

13. ११६ देव्यं शिबिर्बलवन्तं नद्यं, it was, as it were a storehouse, देव्यं, of collyrium of ०० The lotus flower with a black bee sitting in it, appeared to be a collyrium box of the goddess of beauty

14. Description of the town of Rajagṛha.

15. १६ मन्त्रिणो यः वन्दते, like ignorant people who are misled by false doctrines (प्र+वन्दते).

16. Description of Rajagṛha continued.

16 King Śremka described

18 King Śremka receives the report of the arrival of Mahāvīra

18 6b चउदेविण्णाय, the four classes of gods are भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क and वैमानिक 7a चउतीसातिसय, the Arhats possess thirtyfour atisayas or excellences which are enumerated in Hemacandra's Abhidhāna Cintāmaṇi and several other works See page 5, notes of Miss Johnson's Translation of Trisasti 9b अट्ठविह्मदिहे, these Prātibhāryas, miraculous possessions of Arhats, are eight viz, अशोक, सुरपुण्यवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामण्डल, उन्दुभि and त्रिलत्र 10b विउलइरि, is a small hill in the neighbourhood of Rājagṛha 15 पुण्यतत्तेयाहिय, the poet puts his name in the last line of a Samdhi of each of his three known works. It is thus his अङ्क, or mark, and is interpreted in several ways, but more frequently as चन्द्र and स्य, and the Tirthamkara of that name The term पुण्यतत्तेयाहिय is at times paraphrased by पुण्यदसन, कुसुमदसन etc भरत, the poet's patron, is also mentioned in the Ghattā lines The term भरत also may be regarded as another अङ्क of the poet and is interpreted as भारतवर्ष or भरत, the first Cakravartin

II

[King Seniya, on hearing the news of the arrival of Mahāvīra, proceeds along with his retinue to see him After paying his respects to the Jina, the king asked his disciple Goyama to recite to him the Mahāpurāṇa which he does

Goyama then begins his narration by first mentioning the divisions of time, the Kulakaras and their contribution to the civilization of the Universe The last of these Kulakaras was Nābhi (Sk. Nābhī), and his queen was Marudevi Now Indra remembered that a Jina was to be born in their house and therefore ordered Dhanaya, i e, Kubera, to make the town of Ujjhā (Ayodhyā) gay and pleasant so that it should be a fit place for the birth of the Jina]

1 6b ण वरायवित्ति सिद्धारिणि, a lady who took in her hand a कुवलय, i e a lotus flower, is compared to royalty (वरायवित्ति) which also holds कुवलय, i e, the globe of the earth, and chastises the enemies (सिद्धारिणि)

2 13 जणनणत्तिहू, (Jina) who removes the misery (अत्ति-आर्त्ति) of birth (जण) of the people 14 भुण्णमोरुहदिसय, the sun to the

lotus, viz., the universe; the Jina gladdens the universe as the sun blooms the lotus.

II 5-11. These lines contain a long epithet of Jina वज्र...नि
वज्रमण्डपवज्रमणिमिश्रपुत्रमिववज्रमण्डप, (Jina) whose lotus-like feet are washed
by waters flowing from the gems in the coronets of वज्र and other
gods when they bend their heads (सिन्धुवज्र) before him. 35 नं मेवमु
वज्रमण्डप, you will please lead me to the fifth वणि, i. e., मित्रवज्र,
emancipation from ईश्वर, the first four वज्र being देव वज्र, सिन्धु
and वज्रव.

4 7a वज्र संतु नविसिद्धि निवज्र, there is no beginning (न + वज्रि) and
no end (न + वज्र) to the list of the coming Jinās, i. e., the number of
the future Jinās is infinite. 8-9 वज्र वज्रव etc. Time has no beginning
and no end; i. e., it is infinite. Time is an associating cause of change
in the Universe. It has no flavour no odour no colour and no
weight. Time in abstract (निवज्रवज्र) is marked by its fleeting i. e.,
constantly passing (वज्रव). 12 वज्रवज्र Time as understood in our
daily practice.

5. 3b विवज्रविज्रवज्र, by वज्रव who is the son of विवज्रमणि, popularity
known as विवज्र. Compare वज्रव, 109 where the name given is विवज्रमणि.
10a वज्रवज्र वज्रव, T., is multiplied.

6. 10a वैवज्र वैव, divisible, to be divided.

8. 4-5 वज्रवज्रि, i. e. वज्रवज्रवज्र is defined as one in which
strength, prosperity height of the body purity knowledge gravity and
courage are on the increase. वज्रवज्रि, i. e., वज्रवज्रवज्र is one in which
these qualities are on the decrease. 7b वज्रवज्रि, the ten वज्रवज्र,
enumerated in the foot-notes.

9 3a वज्रव, the first वज्रव of the Jain mythology 4a वज्रवज्रव,
having 41 of the length of an वज्र, large number. The other वज्रवज्र
or वज्र mentioned in 9 and 10 are: वज्रव, वज्रव, वज्रव, वज्रव, वज्रव,
वज्रवज्र, वज्रवज्र (वज्रवज्र), वज्रव, वज्रव, वज्रव, वज्रव, वज्रव and वज्र (वज्र).

11. 1 The first वज्रव explained to the world, i. e., discovered
for the first time, the functions of the sun and the moon who were
not noticed by the people upto this time because the world was full of

the light supplied by the कल्पवृक्ष. The second discovered the stars and planets. Similarly each कुलकर contributed something towards the human civilization. The last कुलकर i.e. नाभि, discovered the method of cutting the nails of children, and also discovered clouds which, by rain, rendered the earth full of various crops so that nobody felt the absence of the कल्पवृक्ष. He also discovered fire, the art of cooking and weaving for the benefit of humanity.

17 5b सुयसि सुयसि नियमणि तस्यह, Indra, on learning that a तीर्थकर is to be born at a particular place, orders Dhanaya, i.e. Kubera, to make the city beautiful and rich, so that it becomes fit for the birth of a Jina.

19 1a छुड छुड—Hemacandra in his grammar under IV 422 gives छुड as a substitute for यदि. I do not think that छुड always means यदि, in fact the usual sense of छुड seems to be क्षिप्तम् which sense suits the context here as well as elsewhere. The marginal notes in Mss here render it as पदा but I do not think it to be correct.

III

[The birth of a Jina in Jain works is described in such a monotonous way that we are often tempted to think that we are in the field of mythology rather than that of history. When the parents of a Jina are determined, Indra orders Kubera to make the town of his parents beautiful and fit to be worthy of such event. The Jina in the immediately preceding birth is born in heaven. Six months before his period of life in heaven is to end, Indra sends six goddesses, सिद्धि, हिम्ति, दिद्धि, कति, किन्ती, and लच्छी to the earth to purify the womb of the lady where the Jina is to be born. They then come to the mother of the Jina and wait upon her as her maids. The mother then sees sixteen objects (according to the Śvetāmbara tradition, fourteen) in a dream towards the end of the night. She sees her husband the next morning and tells him that she saw, the previous night, sixteen dreams. The husband then explains to her the fruit of her dreams which in substance is that she would be the mother of a Jina. The Jina then descends into the womb in the form of some object (in the case of Rsabha, the first shower of gems sent by Kubera. Jina is then born in due course. Gods headed by Indra arrive at the birth-place of the Jina, see the

MAHĀPURĀṆA

Jina born, go round him three times, offer him prayers. Indra then hands over to the mother a babe produced by his magic, takes away the Jina to the mountain Meru, puts him on a jewelled seat and gives him a ceremonious bath, the waters of which, flowing over the mountain Meru, are subsequently saluted by all gods. Indra then recites some hymns in praise of the Jina, and then brings him back to his parents. This event is usually called a **राज्या** (Sk. **राज्या**) or more particularly **जिन-राज्या-करण**. These events are almost monotonously described in the life of a Jina, but Porcupianta has on every occasion, enlivened the details with his poetic skill. The particulars about Rishab, the first Tirthamkara are —

- (1) Town of birth—Ayodhya
- (2) Parents—Mibbi and Marudra.
- (3) Descent in the womb—as a white bull.
- (4) Date of Descent—month Āṣṭin, dark half second day
Uttarāṣṭhi Nakṣatra.
- (5) Date of birth—month Caitra, dark half, ninth day Sunday
Uttarāṣṭhi Nakṣatra, Brahma yuga.
- (6) Name—Nisaha Nisaha or Vṛkṣaḥ.

4. Da लिख्यते, in the courtyard of the king Although Prakrits in general do not allow conjunct consonants with we get such conjuncts in Apabhramś. See Hemacandra IV 308 and 399 Of our M and K only give conjuncts with e while MBP do not. I have therefore consoled red Q and K to preserve older recollection of our text on this account as also on account of their retaining forms with e such as दुप दुप etc. 11 ख, ल ॥ ॥

8 This Ka lavaka gives the list of sixteen objects which Maru devī sees in dream, a d which foreshadows the birth of a Jina. The Śvetāśvara tradition differs from the Digambara one in that they mention only fourteen objects of the dream (चतुर्दश वस्तुनि). Compare ५५५५ 4 and 32-47.

मय कण्ड डीह अमिलेय दल लमि विषय (लार्ज मन्त्री)
 पञ्जाल लाल विमलमय रज्जुय विधि ५ ॥
 एव यद्वद्वि विमि कण्ड वामि विमलमय (लार्ज मन्त्री)
 जं लमि पञ्जाल कवि विमलमय लालमय (लार्ज मन्त्री)

These objects, according to the Digambara tradition, are :—

- (1) An Elephant breaking open the mountain slopes
- (2) A Bull loudly roaring
- (3) A roaring Lion.
- (4) Goddess Laksmī being bathed in waters from the trunks of the elephants of the quarters (दिशागज) The Svetāmbaras designate this under अभिसेय
- (5) Wreaths, two in number, of fresh flowers
- (6) The rising moon
- (7) The rising sun
- (8) A pair of Fish
- (9) A pair of Jars filled with water
- (10) A fine lotus pond
- (11) A surging sea
- (12) A royal seat marked with lion's head (सिंहासन) The Svetāmbaras omit this object from their list.
- (13) A heavenly palace or mansion house
- (14) A palace of snakes or of the king of snakes (नागभवन); this object is omitted in the list of the Svetāmbaras.
- (15) A heap of Gems.
- (16) Burning Fire.

It will be seen from above that the Śvetāmbaras omit 12 and 14 from the above list and thus reduce the number of objects to fourteen.

7 5a सोलह वि तपमावणाओ पहावेवि, having meditated upon the sixteen forms (भावना) of penance such as दर्शनविशुद्धि etc These भावनाs are — दर्शनविशुद्धि, विनयसपन्नता, शीलव्यनेष्वनतिचार, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, अभीक्ष्ण सवेग, शक्तितस्तप, शक्तिवस्तप, साधुसमाधि, यैयावृत्यकरणम्, अर्हदंकि, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकतापरिहाराणि, मार्गप्रभावना and प्रवचनवत्सलत्वम् Compare also नायाधम्मकदाओ, VIII 64, तत्त्वार्थाधिगमसूत्र VI 24

19 14 तहु देसहु मर जेहि, take me to that region where there is no birth etc, i e, to the region of the Siddhas

21 11a विष्ट धम्म तेण माइ ति, the Jina is called वृषभ because he shines forth (माइ, म ति) by विस (वृष), i e, धर्म or piety

[Prince Rukha grew in the royal house in ideal surroundings. He possessed ten bodily *atthayas* or excellences such as bodily purity want of perspiration etc. He grew strong and powerful and young. His father then thought of getting him married. The prince was at first unwilling but being pressed by the king, agreed to be married to *वन्द्य* and *गुण*, daughters of the kings of *Kaccha* and *Mahakaccha*. The marriage was celebrated with great pomp. On the evening of the celebration, under the moon-lit sky a concert was arranged by celestial nymphs with dance music and singing. The ceremony was rounded off by gifts which the king made to everybody so as to satisfy all his desires.]

1 10a *रुक्मणेः* lying on his back the young boy was looking up, but the poet fancies that he is watching the path to emancipation which, as it were, goes in the upward direction. 15a *एव तेन रर* while walking slowly in the childhood. 16b *षष्टि नि वदत* sixty-four arts, and not seventy-two as with the *Svetāmbaras*. For that *Est see Rāyaprasenryasutta* or *Pacīkabhāṣayam*, para 89 and my note thereon.

2. This *Kāvaka* mentions some of the *atthayas* which a *Jina* possesses.

3 10a *ते वनस्पतु वा वदु वट*, the so-called wish-tree is, alas! a mere log of wood.

4. 14b *ममालिख्य, स्तोमन्मन्त्रमन्त्रिणमन्त्रिण*, T., l. a., lullaby or song to make the baby sleep. 15 *इतिव जी न*, these are the expressions which the mother uses to make the baby sleep.

9. 10a *पद्मेपल्लवेर्हि वट*, covered with fine canopy (*परिण*) of China cloth.

10 8a *वद, सु+वति* shines forth.

17 2b *पुनर्व नोप*, पुनर्विष *वद* as if washed or bathed in milk. Note that *पुनर्व* is the *Inst.* sing. form which is obtainable by confusion of *पुनर्व* of the *Inst.* (Cf. *Hemacandra* IV 842) and *व* of the *Nom.* and *Acc.* 4a *वाद्यं नैव गृहेषु वदु* the arrangement of the musical instruments for 'concert' is described here, which arrangement is

called पञ्चाहार or प्रत्याहार. 9b कम्मारवी is an act of cleaning the musical instruments. 10b उद्दिक्खणु विउ हिंदोलण, the introductory notes of the हिंदोलराग were sung first 11b कउ जञ्जणीहिं पुणु तहिं पवेसु, the dancing girls then entered presenting the three methods of keeping time (ताल), viz. वण्ण, छंदय and धारा T adds —समस्तनाटकार्यवर्णनाट्टर्णताल, शृङ्गारसामिनयच्छन्काताल, धीररसाभिनयो धागताल

18 The various technical terms of the art of dancing have been explained and their subdivisions enumerated in T which I quote fully here —चागी पदमचार, सा द्वात्रिंशत्पकारा, तत्र समपादा द्विपदावर्ता सकटाद्या अध्य-
र्द्धिका चापगति विच्यवा एल्का क्रीडिता चद्धा उरुद्धृता आदिता उच्छदिता वा जतिता सदिताजिनिता
अपस्पदिता मतुली मत्तली चेति पोडश मोक्षाय.; अतिक्रांता अपक्रांता पाशक्रांता अद्वजानु सूची
नूपुरपादिका दोलापाला पादा आक्षिप्ता आविद्धा उद्धृता विद्युद्घ्रांता आलता भुजगत्रासिता हरिणझुना
श्रमरी चेत्येता पोडश कांसोद्धवाश्रय 3b अगवचन अगहार, स च स्थिरहस्तक सूचीविद्ध
आक्षिप कर्णछेद् विष्कम्भ अपरात आधीड मृश्चिक भ्रमणमदादिविलसित इत्यादिविकल्पात्
द्वात्रिंशत्पकार 4b शरीरमनेकधा प्रतिष्ठाप्य क्रियते इति क र णा नि तलपुष्पपुर्न वर्तित अपविद्ध
लीन स्वस्तिक अर्धस्वस्तिक अधस्वस्तिकरोचित निकटक अलात उन्मत्त ललाट तिलमित्याद्यष्टोत्तरशत-
सख्यानि दिण्णु दत्तानि 5a चउदह वि सी स उरुं च—

अकपित कपित च धृत विधुतमेव च ।

परिवाहितमाधूतमधाचितनिःकुचित ॥

××× पराहृतमक्लम चाप्यधोगत ।

लोलित प्रकृत चेति चतुर्दशविध शिर ॥

5b नूत ड व ह नृत्यानि सप्त—

आक्षेप. पातन चैव भ्रुकूटिश्रतुर भुवो ।

कुचित रोचित कर्म सहजं चेति सप्तधा ॥ इत्यभिधानात्

6a ण व गी व उ । तदुक्त—समानता आनता अस्ता रचिता कुचिता कचिता चिता ललिता
च निवृत्ता च ग्रीवा नवविधा स्मृता 6b छत्तीस वि दि द्वी उ—तथाहि कांता भयानिका हास्या
करुणा अद्भुता रौद्रा बीरा बीमत्ता चेत्यष्टौ रसदृष्टय, स्निग्धा हृष्टा दीना कुद्धा वृषा भयान्विता
जुगुप्सिता चेत्यष्टौ म्हायिमावदृष्टय, स्तान्यामलिना(१) श्रान्ता सरज्जा ग्लाना शाकता विपण्णा मुकुला
अभितप्ता जिहललिता विनर्जिता कुचिता विधान्ता विष्टना ककिकरा(१) विक्रोसा व्रस्ता मेदिना
चेति पञ्चिंशद् दृष्टयः 7a अति मे तथा दि

शृंगार (१) बीमत्ता हास्यरौद्रभयानका ।

करुणाद्भुतशान्ताश्च. . . . रसा स्मृता ॥

तत्राष्टौ रसा अतिमरसवर्जिता

अभिषेकः

रुद्रिहोतम इति नमः कृत्वा नमो भवति ।
 अमुं च विष्णुमन्त्रं स्यादिति तदा प्रकीर्तय ॥
 रुद्रिहोतम इति नमः (१) रुद्रः स्यादिति ।
 देवर्षिभ्यो नमः ॥ इति रुद्रिहोतमः ॥

तन्मूर्तिद्वयो रोम्यन्तः । केदारं चण्ड-देवार्चं च्छाज्जला निर्विन्द, क्षाज्जला निर्विन्दुयन्ति । पौराण्यपुराणप्रमाण-
इतिर्निर्यायात्तात्पर्यमर्थमर्थम् । सकृन्निर्वाणम्वाः सः मित्राभिधेया श्रीशारङ्गप्रभोः सम्प्रीतप्रभोः श्री-
रामनिष्ठप्रभोः सम्प्रीतप्रभोः निर्विन्दुः कृत्यकामपुत्राभिधेयप्रभः (१) । आरामः उग्रो (१) । लक्ष्मी-
विन्दोः । स्वर्णिमं चोदयत्येव पुनः । सप्तशतं हि । ८३ अथेव हि । अस्मात्पूर्वज्येष्ठो निवसत्य-
नां च पुनश्च । अस्मात्पूर्वज्येष्ठोऽपि । अस्मात्पूर्वज्येष्ठोऽपि । अस्मात्पूर्वज्येष्ठोऽपि । अस्मात्पूर्वज्येष्ठोऽपि ।
इति । ८३ पुनश्च । अस्मात्पूर्वज्येष्ठोऽपि । अस्मात्पूर्वज्येष्ठोऽपि । अस्मात्पूर्वज्येष्ठोऽपि । अस्मात्पूर्वज्येष्ठोऽपि ।
निर्विन्दुः कृत्यकामपुत्राभिधेयप्रभः The Ma. of T is illegible at numerous places,
but as the contents seemed to me to be important I have
reproduced them.

▼

[One day Jamval, the wife of Rimsha, saw in a dream the mount Meru, the sun the ocean and the entry of the globe into her mouth. She told this dream to Rimsha who told her that she would get a son who would be a sovereign ruler. In course of time, Jamval bore a son who was named Bharsha (Sk. Bharata). As the boy grew the father himself taught him various arts as also the science of government, duties of different castes and classes, and the principles of inter-state relations. Jamval bore ninety nine more sons, Vasishtha etc. and one daughter named Bhabhi. Sanand also bore a son named Bhubhall and one daughter named Sundari. Bharsha himself taught both the daughters the various literary and fine arts. Now once it so happened that there occurred a severe famine which worked a havoc on the people. They came to Rimsha and asked for relief. He then taught the people various arts and professions. When he attained the age of twenty five of pura years, he was put on the throne by king Nabhl.]

2. 86 *अक्षरं हि नोपै*, the six continents of the universe. The world, according to Jain cosmology is bounded on the North by Himavanta Mountain; right through its centre passes the Veyadha (Skt. Vaitadha) mountain from east to west; the rivers Ganga and Sindhu

pass through it from North to South, it is in this way that it is divided into six Khandas or continents. A Cakravartin rules over all these six continents of the भारतवर्ष. 10b अहमिन्दु or अहमिन्द्र is a god of a very high class residing in the श्रेष्ठेयक or अनुत्तमविमान heaven.

2 तिहुयणवज्जयकरोद्धारदिय, The loss of folds on the belly of Jasavai, as a result of her pregnancy, is here considered by the poet as the wiping off of the marks of victory over the lords of three worlds. It means that the son that is to be born to Jasavai will wipe off all marks of supremacy so far held by kings whom he will subdue.

7a सुलुउ कीडुलुउ, a small insect (सुद्ध कीट)

13a चित्तलेपसिलवरनरुद्धम्ह, painting, plaster work (लेप), sculpture, and wood-work.

2 गिरियणि विसय पयासए, explains (to Bharaha) the subject of governance of his consort, viz., the earth (गिरियणिधरणि) with mountains standing for her breasts.

12 पढमुवाउ, प्रथमः उपायः, 1 e, resolution, resolve.

7a करोषा, See for the formation of Potential participles Hemacandra IV 438. 9a अय तिवरिस जव, the goats to be offered in sacrifices are and should be चव corn three years' old. 13a जिणपडिमापूयणु, worship of the images of the Jinās. This is clearly an anachronism unless we accept that Rāsaba means by it not himself but the Jinās of the past. To a Jain his religion has no beginning and there were Jinās in the past.

8b कामुण्यणु चउविहु दाणु, the four व्यसन or addictions, viz., woman, gambling, wine and hunting.

1 1 एकतरिउ मिउ गिरतरु सउ. In the मण्डल or द्वादशरानचक्र, the immediate neighbour is an enemy while the next one is a friend (एकान्तरित मित्रम्, निरन्तर शत्रुः). The immediate neighbour is often in conflict with him because of the common boundary, while the next one is to be on good terms with him in order that both of them have the middle one as their common enemy. 8b अट्टारइतिथइ, the eighteen तीर्थस are:—

सेनापतिर्गणकर्मन्त्रिपुरोहितोऽथ वर्षा बलोर्ध्वलवैत्तरदर्शनायाः ।

श्रेष्ठा महर्षे इतश्च महोद्यमात्योऽर्धत्यो वदन्ति दश चाए च तीर्थमाया ॥

—Marginal gloss in K.

The *varas* in the above list are *varas*, *varas*, *varas* and *varas*; the *varas* is the fourfold division of the army viz., *varas*, *varas*, *varas* and *varas*.

18. Ga *varas* i.e. *varas* which is counted as a distinct language. Note the items which were taught to ladies in those days, or even in the days of the poet.

19. 1-2 *varas*. *varas* *varas* *varas* *varas* *varas* O Lord, pair of whose lotus like feet is washed by water dropped down from the gems in the coronet of Indra. Ga *varas* *varas* *varas* *varas* *varas* who, other than yourself, will be our supporting pillar?

20. 5-11 *varas* etc.—This passage gives a long list of the names of the countries or different parts of the *varas*.

21. 3-5 *varas* etc.—This passage gives the list of several types of towns, villages, cities etc., such as *varas*, *varas*, *varas* *varas* *varas* and *varas*.

22. 4 *varas* *varas*—the race was named *varas* because its founder brought to his house the juice of sugar-cane for drinking.

VI

[One day while prince Rishaba was enjoying his royal fortune and was engrossed in it, Indra thought of reminding him of the mission that he was expected to fulfil on the earth, viz., the propagation of the Jain faith, and sent a celestial nymph named Nilanjana to perform a dance before him. She arrived, performed the dance and at the end of it fell down dead. Rishaba, on seeing her dead, was filled with horror at the momentariness of the worldly life.]

2. 3 *varas* *varas*, the porters and peons were regulating the conduct of the people in the court-room. The *Kāvya* mentions a large number of things which should not be done in the king's presence.

3. 5a *varas* *varas* *varas* *varas* *varas*, King Rishaba enjoyed his long-life for sixty three lacs of the *pūrva* years, and still likes these worldly pleasures and is not disgusted with them.

4. 11-13 *varas* *varas* *varas*—If *varas* who completed her period of life, dances before him and after that falls dead, the event will cause disgust for worldly life in his mind.

5 4b नाह्येणिहेल्लणि, to the house of Nābheya, 1 c., Risaḥa, the son of Nābhi 6b यमिगु वि पुव्वगु—The technical terms of dancing and music used in this Kadavaka and the two following are explained in T as follows —वी स मि त्या डि—नाटकस्थेह प्रथमप्रस्तावनावतार पूर्वगस्तम्य च प्रत्या-
हारोऽवतरणा आचारम आश्रयणा गीतविशेषस्यापना परिवर्तन रगद्वार चारी मद्यचारी इत्यादीनि विशति-
रगानि 7a ति पु व्व रु चर्मादनद् वाय पु र्हर तन्निविध उत्तममध्यमजनघनभेदेन 7b सो ल ह
अ व्स र उ क स ग ष ट ड ड ड त य द ध सर ल ह इति षोडशाक्षर 8a च उ म ग्गु
आल्लिप्त-अर्द्धिन गोमुस वितस्ति-भेदात् चतुर्मागं; दु ले व णु वामनेपनं ऊध्वलेपन, छ क र णु रूप कृत
परिति भेदे रूपशोषी उद्यत्येति पद वायकरणानि; 8b नि य ति छ उ समो श्रोतोपति गोपुच्छ चेति
त्रियनियुक्त; ति ल य उ द्रुतमध्यविलपितास्त्रो लया 9a ति ग य उ तद्दाम नुन उच(१)श्रेणि त्रीणि
गतानि; ति य चा रु समप्रचार विषमप्रचारश्चेति; ति जो य य रु गुरुसंयोगो लघुसंयोगो गुरुगुप्तयोग-
श्चेति त्रिसंयोगकर 9b ति क रि छ उ गृहीतोऽथगृहीतो गृहीतमुक्त्येति श्रव 10a ति म ज्ज ण उ
मायूरी अर्द्धमायूरी कर्मांसी चेति मार्जनकम्; 10b वी साल कार स ल वस ण उ अलक्षयने वाय
यैस्तेऽलकारा महारास्ते सलक्षण मनोज्ञ चेति विशत्यलक्षण —चित्र सम विभक्त छिन्न छिन्नविद्ध
अनुविद्ध विद्ध वायतश्रव अनुसृत प्रतिच्युत दुर्ग अपकीर्ण बद्धावकीर्ण परिक्षिप्त एरूप
नियमान्वित साचारुत समस्तल सामवायिक दृढ चेति 11a अ द्वा र ह जा इ हिं तथाहि—सुद्धा
दुष्करणा विमनिष्कभितेरुक्ता च पार्थिवसामर्थ्यस्ता ममविषमरुता विर्कीर्णा च पर्यवसाने चितिकि-
सयुक्ता सपुता तथारभा विगतकम चललिगा धंचितिका चैकवाया चेत्यपराशजातिभिर्मंडितम्; 12a
च च उ डु चाचपुटस्थस्त्रिकलतालवृत्तिहेतु; चा च उ डु चचपुटस्थस्त्रातु फलतालवृत्तिहेतु .
12b उ णि य पु त्ते वि वे(१) धिजापुत्र (१)कोपि मिश्र उभयतालवृत्तिहेतु; म ण हा रि चचपु-
टस्थिप्रकारावि(१)नोहर; 13a इ य इत्यादि एतेऽवचपुटस्थिभिर्वातालविषयैस्त्रिभिर्लंकृतान्, 11a
ओ ण द् उ व ज्ज उ व णि य उ इत्यमृत यद्वनद् वाय तन्निप्रकार वर्णित वाम ऊध्व आल्लिगक्सङ्गित
चेति द्विश्रुतिका स्वरो जातो निपादो गधारश्च त्रिमुवसमश्रुतिसंख्यया त्रिश्रुतिकरूपतो धेवतश्च
जलि(१)विमसमसंयथा चतु श्रुतिका पृथुचममध्यमाः 16 च व ल हिं स्थितमुक्ताभि; अ द्द हिं
अधमुक्ताभि कपमानस्वरूपाभि; मु क्खि य हिं वशासुपिरसधन्वगहिताभि(१); व सा व त्त गु लि य हिं
उकविशेषणाविशिष्टाभिष्यकव्यकांगुलिभि व्यकांगुलि स्थितस्थितांगुलि अव्यकांगुले

6 1a प वि र इ ह इत्यादि—वांशस्वरो जात; क व मूने 1b व ज्जि य सु सि रे वादिन
मुपिरे; सु अ र थ सु इ शाश्वता श्रुतयश्च; 3a मि ये त्यादिना चतु श्रुतिकाविस्वगणावृत्तिभिरुक्ता
मदशापाति, स्थितमुक्तांगुलि स्वरे इव; सु अ द्द सु ड चतु श्रुतिक 4a कामान्यांगुल्या उद्भूत-
त्रिश्रुतिक, 4b मुकांगुल्या जातो द्विश्रुतिक, 5a व त्त गु ली त्यादिनेत्यतिरूपेण प्रत्येक चतुश्रु-
तिकादीनां नामानि कथयति, व्यकांगुले सुपिगेपरिस्थितांगुले; 6b सामांज्य सर त र स णि य ए
सामान्यस्वरत्नसङ्गथा युक्त 7b अ द्द ए मु क्ख ए अ गु लि य ए अद्वाया मुक्ता अगुल्या; सामान्य
ते ष वि निष्कलं त्रिष्व 10a ष णु इत्यादि—उन वाय कम्प्यतालयुगलादिक 10b स मे त्या दि-
सम योगपथेन हस्त दृष्टा यत्र रगे वादित 12a उ ण ण्ण इत्यादि—उत्पद्यमानो हि नादः प्रथमतः
उरठा ण त र ए उरोलक्षणस्थानकविशेषे उत्पद्यते तत कटे तत क्षिगमि 12b वा षी स वि

[illegible][illegible][illegible]

सप्तसद्वृत्ति(१)नाना पादबोधयिता, काकलि अतर काकल्यतर, स्वरसंयोगे सति पंचत्रिंशत्संयोगताना भवति, एव मध्यमग्रामेऽपि; 7a तेरहे त्या दि त्रयोदशावेध शीर्षे प्रनर्तित प्रारुतशर्षि च(१)ज्यते 7b तथा पद्मत्रिंशद्दृष्टिभिर्युक्तमेतद्य प्रागेव व्याख्यात 8a ण व तार उ नव ताराकर्मणि । तदुक्त—ध्रमण चलन पातो चलन सप्तेशन । विषर्तन समुद्रत निष्काम प्रारुत तथा; ॥ 8b अ ह वीत्यादि अष्टौ परिचिता दर्शनगतय, उक्त च-सम्पत्सन्पुनृत्त च आलोक्ति प्रलोक्तिहोक्तिरेतरेवलोक्ति(१) सा तियक् (१) 9b ण दे त्यादि—नवनदास्तत्प्रकार पुष्ट(१)प्रसृष्टपटक्रम दर्शित उन्मेषश्च निमेषश्च प्रसृत कुचित सवर्तित सस्फुरित पिहित सविताडित 10a भू स त मे य भू सप्तभेदा; 10b छविहेत्यादि—तत्र नासा पद्मविधा, उक्तं च-नता मदा विरुष्टा च सोऽङ्गुलासा सविकूर्णिता । स्वाभाविकी चेति बुधे, पद्मिधा नासिका स्मृताः ॥ तथा कपोल पद्मविध क्षाम फुल्ल च पूर्ण च कपित कुचित सममित्यभिधानात्; तथा अधर पद्मविध; तदुक्त विषर्तन कपन च विसर्गो विनिगूहन । सद्रष्टक समुद्रश्च पद्मकर्मण्यधरस्य च ॥ 11a स त वि हु चि वु उ सप्तचिबुक्त; च उ मु ह हु राय कृट्टन स(१)रागा स्वाभाविकप्रसन्नश्च रक्त समर्था-नुरोधतः प्रयोजनवशात् 11b नव गला नव ग्रीवानृत्यानि उकलक्षणानि, च उ स द्वि वि क र ण भा व चतु पट्टिरेवि हस्तभेदा पताक कतरमुक्त अद्भुत आराल. शुक्रतुंड सट्टकामुक्त पद्मकोश चतु(१)रध भ्रमर इत्यादयः 12a सो ल ह वि हु सर्वहस्तानां पोडशविध कर्म । तथाहि-आरूपन कर्पण च उत्कपण-मथापि च । परिग्रहो नियहश्च आह्वान नोदनं तथा ॥ सभ्लेषश्चदि(१)योगश्च रक्षण मोक्षण तथा । छेदन भेदन चैव स्फोटन मोटन तथा । ताडन चेति विज्ञेय ता(१)ज्ञे कर्मकराश्रितं; तथाहि सर्वोऽपि हस्तप्रचारस्त्रिप्रकारो भवति, तदुक्त-उत्तानः पार्श्वराक्षेव तथाधोमुक्त एव च । हस्तप्रचारस्त्रिविधो नाद्य-वृत्तसमाश्रयः ॥ च उ वि ह वि सर्वमपि हस्तकर्म चतुर्विधं भवति, उक्त च-अपचेष्टितमेक स्यात् उद्देष्टितमथापरम् । व्यावर्तित नृतीय च चतुर्थं परिवर्तितम् ॥ 12b भु उ द ह वि हु वि भुजवृत्तमार्गो दशावेधोऽपि रक्तः, उक्तं च-तिर्यग् ऊर्ध्वगतिश्चैव तथाधोमुक्त एव च । आविद्धश्च प्रविद्धश्च मङ्गल. स्वास्तिक तथा ॥ अजित क्षुधितश्चैव शृणुतयेति ते दश 13a ऊ र स र वि हु उरोनृत्य शरविधं पंचप्रकारं, उक्तं च- नत समुन्नत चैव प्रसारितविधर्तिते । तथापसृतमेव तु पार्श्वकर्मापि पंचधा ॥ 13b पो हु वि पा य डिय उ त ति वि हु-क्षाम सल्ल च पूर्ण च सप्रोक्तमुदर त्रिधा । इत्यभिधानात् 14a क डिय लेत्यादि कटीतलजंघाक्रमकमलानि त्रीण्यपि । तत्र कटी तावत्पंचप्रकारा, तथा हि लिन्नावनिवृत्ता च रेचिता कपिता तथा । उद्वाहिता चेति कटी नाद्ये वृत्त्येव पंचधा ॥ तथा जघा पंचधा । उक्तं च-आवर्तितं अत क्षिप्तमुद्वाहित-मथापि च । परिवृत्तिस्तथा चैव जंघाकर्मापि पंचधा ॥ तथा क म क म ला इ पंचधा । उक्त च उद्वाहित समर्थेव तथापतलसचरः । अचित कुंचितश्चैव पाद पंचविध स्मृतः ॥ 15b च ले त्यादि—चला द्वात्रिंशदगहारा मिता परिच्छिन्ना यत्र करणान्यगहाराश्च प्रागेव कथितानि 16a च उ रे य य चत्वारो रेचका, तदुक्तं-पादरेचक एक स्यादद्वितीय कटिरेचक । नृतीयः कर(१)स्वस्थस्य ग्रीवायां च चतुर्थकः ॥ 16b स त्ता र ह पिंडी य ध कय-ऐश्वरी वा(१)ज्ज भोगिनी सिंहवाहिनी ऐरावती मान्मथी पद्मा पिंडिक्यादि सप्तदश पिंडीनां यथा रक्ता 17a चा रि उ सो ल ह दु च स स्त्रि य उ चार्य पोडश द्विक्सग्या द्वात्रिंशत्सख्या 18a बी स वि म ड ल इ प या सि य इ अतिक्वत विचित्र ललित सचर आलातक आक्रांत आकशगामि इत्यादि सचारिभिर्भावे स्यायिभिश्च प्रागुक्तलक्षणैरुपवृत्तैरनेकैर्वृत्तानि

[The death of Vilappak brought about a change in Ramba's outlook of the world. He thought that everything in the universe was unpermanent, momentary helpless, solitary the soul has to pass through a series of births and deaths, and experience sufferings, commits sins and thus prolongs his wanderings in samsara. If the soul therefore wants to secure his good, he should first stop doing sinful activities so that his stock of already acquired acts does not increase, and he should practise penance in order to exhaust the stock of old acts. Thus thinking, Ramba decided to renounce the worldly life. Gods at this juncture arrived there to encourage him in his resolve and requested him to propagate the Jain doctrine. Ramba then put his son Bharata on the throne of Ayodhya, gave Poyaspora to Bahubali, and sat in a palanquin to leave the worldly life. This event was celebrated by gods with their presence on the earth. Ramba was followed by his aged parents and by his wives and his ninety nine sons. He then went to the forest, sat on a slab of stone, and pulled out five handfuls of hair. The hair was received by Indra in a jewelled plate and were disbursed in the milk-ocean. He then took the five great vows and became a naked monk.]

1 11 मृतिं सन्तु ननु स्पर्शितः a person over whom salt is passed by women, i. e., one who is so much loved by women, is taken down on a grass-bed on his death. It refers to the practice of ~~passing salt~~ over the body of a person that is dear to the ~~house~~ by women in the house. It also refers to the practice of taking down the dead body from its usual bed and of placing it on ~~grass~~.

2. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, how many times should I repeat it? - five or more than five
that man will be able
to attain liberation

7 11 12 etc.—If person, i. Brahmin, can obtain emancipation by eating the flesh of animals and by drinking wine, what is the use of Dharma? Wait upon hunter (who does exactly the same things.)

10 8a जाउ मसाणहु न मणुयत्तणु—Let this human life go to the burial place, as we say in Marathi मत्तणांत जायो, i e, I care a straw for the human life.

11 1a तिण्यारुत्ताणयं, the world is divided into three sections each having a different shape, the region of demons and creatures in hell has the shape of an earthen plate (शय्य) turned downwards, the region of human beings and lower animals has the shape of a वज्रमणि, the region of gods has the shape of a मृदङ्ग 9a मोक्षु वि आययत्तसणिहयक, the place or region for emancipated souls has the shape of an umbrella

12 4a पासुलियातुलाहिं, by beams made of ribs

13 4a णाणावरणिउ पचपयारउ—Acts which obscure knowledge are of five types, viz, मतिज्ञानावरणीय, श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मन पयायज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय See उत्तराययनमूत्र xxxiii 4 5a णयविहङ्गसणु, acts which obscure दशन fall under nine heads—निद्रा, निद्रानिद्रा (deep sleep), प्रचला (drowsiness), प्रचलाप्रचला (heavy drowsiness), स्यानधि (somniaambulism), चतुर्दशनावरणीय, अच-पुदरनावरणीय, अवधिदशनावरणीय and केवलदशनावरणीय See उत्तराययन, xxxiii 5-6 For other divisions of क्क see the same text and Appendix II in Miss Helen Johnson's translation of Trisasti 13 तिगइ i e, पाणियुक्ता, लाम्बली and गोमंत्रिका, straight, curved and zigzag movements

14 12-13 पिहियामरदारहु etc.—If a person stops all sources of sin and conducts himself properly, new acts do not enter the soul, and those acts which long remained with it are destroyed by bodily sufferings as they do not get any nourishment

15 2b हेमि दियग्गे, I shall be a naked monk. The emphatic and express mention of this term here and also in 26 15b below and at several other places shows that the work is written from the point of view of the Digambara Jains 10b देज्जवेत्तिमत्ताविणसहि by particular permutations and combinations of morsels of food obtained by begging. It refers to the various भिक्षुवर्तमान in which food is regulated on the basis of counting the दत्ति or dole obtained or the morsels to be eaten. See below 16 3a

16 12-13 जिह हयणिज्जरणे etc.—Just as a pond is dried up by the rays of the sun, and also when water already therein is drained and the influx of it is stopped by building dams (वद्धे वणी), in the same way acts

done in various births are exhausted by the control of senses (which prevent the influx of sinful acts) and by the practice of penance (prescribed for a monk).

19 15 मनुष्यमायी, reflections of twelve types on the momentariness, impurity etc. see *संस्कृतशिल्प*, IX 7

21 1 नैवेद्यं to the son of रुद्र 1 नैवेद्यं रुद्र is the second wife of रुद्र.

23. 2 अनामदा I. e., अनं and रुद्र, the two wives of रुद्र.

26 16 The passage gives the date of the विषम which is the ninth day of the dark half of Caitra with वसवः वसवः.

VIII.

[Rishabha thereafter began to practise the life of a Jain monk and observe the rules of conduct prescribed for him. Nami and Vinami, sons of the kings of Harsha and Mahaharsha and his brothers-in-law came to him in the forest, and after having greeted him, said that Rishabha did not assign to them even a small portion of the earth when he divided it among his sons. Rishabha, of course as a monk, could not make any reply as he had completely dissociated himself from the affairs of the world. The king of snakes at this juncture felt a tremor and learnt by his *संज्ञित* how Rishabha was placed in a difficult situation. He therefore came to him, saw Nami and Vinami standing before him and said to them that Rishabha had told him (the king of snakes) before he (Rishabha) renounced the worldly life, that when they would come to him and ask for a portion of earth, the king of snakes should assign to them the southern and northern slopes, belonging to Vidyadharas, of the Vastabhya mountain. The king of snakes then showed to them the various cities situated on the slopes, saved Rishabha from the awkward situation and went home.]

1 93 नैवेद्यं नैवेद्यं, T I think that नैवेद्यं comes from नैवेद्यं camp of the army but is loosely used to designate army 125 वसवः, consisting of pure rows (वसवः). 19 वि वसु etc.—He stood, standing as if he was the path leading to heaven as also to emancipation (व + वसवः).

2 1-4 विसयवसा etc —Those great warriors who took vows of asceticism simultaneously with Rishaba, were sinking (भग्ना) in a few days' time as they were unable to bear unpleasant contacts, were frightened by terrific tigers, lions, and Sarabhas, and were overcome by tortures of thirst and hunger

6 7b सालरहि, by his brothers-in-law 9a पर तेण विमुक्क घरत्यक्खु, but he has left all activities of a householder 12a क्रमुदि, a handful of cooked rice.

7 From line 6 to 20 note the दामयमक or शृंगलायमक The sets of a large number of दुवईs, constituting a kadavaka, is not rare in this work, although normally दुवई forms only its opening couplet The passage describes the commotion caused by the coming out from the nether world of the king of snakes 26 जीहहि दससयसखहि, with his thousand (tentimes hundred) tongues P reads दुसइससखहि which means two thousand tongues as the tongues of snakes are cut into two when they licked nectar lying on the darbha grass on the occasion of its distribution

11 8b रसवाड व सइ णिवडियमुयण्ण, like the alchemist who always attempts to prepare gold out of base metals, the mount वेयडु always showed gold

12 15b सुय दूयत्तणु हलिणिहि करति, parrots act as messengers of ploughing women to carry their love messages to their lovers

13 9b The passage gives the list of fifty cities situated on the right side of वेयडु which are assigned to नमि

14 5a The passage gives the list of cities situated on the left hand side of वेयडु which were assigned to विनमि The cities are enumerated from west to east (वारुणात्तामुहाजो).

IX

[Rishaba then spent six months in meditation, and controlled the activities of his mind completely He considered that reduction of food was one of the best means of attaining purity He therefore decided to accept food which would be free from forty-six flaws, and pure from nine points of view The principle of his life was that food exhausts

the body this reduction of food constitutes penance, this penance controls senses, the control of senses exhausts all acts which event leads to emancipation. He therefore practised these rules of life, and while wandering on the earth came to Gayapura where king Soma prabha, the son of Bāhubali, was ruling. His younger brother Seyaspa, saw in a dream the previous night objects like sun, moon etc. and told this dream to his brother. The fruit of this dream was that some great person was to visit his house. In fact Rishabha did arrive the next day to his house to break his fast. Prince Seyaspa thereupon offered him reception and a jar of sugar-cane juice, which Rishabha accepted. There was a divine voice to proclaim "what a noble gift!" Rishabha thereafter proceeded with his — — —

the fourth knowledge called
minds of others are known.

and under a banyan tree acquired the Gunasthāna, and in due course attained kevalajñāna by which he was able to see the entire universe. Gods arrived at this juncture to celebrate the event, and built up a samavasaraṇa on the occasion. All the thirty-two Indras graced it with their presence. They then offered prayers to Rishabha.]

1 7 रजित अन्नमनुदेन, food which is to be offered to Jain monks should be free from flaws such as अन्नमद, which the marginal note explains as रजित कर्म सत्कृतमन्नमद but elsewhere it is explained as अन्नमद आयुः क्षयनिमित्तं वैतल्यं प्रविष्टं सत्कृतं कर्म वास्तविकं, मदीयं सत्कृतं अन्नमद. 15a पल्लव, in the plate, viz., the palm. 17 एव these men, i. e., his followers who became monks along with him.

8 8a हस्तिप्रसूतमित्रा, by the younger brother of हस्तिप्र, i. सेयस, the son of मयूरि. 8b मनुष्यार्जुन, by one who stored meritorious deeds in the previous births.

4 15b मुरगिरेण, मरुगिरिण, arms

5 5a मातुः पुत्रं देवि सिन्धौ, by whom the earth was given to Bharata and to you, i. e., to Somaprabha and Seyaspa, of course through their father Bāhubali.

6 2 भित्तपञ्चमैरज्जकपावरा the incidents in the sixth previous birth of Rishabha when he was born as पञ्चमैर and his consort was भित्त. At that time भित्त was the charioteer and knew that पञ्चमैर (or पञ्चमल)

was destined to be the first निर्धर For details see Hemacandra, Trisasti, III 284-287 and also this work XXIV

7 16a सद्गुणेषु नव पचटु सत्तह, i e faith in nine पदाय, five अस्तिकाय and seven तत्त्व 18a देवचरितानि, marked by a partial observance of the vows, as in the case of a householder who takes the अनुव्रत and not the महाव्रत

9 2 दाययदेज्जपत्तवरहारसारमग्ग, principles in essence of the classification of the donor (दायय, दायक), the gift (देज्ज, देय) and the receiver (पत्त, पात्र) 11-12 असणेण तण्ण etc.—food helps the body to practise penance, penance produces forbearance, forbearance results in the removal of impurities, the removal brings about kevalajñāna, which in its turn secures bliss Compare for the objects of begging alms —

वेयण वेयावचे इरियद्दाए य सजमद्दाए ।

तह पाणवत्तियाए उट्ठं पुण धम्मचिन्नाए ॥

—पिण्डनियुक्ति, 662

11 8-9 तहु दिवसह etc, the day on which Seyamsa served alms to Rishaba was the third day of the bright half of वैशाख, which day, even now, is called अक्षय्यतृतीया. The passage explains the Jain view why the day is so called

12 7a पचवीसवयमायउ, the mothers of the vows which are the twenty-five भावना Compare तत्कार्याधिगमसूत्र, VII 4-8

15 10b अपमत्ति गुणठणि व लगउ, he stuck to अपमत्तगुणस्थान which is the seventh गुणस्थान This गुणस्थान enables the monk to possess 18000 शीलान्नास The monk is engaged in धर्मध्यान and there is a beginning of शुक्लध्यान 11b सणि अउवु आरुउ तावहि, he then rose to अपूर्वकरणगुणस्थान which is the eighth शुक्लध्यान is now fully developed here 13b अणियट्ठिहि इत्तीस जि सत्तउ, in the अनिवृत्तियावरगुणस्थान, which is the ninth, he conquered the thirty six kinds of कर्म 14a सुहुमसपरायउ पावेण्णि, having acquired the सूक्ष्मसपरायगुणस्थान which is the tenth, he destroyed the सज्जवलनलोभ 15a पुण जायउ उवसतकसायउ, he then pacified his passions. उपशान्तमोह is the eleventh गुणस्थान 16 सणि कसायचरिउ पडिवण्णउ, he reached the क्षणिकपाय or क्षणिमोह गुणस्थान which is the twelfth where the second शुक्लध्यान begins In this गुणस्थान the monk destroys sixteen कम्पप्रवृत्तिस, viz, five ज्ञानावरणीय, six out of nine दशनावरणीय and five अन्तराय At this stage he attains केवलज्ञान, and becomes a सयोगिकेवली which is the thirteenth गुणस्थान

20. a अथवाकपडिनि, अथवाकपडिनि, अथवाकपडिनि, T 113 वन
कन्यासु विर गतः, at that time hubera built a meeting place for gods etc.
who arrived there to celebrate the attainment of Keralajñāna by
Prahu

Y

(Indra and other gods glorified Jima on his attaining the Kevala-jina. Jima also possessed twenty-four *ance atiyas* or excellences as a result of this knowledge. At this juncture a report was brought to Bharata that his father obtained the Kevala, that the cakravartin had made its appearance in his armoury and that his queen got a son.— King Bharata was hesitating for a moment whether he should first see his son, orakra or father but ultimately decided to see his father. He went to him and praised him and thereafter returned home.

On seeing that the Jina has obtained the kevala, pious persons, desirous of attaining emancipation from samsara went to him. To them the Jina began to describe categories of Jiva and Ajiva. He first explained the six *gyan*, i. e. faculties to develop, then the lower species of animals, then the lower animals with five senses, then the number of *devas* and *samudras* and finally the dimensions of their bodies.]

2. 3 अक्षय वृत्त etc. The Jina had already ten atishayas from his birth such as अक्षयवर्ण etc., but when he attained वेद, he got twenty-four more as a result of his knowledge. They are described here and in the following *karavaka*.

4. 36 देवता : e., ten gods belonging to the class of *devatā*.

5. 1-8 The Jina is here described in terms of the epithets of god Śiva but is shown superior to him, e.g. *सर्वभूतेश्वर* god Ś₁ is at 2:3 associated with his consort, but the Jina is devoid of her 8-13. Similarly the Jina is shown superior to Brahmā, and in 14-17 to Viṣṇu.

[illegible]

निर्देशावली काल ५ मल दल विद्यमान काल ।

भाष्यनिमित्तं चत्तरे वाक्ये भवन्ति तादृशानि । T

6-7 आहार . पज्जति ति मणंति एत्थु The passage defines पर्याप्ति as a faculty which helps the development These पर्याप्तिs are six, viz आहार, eating food and digesting it; सरिर, body, इन्द्रिय, sense-organs, आणापाण, breathing; वासा, speech, and मण, mind

19 11 सुदुमणिगोयममुम्भवं, of those that spring from the subtle निर्गोय or निर्गोद, this निर्गोद is a physical body with infinite lives or souls

XI

[The Jina proceeds further to define the functions of different sense organs and creatures that possess them He then mentions the duration of their life After a general description of the Geography of the Jambūdīpa and other dvīpas with their rivers and mountains and antaradvīpas, the Jina proceeds to describe the human species with their characteristics and capacities He then goes on to detail the heavenly regions and gods He explains the fourteen Gunasthānas, the various prakṛtis of karmān, the characteristics of the Siddhas and their happiness On hearing the discourse the eighty four lacs of princes renounced the worldly life and became monks who were then called his Ganadhāras Similarly Bāmbhī and Sundarī became the first nuns of the Order Only Marīcī remained unenlightened The first lay disciple was Suyakṛti and the lady disciple was Piyamvayā or Priyamvadā The first disciple to obtain emancipation was Anantavīra]

6 6b वयगुणियउ, multiplied by वय i. e. five, because there are five vows

8 9-10 मररगहिं etc The passage gives the names of the ten कल्पवृक्षs

9 2b निरुद्ध, परामशयन्या , T, incapable of guessing or imagination.

10 4 सावयवयहलेण सोलहमउ समु लह माणसु, a human being obtains the sixteenth heaven as a result of his vows of a Śrāvaka The sixteen heavens are सोधर्म, ऐशान, सानकुमार, माहेन्द्र, यक्ष, ब्रह्मोत्तर, लान्ताव, कापिष्ठ, शुक्र, महशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण and अच्युत According to the Śvetāmbaras the number of heavens is twelve, which number they obtain by dropping from the above list ब्रह्मोत्तर, कापिष्ठ, शुक्र and शतार

11. 10 एव गुरु etc. The passage says that the nine बड़ेय or *urū* are destined to obtain heavens while the nine गुरुदेय are destined to go to hell.

17. 86 चेतुः पञ्च गुरु वपुः, the creatures in hell are made to drink as wine hot liquid juice of metals like copper. When they are so made to drink it, the keepers of hell say to them ironically that they were well taught by the Kāpālikas not to observe the vows and as they followed their advice they suffer the miseries in hell.

22. 1a अक्षरद्विरक्षरद्वयं the shape of the heavenly abodes resembles the क्षरिण fruit cut into two.

25. 12 प्रतिपत्त, attendance, service, or cure.

26. 38 अमरकौमुदु निर्दम्यु अमिरु, all अमिरु enjoy happiness for which there is no parallel.

29. 8 15 गुणस्थानं चोदनेषां etc. The passage gives the list of fourteen Guṇasthānas. They are — निष्काम, उत्पन्नकामचरि, (काम of our text) उन्मत्तनिष्कामि (नीति of our text), अनिष्कामचरि, वेदनिष्कामि (निरक्षर of our text), कथ, अमर, अमृतम (अमृत of our text) अमृतमिषा (अमिरु of our text), मृगमत्तम (सुखम of our text), उत्पन्नकाम (उत्पन्न of our text), शीतले (परिशीलकाम of our text) उन्मत्तमिषा (उन्मत्तमिषा of our text) and अमृतमिषा (अमृत of our text). For details see Miss Johnson's *Tripathi*, Appendix III. Pages 429-436.

32. 56 अष्टाश्विंश उच, i.e. one hundred and thirty-eight वरणि of वर. In the Guṇasthānas from number four to seven, one hundred and thirty eight वरणि are destroyed. They are इन्द्राश्वि 5, इन्द्राश्वि 9, इन्द्राश्वि 2, इन्द्राश्वि 21 आयु 3 (i. e. वरच निर्दम्य and वे), वर 93, वर 2, and अमृत 5. The total of these comes to 138 as stated above. 11a अमृतमिषा, i. on the शिखरि or शिखरि.

35. 126 एव नरि नेव पतिगुरु, only नरि who is the son of नर and grandson of नर, was not enlightened as he was overcome by इन्द्राश्वि and इन्द्राश्वि. The Eretkimbura version says that he, by his boasting and pride, was not fit to obtain अमृत. See Hemacandra, *Tripathi*, VI. 335-390.

XII

[Now Bharata started on a campaign for the conquest of the six continents of the earth or Bhāratavarsa. In the season of autumn, when the sky was clear and the roads dry, he saluted the holy beings and after going round the cakra, made some gifts to the needy and the poor. He consulted his ministers, took a huge army and, led by the cakra, proceeded to the eastern direction. After crossing the Ganges he went to the shore of the eastern ocean and wanted to conquer the Māgadha Tirtha. He first observed a fast and then took his bow and discharged the arrow in the direction of that region. The arrow was dropped down in the house of the king who was very much enraged at its sight. He was however pacified by his minister by saying that it was no use thinking of waging war against a Cakravartin, that Bharata was the Cakravartin of the Bhāratavarsa and that it would be well for all to pay tribute to him and to accept his sovereignty. The king of Māgadha Tirtha did accordingly]

1 3a छुडु छुडु, immediately, quickly 15-16 सारयमयलउणु etc. If the autumnal moon that pleases the heart of men by its lustre, had not been spotted or spoiled by the deer-mark, I would have given it (this very moon) as the simile, i e, I would have compared, the fame of the Jina to it (the moon)

5 30 साडी ण हिमवतहो, the river Ganges looked like the upper garment of the mount Himavat. The next three Kadavakas contain a fine description of the river

12 12 खधुद्धरियहिंसया, the Kīrāta chiefs carried their children on their shoulders as is the custom with them

14 12 णत्थि सहवाहु ओसहु, there is no cure for nature. Compare proverbs like स्वभावस ओषध नाही in Marathi

19 2a विविहणिहीसगसु, to the master of various Nidhis or treasures. The Nidhis are nine in number and their names are —नेसर्प, पाण्डुक, पिङ्गल, सर्वल्लक, महापद्म, काल, महाकाल, माणव and शम्भक. For the functions of these Nidhis see Hemacandra, Trisasti, IV. 574-782 and also below XVIII, 15 6-10 2b णियकालवट्ठाधियसरासु, to one who has fixed an arrow

to his bow named वरपाण or वरपाण. Miss Johnson's note (see page 225 of her *Tran. of Tripiṭi*) on this word is not justified in view of this evidence which is quite independent of Hemacandra. ७६ ते तुम्ह नर
नरं पि देव my lord, in that case there will remain neither we nor you.
Compare तुम्ही नरं माघि मरही नरं in Marathi.

XIII.

[King Bharata then proceeded to the South and arrived at the entrance to the region belonging to Varatapa (of Varadharma Tirtha). He again performed a fast, and after it discharged an arrow which fell in the house of Varatapa. King Varatapa immediately came to Bharata with a tribute and accepted him as his sovereign. Thereupon Bharata proceeded towards the west, came to the entrance of the river Sindhu. There too he practised a fast, and having penetrated the Lavanasamudra, discharged an arrow at the king of Prabhava Tirtha. The king arrived and accepted Bharata as his sovereign. Bharata thereafter conquered different countries such as Malava etc. and thus established his rule over the entire Aryan region. Thereafter Bharata proceeded to Vijayardha or Varsiddhya mountain to complete his conquest of the remaining three continents or Khandas.]

1 ५३ सिद्धिं लुप्तं the camp of the army is making rapid movements. २३ वनसिद्धि, in the neighbourhood of देवकी, i. e., a narrow strip of water or channel of the sea through which access to the sea is possible

2 १३ द्वारपाण सिद्धिं नरं the gates of different dvīpas or islands in the लवणसागर stood opened before him, i. e., as soon as Bharata recollected the holy chant, it was certain that his enemies would be defeated and the dvīpas conquered.

3 १५ वरपाणि वरपाणि, in the court-room of वरपाणि, the king of वरपाणि. Hemacandra does not mention the name of the king in his *Tripiṭi*.

9 १० वरं, by the king of the Prabhava Tirtha, situated at the confluence of the river Sindhu and the sea.

10 1a सुरसिंधुसरिद्धि देहलिय धरिवि, 1 e, regions standing between the Ganges (सुरसरि) on the east and the Sindhu on the west. 5a अजसद्, the continents where the Aryans live 14a विजयद्दु समुद्, towards the विजयार्ध mountain This is another name of mountain Vaitādhya as can be seen from lines 24-25 below where it is said that the mountain विजय divides the earth into three Khandas on either side and crosses the continent from east to west

XIV

[After having conquered the three southern continents King Bharata came to Vaitādhya and encamped there A god arrived there and requested him to strike the opening of a cave in the mountain so that he would obtain passage through it to the other side Bharata then ordered his general to do accordingly When he struck it the cave burst open causing great excitement among its residents The guardian deity of the mountain came out with presents to Bharata who stayed there for six months He then directed his disc to proceed through the cave and the army to follow it, but it was very difficult to pass through it because of darkness The general of the army then took the Kāgaṃ gem and wrote out on the walls of the cave the sun and the moon With their light the army proceeded further and came to the region of snakes or Nāgas Two rivers stood on the way of the army but the Sthapati or the engineer prepared a bridge or dam and the army went further Āvarta and Kīrāta, two Mleccha kings, finding that their region was invaded, invoked the aid of the King of the Nāgas called Meghamukha (Clouds in the Mouth), who began to pour down rain over the army continuously for day and night The priest of Bharata brought to the notice of the king how the army was troubled by heavy rain, when he asked his general to use the Carma gem to act as an umbrella for the whole army The army then attacked Āvarta and Kīrāta who then offered tribute to Bharata Bharata then proceeded towards Himavanta mountain along the course of the river Sindhu, the guardian deity of which offered him a wreath of flowers]

1 12b जसवद्भुत्ते पेशु अक्सिद्, the son of Jasavāi, 1 e king Bharata, then gave orders to his general who is one of the fourteen gems of a Cakravartin

[Having saluted the Jina Bharata got down from the Kaikes mountain and then proceeded in the direction of Ayodhya, and having crossed various countries he came to gates of the city. The disc or Chakra however did not enter the city but stood outside. His priest then told him that it did not enter the town because Bāhubali, his younger brother was not yet conquered and thus his conquest of the world remained still incomplete. Bāhubali was very strong and might even defeat Bharata, but he kept quiet so long. Similarly his other brothers also did not pay tribute to him. On hearing this Bharata got angry and sent messengers to his brothers to accept his sovereignty. They declined to do that but went to Kaikes mountain and become monks. Bāhubali on the other hand would not accept the sovereignty of his brother and challenged Bharata to fight with him].

1 ३ गयेत्युक्त्वा, towards Śāketa, i. e. Ayodhya, of which it is another name. See Geographical Dictionary of Nundo Lal Dey 12a ५५नेन वस्त्रेण sprinkling with water mixed with saffron. वस्त्रेण is a Den word. Compare वस्त्र in Marathi. 19 अष्टौ शतवर्षाणि after eighty thousand years which was the period taken by Bharata for his conquest of the world.

4. 10 अत्र गच्छेत् etc., in as much as they are not yet won, the chakra does not enter the town. The idea is that the disc cannot enter the town unless the conquest is complete.

6 12a किं किं न विदुः क्वचित्, how can one describe (folly) god of love or Cupid? Bāhubali, the son of Ilasaba, looked like god of love and the poet says it is not possible to do justice to his beauty by a description.

7 11-11 वा नमस्कृत्य वा etc.—we shall pay homage to King Bharata if he can ward off birth, oldage and death from us, if he can save us from birth in fourfold species or from samsāra.

11 7b सुखस्य, i. e., सुखस्य. company of the wise. Note the appearance of सु in the word as sanctioned by Hemacandra, IV 399

18 12a काउ कटलायलिहि म विसउ, let not the crow cry on the skulls of your head. The crying of a crow over the head is considered as a sign of approaching death 13a देहि कपु, pay tribute or homage to Bharata

21. 4a जो चरनु चोर सो राणउ, he becomes a king who is the strongest or most powerful thief A successful thief becomes a king while an unsuccessful one is called a robber or traitor.

24 11 धवलद जि गिर धवलउ, on the sandy banks of the Ganges the wings of swans and cheek of ladies away from their lovers, which are already white, became winter when bathed in the rays of the moon

XVII

[Bharata then declared that if he does not kill Bāhubali because it would be an offence to his father, he would hold him firm as an elephant is held in chains The armies of both Bharata and Bāhubali met and trumpets blown and drums beaten, when Bāhubali said to his ministers that he would not move a step from his place but would stop the progress of Bharata's army When their armies were about to strike, the ministers stood between them and adjured them not to discharge an arrow, and then requested both Bharata and Bāhubali not to engage themselves into a war which would lead to the destruction of poor soldiers, but that they should fight with each other in three ways, viz., they should fix their gaze on each other so that none would move his eye-lashes, that they should strike each other with water, and that they should go in for a wrestling match till one holds or weighs the other on his arms Both of them agreed to fight accordingly But in all the three forms of fight Bāhubali came out victorious When Bharata was lifted up by Bāhubali, he thought of his cakra which immediately went round Bāhubali and stood by the right hand side of Bharata Bāhubali thereupon dropped his brother Bharata on the ground]

1 2 गदागदणहो, of the son of गदा, 1 e., सुगदा, 1 e., बाहुबलि

2 9b पडिवक्खणाहि, with the lord or prominent member of your enemy 10 कणेण हएण etc. There is no gain by killing a low man,

2. Note that the four lines of the Damaka have a *सुवर्ण*.

3. *शुभ्रं चन्द्रा*, bearing the name of that mountain, viz. *शिव*.
20 *सुवर्णसुवर्ण*, sparkling with a hundred spokes.

5. *सुवर्ण* etc. The general then took up the *सुवर्ण* gem, and with it wrote out the moon and the sun.

6. *शुभ्रं चन्द्रा* *सुवर्ण* *सुवर्ण* with the help of a dam (*सुवर्ण*, *सुवर्ण*) or bridge built by the clever engineer i. e., *सुवर्ण*.

५१

(Thereafter Bharata proceeded along the Himavanta mountain, sitting on a seat of *darbha* grass he observed a fort and at the red discharge of his arrow at the guardian deity of that mountain. The deity at first was inclined to wage war with the warrior who discharged the arrow but on reading the name of Bharata decided to pay tribute to him. He came to Bharata and offered him presents. Bharata also, in return, made some presents to him and sent him away. Proceeding further Bharata came to *Vishala* Mountain. He found that all the four sides of the mountain were filled with names of the kings of the part and there was hardly any space there for Bharata to write out his name. He however wrote his name there and thus completed his conquest of the six continents of the *Bharatavarsa*. Gods praised him on the occasion. He proceeded further along the foot of the mountain Himavanta and in due course arrived on the banks of the Ganges. The deity of the Ganges then appeared before Bharata, bathed him with her waters, offered him presents by way of tribute and was then sent away duly honoured by him in return. He then came to the cave *Timala* of the *Vaiditya* mountain and asked his general to strike open its gates as before and halted there for six months. God *Naftamali* who used to stay there, came and paid tributes to Bharata. The cave however did not become passable to Bharata, when his ministers told him that his maternal uncles, *Nami* and *Vinami*, lived on the slopes of the mountain as lords of the *Vidyadharas*, and it was on their account that Bharata could not proceed further till they allowed him passage. Bharata then sent messengers to them who told them to pay tribute to Bharata, if not as kings, at least as his relatives. Both of them

agreed to do this and paid homage to Bharata The Kāgaṃ gem then produced light with the help of which the army was able to proceed Then Bharata came to the mountain Kailāsa where the Jina, his father, was practising penance On seeing him he offered him prayers]

2 11b वडसाहटाणु, a posture in which left knee is placed on the ground and the right knee is half bent with its top up This posture enables the archer to discharge the bow with the greatest possible force

4 9b परिछेयवताह, well-defined, clearly written, readable 16a जो जियइ सो जियइ etc he who lives under or abides by the command (of Bharata) (alone) can live, the other will surely die

6 15 वसुमइ सेंदुलिय, the earth is like a wanton lady who would not mind going with the father and after him with the son

7. 12b को एम ससकि गाव एवइ, who will, like you, put his name, i e, write his name, on the moon? It was considered to be the highest glory to write one's name on the moon 18 तुज्जु समाणु तुहु, you are like yourself, i e, there is nobody who is like yourself

12 5-14 The passage compares the river, सरि, and the बल or army, both called by a common name वाहिणी, by a series of expressions bringing out their common characteristics.

13 2b तिमीसहि दुग्गमहे, तिर्मिता or तमिस्रा is a dark cave through which Bharata had to pass along with his army

15 6b धरणेण, by धरण, the king of snakes who gave on behalf of कयम, the towns to नमि and विनमि

17 7b अम्ह पुणु दइयवरिय गइ, to us there will be the mode of life peculiar to sky-clad monks The expression दइयवरिय indicates the sectarian attitude of the present work along with several other similar expressions like sixteen heavens

22 10 महिहर महिहरहु etc the mountain (महिहर, महीधर) certainly observes all formalities towards a king (महिहरहु)

[Having saluted the Jina, Bharata got down from the Kaiśya mountain and then proceeded in the direction of Ayodhyā, and having crossed various countries he came to gates of the city. The disc or Cakra however did not enter the city but stood outside it. His priest then told him that it did not enter the town because Bāhubali, his younger brother was not yet conquered and thus his conquest of the world remained still incomplete. Bāhubali was very strong and might even defeat Bharata, but he kept quiet so long. Similarly his other brothers also did not pay tribute to him. On hearing this Bharata got angry and sent messengers to his brothers to accept his sovereignty. They declined to do that but went to Kaiśya mountain and become monks. Bāhubali on the other hand would not accept the sovereignty of his brother and challenged Bharata to fight with him].

1. १ लोकेषु दक्षु, towards Śāketa, i. e. Ayodhyā, of which it is another name. See Geographical Dictionary of Nundo Lal Dey. 1. 2 क्षुप्तेन उज्ज्वल, sprinkling with water mixed with saffron. उज्ज्वल is a Sanskrit word. Compare उज्ज्वल in Marathi. 18 अष्टौ वीरवर्षा after sixty thousand years which was the period taken by Bharata for his conquest of the world.

4. 10 नम वि ने etc., in as much as they are not yet won, the cakra does not enter the town. The idea is that the disc cannot enter the town unless the conquest is complete.

6. 1. 2 किं वि विवर्ण्य कथं, how can one describe (fully) god of love or Cupid? Bāhubali, the son of Rishaba, looked like god of love and the poet says it is not possible to do justice to his beauty by a description.

7. 11-11 नम वन्दामहे प्र etc.—we shall pay homage to King Bharata if he can ward off birth, oldage and death from us, if he can save us from birth in fourfold species or from samsāra.

11. 78 वृत्तः, i. e., वृत्तः company of the war. Note the appearance of वृ in the word as sanctioned by Hemacandra, iv 399.

18 12a काउ कदलावलिहि म विरसउ, let not the crow cry on the skulls of your head. The cying of a crow over the head is considered as a sign of approaching death 13a देहि कपु, pay tribute or homage to Bharata

21. 4a जो चलयतु चोर सो राजउ, he becomes a king who is the strongest or most powerful thief A successful thief becomes a king while an unsuccessful one is called a robber or traitor.

24 14 धवलाड जि गिरु धवलड, on the sandy banks of the Ganges the wings of swans and cheek of ladies away from their lovers, which are already white, became whiter when bathed in the rays of the moon

XVII

[Bharata then declared that if he does not kill Bāhubali because it would be an offence to his father, he would hold him firm as an elephant is held in chains The armies of both Bharata and Bāhubali met and trumpets blown and drums beaten, when Bāhubali said to his ministers that he would not move a step from his place but would stop the progress of Bharata's army When their armies were about to strike, the ministers stood between them and adjured them not to discharge an arrow, and then requested both Bharata and Bāhubali not to engage themselves into a war which would lead to the destruction of poor soldiers, but that they should fight with each other in three ways, viz., they should fix their gaze on each other so that none would move his eye-lashes, that they should strike each other with water, and that they should go in for a wrestling match till one holds or weighs the other on his arms Both of them agreed to fight accordingly But in all the three forms of fight Bāhubali came out victorious When Bharata was lifted up by Bāhubali, he thought of his cakra which immediately went round Bāhubali and stood by the right hand side of Bharata Bāhubali thereupon dropped his brother Bharata on the ground]

1. 2 गदाणदणहो, of the son of गदा, 1 e., सुगदा, 1 e., बाहुबलि

2 9b पडिवक्खणाहि, with the lord or prominent member of your enemy 10 ऊणेण हएण etc. There is no gain by killing a low man,

and therefore Rahu, the eclipsing planet does not get angry with sun.

4 14 *गणनायेते वायु निरवधि*, I shall build a dam (to stop the progress of the army) by a series of arrows, having the shape of snakes (*बाणबाणैः*).

5. 13 *अहं न भवामि* I do not behave well when I am with you, i. e. it is not right for me to indulge in pleasures when my king is marching against his enemy *विमुक्तमि* shall pay off, shall redeem, shall clear off.

8. 10 *कुतुब्धं वा मन्त्रितम्* as if drawn in picture on a wall.

9 *अत्र द्वित्रिंशत्* *अत्र*, both of you Compare *देने नव* in Marathi. 13 *वायु निरवधि* threefold fight, viz., galling at each other without winking; splashing water against each other so as to overpower one; and a wrestling match in which one would weigh the other on his arms.

11 *अधोक्ष्णं निरवधि* etc. The lower eye i. e. the eye of Bharata, was conquered by the upper eye i. e. the eye of Bishubali, whose glance was steady fixed and unwinking.

12 *अत्र विनाशायुः* (*बाणबाणैः*) in which the beaks of cobra birds were being filled with eatable stalks of lotus. 1 *निरवधि* *वायु निरवधि*, would just fall (slightly) above the waist but would not cover his face.

14 *अधोक्ष्णं निरवधि* *बाणबाणैः* etc. Let your bow of sugar-cane be crushed, let (people) drink its juice, or let (them) eat the sweet raw sugar (*बाण, वायु*). Bishubali had his bow made of sugar-cane and hence the reference. 10 *अत्र न भवामि* etc., Then the son of Jina i. e. Bishubali said why do you talk in vain? why do you ridicule my bow and arrow?

15. 10 *अधोक्ष्णं निरवधि* *बाणबाणैः*, hundred ways of wrestling.

16 *अत्र न भवामि* *बाण बाणैः*, then the fine-necked (Bharata) thought of his cobra or disc, saying to himself that he could not in reality be a cakravartin if he was to be so overcome by his younger brother.

XVIII

[Having lifted Bharata on his arms and thus defeated him for the third time, Bāhubali felt that he insulted his elder brother and cakravartin. He therefore asked Bharata to forgive him for the offence and desired to be a monk. Bharata however did not like to have the kingdom when he remembered that he had been defeated by his younger brother in the presence of the army, relatives and women. He therefore offered his kingdom to Bāhubali and desired to renounce the worldly life. Bāhubali could not agree. The ministers also intervened and Bāhubali placed his son on the throne, and went to Kailāsa mount to practise penance. He practised penance there for one year when Bharata himself came to see him and praised him. Bāhubali however, remained indifferent to the praise and was engrossed in acquiring the qualities which a Jain monk should acquire. In course of time he attained Kevalajñāna. Gods headed by Indra came to him and praised him. Bharata also was glad to hear the news that his brother had become a Kevalin. Thereafter he enjoyed perfect sovereignty over the six continents of the earth]

2 11 इह जित्तु परं तुहं सह क्षमिषु, I was defeated by you, and you have once (सह, क्षम्य) forgiven me

3 1-3 जह परं etc. If you, after having lifted me by your arms, had thrown me on the ground with a crash, if it had not been possible for my disc to save me, would any body have seen me alive? You have thus won or conquered even earth in forgiveness, you have frightened Indra (कसित, कौशिक, १ e, इन्द्र) by your valour. 10-11 ससि सूर्यो, etc. To the sun there is a counterpart in the moon, to the Mandara mountain there is (small) Mandara, to Indra there is Pratindra, but O son of queen Nandā (१ e, सुनन्दा), to you alone I do not see any second or counterpart.

5 6 जह एषहिं etc. If even after this (talk) you do not desire to have the earth, १ e., do not desire to rule over the earth, then return it to him who gave it to you, १ e. to Rāsaba, our father. It means Bāhubali is quite unwilling to rule and asks Bharata to rule as before.

6 7 वं वैश्वेति etc. Hatred (वैश्वे, वैश्वे) having left you, now stands in the form of a dark spot on the moon who is called वैश्वेय, वैश्वेय (वैश्वे + शयः वाहः).

7 ७a वसुधैव कुटुम्बकम्, i. e. five वसुधैव viz. इति, यत्, एव, अन्तः and वसुधैव. Note that the word वसुधैव often retains व in this book as also वसुधैव in the next line. ७b अन्तःकरणे, practice or observance of the six अन्तःकरण, viz. श्रद्धा, धर्म, अहिंसा, अस्त्व, वसुधैव, वास्तव्य and वसुधैव.

10 This kadavaka and the next record that Bāhubali, as monk, acquired the knowledge of certain tenets of Jainism and practised them. These tenets are arranged in numbers from one to thirty-two. A similar mention of these tenets occurs in the Uttarādhyāyana Sūtra XXXI, and also in this book in XXXVII 16-17. I think it is a good occasion for me to treat them here fully.

(1) एवमेष जिवः सन्निवृत्तः सन्निवृत्तः he cultivated in his mind the quality of Jiva which is one, i. e. solitariness, as nobody can share the effects of acts done by him. This गुण may be वसुधैव as defined in वसुधैव II 8 (वसुधैवो वसुधैव), or better still, the एवमेषकालः. In the Uttarādhyāyana Sūtra however we find:

एवमेष जिवः सन्निवृत्तः एवमेष व सन्निवृत्तः ।
अन्तःकरणे निवृत्तिः च अन्तःकरणे व सन्निवृत्तः : XXXI. 2.

i. e., one should practise abstinence in one respect, and advancement in the other : e., Jiva should abstain for अनन्त, undisciplined life and advance with self-discipline.

(2) एव एव वैश्वेति नि वसुधैव, he sent away (lit. made to fly) both एव and वैश्वेति. The Uttar. however mentions एव and वैश्वेति which is more in keeping with the usual list. Our text certainly reads एव in all MSS.

(3) (a) निवृत्तिः नि वसुधैव निवृत्तिः, he removed from his heart the three वसुधैव, viz., श्रद्धा, धर्म and निवृत्तिः.

(b) निवृत्तिः नि वसुधैव सन्निवृत्तिः, he soon acquired the three jivāḥ, viz. श्रद्धा, धर्म and वसुधैव.

(c) निवृत्तिः नि वसुधैव सन्निवृत्तिः, he left quickly (वसुधैवो वसुधैव, एव) the three types of crookedness, viz. bodily, verbal and mental. The Uttar. has वसुधैव, वसुधैव and वसुधैव in place of वसुधैव of our Text.

(d) गारुष तिष्ठिण विज्जिष देव, the divine one, i. e. Bāhubali, avoided three गारुष (गौरव), viz, गिद्धिगारुष, रसगारुष and सायागारुष. The Uttarā adds three उपसर्ग here

दिष्टे ष जे उवमणे तहा सेरि-उमाणमे ।

जे भिक्खु सहई जयई न से अउइ मण्डले ॥ ५ ॥

(4) चउगहकम्मणिषणरमियउ सण्णउ चत्तारि वि उयसमियउ, he suppressed or pacified the four appetites or emotions, viz., आहार, भय, परिग्रह and मैथुन, which take delight as it were in forming कर्म which puts the Jīva in the fourfold सत्तार, viz., देव, तारु, तिष्ठक and मनुष्य. The Uttarā has :

विगहकत्तायसन्नाण ज्ञाणाण च दुयं तहा ।

जे भिक्खु वज्जई निधं न से अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥

There are four विक्रयास, viz राज्य, देश, भोजन and स्त्री; there are four कषायास, viz, क्रोध, मान, माया and लोभ; the four सत्तास are mentioned above, the four ध्यानास are आर्त, रोद्र, शुक्र and धम out of which first two types are bad

(5) (a) पंच महव्याह, the five great vows of the monk, viz, अहिंसा, अदत्तादानवर्जन, असत्यवर्जन, परिग्रहत्याग, and ब्रह्मचर्य

(b) पचासवदाह, the five sources of sin, viz, हिंसा, अदत्तादान, असत्य, परिग्रह and मैथुन

(c) पचिदियह कयाह गिरत्यह, he avoided the (enjoyment of) objects of five senses, viz, शब्द, स्पर्श, रूप, रस and गन्ध

(d) पच वि णाणावरणई यथह, he (cut off) the knots of five types of ज्ञानावरणीयकर्म viz, श्रुतज्ञानावरणीय, आभिनियोधिकज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मन पर्याय-ज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय

(6) (a) छावासयउज्जमु सविसेसिउ, he made a special effort to observe the six आवश्यकस, viz, सामादय, चउरीसइत्थर, वन्दण, पडिक्कमण, फाउरसण and पच्चक्काण.

(b) छज्जीवई दयभाउ पयासिउ, he manifested kindness or compassion towards six classes of living beings, viz, पृथ्वी, अप, तेजस्, वायु, पनस्पति and अन्न

(c) छह लेसई परिणामुवइइ, he got stopped the effect of the six लेस्यास, viz, रुग्ण, नील, कपोत, तेजस्, पद्म and शुक्र

(d) छ वि वल्लई पच्चक्कइ दिट्ठइ, he saw or realised all the six entities, viz, धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल, जीव and काल

(7) (a) सप्त भयार्थं हर्षार्थं गच्छीं the serene one (i. e. Babball) destroyed the seven fears or risks, viz. भयमोक्षमय, लज्जामय, शर्मामय, क्षयमय, आजीर्णमय, क्षयमय and क्षयमय

(b) उस नि गद्य जगत् में, the wago one knew all the seven
brothers, viz. लीन, अमीन, अजयन तंत, निरी, कन and मोर.

(8) (2) बर सि यन सिद्धिनि शत्रु, the unscathed one exhausted or destroyed all the eight prides, viz., पण्डित, बुद्ध, कर्ण, इन्द्र, शत्रु, शैब्य, कृष्ण, and अश्वत्थ

(b) अह विद्याम नरि वरि, the excellent one remembered the eight qualities of the विद्, viz

उत्पन्नान्तरात्पुनरपि विद्यमानं नृपेण ज्ञापयन् ।

कनकश्यामनाम्नाम् कनक प्रभा ऐश्वर्य विहाय ॥

— १५५ —

[illegible]

(8) (a) मन्मथेयुः शंभवेन परिप्रेक्षितः, he observed the ninefold cobbacy
पक्षः ।

एभिः पितृभिरुक्तं भवति न पितृभिरुक्तं ।

संघस्य अन्तर्गत तन्निष्ठ विद्यालयानां च ११३

अपराधको बर्तीपुनःप्राप्तगतिविधौ ।

हामिनाप्येषा वि च अत्रमेवमित्थं व्यक्यते ॥ २ ॥

-T to Mr K

Devendra Com on Uttarak. XXXI 10 however gives the nine rules in collary as follows:

एवमपि ननु निमित्तविनिर्मुक्तं नृपिण्यारम्भमासीदिति नानीह ।

जन्मनामध्यायः विष्णुपञ्चमः अथ अथ धर्मशास्त्रे ॥ १ ॥

(b) कानूनपरिष्कार विभाग he realised the extent of nine entities, viz., सीड, बजेट, ड्राफ्ट, वॉर, क्लॉक, डीए निर्माण कर्म and स्टोड.

(10) दसविद् जिणधम्म विद्याणिउ, he knew the tenfold qualities of the Jina, viz ,

सन्ती य मज्जवज्जव मुत्ती तव संजमे य बोद्धवो ।

सद्यं सोय आर्किचणं च चम्मं च जइधम्मो ॥ १ ॥

(11) एयाइ ह्यजहिमउ अवियारइ धीरइ सावयइ .पडिमउ, he also understood the eleven प्रतिमास which lay disciples practise These eleven प्रतिमास are .—

दसण वय सामाइय पोसह पडिमा अचम्म सच्चित्ते ।

आरम्म पेस उद्धिद्वज्जए समणभूए य ॥

For details see my notes on Uvāsagadasāo, pages 224-229

(12) चारइ मिक्खुइ पडिमउ, he also knew the twelve प्रतिमास of the monks These are described in Devendra's Com. on Uttarā XXXI 11, as follows .—

मासाइ सत्तन्ता पढमा विइ तइय सत्तरादिणा ।

अहराइ एगराइ मिक्खुपडिमाण चारसग ॥ १ ॥

The duration of the first मिक्खुप्रतिमा is one month, of the second two months and so of the seventh seven months, of the eighth one week, of the ninth two weeks, of the tenth three weeks, of the eleventh one day and night, and of the twelfth one night. There are several things which the monk practising these प्रतिमास is called upon to observe Devendra describes them as follows:—

पडिबज्जइ एयाओ सचयणधिईजुओ महासत्तो ।

पडिमाउ भाविणया सम्म गुरुणा अणुत्ताओ ॥ १ ॥

गच्छे थिय निम्माओ जा पुब्बा दस भवे असंपुण्णा ।

नवमस्त तइयवत्थु ह्येइ जहन्तो सुयाभिगमो ॥ २ ॥

धोसहचत्तदेहो उवसणसहो जहेव जिणकण्णी ।

एसण अभिगहीया भत्त च अलेवइ तस्स ॥ ३ ॥

गच्छा विणिक्खमिता पडिबज्जइ मासिय महापडिम ।

दत्तेग भोयणस्ता पाणस्स वि तत्थ एग भवे ॥ ४ ॥

जत्थत्थमेइ सरो न तओ ठाणा पय पि सचलइ ।

नाएगराइवासी एग व दुग व अन्नाए ॥ ५ ॥

डुटस्सहत्थिमार्ण नो भएण पय पि ओसरइ ।

एमारनियमसेवी विहरइ जासण्डिओ मातो ॥ ६ ॥

वपुः सप्तमर्हं एव पुनर्वा निवामि जा सप्त ।
 नरं वपुःसुतां जा सप्त उ सप्तमर्हं ॥ ७ ॥
 नरो व अपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ।
 नरं वपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ॥ ८ ॥
 नरो व अपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ।
 नरं वपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ॥ ९ ॥
 नरो व अपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ।
 नरं वपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ॥ १० ॥
 नरो व अपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ।
 नरं वपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ॥ ११ ॥
 नरो व अपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ।
 नरं वपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ॥ १२ ॥
 नरो व अपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ।
 नरं वपुःसुतां नरं पु वपुः सप्तमर्हं ॥ १३ ॥

(13) (a) तेन किरिपात्रात् नुविषां he understood the thirteen kiras, which are enumerated below :

अष्टमर्हं निवामि विष्टं व अपुःसुतां वा ।
 अष्टमर्हं निवामि विष्टं व अपुःसुतां वा ॥ १४ ॥

For details of these see chapter II. 2.

(b) तेनैव नुविषां नुविषां he also counted upon the thirteen types of good conduct, viz. पञ्चमर्हं, वपुःसुतां and नुविषां.

(14) (a) चोदु वपुः, he avoided the fourteen knots which are enumerated in T as follows —

निवामि विष्टं व अपुःसुतां (1) व अपुःसुतां ।
 निवामि विष्टं व अपुःसुतां (2) व अपुःसुतां ॥ १५ ॥

(b) (चोदु) नरं वि नुविषां, he avoided the fourteen impurities enumerated in T as follows —

निवामि विष्टं व अपुःसुतां (1) व अपुःसुतां ।
 निवामि विष्टं व अपुःसुतां (2) व अपुःसुतां ॥ १६ ॥

(c) चोदु नुविषां नरं नुविषां, he understood fourteen groups of creatures. These fourteen groups are enumerated in T as follows —
 निवामि विष्टं व अपुःसुतां (1) व अपुःसुतां ।
 निवामि विष्टं व अपुःसुतां (2) व अपुःसुतां ॥ १७ ॥

निवामि विष्टं व अपुःसुतां (3) व अपुःसुतां ।
 निवामि विष्टं व अपुःसुतां (4) व अपुःसुतां ॥ १८ ॥

(15) (a) पण्णारह पमाय मेळत, abandoning the fifteen pamaḥ or flaws, enumerated in T as follows :—

विकहा सह य कसाया इन्द्रिय निह्वा य पण्णो य ।

चउ चउ पण एगेग हेति पमाया हु पण्णरमा ॥ १ ॥

i e, four types bad talk, viz गज्यकथा, देशकथा, भोजनकथा and रात्रिकथा, four कथायस, viz, क्रोध, मान, माया and लोभ, faults of five senses, sleep and drink (पण्ण, पानर !)

(b) पुण्णपावभूमिउ जाणेत, knowing the (fifteen kind of) regions where men act (to acquire merit and demerit), viz, five in each of भारत, इरावत and विदेह

(16) (a) सोलहविह कसाय पसमने, pacifying the sixteen forms of passions T notes these as : कपाया क्रोधमानमायालोभा मयेकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पा सन्त. पोडशाविधा भवन्ति.

(b) सोलहविहरयणेतु रमत taking delight in sixteen types of expressions T records them as follows :—काललिङ्गरचनानि प्रत्येक त्रीणि तव, तथा वि (1) कोनमिश्रवचनानि त्रीणि समयलोकदृश्योत्सवचनानि चत्वारिणि पोडश The Uttarā has गाहासोलसएहि which refers to the sixteen lessons of the first volume of सूयगई of which the sixteenth is called गाहज्जयणं

(17) असंजमोह सत्तारह, seventeen types of असयम, indiscipline, Devendra has enumerated these as follows :—असंयमे सप्तदशभेदे पृथिव्यादिविषये, तत्संख्यात्वा चाम्य तत्प्रतिपक्षस्य सयमस्य सप्तदशभेदत्वात् । यत उक्तम्—

पुढवि-दग-अगाणि मारुय वणफई-वि ति-चउ-पणिन्दिअज्जीवे ।

पेहेपेहममज्जण-परिठवण मणो-वई-काए ॥

T has the following explanation पृथिव्यमेजोवायुवनस्पतयः द्विदिचतु षेत्रेन्द्रियाणाम-प्रतिलेखन (1) दुष्प्रतिलेखनापहत्योपेक्षानि (1) जीवमनोषाफाया अपहत्य (1) गृहीताणश्चादिजन्तून् प्रतिलेख्ये (1) उपेक्षा (1) । अथवा—

पञ्चासषेहि विग्मण पञ्चिन्द्रियनिगहो कसायजओ ।

तिहि दण्देहि य विग्दी भजमो सत्तरममेओ ॥

तत्प्रतिषेधादसंयम सप्तदशविध

(18) जाणिवि सपराय अहारह, having known eighteen types of सपराय viz, ten यतिधमस such as क्षान्ति etc, five समित्ति and three गुप्ति

(19) एउणवीस वि गाहज्जयणइ, having known nineteen lessons or chapters of the book on Illustrations (नाय ज्ञान or न्याय ?) This is clear-

ly a reference to the sixth Aṅga of the Jain Canon which in the Śvetāmbara tradition forms the first part of the *pañcāṅgaśāstrī*. This book consists of two parts *Nāyas*, Jñātas or illustrations and *vaṇavāṇ* or sacred narratives. Our Mss. invariably read *ṣ* so that our reading is *pañcāṅgaśāstrī*. This reading is supported by T also. Uttarā. reads *pañcāṅgaśāstrī*. The change of Sk *ṣ* to *ṣ* is not unusual, compare *paṇ* for *paṇ*. It also appears that *vaṇ* or *vaṇ* constituted at one time an independent work of the Canon to which a small section of *vaṇavāṇ* might have been added later. The present text of the *pañcāṅgaśāstrī* in the Śvetāmbara Canon contains nineteen sections called *vaṇ* and are named as:

१. निम्नलिखित वाक्यों में कृष्ण और श्वेत रंगों के वर्णों के नाम लिखिए।
 २. निम्नलिखित वाक्यों में कृष्ण और श्वेत रंगों के वर्णों के नाम लिखिए।
 ३. निम्नलिखित वाक्यों में कृष्ण और श्वेत रंगों के वर्णों के नाम लिखिए।
 ४. निम्नलिखित वाक्यों में कृष्ण और श्वेत रंगों के वर्णों के नाम लिखिए।
 ५. निम्नलिखित वाक्यों में कृष्ण और श्वेत रंगों के वर्णों के नाम लिखिए।

—Devendra on Uttara VXXL 14

It appears that in the Digambara tradition there was also a book of the sacred canon called *Ṣaṣṭha* or *Ṣaṣṭi* it contained nineteen lessons as in the Svetāmbara tradition, but the names of the Nāṭhas with the Digambaras had a different order as can be seen from the list given below:—

1. *हस्तिमल* constituted the first *अवतार*. The story as given in T is as follows:—*हस्तिमल* *वेदव्यापी*। *पश्य कश्च। इत्यस्येह वनकपुरे एवा कनको महाहारी वनरा। पुत्रो नामकुमारः। तौ हस्तिम विद्वन्मत्तः अरण्या इत्यन्तरेण इत्यमलः। उदयसिन्धु नृत्य अन्तुलेनो अयाः। तत्पर्वद्वयकवेरं दृष्ट्वा पुत्रपुत्रो नाम वचस्ये विद्वो नामस्त्रावातो मया मन्त्रेण वेदवजो अयाः। होमपुत्रेमेव निगम्य वाहिनि पुनर्वातमनेन इत्यमलं सपत्नं स्वामन्त्रे रिपवं उक्षिप (दृष्ट्वा) नामोद्वि इत्यस्ये नृत्य नृणा देवी अया। If we compare this narrative with the one in the first *इल* called *हस्तिमल* of the *Śvetāmbara* version, we shall see that there is no reference there to a *Billa* being taught by *अन्तुलेन*, although there is agreement in that the elephant saved the life of a rabbit that crept under his foot. It thus appears that the *Digambara* version of the narrative may have been different from the *Śvetāmbara* one.*

2. दुम—This is
in the Svetkimbarn
दुमन्तवत् । यथा दुमन्त
वनेतिवत् । किं ईदृशेभ्यो विद्यमानम् ।

n. — the third place, but fourth
 ओलगाः—दुसरा
 तथा तृतीय

3 अडय—This is the third story in both the versions T. says:—
अण्डजकथा पञ्चप्रकारा । तयथा कुकुटकथा माताप्येता पिताप्येक इति । तावत्पण्डितारिचतशु-
कथा । चारणास्यव्याकरणवेदकशुककथा । अगन्यासपकथा । इत्ययमग्नधनमोचक कथा । In the
Svetāmbara version we get only one story of the eggs of a peahen and
not five as T seems to indicate

4 रोहिणी—This is the seventh story in the Svetāmbara version
while it is fourth in the Digambara one. T reads सुपुत्रचन्द्रेण सह रोहिणी
तिष्ठतीति लोकप्रवाद श्रुत्वा रोहिण्या भणित ययसी शुद्धा तया यमुनानदी शोरिपुं वेष्टित्वा पूषाभिमुखं
यहन्ति । तन्माहात्म्यात्तथैव जातम् । The story in the Jāta-dharmakथा is altogether
different

5 सेत—This seems to correspond to सेतु which is the fifth narra-
tive in the Svetāmbara version. T reads शेवे शिष्यकथा यथा चेत्तिणीपुत्रवारि
येनमतिशोधितः पुण्डालः । The story in the Jāta-dharmakथा is altogether different.

6 तुम्ब (and not रुम्ब as read in foot-notes)—This is the sixth story
in both the versions T reads तुम्बकथा रोणेन दत्तकदुककुमोजनमुनिकथा । The
story in the Jāta-dharmakथा is different as can be seen from its summary in
the com which runs as follows:—

जह मिउलेवालित गरुड तुम्ब अहो ययइ एव ।

आसवकयकम्मगुरु जीषा वचन्ति अहरगय ॥ १ ॥

त चेव्व तथ्विमुक्क जलोवरि ठाड जायत्तहुभाष ।

जह तह कम्मविमुक्का लोयग्गवड्डिया हेन्ति ॥ २ ॥

7 सघाद—This is called सघाद and is the second in the Svetāmbara
version T reads —सघादे । अस्य कथा । कौशाम्ब्या नगर्यामिन्द्रदत्तादयो द्वात्रिंशद्विभ्वा ,
तेषां समुद्रदत्तादयो द्वात्रिंशत्पुत्राः परस्परमित्रत्वमुपागता । सम्यग्दृश्यस्ते केषालितमीपे स्वर्गं निजजीवित
ज्ञात्वा तपो गृहीत्वा यमुनातीरे पादोपयान (पादोपगमन !) मार्गेन स्थिता । अतिघृष्टौ जाताया
जलप्रवाहेण यमुनामध्ये सर्वेऽपि ते पातिताः । परमसमाधिना कालं कृत्वा स्वर्गं गता । The
narrative in Jāta-dharmakथा is altogether different from the above

8 मादगि—It appears that मायन्दी which is the ninth story in the
Svetāmbara version should be the counterpart of मादगि of the Digambara
version T seems to make मादगिमल्लि as one narrative which would
however reduce the number of narratives to eighteen T reads . मादगि-
मल्लिकथा यथा वज्रमुग्गिमाभ्यन्तर्भाषाया धग्गि (मादगि !) नामायाः मल्लिपुग्गमालाभ्यन्तरिधत्तसर्पदशया
कथा . The narratives of the Svetāmbaras and the Digambaras do not
at all agree

१ मरि—This is the eighth narrative in the *Harivamśa*. For remarks see above.

10. अदिप्य—This is the tenth narrative in both the versions. T says अदिप्य अष्टमः कथा (अष्टादिकथा). Perhaps both the versions give the same narrative.

11. वसुध—The eleventh narrative in the Svetāmbara version is called वसुध which is the name of a tree in that version. I however seems to mean a different story I reads: वसुध-वसुधदेवता-
वसुधदेवता-वसुधदेवता-वसुधदेवता

12. निरा—It appears that this निरा should correspond with तेवरी which is the fourteenth story in the कालमहाकाव्य. I read: निरा मुकुन्दकोटि उज्जयिनीरक्षितव्य बर्हिषद्वाराप्रगल्भको नयमुद्राद्वयः. The Grotambara version of तेवरी does not seem to agree with the above.

18. नारायण—This seems to correspond to दशरु which is the thirteen
th story in the Svetāmbara version. T reads: नारायण नारायणोद्धार-
कर्मसिद्धिस्तिलो कर्मसिद्धिस्तिलो. This has no correspondence with दशरु of
the Svetāmbara version.

14. विम (वर्णन) — This seems to be a version of the Svetāmbhara version which is the seventeenth story there. It reads *विमवर्णन*. This story also does not seem to have any correspondence with the Svetāmbhara version.

15. सुप्रदेव—This should correspond with सुप्रदेव of the Svatikumbha version which is the eighteenth story there. I reads सुप्रदेवविनायक सुप्रदेवविनायक. There seems to be no agreement between the two versions.

16 बनारस—This is called बनारस in the Śvetāmbara version where also it is the sixteenth narrative. I read बनारस in the Śvetāmbara version. There is mention of the town of बनारस in the Śvetāmbara version, but beyond this there seems to be nothing common between the stories in the two versions.

17 ~~अष्टम~~—This is called the same in the ²vetimbura version but there it is the fifteenth story. T reads: ~~अष्टम विष्णुसहस्रनाम~~

विश्वानुलोमभृत्यानां किंपाकफलकथा The narrative seems to be similar in both the versions

18 उदगनाह—This seems to correspond to उदगनाह of the Svetāmbara version which is the twelfth story there T reads उदगनाह उदकनाथ (?) कथा यथा राजामात्यसमक्षगडुककथा The story seems to be similar in both the versions

19 पुडरिगो य—This is the last story in both the versions T reads : पुडरिगो य पुडरीकराजपुत्र्या कथा The Svetāmbara version seems to be different from the above as will be seen from the extract from the com

वाससहरस पि जड काऊण सजम सुविडल पि ।
अन्ते किलिहमायो न विसुज्झइ कण्ठरीड व्व ॥
अप्पेण वि कालेण के वि जहागहियसीलसामण्णा ।
साहिन्ति निययकज्ज पुण्डरीयमहागिसि व्व ॥

T adds : “अथवा—गुण जीवा प्र(1)जतीपाणासायामग्गणा उ य ।

एउणवीसा एटे णाहज्झयणा मुणेयव्वा ॥

अथवा—नव केवललद्धीओ कम्मक्खय ज हवन्ति दस चेव ।

णाहज्झयणा एए एउणवीसा विषाणेहि ॥

कर्मक्षयजा चातिकर्मक्षयजाः दशातिशयाः It is clear that the names of the अज्झयण agree in the two versions largely, but their contents seem to differ widely Of course this is a mere hypothesis based upon somewhat imperfect evidence of T

(20) वीसविहइ असमाहीठाणइ—Twenty types or causes of असमाधि, absence of tranquility of mind These twenty causes are given in Devendra's com as follows :—

1 दवदवचारी—दुय दुय वचन्तो इहेव अण्णाण पवहणाइणा अन्ने य सत्ते वावायणाइणा असमाहीए जोयइ, परलोणे य अण्णयं सत्तवहनणियकम्मुणा असमाहीए जोयइ

2 अपमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ

3. दुप्पमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ

4 अइरित्ताए सेज्जाए आसणे वा निवसइ

5 राहणिए परिभवइ

6 थेरोवघाई—सीलाइठोतेहिं थेरे उवहणइ सि पुत्त सवइ.

- [illegible]

T also gives a similar list of twenty causes, but the text is very corrupt

(1) ବହୁବିଧ ନି, i. twentyone impurities or impure and sinful acts (ପଦମ). They are given by Devendra as :-

- ન ભાડે (૧) કામગીરી બુકમાં (૨) મેટુર્ન દુ લેવમાં ।
 (૩) ઈં વ મુજબમાં () આકાશમાં વ મુજબમાં । ૩ ।
 (૪) કસો વ લાવનિય (૫) કોઈ () યાનિય () અનિય (૬) અનિય ।
 (૭) મુજબમાં લખે ક વધનિયવધનિય મુજબમાં । ૨ ।
 (૧૧) કામગીરીમાંથી વધા વધ લેઈને કરીને વ ।
 (૧૨) કામગીરીમાંથી લેઈને વ લેઈને ક કરીને । ૩ ।
 કામગીરીમાંથી લેઈને વધામાંથી લેઈને મુજબમાં ।
 (૧૩) વધામાંથી લેઈને મુજબમાં (૧૪) મુજબમાં લેઈને વ । ૪ ।
 (૫) મુજબમાં વ અનિય (૧૫) કામગીરી તદ્દ અનિયવધનિય ।
 મુજબમાં લેઈને વધામાંથી લેઈને વધામાંથી લેઈને । ૫ ।
 (૧) લેઈને અનિયવધનિય કામગીરી વધામાંથી લેઈને ।
 લેઈને વધામાંથી લેઈને વધામાંથી લેઈને । ૬ ।
 () કામગીરીમાંથી લેઈને વધામાંથી લેઈને ।
 કામગીરીમાંથી લેઈને વધામાંથી લેઈને । ૭ ।

(१९) आउट्टि मूलकन्दे पुष्के य फले य वीयहरि ए य ।
भुञ्जन्ते सयले ऊ (२०) तहेव सवच्छरस्सन्तो ॥ ८ ॥

दस दगलेवे कुष्वं तह माइहाण दस य वरिस्सन्तो ।

(२१) आउट्टिय सीळोदगवग्घारियद्धत्थमत्ते य ॥ ९ ॥

दध्वीइ मायणेण य दिज्जन्त भत्तपाण चेत्तण ।

भुञ्जइ सचलो एसो इगवीसो होइ नायव्वो ॥ १० ॥

(22) सहिवि दुकीस दुसज्ज परीसह, having borne twenty two unpleasant contacts, viz , दुःख, पिपासा etc For details see तत्त्वार्थाविगमसूत्र IX 9

(23) तेवीस वि सुत्तपड्डई, 1 = twenty-three chapters of the सूत्ररुताङ्ग, the second Anga of the Canon of the Jains, beginning with समयव्ययन and so forth. T reads ससमए वेदालिजोए उवसग्ग इत्थिपरिणामे निरयन्तर वीरधुदी कुत्तीलपरिमासिए धम्मो य अग्गमग्गे समसण तिकालागन्धसाइयए (1) आदा तदित्था (1) पुडरीको वीरियट्ठाणे पयआराहेयपरिणामे पयक्खणाण अणगारगुणाकित्ती सुद अत्थ णालन्दे सुदयड्डञ्जयणाणि नेवीस द्वितीयाङ्गभृतवर्णनाधिकाराअ It we are to trust the text of T which is admittedly corrupt, the order of adhyayanās in the Digambara version would be different from the Svetāmbara one

(24) चउवीस वि जिणतित्थइ—the twentyfour तीर्थs of the twentyfour Jinas

(25) पञ्चवीस भावणउ—For details see तत्त्वार्थाविगम, VII 3-8 T reads एकैकस्य परिपालनार्थं बाह्मनोगुसीवां (1) दानसमित्यादय पञ्च भावना , अथवा, त्रयोदश क्रिया द्वादश तपांसि च पञ्चविंशतिर्भावनाः

(26) छव्वीस वि पुह्वीड, the twentysix regions; T reads सोधर्मादि-मोक्षपर्यन्ता एका (1) पृथ्वी उत्तर्षिण्योर्मत्तैरावतयोरवसर्षिण्यां शुद्धा नाम पृथ्वी भवति । उत्तर्षिण्यां च सेव सारा इत्युच्यते इत्येका पृथ्वी । रत्नप्रमो (1) मौल्लरमागचिन्नादय (1) पङ्गमागादय सप्त नरकभूमय. इति पद्धर्विंशति पृथिव्य

(27) सत्तवीस जइगुण, twentyseven vows of a monk, viz , द्वादश भिक्षु-प्रतिमा , अष्टौ प्रवचनमातर , क्रोधमानमायालोभमोहरागद्वेषाणामाशयसप्त, T Devendra how-
ever gives a different list —

वयउक्कमिन्दियाणं च निगहो मौपैकरैणसच्च च ।

समैथा विरामैथा वि य मणमार्हण निरोहो य ॥ १ ॥

कायाण छैकै जोगम्मि जुत्तैथा वेयणैहियासणया ।

तह मारैणन्तियहियासणा य एएणमारगुणा ॥ २ ॥

(७३) अर्धिन वरावाकः—There are twenty-eight (?) मन्त्राः as T
 ५५५ but Devendra gives them as २८ मन्त्राः कथं वसिष्ठापुत्रे वसिष्ठिनि वरावाकः,
 न वरावाकपुत्रे मन्त्राणां वसिष्ठिनि वरावाकपुत्रे

[illegible]

आद्याह्न ५ पुनरा सहेयविष्णा (सिद्धा १) य ह्येवार्थ ५ ।

मुद्रण १५ मन्मा बहादुर या हारी १९८१

Devendra gives a different list:

अहं निमित्तं प्रादुर्भावोऽस्मादिति वाच्यं न ।

अथ सर्वं स्वयंभूतं चैव नित्यं च विदितं च ॥ १ ॥

मुझे किसी तब व मेरे व आप प्रेममय गलतियों।

पञ्चमं चैव सप्तमं चैव त्रयोदशमं च ।

For still another list see *संज्ञासूची* under *विष्णुसूक्त*

[illegible]

(31) दशमि लम्बाय पुनरे, shaking off the thirty-one types of impure acts. They are given in T as follows—महाति सुमात्रावीर्ये वीर्यवर्गा दम्भपरा-
मर्दे वीर्यि वैदुष्ये लज्जातापदवपका विविदे इतीर्य दशमेन्दुनीयवर्गिण इतीमेदुर् विवर्गा
कायधनुर्मे नाम पुनपुनर् न वीर्यवर्गे (1) आभवात्प दम्भवर्गा

(52) *अनुसूचित वर्ग के पुरुष*, and taking upon thirty-two parachutings of the Jmas. They are given in T. as follows:—

अई तरेहुये। उषातमयेरुना ३६ कथनो।

अभिलेखित निषदा अभिलेखित अभिलेखित ॥

The Uttarā XXXI 20 mentions one more series of thirty three terms as तेत्तीसासायणासु, but we do not find any mention of it in our work either here or in XXXVII 15-17 below

14 9b छप्पण्णन्तरदीपहं—These fifty six अन्तरदीपs are located in the लवणसमुद्र outside जम्बुद्वीप, seven in each of the eight quarters For details see नन्दिचूडटीका of मलयगिरि, pp 102-103

15 6-10 These lines describe the different functions of the nine तिथिs or treasures

XIX

[Bharata then thought that the wealth he acquired would be of no use if it was not given to worthy persons, popularly known as Brahmins. These Brahmins, according to him, were persons who observed the vows laid down by the Jinas. He gave largely and liberally to such persons presents such as clothes etc

One day Bharata saw a bad dream towards the end of the night. He was very much disturbed by the dream and hence went to see Rīsaha the next morning. After offering prayers to him Bharata asked him to tell him how and by what meritorious act Rīsaha became a Jina and Bharata as cakravartin, Bāhubali a strong man, Śreyāmsa a liberal donor, and Somaprabha a meritorious ruler. Rīsaha then narrated to him how there would come hard times of Duhsamā when all notions of morality would be completely changed]

8 13 अवसवणज, अपस्वप्नः, a bad dream

10 12-13 धीवरिसारिपुत्तह देहिंति पट्टत्तणु, they will give full powers to persons like व्यास who is the son of a fisherwoman and दुर्वास्स् who is the son of a female ass व्यास is known to be the son of सत्यवती by पराशर, but the origin of दुर्वास्स् as the son of a female ass I am not able to trace

12 2a पचमजुगि, i e, in दुष्पमा

[Rama first refutes various theories of creation and states that the elements that constitute the universe are earth, air, fire and water and that these are beginningless and endless. The universe is not created by either Brahmā, Viṣṇu or Śiva. In the midst of this universe is situated the human world called Trīyaloka with many islands and oceans. There on the western side of the mountain Meru there is a region named Gandhāra with its capital Alayā (Alakā). There ruled a king named Atibala (Atibala) with his queen Manoharā. A son named Mahābala was born to them and as soon as he attained youth king Atibala decided to place him on the throne and renounced the worldly life. King Mahābala thereafter began to rule the earth. He had four ministers named Mahīmā (Mahīmā), Sambhinnamati, Satamati and Svayambuddha (Svayambuddha). Now one day this Svayambuddha told the king the futility of pleasures of the world, and advised him to practise the pious life as recommended in Jainism. Then Mahīmā, championing the cause of the Cārvāka school, advocated the doctrine of the identity of the body and the soul. The minister Svayambuddha refuted the doctrine of Mahīmā, when Sambhinnamati advocated the doctrine of momentariness advanced by the Buddhists. This doctrine of momentariness was also refuted by Svayambuddha when Satamati came forward with his doctrine of Union. Svayambuddha refuted this doctrine also.

Svayambuddha then narrated to king Mahābala a story of one of his ancestors, viz. Aravinda. This Aravinda had two sons named Haricandra and Kuruvinḍa. One day Aravinda suffered from a terrible burning sensation in his body and, when he found that it did not alleviate by any remedy asked his son Kuruvinḍa to prepare a pool of blood of animals, bathing in which, he said, would stop his sufferings. Kuruvinḍa obeyed his father's command, but prepared a pool of artificial blood (liquid lac). When Aravinda entered it he tasted the liquid and found that his son had deceived him. He then ran after his son to kill him, but stumbled on the way and was killed by his own sword.

NOTES, XXI

There was another ancestor of Mahābala named Dandaka. His son was named Manimāli. He amassed a large fortune and having died became an ajagara (a kind of non poisonous snake) and kept a watch over his wealth. One day Manimāli came to the house and saw the snake. The snake recollected his former birth and recognising his son did him no harm. Manimāli was surprised to see this, went to the sage and asked him who the snake was. On learning that he was his father, Manimāli came home and instructed him in the Jain doctrine. The snake practised it and was born as a god in the next birth. The god came to his son Manimāli and offered him a present of a necklace which Mahābala had been wearing.]

17 2-5 अणिहणइ etc. The four elements, viz., the earth, the air, the fire and the water have no beginning, no end and are not caused by any. Whenever these four elements combine, marks of cetanā become visible. Life comes into existence in the elements as intoxicating element does by the combination of raw sugar, water and flour. There is thus no difference between the body and the soul. This is the doctrine of the Cārvāka school.

18 9b पउरंदरिय वित्ति, the doctrine of Puramdara, i.e., Indra, who along with Brhaspati is mentioned as founder of the Cārvāka school. 10-11 विणु जीवै etc. If elements combine without jīva or soul and form themselves into a body, then let there be a body in a jar where a concoction of herbs is kept, in other words living bodies may come into being even in test-tubes.

19 11 रिसितमयहु भत्तएण, by one who was the devotee of the doctrine of the sage i.e. Jina. 12 णिरण्णउ, निरन्वयम्, without continuity.

21 3 आयासु etc. A Tittabha bird, saying that the sky will fall, is frightened, and rests raising up its legs (to support the falling sky).

XXI

[Svayambuddha further told Mahābala that his father, grandfather and great-grandfather had all attained auspicious places as a result of their pious life. On hearing this he also went to the

Jandara mountain to pay homage to the Jina. Just at this juncture there arrived a pair of Āraṇamuni. Svayambuddha saluted them and asked them about the future of his master Mahābala. They thereupon told him that he was destined in the tenth birth to be a Tirthankara, but in his past life he was the son, named Jayavarman, of king Sri-apa and queen Sundari. As the king gave his throne to his younger son Śrī varman, Jayavarman felt that he should turn out to be a monk. He therefore went to Tirthankara Svayamprabha of the past age and became a monk. Now at this juncture there arrived a Vidyādharma king with a huge paraphernalia. The young monk Jayavarman was so much impressed by the king's fortune that he formed a bankinging to have, as a result of his penance, royal fortune similar to that of the king in his next life. It was on this account that in the subsequent birth he was born as Mahābala. Svayambuddha then went to Mahābala, saved him from his other ministers who were misleading him. As Mahābala had only one more month of life left to him, he decided to die a sarvaṇyaśa maraṇa. He was born in the Hīma heaven after death, as a god named Lakṣiṅga and had as his consorts Svayamprabha and Kanakaprabha.

2. 12 क्व सिः लेनवयुः, he stretched his hand (to pick up) a lotus flower from among those that were offered to the images of the Jinas.

4. 46 हिं ननु जनयु व वयस्य, tell me whether Mahābala is bhavya, i. e., capable of attaining emancipation or no

8. 1a वयः सिव्यु, he formed a bankinging or cherished a desire that his ascetic life should bring him some reward in the following birth
9 ननुहिं, i. e., on account of वयस्य

XXII.

[One day Lakṣiṅga saw some signs such as the withering of flowers on his body which indicated that his period of life as a god was to come to an end soon. He was very much frightened but was advised that he should better spend the rest of his life in doing some pious acts. He thereupon went to worship the Jinas. In course of

time he died and was born as son named Vajrajamgha to king Vajrabāhu. Now while Vajrajamgha had been growing on the earth, his consort Syamprabhā wept bitterly for the loss of her husband, and after her death, was born as daughter named Sṛimatī to king Vajradanta and queen Laksmīmatī of Pundarikinī. One day when this Sṛimatī was half asleep, she saw a dream of a visit of a Jina with a large number of gods attending on him. She was immediately reminded of her former birth and former husband and fell on the ground in a swoon. She was soon brought round and her parents were called in. The king soon discovered that his daughter was love-sick. He therefore put her under the care of a wise nurse and asked her to ascertain the person loved by her.

At this juncture a report was brought to him that Jasahara attained Kevalajñāna and Cakra made its appearance in his armoury. The king immediately went to pay homage to the Jina, and as a result of this act he obtained Avadhijñāna. He came home and told his daughter the story of her former life in heaven and assured her by saying that she would soon meet her former lover, and then went away on his conquest of the world.

One day the nurse attending on her asked her to speak out her mind. Thereupon Sṛimatī told her that she was in the third previous birth the youngest daughter named Nirnāmikā of a poor merchant named Nāgadatta who had a large family of ten. One day while this Nirnāmikā was returning from the forest where she had picked some fruit, she saw a large crowd of people going to meet the Jina. She also went there, paid homage to the Jina and asked him why she was born poor. Thereupon the Jina told her that in her previous birth she put the dead body of a dog on a monk, but as the monk was unaffected by it, she removed it on the third day out of compassion. As a result of this act she was born poor. The Jina thereafter explained to her the true nature of Dharma and asked her to observe one hundred and fifty-eight fasts so that she would get rid of her inauspicious acts. She did accordingly and after death was born in Īśāna heaven as wife of Lahtānga. Six months after his death, she also came to the earth and was born as Sṛimatī. On recollecting her

MAHĀPURĀNA

love to Lalitanga she fainted. Having narrated the story of her past lives, Śrīmatī drew on canvas the portrait of Lalitanga and asked her nurse to find him out.]

9 116 लवङ्गनाम लवङ्गम् च विदितम्, the scented paste (लवङ्गनाम लवङ्गम्) takes away my courage as it destroys force (लवङ्गम्) or as if it is like a bath to the dead (लव + कृष्ण).

11 86 अविवाह्य ईशुनिपाक although he (I. a. Jha) is destitute of wife or consort (निपाक ईशुनि, अविवाह-बरेनि) he knows the three times, viz., past, present and future (निपाक, निपाक).

18 ॐ अर्थं दृग्गर्भं we two people, i.e., father mother five sons, viz. मनु, नक्षिपु, नक्षिपु, कसेन and मिनरसेन, and three daughters, viz. शिपिषा शिपिषा and मिनरसेन. Not the use of नव with numerals which is preserved in Marathi. Compare अर्थं दृग्गर्भं दृग्गर्भं, दोन नव, दोन नव etc. 106 मं द्रव्येति मयि मय्याय, I filled the cavity of my clothes (particularly of the कटिपत्र) with a vegetable called मय्याय which is similar to spinach (मड or रोका). This मय्याय seems to be a common article of food as vegetable available to poor people.

18 ३० कर्मण्येवाङ्गीक्षते there is merit, i. e., one acquires merit by looking his face into ghee. This line and several others in this *kalavaka* mention some of the beliefs or superstitions of Brahmanic religion.

II ११ वृषाशुक्ल, etc. If, O young girl (कवि), you observe one hundred and fifty-eight fasts on the fifth day of the bright half (चित्रपक्षे, शुक्लपक्षी) of the month, you shall get rid of your past sins. शुद्धयन्तीनामष्टमस्तुतिप्रकरणसिद्धान्तोक्तम् (अथवाचस्पतयेः ?) शुद्धयन्तीविधिर्नरदि पठनेन कल्पदितिकथायां मिलमुत्तरादिभिर्विशिष्टम् । T

XIII

[The nurse of Srimati then took the portrait painted on canvas and went to the temple of the Jinas, and announced to the people that the person who would read correctly the events painted on the canvas, would marry the princess Srimati. A crowd of princes from

different countries arrived there to try their luck, but to no purpose. Now her father returned from his conquest of the world and narrated to her the story of his former lives.

Vajradanta said: In my fifth previous birth I was born as son named Candrakīrti of an Ardhacakravartin. I had a friend named Jayakīrti. We both of us enjoyed the kingdom for a long time, and having practised penance, were born next in the Māhendra heaven. After that we were both born as Baladeva and Vāsudeva named Śrīvarman and Vibhisana to king Śrīdhara and queen Manoharā of the town of Ratnasamca. When we attained youth, our father handed over the kingdom to us, practised penance and obtained kevalajñāna. Our mother remained at home, but spent her time in doing pious acts. She was born next as god Lalitāṅga. In course of time my brother Vibhisana died, but not knowing that he was dead I carried on my shoulder his body and wandered from place to place. God Lalitāṅga, i.e., my mother in the previous birth, saw this, and in order to bring me round, stood on the way crushing sand to extract oil from it. I asked him what he was doing, and on hearing from him his objective, told him that he would not get oil from sand. The god then asked me why I had been carrying the dead body of my brother as it would not regain life. Then I realised that my brother was dead. I did the funeral rites for my brother, gave my kingdom to my son, practised penance, and after death was born as Indra in the Acyuta heaven.

Vajradanta narrates further the various births of Lalitāṅga till he is born in Utpalakheda as Vajrajamgha.]

3 2 सौ सरसरविहिण्णु सा ण लद्ध, he, being hit (विहिण्णु, विभिन्न.) by the arrows (सर, शर) of the god of love (सर, स्मर), does not secure her (सा). Note that सा is used here as Acc sing feminine, which is very rare in Apabhramsa.

5 Note the शृङ्खलायमक or दामयमक here. Note particularly 7a which line looks apparently incomplete as there is no 7b in any of the Mss. The occurrence of such half lines seems to be justified and correct, and we need not suppose that b is lost, for the यमक here °गिहो—गिहो—णियरो—णियराय° in 6b, 7a and 8a remains in tact.

8. १३ वीर्यपूजित—This is a kind of penance or a series of fasts which Jains observe. Similarly वनपूज in 10a, गुरुपूज in 9 9a and लज्जापूज in 9. 14a, वनपूज in 11. 9a are fasts the details of which can be seen in any dictionary.

21 2 इत्ययं इत्ययम्, from the place of इत् 13a वनपूजा । १
विष्णुदेव

XXIV

[In the meanwhile the wise nurse of Śrīmātī went out with the picture and while wandering over different countries came to Utpalakheḍa. There she kept the picture in the temple. Vajrajambh came to that place, saw the picture and fell into a swoon. When he recovered he was asked what the matter was and told his friends that he was in love with the picture. Including his love to separation for

was born. Vajrabāhu, the father of Vajrajambha, was informed of the happenings, and having assured his son that he would secure Śrīmātī for him, started for Pundarikim. He was received well by Vajradanta, and was asked why he came to his house. After having heard of the picture incident, Vajradanta offered his daughter Śrīmātī to Vajrajambha, and thus brought about the union of lovers.]

4. & 5 Note the events drawn in a picture as also those that could not be and had not been drawn in the picture.

8. १३ वो न तुम्ह विष्णु भक्ति, who can wipe off what is written on the forehead? This has become a proverb in M.

XXV

[After marriage Vajrajambha and Śrīmātī returned to Utpalakheḍa. Fifty-one twin sons were born to them. One day Vajrabāhu

saw in a lotus a dead bee as it was fond of lotus-odour and did not

leave the lotus even though it was closing in the evening. On seeing this he also was disgusted with pleasures which brought death to creatures and renounced the worldly life. His son Amītejas then did not like to rule over the earth and followed his father. Thus Pundarīka, the grand son of Vajradanta came to the throne. As he was young, his mother thought that he should be helped by friends like Vajrajamgha, and therefore sent a letter to him. He proceeded to her place, and while camping in a forest, met a pair of young monks who were no other than his own youngest sons, and asked them to narrate to him the story of his previous births, viz. those as Jayavarman, Mahābala, Lalitānga and Vajrajamgha. They then narrated the four previous births of Śrīmātī, viz. those as Dhanaśrī, Nīrṇāmikā, Svayamprabhā and Śrīmātī. They also narrated the previous births of his priest, minister, friends and servants. He was also told that in his eighth birth he would become a Tirthamkara, and Śrīmātī would become prince Śreyāmsa. After listening to this he proceeded to Pundarikinī, saw there his sister Anumdhari and the young prince Pundarīka, and after having arranged for the proper government of his kingdom, returned home.

12 66 दूतावास, a camp in tents (दूस, दूप्य, पन्गृह).

19 11a कदुबि, a sweet meat seller, a baker.

XXVI

[Vajrajamgha and Śrīmātī were then born in the Uttarakurus as twins to Aninda and Ajjavā. There they recollected their previous birth when a pair of Cāranamunis arrived there. One of them was no other than Svayambuddha, the minister of king Mahābala. This Cāranamuni then explained to him the subsequent births of Mahābala as also his own, and advised him to follow the Jain doctrine. Vajrajamgha was then born as Śrīdhara in the Īśāna heaven, and Śrīmātī, changing her sex, was born as god Svayamprabhā in the same heaven. The Cāranamuni also narrated the subsequent lives of the three other ministers of Mahābala. Now god Śrīdhara was next born as prince Suvidhi of king Subhadrsti and queen Nandā. Suvidhi married Manoramā, the daughter of king Abhayaghosa. God Svayamprabhā

was now born as son to Suvīdhī and was named Keśava. Suvīdhī was next born in Acyuta heaven as Indra, and Keśava was born as Pratindra in the same heaven.]

1. 146 वचनं वचनं—It appears that the study of Prakṛit poems was considered to be a fashion of the day

7 106 वेदं वदन्ति वाऽऽपि विदुः—The root विद् (विद् in Prakṛit) is widely known to mean "to know" so the term Veda means knowledge. Now as our text says, the Vedas should preach kindness to creatures, and therefore those books which preach the doctrine of हिंसा cannot be called वेद but a वचनम्, i. e., a word.

XXVII

[Acyutendra and Pratindra were next born as prince Vajranābhi and merchant Dhanadeva. Vajranābhi became a monk after having handed over his kingdom to his son Pavidanta or Vajradanta. Dhanadeva also became a follower of Vajranābhi. Now Vajranābhi, by his hard penance, acquired the acts which secured for him the Tirthankara nīva and gotra, and in due course was born in the Sarvārthasiddha heaven as Abhinendra. Dhanadeva also was born as Abhinendra in the same heaven. In the following birth Vajranābhi was born as Rishabha and became the first Tirthankara and Dhanadeva was born prince Seyamisa. Similarly Rishabha narrated the births of several others of his followers including his sons. Bharata then asked the Tirthankara as to how many Tirthankaras, Vāsudevas, Dāhadevas, Prativāsudevas and Cakravartins would there be in future. Rishabha mentioned their number. Bharata then offered a prayer to Rishabha.]

8 Note that this kāvya summarizes the ten previous births of Rishabha. They are—जम्बवन् विनायकः, अश्वत्थ, अश्वत्थ, अश्वत्थ, अश्वत्थ, अश्वत्थ, अश्वत्थ, अश्वत्थ, अश्वत्थ, अश्वत्थ. Similarly the previous births of Seyamisa are summarised here.

12, 53 न वदन्ति तु मया वदन्ति—The passage says that वदन्ति (the 24th) will be the twentyfourth Tirthankara named वदन्ति.

NOTES, XXVIII.

On hearing this prophecy मर्षिचि was delighted and danced out of joy. This exhibition of pride and joy on his part was responsible for his long wanderings in Samsāra. He was destined to be the teacher of Kapila, the author of Sāmkhyasūtras. Compare Hemacandra, Trisasti VI 373-390.

XXVIII.

[Bharata then returned to Ayodhyā and performed some propitiatory rites for his dreams. He made gifts to the needy and the poor and led a pious life. He ruled as a good and noble king, explained to his feudatories how they should behave as kings.

Gautama, the pupil of Mahāvīra, continued the narration further and said to Śrenika as follows — King Somaprabha had fourteen sons. The eldest of them was called Jaya. He was crowned and placed on the throne. His father and his uncle Seyamsa became monks. When one day King Jaya went to the pleasure-garden he saw a monk preaching and a snake and its mate listening to it. King Jaya came to that very place next year when he found that the snake had left the female snake which then formed friendship with a low class snake called Divada. The king touched them with the lotus flower in his hand. The king narrated the event to his wife at night, when there arrived a god and told the king that he was the snake and that his wife, the female snake, after being touched by the king, was killed by his attendants and became a goddess. The god thereafter gave to king Jaya heavenly garments and went away.

Now a minister of Jaya came and told him that there was a beautiful princess named Sulocanā, daughter of King Akampana and queen Suprabhā. Her father saw her in youth and thought he should find out a suitable husband for her. He accordingly arranged to hold a Svayamvara. King Jaya attended this and was chosen by Sulocanā there. Arkakīrti got angry because he was rejected and wanted to fight with Jaya. At this juncture Sulocanā or Jaya dies on her account in the fight she would die by renouncing food. In the fight however King Jaya defeated Arkakīrti and arrested

him. Sulocanā therefore returned home. In the meanwhile Jaya also approached Arkakīrti and coaxed him to give up his anger towards him.]

20 116 मेघमणि इत्यस्मिन् राजा king Jaya was called मेघमणि or मेघमणि because his voice resembled that of a cloud. Our text gives मेघमणि here and also in 28 4a, but elsewhere we find the name as मेघमणि in 21. 15 मेघमणि in 28 6 अश्वमेधमणि in 28 36. Metrically मेघमणि here is not good, but in 28 46 it is quite right. In T also under 30 106 we get मेघमणिमणि

XXIX.

[King Jaya returned home and paid homage to his father. While returning home he stopped on the bank of the Ganges, when an elephant attacked Sulocanā, but her life was saved by the guardian deity of the forest who gave her presents. Sulocanā then asked her who she was. She then told her that she was called Vindhyaśūtra, the daughter of Vindhyaśūtra and Priyanguvī, and obtained her present position because of the fact that "Sulocanā taught her the mantras of five Paramēthias. Now the female snake touched by king Jaya and killed by his servants became a crocodile in the Ganges and sent out of enmity the elephant to attack Sulocanā.

One day when king Jaya was seated in the court, he saw a couple of divine beings. He recollected his previous birth, and fell into a swoon saying "O, where is Prabhāvatī?" Sulocanā also fainted saying "Kātyāvaṇa, where are you? On recovering from the faint, she said that she was a female pigeon and Jaya was her lord then. When king Jaya asked her to narrate their former life, Sulocanā said :

In the town of Śobhāpura there was a king named Vratapala and queen Devadī. There lived the minister Śaktiśena and his wife Atavīdī. One day a beautiful orphan came to him. The minister asked him why he had been wandering in the childhood. The boy then told the minister that he was driven out by his step-mother from the house as he did not keep watch well on the house. The minister

Saktisena therefore adopted him as his son and named him Satyadeva. Sulocanā continues the narrative of her past lives and also of the boy, Satyadeva]

5 2a सुयावर, daughter Sulocanā and her husband Jaya. 8a पडकुडिहि, in the tent

9 10a असिआउसाइ i e five letters अ, सि, आ, उ and सा, standing for the initial letters of the five परमेष्ठि, viz अरुन्त, सिद्ध, आयरिय, उवज्झाय and साहु Thus असिआउसा becomes a sort of मन्त्र which the Jains put on par with ओंकार and such other mystic syllables. Compare XXXV 12 10 where also the same mantra occurs.

11 11-12 पारावह हउ etc. Sulocanā says that she was a female pigeon named Ravsiṇḍā, while king Jaya was a male pigeon called Ratavaia 11 कहयवेण जणु खज्जइ, people are overcome (खज्जइ, lit swallowed) by tricks The co-wives of Sulocanā did not believe the story as narrated by her and therefore said that it was a trick by her to win the love of king Jaya

12 4 The story of the former lives of Jaya and Sulocanā begins here 8a अइसिहि is mentioned in the sequel as वणसिहि (See 13 7a) 13 परमायए, by my step mother

16 4a चारण is a class of ascetics This class has two types, viz, Jamghācārana and Vidyācārana Both the classes are capable of flying through the sky Jamghācārana acquires the art of flying as a result of his fast of four days and the Vidyācārana does it as a result of his learning and fast of three days

21 8-9 The pair of pigeons was asked by their master as to where the sinners go and the pair would show by their beaks the region underground, viz, the hell, and as to where the meritorious go, the region above, viz, the heaven

24 4 तहिं एकु etc There is one plate containing five jewels He who discovers it will marry Priyadattā

[Sulocana continues the narrative of her previous births, particularly of her birth as Prabhavati and of Jaya as Hiranyavarman. There they practised penance as ascetics and passed through several births on the earth as well as in heaven. In one such births they were born as gardener and his wife when they used to offer flowers to the Jinas. One day they were both bitten by a snake and died but cherished a hankering for the enjoyment of pleasures. They were born next as Sakanta and Rativoga.]

6 106 शिवलक्षण—This name occurs elsewhere, e.g. 20 86 20 88 and 22 42 in लक्षणलक्षण, लक्षणलक्षण and लक्षणलक्षण.

12 96 शिव लक्षणलक्षण the lady raised her eyes or pupils of her eyes, towards her head. This is considered to be a sign of approaching death. Compare लक्षण लक्षण or लक्षणलक्षण in Marathi.

18 46 लक्षण, i. e., लक्षण, i. e., wicked mind of a woman or a woman.

XXXI.

[Sakanta and Rativoga recollected then their former life. They met in that birth a monk, who had but recently renounced the worldly life and said he did not know much of the sacred Law but he told them the salient features of the Jain faith. Sakanta then asked the monk the reason why in youth he became an ascetic. Thereupon the monk gave him the story of his life.]

Incidentally there is a mention of a story of a merchant named Suketa and his rival Nagadatta. Nagadatta had a wife named Sudatta. One day while Suketa's wife was carrying food for her husband, she met a monk to whom she served it at the nagadatta of her husband's rival. There appeared, as a result of this gift five wonders, particularly a shower of gold and gems. Nagadatta then said that the wealth be-

Thereupon
d to his wife
took all the

wealth and went to the king, but the wealth handled by Nāgadattā immediately turned into charcoal, and his servants were frightened by goblins. Nāgadattā then handed over the wealth to Suketu. The next day Nāgadattā discovered one more gem in the temple and in anger tried to crush it with a big piece of stone, but the stone hit him instead. Nāgadattā propitiated the Snake in the temple and asked a boon to have an army that would defeat Suketu. The snake however said that it was not possible to kill Suketu. Suketu subsequently renounced the worldly life, and after death was born as a god. His wife, Vasumdhārā became a nun, and was born as a god in heaven changing her sex.]

3 8a गवत्तवणु, a monk who has been but recently admitted to the Order

10 9 लूवासुत्ते etc. A fly is caught up in the web of a spider and not an elephant. A fool falls a victim to a courtesan, but a wise man becomes disgusted with her.

24. 1a कणिदत्तु, i e, merchant Nāgadattā

25 10a विवस्मयइत्तेण, i e, by Nāgadattā 12 रुग्गहियक्कइ, gems that put into background the lustre of the sun.

27 5a धणमसइ etc. Nāgadattā thus become inferior to Suketu, the husband of Vasumdhārā, in point of wealth.

XXXII

[Jaya asked Sulocanā again to narrate to him the happenings of their previous life, particularly those which were told by the Jina Gunapāla. Thereupon she gave the narrative of Śrīpāla and his adventures. Śrīpāla and Vasupāla were the sons of king Gunapāla and queen Kuberaśrī. Gunapāla renounced the worldly life and became a monk. One day a report was brought to her that a sage named Gunapāla had arrived in the grove and the queen went to see him. Under a banyan tree in the grove there was a temple of a yakṣa, and people were engrossed in festivities. A pair of ladies, of whom one was dressed as male, were dancing there. King Vasupāla

did not like the dance of a man and woman when his brother Śrīpāla said that they were not man and woman but both women. It was prophesied that the person who would recognise the lady in man's dress was destined to be her husband. This was the starting point of numerous adventures of Śrīpāla who took a horse that disappeared in the sky. It was prophesied that Śrīpāla would return safe on the seventh day. Now Śrīpāla was really removed by a demon in the form of a horse. When the demon began to fight with Śrīpāla there arrived a yakṣa named Jayapāla to help him. After escaping from the demon, Śrīpāla met six Vidyādhara girls whom he ultimately married as also Vidyudvegā, a Vidyādhara girl, Sakṣatī, and Varpālā.]

11. *1a b गृहिणि क्व* etc.—You yourself are my lover; for you have caused the pangs in my body. Are there other signs of a lover such as a horn on the head? To have a horn on the head was considered to be an extraordinary sight and hence proverbial in the vernacular *ह्रस्वात् किं ज्ञेयं* etc.

XXVIII

[Sukhāvatī, mentioned in the previous Samadhi, was a Vidyādhara girl, and possessed miraculous powers. She first showed herself to be an old lady and as soon as Śrīpāl showed to her that he possessed powers to cure any ailment, she gave up the form of an old lady. Both of them then went to Vaidhātukā and offered prayers to the Jina. All the young girls who loved Śrīpāl arrived there. In their presence Sukhāvatī showed her powers once more, made Śrīpāl an old man and still loved him, thus causing her friends to laugh at her. There he cured the bend in the neck of a prince and married his sister Prabhavati. In the meanwhile Aśanivega the brother of Vidyūdevga arrived there, recognised Śrīpāl, attacked him but he disappeared from there with the help of Vidyūdevga.]

11 Note effects of devotion to the Jina mentioned in the Keda
vaka. 12 सिद्धि सि न्नाय पत्तन even rainy day becomes fair day on
account of the devotion to the Jina. 13 कज्जु सि फलम वसेत्त, a sword
becomes like lotus full of filaments.

XXXIV

[Sukhāvati came back home and her father thought of arranging her marriage with Śrīpāla, but he desired to see his elder brother before that event. He was accordingly being taken to Pundarikani. He met a number of adventures on the way, and got an excellent elephant in the forest. The elephant had first a mind to attack him, but it was ultimately overcome by Śrīpāla]

2 5b जियसत्तु सटिलसेण मणिव, Jitasātru, the father of Sukhāvati said to his son Sahlasena, i e, Vārisena, to escort Śrīpāla to his town सटिलसेण and समेण in 3 7b are only synonyms of मणिवेण.

9 15 दिद्वादिद्वसरी, one, i e Sukhāvati, who makes her person appear and disappear as the occasion demands

XXXV

[Sukhāvati now took Śrīpāla, in the presence of the crowd, towards Pundarikani through the sky, and brought him to the region where the wicked horse left him. Nāgabala then offered the hand of his daughter Śasilekhā to him. After marrying her, Śrīpāla was led further by Sukhāvati. In the meanwhile two Vidyādhara met him and asked him to strike a stone pillar, saying that if he could cut the pillar into two with his sword, he would become a Cakravartin. Śrīpāla did cut it into two. On his way many kings offered him their daughters and in course of time he secured all the gems that a Cakravartin should possess. On the way he fought with Dhūmavega, a wicked Vidyādhara, met his mother in one of his previous births, viz., Satyavati, who had now become a yakṣiṇī. After having gone through many adventures he arrived on the seventh day at his capital, met his mother Kuberaśrī, and brother Vasupāla. Śrīpāla told them that the powers that he attained had been entirely due to the good offices of Sukhāvati, who was his wife]

16 11 एयहि जीव वि दिज्जइ—Note the corresponding saying in Marathi: इच्यासाठी जीव सुद्धा द्यावा, I shall even sacrifice my life for her

[Śrīpala was thereupon married to all the girls; but Vappilā did not like that her husband should marry so many hence she returned to her father's house. Śrīpala however went there and persuaded her to return home. Similarly he caused Sukhāvati also to return to him. Thereafter he got the seven living gems of the Cakravartin such as soṇḍa pati etc., and in due course the cakra also made its appearance in his armoury. All the wealth that came to the king was in the charge of Jasavai, but Sukhāvati thought her to be a miser. The minister however told her that Jasavai was destined to be the mother of a Jina. In course of time Jasavai gave birth to the Jina who was named Gaṇapālā. Śrīpala, in course of time, placed the son of Sukhāvati on the throne and went to practise penance under Gaṇapālā, his son.]

Sulocanā narrated the above story to King Jaya. He then remembered fully his previous lives and obtained all the vidyās that he then possessed. Priyadarsinī however thought that Sulocanā had been giving a story which was not true. In order to convince her King Jaya and Sulocanā went up into the sky to offer worship to Rishabha. On their way Indra put a temptation to trap King Jaya, but he stood the test well. Indra was pleased with him and offered him a boon. King Jaya thereupon arrived at Kailāsa, and offered a hymn to all the twenty-four Jinas whose temples were built by King Bharata.]

३. ॥ तस्मिन् पश्यन् the seven living gems of a cakravartin, viz. सोणपति, द्रुमापि वज्र, वज्र, रत्न, रत्नापि and यशस्वि as opposed to lifeless gems such as वज्र etc.

४. ॥ दो मन्वेन तद् विद्धि कन्याम् the dead body is burnt long with two pieces of cloth, which is the only property that the dead take with them.

[King Jaya with his queen saluted the images of the coming Jinas and then went to Samāśrāṇa where Rishabha was seated in the midst of gods, men, women, monks and nuns. He saw there his

father and uncle who had also become monks and came to stay there. Sulocanā saw her father Akampana who also had become a monk and her several other relatives. Jaya then recited a hymn to praise Rīṣaha, at the end of which he requested Bharata to allow him to be a monk. Bharata at first did not like it, but at the intervention of Indra allowed him to do so. Sulocanā also allowed him to be a monk. He was then admitted to the Order of monks and studied the sacred books. Sulocanā became a nun after him.

Now Rīṣaha explained to Bharata all the principles of the Jain faith. Bharata then returned home and saw the same night a dream in which Meru was shaken. Next morning he asked his priest what the dream signified. The priest said that Rīṣaha was about to attain emancipation. Bharata then immediately went to Kailāsa. Indra also came there to arrange for the celebration of the nirvāṇakalyāṇa of the Jina. Indra and other gods made a funeral pile of several fragrant trees, Agni-kumāras produced fire to light the pile, and his body was burnt to ashes which were saluted by all gods. Rīṣaha attained emancipation on the fourteenth day of the dark half of the month of Māgha.

Bharata returned to Ayodhyā. One day he found a gray hair on his head. At this indication he handed over his kingdom to his son, renounced the world, soon attained kevalajñāna and obtained emancipation from saṃsāra.]

6 9 एयाजेयवियम्पणार्हं, by the law which has modes of expression such as एकत्वं and अनेकत्वं. I take this to refer to the famous सप्तमङ्गलिन्य in the form स्यादस्ति एकम् etc. See 7 3b below where we get express mention of सप्तमङ्गली.

7. 1b समयह तैसदृह तिष्णिं सयह, i e, three hundred and sixty-three systems of heretics. There are frequent references to this number of the systems of heretics in Jain literature. This number is made up as is mentioned in the famous stanza —

असिदिंसंदं किरियाण अकिरियाण च आहुं बुलसीदी ।
सत्तहदी अण्णाणी वेणडयाण च होदि वेत्तसी ॥१॥

॥ ८६ ॥ लोडु वडिडु लोडु वडु विरमा गविणु, the lotus plant has as much (length of its) stalk as (the depth of) water in which it grows, neither more nor less. Similarly Jiva has the same period or extent of existence as its acts have made it to be

15-17 There three kaṇḍavakas mention some of the tenets of Jainism arranged in consecutive and increasing numbers as in XVIII 10-11. The terms or items are not entirely identical, but a number of them are repeated. I therefore do not give exhaustive treatment of these terms as I did there, but I think some of them require explanation which I quote chiefly from T.

[illegible][illegible]

17 1a सिद्धतासियाह 2a च उदह मल चतुर्दश मलादयः द्वात्रिंशज्जिनोपदेशपयन्ता
चाहुचलिनेवलज्ञानोत्तिसमये ध्याख्याता

20 6b गिवालियाह निष्परिस्पन्दानि कृतानि, were rendered inactive 10a
अच्छतु वि अगु ण छिवह देउ, Risahe, although he still existed as a soul, had
given up all contact with body At the time of मोक्ष the soul exists, but
it is not in any way connected with physical body 11 वसुसमहि सिद्ध-
गुणहि—for the eight qualities of a सिद्ध, see page 630, (8) (b)

GLOSSARY OF IMPORTANT PRAKRIT WORDS

[In this Glossary only some rare and important Prakrit words are indexed and their convenient equivalents in Sanskrit are supplied. Only one occurrence of the word, usually the first, is noted. A complete glossarial index of Prakrit words is no longer a necessity as dictionaries like *Pāṇyāsaddamahannavo* are now available. M stands for Marathi]

- अइमल्हइ-मन्दगमन करोति XV 18 7
 अईवत्त-अतिमुक्तक XI 1 8
 अक्का-माता XVI 25 12
 अट्टिलिय-अस्थिका (cf आठळी M)
 XXXII 22 6
 अग्निट्ट-अभिगत XXII 6 13
 अम्मणु-क्रियन्मात्रम् (cf अमळ M)
 XLV 2 5
 अम्माहीरअ-रागव्यनिविशेष IV 4 13
 अलियल्लि-व्याघ्र XIII 18 9
 अल्लय-करमल, आर्द्रक XXXI 24 4
 अल्लवइ-समर्पयति, XXXI 8 3
 अल्लिवइ-समर्पयति XXXI 28 3
 अवरुइ-आलिङ्गति I 17 13
 अवरुडिय-आलिङ्गित VI 5 11
 अवसे-अवश्यम्, XV 22 10
 अविहडिय-परिपूर्ण X 3 13
 असंराल-बहुल XIX 2 4
 आलुखिय-आस्वादित XIII 11 4
 आहुइ-अर्धचतुर्थ XI 25 2
 उच्चोलि-कटीवस्त्र, नीवी (cf ओली M)
 (H gives उच्चोल I 131) XII 15 10
 उट्टेट-उन्मत्त XXX 4 7
 उप्फाल-पट्टहवनि XXXI 15 6
 उम्मिय-ऊर्ध्वकृत VII 21 18
 उल्लुरिअ-क्रान्दविक (A baker)
 XLV 21 1
 उल्हाइ-अङ्गारावस्थो भवति V 5 4
 उव्वार-उद्धारण, रक्षण, XVI 21. 11
 उव्वारअ-अवशिष्ट (cf उर्वरित M)
 XXXVII 25 3
 ओइल्ल-उपरितन XI 5 4
 ओम्माहिय-उन्माधित, उत्कण्ठित
 XXXVII 23 11
 ओरालि-शब्द (cf ओरळ M) V 1 7
 ओरालिअ-आरुन्दन XXVIII 29 1
 ओलंगिय-सेवित VI 5 5
 ओहुइइ-हीन भवति VII 18 7
 ओहामिय-तिरस्कृत IV 4 4, अभिभूत
 XVIII 1 5
 ओहुल्लिय-म्लान VII 10 1
 कउल-चावांक, कापालिक XI 17 8
 ककर-पर्वतशिखर XXXI 23 7
 कम्बखड-कर्कश, निष्ठुर XI 13 10
 कडप्प-सघात, समूह VIII 7 6
 कडिल्ल-कटिस्थ X 4 5
 कडुअ-बुम्बकपाषाण XX 19 2
 कणइल्ल-शुक XIII 7 7
 कप्पड-कर्पण, वस्त्र (cf कापड M)
 XXXVI 8 9
 कव्वड-वसतिविशेष V 21 3
 कयंर-धूलि (cf कचरा M) XXVIII 2 14
 करंड-स्थानिका IV 19 9
 करोडि-शिरोस्थि (cf करोटी M)
 XII 17 8
 कलमलअ-कालुष्य, ईर्ष्याजनित सेद (cf
 कळमळ, तळमळ M) XXXVI 2 6
 कसर-बलीवर्द, VII 20 4, वत्सतर VIII 2
 18; गोयुवा XXVIII 28 7

कसर-पल्लव XXXII. 20. 14
 कसर-पुनः I 3. 12
 कंठ-मणिकुण्ड IV 1 5
 कंठ-मणिकुण्ड XXXI, 6 3
 किम्भीर-विषय VII 19 8
 किङ्किणिकुण्ड-मणिकुण्ड XV 1 8
 कुङ्कुम-पद्मकुण्ड IV 10 10
 कुङ्कुम-पद्म XXXI. 14. 11
 कुङ्कुम-पद्म XVII. 4 8
 कुङ्कुम-पद्म XXXII 20 15
 कुङ्कुम-पद्म XXXI 18 4
 कुङ्कुम-पद्म XXXI 13. 6
 कुङ्कुम-पद्म IV 3. 7
 कुङ्कुम-पद्म XXXII. 4
 कुङ्कुम-पद्म XVII. 11 8
 कुङ्कुम-पद्म XVII. 6. 9
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड XXXI 27 9
 कुङ्कुम-पद्म I 1 13
 कुङ्कुम-पद्म II 18. 1
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड (cf. मणिकुण्ड) XVII 9 11
 कुङ्कुम-पद्म XXXI 6 1
 कुङ्कुम-पद्म IV 8 7
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड XVII 3 1
 कुङ्कुम-पद्म, मणिकुण्ड XXXI 23 8
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड XXXI 9 9
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड XIV 7 10
 कुङ्कुम-पद्म (cf. मणिकुण्ड) XI 1 9
 कुङ्कुम-पद्म XXXI 10 2
 कुङ्कुम-पद्म XXXI 8.
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड V 21 3
 कुङ्कुम-पद्म VII. I 11
 कुङ्कुम-पद्म (cf. मणिकुण्ड) II 13 9
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड XVII 2. 1 8
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड XXXI 27 8
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड XXXII. 4 11
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड VII. 5 7

कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड XIV 12 14
 कुङ्कुम-पद्म X. 14 10
 कुङ्कुम-पद्म XXXI, 8 3, 4
 XXXII 18. 9
 कुङ्कुम-पद्म IV 16 3
 कुङ्कुम-पद्म L 18. 10
 कुङ्कुम-पद्म (cf. मणिकुण्ड) I 3
 कुङ्कुम-पद्म (cf. मणिकुण्ड) XI 16 9
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड L 8
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड III 1 8
 कुङ्कुम-पद्म IX. 7 8
 कुङ्कुम-पद्म (cf. मणिकुण्ड) III. 16. 10
 कुङ्कुम-पद्म VII. 3. 12
 कुङ्कुम-पद्म XXXI 7 2
 कुङ्कुम-पद्म, मणिकुण्ड (cf. मणिकुण्ड) II 19 4
 कुङ्कुम-पद्म L 18. 1
 कुङ्कुम-पद्म (cf. मणिकुण्ड) II 16 1
 कुङ्कुम-पद्म मणिकुण्ड XXXI 12. 9
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड, मणिकुण्ड XVII 18. 12
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड, मणिकुण्ड III. 14. 24
 कुङ्कुम-पद्म VIII. 7 3
 कुङ्कुम-पद्म (cf. मणिकुण्ड) IX. 11 14
 कुङ्कुम-पद्म IX. 2. 13
 कुङ्कुम-पद्म XXXI 4 13
 कुङ्कुम-पद्म XXXI 10
 कुङ्कुम-पद्म (मणिकुण्ड देखी T) VII. L. 6
 कुङ्कुम-पद्म, मणिकुण्ड-मणिकुण्ड II 12. 9
 कुङ्कुम-पद्म X. 11 11
 कुङ्कुम-पद्म IX. 8. 14
 कुङ्कुम-पद्म (cf. मणिकुण्ड) II 20. 11
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड XIII. 2. 3
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड XXXI. 18. 3
 कुङ्कुम-पद्म-मणिकुण्ड (cf. मणिकुण्ड) XX. 10. 11

GLOSSARY OF PRAKRIT WORDS

- चुकइ-भक्षयति IV 8 5
 चुणइ-भक्षयति XVI 13 2
 चुणय-अरोचकव्याधि XVI 3 7
 चुरलि-ज्वाला XXII 16 11
 चुहुटइ-लगति XVI 7 10
 चैचइय-अलरुत III 2 4
 चोज-कौतुक, आश्चर्य (cf चोज M)
 VIII 7 23
 चोचाण-याष्टि I 16 10
 चोमल-धीमत्त, समूह (cf चुयळ, चुमळ M)
 XXVII 27 1
 छजइ-राजते, शोभते (cf सजण M)
 I 14 3
 छडउलुअ-समाजंन, जलादिनिक्षेप
 (cf सडा M, XVI 1 12)
 छडयण-धनर IX 18 4
 छल्लि-त्वक् (cf साल M) XXXVII 20 10
 छडइ-परित्यजति (cf साङ्गे M)
 VII 19 15
 छाहि-छाया (cf साहुली M) XVII 3 12
 छिवइ-स्पृशति (cf सिवणें, शिवणें M)
 IV 5 13
 छिप्पइ-स्पृशति (cf शिवणें M) VI 2 13
 छिक-छिक्का (cf शिक M) XXVI 4 2
 छुडु-क्षिप्प II 19 1
 छोडअ-छुटिका, छुटिका XXIV 8 1
 छोह-क्षोभ, विक्षेप XVII 1 6; क्रोध
 XXXIX 18 8
 जडिल-कुङ्कुम XXVIII 1 3
 जंपाण-शिविका (पालसीति देशी, T) XII 1 7
 जावाय-जामाता XXXIII 4 16
 जूरण-सेदन VII 6 12
 जूरिय-निर्मसित VII 5 5
 जैवइ-मुंके XVIII 7 11
 जोइय-दष्ट XXIII 9 4
 जोक्खइ-तोलयति (cf जोसणें M)
 IV 5 5
 जोक्खिअ-तोलित XVIII 9 5
 झडप्पइ-आक्रमति (cf सडप M) XXX 4 9
 झडप्पण-ताडन (cf सडप M) XXX 4 8
 झडप्पिय-पतन VIII 3 9
 झलक-पूर्णाञ्जलि (cf चुळक M) XVII
 13 6; ओष्ण XXXIV 2 11
 झलझलिय-ध्वन्यनुकरणे शब्द (cf झुळझुळ
 बाहणें M) XII 2 13
 झलुक्खिअ-सनापित (cf सळ M)
 XXXIX 23 11
 झपइ-आच्छादयति (cf झापणें, झाकणें M)
 I 11. 4
 झपड-नैत्रयोरधोन्मीलन (cf झापड M)
 XII 12 5
 झापिअ-आच्छादित XXVI 14 9
 झुलइ-कम्पते (cf झुलणें M) XIV 5 12
 झुंझुळ-स्तनक (cf झुयका M) IV 9 9
 झुअ-कन्दुक (cf चेंहू M) I 16 10
 झुलिया-पुञ्जली (cf शिन्ड M)
 XV 6 15
 डकर-शिलाशकल (cf डोकर M)
 XXXI 16 4
 डिट-पुञ्जली XXI 18 9.
 डेट-वृत्त (cf देंड M) XII 9 18
 डर-मय (cf डर M) XXV 8 9
 डकिय-दष्ट XXX 12 8
 डाल-शामा (cf बाहाळी, डाळी M) I 18. 2
 डावि-मुद्रा, मुद्रिका XXXV 5 3
 डुंग-समूह IX 2 27
 डेवत-धावन् XVII 2 8
 डेंडुह-डुण्डुम XVI 20 9
 डोलइ-आन्दोलन करोति (cf डोलणें M)
 IV 18 2; कम्पते XV 18 3
 डलइ-च्यवति (cf डळणें M) XXXI 19 12
 डलहलिय-चालित XVII 7. 5
 डलिय-स्रस्त VIII 9 12

हंकर-मण्डलपति (cf हंकरे M)

L 13 10

हंक्षिपु माण्डूदित XIII 11 1

हंकर-मण्डलपति (cf हंकरे M) XIX 13 5

हंकर-मण्डल XIX 13 6

हंकर-मण्डल (cf हंकरे M) XIV 10 7

हंक्षिपु-मण्डलपति (cf हंकरे M)

XXIII 3 5

हंकर-मण्डल XXIV 10 7

हंक्षिपु-मण्डल XII 10 7

हंक्षिपु-मण्डल XV 1 0

हंक्षिपु-मण्डल XI 9 7

हंक्षिपु-मण्डल XX 1

हंक्षिपु-मण्डल IV 15 11

हंक्षिपु-मण्डल XXIV 1 14

हंक्षिपु-मण्डलपति V 15 0

हंक्षिपु-मण्डलपति XVI 18 1

हंक्षिपु-मण्डलपति XIII 13

हंक्षिपु-मण्डल XXXX 17 3

हंक्षिपु-मण्डल XII 11 11

हंक्षिपु-मण्डल XXXX 10

हंक्षिपु-मण्डल XII 1 10

हंक्षिपु-मण्डलपति XVII 26 8

हंक्षिपु-मण्डलपति (cf हंकरे M)

II 19 10

हंक्षिपु-मण्डल L 1 1

हंक्षिपु-मण्डल XXV 9 13

हंक्षिपु-मण्डल XII 13 9

हंक्षिपु-मण्डल XXV 10 18

हंक्षिपु-मण्डल IV 11 7

हंक्षिपु-मण्डल (cf हंकरे M) XXV 2 8

हंक्षिपु-मण्डल (cf हंकरे M) XVI 2 8

हंक्षिपु-मण्डल XXV 2 8

हंक्षिपु-मण्डलपति, राज IX 21 11

हंक्षिपु-मण्डलपति XXXVII 21 10

हंक्षिपु-मण्डल L 13 4

हंक्षिपु-मण्डल XXXVII 21 9

हंक्षिपु-मण्डलपति, राज V 1 10

हंक्षिपु-मण्डलपति, राज XII 3 0

हंक्षिपु-मण्डल IX 10 11

हंक्षिपु-मण्डल (cf हंकरे M) XXVI 1 5

हंक्षिपु-मण्डल XIII 1 11

हंक्षिपु-मण्डल XXIV 8 9

हंक्षिपु-मण्डल (cf हंकरे M) V 3 3

हंक्षिपु-मण्डलपति XXXVII 1 11

हंक्षिपु-मण्डल XX 10 3

हंक्षिपु-मण्डल XII 3 19, राज IX XIII 0 5

हंक्षिपु-मण्डल II 15 12

हंक्षिपु-मण्डल XII 11 1

हंक्षिपु-मण्डल XII 11 1

हंक्षिपु-मण्डल VII 9 12

हंक्षिपु-मण्डल (cf हंकरे M) XII 9 10

हंक्षिपु-मण्डलपति (cf हंकरे M, हंकरे M)

VII 12 10

हंक्षिपु-मण्डल (cf हंकरे M) III 14 10

हंक्षिपु-मण्डलपति (cf हंकरे M)

IX 13

हंक्षिपु-मण्डलपति, राज XII 23 6

हंक्षिपु-मण्डलपति, राज XV 3 5

हंक्षिपु-मण्डलपति VII 14

हंक्षिपु-मण्डल XXXIX 6 3

हंक्षिपु-मण्डल XXXIX 8 3

हंक्षिपु-मण्डलपति (cf हंकरे M)

XXXIX 16 22

हंक्षिपु-मण्डल XVIII 1 15

हंक्षिपु-मण्डलपति (cf हंकरे M)

XXVIII 9 15

हंक्षिपु-मण्डल VII 5 11

हंक्षिपु-मण्डल XII 10 1

हंक्षिपु-मण्डल (cf हंकरे M) IV 11 11

हंक्षिपु-मण्डल (cf हंकरे M) II 16 2

हंक्षिपु-मण्डल (cf हंकरे M) XX 3

GLOSSARY OF PRAKRIT WORDS

धाह-आक्रोश, क्रन्दन (cf धाव) XIV 8 5

पइरिक्क-प्रचुर IX 24 12

पउलण-प्रज्वलन, पाक VII 6 12

पक्कल-समर्थ XIV 7 5

पच्छाउहु-पञ्चानुसम् XXVIII 11 3

पहुक्कइ-प्रसरति XXXII 17 2

पत्तल-सूक्ष्म, सुन्दर (cf पातळ M)
XVII 10 1

परअ-प्रभात, परेयु (cf परवां M)

XXXII 26 8

परइ-प्रमत्ते XVI 20 12

परवाली-पर+वाला (परखी) XI 18 3

परियंदइ-आन्दोलयति IV 4 13

परिहत्थें, परिहत्छें-वेगेन XIV 1 20

परोहड-पञ्चाद्वार (cf परडा, परहू M)
XXIX 14 9

पल्लट्टिअ-परिवर्तित XXXIII 6 13

पसंडि-सुवर्ण IX 7 1

पहुल-पुष्प (!), प्रभूत XXV 8 5

पगुत्त-प्रावरण (cf पांघरुण M) I 14 4

पगुरइ-पटेन आच्छादयति (cf पांघुरणें M)
IV 15 14

पगुरण-प्रावरण VII 23 9

पाडिहेर-प्रतिहार्य I 18 9

पाण-चाण्डाल XXXI 17 5

पालिद्धय-वशवेष्टितपताका XII 9 4

पासुय-युद्ध, प्रासुक IX 7 4

पासुलिया-पार्श्वरिक्तसघात VII 12 4

पासेअ-प्रस्वेद VII 24 10

पाहुण-आतिथे (cf पाहुणा M)
XXIV 10 7

पिच्चइ-पक्क भवति VII 14 2

पीलु-हस्तिशावक XXIX 8 1

पुण्णालि-पुंथली XVIII 1 7

पुलि-ध्यात्र XXV 16 4

पेलावेलि-सधम IX 18 16

पेल्लिय-प्रेरित I 12 5

पोट्ट-उदर (cf पोट M) IX 8 15

पोट्टल-पान्थि (cf पोटळी M) XX 10 12

पोत्ति-स्नानशाटी IX 4 13

पोप्फली-पूगीफलवृक्ष (cf पोक्ळी)
XII 7 13

फिट्टइ-नश्यति (cf फिट्ठे M) VIII 4 36

फुल्लंघुय-धमर IX 11 9

फुल्लुद्धुय-धमर IX 11 9

यइसइ-उपविशति IV 1 11

वण्ण-पुत्र इति सचोवने IV 8 7

वण्णीह-चातक XII 7 2

वण्णीहय-चातक II 13 13

वाहिरि-वहिसू XVI 3 3

वुक्करइ-शब्द करोति (cf भुकरणें M)
VII 25 5

वुक्कार-भूत्कार XV 19 8

वुद्धइ-मज्जति XXXIII 11 11

वुध-मूल VIII 7 10

वोल-व्यनिविशेष XVII 3 4

वोलइ-जन्पति VIII 5 17

वोल्लाचिअ-भाषित IV 4 9

वोहित्थ-नौः XVII 4 4

भउहा-घुक्रुटि XII 8 2

भम्म-सुवर्ण IV 10 1

भल्ल-मद (cf. भला M) IV 5 7

भल्लारअ-धुम, उत्तम VII 17 11

भसल-धमर IX 28 2

भंडइ-कलह करोति XXXV 8 7

भिडिअ-समुत्त गत (cf भिडणें M)
XVII 1 1

भुक्कइ-मपति (cf भुक्कणें M) I 8 7

भेल-आतिवृद्ध XXIX 25 12

भोल-मूढ (cf. भोळा M) II 20 7

मडप्फर-गर्भ XV 15 11

मडह-सुन्दर XII 12 3

मउह-उम्मी, इमी XVI 26 °
 मईव-वसुभिरीरे व १ 4
 महु-वसुभिरीरे (cf. मा M) XIII 2 8,
 वसुभिरीरे XIII 2 8
 महु-वसुभिरीरे IX 14. 10
 मन्मीसिया-व मन्मी इति वसु, मन्मीसिया,
 XXXIX 2 8
 मयासि-(वसुभिरी) रेव XIV 1 4
 मरु-वर्ष वर, XVI 16. 8
 मरु-वर्ष वर, XXXIX 26 5
 मरु-वर्ष वर (cf. वर M) IX 8 11
 मरु-वर्ष वर XII 5 °5
 मरु-वर्ष वर v 15. 12
 मरु-वर्ष वर-वर्ष वर-वर्ष वर XII 11 3
 मापि-वर्ष वर-वर्ष वर XX १०
 मापि-वर्ष वर-वर्ष वर XVI 9 12
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर III 8 8
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर VII 6. 12
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर-वर्ष वर-वर्ष वर
 XV 2 5
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर, वर XII 11 10
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर VIII 1 13
 मुसु-वर्ष वर (cf. वर M) XXXIX 3 8
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XXXIX 4 4
 मुसु-वर्ष वर (cf. वर M) XVI 9. 10
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XIII 5 10, वर
 XXXIX 29 8
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर VIII 1 5
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XV १०. 4
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर II 9 3
 मुसु-वर्ष वर (cf. वर M) XXVII 1 4
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर (cf. वर M)
 IV 15. 12
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XV 12 1
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर-वर्ष वर III 2 1
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर (cf. वर M)
 IV 1 11

मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर (cf. वर M)
 v 10 11
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XVII 9 10
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर L 14. 4
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर v 1 10
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर VI 1 14
 मुसु-वर्ष वर (cf. वर M) III 10
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XI 4. 5
 मुसु-वर्ष वर (cf. वर M) XIV 10. 1
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XI 23 4
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर II १ 12
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XVII 12 7
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XIV 5. 9
 मुसु-वर्ष वर (वर्ष वर) (cf. वर M)
 v 16 14
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XVII 1 1
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर IX 8 11
 मुसु-वर्ष वर (cf. वर M) XIV 7 5
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XXXI 21 1
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर IV 5 14
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XII 6.
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर IX 14 12
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर, वर II 8 13
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर-वर्ष वर (cf. वर M)
 XXXIX १०. 3
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर L 12 6
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर (cf. वर M) VII 16 8
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर-वर्ष वर L 11
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर II 13 13
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर-वर्ष वर-वर्ष वर
 VII 5 11
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर-वर्ष वर L 14. 8
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर, वर-वर्ष वर (cf. वर M)
 VII 1. 8
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर (वर) XII 6. 3
 मुसु-वर्ष वर-वर्ष वर XVIII 13 1

GLOSSARY OF PRAKRIT WORDS

विदत्त-अर्जित XVI 3 4
 विराल-विडाल, मार्जार XXIX 4 10
 विरिक्त-विभक्त VIII 13 23
 विरोल्लिय-कदर्थित XXXI. 23 7
 विलया-वनिता V 4 13
 विसमर-तन्तुवाय, कोलिक XXXI 17 12
 विसूरइ-सियते XIV 5 10
 विहलंघल-विह्वलाङ्ग XXVIII 19 8
 वुण्ण-सकुपित XVII 15 12
 वेच्छिल्ल-कोरण्टवृक्ष XXV 5 9
 वेल्हल-कोमल III 1 11
 वेहाविय-वञ्चित (द्वेधीकृत !) XVIII 2 2
 वैमल-विह्वल XXVIII 27 1
 वोद्रही-तरुणी LXXIII 1 10
 वोल्इ-अतिक्रामति IX 19 14
 वोलाविय-त्यक्त XV 6 4; अतिक्रामित,
 निष्क्रामित, XVIII 2 2
 वोलीण-अतिक्रान्त II 9 1
 वोक्क-यक्त (कलिजा T) XI 24 12
 सइत्त-सचेतन XXIX 1 12
 समलहिय-अभिलिप्त VI 1 9
 सल-शयशयन, चिता, XXIII 8 6
 सलसलइ-सलसलष्वनि करोति (cf सळ-
 सळणें M) IV 11 10
 सवडमुह-समुत्त II 2 12
 सवलहण-समालम्भन (विलेपन) III 4 7
 सव्वल-सवल्लोहमयी घाणी, तिलपीढनायुध
 XI 16 9
 सहइ-शोभते III 12 16

संगहण-पुञ्जल्युगल, जारजारिणीयुगल
 XXXV 10 1
 संच-शरीरबन्ध VIII 9 12; समूह
 XVII 5 2
 साइउं-आलिङ्गन V 15 9
 साड-विश्वसक्त XIV 5 14
 साडी-शाटी, वस्त्र XII 5 3
 सारी-उत्तमा III 6 1
 सिणिसिव-तन्तुवाय, कोलिक LXXI 17 13
 सिप्पि-शुक्ति (cf शिप M) IV 6 11
 सिप्पीर-पलाल VII 19 4
 सिलिंधय-चाल XXXIII 6 6
 सिलिंव-शिशु II 13 9
 सिहिण-स्तन II 16 2
 सीसक्क-गुप LIX 2 2
 सुडिअ-दुश्चित III 17 2
 सेल्ल-प्राप्त VII 5 11
 सेहीर-सिंह XXV 3 5
 सेंम-श्लेष्मा LIX 14 10
 सोण्णार-स्पर्णकार (cf सोनार M)
 XXXI 7 2
 हट्ट-पण्यवीथिका (cf हाट M) I 16 1
 होडि-शृङ्खला VII 13 8
 हल्लइ-कम्पते (cf हल्लणें M) XIV 5 12
 हल्लिय-कम्पित I 12 5; वलित XV 15 5
 हुर-दुःख XI 11 4
 हुंड-विकलेन्द्रिय XI 1 11
 हलिय-प्रोत VII 5 10
 हवाइद्ध-कुपित LXXII 20 4
 होहल्लर-जो जो शब्द IV 4 14

ADDENDA ET CORRIGENDA

Page	Kadavaka	Line	For	Read
४	१(n)	१४(n)	उद्भय ^० उद्भत ^०	उद्भय ^० उद्भत
१५	१६	८	ण	ण
२४	७	६	भ वहि	भावाहि
२४	७(n)	३(n)	जिनाग	जिनागमे
२७	११	१	जतजणेण	जत जणेण
३९	४	११	सइ	सइ
४६	१२	५	जोणयह	जोयणह
५२	१९	१	णय	णव
७७	७	१०	गुद्धिदारेण	गुद्धिदारेण
८३	१४	९	फलिइ	फलिह
८९	२२	६	पुगसु सपससहु	पुरिसु सपससहु
१०६	१०	१०	मरत	मरंत
१२४	३	१७	एत्थु	एत्थु
१४८	१०	८	सक्कागह	सक्कारहि
१६५	१	५	तुह	तुहु
१६८	४	६	रुद्धएहि	रुद्धएहि
१८४	७	९	एक्को रुय	एक्कोरुय
१८५	८	१५	अद्भय	अद्भय
१८९	१५	१	यइसह	यइसइ
२०५	३५	११	अज्जिय सपहु	अज्जियसपहु
२३२	११	७	सडणय	सडयण
२३३	१	१७	स पहु	सपहु
३००	८(n)	९(n)	कदासिहि	कदासिइ
३०२	११(n)	६(n)	रुंय	तुय
३०९	६(n)	९(n)	माह	माह
३२१	८(v.l)	१०(v.l)	MP	MP
३३९	७	६	ि वाउ	पणिवाउ
३४७	३	१४	वायहि	वाविहि
३७९	१	७	पडियभवणहु	पडिय भवणहु
३८०	३	१	वाडिय	वडिय
३९८	१२	८	मुणिविणय ^०	मुणि विणय ^०

MAHĀPURĀNA

Page	Śālavaka	Line	For	Read
४	१५	४	मिष्टिमुक्त	मिष्टि मुक्त
	१५	१	वाग्देति	वाग्देति
११७	१४	५	अपदेष्टु	अपदेष्टु मि
११९	१३	७	दिग् वनिन	दिग् वनिन
१२३		३	अपदयति	अपदयति
१२६	१३	१४	मुच्यते	मुच्यते मय
१२९	१४	७	वनिन	वनिन
१३०	१३	४	अपदयति	अपदयति
१३३	१४	४	वा	वा
१३६	१	१३	अपदयति	अपदयति
१३६	१३	१	वनिन	वनिन
१३९	१४	६	अपदयति	अपदयति
१४३	५	१	अपदयति	अपदयति
१४६	१	५	वा	वा
१४९		५	वनिन	वनिन
१५७	१३	३	अपदयति	अपदयति
१५९	१	४	अपदयति	अपदयति
१५९	१३		अपदयति	अपदयति
१५९	६	१	अपदयति	अपदयति
१५९	१३	३	अपदयति	अपदयति

